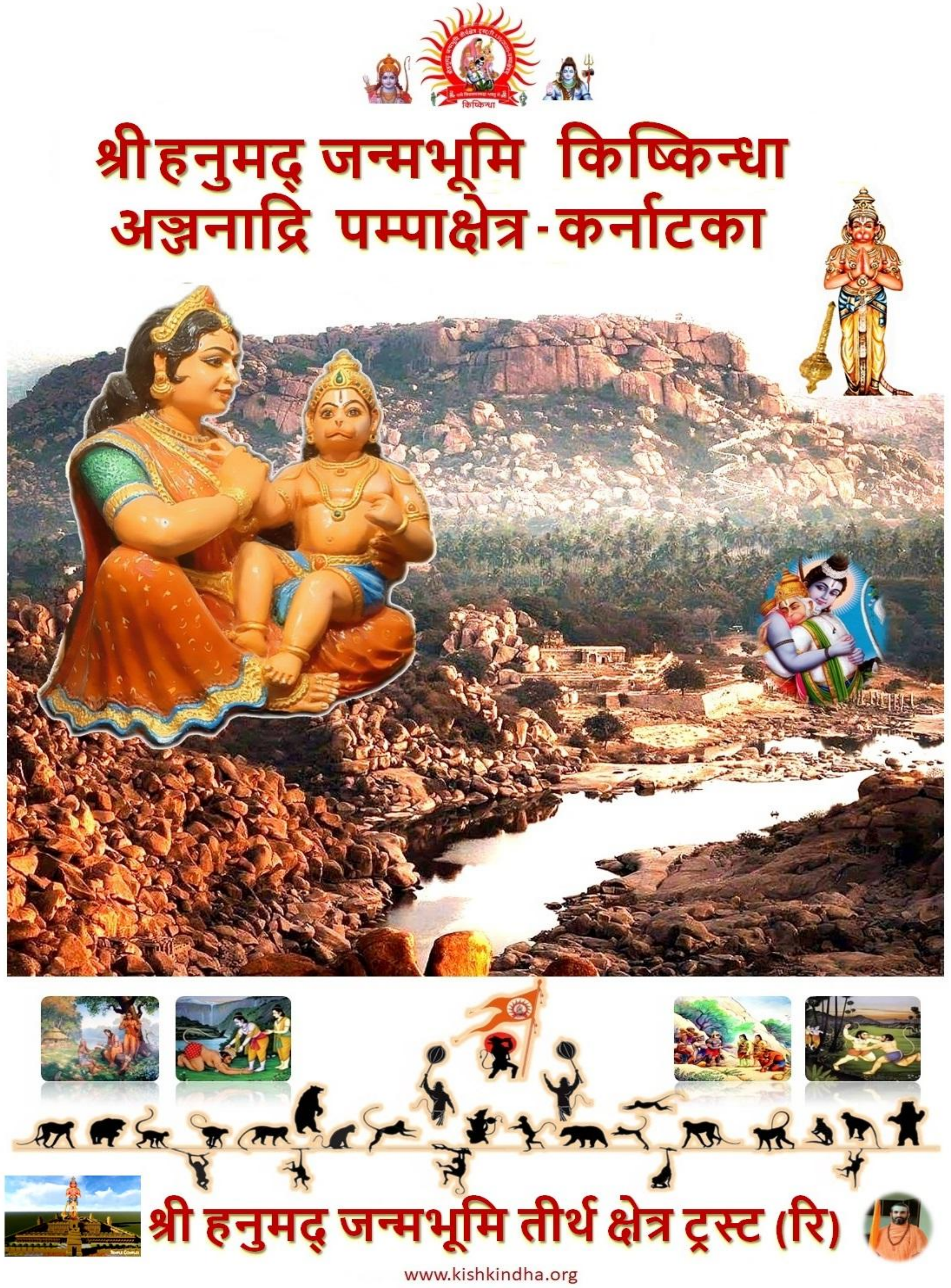
श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा
अञ्जनाद्रि पम्पाक्षेत्र - कर्नाटका
श्री हनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट (रि)
www.kishkindha.org

श्री पम्पाविरुपाक्षेश्वर और श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा
श्री हनुमद् समेत श्री सीताराम लक्ष्मण स्वामी दिव्य चरण कमलों में समर्पित
"श्री हनुमद् जन्मभूमि - किष्किन्धा" ग्रन्थ

श्री हनुमद जन्मभूमि अञ्जनाद्रि किष्किन्धा

(पम्पाक्षेत्र किष्किन्धा – कर्नाटक)

प्रकाशन

श्री हनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट (रि)

www.kishkindha.org

लेखक

पूज्य परमहंस परिव्राजक दण्डी स्वामी
श्री गोविंदानन्द सरस्वती जी महराज

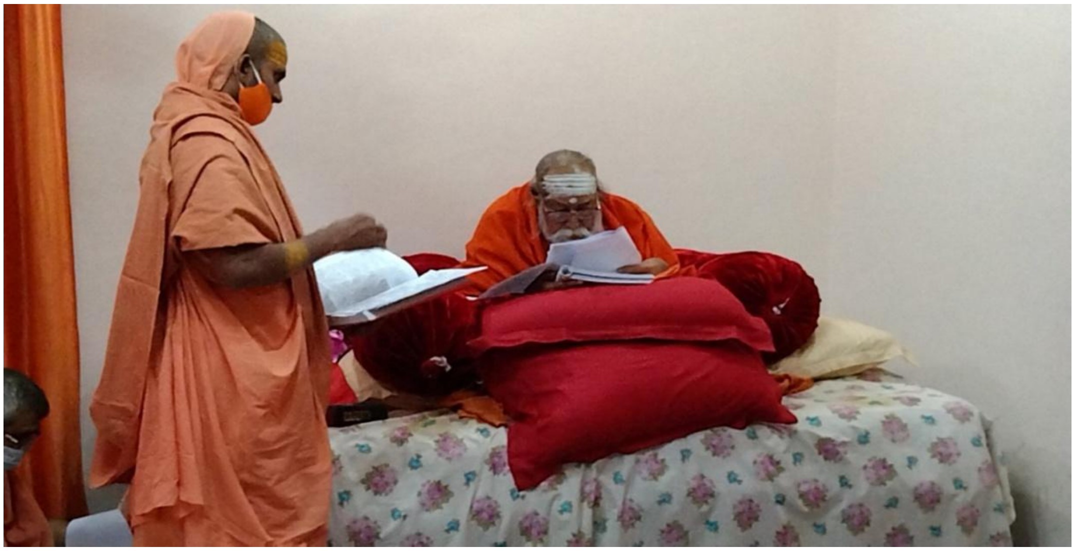

हरिद्वार कुम्भ 2021 के दौरान पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य महाराजश्री गुरुदेव के चरण कमलों में "श्री हनुमद जन्मभूमि - प्रमाण" के संबंध में निवेदन रखा।

पूज्य गुरुदेव जी ने मुझे विभिन्न वैदिक ग्रंथों (श्री वाल्मीकि रामायण, शिवहामापुराणम और अन्य) का अध्ययन करने और एक रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया। फिर यह पुस्तक लेखन शुरू हुआ

https://www.youtube.com/watch?v=Ie_LlieWmQ8
https://www.youtube.com/watch?v=8km-0mvSdQU

पिछले 15 वर्षों के दस्तावेज जो मैंने पहले ही श्री हनुमान के जन्म इतिहास से संबंधित विभिन्न वैदिक ग्रंथों से एकत्र किए हैं, जो मेरे द्वारा एकत्र किए गए हैं, वह एक पुस्तक प्रारू में गुरुदेव को प्रस्तुत किए गए हैं।

इस पर लगातार 20 दिनों तक चली चर्चा

https://www.youtube.com/watch?v=9h-77WNPhxc

परम पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य महाराजश्री को परमहंसी गंगा आश्रम में संपूर्ण "शोध पत्र" पुस्तक "श्री हनुमद जन्मभूमि किष्किंधा" प्रस्तुत करते हुए,

पूरे काम को ध्यान से देखने के बाद जगद्गुरु जी ने कहा

"भगवान श्री हनुमान ने किष्किंधा में ही जन्म लिया,
इसमें कोई संदेह नहीं है"

https://www.youtube.com/watch?v=9h-77WNPhxc

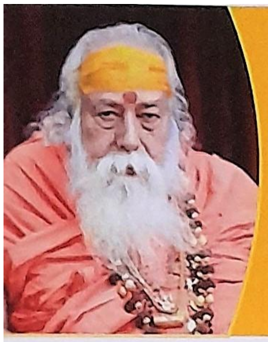

अनन्तश्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं
द्वारका शारदा पीठाधीश्वर जगद्गुरू शंकराचार्य

स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती

ज्योतिर्मठ
तोटकाचार्य गुफा, चमोली, गढ़वाल (उत्तराखण्ड)
दूरभाष : 01389-222185

श्रीशारदापीठम्
द्वारका, जामनगर, गुजरात
दूरभाष : 02892-235109

www.jagadgurushankaracharya.org

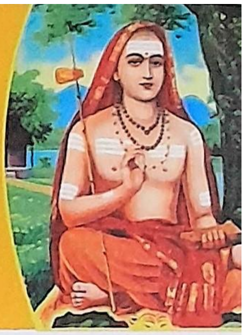

क्रमाङ्क

दिनाङ्क : ....

स्थल : परमहंसी

श्री हरि:

वीताखिल विषयेच्छं जातानन्दाश्रु पुलकमत्यच्छम्।
सीतापति दूताद्यं वातात्मजमद्य भावये हृद्यम् ॥

पम्पाक्षेत्रस्थिता किष्किन्धापरपर्यायागुहैव श्रीमतो हनूमतोऽवततारस्थानमिति (एवमुक्ता ततस्तुष्टा जननी ते महाकपे। गुहायां त्वां महाबाहो प्रजज्ञे प्लवगर्षभम्।। वा.रा 4.66.20, पारस्करप्रभृतीनि च संज्ञायाम् (पा . सूत्र सं २५९४) किष्किन्धा = गुहा) श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकैश्श्रीमद्गोविन्दानन्दसरस्वती स्वामिवर्यैर्महता प्रयासेनानेक श्रुतिस्मृतीतिहासपुराणोपपुराणागमनिगमतन्त्रनिरुक्त व्याकरणादिपरापरविद्यातात्पर्यरहस्यं समालोचयद्भिर्महत्या सूक्ष्मेक्षिकयातिप्राचीनशिलालेखताम्रशासनादीनां प्रमाणानां गवेषणपुरस्सरमैतिहासिकं परमं तत्वं संस्थापयितुकामैरनन्यभक्तिनिष्ठैश्श्रीरामकार्य धुरन्धरैश्श्रीमद्धनुमद्भगवति निरतिशयप्रेमानुरागस्वान्तैरेतै: कर्नाटकराज्ये पम्पाक्षेत्रे तुङ्गभद्रानदीतटे विराजमानायां किष्किन्धायामञ्जनावाय्वोर्भागधेयमस्मत्सौभाग्यभूतो हनूमान्महानवततारेत्यनेन (श्रीहनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा अञ्जनाद्रि) ग्रन्थराजेन निरणायि ।

येन च समेषां भक्तजनानामन्तरङ्गेष्वयं विवादो नैवोत्तिष्ठेत्कदापि कथमपि यद्धनुमान्नासिकासमीपे, वेङ्कटाद्रावन्यत्र वावततारेति। न केवलमेतावत् अविरतं धार्मिक परिश्रमशीलैरेभिरनेकेषां धर्मानुयायिनामात्मसम्मतानि मतिरत्नान्यप्यासाद्यात्र समावेशयामासुरिति महदिदममन्दं मे प्रमोदातिशयमादधाति ।

अनन्तश्रीविभूषितैस्स्वनामधन्यै: परमपूज्य चरणैरस्मद्गुरुवरेण्यैर्जगद्गुरुभिश्शङ्कराचार्यवर्यै ज्योतिश्श्रीद्वारकाशारदेत्युभयपीठाधीश्वरैश्श्रीमत्स्वरूपानन्द सरस्वतीसंयमीन्द्रैरादिष्टमाशयमवगत्यास्मदीयं हार्दमनेन सप्रमाणं सहर्षं सामोदं च प्रकटीक्रियते, तथ्यमिदं यद्धनुमान्कर्नाटके किष्किन्धायां (महाचैत्रीपूर्णिमायां समुत्पन्नोऽञ्जनीसुत: आ.रा.सा.का -13.163) चैत्रशुक्लपूर्णिमायां प्रादुरभूदितीतिशम् ।

तिथि - विक्र सं २०७९ शुभकृत भाद्र शुक्ल अनन्तचतुर्दशी

धर्मानुरागी
ब्रह्मचारी सुबुद्धानन्द:
श्रीजगद्गुरुशङ्कराचार्यात्मीयसचिववर:

" पम्पक्षत्र किष्किंधा अञ्जना पर्वत ही श्री हनुमान भगवान का जन्म स्थान है",
परम पूज्य आदरणीय श्री जगद्गुरु शंकराचार्य श्रृंगेरी शारदा पीठ
श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामी जी कि दिव्य कर कमलों से "12 वर्ष संपूर्ण भारत देश श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किंधा रथ यात्रा शृंगेरी से अधीकृत चालन"
श्री पम्पा विरूपाक्षेश्वर, श्री हनुमद् जन्मभूमि श्री किष्किंधा हनुमद् समेत श्री सीता राम लक्षमण , बाल हनुमान् समेत श्री माता अञ्जना देवी दिव्य उत्सव मूर्थ्यों को जगद्गुरु महराजश्री कि कर कमलों से अर्चन पुष्पांजलि संपन्न करके यात्रा अधीकृत चालन, हनुमद् जन्मभूमि किष्किंधा मे निर्माण होनेवाले श्री हनुमद् जन्मभूमि मंदिर और् दुनिया मे सब से ऊंचा श्री हनुमान् जी का २१५ मीटर् "भक्ति वैभव विग्रह" निर्माण, पंपाक्षेत्र किष्किंधा श्री हनुमद् जन्मभूमि श्री हनुमान् जी कि तरफ् से अपना प्रभु अयोध्या श्री रामजन्मभूमि श्री राम भगवन् केलिए समर्पण करनेवालॆ
"अयोध्या श्री राम ब्रह्म रथ"
और् श्री हनुमद् जन्मभूमि ट्रस्ट कि तरफ् से होनेवाले सब कार्यों को पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य महराजश्री ने किया उद्घाटन और् दिया संपूर्ण आशीर्वाद

श्री हनुमान् जी का जन्मस्थान – किष्किन्धा ही है – पूज्य श्री वासुदेवाचार्य विद्याभास्कर जी महराज अयोध्या

https://www.youtube.com/watch?v=iij3j9HphlE (2022)

SRI HANUMAD JANMABHOOMI KISHKINDHA
3RD YEAR 2023 RATHAYATRA INAUGURATION
BY PURI GOVARDHANA PITHA JAGADGURU SHANKARACHAYA
POOJAPAD SWAMI NISCHALANANDA SARASWATI JI MAHARAJ
IN BANGALORE

SRI HANUMAD JANMABHOOMI KISHKINDHA 3RD YEAR RATHAYATRA INAUGURATION
BY PURI GOVARDHANA PITHA JAGADGURU SHANKARACHAYA JI MAHARAJ IN BANGALORE

3rd Year 2023 Sri Hanumad Janmabhoomi Kishkindha Ratha Yatra Inaguration by Poojya Sri Puri Jagadguru Shankaracharya Maharajashri Swami Nischalananda Saraswati ji in Bangalore

SUPREME COURT OF INDIA

|| यतो धर्मस्ततो जयः ||

Sub : Regarding "Anjanandri Hills" Location – Evidences in SC Supreme Court Report

Source : https://main.sci.gov.in/pdf/SupremeCourtReport/2013_v11_piii.pdf

C Further, it is significant to note that most of the
ambitious 16th Century Vijayanagara temple projects in
and around Vijayanagara capital city which are
distinguished by vast and lofty enclosures entered through
D towered gateways, approached by long and broad chariot
streets or winding flight of steps following the natural
contour of the hills, mandapas with elaborately ornamented
pillars etc., are located on the hill tops. Hanuman temple
on the Anjanadri Hill, Virabhadra temple on the Matanga
E Hill, Raghunatha temple on the Malyavanta Hill and the
group temples of different periods on the Hemakuta Hill
are only a few such examples within the Core Zone of the
World Heritage Site. Sri Jambunatheshwara temple on the
Jambunatha Hill and Sri Kumaraswamy temple near

SUPREME COURT OF INDIA

|| यतो धर्मस्ततो जय: ||

Login FAQ Get Your App

HOME | COLLEGIUM RESOLUTIONS | CAUSE LIST | CASE STATUS | DAILY ORDERS | JUDGMENTS | OFFICE REPORT | CAVEAT | CERTIFIED COPY | E FILING | RTI | E-SCR | SUPREME COURT CHRONICLE | ANNUAL REPORT

distance of about 4.5 kms from Ananatasayana temple, a centrally protected monument. Integration of Natural Heritage with the Built Heritage is one of the criteria for enlisting Hampi in the List of World Heritage Sites. Jambunatha temple, with the backdrop of lush green hill ranges, is one fine example for such harmonious integration. It is mandatory on the part of the State and the Central Governments to maintain the integrity and authenticity of the Site as Signatories to the World Heritage Convention of the UNESCO.

Further, it is significant to note that most of the ambitious 16th Century Vijayanagara temple projects in and around Vijayanagara capital city which are distinguished by vast and lofty enclosures entered through towered gateways, approached by long and broad chariot streets or winding flight of steps following the natural contour of the hills, mandapas with elaborately ornamented pillars etc., are located on the hill tops. Hanuman temple on the Anjanadri Hill, Virabhadra temple on the Matanga Hill, Raghunatha temple on the Malyavanta Hill and the group temples of different periods on the Hemakuta Hill are only a few such examples within the Core Zone of the World Heritage Site. Sri Jambunatheshwara temple on the Jambunatha Hill and Sri Kumaraswamy temple near Sandur are other such temples in the peripheral area of the greater medieval Capital city of Vijayanagara. This place was also entry point to the Vijayanagarpattana, the capital of Vijayanagara empire. Location of such temples for the 'Guardian Deities' on strategically located hilly landmarks of the region endowed with tranquil, picturesque and serene atmosphere of high altitudes, considered as 'abodes of cosmic energy', is part of the very concept of designing 'Cosmic Cities embodying complex yet sacred geometry' derived from the canonical texts of the ancient lore.

held responsible for any untoward incident caused by blasting".

This clearly indicates that nobody will ensure that these recommendations/ guidelines will be implemented in letter and spirit especially in the absence of a vigilant and effective management system to monitor the day-to-day mining operations. The ill- effects of the mining activities that have already taken place in the recent past in and around Jambunatha temple is a clear illustration reflecting this phenomenon.

The Committee opines that the spirit and sanctity of Jambunatheshwara temple, continuously being worshipped from the day of its consecration till today, lies as much in its location as in the form, design and ornamentation of the Structural complex constructed during the Vijayanagara Period in around 1540 A.D. The spirit and sanctity are enhanced due to the locational significance of the Subject temple which is of primary importance. Jambunatheshwara is but one of the thousand and odd names of the manifestations of Lord Shiva, who according to Hindu Mythology and belief, is Kailasanatha - the lord of Kailasa Mountains. For this reason, for a staunch believer of Hinduism, all the hilltops are but a replica of Kailasa Mountains. Any damage caused to the immediate pristine environs of a temple located amidst such picturesque lush green landscape of the hill ranges, affects the very sentiments and beliefs of the pilgrims and devotees thronging to the temple, as it adversely affects the very abode of the lord.

This significance of the location of the temple has yet another facet as it is situated in the Peripheral Zone of the Hampi World Heritage Site, which is included in the World Heritage List of UNESCO. The subject temple forms an integral part of the Vijayanagara architecture, hardly at a

सत्यमेव जयते

Goverment Of India

Open Public Meeting Bellary Vijayanagara Karnataka - 03-05-2018

https://www.youtube.com/watch?v=nQEhKiafpSc

जब भारत देश का प्रधानमन्त्री श्री नरेद्रमोदी कर्नाटक मे पम्पाक्षेत्र विजयन**गर** बल्लारी आया खु**ली** सभा मे जनता लोगों को संभोधित करते हुए इस पम्पाक्षेत्र किष्किन्धा ह**म्पी** महिमा को स्मरण करते हुए**,** यह कहा कि

“ श्री हम्पी विरूपाक्ष, हजार राम,   इतिहास प्रसिद्द विजयनगर साम्राज्य, राम भक्त हनुमान जन्मस्थान, प्रभु श्रीरामजी के पाद स्पर्श से पुनीत भूमि ”

Prime Minister of INDIA

Sri Narendra Damodardas Modi,

सत्यमेव जयते

Goverment Of India

Open Public Meeting in Gangavati Kishkindha- Karnataka Apr 27, 2018

https://www.youtube.com/watch?v=nQEhKiafpSc

जब भारत देश का गृह मन्त्री श्री अमित अनिल चंद्र शाह कर्नाटक मे पम्पाक्षेत्र **किष्किन्धा मे खुली** सभा मे

"हनुमान् जी की जन्मभूमि पर पवित्र जगह पर आज आया हू, और आज इस भूमि के छूने केलिए अवसर मिला है"

Home Minister Govt of INDIA

Sri Amit Anilchandra Shah,

श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा अञ्जनाद्रि

(पम्पाक्षेत्र – कर्नाटक)

मुद्रण प्रकाशन तिथि :

प्रकाशन

श्री हनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट (रि)

www.kishkindha.org

लेखक

पूज्य परमहंस परिव्राजक दण्डी स्वामी

श्री गोविंदानन्द सरस्वती

अनुक्रमणिका

1 विषय

2 सनातन धर्म आचार्याणां आशीर्वादः

3 निर्णय

4 श्री हनुमान् जी का जन्म वृत्तान्त परिचय,

5 गुहा = किष्किन्धा (स्थान विशेष) पद का व्याकरण निरूपण,

6 श्री हनुमान् जी का जन्म वृत्तान्त निरूपण,

7 श्री हनुमान् जी का जन्म तिथि निरूपण,

8 श्री हनुमद् जन्मभूमि स्थल "किष्किन्धा" का निरूपण,

9 श्री हनुमान् जन्मभूमि किष्किन्धा पर्वत पर विराजमान ३ मूल मन्दिर,

10 पम्पाक्षेत्र किष्किन्धा में विराजमान अन्य पर्वत और उस पर्वतों में स्थित विविध गुफाएं (माल्यवंत पर्वत गुहा, इत्यादि)

11 पुराण, इतिहास एवं काल मीमांसा

12 अञ्जन हल्लि (अञ्जन गाँव) माता अञ्जना देवी का जन्म स्थल

13 हनुमन हल्लि (श्री हनुमान गाँव) श्री हनुमान जी का बाल्य लीला स्थान

14 श्री हनुमान जी आजन्म बाल ब्रह्मचारी, अविवाहित है,

15 धार्मिक निर्णय

16 श्रुतिस्मृतिविरोधे तु श्रुतिरेव गरीयसि

17 श्री वाल्मीकि रामायण और किष्किन्धा

18 टि.टि.डि. कमेटी की हार हनुमान् जन्मभूमि ट्रस्ट का जीत

19 तिरुपति टि.टि.डि. कमेटी के कार्यों पर आन्ध्रा हाईकोर्ट की रोक आदेश

20 श्री हनुमान् जी के जन्मस्थल पर दावा करने वाले अन्य स्थलों का निराकरण

1 तिरुपति (आन्ध्रप्रदेश)

2 गोकर्ण (कर्नाटक)

3 नासिक् (महाराष्ट्र)

4 डांग (गुजरात)

5 कैथल् (हरियाणा)

6 गुमला (झारखण्ड)

21 समस्त भक्त लोगों का संदेश

22 अप्रामाणिक ग्रंथो का निराकरण - श्री हनुमान जी के बारे में झूठा प्रचार करने वाले अप्रमाण ग्रंथ,   पुराण, संहिता, पी.एच.डी इत्यादि,

23 श्री हनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट (रि) , श्री हनुमद् जन्मभूमि “पम्पाक्षेत्र किष्किन्धा” जीर्णोद्धार पुनर्वैभव भविष्य प्रणाळिका,

25. पम्पाक्षेत्र किष्किन्धा मे विराजमान श्री हनुमान् कि मन्दिर और विग्रह,

26 ASI, UNESCO, Govt India Min of Culture Ref Documents

श्री गणेशाय नम:

जय विरूपाक्ष , जय श्री राम , जय हनुमान

रामे चित्तलय: सदा भवतु मे । श्रीरामदूतं शिरसा नमामि

श्रीरुद्र अवतार, वायु पुत्र, केसरी अञ्जनी नन्दन श्रीरामभक्त हनुमान जी की जय हो |

विरूपाक्षस्तु विश्वेश: तुंगभद्रातु जान्हवी । पम्पा काशी समा दिव्या भुक्तिमुक्ति प्रदायिनी॥
श्रीराम राम रामेति रमे रामे मनोरमे । सहस्रनाम तत्तुल्यं श्रीरामनाम वरानने ॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।

विषय: श्री हनुमान् जी का जन्म स्थल, तिथि एवं जन्म वृत्तान्त विमर्श, विश्लेषण और निर्णय,

भगवान् श्री हनुमान् जी कि विषय से सम्बन्धित संपूर्ण इतिहास, पुराण, व्याकरण, इत्यादि अनेक ग्रंथ एवं (कल्प) काल विषय, इत्यादि अनेक विषय अवलोकन करने के बाद एवं (किष्किन्धा, गोकर्ण, तिरुपति, नासिक्, डांग, कैथल, गुम्ला) इत्यादि क्षेत्रों से मिले विविध प्रमाणों को और तत्तत् स्थानीय वस्तु स्थितियों का भी सम्पूर्ण विश्लेषण करने के बाद निकला हुआ प्रामाणिक निष्कर्ष,

निर्णय : "श्री हनुमान जी भगवान श्री रुद्र के अवतार हैं," श्री वायु देवता के "औरस पुत्र" हैं । श्री केसरी की पत्नी अञ्जना देवी ने चैत्र शुक्ल पूर्णिमा तिथि में किष्किंधा नगरी (पम्पा क्षेत्र वर्तमान कर्नाटक) में जन्म दिया । हनुमान जी शुद्ध आजन्म बाल ब्रह्मचारी, अविवाहित हैं ।

"श्री हनुमान् जी का जन्म वृत्तान्त" कि बारे मे श्री मद् वाल्मीकि महर्षि परम प्रमाण है, इतिहास पुराणों मे इतिहास ही परम प्रमाण और प्रबल है । तदनुसार

जन्मस्थान श्लो : एवमुक्ता ततस्तुष्टा जननी ते महाकपे।
गुहायां त्वां महाबाहो प्रजज्ञे प्लवगर्षभम्।। (वा.रा 4.66.20 ॥)
यहां “गुहा” शब्द का अर्थ किष्किन्धा ही है,

पाणिनी व्याकरण महाभाष्य : - पारस्करप्रभृतीनि च संज्ञायाम् (सूत्र सं २५९४) किष्किन्धा = गुहा

जन्मतिथि श्लो : महाचैत्रीपूर्णिमायां समुत्पन्नोऽञ्जनीसुत:।

आ.रा.सा.का -13.163

धार्मिक संदेश : किसी भी धार्मिक विषयों में विश्लेषणात्मक प्रामाणिक निर्णय देना है तो यह प्रामाणिक धर्म ग्रंथो के आधार पर सनातन परम्परागत प्रामाणिक धर्माचार्यों के द्वारा दिया गया निर्णय ही सर्वमान्य है । ऐसे धार्मिक विषयों मे पूर्व काल मे भी हर सनातनी लोग प्रमाण युक्त प्रामाणिक धर्माचार्यों के निर्णयों को स्वीकार करके उसका पालन करते हुए भगवदनुग्रह प्राप्त किए, सम्प्रति इस विषय में भी उसी परम्परा को श्रद्धा पूर्वक पालन करते हुए, आगे बढाते हुए, हर सनातनी श्री हनुमान् जी कि अनुग्रह प्राप्त करे ।

समय समय पर जब भी धार्मिक विषयों पर चर्चा करना या निर्णय देना यह धर्माचार्यों का दायित्व हैं । नतु अन्य लोगों का (प्रशासन् हो या लौकिक संस्था, कमेटी) भविष्य मे इस विषय को लेकर किसी भी तरह टिप्पणी, हस्तक्षेप या चर्चा करना अनावश्यक है । भगवान् श्री हनुमान् जी कि विषय में प्रचार होनेवाले अप्रामाणिक ग्रंथों से हर सनातनी सावधान रहे ।

प्र) श्री हनुमान् जी का जन्म किस स्थल / नगरी मे हुआ ?

समाधान) त्रेतायुग में दक्षिण भारत में (वर्तमान कर्नाटक राज्य कोप्पल जिला, गंगावति तालूक् आनेगुन्दि के पास विद्यमान नगरी) पम्पाक्षेत्र तुङ्गभद्रा नदी के उत्तर तट पर विराजमान पम्पासरोवर स्थित "किष्किंधा" नगरी में हुआ ।

प्र) इस का प्रमाण क्या है ?

स) इसकेलिए अनेकों सारे प्रमाण उपलब्ध है . इन में से मूल प्रमाण "श्रीमद्वाल्मीकि महर्षि विरचित श्रीमद्वाल्मीकि रामायण हैं । "

1. प्र) श्रीमद् वाल्मीकि रामायण में कहां लिखा है ?

स) श्रीमद् वालीकि महर्षि विरचित श्रीमद् वाल्मीकि रामायण में किष्किन्धा काण्ड में यह उल्लेख किया गया है ।

श्लो : एवमुक्ता ततस्तुष्टा जननी ते महाकपे।
गुहायां त्वां महाबाहो प्रजज्ञे प्लवगर्षभम्।। (वा.रा 4.66.20 ॥)

प्र) इस श्लोक मे किष्किन्धा नाम / शब्द नही है इस का उत्तर क्या है ?

स) यहां "गुहा" शब्द का ही किष्किन्धा अर्थ है, और श्रीमद् वाल्मीकि महर्षि अपने रामायण मे "किष्किन्धा" पद प्रयोग करने के समय "गुहा" शब्द का ही प्रयोग किए हैं।

2. प्र) इस का प्रमाण क्या है ?

स) " गुहा = किष्किन्धा ", पद का अर्थ : किसी भी वैदिक / पौराणिक / संस्कृत वाङ्मय मे किसी भी पद का और पद के अर्थ का निर्णय करने के लिए वैदिक आचार्य परम्परागत प्राप्त प्रमाण व्याख्यान कारों के ग्रन्थ और व्याख्यान का ही आधार लेना चाहिए

उदा:

गुहा =	सामान्य गुहा,	किष्किन्धा (नगर)
वेद =	श्रुति	आम्नाय
हरि =	श्री महा विष्णु	वानर

गुहा = किष्किन्धा - व्याकरण शब्दार्थ निरूपण :

1) **पाणिनी व्याकरण महाभाष्य** : पारस्करप्रभृतीनि च संज्ञायाम् (२५९४) (गणस्वरूपसाधकभाष्यम्) अविहितलक्षणः सुट् पारस्करप्रभृतिषु द्रष्टव्यः । पारस्करो देशः । कारस्करो वृक्षः । रथस्पा नदी । किष्किन्धा गुहा । किष्कुः ॥ तद्बृहतोः करपत्योश्चोरदेवतयोः सुट्तलोपश्च । तस्करः , बृहस्पतिः ॥ प्रायस्य चित्तिचित्तयोः सुडस्कारो वा । प्रायश्चित्तिः । प्रायश्चित्तम् ॥ इति श्रीमद्भगवत्पतञ्जलिविरचिते व्याकरणमहाभाष्ये षष्ठाध्यायस्य प्रथमे पादे पञ्चममाह्निकम् ॥

2) **काशिका** : पारस्करप्रभृतीनि च शब्दरूपाणि निपात्यन्ते संज्ञायां विषये। पारस्करो देशः। कारस्करो वृक्षः। रथस्पा नदी। किष्कुः प्रमाणम्। किष्किन्धा गुहा । तद्बृहतोः करपत्योश्चोरदेवतयोः सुट् तलोपश्च। तस्करश्चोरः। वृहस्पतिदेवता। चोरदेवतयोः इति किम् ? तत्करः। बृहत्पतिः। संज्ञाग्रहणादुपाधिपरिग्रहे सिद्धे गणे चोरदेवताग्रहणं प्रपञ्चार्थम्। प्रात्तुम्पतौ गवि कर्तरि। तुम्पतौ धातौ प्रशब्दात् परः सुट् भवति गवि कर्तरि। प्रस्तुम्पति गौः। गवि इति किम्? प्रतुम्पति वनस्पतिः। पारस्करप्रभृतिराकृतिगणः। अविहितलक्षणः सुट् पारस्करप्रभृतिषु द्रष्टव्यः। प्रायश्चित्तम्। प्रायश्चित्तिः। यदुक्तं प्रायस्य चितिचित्तयोः सुडस्कारो वा इति तत्

सङ्गृहीतं भवति।

3) वाचस्पत्यम्/पश्चयन : पारस्करादि "पारस्करप्रभृतीनिच संज्ञायाम् " पा० उक्ते ससुट्कनिपातनिमित्ते शब्दगणे स च "पारस्करो देशः । कारस्करोवृक्षः । रथस्या नदी । किष्कुः प्रमाणम् । किष्किन्धा गुहा । (तद्वृहतोः करपत्योश्चौरदेवतयोः सुट् तलोपश्च) (प्रात्तुम्पतौ गवि कर्त्तरि)

4)शब्दकल्पद्रुम : (गुह् + कःटाप्च।)सिंहपुच्छीलता।गर्त्तः। पर्व्वतादेर्गह्वरम्। इतिमेदिनी।हे।४। (यथा रामायणे।१।१।७०। " किष्किन्ध्यांरामसुग्रीवौजग्मतुस्तौगुहांतदा॥ ") शेषस्यपर्य्यायः। विलम्२शिलासन्धिः३देवखातम्४गह्वरम् ५। शालपर्णीवृक्षः ६। इतिराजनिर्घण्टः॥,

ऐसे ही श्री मद्वाल्मीकि रामायण में **"गुहा / गुहायां"** पद का प्रयोग किया गया है , और श्री राम -तिलक, शिवसहाय श्री रामायण शिरोमणि, भूषण श्री गोविंदराजियम् ,इत्यादि प्रामाणिक व्याख्यानों में (गुहा शब्द का किष्किन्धा अर्थ) ही स्पष्ट रूप से निर्णय किया गया है , यहां वैदिक वाङ्मय , आचा र्यों के सिद्धान्त है, ।

किष्किन्ध पु०. किं किं दधाति । धा +क । पारस्करा० सुट् षत्वं मलोपः । वृह० स० कूर्मविभागे आग्नेय्यामुक्ते १ देशभेदे "आग्नेय्यां दिशि कोशलकलिङ्गवङ्गोपवङ्गजटराङ्गाः" इत्युपक्रमे "किष्किन्ध कण्टकस्थल निषादवास्त्राणि पुरिक- दाशार्ण्णाः" इति । तत्रत्ये २ पर्व्वतभेदे च । ३ तत्रत्यवालि- राज धान्यां ४ तत्रत्यगुहायाञ्च स्त्री शब्दर० । "त्वया सह महाबाहो! किष्किन्धोपवने तदा " । "गच्छ लक्ष्मण! जानीहि किष्किन्धायां कपीश्वरम्" । "किष्किन्धाद्वा- रमासाद्य प्रविवेशानिवारितः" भा. व. २८१ अ।

"गुहामासादयामास किष्किन्धां लोकविश्रुताम् । तत्र वानरराजाभ्यामैन्देन द्विपदेन च । युयुधे दिवसान् सप्त " भा. म . ३ . अ . । दक्षिणदिग्विजये । किष्किन्धा अभिजनोस्य सिन्ध्वा० अण् । कैष्किन्ध पित्रादिक्रमेण किष्किन्धागुहातत्पुरीवासिनि त्रि० स्त्रियां ङीप् ।

किष्किन्धा(न्ध्या)काण्ड न. वाल्मीकिरामायणान्तर्गते किष्किन्धाधिकारेण वालिसुग्रीवादीनामितिवृत्तप्रतिपादके काण्डभेदे ।

किष्किन्धी स्त्री किष्किन्ध + गौरा० ङीष् । किष्किन्धपर्व्वत-गुहायाम् "अभ्येत्य सर्व्वे किष्किन्ध्याम्" भा. व. २७९ अ. ।

किष्किन्ध्य पु० किष्किन्ध + स्वार्थे यत् । १ किष्किन्धशब्दार्थे २ तत्रत्यपर्वतगुहायां ३ वालिराजधान्यां च स्त्री ।

किष्किन्ध्या(न्ध्या)धिप पु. ६ त. ।वालिनामके वानरराजे जटा. शब्दर०,

* इतना ही नहीं इस को पुष्टि देते हुए व्याकरण के आचार्य "श्री रामायण" के ही श्लोक उधृत् किए है। " जैसे रामायण मे बोला गया है "यथा रामायणे ।१।१।६७, ७० "किष्किन्ध्यां रामसुग्रीवौ जग्मतुस्तौ गुहां तदा"

3. इस श्लोक का अर्थ क्या है ?

स) ततः प्रीतमनाश्चैव विश्वस्तश्च महाकपिः |
किष्किन्धां रामसहितो जगाम च गुहां तदा || १।१।६७, ७०

तिलकाख्या टीका :- तत इति । ततः सालभेदानन्तरं तेनातिदुष्करेण कर्मणा वालिवधे विश्वासं प्राप्तः प्रीतमनाः कपिराज्यलाभो ऽचिरादेवेति

सन्तुष्टमनाः महाकपिः सुग्रीवः किष्किन्धाख्यां गुहां रामसहितो जगाम ।। ,
रामकृता : - तदा तस्मिन्काले रामसहित : सन् किष्किन्धां तदाख्यां गुहां जगाम विवेश ।।,

अमृतकतकव्याख्या : - ततः अनन्तरं भगवदतिरिक्तेन येन केन चिदपि दुष्करेण तेन कर्मणा विश्वस्तः प्राप्तविस्रंभः । इडभावश्छान्दसः । प्रीतमनाश्च महाकपिः किष्किन्धाख्यां गुहां रामसहितो जगाम ।
*पारस्करप्रभृतिषु "किष्किन्धा गुहा" इति वचनात् षत्वम् ।।,
तत्वदीपिका : - तत इति । ततः सालभेदनानन्तरं तेन सालादिभेदनेन , विश्वस्तः विश्वासं प्राप्तः , सर्वात्मना रामो दर्शनमात्रेण वालिनं हनिष्यतीति विश्वासं प्राप्तः , प्रीतमनाः कपिराज्यमचिरादेव मम हस्तगतं भविष्यतीति सन्तुष्टान्तरङ्ग इत्यर्थः । तदा तस्मिन्नेव काले *किष्किन्धां गुहां पर्वतान्तरावकाशे तत्र निर्मितत्वात् किष्किन्धापि गुहाशब्देनोच्यते । जगाम चेति योजना ।। ,

गो.टी : - स सुग्रीव: रामसहित: सन् तदा तस्मिन्नेव काले " किष्किन्धां किष्किन्धाख्यां गुहां गुहावत्पर्वतमध्यवर्तिनीं पुरीं जगाम " ।
तत इति । ततः सालभेदनानन्तरं तेन सालादिभेदनेन , विश्वस्तः विश्वासं प्राप्तः, सर्वात्मना रामो दर्शनमात्रेण वालिनं हनिष्यतीति विश्वासं प्राप्तः , प्रीतमनाः कपिराज्यमचिरादेव मम हस्तगतं भविष्यतीति सन्तुष्टान्तरङ्ग इत्यर्थः । तदा तस्मिन्नेव *काले किष्किन्धां गुहां पर्वतान्तरावकाशे तत्र निर्मितत्वात् किष्किन्धापि गुहाशब्देनोच्यते । जगाम चेति योजना ।।

1.1.65।।

(११२४ विधिसूत्रम् ॥ ६ । १ । ५ आ. ८९)

२५९४ पारस्करप्रभृतीनि च संज्ञायाम्

॥ ६ । १ । १५७ ॥

(गणस्वरूपसाधकभाष्यम्)

अविहितलक्षणः सुट् पारस्करप्रभृतिषु द्रष्टव्यः । पारस्करो देशः । कारस्करो वृक्षः । रथस्पा नदी । किष्किन्धा गुहा । किष्कुः ॥

तद्बृहतोः करपत्योश्चोरदेवतयोः सुट्तलोपश्च ।

तस्करः, बृहस्पतिः ॥

प्रायस्य चित्तिचित्तयोः सुडस्कारो वा ।

प्रायश्चित्तिः । प्रायश्चित्तम् ॥

इति श्रीमद्भगवत्पतञ्जलिविरचिते व्याकरणमहाभाष्ये षष्ठाध्यायस्य प्रथमे पादे पञ्चममाह्निकम् ॥

महाभाष्य पाणिनीय व्याकरण "किष्किन्धा = गुहा"

॥ श्रीः ॥

काशी संस्कृत ग्रन्थमाला

१६८

वाल्मीकिरामायणकोशः

(वाल्मीकिरामायणस्य नाम्नां विषयाणां च व्याख्यात्मिका अनुक्रमणिका)

रामकुमाररायः

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

१९६५

गुहा, स्त्री (गुह् + कः टाप् च ।) सिंहपुच्छी-
लता । गर्त्तः । पर्व्वतादेर्गह्वरम् । इति मेदिनी ।
हे । ४ । (यथा, रामायणे । १ । १ । ७० ।
"किष्किन्ध्यां रामसुग्रीवौ जग्मतुस्तौ गुहां
तदा ॥",
पृषस्य पर्य्यायः । विलम् २ पिशाचभित्तिः ३ देव-

श्री रामायणशब्दकोशः

मैनाक पर्वत धँस गया तो उस पर रहनेवाले किन्नर आदि पर्वत को छोडकर आकाश मे स्थित हो गये (५. ५६, ४८)। राम और मकराक्ष के द्वन्द्व को देखने के लिये अन्तरिक्ष मे एकत्र हुये (६ ७९, २५)। जब रथ पर बैठे हुये रावण से राम पैदल ही युद्ध करने के लिये उद्यत हुये तब किन्नरो ने भी कहा कि ऐसी दशा मे दोनो का युद्ध बराबर नही है (६ १०२, ५)। जब श्रीराम रावण के साथ युद्ध करने लगे तब इन लोगो ने गायो और ब्राह्मणो की सुरक्षा के लिये प्रार्थना की (६ १०७, ४८–४९)। ये मन्दाकिनी के तट पर भी आते रहते थे (७ ११, ४३)। कैलास पर्वत पर मधुर कण्ठवाले कामार्त किन्नर अपनी कामिनियो के साथ रागयुक्त गीत गाया करते थे (७ २६ ७)। ये लोग अपनी-अपनी स्त्रियो के साथ विन्ध्य पर्वत पर क्रीडा कर रहे थे (७ ३१, १६)। बुध ने इला की सखियो को किंपुरुषी (किन्नरी) बना दिया (७ ८८, २१–२४)।

किरात, वसिष्ठ की गाय के रोमकूपो से प्रकट हुये थे। अन्य के साथ इन लोगो ने भी विश्वामित्र की समस्त सेना का संहार कर डाला (१ ५५, ३–४)।

किष्किन्धा, एक पर्वतीय गुफा का नाम है जहाँ सुग्रीव का वालिन् के साथ द्वन्द्व हुआ था (१ १, ६९)। एक नगर का नाम है जिसके मुखद्वार के पास मायाविन् ने वालिन् को ललकारा था (४ ९, ५)। वालिन् को मृत जानकर सुग्रीव यहाँ लौट आये (४ ९, १९)। 'किष्किन्धामतुलप्रभाम्', (४ ११, २१)। वालिन् का नगर (४ ११, २४)। महाबली दुन्दुभि किष्किन्धा पुरी के द्वार पर आकर भूमि को प्रकम्पित करता हुआ जोर-जोर से गर्जन करने लगा, मानो दुन्दुभि का गम्भीर नाद हो रहा हो (४ ११, २६)। राम इत्यादि को साथ लेकर सुग्रीव किष्किन्धा की ओर बढे (४ १२, १३–१४)। श्रीराम के वचन से आश्वस्त होकर सुग्रीव राम के साथ पुन किष्किन्धापुरी म जा पहुँचे (४ १२, ४२)। 'किष्किन्धा वालिविक्रमपालिताम्', (४ १३, १)। 'दुराधर्षां किष्किन्धा वालिपालिताम्', (४ १३, २९)। 'सुरेन्द्रात्मजजीर्णपालिता', (४ १३, ३०)। 'दृष्ट्वा राम क्रियादक्ष सुग्रीवो वाक्यमब्रवीत् । हरिवागुरया व्याप्ता तप्तकाञ्चनतोरणाम् ॥ प्राप्ता स्म ध्वजयन्त्राढ्यां किष्किन्धां वालिन पुरीम् । प्रतिज्ञा या कृता वीर त्वया वालिवधे पुरा ॥', (४ १४, ४–६)। यह नगरी दुर्गो से सुरक्षित थी (४ १९, १५)। 'पुरी रम्यां किष्किन्धा वालिपालिताम्', (४ २६, १८)।' 'हृष्टपुष्टजनाकीर्णा पताकाध्वजशोभिता । बभूव नगरी रम्या किष्किन्धा गिरिगह्वरे ॥', (४ २६, ४१)। यह नगर प्रस्रवण गिरि के निकट स्थित था (४ २७, २६)।

"किष्किन्धा एक पर्वतीय गुफा का नाम है" । "एक नगर का नाम है"

कीर्तिरथ] (६२) [१. कुञ्जर

'तामपश्यद् बलाकीर्णां हरिराजमहापुरीम् । दुर्गामिक्ष्वाकुशार्दूल किष्किन्धा गिरिसंकटे ॥', (४ ३१, १६) । 'ततस्तं कपिभिर्व्याप्तां द्रुमहस्तैर्महाबलैः । अपश्यल्लक्ष्मण क्रुद्ध किष्किन्धां तां दुरासदाम् ॥', (४ ३१, २६) । इस नगर के चारो ओर प्राकार और खाई बनी थी । (४ ३१, २७) । "लक्ष्मण ने द्वार के भीतर प्रवेश करके देखा कि किष्किन्धापुरी एक बहुत बडी रमणीय गुफा के रूप मे बसी हुई थी । यह नाना प्रकार के रत्नो से परिपूर्ण होने के कारण अत्यन्त शोभा-सम्पन्न थी । यहाँ के वन-उपवन पुष्पो से सुशोभित थे । हर्म्यों और प्रासादो से यह पुरी अत्यन्त सघन दिखाई पडती थी । यहाँ दिव्य माला और दिव्य वस्त्र धारण करनेवाले परम सुन्दर वानर, जो देवो और गन्धर्वों के पुत्र तथा इच्छानुसार रूप ग्रहण करनेवाले थे, निवास करते थे । चन्दन, अगर और कमलपुष्पो की सुगन्ध से समस्त पुरी व्याप्त थी । इसमे विन्ध्याचल तथा मेरु के समान ऊँचे ऊँचे महल थे । इत्यादि । (४ ३३, ४–८) ।" यह पर्वत की गुफा मे बसी थी, जिससे इसमे प्रवेश करना अत्यन्त कठिन था (६ २८, ३०) । लका से लौटते समय राम का पुष्पक विमान इस नगर पर मे होकर आया था (६ १२३, २४) । 'सान्त्वयित्वा ततः पश्चाद्दृष्ट्वा मथादिशत् । गच्छ मद्वचनाद्दूत किष्किन्धां नाम वै शुभाम् ॥ सा ह्यस्य गुणसम्पन्ना महती च पुरी शुभा । तत्र वानरयूथानि सुबहूनि वसन्ति च ॥ बहुरत्नसमाकीर्णा वानरैः कामरूपिभिः पुण्या पुण्यवती दुर्गा चातुर्वर्ण्यपुरस्कृता ॥ विश्वकर्मकृता दिव्या मन्नियोगाच्च शोभना । तत्रर्क्षरजसं दृष्ट्वा सुपुत्र वानरर्षभम् ॥', (७ ३७ ख, ४६–४९) ।

1. "लक्ष्मण ने द्वार के भीतर प्रवेश करके देखा कि किष्किन्धा पुरी एक बहुत बडी रमणीय गुफा के रूप मे बसी हुई थी।",
2. "किष्किन्धा नगरी – यह पर्वत की गुहा मे बसी थी," - श्री वाल्मीकि रामायण कोश:

किम्बी | किष्कुप | कीचकः

[illegible]

किष्क म व वधे । इति कविकल्पद्रुमः । (चुरा०-आत्म०-सक०-सेट् ।) मूर्द्धन्योपधः । क उ किष्कयते । इति दुर्गादासः ॥

किष्किन्ध, पुं, (किं किं दधाति । धा + क । पारस्कारादित्वात् मूर्द्धन्य षत्वं किमो मलोपः सुट् च नियातनात् ।) ओड्रदेशपश्चिमस्थपर्वतविशेषः । तत्पर्व्वतगुहा च । इति शब्दरत्नावली ॥

किष्किन्धी, स्त्री, (किष्किन्ध + गौरादित्वात् ङीष् ।) किष्किन्धपर्व्वतगुहा । इति शब्दरत्नावली ॥

किष्किन्ध्यः, पुं, (किं किं दधातीति वा पारस्कारादिसूत्रे मूर्द्धन्यषोपे च कार्य्ये यत् प्रत्ययेन नि-पातनात् साधुः ।) बालाशालापर्व्वतः । इति शब्दरत्नावली ॥

किष्किन्ध्या, स्त्री, (किष्किन्ध्य + टाप् ।) किष्किन्ध्यपर्व्वतगुहा । इति शब्दरत्नावली ॥ सा तु पूर्व्वं बालिनामकवानरराजधान्यासीत् श्रीरामचन्द्रस्तं हत्वा सुग्रीवाय तद्राजधानीं दत्तवान् । इति रामायणम् ॥

किष्किन्ध्याधिपः, पुं, (किष्किन्ध्यायाः अधिपः ।) बालिनामवानरराजः । इति जटाधरः ॥ (सुग्रीवः । इति रामायणम् ॥)

किष्कु, पुं स्त्री, (कै + बाहुलकादित्वात् कुः । पारस्कारादित्वात् सुटि षत्वे च निपातनात् साधुः ।) वितस्तिः । द्वादशाङ्गुलिपरिमाणम् । प्रकोष्ठः । कफोणेरधोमणिबन्धपर्य्यन्तः । हस्तः । इति मेदिनी ॥ (यथा महाभारते २ । १ । १८ ।
"सर्व्वर्त्तुगुणसम्पन्नां दिव्यरूपां मनोरमाम् ।
दशकिष्कुसहस्रां तां मापयामास सर्व्वतः" ॥)
कुत्सिते त्रि । इति विश्वो हेमचन्द्रश्च ॥

किष्कुपर्व्वा, [न्] पुं, (किष्कूनि कुत्सितानि पर्व्वाणि वा यस्य ।) इक्षुः । वेणुः । पोट-

[illegible]

श्री वाल्मीकि रामायण शब्द कोशः

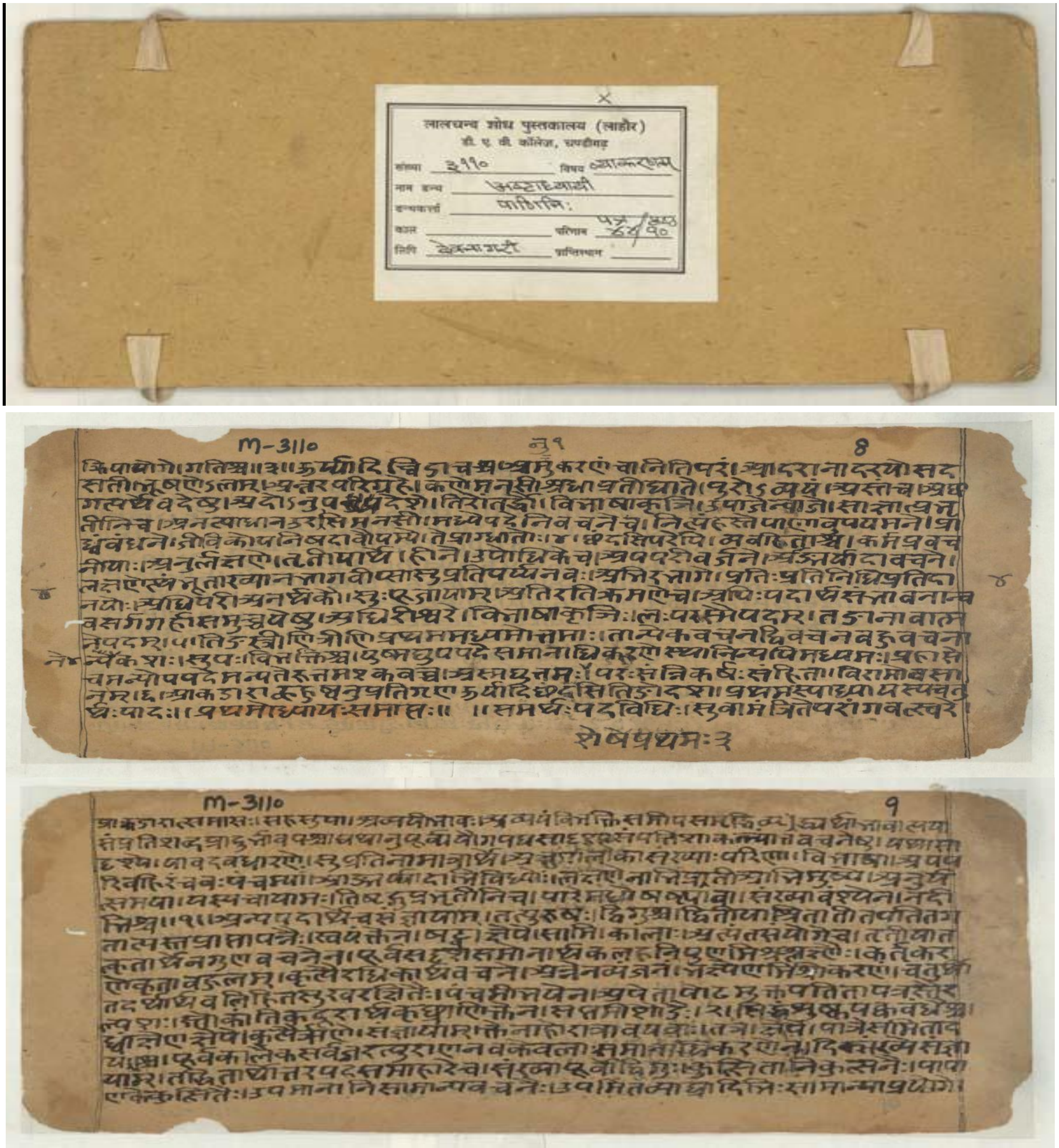

अष्टाध्यायी (प्राचीन हस्तलिपि)

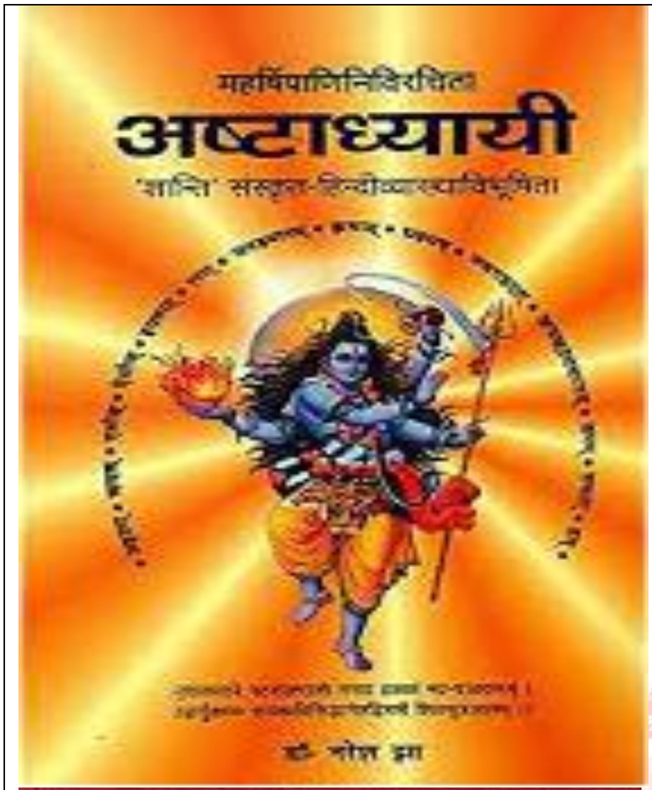

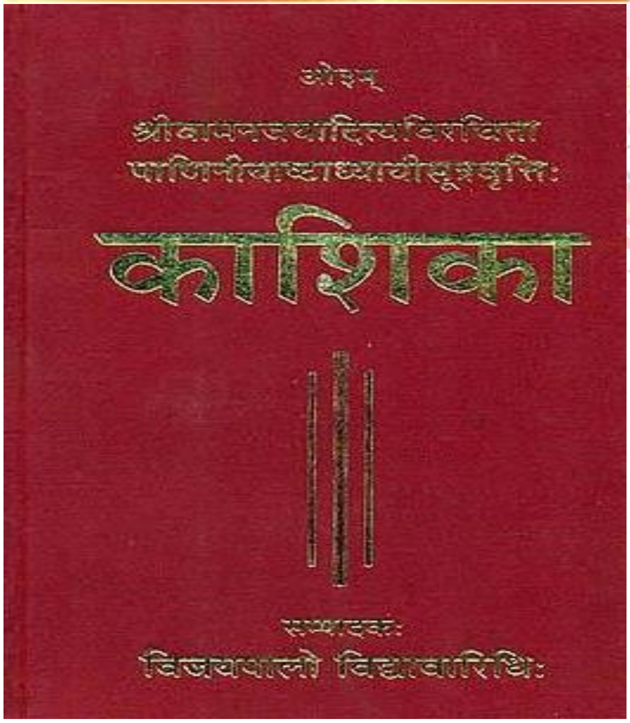

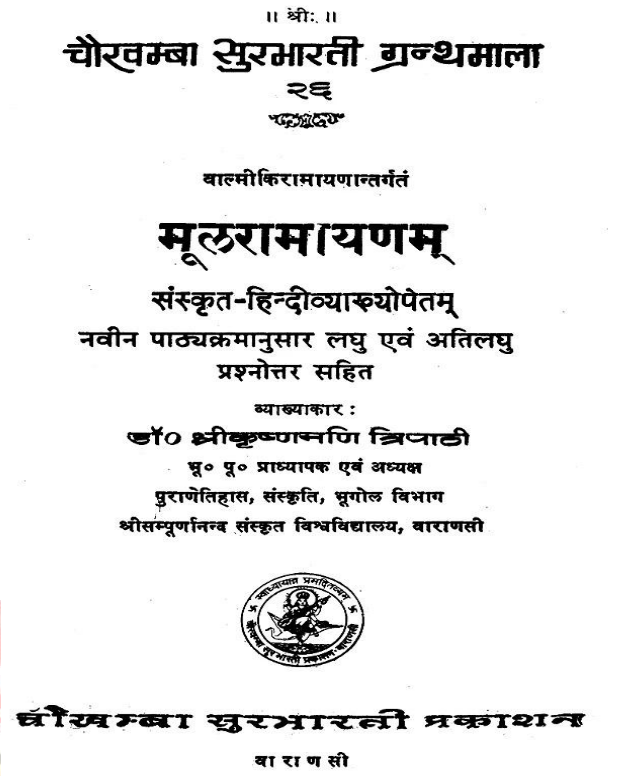
॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
२६

वाल्मीकिरामायणान्तर्गतं

मूलरामायणम्

संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम्
नवीन पाठ्यक्रमानुसार लघु एवं अतिलघु
प्रश्नोत्तर सहित

व्याख्याकार :
डॉ० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी
भू० पू० प्राध्यापक एवं अध्यक्ष
पुराणेतिहास, संस्कृति, भूगोल विभाग
श्रीसम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

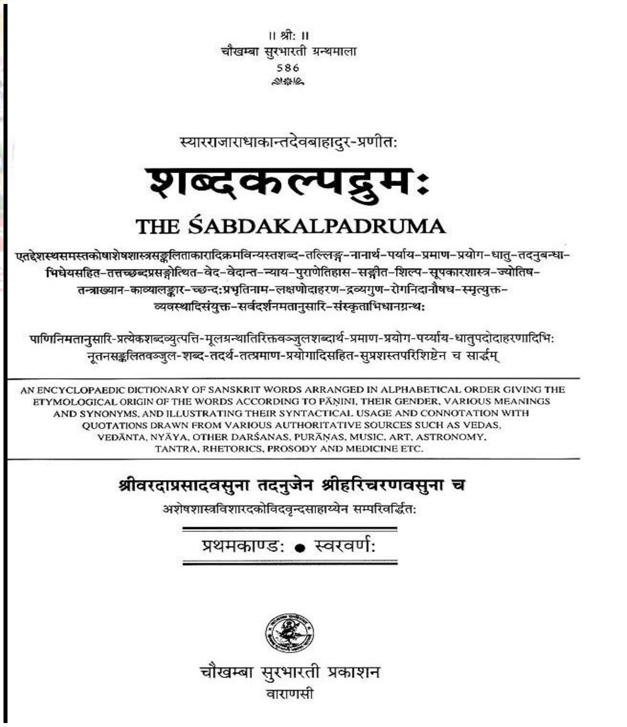
॥ श्रीः ॥
चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
586

स्याारराजाराधाकान्तदेवबाहादुर-प्रणीत:

शब्दकल्पद्रुमः

THE ŚABDAKALPADRUMA

एतद्देशस्थसमस्तकोषाशेषशास्त्रसङ्कलिताकारादिक्रमविन्यस्तशब्द-तल्लिङ्ग-नानार्थ-पर्याय-प्रमाण-प्रयोग-धातु-तदनुबन्धाभिधेयसहित-तत्तच्छब्दप्रसङ्गोत्थित-वेद-वेदान्त-न्याय-पुराणेतिहास-सङ्गीत-शिल्प-सूपकारशास्त्र-ज्योतिष-तन्त्राख्यान-काव्यालङ्कार-च्छन्दःप्रभृतिनाम-लक्षणोदाहरण-द्रव्यगुण-रोगनिदानौषध-स्मृत्युक्त-व्यवस्थादिसंयुक्त-सर्वदर्शनमतानुसारि-संस्कृताभिधानग्रन्थः

पाणिनिमतानुसारि-प्रत्येकशब्दव्युत्पत्ति-मूलग्रन्थातिरिक्तवञ्जुलशब्दार्थ-प्रमाण-प्रयोग-पर्य्याय-धातुपदोदाहरणादिभिः नूतनसङ्कलितवञ्जुल-शब्द-तदर्थ-तत्प्रमाण-प्रयोगादिसहित-सुप्रशस्तपरिशिष्टेन च सार्द्धम्

AN ENCYCLOPAEDIC DICTIONARY OF SANSKRIT WORDS ARRANGED IN ALPHABETICAL ORDER GIVING THE ETYMOLOGICAL ORIGIN OF THE WORDS ACCORDING TO PĀṆINI, THEIR GENDER, VARIOUS MEANINGS AND SYNONYMS, AND ILLUSTRATING THEIR SYNTACTICAL USAGE AND CONNOTATION WITH QUOTATIONS DRAWN FROM VARIOUS AUTHORITATIVE SOURCES SUCH AS VEDAS, VEDĀNTA, NYĀYA, OTHER DARŚANAS, PURĀṆAS, MUSIC, ART, ASTRONOMY, TANTRA, RHETORICS, PROSODY AND MEDICINE ETC.

श्रीवरदाप्रसादवसुना तदनुजेन श्रीहरिचरणवसुना च
अशेषशास्त्रविशारदकोविदवृन्दसाहाय्येन सम्परिवर्द्धितः

प्रथमकाण्डः • स्वरवर्णः

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

पणिनि व्याकरण, श्री वाल्मीकि रामायण सम्बद्ध अन्य ग्रन्थ

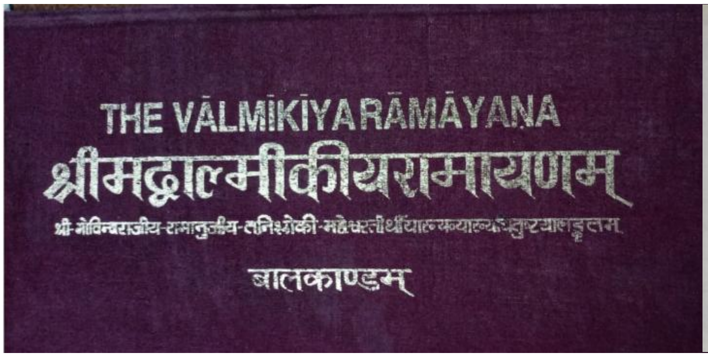

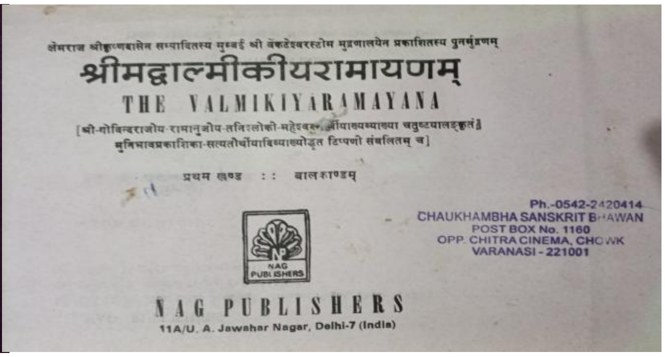

वा.रा.भ. ॥२३॥ उत्स्मयित्वेति । महाबलः अपरिमेयबलः । महाबाहुः बलानुगुणकार्यकरणसमर्थभुजः रामः अस्थि प्रेक्ष्य उत् स्मयित्वा कियन्मात्रमेतदित्यनादृत्य स्मित्वा । इडार्पः । पादाङ्गुष्ठेन संपूर्णमन्यूनं दशयोजनम् । पात्रादित्वात्समाहारे ङीबभावः । अत्यन्तसंयोगे द्वितीया । उत्क्षिप उद्यम्य चिक्षेप । "व्यवहिताश्च" इति उपसर्गस्य व्यवहितप्रयोगः । वालिना पादेन क्षिप्तम्, रामेण तु पादाङ्गुष्ठेन उत्क्षिप्यते । तेन द्वे धनुःशते. अनेन दशयोजनमिति विशेषः ॥ ६३ ॥ चिरं युद्धपरिश्रान्तेन वालिना आर्द्रं शरीरं प्रक्षिप्तम्, त्वया तु स्वस्थेन शुष्कमित्यनाश्वसन्तं प्रति प्रत्ययान्तरमकरोदित्याह–विभेदेति । अत्र राम इत्यनुपज्यते । पुनश्च सप्त सालान् सर्जकतरून् तत्समीपस्थं गिरिं रसातलम् अधोलोकेषु षष्ठलोकं च प्रत्ययं विश्वासं जनयन् प्रत्ययजननार्थम् । "लक्षणहेत्वोः–" इति शतृप्रत्ययः । एकेन महेषुणा बिभेद । महेषुणेत्यनेन सुग्रीवकार्यसाधनाय रामेण तत्तपरशुधारणं कृतमिति

ती.बा.कां. स० १

उत्स्मयित्वा महाबाहुः प्रेक्ष्य चास्थि महाबलः । पादांगुष्ठेन चिक्षेप सम्पूर्णं दशयोजनम् ॥ ६३ ॥
बिभेद च पुनस्तालान् सप्तैकेन महेषुणा । गिरिं रसातलं चैव जनयन् प्रत्ययं तदा ॥ ६४ ॥
ततः प्रीतमनास्तेन विश्वस्तः स महाकपिः । किष्किन्धां रामसहितो जगाम च गुहां तदा ॥ ६५ ॥

ध्वन्यते ॥६४॥ तत इति । ततः सालादिभेदनानन्तरं तेनातिमानुषचरित्रेण विश्वस्तः अयमवश्यं वालिहननक्षम इति विश्वासं प्राप्तः, प्रीतमनाः अचिरादेव राज्यं लप्स्य इति सन्तुष्टचित्तः, महाकपिः आत्मानं कपिराजं मन्यमानः स सुग्रीवः रामसहितः सन् तदा तस्मिन्नेव काले किष्किन्धां किष्किन्धाख्यां

उत्स्मयित्वेति । महाबाहुः-बाह्वोर्महत्त्वं नाम–अङ्गुल्येकदेशेन लोकविरोधिसकलदैत्यादिहननशक्तत्वम् । तथा युद्धकाण्डे-" पिशाचान् दानवान् यक्षान् पृथिव्यां चैव राक्षसान् । अङ्गुल्यग्रेण तान् हन्यामिच्छन् हरिगणेश्वर ॥ " इति । महाबलः अपरिच्छेद्यबलो रामः ज्ञानिनोऽपि मुह्यन्ति किं वनकपिरित्युत्स्मयित्वा उद्गारमीषद्धास्यं कृत्वा अस्थिनिचयरूपं शरीरं प्रेक्ष्य दशयोजनपरिमितं देशं संपूर्णं यथा तथा पादाङ्गुष्ठेन चिक्षेप क्षिप्तवान् ॥ ६३ ॥ बिभेद चेति । तदानीमार्द्रं शरीरमिदानीं शुष्कमिति सुग्रीवस्य विमर्शे सति पुनः प्रत्ययं विश्वासं जनयन् । हेतौ शतृप्रत्ययः । तदा तस्मिन् काले सप्तसालवृक्षान् गिरिं तत्समीपपर्वतं च रसातलं च । षष्ठो लोको रसातलम् । एकेन महेषुप्रयोगेणैव बिभेद । राम इति शेषः । एकसालमात्रभेदने अस्य वालिना साम्यशङ्का जायते तन्माभूदिति तन्निवृत्त्यर्थमचोदितानामप्यन्यसालगिरिप्रस्थादीनां भेदनमिति मन्तव्यम् ॥६४॥ तत इति । ततः सालभेदनानन्तरं तेन-सालादिभेदनेन, विश्वस्तः-विश्वासं प्राप्तः, सर्वात्मना रामो दर्शनमात्रेण ॥२३॥

गुहां गुहावत्पर्वतमध्यवर्तिनीं पुरीं जगाम । चकारेण पुनर्गमनं समुच्चीयते ॥ ६५ ॥ ततः किष्किन्धागमनानन्तरम् हरिवरः आत्मनः कपिवरत्वनिश्चयवान्, हेमपिङ्गलः स्वर्णवत्पिङ्गलवर्णः. हर्षप्रकर्षेण निवृत्तवैवर्ण्य इत्यर्थः । सुग्रीवो गर्जितानुगुणकण्ठध्वनिः । अगर्जत् घोषं चकार । महता पूर्वगर्जितविलक्षणेन । तेन नादेन हेतुना हरिवरो वाली गुहान्निर्जगाम ॥६६॥ अनुमान्येति । वाली तदा निर्गमनकाले, ताराम्-अद्य वनादागतेनाङ्गदेन सुग्रीवो रामसहायस्तिष्ठतीति कथितम् अद्य पराजितो निर्गतः पुनरागतः अतस्त्वद्गमनमनुचितामिति वारयन्तीं ताराम् । अनुमान्य धार्मिकाग्रेसरो रामः कथं मामनपराधिनं हन्यादिति परिसान्त्व्य सुग्रीवेण समागतः, अयुध्यतेत्यर्थः । राघवः महाकुलप्रसूतत्वेन धर्मसूक्ष्मज्ञः तत्र युद्धभूमौ एनं परेण युद्धकृतमपि वालिनम्, तदा परेण युद्धकाले । चोऽवधारणार्थः । एकेनैव शरेण निजघान । द्वितीयशरप्रयोगे तदाभिमुख्येन तद्वधो दुर्लभ इति भावः । युद्धेऽभिमुखस्य बलं

ततोऽगर्जद्धरिवरः सुग्रीवो हेमपिङ्गलः । तेन नादेन महता निर्जगाम हरीश्वरः ॥ ६६ ॥
अनुमान्य तदा तारां सुग्रीवेण समागतः । निजघान च तत्रैनं शरेणैकेन राघवः ॥ ६७ ॥
ततः सुग्रीववचनाद्धत्वा वालिनमाहवे । सुग्रीवमेव तद्राज्ये राघवः प्रत्यपादयत् ॥ ६८ ॥
स च सर्वान् समानीय वानरान् वानरर्षभः । दिशः प्रस्थापयामास दिदृक्षुर्जनकात्मजाम् ॥ ६९ ॥

वालिनमेव गच्छतीति वरप्रसिद्धिः ॥६७॥ तत इति । सुग्रीववचनात्–" वालिनं जहि काकुत्स्थ मया बद्धोऽयमञ्जलिः " इति सुग्रीवप्रार्थनावचनात् । आहवे सुग्रीवस्य युद्धे वालिनं हत्वा । ततः वालिवधानन्तरं राघवः तद्राज्ये वालिराज्ये सुग्रीवमेव प्रत्यपादयत् स्थापयामासेत्यर्थः ॥६८॥ अथ सुग्रीवस्य प्रत्युपकारं दर्शयति–स चेति । वानरर्षभः वानरराजत्वेनाभिषिक्तः स च सुग्रीवोऽपि जनकात्मजां दिदृक्षुः द्रष्टुमिच्छुः सन् सर्वान् नानादेशनिवासिनो

वालिनं हनिष्यतीति विश्वासं प्राप्तः, प्रीतमनाः कपिराज्यमचिरादेव मम हस्तगतं भविष्यतीति सन्तुष्टान्तरङ्ग इत्यर्थः । तदा तस्मिन्नेव काले किष्किन्धां गुहां पर्वतान्तरावकाशे तत्र निर्मितत्वात् किष्किन्धापि गुहाशब्देनोच्यते । जगाम चेति योजना ॥ ६५ ॥ तत इति । सुग्रीवः अगर्जत् सिंहनादं कृतवान् । तेन सिंहनादेन हेतुना हरीश्वरः वाली गुहान्निर्जगाम ॥ ६६ ॥ अनुमान्येति । तदा निर्गमनसमये तारामनुमान्य सुग्रीवं रामसहायमङ्गदमुखादवगत्य युद्धनिर्गमनं वारयन्तीं तारां धर्मज्ञो रामो ममापकारं न करिष्यतीत्यादिसान्त्ववचनैरनुमतिं प्रापय्य सुग्रीवेण सह युद्धाय समागतोऽभवत्, तत्रैनमेकेनैव शरेण निजघान ॥६७॥ तत इति । सुग्रीववचनात् "वालिनं जहि काकुत्स्थ—" इत्येवंरूपात् आहवे वालिनं हत्वा तद्राज्ये वालिराज्ये सुग्रीवमेव प्रत्यपादयत् प्रतिष्ठापितवान् ॥ ६८ ॥ स चेति । स च

श्री वाल्मीकि रामायण सम्बद्ध प्रामाणिक व्याख्यान्

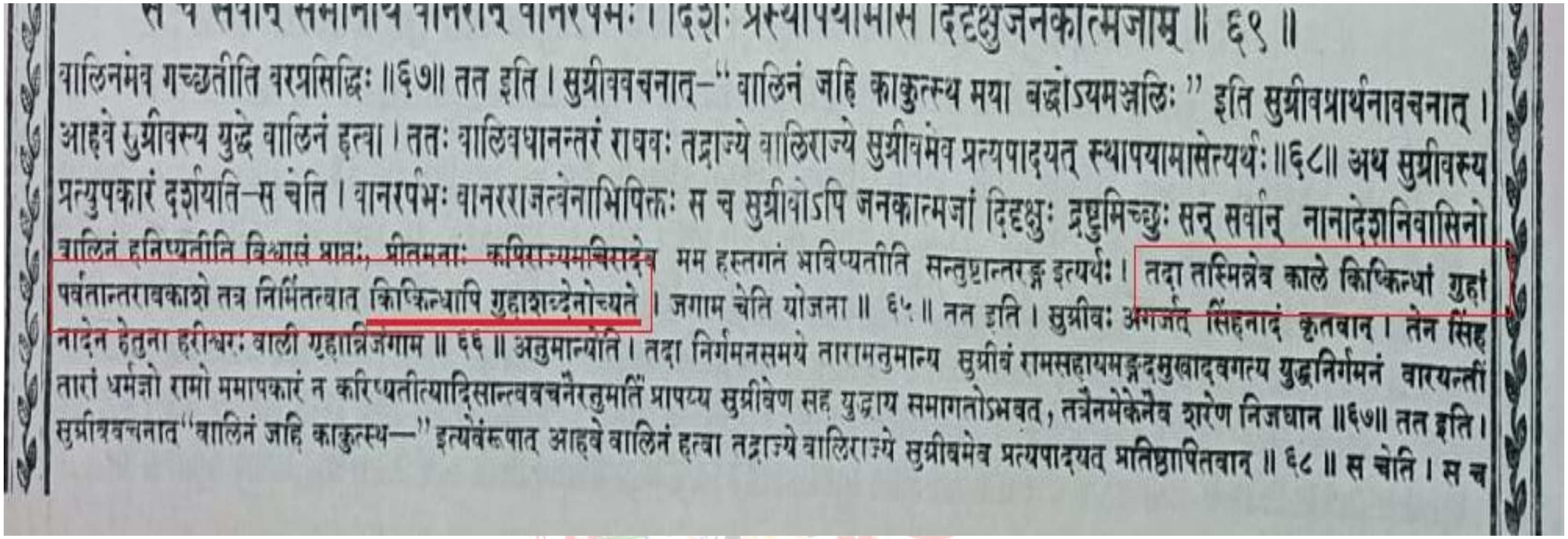
स च सर्वान् समानीय वानरान् वानरर्षभः । दिशः प्रस्थापयामास दिदृक्षुर्जनकात्मजाम् ॥ ६९ ॥

वालिनमेव गच्छतीति वरप्रसिद्धिः ॥६७॥ तत इति । सुग्रीववचनात्–"वालिनं जहि काकुत्स्थ मया बद्धोऽयमञ्जलिः" इति सुग्रीवप्रार्थनावचनात् । आहवे सुग्रीवस्य युद्धे वालिनं हत्वा । ततः वालिवधानन्तरं राघवः तद्राज्ये वालिराज्ये सुग्रीवमेव प्रत्यपादयत् स्थापयामासेत्यर्थः ॥६८॥ अथ सुग्रीवस्य प्रत्युपकारं दर्शयति–स चेति । वानरर्षभः वानरराजत्वेनाभिषिक्तः स च सुग्रीवोऽपि जनकात्मजां दिदृक्षुः द्रष्टुमिच्छुः सन् सर्वान् नानादेशनिवासिनो वालिनं हनिष्यतीति विश्वासं प्राप्तः, प्रीतमनाः कपिराज्यमचिरादेव मम हस्तगतं भविष्यतीति सन्तुष्टान्तरङ्ग इत्यर्थः । तदा तस्मिन्नेव काले किष्किन्धां गुहां पर्वतान्तरावकाशे तत्र निर्मितत्वात् किष्किन्धापि गुहाशब्देनोच्यते । जगाम चेति योजना ॥ ६५ ॥ नत इति । सुग्रीवः अगर्जत् सिंहनादं कृतवान् । तेन सिंहनादेन हेतुना हरीश्वरः वाली गुहात्रिर्जगाम ॥ ६६ ॥ अनुमान्येति । तदा निर्गमनसमये तारामनुमान्य सुग्रीवं रामसहायमङ्गदमुखादवगत्य युद्धनिर्गमनं वारयन्तीं तारां धर्मज्ञो रामो ममापकारं न करिष्यतीत्यादिसान्त्ववचनैरनुमतिं प्रापय्य सुग्रीवेण सह युद्धाय समागतोऽभवत्, तत्रैनमेकेनैव शरेण निजघान ॥६७॥ तत इति । सुग्रीववचनात् "वालिनं जहि काकुत्स्थ–" इत्येवंरूपात् आहवे वालिनं हत्वा तद्राज्ये वालिराज्ये सुग्रीवमेव प्रत्यपादयत् प्रतिष्ठापितवान् ॥ ६८ ॥ स चेति । स च

तत इति । ततः सालभेदनानन्तरं तेन सालादिभेदनेन, विश्वस्तः विश्वासं प्राप्तः, सर्वात्मना रामो दर्शनमात्रेण वालिनं हनिष्यतीति विश्वासं प्राप्तः, प्रीतमनाः कपिराज्यमचिरादेव मम हस्तगतं भविष्यतीति सन्तुष्टान्तरङ्ग इत्यर्थः । तदा तस्मिन्नेव काले किष्किन्धां गुहां पर्वतान्तरावकाशे तत्र निर्मितत्वात् किष्किन्धापि गुहाशब्देनोच्यते।

जगाम चेति योजना 1.1.65,

7. प्र) इस का अर्थ क्या है ?, स) पर्वतों के बीच में किष्किन्धा नगरी का निर्माण होने के कारण इस किष्किन्धा को ही "गुहा" शब्द से कहते है ,

पर्वतों कि बीच मे मध्य बसा हुआ- किष्किन्धा नगरी

(किष्किन्धा नगरी) मातंग पर्वत से लिया गया चित्र - ऋश्यमूक, किष्किन्धा अञ्जनाद्रि, विप्रकूट, तारा, वाली, गन्धमादन इत्यादि पर्वत

unesco
World Heritage Convention

(पम्पाक्षेत्र, किष्किन्धा हम्पि नगरी) मातंग पर्वत से लिया गया
ऋश्यमूक, किष्किन्धा अञ्जनाद्रि, विप्रकूट, तारा, वाली, गन्धमादन पर्वत

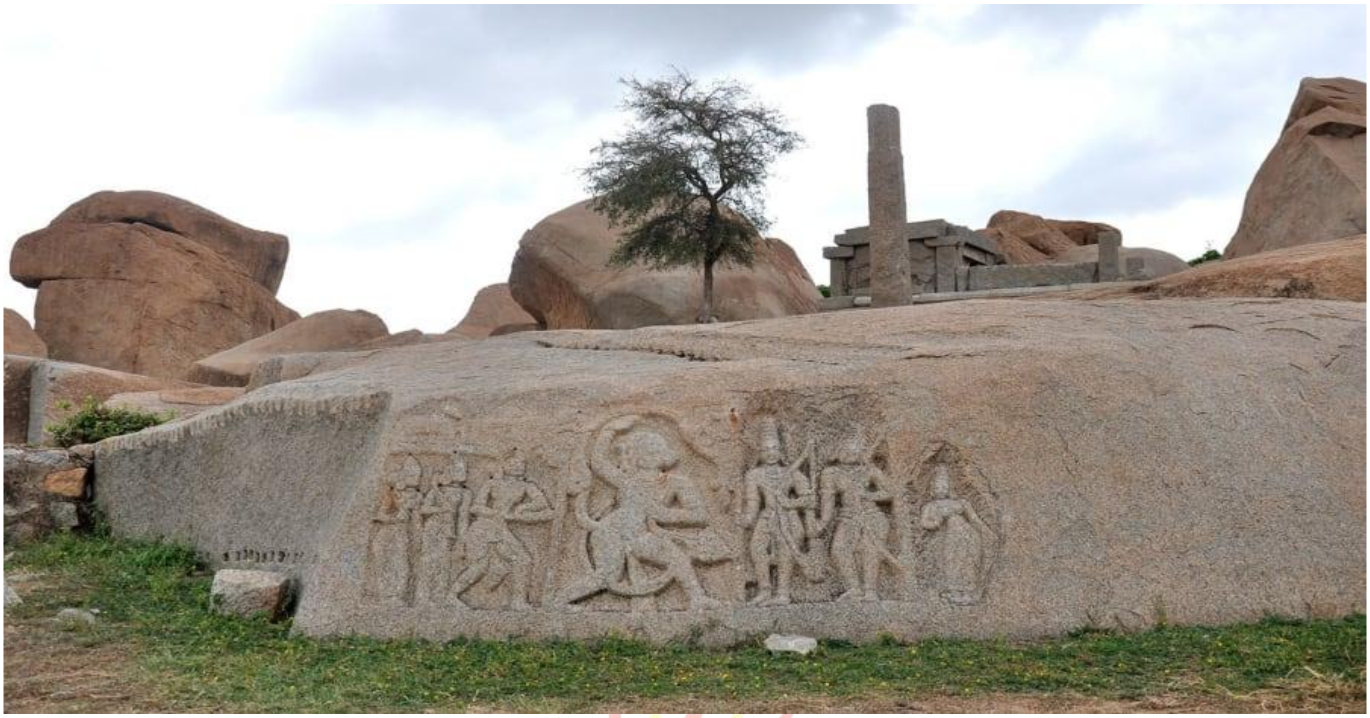

श्री हेमकूट पर्वत मे श्री रामायण चित्र, पम्पा क्षेत्र (हम्पि) श्री हेमकूट पर्वत तुंगभद्रा के किनारे विराजमान भगवान् श्री पम्पा विरूपाक्ष मन्दिर्

GOVERNMENT OF INDIA
ARCHÆOLOGICAL SURVEY OF INDIA
CENTRAL ARCHÆOLOGICAL LIBRARY
ACCESSION NO. 9037
CALL No. Sa8Kr/Val/Par
D.G.A. 79.

THE RÂMÂYAṆA

OF

VÂLMÎKI.

WITH

The Commentary (Tilaka) of Râma.

9037

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL LIBRARY New Delhi

EDITED BY

KÂS'ÎNÂTH PÂṆDURANG PARAB.

SECOND REVISED EDITION.

PRINTED AND PUBLISHED

BY

TUKÂRÂM JÂVAJÎ,

Proprietor of Jâvajî Dâdâjî's "Nirṇaya-sâgara" Press.

Bombay:

1902.

Sa8Kr
Val | Par

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF ARCHAEOLOGY
Library Regr. No.
INDIA

श्री मातंग पर्वत

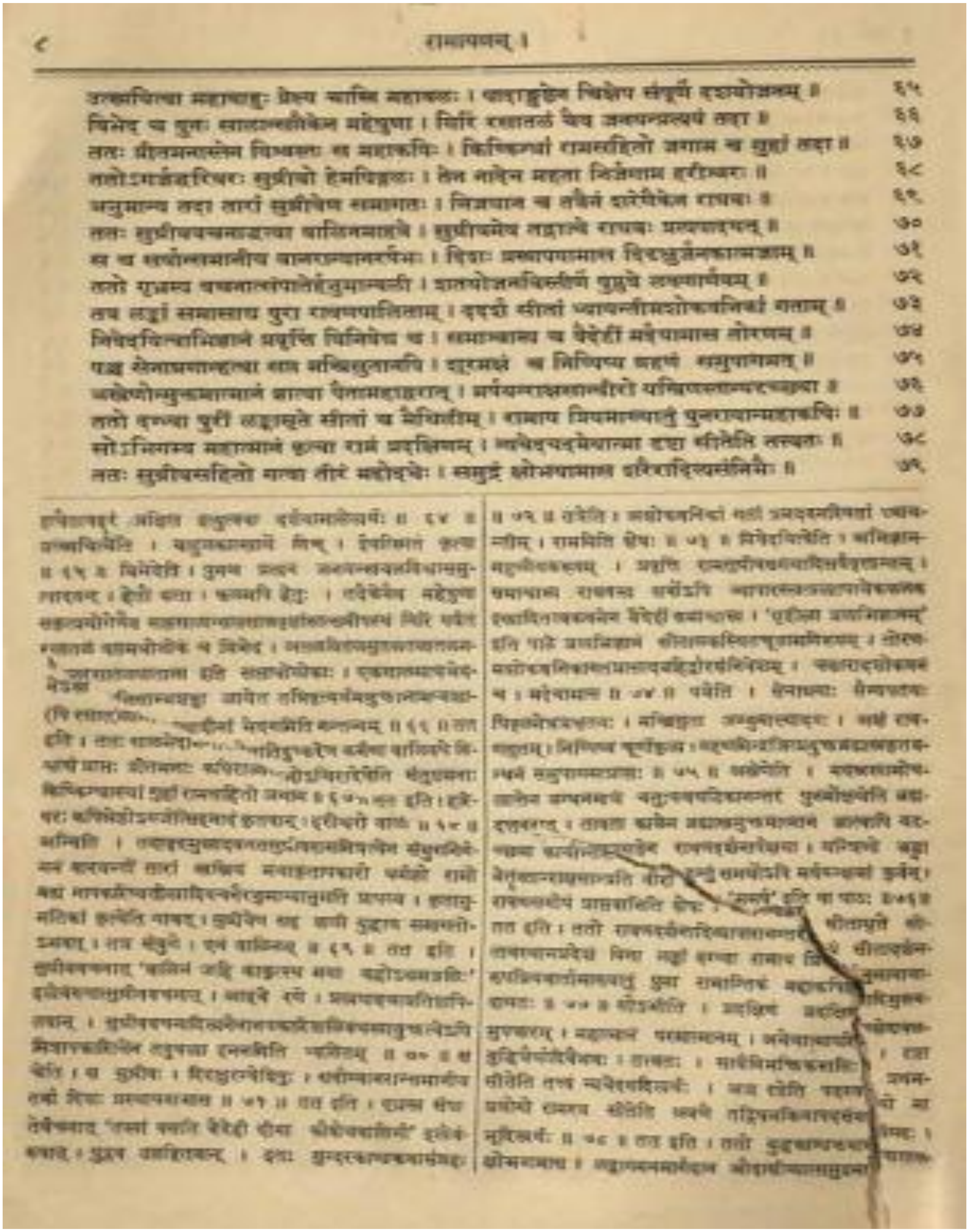

८ रामायणम् ।

उत्स्मयित्वा महाबाहुः प्रेक्ष्य चास्थि महाबलः । पादाङ्गुष्ठेन चिक्षेप संपूर्णं दशयोजनम् ॥ ६५
बिभेद च पुनः सालान्सप्तैकेन महेषुणा । गिरिं रसातलं चैव जनयन्प्रत्ययं तदा ॥ ६६
ततः प्रीतमनास्तेन विश्वस्तः स महाकपिः । किष्किन्धां रामसहितो जगाम च गुहां तदा ॥ ६७
ततोऽगर्जद्धरिवरः सुग्रीवो हेमपिङ्गलः । तेन नादेन महता निर्जगाम हरीश्वरः ॥ ६८
अनुमान्य तदा तारां सुग्रीवेण समागतः । निजघान च तत्रैनं शरेणैकेन राघवः ॥ ६९
ततः सुग्रीववचनाद्धत्वा वालिनमाहवे । सुग्रीवमेव तद्राज्ये राघवः प्रत्यपादयत् ॥ ७०
स च सर्वान्समानीय वानरान्वानरर्षभः । दिशः प्रस्थापयामास दिदृक्षुर्जनकात्मजाम् ॥ ७१
ततो गृध्रस्य वचनात्संपातेर्हनुमान्बली । शतयोजनविस्तीर्णं पुप्लुवे लवणार्णवम् ॥ ७२
तत्र लङ्कां समासाद्य पुरीं रावणपालिताम् । ददर्श सीतां ध्यायन्तीमशोकवनिकां गताम् ॥ ७३
निवेदयित्वाभिज्ञानं प्रवृत्तिं च निवेद्य च । समाश्वास्य च वैदेहीं मर्दयामास तोरणम् ॥ ७४
पञ्च सेनाग्रगान्हत्वा सप्त मन्त्रिसुतानपि । शूरमक्षं च निष्पिष्य ग्रहणं समुपागमत् ॥ ७५
अस्त्रेणोन्मुक्तमात्मानं ज्ञात्वा पैतामहाद्वरात् । मर्षयन्राक्षसान्वीरो यन्त्रिणस्तान्यदृच्छया ॥ ७६
ततो दग्ध्वा पुरीं लङ्कामृते सीतां च मैथिलीम् । रामाय प्रियमाख्यातुं पुनरायान्महाकपिः ॥ ७७
सोऽभिगम्य महात्मानं कृत्वा रामं प्रदक्षिणम् । न्यवेदयदमेयात्मा दृष्टा सीतेति तत्त्वतः ॥ ७८
ततः सुग्रीवसहितो गत्वा तीरं महोदधेः । समुद्रं क्षोभयामास शरैरादित्यसंनिभैः ॥ ७९

श्री वाल्मीकि रामायण सम्बद्ध प्रामाणिक 2 व्याख्यान्

गुहा = किष्किन्धा

ततः प्रीतमनास्तेन विश्वस्तः स महाकपिः । किष्किन्धां रामसहितो जगाम च गुहां तदा ॥ ६७ ॥
ततोऽगर्जद्धरिवरः सुग्रीवो हेमपिङ्गलः । तेन नादेन महता निर्जगाम हरीश्वरः ॥ ६८ ॥
अनुमान्य तदा तारां सुग्रीवेण समागतः । निजघान च तत्रैनं शरेणैकेन राघवः ॥ ६९ ॥
ततः सुग्रीववचनाद्धत्वा वालिनमाहवे । सुग्रीवमेव तद्राज्ये राघवः प्रत्यपादयत् ॥ ७० ॥
स च सर्वान्समानीय वानरान्वानरर्षभः । दिशः प्रस्थापयामास दिदृक्षुर्जनकात्मजाम् ॥ ७१ ॥

हेतुणेत्यनेन सुग्रीवकार्यसाधनाय रामेण तत्सपरशुधारणं कृतमिति ध्वन्यते ॥ ६६ ॥

६७] ति० टी०—तत इति । ततः सालभेदानन्तरं तेनातिदुष्करेण कर्मणा वालिवधे विश्वासं प्राप्तः प्रीतमनाः कपिराज्यलाभोऽचिरादेवेति सन्तुष्टमनाः महाकपिः सुग्रीवः किष्किन्धाख्यां गुहां रामसहितो जगाम ॥ ६७ ॥

रा० टी०—तत इति । ततः शालभेदानन्तरं स महाकपिः सुग्रीवः तेन दुरूहबाणकर्मणा प्रीतमनाः प्रसन्नचित्तः विश्वस्तः वालिकर्मकवधयोग्योयमिति विश्वासं प्राप्तश्चासीदिति शेषः । तदा तस्मिन्काले रामसहितः सन् किष्किन्धां तदाख्यां गुहां जगाम विवेश । प्रीतमना इत्यनेन रघुनाथसदृशो न कश्चिद्बलवानिति निश्चयो जात इति हेतुर्ध्वनितः ॥ ६७ ॥

गो० टी०—ततइति । ततः सालादिभेदनानन्तरं तेनातिमानुषचरित्रेण विश्वस्तः अयमवश्यं वालिहननक्षम इति विश्वासं प्राप्तः प्रीतमनाः अचिरादेव राज्यं लप्स्ये इति सन्तुष्टचित्तः महाकपिः आत्मानं कपिराजं मन्यमानः स सुग्रीवः रामसहितः सन् तदा तस्मिन्नेव काले किष्किन्धां किष्किन्धाख्यां गुहां गुहावत्पर्वतमध्यवर्त्तिनीं पुरीं जगाम । चकारेण पुनर्गमनं समुच्चीयते ॥ ६७ ॥

६८] ति० टी०—तत इति । हरिवरः कपिश्रेष्ठोऽगर्जत्सिंहनादं कृतवान् । हरीश्वरो वाली ॥ ६८ ॥

रा० टी०—ततइति । ततो गुहागमनानन्तरं हेमपिङ्गलः सुवर्णवर्णसदृशवर्णः हरिवरः सुग्रीवः अगर्जत् । सुग्रीववृत्तमुक्त्वा वालिवृत्तमाह—महता अन्यकालिकनादविलक्षणेन तेन तात्कालिकसुग्रीवकृतेन नादेन हरीश्वरो वानरराजो वाली निर्जगाम । हेमपिङ्गल इत्यनेन सुग्रीवस्य शोकजनितवैवर्ण्यध्वंसः सूचितः ६८

गो० टी०—ततः किष्किन्धागमनानन्तरं हरिवरः आत्मनः कपिवरत्वनिश्चयवान् हेमपिङ्गलः स्वर्णवत्पिङ्गलवर्णः । हर्षप्रकर्षेण निवृत्तवैवर्ण्य इत्यर्थः । सुग्रीवो गर्जितानुगुणकण्ठध्वनिः अगर्जत् घोषं चकार । महता पूर्वगर्जितविलक्षणेन तेन नादेन हेतुना हरिवरो वाली गृहान्निर्जगाम ॥ ६८ ॥

६९–७०] ति० टी०—अन्विति । तदाङ्गदमुखादवगतसुग्रीवराममित्रत्वेन संयुगनिर्गमनं वारयन्तीं तारां स्वप्रियं मयाऽकृतापकारो धर्मज्ञो रामो मां नापकरिष्यतीत्यादिवचनैरनुमान्यानुमतिं प्रापय्य । कृतानुमतिकां कृत्वेति यावत् । सुग्रीवेण सह वाली युद्धाय समागतोऽभवत् । तत्र संयुगे । एनं वालिनम् ॥ ६९ ॥ ततइति । सुग्रीववचनात् 'वालिनं जहि काकुत्स्थ मया बद्धोऽयमञ्जलिः' इत्येवंरूपात्सुग्रीववचनात् । आहवे रणे । प्रत्यपादयत्प्रतिष्ठापितवान् । सुग्रीववचनादित्यनेनानपकारिवालिवधस्यायुक्तत्वेऽपि मित्रापकारित्वेन तदुक्त्या हननमिति ध्वनितम् ॥ ७० ॥

रा० टी०—अनुमान्येति । तदा तस्मिन्काले रामसुग्रीवयोर्मैत्री जातेति श्रूयते अतः स जेतुमशक्य इति प्रतीयते अतस्तत्र न गन्तव्यमिति वदन्तीं तारां स्वप्रियमनुमान्य धर्मात्मा राघवोऽनपराधिनं मां न हन्तेत्यादिवचनैः सन्तोष्य सुग्रीवेण समागतो वाली युयुधे इति शेषः । अर्धं पृथगन्वयि । निजघानेति । तत्र तस्मिन् आहवे सङ्ग्रामे ततः तस्मात् 'वालिनं जहि काकुत्स्थ' इत्यादिना प्रसिद्धात्सुग्रीववचनात्सुग्रीवप्रार्थनातः एनं वालिनमेकेन शरेण । चकारात्सकृत्प्रयुक्तेन राघवो निजघान भक्तापकारजनितं वालिनो दोषं निवर्त्तयामास । अतएव निशब्दप्रयोगः । वालिवधोत्तरकालिकं वृत्तमाह । राघवो रघुनाथः वालिनं हत्वा तद्राज्ये वालिराज्ये सुग्रीवमेव प्रत्यपादयत् । संस्थापयामासेत्यर्थः । एवकारेणाङ्गदव्यवच्छेदः । सार्द्धश्लोकः सम्मिलितान्वयः । अत्र राघवस्सुग्रीवमैत्रीं श्रुत्वापि अनपराधिनं मां राघवो न हन्तेत्युक्तेः । मित्रत्वेन रघुनाथशरीरभूतः सुग्रीव इत्यंशे वालिनोऽज्ञानं सूचितम् । वालिनो दोषं निवर्तयामासेत्यनेन रघुनाथस्य परमदयालुत्वं सूचितम् ॥ ६९ ॥ ७० ॥

गो० टी०—अनुमान्येति । वाली तदा निर्गमनकाले ताराम्प्य वनादागतेनाङ्गदेन सुग्रीवो रामसहायस्तिष्ठतीति कथितम् । अद्य पराजितो निर्गतः पुनरागतः अतस्त्वद्गमनमनुचितमिति वारयन्तीं तारामनुमान्य धार्मिकाग्रेसरो रामः कथं मामनपराधिनं हन्यादिति परिसान्त्व्य सुग्रीवेण समागतः । अयुध्यतेत्यर्थः । राघवः महाकुलप्रसूतत्वेन धर्मसूक्ष्मज्ञः तत्र युद्धभूमौ एनं परेण युद्धकृतमपि वालिनं तदा परेण युद्धकाले । चोवधारणार्थः । एकेन शरेण निजघान । द्वितीयशरप्रयोगे तदाभिमुख्येन तद्वधो दुर्लभ इति भावः । युद्धेऽभिमुखस्य बलं वालिनमेव गच्छतीति वरप्रसिद्धिः ॥६९॥ ततइति । सुग्रीववचनात्सुग्रीवप्रार्थनावचनात् । आहवे सुग्रीवस्य युद्धे वालिनं हत्वा ततः वालिवधानन्तरं राघवः तद्राज्ये वालिराज्ये सुग्रीवमेव प्रत्यपादयत् स्थापयामासेत्यर्थः ७०

७१] ति० टी०—स चेति । स सुग्रीवः । दिदृक्षुरन्वेषिषुः सर्वान्वानरान्समानीय सर्वा दिशः प्रस्थापयामास ॥७१॥

रा० टी०—राज्यप्राप्त्यनन्तरं सुग्रीवकृत्यमाह—सचेत्या-

श्री वाल्मीकि रामायण सम्बद्ध प्रामाणिक 3 व्याख्यान्

ततो वामं तिरस्कृत्य पुरस्कृत्य च दक्षिणम् ।
धन्यो वन्यशरण्यां तामरण्यानीं स्म गाहते ॥ ३२ ॥

वामं अशुभसूचकं काकं दक्षिणं शुभसूचकं खञ्जरीटम् । 'महारण्यमरण्यानी' इत्यमरः । ततो वनान्तरे भ्रमन्किष्किंधामधिश्रित्य ॥ ३२ ॥

किं च–

किष्किन्धाद्रौ रौद्ररुद्रावतारं दृष्ट्वा रामो मारुतिं वाचमूचे ।
सीता नीता चेनचित्कापि दृष्टा हृष्टः कष्टं संहरन्प्राह वीरः ३३

किष्किन्धा गुहा तद्युक्तोऽद्रिः किष्किन्धाद्रिस्तत्र रौद्ररसाश्रयो रौद्रः एतादृशो यो रुद्रः तदवतारम् । भो मारुते, केनचित्पापेन सीता नीता हृता । एतच्छ्रुत्वा हृष्टः यातरोषो हनुमान्रामं कष्टं सम्परिहरन्नाह ॥ ३३ ॥

पापेनाकृष्यमाणा रजनिचरवरेणाम्बरेण व्रजन्ती
किष्किन्धाद्रौ मुमोच प्रचुरमणिगणैर्भूषणान्यर्चितानि ।
हा राम प्राणनाथेत्यहह जहि रिपुं लक्ष्मणेनालपन्ती
यानीमानीति तानि क्षिपति रघुपुरः कापि रामाञ्जनेयः॥ ३४ ॥

पापेनेति । किष्किन्धाद्रौ आञ्जनेयो हनूमानिति तान्याभरणानि रघुपतिपुरः चिक्षेप । तानि कानीत्याह । अम्बरेण आकाशमार्गेणाकृष्यमाणा कापि रामा यानि किष्किन्धाद्रौ मुमोच ॥ ३४ ॥

रामः सकरुणं सबाष्पम्–

जानक्या एव जानामि भूषणानीति नान्यथा ।
वत्स लक्ष्मण जानीषे पश्य त्वमपि तत्त्वतः ॥ ३५ ॥

लक्ष्मणः सबाष्पम्–

कुण्डले नैव जानामि नैव जानामि कङ्कणे ।
नूपुरावेव जानामि नित्यं पादाभिवन्दनात् ॥ ३६ ॥

अन्यथा सं देहम् । तत्त्वतः सीतायाः सन्ति न वेति ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

श्री हनुमन्नाटक से प्राप्त अनेक उदाहरण

(१. ५५, ३–४)।

किष्किन्धा, एक पर्वतीय गुफा का नाम है जहाँ सुग्रीव का वालिन् के साथ द्वन्द्व हुआ था (१. १, ६९)। एक नगर का नाम है जिसके मुखद्वार के पास मायाविन् ने वालिन् को ललकारा था (४. ९, ५)। वालिन् को मृत जानकर सुग्रीव यहाँ लौट आये (४. ९, १९)। 'किष्किन्धामतुलप्रभाम्', (४. ११, २१)। वालिन् का नगर (४. ११, २४)। महाबली दुन्दुभि किष्किन्धा पुरी के द्वार पर आकर भूमि को प्रकम्पित करता हुआ जोर-जोर से गर्जन करने लगा, मानो दुन्दुभि का गम्भीर नाद हो रहा हो (४. ११, २६)। राम इत्यादि को साथ लेकर सुग्रीव किष्किन्धा की ओर बढ़े (४. १२, १३–१४)। श्रीराम के वचन से आश्वस्त होकर सुग्रीव राम के साथ पुनः किष्किन्धापुरी में जा पहुँचे (४. १२, ४२)। 'किष्किन्धा...वालिविक्रमपालिताम्', (४. १३, १)। 'दुराधर्षां किष्किन्धां वालिपालिताम्', (४. १३, २९)। 'सुरेशात्मजवीर्यपालिता', (४. १३, ३०)। 'दृष्ट्वा रामं क्रियादक्षं सुग्रीवो वाक्यमब्रवीत् । हरिवागुरया व्याप्तां तप्तकाञ्चनतोरणाम् ॥ प्राप्ताः स्म ध्वजयन्त्राढ्यां किष्किन्धां वालिनः पुरीम । प्रतिज्ञा या कृता वीर त्वया वालिवधे

सखाशालाका: ॥ ६६ ॥

ततः प्रीतमनास्तेन विश्वस्तस्स महाकपिः।
किष्किन्धां रामसहितो जगाम च गुहां तदा ॥ ६७ ॥

ततः—अनन्तरं भगवदतिरिक्तेन येन केन चिदपि दुष्करेण तेन कर्मणा विश्वस्तः—प्राप्तविस्रंभः । इडभावश्छान्दसः । प्रीतमनाश्च महाकपिः किष्किन्धाख्यां गुहां रामसहितो जगाम । पारस्करप्रभृतिषु 'किष्किन्धा गुहा' इति वचनात् षत्वम् ॥ ६७ ॥

ततोऽगर्जद्धरिवरः सुग्रीवो हेमपिङ्गलः ।
तेन नादेन महता निर्जगाम हरीश्वरः ॥ ६८ ॥

ततः अगर्जत् इति पदम् । हरीश्वरो वाली ॥ ६८ ॥

* वस्तुतस्त्वत्र रसातलपदं 'अधोभुवनपातालबलिसद्मरसातलम्' इति कोशानु-

श्री वाल्मीकि रामायण शब्द कोष, अन्य सम्बद्ध प्रामाणिक व्याख्यान्

बिभेद च पुनस्सालान्सप्तैकेन महेषुणा । गिरिं रसातलं चैव जनयन्प्रत्ययं तदा ॥ ६४ ॥
ततः प्रीतमनास्तेन विश्वस्तः स महाकपिः । किष्किन्धां रामसहितो जगाम च गुहां तदा ॥६५॥
ततोऽगर्जद्धरिवरः सुग्रीवो हेमपिङ्गलः । तेन नादेन महता निर्जगाम हरीश्वरः ॥ ६६ ॥
अनुमान्य तदा तारां सुग्रीवेण समागतः । निजघान च तत्रैनं शरेणैकेन राघवः ॥ ६७ ॥
ततः सुग्रीववचनाद्धत्वा वालिनमाहवे । सुग्रीवमेव तद्राज्ये राघवः प्रत्यपादयत् ॥ ६८ ॥
स च सर्वान्समानीय वानरान्वानरर्षभः । दिशः प्रस्थापयामास दिदृक्षुर्जनकात्मजाम् ॥ ६९ ॥
ततो गृध्रस्य वचनात्संपातेर्हनुमान्बली । शतयोजनविस्तीर्णं पुप्लुवे लवणार्णवम् ॥ ७० ॥

अनेन दशयोजनमितिविशेषः ॥ ६३ ॥ चिरंयुद्धपरिश्रान्तेनवालिनाआर्द्रशरीरंप्रक्षिप्तं त्वयातुस्वस्थेनशुष्कमित्यनाश्वसन्तंप्रतिप्रत्ययान्तरमकरोदित्याह—बिभेदेति । अत्र रामइत्यनुषज्यते । पुनश्चसप्तसालान् सर्जकतरून् । तत्समीपस्थंगिरिं । रसातलं अधोलोकेषु षष्ठलोकंच । प्रत्ययं विश्वासं । जनयन् प्रत्ययजननार्थं । "लक्षणहेत्वोः—" इतिशतृप्रत्ययः । एकेन महेषुणाबिभेद । महेषुणेत्यनेन सुग्रीवकार्यसाधनायरामेणतप्तपरशुधारणंकृतमितिध्वन्यते ॥ ६४ ॥ ततः सालादिभेदनानन्तरं । तेन अतिमानुषचरित्रेण । विश्वस्तः अयमवश्यंवालिहननक्षमइतिविश्वासंप्राप्तः । प्रीतमनाः अचिरादेवराज्यंलप्स्यइतिसंतुष्टचित्तः । महाकपिः आत्मानंकपिराजंमन्यमानः सः सुग्रीवः । रामसहितःसन् । तदा तस्मिन्नेवकाले । किष्किन्धां किष्किन्धाख्यां । गुहां गुहावत्पर्वतमध्यवर्तिनींपुरीं । जगाम । चकारेण पुनर्गमनंसमुच्चीयते ॥ ६५ ॥ ततः किष्किन्धागमनानन्तरं । हरिवरः आत्मनःकपिवरत्वनिश्चयवान् । हेमपिङ्गलः स्वर्णवत्पिङ्गवर्णः । हर्षप्रकर्षेण निवृत्तवैवर्ण्यइत्यर्थः । सुग्रीवः गर्जितानुगुणकण्ठध्वनिः । अगर्जत् घोषंचकार । महता पूर्वगर्जितविलक्षणेन । तेन नादेनहेतुना । हरिवरः वाली । गृहान्निर्जगाम ॥ ६६ ॥ वाली । तदा निर्गमनकाले । तारां अद्यवनादागतेनाङ्गदेनसुग्रीवोरामसहायस्तिष्ठतीतिकथितं अद्यपराजितोनिर्गतःपुनरागतः अतस्त्वद्गमनमनुचितमितिवारयन्तींतारां । अनुमान्य धार्मिकाग्रेसरोरामःकथंमामनपराधिनंहन्यादितिपरिसान्त्व्य । सुग्रीवेण समागतः अयुध्यतेत्यर्थः । राघवः महाकुलप्रसूतत्वेनधर्मसूक्ष्मज्ञः । तत्र युद्धभूमौ । एनं परेणयुद्धकृतमपिवालिनं । तदा परेणयुद्धकाले । चोवधारणार्थः । एकेनशरेण निजघान । द्वितीयशरप्रयोगेतदाभिमुख्येनतद्वधोदुर्लभइतिभावः । युद्धेऽभिमुखस्यबलं वालिनमेवगच्छतीतिवरप्रसिद्धिः । सुग्रीववचनात् "वालिनंजहिकाकुत्स्थमयाबद्धोऽयमञ्जलिः" इतिसुग्रीवप्रार्थनावचनात् । आहवे सुग्रीवस्ययुद्धे । वालिनंहत्वा । ततः वालिवधानन्तरं राघवः । तद्राज्ये वालिराज्ये । सुग्रीवमेव । प्रत्यपादयत् स्थापयामासेत्यर्थः ॥६७॥६८॥ अथ सुग्रीवस्यप्रत्युपकारंदर्शयति—सचेति । वानरर्षभः वानरराजत्वेनाभिषिक्तः । सच सुग्रीवोपि । जनकात्मजांदिदृक्षुः द्रष्टुमिच्छुःसन् । सर्वान् नानादेशनिवासिनः । वानरान् समानीय आहूय । दिशश्चतस्रःप्रति । प्रस्थापयामास शीघ्रंसीतांदृष्ट्वाऽऽगच्छतेति आदिष्टवानित्यर्थः ॥ ६९ ॥ ततः सुन्दरकाण्डकथांसंगृह्णाति—ततइति । ततः प्रस्थानानन्तरं । बली अपरिच्छेद्यबलः । भूमार्थेमत्वर्थीयः । हनुमान् प्रशस्तहनुः । अन्वर्थसंज्ञेयं । तथाचेन्द्रोवक्ष्यति । "मत्करोत्सृष्टवज्रेणहनुस्तस्यतदाक्षतः । नाम्नैषहरिशार्दूलोभविताहनुमानिति" इति । आभ्यांपदाभ्यांपूर्वकथाप्रस्तावेन जांबवता कृतोत्साहत्वं तदुद्भूतनिरवधिकबलवत्त्वंचद्योत्यते । संपातेः संपातिनामकस्यजटायुर्ज्येष्ठस्यपक्षिणः । वचनात् इतःशतयोजनात्परे समुद्रमध्येलङ्कायांसीतावर्तते तर समुद्रं तांपश्यसीतिवचनात् । शतयोजनविस्तीर्णलवणा-

तीर्थी० एकसालमात्रभेदनेअस्यवालिनासाम्यशङ्काजायतेतन्माभूदितितन्निवृत्त्यर्थं अचोदितानामपिअन्यसालप्रस्थादीनांभेदनमितिमन्तव्यम् । **शिरो०** जनयन् हेत्वर्थकःशतृप्रत्ययः ॥ ६४ ॥ **शिरो०** निजघान भक्तापकारजनितंवालिनोदोषंनिवर्तयामास । अतएवनिशब्दप्रयोगः ॥ ६७ ॥ **तिल०** सुग्रीववचनादित्यनेनानपकारिवालिवधस्यायुक्तत्वेपिमित्रापकारित्वेनतद्रक्त्याहननमितिध्वनितम् । **शिरो०** एवकारेणाङ्गदव्यवच्छेदः ॥ ६८ ॥ **तीर्थी०** चकारात् अशोकवनंचमर्दयामास ॥ ६९ ॥

[पा०] १. घ. समाहूय ।

है जो छाया पकड कर प्राणियों को खींच लेती थी (४. ४१, २६)।

अङ्गिरस, एक प्रजापति का नाम है जो पुलस्त्य के बाद हुये थे (३. १४, ८)। इनके वंशजों ने अपने आश्रम में विघ्न उत्पन्न करने पर हनुमान् को शाप दिया था (७. ३६, ३२–३४)। राजा निमि ने इन्हें अपने यज्ञ-सत्र मे आमन्त्रित किया था (७. ५५, ९)।

अज, नाभाग के पुत्र और दशरथ के पिता का नाम है (१. ७०, ४३)।

१. अञ्जन, एक पर्वत का नाम है जहाँ निवास करने वाले वानरों को आमन्त्रित करने के लिये सुग्रीव ने हनुमान् को आदेश दिया; इस पर्वत पर रहने वाले वानर काजल और मेघ के समान काले थे (४. ३७, ५)। सुग्रीव की आज्ञा पा कर यहाँ से तीन करोड़ वानर आये (४. ३७, २०)।

२. अञ्जन, एक हाथी का नाम है (७. ३१, ३६)।

अञ्जना, कपियोनि में अवतीर्ण पुञ्जिकस्थला नामक अप्सरा का नाम है: 'अप्सराऽप्सरसां श्रेष्ठा विख्याता पुञ्जिकस्थला। अञ्जनेति परिख्याता पत्नी केसरिणो हरेः॥ विख्याता त्रिषु लोकेषु रूपेणाप्रतिमा भुवि।,' (४. ६६ ८–९)। "पुञ्जिकस्थला नाम से विख्यात समस्त अप्सराओं में अग्रगण्य थी। एक समय शापवश यह कपियोनि मे अवतीर्ण हुई। उस समय यह वानरराज महामनस्वी कुञ्जर की पुत्री हुई और इच्छानुसार रूप धारण कर सकती थी। इस भूतल पर इसके रूप की समानता करने वाली अन्य कोई स्त्री नही थी। इसी का नाम अञ्जना पड़ा और यह वानरराज केसरी की पत्नी हुई। एक दिन जब यह मानवी स्त्री का शरीर धारण करके पर्वत शिखर पर विचरण कर रही थी तब वायु देवता ने इसके वस्त्र का हरण कर लिया और अव्यक्त रूप से इसका आलिङ्गन करते हुये इसके साथ मानसिक संकल्प से समागम किया जिसके फलस्वरूप इसने एक गुफा मे हनुमान् को जन्म दिया (४. ६६, ८–२०)। ब्रह्मा के भवन की ओर जाते समय रावण ने इसके (पुञ्जिकस्थला के) साथ बलात्कार किया (६. १३, ११–१२)। इस बलात्कार करने के कारण इसने रावण को शाप दिया (६. ६०, ११–१२)।

अतिकाय, एक राक्षस का नाम है जिसकी काया अत्यन्त विशाल थी और जो रावण के साथ युद्धभूमि मे आया था : 'यस्यैव विन्ध्यास्तमहेन्द्रकल्पो धन्वी रथस्थोऽतिरथोऽतिवीरः। विस्फारयंश्चापमतुल्यमानं नाम्नातिकायोऽति-विवृद्धकायः॥', (६. ५९, १६)। यह रावण का पुत्र और कुम्भकर्ण का भतीजा था और इसीलिये कुम्भकर्ण की मृत्यु पर अत्यन्त शोकाकुल हो उठा (६. ६८, ७)। त्रिशिरा के शब्दों (६. ६९, १–७) को सुनकर युद्ध-भूमि

पां यशस्विनीम् । दृष्ट्वैव शुभसर्वाङ्गीं पवनः काममोहितः ॥ १४ ॥
र्यष्वजत मारुतः । मन्मथाविष्टसर्वाङ्गो गतात्मा तामनिन्दिताम् ॥ १५ ॥
ा वाक्यमब्रवीत् । एकपत्नीव्रतमिदं को नाशयितुमिच्छति ॥ १६ ॥
तः प्रत्यभाषत । न त्वां हिंसामि सुश्रोणि माभूत्ते मनसो भयम् ॥ १७ ॥
वज्य यशस्विनि । वीर्यवान्बुद्धिसंपन्नस्तव पुत्रो भविष्यति ॥ १८ ॥
महाबलपराक्रमः । लङ्घने प्लवने चैव भविष्यति मया समः ॥ १९ ॥
ते महाकपे । गुहायां त्वां महाबाहो प्रजज्ञे प्लवगर्षभ ॥ २० ॥
दृष्ट्वा महावने । फलं चेति जिघृक्षुस्त्वमुत्पत्याभ्युत्पतो दिवम्॥ २१ ॥
ानां महाकपे । तेजसा तस्य निर्धूतो न विषादं गतस्ततः ॥ २२ ॥

आसीदिति शेषः॥१४॥
ं दीर्घश्रोणीविशिष्टां ता-
ोऽभवदिति शेषः॥१४॥
जत । मन्मथाविष्ट-
अत एव तां गतात्मा
द्विनापि योनिसंबन्धं

ाविष्टं सर्वमङ्गं यस्य
मनो यस्य स पवनः
त ॥ १५ ॥
ात्मा तद्गतचित्तः तां

व्रतं तं धर्मम॥१६॥
सुवृत्ता शोभनवृत्त-
णा उद्विग्नचित्ता सा
ातिर्यस्याः तस्याः मम
यितुं विध्वंसितुं क

परिष्वज्य मनसा गतः भोगकर्तृत्वेन प्राप्तः अतः वीर्यवान् बुद्धिसंपन्नः निखिलवृत्तान्तज्ञस्तव पुत्रो भविष्यति । मनसैवयु-क्त्या व्रतभङ्गाभावो ध्वनितः ॥ १८ ॥

गो० टी०—न केवलं पातिव्रत्यभङ्गाभावः श्रेयोऽपि भवि-ष्यतीत्याह—वीर्यवानिति ॥ १८—२० ॥

१९] ति० टी०—मया मारुतेन ॥ १९ ॥

रा० टी०—महेति । महासत्त्वादिविशिष्टस्तव सुतः लङ्घ-नादौ मया समो भविष्यति ॥ १९ ॥

२०] ति० टी०—ततस्तुष्टा मनसा महादेवततेजःसंक्रम-कथनात् गुहायां तत्पर्वतगुहायाम् तदानीमेवेति भावः ॥२०॥

रा० टी०—एवमिति । एवमुक्त्वा अत एव तुष्टा ते जन-नी गुहायां त्वां प्रजज्ञे जनयामास ॥ २० ॥

२१] ति० टी०—फलमिति। जिघृक्षुरुत्पत्योत्प्लुत्य दिव-मभ्युत्पतः । 'उत्प्लुत्याभ्युत्थितो दिवम्' इति पाठान्तरे उत्प्लुत्य दिवमभ्युत्थित इति योजना । उद्गकालिकभास्करस्याम्रफल-वद्रक्तवृत्तत्वात्फलबुद्धिविषयत्वम् । यथा जातमात्राजादिबालानां प्राचीनवासनया स्तनपानादौ प्रवृत्तिः तथैवास्य जातमात्रस्य वानरोचितफलादानप्रवृत्तिरिति ...

रामानुजशासनं त्वया कपीन्द्र युक्तं मनसाऽप्यपोहितुम् ।
हि ते ज्ञास्यति मानुषं बलं सराघवस्यास्य सुरेन्द्रवर्चसः ॥ २२ ॥

तिमद्रामायणे वाल्मीकीय आदिकाव्ये किष्किन्धाकाण्डे द्वात्रिंशः सर्गः ॥ ३२ ॥

त्रयस्त्रिंशः सर्गः ।

...न्धां प्रवेशितो लक्ष्मणो राजमार्गोभयतोऽद्भुततमान्युपराजभवनाद्याश्चर्याणि विलोकयन्त्यावत्सुग्रीवगृहं प्रविष्टस्तावदनेकविलासोपस्करैरापूर्णेऽन्तर्भवनेऽनेकातोद्यमधुरध्वनिमिश्रितगीतध्वनिं मञ्जुमञ्जीरशिञ्जितादि च श्रुत्वैकान्तेऽवकाशं ददद्धनुष्टङ्कारं विधाय तस्थौ । श्रुतज्याघोषेण सुग्रीवेण प्रेषिता तारा सकलसेनासमानयनाय सुग्रीवकृतनीलप्रेषणादि प्रस्तूय लक्ष्मणसान्त्वे प्रयतते । किंचिच्छान्तरोषो लक्ष्मणस्तारयाऽन्तःपुरं प्रापितः सुग्रीवं ददर्श ।

अथ प्रतिसमादिष्टो लक्ष्मणः परवीरहा । प्रविवेश गुहां रम्यां किष्किन्धां रामशासनात् ॥ १ ॥
द्वारस्था हरयस्तत्र महाकाया महाबलाः । बभूवुर्लक्ष्मणं दृष्ट्वा सर्वे प्राञ्जलयः स्थिताः ॥ २ ॥
निःश्वसन्तं[2] तु तं दृष्ट्वा क्रुद्धं दशरथात्मजम् । बभूवुर्हरयस्त्रास्ता न चैनं पर्यवारयन् ॥ ३ ॥
स तां रत्नमयीं दिव्यां श्रीमान्पुष्पितकाननाम् । रम्यां रत्नसमाकीर्णां ददर्श महतीं गुहाम् ॥ ४ ॥

रा० टी०–प्रसादनोपायमाह–तस्येति । तस्य राघवस्य पादौ मूर्ध्ना प्रणम्य समये प्राप्तकाले भ्रातुर्भार्येव तद्वशे तिष्ठस्व तिष्ठ ॥ २१ ॥

गो० टी०–अञ्जलिं बद्ध्वेत्युक्तं विवृणोति–तस्येति । स्वसमये तिष्ठ तद्वशे च तिष्ठ ॥ २१ ॥

२२] ति० टी०–अपोहितुमुपेक्षितुम् । सराघवस्य सलक्ष्मणस्यास्य रामस्य मानुषं मनुष्यमतिक्रान्तं बलं ते मनो ज्ञास्यति जानात्येव वालिवधादिनेति भावः ॥ २२ ॥

इति श्रीरामाभिरामे श्रीरामीये रामायणतिलके वाल्मीकीय आदिकाव्ये किष्किन्धाकाण्डे द्वात्रिंशः सर्गः ॥ ३२ ॥

रा० टी०–उपसंहरन्नाह–नेति । रामरामानुजयोः शासनं मनसाऽपि अपोहितुं त्यक्तुं त्वया न शक्यम् । तत्र हेतुः–सराघवस्य रामसहितस्य अस्य लक्ष्मणस्य मानुषं मः इयत्ताया अनुपः विध्वंसो यस्मिन् तद्बलं ते मनो ज्ञास्यति जानाति ॥ २२ ॥

इति श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणव्याख्याने रामायणशिरोमणौ किष्किन्धाकाण्डे द्वात्रिंशः सर्गः ॥ ३२ ॥

गो० टी०–न रामेति । सुरेन्द्रवर्चसः सराघवस्य सलक्ष्मणस्य अस्य रामस्य मानुषं बलं दिव्यास्त्रादिबलमन्तरेण केवलं स्वाभाविकं बलं ते मनो ज्ञास्यति हि जानात्येव । सालगिरिभेदनादौ दृष्टचरत्वादिति भावः ॥ २२ ॥

इति श्रीगोविन्दराजविरचिते श्रीरामायणभूषणे मुक्ताहाराख्याने किष्किन्धाकाण्डव्याख्याने द्वात्रिंशः सर्गः ॥ ३२ ॥

१] ति० टी०–अथैवं हनुमद्वचनानन्तरम् । प्रतिसमादिष्टोऽङ्गदात्प्रतिसंदेशं प्राप्तः ॥ १ ॥

रा० टी०–हनुमत्प्रार्थनानन्तरकालिकं लक्ष्मणवृत्तान्तमाह–अथेति । अथ सुग्रीवकर्मकहनुमत्प्रार्थनानन्तरं प्रतिसमादिष्टः गुहाप्रवेशाय अङ्गदेन प्रार्थितः रामशासनादागतो लक्ष्मणः किष्किन्धां प्रविवेश ॥ १ ॥

गो० टी०–अथान्तःपुरं प्रविष्टस्य लक्ष्मणस्य तारया प्रसादनं त्रयस्त्रिंशे–अथेत्यादि । प्रतिसमादिष्टः प्रत्याहूतः अङ्गदेनेति शेषः ॥ १ ॥ २ ॥

२] ति० टी०–स्थिता हरयः प्राञ्जलयो बभूवुरित्यन्वयः २

रा० टी०–द्वारस्था इति । सर्वे द्वारस्थाः हरयः लक्ष्मणं दृष्ट्वा प्राञ्जलयः सन्तः स्थिताः बभूवुः ॥ २ ॥

३] ति० टी०–पर्यवारयन् भयेन लक्ष्मणं परिवार्य गन्तुं नाशक्नुवन्नित्यर्थः ॥ ३ ॥

रा० टी०–निःश्वसन्तमिति । क्रुद्धं दशरथात्मजं दृष्ट्वा हरयः त्रस्ताः बभूवुः अत एव एनं लक्ष्मणं न पर्यवारयन् प्राप्तस्य सह नागच्छन् ॥ ३ ॥

गो० टी०–निश्वसन्तमिति । न चैनं पर्यवारयन् भयेन लक्ष्मणमुपगन्तुं नाशक्नुवन्नित्यर्थः ॥ ३ ॥

४] ति० टी०–पुष्पितानि काननानि यस्यां सा ताम् रत्नसमाकीर्णामनेकोत्तमवस्त्वाक्रान्ताम् ॥ ४ ॥

रा०टी०–स इति । श्रीमान्स लक्ष्मणः रत्नमयीं रत्नप्रचुरां रत्नसमाकीर्णां रत्नैः अनेकविधोत्तमपदार्थैर्व्याप्ताम् ॥ ४ ॥

गो० टी०–स तामिति । रत्नमयीं रत्ननिर्मितां रत्नसमाकीर्णाम् आपणस्थरत्नैः समाकीर्णाम् । हर्म्याः धनिनां वासाः, प्रासादाः देवगृहाः, पद्मानाम् आलेपविशेषाणाम् । ददर्शेति । गिरिनद्यः गिरिनदीः व्यत्ययेन द्वितीया ॥ ४–७ ॥

१ घोरामिति गो. पाठः । २ निश्वसन्तमिति गो. पाठः ।

प्रभञ्जन इवाप्रीतः प्रययौ लक्ष्मणस्ततः ॥ १३ ॥
कामक्रोधसमुत्थेन भ्रातुः क्रोधाग्निना वृतः । पर्यस्यन्गिरिकूटानि द्रुमानन्यांश्च वेगितः ॥ १४ ॥
सालतालाश्वकर्णांश्च तरसा पातयन्बलात् । दूरमेकपदं त्यक्त्वा ययौ कार्यवशाद्द्रुतम् ॥ १५ ॥
शिलाश्च शकलीकुर्वन्पद्भ्यां गज इवाशुगः । दुर्गामिक्ष्वाकुशार्दूलः किष्किन्धां गिरिसंकटे ॥ १६ ॥
तामपश्यद्बलाकीर्णां हरिराजमहापुरीम् । ददर्श वानरान्भीमान्किष्किन्धायां बहिश्चरान् ॥ १७ ॥
रोषात्प्रस्फुरमाणोष्ठः सुग्रीवं प्रति लक्ष्मणः । शैलशृङ्गाणि शतशः प्रवृद्धांश्च महीरुहान् ॥
तं दृष्ट्वा वानराः सर्वे लक्ष्मणं पुरुषर्षभम् ।
जगृहुः कुञ्जरप्रख्या वानराः पर्वतान्तरे ॥ १८ ॥
तान्गृहीतप्रहरणान्सर्वान्दृष्ट्वा तु लक्ष्मणः । बभूव द्विगुणं क्रुद्धो बह्विन्धन इवानलः ॥ १९ ॥
तं ते भयपरीताङ्गाः क्षुब्धं दृष्ट्वा प्लवङ्गमाः । कालमृत्युयुगान्ताभं शतशो विद्रुता दिशः ॥ २० ॥
ततः सुग्रीवभवनं प्रविश्य हरिपुङ्गवाः । क्रोधमागमनं चैव लक्ष्मणस्य न्यवेदयन् ॥ २१ ॥
तारया सहितः कामी सक्तः कपिवृषस्तदा । न तेषां कपिसिंहानां शुश्राव वचनं तदा ॥ २२ ॥

सुग्रीवं प्रति स्वेन वक्तव्यम् उत्तरं तदुपरि सुग्रीवेण वक्तव्यम् प्रत्युत्तरं तदुपरि स्ववक्तव्योत्तरसहितम् मत्वाऽऽलोच्य ॥ १२ ॥

१३] ति० टी०—भ्रातृ रामस्य यः कामो मनोरथस्तज्जन्यो यः क्रोधस्तद्विघातजन्यः क्रोधस्तत्समुत्थेन तज्जन्येन क्रोधाग्निना वृतः, अत एवाप्रीतः प्रभञ्जनो वायुरिव वेगेन प्रययौ ॥ १३ ॥

रा० टी०—यथेति । यथोक्तकारी रामोक्तमनतिक्रम्य सकलकार्यकरणशीलः भ्रातुः कामक्रोधसमुत्थेत्र कामः सीतान्वेषणविषयकोत्कटेच्छा तद्विघातकसुग्रीवानवधानतेत्यर्थः, तस्मात्समुत्थेन जातेन क्रोधाग्निना स्वकोपरूपवह्निना वृतः अत एव अप्रीतः सुग्रीवविषयकप्रीतिरहितः बुद्धया बृहस्पतेः समः रामानुजो लक्ष्मणः सोत्तरं दास्यमानसुग्रीवप्रत्युत्तरसहितमुत्तरं सुग्रीवप्रत्युत्तरानन्तरकालकदास्यमानस्वप्रत्युत्तरं वचनं किंचोत्तरमुत्कृष्टं सोत्तरमुरत्वसहितमुत्तरमित्यर्थः, मत्वा निश्चित्य प्रभञ्जनः वेगेन वायुरिव प्रययौ । श्लोकद्वयमेकान्वयि ॥ १२ ॥ १३ ॥

गो० टी०—यथोक्तेति । यथोक्तं रामोक्तमनतिक्रम्य करोतीति यथोक्तकारी लक्ष्मणः वचनं सुग्रीवं प्रति स्वेन वक्तव्यं वचनं यथोक्तकारीति विशेषणाद्रामोपदिष्टं वचनमिति सिद्धम् । उत्तरं च स्ववचनस्य सुग्रीवेण वक्ष्यमाणमुत्तरं च सोत्तरं स्वेन वक्ष्यमाणोत्तरसहितं मत्वा आलोच्य प्रययाविति संबन्धः। दूरमिति । एकपदं पौरस्त्यपदं दूरं त्यक्त्वा दूरे क्षिप्त्वा । अनेन द्रुतगमनं सूचितं, द्रुतं गच्छन् हि पुरुषः पुरः पादं दूरे क्षिपति ॥ १२–१६ ॥

१४] ति० टी०—तरसोरुवेगेन पर्यस्यन्क्षिपन् । वेगितः संजातवेगः ॥ १४ ॥

रा० टी०—गमनप्रकारं वर्णयन्नाह—सालेति । बलात् तरसा वेगेन सालादीन् पातयन् गिरिकूटानि अन्यांश्च द्रुमान् पर्यस्यन् उत्पाट्य इतस्ततः प्रक्षिपन् गज इव पद्भ्यां शिलाः शकलीकुर्वन् खण्डीकुर्वाणः एकपदं दूरं त्यक्त्वा दूरे दूरे पादं धृत्वेत्यर्थः, वेगितः अतिवेगं प्राप्तः अत एव आशुगः लक्ष्मणः कार्यवशात् द्रुतं ययौ । श्लोकद्वयमेकान्वयि ॥ १४ ॥ १५ ॥

१६–१७] ति० टी०—बलाकीर्णां वानरसेनाव्याप्ताम् । गिरिसंकटे भूधरमध्ये वर्तमानान् ॥ १६ ॥ १७ ॥

रा० टी०—तामिति । गिरिसंकटे पर्वतमध्ये विद्यमानां बलाकीर्णां वानरसेनासंयुक्तामत एव दुर्गां परैरगम्यां हरिराजमहापुरीं तां प्रसिद्धां किष्किन्धां इक्ष्वाकुशार्दूलः लक्ष्मणः अपश्यत् ॥ १६ ॥

रा० टी०—रोषादिति । सुग्रीवं प्रति रोषाद्धेतोः प्रस्फुरमाणौ औष्ठौ यस्य स लक्ष्मणः किष्किन्धायाः बहिश्चरान् वानरान् ददर्श ॥ १७ ॥

गो० टी०—तामिति । गिरिसंकटे निबिडगिरिमध्ये अनेन पूर्वोक्तगुहाशब्दो विवृतः ॥ १६ ॥ १७ ॥

१८] ति० टी०—क्रुद्धलक्ष्मणदर्शनेन भीत्या शैलशृङ्गादिग्रहो वानराणाम् ॥ १८ ॥

रा० टी०—तमिति । वानराः नरा इव कुञ्जरप्रख्याः सर्वे वानराः तं लक्ष्मणं दृष्ट्वा पर्वतान्तरे पर्वतमध्ये विद्यमानानि शतशः शैलशृङ्गाणि प्रवृद्धान् महीरुहांश्च जगृहुः । वाशब्द इवार्थे सार्धश्लोक एकान्वयी ॥ १८ ॥

गो० टी०—तं दृष्ट्वेत्यादि । वानराः पूर्वोक्ता बहि-

शुभैर्ऋषभशृङ्गैश्च कलशैश्चैव काञ्चनैः । शास्त्रदृष्टेन विधिना महर्षिविहितेन च ॥ ३४ ॥
गजो गवाक्षो गवयः शरभो गन्धमादनः । मैन्दश्च द्विविदश्चैव हनूमाञ्जाम्बवांस्तथा ॥ ३५ ॥
अभ्यषिञ्चत सुग्रीवं प्रसन्नेन सुगन्धिना । सलिलेन सहस्राक्षं वसवो वासवं यथा ॥ ३६ ॥
अभिषिक्ते तु सुग्रीवे सर्वे वानरपुंगवाः । प्रचुक्रुशुर्महात्मानो हृष्टाः शतसहस्रशः ॥ ३७ ॥
रामस्य तु वचः कुर्वन्सुग्रीवो वानरेश्वरः । अङ्गदं संपरिष्वज्य यौवराज्येऽभ्यषेचयत् ॥ ३८ ॥
अङ्गदे चाभिषिक्ते तु सानुक्रोशाः प्लवङ्गमाः । साधु साध्विति सुग्रीवं महात्मानो ह्यपूजयन् ॥ ३९ ॥
रामं चैव महात्मानं लक्ष्मणं च पुनः पुनः । प्रीताश्च तुष्टुवुः सर्वे तादृशे तत्र वर्तिनि ॥ ४० ॥
हृष्टपुष्टजनाकीर्णा पताकाध्वजशोभिता । बभूव नगरी रम्या किष्किन्धा गिरिगह्वरे ॥ ४१ ॥
निवेद्य रामाय तदा महात्मने महाभिषेकं कपिवाहिनीपतिः ।
रुमां च भार्यामुपलभ्य वीर्यवानवाप राज्यं त्रिदशाधिपो यथा ॥ ४२ ॥

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदिकाव्ये किष्किन्धाकाण्डे षड्विंशः सर्गः ॥ २६ ॥

३४–३६] ति० टी०–महर्षिविहितेन बौधायनादिविहितेन ॥ ३४–३६ ॥

रा० टी०–तत इति । ततः प्राप्तसंतोषानन्तरं मन्त्रविदो जनाः द्विजर्षभाः कुशपरिस्तीर्णं परितः कुशैर्विशिष्टं समिद्धं प्रज्वलितं जातवेदसं वह्निं मन्त्रपूतेन हविषा हुत्वा अवर्तन्त इति शेषः ॥ ३० ॥

रा० टी०–तत इति । रम्ये प्रासादशिखरे प्रासादाकारश्टङ्गे विद्यमाने हेमप्रतिष्ठाने हेम्नः प्रतिष्ठानानि पादाः यस्मिन् वरास्तरणसंवृते आसने राजपीठे सुग्रीवं मन्त्रैः विधिवत् प्राङ्मुखं स्थापयित्वा तीर्थेभ्यः पुण्यहेतुभ्यः नद्यादिभ्यः शुभैः ऋषभश्टङ्गादिभिराहृत्य संस्थापितानि अपो जलानि कनककुम्भेषु निधाय प्रसन्नेन प्रसादेनोपलक्षिताः वानरर्षभाः गजादयः शास्त्रदृष्टेन शास्त्रोक्तेन विधिना महर्षिविहितेन महर्षीणामाज्ञया च सुग्रीवमभ्यषिञ्चन्त । तत्र दृष्टान्तः सुगन्धिना सलिलेन सहस्राक्षं सहस्रसंख्याकनयनविशिष्टं वासवमिन्द्रं वसवो यथा । श्लोकषट्कमेकान्वयि ॥ ३१–३६ ॥

३७–३९] ति० टी०–हृष्टाः प्रचुक्रुशुः किलकिलाशब्दं कृतवन्तः ॥ ३७–३९ ॥

रा० टी०–अभिषिक्त इति । सुग्रीवे अभिषिक्ते सति वानरपुंगवाः हृष्टाः सन्तः प्रचुक्रुशुः प्रभूतं स्वजातीयशब्दं चक्रुः ३७

रा० टी०–रामस्येति । सुग्रीवः रामस्य वचः रामकर्तृकाज्ञां कुर्वन् सन् अङ्गदं संपरिष्वज्य यौवराज्ये अभ्यषेचयत् ॥ ३८ ॥

रा० टी०–अङ्गद इति । अङ्गदे अभिषिक्ते यौवराज्याभिषेकं प्राप्ते सति सानुक्रोशाः दयावन्तः प्लवङ्गमाः साधु साध्विति सुग्रीवमपूजयन् ॥ ३९ ॥

गो० टी०–अङ्गद इति । सानुक्रोशाः अङ्गदे सदयाः ३८

४०–४२] ति० टी०–तादृशे तत्रवर्तिनि । अभिषिक्ते सुग्रीवेऽङ्गदे च, तत्र किष्किन्धायां वर्तिनि वर्तमाने सतीत्यर्थः ॥ ४०–४२ ॥

इति श्रीरामाभिरामे श्रीरामीये रामायणतिलके वाल्मीकीय आदिकाव्ये किष्किन्धाकाण्डे षड्विंशः सर्गः ॥ २६ ॥

रा० टी०–राममिति । तादृशे विधिपूर्वके तत्र तस्मिन्नभिषेके वर्तति वर्तमाने सति सर्वे वानराः समं लक्ष्मणं च पुनः पुनस्तुष्टुवुः ॥ ४० ॥

गो० टी०–रामं चैवेति । तादृशे सुग्रीवाङ्गदाभिषेकरूपोत्सवे वर्तति वर्तमाने सति ॥ ३९ ॥

रा० टी०–हृष्टेति । गिरिगह्वरे विद्यमाना किष्किन्धा हृष्टपुष्टजनाकीर्णा अत एव पताकाध्वजशोभिता अत एव रम्या बभूव ॥ ४१ ॥

गो० टी०–हृष्टेति । पताकाध्वजयोर्भेद उक्तः ॥ ४० ॥

रा० टी०–निवेद्येति । कपिवाहिनीपतिः वानरसेनाधीशः सुग्रीवः महाभिषेकं रामाय निवेद्य रुमां भार्यामुपलभ्य प्राप्य त्रिदशाधिप इव राज्यमवाप ॥ ४२ ॥

इति श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणव्याख्याने रामायणशिरोमणौ किष्किन्धाकाण्डे षड्विंशः सर्गः ॥ २६ ॥

गो० टी०–निवेद्येति । निवेद्य रामसमीपमागत्य निवेद्येत्यर्थः ॥ ४१ ॥

इति श्रीगोविन्दराजविरचिते श्रीरामायणभूषणे मुक्ताहाराख्याने किष्किन्धाकाण्डव्याख्याने षड्विंशः सर्गः ॥ २६ ॥

संविधास्यति कार्याणि सर्वाणि ससुहृद्गणः । स्नातोऽथ विविधैर्गन्धैरौषधैश्च यथाविधि ॥ ६ ॥
अर्चयिष्यति माल्यैश्च रत्नैश्च त्वां विशेषतः । इमां गिरिगुहां रम्यामभिगन्तुं त्वमर्हसि ॥ ७ ॥
कुरुष्व स्वामिसंबन्धं वानरान्संप्रहर्षय[3] । एवमुक्तो हनुमता राघवः परवीरहा ॥ ८ ॥
प्रत्युवाच हनूमन्तं बुद्धिमान्वाक्यकोविदः । चतुर्दश समाः सौम्य ग्रामं वा यदि वा पुरम् ॥ ९ ॥
न प्रवेक्ष्यामि हनुमन्पितुर्निर्देशपारगः । सुसमृद्धां गुहां दिव्यां[5] सुग्रीवो वानरर्षभः ॥ १० ॥
प्रविष्टो विधिवद्वीरः क्षिप्रं राज्येऽभिषिच्यताम् । एवमुक्त्वा हनूमन्तं रामः सुग्रीवमब्रवीत् ॥ ११ ॥
वृत्तज्ञो वृत्तसंपन्नमुदारबलविक्रमम् । इममप्यङ्गदं [6]वीरं यौवराज्येऽभिषेचय ॥ १२ ॥
ज्येष्ठस्य [7]हि सुतो ज्येष्ठः सदृशो विक्रमेण च । अङ्गदोऽयमदीनात्मा यौवराज्यस्य भाजनम् ॥ १३ ॥
पूर्वोऽयं वार्षिको मासः श्रावणः सलिलागमः । प्रवृत्ताः सौम्य चत्वारो मासा वार्षिक[8]संज्ञिताः ॥ १४ ॥
नायमुद्योगसमयः प्रविश त्वं पुरीं शुभाम् । अस्मिन्वत्स्याम्यहं सौम्य पर्वते सहलक्ष्मणः ॥ १५ ॥

अमात्राः मन्त्रिणः परिवार्य उपतस्थिरे सुग्रीवेण सह जग्मुः॥१॥

गो० टी०-अथ सुग्रीवाभिषेकः षड्विंशे-तत इत्यादि । क्लिन्नवाससम् आर्द्रवस्त्रं सद्यःस्नानादिति भावः । शाखामृगमहामात्राः वानररूपा मन्त्रिणः ॥ १ ॥

रा० टी०-अभिगम्येति । अक्लिष्टकारिणं क्लेशाभावेन सकलकर्मप्रवर्तनशीलं रामम् अभिगम्य प्राप्य सर्वे सुग्रीवप्रभृतयः पितामहं ब्रह्माणम् ऋषय इव प्राञ्जलयः प्रणयसूचकबद्धयुगलकराः सन्तः स्थिताः ॥ २ ॥

रा० टी०-तत इति । ततः रामसमीपप्राप्त्यनन्तरं काञ्चनशैलाभः सुमेरुसदृशः तरुणार्कनिभाननः तरुणसूर्यसदृशमुखः हनुमान् अब्रवीत् ॥ ३ ॥

गो० टी०-अभिगम्येति । सर्वे सुग्रीवादयः ॥ २॥३ ॥

रा० टी०-तद्वचनाकारमह-भवदिति । सुदंष्ट्राणां तीक्ष्णदंष्ट्राविशिष्टानां संपन्नबलशालिनाम् अतिबलवतां महात्मनां वानराणां सुदुष्प्रापं प्राप्तुमशक्यं पितृपैतामहं महदिदं राज्यं भवत्प्रसादात् प्राप्तं सुग्रीवेणेति शेषः। सार्धश्लोक एकान्वयी॥४॥

रा० टी०-भवतेति । भवता समनुज्ञातः ससुहृद्गणः सुग्रीवः नगरं किष्किन्धां प्रविश्य सर्वाणि कार्याणि राज्ञा कर्तव्यानि संविधास्यति ॥ ५ ॥

गो० टी०-भवत्प्रसादादिति । वानराणां राज्यमित्यन्वयः ॥ ४ ॥ ५ ॥

६-७] ति० टी०-कार्याणि राजकार्याणि । यथाविधि स्नातो राज्याभिषेकाभिषिक्तः ॥ ६ ॥ ७ ॥

रा० टी०-स्नात इति । गन्धैरौषधैश्च स्नातोऽयं सुग्रीवः माल्यैः रत्नैश्च त्वां विशेषतोऽर्चयिष्यति अतः गिरिगुहां किष्किन्धामितो गन्तुमर्हसि। सार्धश्लोक एकान्वयी॥ ६ ॥ ७॥

गो० टी०-अतिनिपुणतया हनुमान् प्रथमं संग्रहेण विज्ञाप्य तच्छृण्वति रामे पुनर्विशदमाह-स्नात इति ॥ ६ ॥

गो० टी०-इमामिति । गिरिगुहां किष्किन्धाम् । वानराणां स्वामिना संबन्धं कुरु सुग्रीवं वानरराजं कुर्वित्यर्थः ॥७—११॥

८-१०] ति० टी०-स्वामिसंबन्धं वानरस्वामित्वसंबन्धम् । सुग्रीवस्य राज्याभिषेकेणेति शेषः ॥ ८-१० ॥

रा० टी०-कुरुष्वेति । स्वामिसंबन्धं सुग्रीवे वानरनिरूपितस्वामित्वसंसर्गं कुरुष्व सुग्रीवं राज्ये स्थापयेत्यर्थः, अत एव वानरान् संप्रहर्षय । अर्धं पृथक्-एवमिति । हनुमता एवमुक्तो राघवः हनूमन्तं प्रत्युवाच । अर्धद्वयमेकान्वयि ॥ ८ ॥

रा० टी०-तद्वचनाकारमाह-चतुर्दशेति । हे हनुमन्! पितुः निर्देशपारगः आज्ञानिर्वाहकोऽहं चतुर्दश समाः वर्षाणि ग्रामं पुरं च न प्रवेक्ष्यामि ॥ ९ ॥

रा० टी०-ननु तर्हि सुग्रीवोऽपि इहैव तिष्ठतु इत्यत आह-सुसमृद्धामिति । गुहां किष्किन्धां प्रविष्टः मदाज्ञया संप्राप्तः सुग्रीवः क्षिप्रं राज्ये राज्यासने अभिषिच्यतामभिषेकेण प्राप्यताम् ॥ १० ॥

११-१२] ति० टी०-अभिषिच्यताम् । मदाज्ञया त्वयेति शेषः ॥ ११ ॥ १२ ॥

रा० टी०-एवमिति । हनूमन्तमेवमेवमुक्त्वा रामः सुग्रीवमब्रवीत् ॥ ११ ॥

रा० टी०-तद्वचनाकारमाह-वृत्तज्ञ इति । वृत्तज्ञः लोकशास्त्रवृत्तान्ताभिज्ञस्त्वमुदारबलविक्रमम् उदारौ अधिकावित्यर्थः बलविक्रमौ पराक्रमप्रतापौ यस्य तमङ्गदं यौवराज्ये अभिषेचय ॥ १२ ॥

गो० टी०-इममपीत्यादि । भाजनम् योग्यमित्यर्थः१२

१३] ति० टी०-यतो ज्येष्ठस्य ज्येष्ठः सुतो विक्रमेण ज्येष्ठस्य सदृशश्च, तस्माद्यौवराज्ये योग्यः ॥ १३ ॥

रा० टी०-तत्र हेतुमाह-जेष्ठस्येति । जेष्ठस्य भ्रातुः ज्येष्ठः सुतः अत एव विक्रमेण सदृशः अत एव अदीनात्मा अयमङ्गदः यौवराज्यस्य भाजनं पात्रम् ॥ १३ ॥

१४-१५] ति० टी०-सीतान्वेषणोद्योगं सुग्रीवस्या

---

१ जन इति गो. पाठः। २ इत इति गो. रा. पाठः। ३ हर्षयान्निति गो. पाठः। ४ पालक इति गो. पाठः। ५ रम्यामिति गो. पाठः। ६ वीरेति गो. पाठः। ७ स इति गो. पाठः। ८ ते इति गो. पाठः। ९ संज्ञिका इति गो. पाठः।

[illegible]तुषवान्पूर्वं हत्वा रावणं राक्षसाधिपम् । माल्यवान्नाम वैदेहि गिरीणामुत्तमो गिरिः ॥ ७९ ॥
ततो गच्छति गोकर्णं पर्वतं केसरी हरिः । स च देवर्षिभिर्दिष्टः पिता मम महाकपिः ॥
तीर्थे नदीपतेः पुण्ये शम्बसादनमुद्धरन्
यस्याहं हरिणः क्षेत्रे जातो वातेन मैथिलि । हनुमानिति विख्यातो लोके स्वेनैव कर्मणा ॥ ८० ॥ ८१ ॥
विश्वासार्थं तु वैदेहि भर्तुरुक्ता मया गुणाः । अचिरात्त्वामितो देवि राघवो नयिता ध्रुवम् ॥ ८२ ॥
एवं विश्वासिता सीता हेतुभिः शोककर्शिता । उपपन्नैरभिज्ञानैर्दूतं तमधिगच्छति ॥ ८३ ॥
अतुलं च गता हर्षं प्रहर्षेण तु जानकी । नेत्राभ्यां वक्रपक्ष्माभ्यां मुमोचानन्दजं जलम् ॥ ८४ ॥
चारु तद्वदनं तस्यास्ताम्रशुक्लायतेक्षणम् । अशोभत विशालाक्ष्या राहुमुक्त इवोडुराट् ॥ ८५ ॥
हनूमन्तं कपिं व्यक्तं मन्यते नान्यथेति सा । अथोवाच हनूमांस्तामुत्तरं प्रियदर्शनाम् ॥ ८६ ॥
एतत्ते सर्वमाख्यातं समाश्वसिहि मैथिलि । किं करोमि कथं वा ते रोचते प्रतियाम्यहम् ॥ ८७ ॥

७९] ति॰ टी॰–[illegible] माल्यवान्नामेति ॥ ७९ ॥

रा॰ टी॰–ननु वानरस्य तव [illegible] आह–माल्यवानिति । केसरी हरिर्वानरः माल्यवान्नाम यो गिरिः [illegible] गोकर्णं पर्वतं गच्छति अगच्छत् ॥ ७९ ॥

गो॰ टी॰–[illegible] माल्यवानिति । गच्छति अगच्छत् ॥ ८० ॥

८०] ति॰ टी॰–गोकर्णं [illegible] । दिष्टः [illegible] । [illegible] ॥ ८० ॥

रा॰ टी॰–स इति । देवर्षिभिर्दिष्टः आज्ञप्तः [illegible] पिता नदीपतेः समुद्रस्य तीर्थे [illegible] शम्बसादनं [illegible] ॥ ८० ॥

गो॰ टी॰–स चेति । सः गोकर्णं गतः । देवर्षिभिः [illegible] ॥ ८१ ॥

८१] ति॰ टी॰–[illegible] कर्मणा

रा॰ टी॰–अचिरादिति । अचिरात् शीघ्रं राघवस्त्वामितो नयिता नेता ॥ ८२ ॥

गो॰ टी॰–विश्वासार्थमिति । नयिता नेता ॥ ८२ ॥

८३–८५] ति॰ टी॰–उपपन्नैः [illegible] । अभिज्ञानैः [illegible] । अधिगच्छत्[illegible] ॥ ८३–८५ ॥

रा॰ टी॰–एवमिति । उपपन्नैः [illegible] अभिज्ञानैः [illegible] सत्यं कथयतीति विश्वासं प्रापिता सीता तं हनुमन्तं दूतमधिगच्छति [illegible] अजानात् ॥ ८३ ॥

रा॰ टी॰–अतुलमिति । अतुलं हर्षं गता प्राप्ता जानकी हर्षेण आनन्दजं जलं मुमोच ॥ ८४ ॥

रा॰ टी॰–चार्विति । राहुमुक्तः उडुराट् चन्द्र इव तस्याः वदनमशोभत ॥ ८५ ॥

गो॰ टी॰–एवमिति । अवगच्छति [illegible] ॥ ८४–८८ ॥

८६] ति॰ टी॰–[illegible] ॥८६॥

रा॰ टी॰–हनूमन्तमिति । सा सीता हनुमन्तं [illegible] मन्यते [illegible] प्रियदर्शनां तां सीतां उत्तरं [illegible] वचनमुवाच ॥ ८६ ॥

८७] ति॰ टी॰–सर्वमुक्तं [illegible] किं करोमीति ।

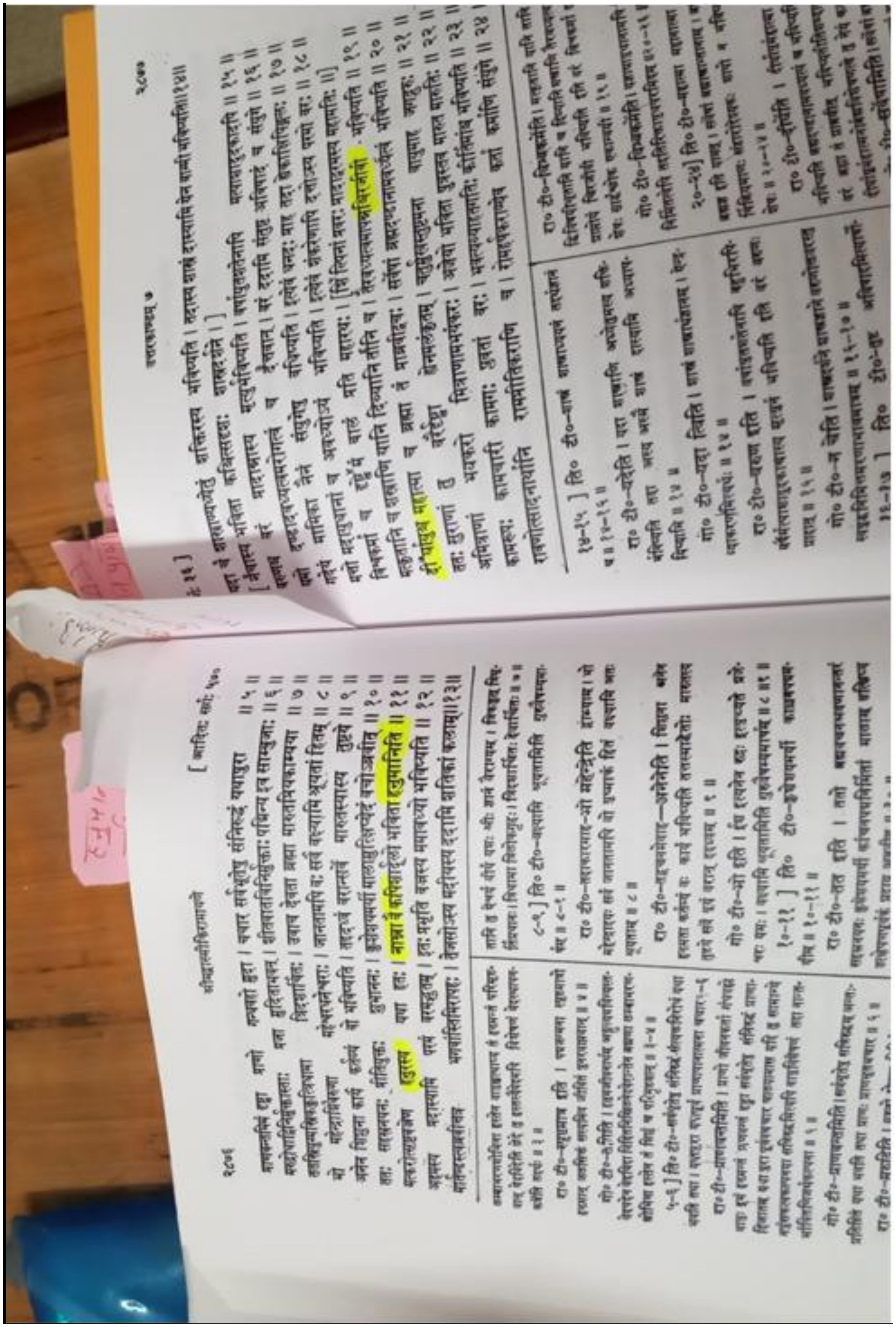

२८७६ श्रीमद्वाल्मीकिरामायणे [आदित: सर्ग: ५७०

प्राणवन्तमिमं दृष्ट्वा प्राणो गन्धवहो मुदा । चचार सर्वभूतेषु संनिरुद्धं यथापुरा ॥ ५ ॥
मरुद्रोगविनिर्मुक्तास्ताः प्रजा मुदिताभवन् । शीतवातविनिर्मुक्ताः पद्मिन्य इव साम्बुजाः ॥ ६ ॥
ततस्त्रियुग्मस्त्रिककुत्त्रिधामा त्रिदशार्चितः । उवाच देवता ब्रह्मा मारुतप्रियकाम्यया ॥ ७ ॥
भो महेन्द्राग्निवरुणा महेश्वरधनेश्वराः । जानतामपि वः सर्वं वक्ष्यामि श्रूयतां हितम् ॥ ८ ॥
अनेन शिशुना कार्यं कर्तव्यं वो भविष्यति । तद्दध्वं वरान्सर्वे मारुतस्यास्य तुष्टये ॥ ९ ॥
ततः सहस्रनयनः प्रीतियुक्तः शुभाननः । कुशेशयमयीं मालामुत्क्षिप्येदं वचोऽब्रवीत् ॥ १० ॥
मत्करोत्सृष्टवज्रेण हनुरस्य यथा हतः । नाम्ना वै कपिशार्दूलो भविता हनुमानिति ॥ ११ ॥
अहमेव प्रदास्यामि परमं वरमद्भुतम् । इतःप्रभृति वज्रस्य ममावध्यो भविष्यति ॥ १२ ॥
मार्तण्डस्त्वब्रवीत्तत्र भगवांस्तिमिरापहः । तेजसोऽस्य मदीयस्य ददामि शतिकां कलाम् ॥१३॥

उत्तरकाण्डम् ७ २८७७

यदा वै शास्त्राण्यध्येतुं शक्तिरस्य भविष्यति । तदास्य शास्त्रं दास्यामि येन वाग्मी भविष्यति॥१४॥
[नैवास्य भविता कश्चित्सदृशः शास्त्रदर्शने ।]
वरुणश्च वरं प्रादान्नास्य मृत्युर्भविष्यति । वर्षायुतशतेनापि मत्पाशादुदकादपि ॥ १५ ॥
यमो दण्डादवध्यत्वमरोगत्वं च दत्तवान् । वरं ददामि संतुष्ट अविषादं च संयुगे ॥ १६ ॥
गदेयं मामिका नैनं संयुगेषु वधिष्यति । इत्येवं धनदः प्राह तदा ह्येकाक्षिपिङ्गलः ॥ १७ ॥
मत्तो मदायुधानां च अवध्योऽयं भविष्यति । इत्येवं शंकरेणापि दत्तोऽस्य परमो वरः ॥ १८ ॥
विश्वकर्मा च दृष्ट्वेमं बालं प्रति महारथः । [शिल्पिनां प्रवरः प्रादाद्वरमस्य महामतिः ॥]
मत्कृतानि च शस्त्राणि यानि दिव्यानि तानि च । तैरवध्यत्वमापन्नश्चिरजीवी भविष्यति ॥ १९ ॥
दीर्घायुश्च महात्मा च ब्रह्मा तं प्राब्रवीद्वचः । सर्वेषां ब्रह्मदण्डानामवध्यत्वं भविष्यति ॥ २० ॥
ततः सुराणां तु वरैर्दृष्ट्वा ह्येनमलंकृतम् । चतुर्मुखस्तुष्टमना वायुमाह जगद्गुरुः ॥ २१ ॥
अमित्राणां भयकरो मित्राणामभयंकरः । अजेयो भविता पुत्रस्तव मारुत मारुतिः ॥ २२ ॥
कामरूपः कामचारी कामगः प्लवतां वरः । भवत्यव्याहतगतिः कीर्तिमांश्च भविष्यति ॥ २३ ॥
रावणोत्सादनार्थानि रामप्रीतिकराणि च । रोमहर्षकराण्येव कर्ता कर्माणि संयुगे ॥ २४ ॥

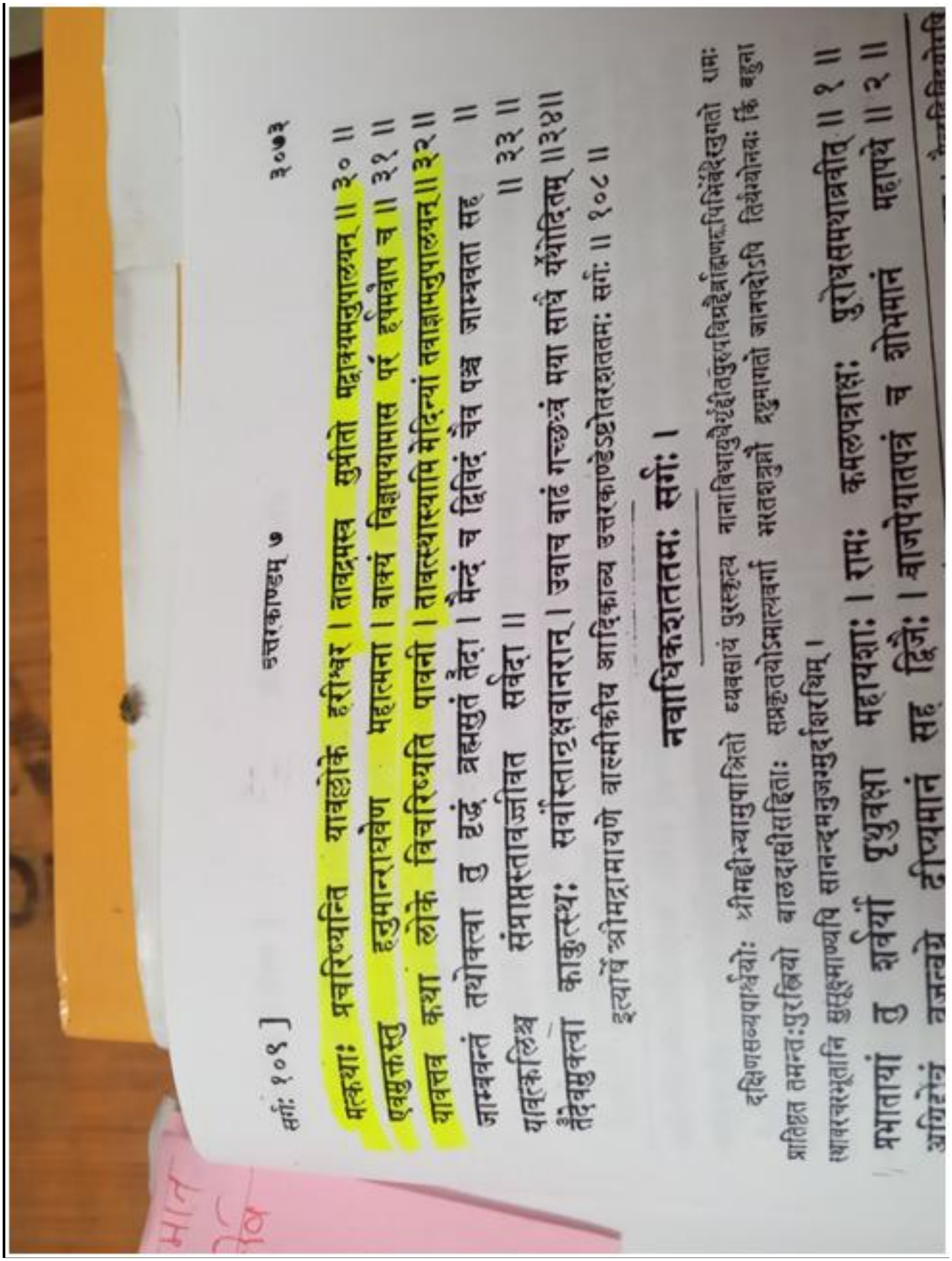

सर्गः १०९]　　　　उत्तरकाण्डम् ७　　　　३०७३

मत्कथाः प्रचरिष्यन्ति यावल्लोके हरीश्वर । तावद्रमस्व सुप्रीतो मद्वाक्यमनुपालयन् ॥ ३० ॥
एवमुक्तस्तु हनुमान्राघवेण महात्मना । वाक्यं विज्ञापयामास परं हर्षमवाप च ॥ ३१ ॥
यावत्तव कथा लोके विचरिष्यति पावनी । तावत्स्थास्यामि मेदिन्यां तवाज्ञामनुपालयन् ॥ ३२ ॥
जाम्बवन्तं तथोक्त्वा तु वृद्धं ब्रह्मसुतं तदा । मैन्दं च द्विविदं चैव पञ्च जाम्बवता सह ॥
यावत्कलिश्च संप्राप्तस्तावज्जीवत सर्वदा ॥ ॥ ३३ ॥
तैदेवमुक्त्वा काकुत्स्थः सर्वांस्तानृक्षवानरान् । उवाच बाढं गच्छध्वं मया सार्धं यथोदितम् ॥३४॥

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदिकाव्य उत्तरकाण्डेऽष्टोत्तरशततमः सर्गः ॥ १०८ ॥

नवाधिकशततमः सर्गः ।

दक्षिणसव्यपार्श्वयोः श्रीमहीभ्यामुपाश्रितो व्यवसायं पुरस्कृत्य नानाविधायुधैर्गृहीतपुरुषविग्रहैर्ब्राह्मणादिभिर्वेदैरनुगतो रामः प्रातिष्ठत तमन्तःपुरस्त्रियो बालदासीसहिताः सप्रकृतयोऽमात्यवर्गा भरतशत्रुघ्नौ द्रष्टुमागतो जानपदोऽपि तिर्यग्योनयः किं बहुना स्थावरचरभूतानि सुसूक्ष्माण्यपि सानन्दमनुजग्मुर्दाशरथिम् ।

प्रभातायां तु शर्वर्यां पृथुवक्षा महायशाः । रामः कमलपत्राक्षः पुरोधसमथाब्रवीत् ॥ १ ॥
अग्निहोत्रं व्रजत्वग्रे दीप्यमानं सह द्विजैः । वाजपेयातपत्रं च शोभमानं महापथे ॥ २ ॥

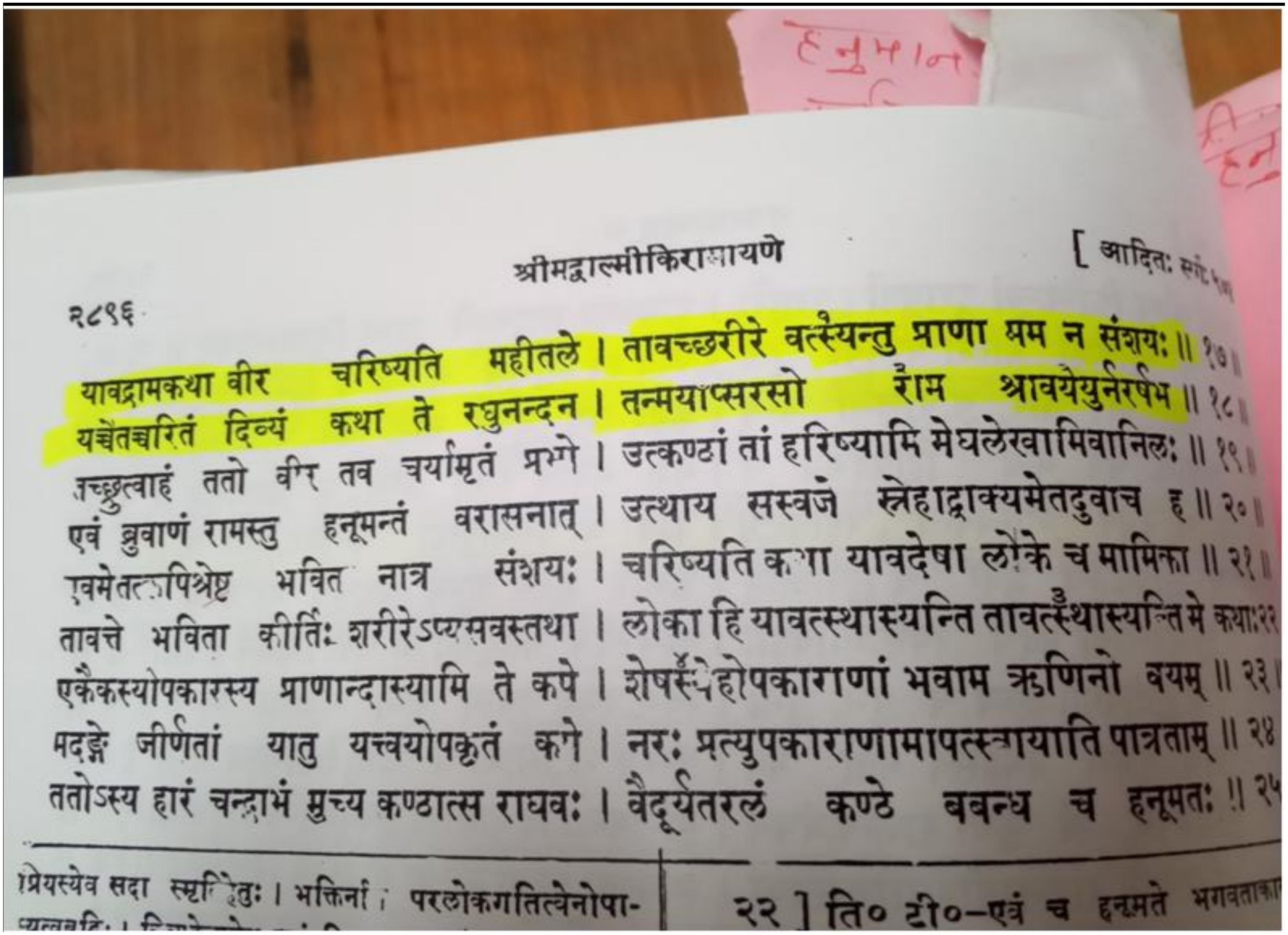

यावद्रामकथा वीर चरिष्यति महीतले । तावच्छरीरे वत्स्यन्तु प्राणा मम न संशयः ॥ १७ ॥
यच्चैतच्चरितं दिव्यं कथा ते रघुनन्दन । तन्मयाप्सरसो राम श्रावयेयुर्नरर्षभ ॥ १८ ॥
तच्छ्रुत्वाहं ततो वीर तव चर्यामृतं प्रभो । उत्कण्ठां तां हरिष्यामि मेघलेखामिवानिलः ॥ १९ ॥
एवं ब्रुवाणं रामस्तु हनूमन्तं वरासनात् । उत्थाय सस्वजे स्नेहाद्वाक्यमेतदुवाच ह ॥ २० ॥
एवमेतत्कपिश्रेष्ठ भविता नात्र संशयः । चरिष्यति कथा यावदेषा लोके च मामिका ॥ २१ ॥
तावत्ते भविता कीर्तिः शरीरेऽप्यसवस्तथा । लोका हि यावत्स्थास्यन्ति तावत्स्थास्यन्ति मे कथाः ॥ २२ ॥
एकैकस्योपकारस्य प्राणान्दास्यामि ते कपे । शेषस्येहोपकाराणां भवाम ऋणिनो वयम् ॥ २३ ॥
मदङ्गे जीर्णतां यातु यत्त्वयोपकृतं कपे । नरः प्रत्युपकाराणामापत्स्वायाति पात्रताम् ॥ २४ ॥
ततोऽस्य हारं चन्द्राभं मुच्य कण्ठात्स राघवः । वैदूर्यतरलं कण्ठे बबन्ध च हनूमतः ॥ २५ ॥

प्रेयस्येव सदा स्मृ...तुः । भक्तिर्नाः परलोकगतित्वेनोपा-

२२] ति० टी०–एवं च हनूमते भगवताका

...तिरभसेनागाद्राहुरुत्सृज्य वासवम् । अनेन च स वै दृष्टः प्रधावञ्शैलकूटवत् ॥ ३९ ॥
...सूर्यं समुत्सृज्य राहुं फलमवेक्ष्य च । उत्पपात पुनर्व्योम ग्रहीतुं सिंहिकासुतम् ॥ ४० ॥
...त्सृज्यार्कमिमं राम प्रधावन्तं प्लवंगमम् । अवेक्ष्यैवं परावृत्तो मुखशेषः पराङ्मुखः ॥ ४१ ॥
...त्रातारं सिंहिकासुतः । इन्द्र इन्द्रेति संत्रासान्मुहुर्मुहुरभाषत ॥ ४२ ॥
...मानस्तु प्रागेवालक्षितं स्वरम् । श्रुत्वेन्द्रोवाच मा भैषीरहमेनं निषूदये ॥ ४३ ॥
...विक्रोशमानस्य ... तो दृष्ट्वा महत्तदिदमित्यपि । फलं तं हस्तिराजानमभिदुद्राव मारुतिः ॥ ४४ ॥
...धावतो रूपमैरावतजिघृक्षया । मुहूर्तमभवद्घोरमिन्द्राग्न्युपरि भास्वरम् ॥ ४५ ॥
...मानं तु नातिक्रुद्धः शचीपतिः । हस्तान्तादतिमुक्तेन कुलिशेनाभ्यताडयत् ॥ ४६ ॥
...गिरौ पपातैष इन्द्रवज्राभिताडितः । पतमानस्य चैतस्य वामा हनुरभज्यत ॥ ४७ ॥
...पतिते चापि वज्रताडनविह्वले । चुक्रोधेन्द्राय पवनः प्रजानामहिताय सः ॥ ४८ ॥
...चारं स तु संगृह्य प्रजास्वन्तर्गतः प्रभुः । गुहां प्रविष्टः स्वसुतं शिशुमादाय मारुतः ॥ ४९ ॥
...मूत्राशयमाहृत्य प्रजानां परमार्तिकृत् । रुरोध सर्वभूतानि यथा वर्षाणि वासवः ॥ ५० ॥
...कोपाद्भूतानि निरुच्छ्वासानि सर्वतः । संधिभिर्भिद्यमानैश्च काष्ठभूतानि जज्ञिरे ॥ ५१ ॥

...अट्टहासः तद्वन्तं करीन्द्रमिन्द्र आरुह्य राहुं पुर... सूर्यो यत्र हनुमता सहाभवत् तत्र प्रायात् श्लोक... ...न्वयि ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

३९-४०] ति० टी०—अतिरभसेनातिवेगेनागात् । वास... ...पूर्वमिति शेषः । अनेन हनुमता । स राहुः ॥३९–४०॥

...० टी०—अथेति । राहुः वासवमुत्सृज्य अतिरभसे... ...इन्द्रप्राप्तेः पूर्वमेव हनुमत्समीपं प्रापेत्यर्थः अनेन हनु... ...शैलकूटवत्प्रधावन् स राहुः दृष्टः ॥ ३९ ॥

...० टी०—तत इति । राहुं फलमवेक्ष्य सूर्यं समुत्सृज्य च ...ग्रहीतुं व्योम पुनरुत्पपात हनुमानिति शेषः॥४०॥

...० टी०—तत इति । महाशैलकूटवत् बृहत्तरफलमवेक्ष्ये... ॥ ४० ॥

४१-४२] ति० टी०—एवमवेक्ष्य महाशैलकूटवद्बृहत्तर... । मुखशेष इति राहोः स्वरूपकथनम् ॥ ४१–४२ ॥

...० टी०—उत्सृज्येति । मुखमेव शेषः राहुरित्यर्थः एवं ...न्तं प्लवंगममवेक्ष्य परावृत्तो बभूवेति शेषः पराङ्मुखः ...तः त्रातारमिन्द्रमाशंसमानं त्राणार्थं कथयमानस्सन् ...न्द्रेति मुहुर्मुहुरभाषत श्लोकद्वयमेकान्वयि ॥४१॥४२॥

...० टी०—उत्सृज्येति । मुखशेष इति राहुस्वरूपकथ... ॥ ४१-४६ ॥

४३] ति० टी०—प्रागेवालक्षितं स्वरं राहुदर्शनात्पूर्वमे... राहोः स्वर इति निश्चितम् ॥ ४३ ॥

...० टी०—राहोरिति । प्राक् राहुदर्शनात्पूर्वमेव आल... ...विज्ञातं विक्रोशमानस्य राहोः स्वरं श्रुत्वैव अहमेनं निषू... ...त्वं माभैषीः इतीन्द्र उवाच ॥ ४३ ॥

४४-४५] ति० टी०—इदमपि महत्फलमिति मत्वा । ...राजानमैरावतम् ॥ ४४–४५ ॥

रा०टी०—ऐरावतमिति । मारुतिः ऐरावतं दृष्ट्वा इदमपि महत्फलं तत्तस्माद्धेतोर्हस्तिराजानं हस्तिराजमभिदुद्राव ॥४४॥

रा० टी०—तथेति । ऐरावतजिघृक्षया धावतोऽस्य हनुमतो रूपमिन्द्राग्न्युपरि भास्वरं प्रकाशमानं सत् मुहूर्तं घोरमभवत्॥४५॥

४६] ति० टी०—हस्तान्तादहस्ताग्रात् ॥ ४६ ॥

रा० टी०—एवमिति । नातिक्रुद्धः हनुमद्बाल्येन हेतुना अतिक्रोधरहितश्शचीपतिः हस्तान्तात् हस्ताग्रभागात् अतिमुक्तेन कुलिशेन एवमाधावमानं हनुमन्तमभ्यताडयत् ॥ ४६ ॥

गो० टी०—एवमिति । हस्तान्तात् हस्ताग्रात् । हस्तान्त इति समीप इत्यर्थः ॥ ४६–४८ ॥

४७-४८] ति० टी०—वामा हनुः । हनुशब्दः स्त्रियाम् । ‘तत्परा हनुः’ इति कोशात् ॥ ४७–४८ ॥

रा० टी०—तत इति । इन्द्रवज्राभिताडितः एष हनुमान् गिरौ पपात पतमानस्य तस्य वामा हनुरभज्यत ॥ ४७ ॥

रा० टी०—तस्मिन्निति । तस्मिन्हनुमति वज्रताडनविह्वले अत एव पतिते सति प्रजानां स्वपुत्रस्य अहिताय इन्द्राय पवनश्चुक्रोध आदराद्बहुवचनं किञ्च प्रजानामहिताय हनुमत्प्रहारद्वारा प्रजानामहितकर्त्रे इत्यर्थः ॥ ४८ ॥

४९] ति० टी०—प्रचारं देहिमात्रहितभूतं स्वप्रचारं संगृह्य संक्षिप्य । अन्तर्गतः सर्वदेहान्तरगतः । प्रभुः सर्वजगत्प्रवृत्तिनिवृत्तिकर्ता ॥ ४९ ॥

रा० टी०—प्रचारमि... । प्रजास्वंतर्गतः प्रभुः प्रवृत्तिनिवृत्त्योः समर्थो मारुतः ...रं स्वव्यापारं संगृह्य निवर्त्य शिशुमल्पवयस्कं स्वसुतमादाय गुहां प्रविष्टोऽभवदिति शेषः॥४९॥

गो० टी०—प्रचारमिति । प्रचारं स्वीयं देहियात्राहेतुभूतम् । गृह्य संक्षिप्य । अन्तर्गतः सर्वदेहान्तर्गतः ॥ ४९ ॥

५०-५१] ति० टी०—रुरोध निरुद्धस्वगतिप्रचारमकरोत्

१ साङ्कुरेति गो. पा. । २ फलं मत्वा हस्तिराजमिति गो. पा. । ३ इन्द्राग्न्योरिवेति गो. पा. । ४ वाम इति गो.पा. । ५ वाक्रे इति गो.पा. ।

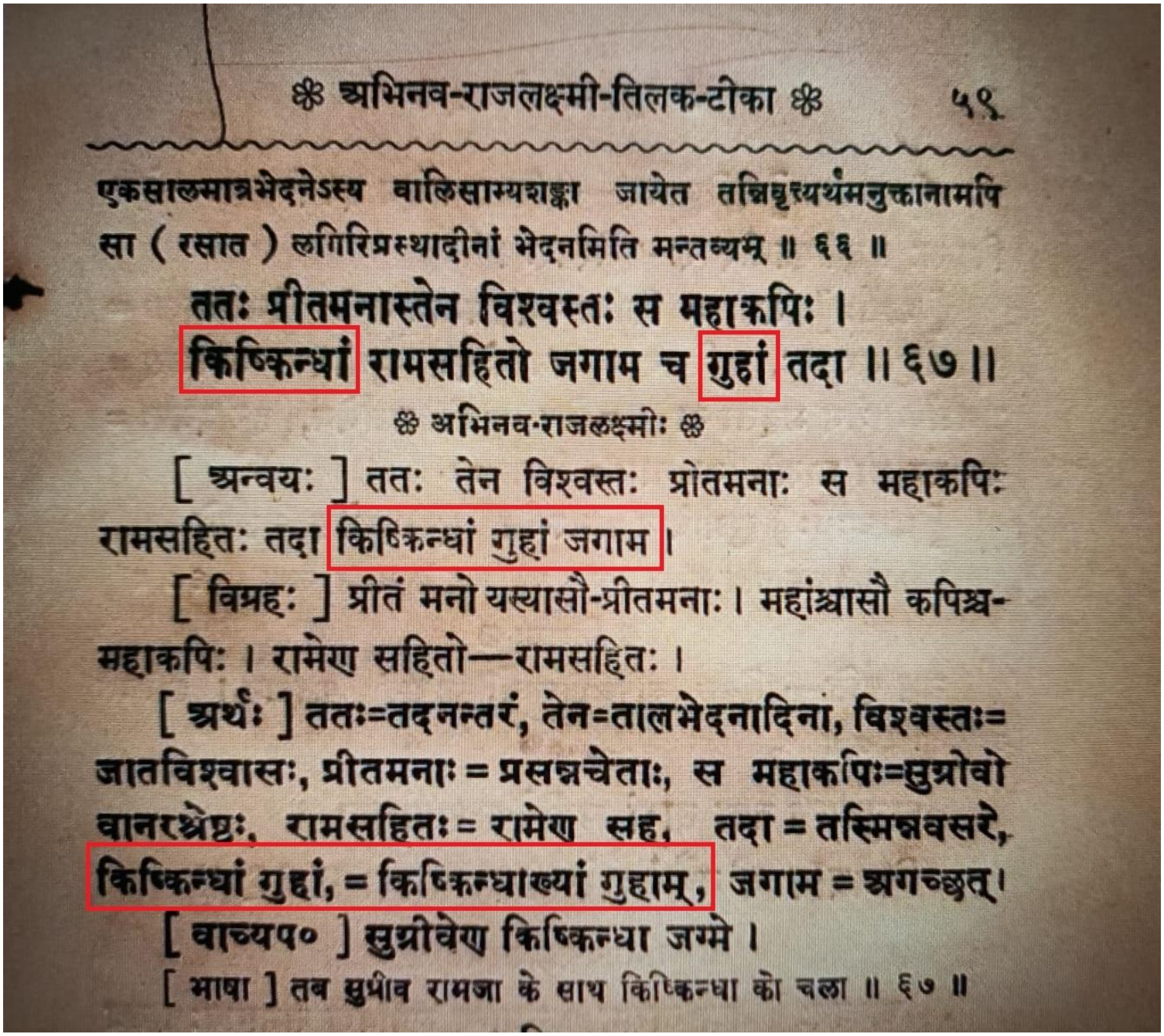

❀ अभिनव-राजलक्ष्मी-तिलक-टीका ❀ ५९

एकसालमात्रभेदनेऽस्य वालिसाम्यशङ्का जायेत तन्निवृत्यर्थमनुक्तानामपि सा (रसात) लगिरिप्रस्थादीनां भेदनमिति मन्तव्यम् ॥ ६६ ॥

ततः प्रीतमनास्तेन विश्वस्तः स महाकपिः ।
किष्किन्धां रामसहितो जगाम च गुहां तदा ॥ ६७ ॥

❀ अभिनव-राजलक्ष्मीः ❀

[अन्वयः] ततः तेन विश्वस्तः प्रीतमनाः स महाकपिः रामसहितः तदा किष्किन्धां गुहां जगाम ।

[विग्रहः] प्रीतं मनो यस्यासौ-प्रीतमनाः । महांश्चासौ कपिश्च-महाकपिः । रामेण सहितो—रामसहितः ।

[अर्थः] ततः=तदनन्तरं, तेन=तालभेदनादिना, विश्वस्तः= जातविश्वासः, प्रीतमनाः = प्रसन्नचेताः, स महाकपिः=सुग्रीवो वानरश्रेष्ठः, रामसहितः = रामेण सह, तदा = तस्मिन्नवसरे, किष्किन्धां गुहां, = किष्किन्धाख्यां गुहाम्, जगाम = अगच्छत् ।

[वाच्यप०] सुग्रीवेण किष्किन्धा जग्मे ।

[भाषा] तब सुग्रीव रामजी के साथ किष्किन्धा को चला ॥ ६७ ॥

टीका : श्री वाल्मीकि रामायण अन्वय, विग्रह,अर्थ, सहित
सम्बद्ध प्रामाणिक व्याख्यान्

दिखाते हुए सात तालवृक्षोंको और पर्वत तथा रसातलको बींध डाला ॥ ६६ ॥

ततः प्रीतमनास्तेन विश्वस्तः स महाकपिः ।
किष्किन्धां रामसहितो जगाम च गुहां तदा ॥ ६७ ॥

तदनन्तर रामके इस कार्यसे महाकपि सुग्रीव मन-ही-मन प्रसन्न हुए और उन्हें रामपर विश्वास हो गया । फिर वे उनके साथ किष्किन्धा गुहामें गये ॥ ६७ ॥

ततोऽगर्जद्धरिवरः सुग्रीवो हेमपिङ्गलः ।
तेन नादेन महता निर्जगाम हरीश्वरः ॥ ६८ ॥
अनुमान्य तदा तारां सुग्रीवेण समागतः ।
निजघान च तत्रैनं शरेणैकेन राघवः ॥ ६९ ॥

गिरिं रसातलं चैव जनयन्प्रत्ययं तदा ।
ततः प्रीतमनास्तेन विश्वस्तः स महाकपिः ॥ ६६ ॥

पहाड़ फोड़, रसातल को चला गया । तब तो सुग्रीव का सन्देह दूर हो गया । तदनन्तर सुग्रीव प्रसन्न हो और विश्वास कर ॥ ६६ ॥

किष्किन्धां रामसहितो जगाम च गुहां[2] तदा ।
ततोऽगर्जद्धरिवरः सुग्रीवो हेमपिङ्गलः ॥ ६७ ॥

श्रीरामजी को साथ ले गुफा की तरह पर्वतों के बीच बसी हुई किष्किन्धा पुरी को गये । वहाँ पहुँच पीले नेत्र वाले सुग्रीव ने ज़ोर से गर्जना की ॥ ६७ ॥

तेन नादेन महता निर्जगाम हरीश्वरः ।
अनुमान्य[3] तदा तारां सुग्रीवेण समागतः ॥ ६८ ॥

---

१ उच्छ्रित्य—उद्यम्यच्छित्वा (गो०) २ गुहां—गुहावत्पर्वतमध्यवर्तिनीं पुरीं (गो०) ३ अनुमान्य—परिसान्त्व्य ; सन्तोष्य (गो०)

"गुफा की तरह पर्वतों के बीच बसी हुई किष्किन्धा पुरी को गये"

एवमुक्ता ततस्तुष्टा जननी ते महाकपे ।
गुहायां त्वां महाबाहो प्रजज्ञे प्लवगर्षभम् । 4.66.20॥ -
- व्याख्या : “गुहायां इति – तत्पर्वत गुहायाम्" पृ.स. १६८६,)

गुहायां पद को “तत्पर्वतगुहायां” इत्युक्ते “किष्किन्धायां जिसका अर्थ हैं “किष्किंधा नाम से विख्यात गुहा “गुहावत् पर्वतमध्यवर्तिनी पुरी” , हुआ (किष्किंधा ६६ सर्ग, श्लोक स.२०) उसी किष्किंधा पुरी / नगर मे विराजमान विख्यात पर्वत में माता अञ्जना देवी के गर्भ से श्री हनुमान जी का जन्म हुआ, तब से यह पर्वत “अञ्जनाद्रि” नाम से विख्यात हुआ ।

महाभारत में "गुहा = किष्किंधा" शब्द का प्रयोग
महाभारत - सभा पर्व – अध्याय 2-32

तं जित्वा स महाबाहुः प्रययौ दक्षिणापथम्।

***गुहामासादयामास किष्किन्धां** लोकविश्रुताम्॥ 2-32-18(12623)

`पुरा वानरराजेन वालिना चाभिरक्षिताम्।

ततः कोसलराजस्य रामस्यैवानुगेन च।

सुग्रीवेणाभिगुप्तां तां प्रविष्टस्तमथाह्वयत्'॥ 2-32-19(12624)

तत्र वानरराजाभ्यां मैन्देन द्विविदेन च

महाभारत में "गुहा = किष्किंधा" शब्द का प्रयोग
महाभारत - सभा पर्व – अध्याय 2-32

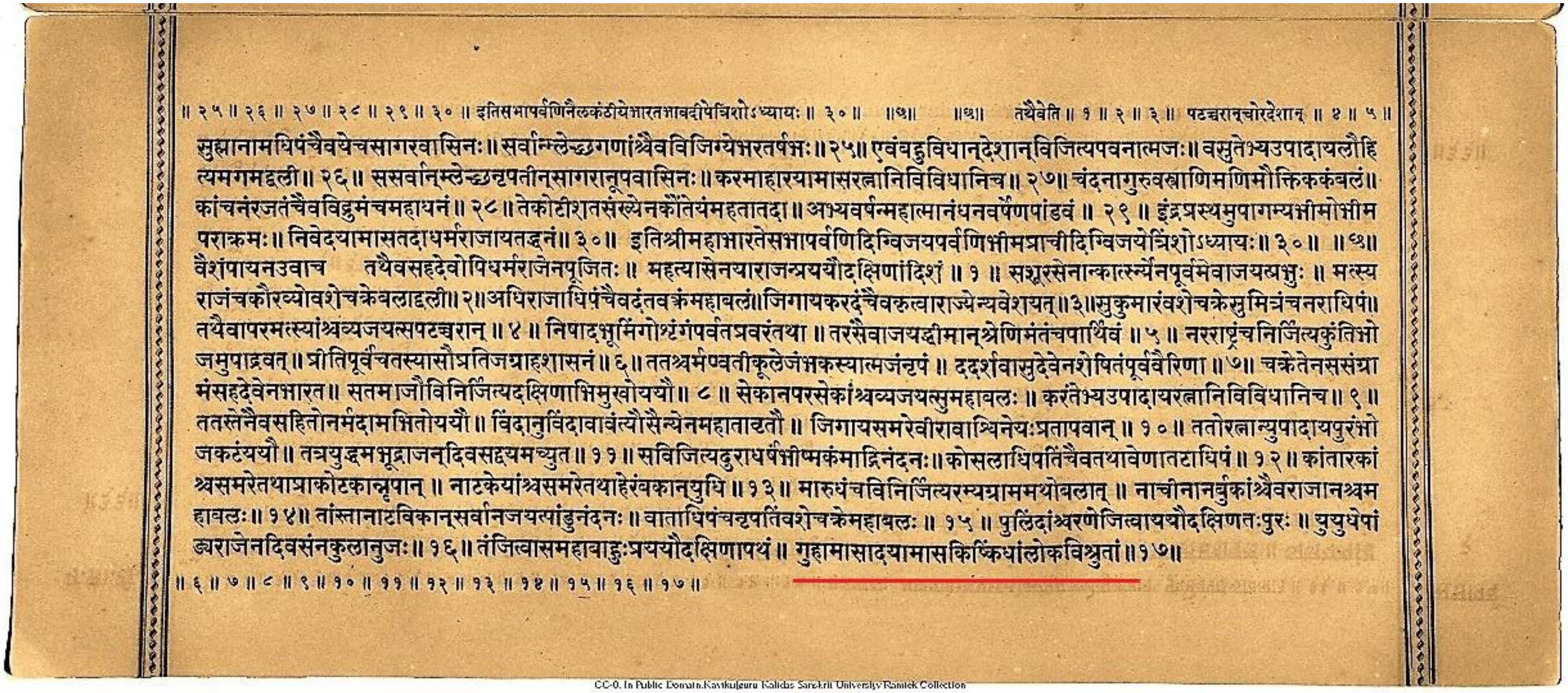

॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ इतिसभापर्वणिनैलकंठीयेभारतभावदीपेत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ तथैवेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ पटच्चरान्चोरदेशान् ॥ ४ ॥ ५ ॥

सुह्मानामधिपंचैवयेचसागरवासिनः ॥ सर्वान्म्लेच्छगणांश्चैवविजिग्येभरतर्षभः ॥ २५ ॥ एवंबहुविधान्देशान्विजित्यपवनात्मजः ॥ वसुतेभ्यउपादायलौहि
त्यमगमद्बली ॥ २६ ॥ ससर्वान्म्लेच्छनृपतीन्सागरानूपवासिनः ॥ करमाहारयामासरत्नानिविविधानिच ॥ २७ ॥ चंदनागुरुवस्त्राणिमणिमौक्तिककंबलं ॥
कांचनंरजतंचैवविद्रुमंचमहाधनं ॥ २८ ॥ तेकोटीशतसंख्येनकौंतेयंमहतातदा ॥ अभ्यवर्षन्महात्मानंधनवर्षेणपांडवं ॥ २९ ॥ इंद्रप्रस्थमुपागम्यभीमोभीम
पराक्रमः ॥ निवेदयामासतदाधर्मराजायतद्धनं ॥ ३० ॥ इतिश्रीमहाभारतेसभापर्वणिदिग्विजयपर्वणिभीमप्राचीदिग्विजयेत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥ ॥ श्री ॥
वैशंपायनउवाच तथैवसहदेवोपिधर्मराजेनपूजितः ॥ महत्यासेनयाराजन्प्रययौदक्षिणांदिशं ॥ १ ॥ सशूरसेनान्कात्स्न्येनपूर्वमेवाजयत्प्रभुः ॥ मत्स्य
राजंचकौरव्योवशेचक्रेबलाद्बली ॥ २ ॥ अधिराजाधिपंचैवदंतवक्रंमहाबलं ॥ जिगायकरदंचैवकृत्वाराज्येन्यवेशयत् ॥ ३ ॥ सुकुमारंवशेचक्रेसुमित्रंचनराधिपं ॥
तथैवापरमत्स्यांश्चव्यजयत्सपटच्चरान् ॥ ४ ॥ निषादभूमिंगोशृंगंपर्वतप्रवरंतथा ॥ तरसैवाजयद्धीमान्श्रेणिमंतंचपार्थिवं ॥ ५ ॥ नरराष्ट्रंचनिर्जित्यकुंतिभो
जमुपाद्रवत् ॥ प्रीतिपूर्वंचतस्यासौप्रतिजग्राहशासनं ॥ ६ ॥ ततश्चर्मण्वतीकूलेजंभकस्यात्मजंनृपं ॥ ददर्शवासुदेवेनशेषितंपूर्ववैरिणा ॥ ७ ॥ चक्रेतेनससंग्रा
मंसहदेवेनभारत ॥ सतमाजौविनिर्जित्यदक्षिणाभिमुखोययौ ॥ ८ ॥ सेकानपरसेकांश्चव्यजयत्सुमहाबलः ॥ करंतेभ्यउपादायरत्नानिविविधानिच ॥ ९ ॥
ततस्तेनैवसहितोनर्मदामभितोययौ ॥ विंदानुविंदावावंत्यौसैन्येनमहतावृतौ ॥ जिगायसमरेवीरावाश्विनेयःप्रतापवान् ॥ १० ॥ ततोरत्नान्युपादायपुरंभो
जकटंययौ ॥ तत्रयुद्धमभूद्राजन्दिवसद्वयमच्युत ॥ ११ ॥ सविजित्यदुराधर्षंभीष्मकंमाद्रिनंदनः ॥ कोसलाधिपतिंचैवतथावेणातटाधिपं ॥ १२ ॥ कांतारकां
श्चसमरेतथाप्राकोटकान्नृपान् ॥ नाटकेयांश्चसमरेतथाहेरंबकान्युधि ॥ १३ ॥ मारुधंचविनिर्जित्यरम्यग्राममथोबलात् ॥ नाचीनानर्बुकांश्चैवराजानश्चम
हाबलः ॥ १४ ॥ तांस्तानाटविकान्सर्वानजयत्पांडुनंदनः ॥ वाताधिपंचनृपतिंवशेचक्रेमहाबलः ॥ १५ ॥ पुलिंदांश्चरणेजित्वाययौदक्षिणतःपुरः ॥ युयुधेपां
ड्यराजेनदिवसंनकुलानुजः ॥ १६ ॥ तंजित्वासमहाबाहुःप्रययौदक्षिणापथं ॥ गुहामासादयामासकिष्किंधांलोकविश्रुतां ॥ १७ ॥

॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

*<u>गुहामासादयामास किष्किन्धां</u> लोकविश्रुताम्॥ 2-32-18(12623)

और श्रीमद् वाल्मीकि रामयण में न केवल श्री हनुमान् जी के जन्म स्थल पर्वत, गुफा के बारें में अपितु किष्किन्धा में विराजमान अन्य विशेष पर्वत और अन्य गुफाओं के बारें में भी संपूर्ण उल्लेख , विवरण स्पष्ट रूप से मिलता है । ,

उदा : १) ऋष्यमूक पर्वत, माल्यवन्त, इत्यादि पर्वतों में विराजमान् दिव्य गुफा, यह गुहा का सामान्य अर्थ है ।

2) स्थान विशेष जैसे किष्किन्धा, यहां सन्दर्भानुसार पद का अर्थ स्वीकार करना है, जैसे उदा : - हरि - विष्णु, हरि – वानर, पदका

6. प्र) वाल्मीकि रामायण में गुहा शब्द का किष्किन्धा अर्थ मे प्रयोग किस सन्दर्भ मे कहा कहा प्रयोग कियागया है ?

स) हां श्री वाल्मीकि महर्षि जी ने अपनी रामायण मे अनेक जगहों मे किष्किन्धा के स्थान मे गुहा पद का प्रयोग किये हैं जहाँ जहाँ गुहा पद प्रयोग किये हैं वह नीचे दियागया है और **सामान्य गुहा के बारे में भी दिया है ।**

"गुहा = सामान्य गुहा पद प्रयोग सन्दर्भ "

राम तस्य तु शैलस्य महती शोभते **गुहा**।
शिलापिधाना काकुत्स्थ दुःखं चास्याः वेशनम् । 3.73.39 ॥,
तस्या **गुहायाः** प्राग्द्वारे महान्शीतोदको ह्रदः।
फलमूलान्वितो रम्यो नानामृगसमावृतः। 3.73.40॥

तस्यां वसति सुग्रीवश्चतुर्भिस्सह वानरैः। -इस गुफा के अंदर सुग्रीव अपने ४ मुख्य अनुचरों के साथ रहते थे यह निवास स्थान् है, (यह ऋष्यमुक पर्वत

के अंदर विराजमान गुहा, जहाँ वाली से त्रस्त होकर जिस ऋष्यमुक पर्वत पर सुग्रीव ने आश्रय लिया वह गुहा)

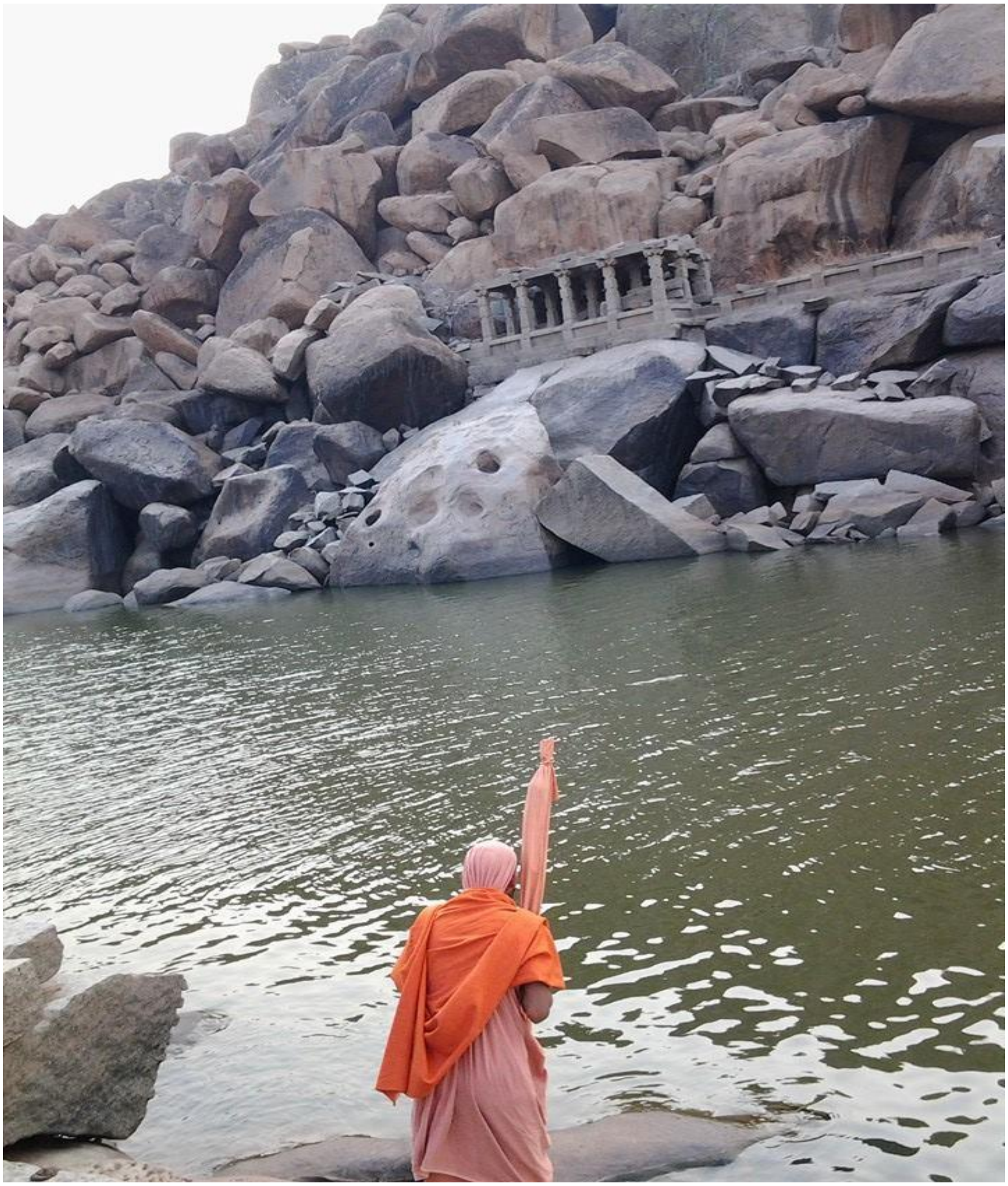

तुंग भद्रा नदी कि किनारे ऋष्यमुक पर्वत **के** अंदर विराजमान सुग्रीव गुहा,

तदागच्छ गमिष्यामि पम्पां तां प्रियदर्शनाम् । 3.75.6 ॥
ऋष्यमूको गिरिर्यत्र नातिदूरे प्रकाशते।
यस्मिन्वसति धर्मात्मा सुग्रीवोंऽशुमतस्सुतः। 3.75.7॥

https://www.youtube.com/watch?v=q6yynEnrteM

नित्यं वालिभयात्त्रस्तश्चतुर्भिस्सह वानरैः।
कदाचिच्छिखरे तस्य पर्वतस्यावतिष्ठते। 3.73.41॥
आओ, हम पम्पा चलें, जो देखने में मनभावन है। सुग्रीव, धर्मात्मा, सूर्य का पुत्र, बालि के भय से यहाँ से अधिक दूर चमकते ऋष्यमुक में ठहरे हुए हैं।
आत्मना पञ्चमं मां हि दृष्ट्वा शैलतटे स्थितम्।
उत्तरीयं तया त्यक्तं शुभान्याभरणानि च । 4.6.11॥,

यहां श्री राम जी ने भी सीता जी के अन्वेषण में किष्किंधा में अनेक पर्वत और पर्वत गुफाओं का निरीक्षण किया,
निरीक्षमाणस्सहसा महात्मा सर्वं वनं निर्झरकन्दराश्च।
उद्विग्नचेतास्सह लक्ष्मणेन विचार्य दुःखोपहतः प्रतस्थे । 4.1.126॥

एवमुक्तस्तु सुग्रीवश्शैलस्य **गहनां गुहाम्** ।
प्रविवेश ततः शीघ्रं राघवप्रियकाम्यया । 4.6.14 ॥,

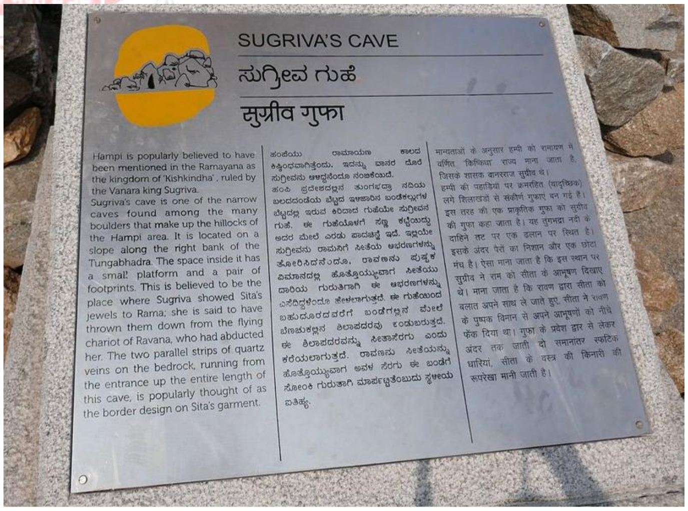

रावण जब सीता माता जी का अपहरण करके आकाश मार्ग से लंका ले जारहा था, उस समय सीता माता जी ने किष्किन्धा नगर में ऋष्यमूक पर्वत पर वानरों को देख कर पुष्पक विमान से अपने आभूषण नीचे गिराए, तब सुग्रीव ने उन आभूषणों को एक "गुफा" में संरक्षण किया और जब श्री राम जी से मित्रता हुई उस समय वही गुफा से उन आभूषणों को लाकर श्री राम जी को समर्पण किया

सुग्रीव **के द्वारा** माता सीता जी **के** आभूषणों को संरक्षण किया गया
"गुफा" उत्तरीयं गृहीत्वा तु शुभान्याभरणानि च।
इदं पश्येति रामाय दर्शयामास वानरः । 4.6.15॥,

ऋष्यमूकात्स धर्मात्मा किष्किन्धां लक्ष्मणाग्रजः।
जगाम सह सुग्रीवो वालि विक्रम पालिताम् । 4.13.1॥

कन्दराणि च शैलांश्च निर्दराणि **गुहास्तथा**।
शिखराणि च मुख्यानि दरीश्च प्रियदर्शनाः । 4.13.6॥

इमां **गिरिगुहां** रम्यामभिगन्तुमितोऽर्हसि । 4.26.7॥
(यहा गिरिगुहां इति – किष्किंधां इत्यर्थ: गो.व्या)

चतुर्दश समास्सौम्य ग्रामं वा यदि वा पुरम् ।
न प्रवेक्ष्यामि हनुमन्पितुर्निर्देशपालकः । 4.26.9।।

सुसमृद्धां **गुहां रम्यां** सुग्रीवो वानरर्षभः।
प्रविष्टो विधिवद्वीरः क्षिप्रं राज्येऽभिषिच्यताम् । 4.26.9।।

श्री राम जी ने श्री हनुमान जी को सुग्रीव के राज्याभिषेक के लिए सम्बोधित करते हुए कहां ! मै नियम के अनुसार किसी ग्राम, पुर मे प्रवेश नहीं कर सकता हूं, आप लोग समृद्ध शालिनी दिव्य "गुफा = किष्किन्धा" में प्रवेश करें" ऐसा बोला,

इस श्लोक का अर्थ क्या है ?

स) यह श्लोक अत्यन्त महत्वपुर्ण है
क्यू कि ?
स) क्यू कि ?
1. जब सुग्रीव श्रीराम जी से मिलने के बाद अपनी नगरी किष्किन्धा में प्रवेश करते हैं उस समय यह भी वाल्मीकि जी किष्किन्धा के स्थान में "गुहा" शब्द प्रयोग करते हैं और
2. जब लक्ष्मण जी वर्ष ऋतु समाप्त होने के बाद श्री राम जी की आज्ञा से तुंग भद्रा के दक्षिण तट पर विराजमान माल्यवन्त पर्वत से सुग्रीव से मिलने केलिए किष्किन्धा नगर में प्रवेश करते हैं उस सन्दर्भ में भी श्री वाल्मीकि जी ने 'गुहा' शब्द का प्रयोग करते हैं ।

यहाँ **"सुसमृद्धां गुहां रम्यां", "** प्रविष्टो" इस का अर्थ
गुहा का अर्थ किष्किंन्धां" इत्यर्थ: **- "गुहां किष्किंन्धां प्रविष्टः "**
गो.व्या) समृद्द शालिनी दिव्य गुफा में प्रवेश किया" यह अर्थ स्पष्ट है

इयं गिरिगुहा रम्या विशाला युक्तमारुता।
प्रभूतसलिला सौम्य प्रभूतकमलोत्पला । 4.26.15 ॥
इति रामाभ्यनुज्ञातस्सुग्रीवो वानराधिपः।

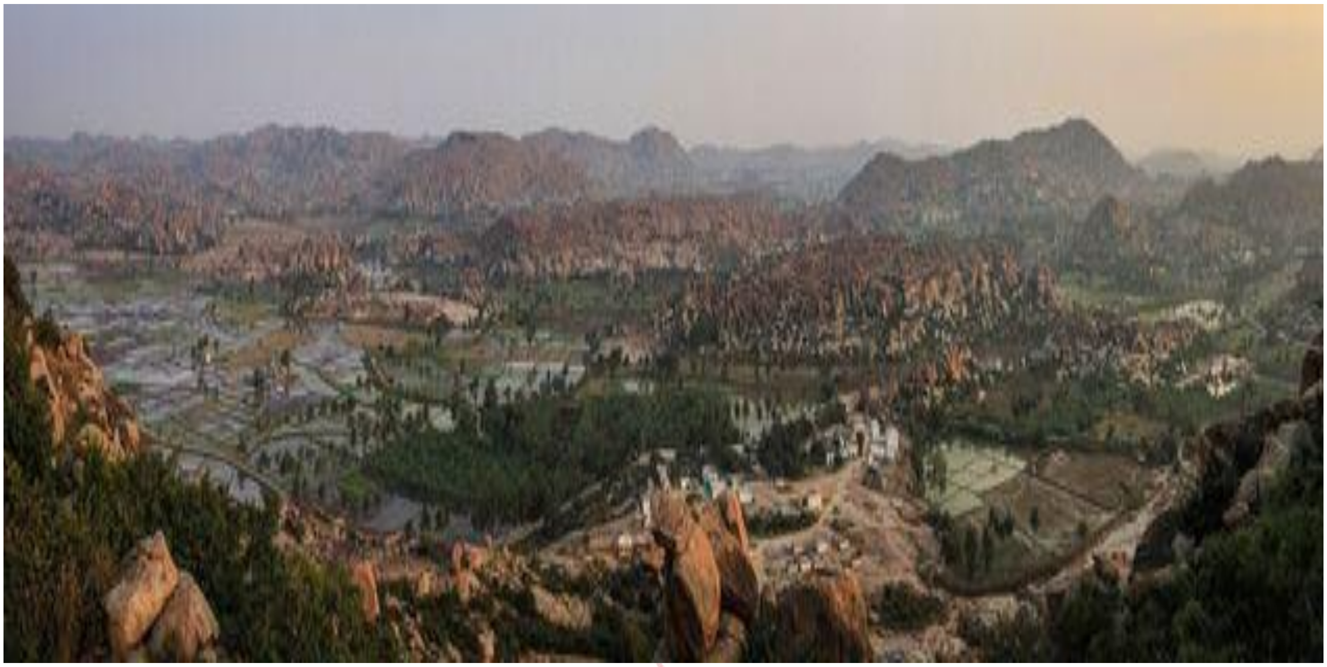

<u>**प्रविवेश पुरीं रम्यां किष्किन्धां**</u> वालिपालिताम्। 4.26.18॥

यह **गिरिगुहा रम्या, प्रविवेश पुरीं रम्यां इत्युक्ते किष्किन्धां इत्यर्थः**

हृष्टपुष्टजनाकीर्णा पताकाध्वजशोभिता।

बभूव नगरी रम्या "**किष्किन्धा गिरिगह्वरे"** । 4.26.41॥

(किष्किन्धा "गिरिगह्वरे" इत्युक्ते **पर्वतों के बीच मे विद्यमान** गुफा के समान नगरी "किष्किन्धायां इत्यर्थः" गो.व्या)

अभिषिक्ते तु सुग्रीवे प्रविष्टे वानरे **गुहाम्**।

आजगाम सह भ्रात्रा रामः प्रस्रवणं गिरिम् 4.27.1॥

"प्रविष्टे वानरे गुहां - इत्युक्ते **गुहां - किष्किन्धाख्याम्** " (गो. टी. व्या)

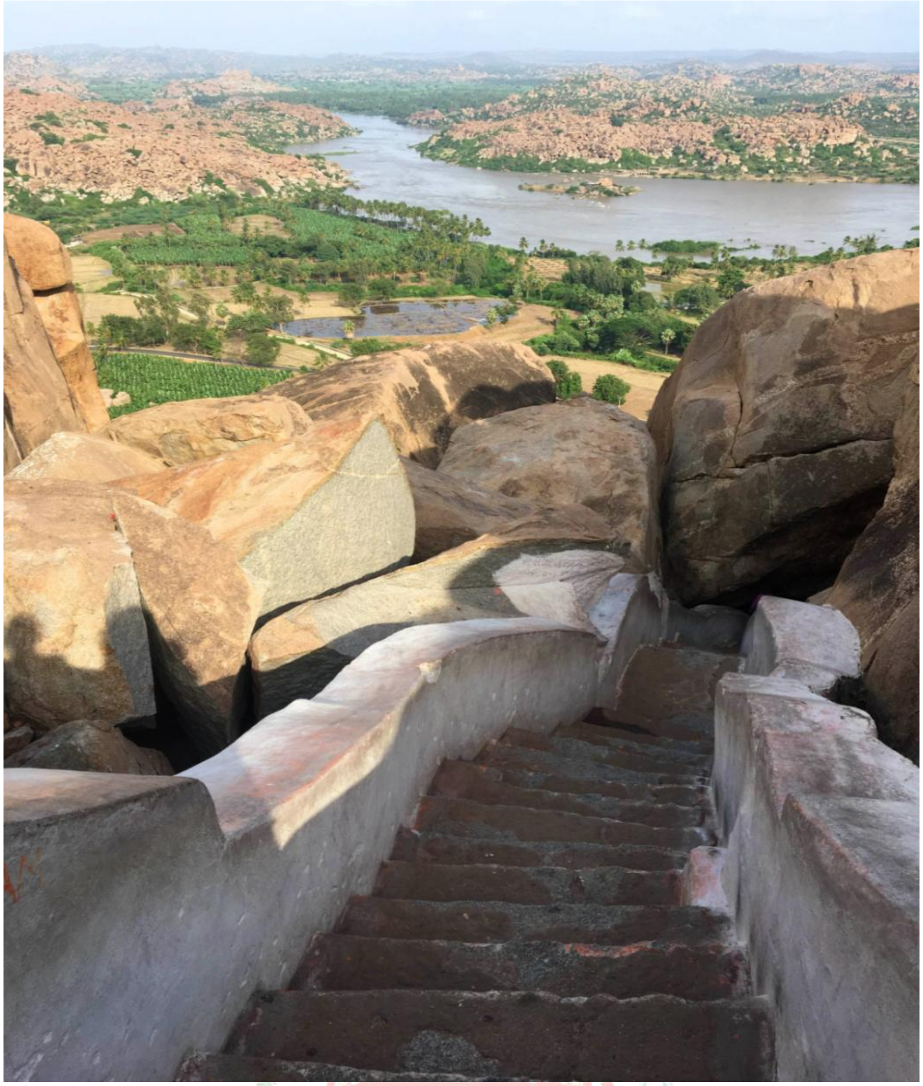

माल्यवंत पर्वत (प्रस्रवण गिरि) - इस पर्वत में विराजमान गुफा (जहां श्री राम जी ने लक्ष्मण जी के साथ चातुर्मास्य व्रत किया उसी समय माल्यवंत पर्वत में इसी गुहा में श्री राम जी ने ४ माह चातुर्मास्य व्रत केलिये निवास किया),

तस्य शैलस्य शिखरे **महतीमायतां गुहाम्** ।
प्रत्यगृह्णत वासार्थं रामस्सौमित्रिणा सह 4.27.4॥

इयं गिरिगुहा रम्या विशाला युक्तमारुता।
अस्यां वत्स्याम सौमित्रे वर्षरात्रमरिन्दम4.27.6॥
(अत्र “महतीमायतां गुहाम्” , “गिरिगुहा” इत्युक्ते माल्यवंत पर्वत में विराजमान गुहा)

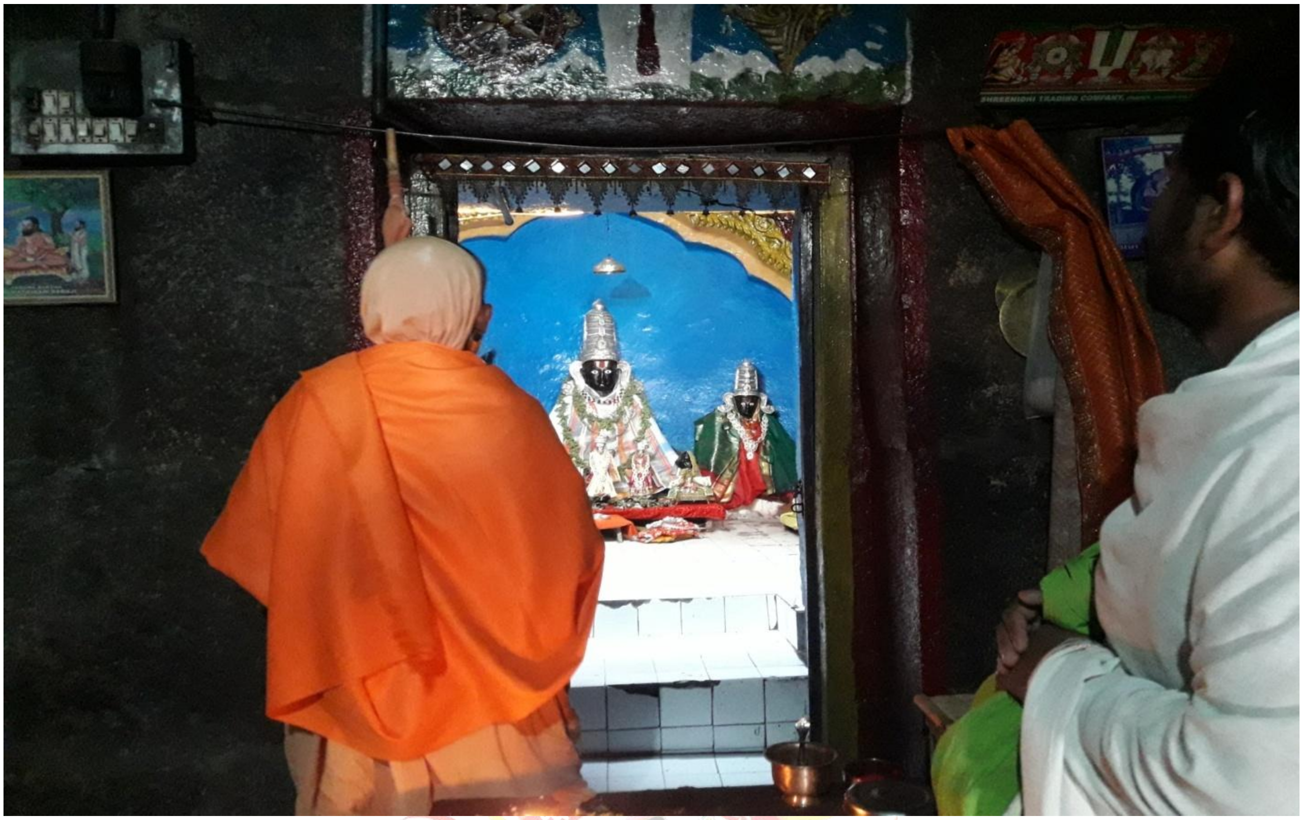

https://www.youtube.com/watch?v=T8jW7n_Sq24&t=5s

प्रागुदक्प्रवणे देशे **गुहा** साधु भविष्यति।
पश्चाच्चैवोन्नता सौम्य निवातेयं भविष्यति4.27.12॥

गुहां प्रविष्टे सुग्रीवे विमुक्ते गगने घनैः।
वर्षरात्रोषितो रामः कामशोकाभिपीडितः 4.30.1॥

तत्वदीपिका - अथ उक्तानुवादपूर्वकं रामस्य वृत्तान्तमाह गुहामिति । सुग्रीवेविमुक्त इत्यत्र अविमुक्त इति छेदः । सुग्रीवे गुहां किष्किन्धां प्रविष्टे गगने घनैरविमुक्ते आवृते सति वर्षरात्रोषितो रामः पाण्डरं गगनं दृष्ट्वा मुमोहेत्युत्तरत्र सम्बन्धः ।। 4.30.13 ।। (अत्र गुहां इत्युक्ते किष्किंधायां इत्यर्थः),
त्वं प्रविश्य च किष्किन्धां ब्रूहि वानरपुङ्गवम् ।
मूर्खं ग्राम्यसुखे सक्तं सुग्रीवं वचनान्मम ।। 4.30.70 ।।
तामपश्यद्बलाकीर्णां हरिराजमहापुरीम्।
दुर्गा मिक्ष्वाकुशार्दूलः किष्किन्धां गिरिसङ्कटे । 4.31.16 ॥,
अथ प्रतिसमादिष्टो लक्ष्मणः परवीरहा।
प्रविवेश **गुहां** घोरां (रम्यां) **किष्किन्धां** रामशासनात् । 4.33.1॥

हनुमत्प्रार्थनानन्तरकालिकं लक्ष्मणवृत्तान्तमाह अथेति । अथ सुग्रीवकर्मकहनुमत्प्रार्थनानन्तरं प्रतिसमादिष्टः गुहाप्रवेशाय अङ्गदेन प्रार्थितः रामशासनादागतो लक्ष्मणः किष्किन्धां प्रविवेश ।। 4.33.1 ।।

(प्रविवेश गुहां घोरां किष्किन्धां इत्युक्ते "किष्किन्धायां" इत्यर्थः)

स तां रत्नमयीं श्रीमान्दिव्यां पुष्पितकाननाम्।
रम्यां रत्नसमाकीर्णां ददर्श महतीं गुहाम्। 4.33.4॥
(महतीं गुहाम् इति – दिव्यां महतीं गुहाम्)

अञ्जनाम्बुदसङ्काशाः कुञ्जरप्रतिमौजसः(कुञ्जरेन्द्रमहौजसः ।

अञ्जने पर्वते चैव ये वसन्ति प्लवङ्गमाः। 4.37.5॥
(किष्किन्धा नगरी स्थित अञ्जनाद्रि पर्वत मे निवास करने वाले वानर)

अञ्जन - यहाँ “काजल वर्ण” भी अर्थ है, “हाथी के जैसे वर्ण वाले बृहत पाषाण रूप पर्वत” दोनो अलग अलग रूप से प्रयोग किया है,

ततस्ते**ऽञ्जनसङ्काशा** गिरेस्तस्मान्महाजवाः।
तिस्रः कोट्यः प्लवङ्गानां निर्ययुर्यत्र राघवः। 4.37.20॥

(तस्मात् गिरेः अञ्जनगिरेः निर्ययुः - ति, गो.टी व्या,),

किष्किन्धा नगरी में स्थित किष्किन्धा पर्वत ही अञ्जनाद्रि पर्वत है । इस पर्वत से माल्यवन्त पर्वत बहुत दूर मे है । किष्किन्धा नगरी पम्पा पट्टण के बाहर माल्यवन्त पर्वत है , किष्किन्धा नगरी / किष्किन्धा /अञ्जनाद्रि पर्वत तुङ्गभद्रा नदी के उत्तर दिशा में हैं और माल्यवन्त पर्वत / प्रस्रवण गिरि (जहा श्रीराम चातुर्मास्य केलिए जिस पर्वत मे रहते थे) वह नगर से दूर तुङ्गभद्रा के दक्षिण दिशा में हैं ,

MAP

“तिस्रः कोट्यः प्लवङ्गानां निर्ययुर्यत्र राघवः। 4.37.20॥
अञ्जनाद्रि पर्वत में रहने वाले तीन करोड़ वानर श्री राम जी जिस माल्यवन्त पर्वत में विराजमान थे उसी प्रस्रवण गिरि केलिए सभी वानर गए ।

अञ्जनाद्रि पर्वत के बारें में वाल्मीकि रामायण में अत्यन्त स्पष्ट उल्लेख है यह पर्वत किष्किंधा में ही स्थित है, और यहाँ इस वाक्य को लेकर विपरीत अर्थ निकालकर दुरुपयोग करने वाले बहुत लोग यह बोलते हैं कि यह अञ्जनाद्रि पर्वत हमारे क्षेत्र मैं है, और यहाँ से किष्किंधा वानर गए , ऐसे

दावा करने वाले लोगों में तिरुपति / नासिक / झारखंड के गुमला नामक स्थान है, यहाँ इन जगहों का वाल्मीकि रामायण में या अन्य कही भी लेश मात्र भी उल्लेख नही है। यदि अन्यत्र किष्किन्धा क्षेत्र है तो, वहा उस क्षेत्र का नाम जरूर श्रीमद् वाल्मीकि रामायण में उसी क्षेत्र का नाम उल्लेख करते । परन्तु ऐसे किसी अन्य क्षेत्र का लेश मात्र भी प्रस्तावन नहीं है । किष्किंधा के अलावा अन्य किसी जगह का कोई प्रामाणिक, प्रमाण नही है.।

ततः पर्वतमासाद्य ऋष्यमूकं नृपात्मज। 4.46.23॥
न विवेश तदा वाली मतङ्गस्य भयात्तदा।
एवं मया तदा राजन्प्रत्यक्षमुपलक्षितम्। 4.46.24॥

पृथिवीमण्डलं कृत्स्नं **गुहा**मस्यागतस्ततः।

श्री सुग्रीव जी श्री हनुमान इत्यादि अपने ४ मित्रों कि सात् ऋष्य मूक पर्वत मे रहते थे : ऋष्यमूके गिरिवरे पम्पापर्यन्तशोभिते ।
निवसत्यात्मवान्वीरश्चतुर्भिस्सह वानरैः। 3.72.12॥

4. ए ऋष्यमूकपर्वत कैसे आया ?

स) इस ऋष्य मूक पर्वत को ब्रह्मा जी ने निर्माण किया था:

ऋष्यमूकश्च पम्पायाः पुरस्तात्पुष्पितद्रुमः। सुदुःखारोहणो नाम शिशुनागाभिरक्षितः। 3.73.31॥ उदारो ब्रह्मणा चैव पूर्वकाले विनिर्मितः।

श्री हनुमान जी कि जन्म, जन्म स्थल, और जन्म वृत्तान्त निरूपण

श्री हनुमान् जी का जन्म त्रेतायुग में दक्षिण भारत में (वर्तमान कर्नाटक राज्य) पम्पाक्षेत्र तुङ्गभद्रा नदी के तट पर विराजमान किष्किंधा नगरी में हुआ,   यहाँ "गुहा" का अर्थ साक्षात् स्थान विशेष है "किष्किंधा" (यथा रामायणे।१।१।७०।   "किष्किन्ध्यांरामसुग्रीवौजग्मतुस्तौगुहांतदा॥")

अब तक गुहा **का** अर्थ किष्किन्धा यह निरूपण हुआ,

https://www.youtube.com/watch?v=zLpUnt1dHKE&t=37s

भगवान श्री हनुमान जी की जन्मतिथि

प्रश्न: भगवान हनुमान की जन्म तिथि कब है?, यह किस ग्रंथ में वर्णित है?

उत्तर: श्रीमद वाल्मीकि महर्षि द्वारा लिखित "आनंद रामायण" में है,

प्रश्न: क्या आप प्रणामश्लोक कह सकते हैं,

उत्तर:आनंद रामायण के सारकंडा में 13वें सर्ग का 163 वां श्लोक है,

प्रश्न: यह जन्म तिथि विषय प्रसंग कौन किसको किस संदर्भ में बता रहा है?

उत्तर: जिस समय श्री राम ने श्री अगस्त्य से श्री हनुमान के जन्म की कथा सुनाने की प्रार्थना की तब महर्षी श्री अगस्त्य जी ने श्री राम को श्री हनुमान की जन्म तिथि और पूरी कहानी बताई।

प्रश्न: इस का प्रमाण श्लोक क्या है?

उत्तर: श्लो"महा चैत्री महाचैत्रीपूर्णिमायां समुत्पन्नो अंजनी सुत:"

- आ.रा स.13.163, "चैत्र शुक्ल पूर्णिमा" चैत्रमास पूर्णिमा तिथि को हनुमान जी का जन्म अंजनिसुत के रूप में हुआ था।

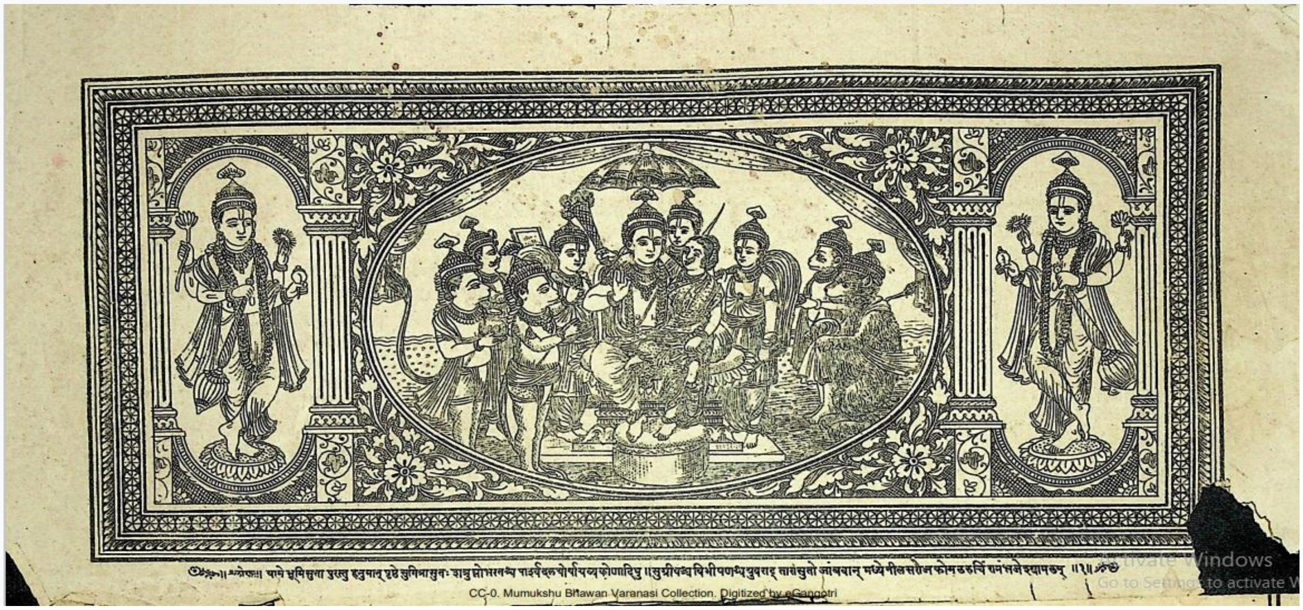

श्लोक, ग्रंथ, प्रमाण, श्री मद वाल्मीकि महर्षि द्वारा विरचित "आनंद रामायण"

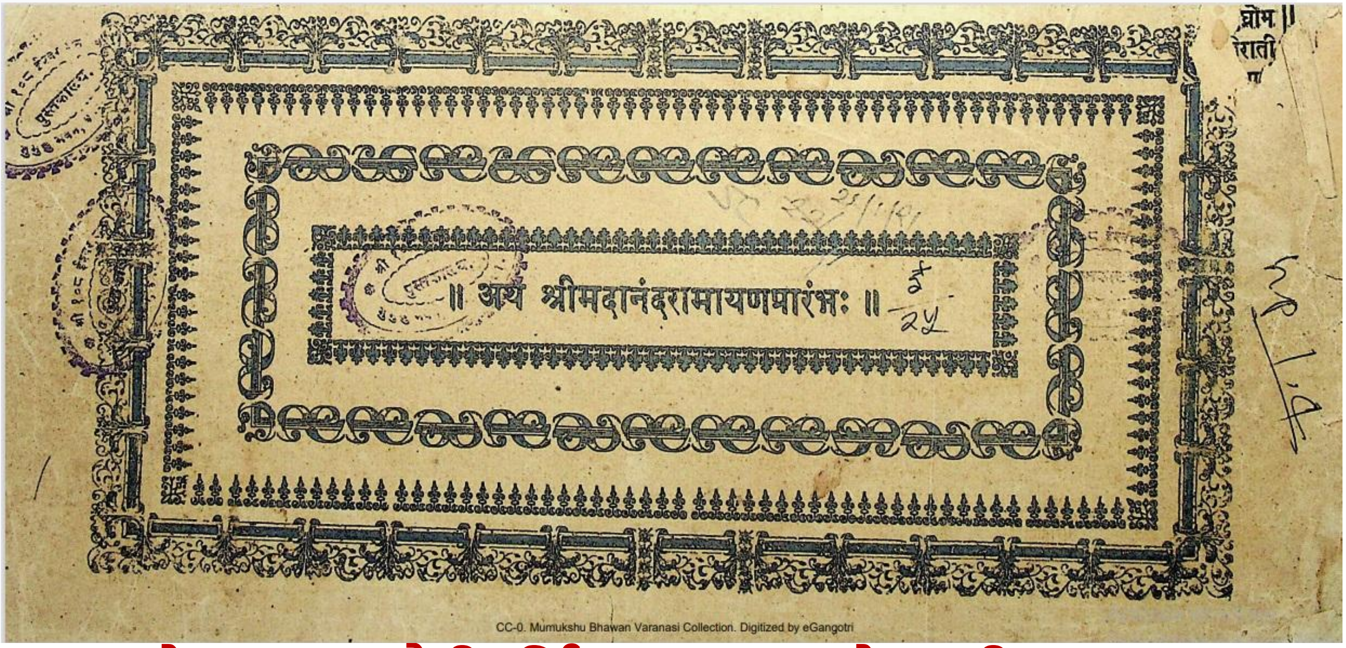

श्लोकः " महाचैत्रीपूर्णिमायां समुत्पन्नोऽञ्जनीसुतः" ॥ सा.का -13.163,

आ. रा. स्तासांत्रीणिंदशाननः ॥ आश्चर्यमतुलंलब्ध्वाचिंतयामासदुर्मतिः १३६ विष्णुनायेहतायुद्धेतेषामेताद्दशंबलम् ॥ तद्यंत्रनिहतस्तेनश्वेतद्वीपंव्रजाम्यहम् सा. कां.
१३७ मयिविष्णुर्यथाकुप्येत्तथाकार्यंकरोम्यहम् ॥ इतिनिश्चित्यवैदेहींजहाररावणोवनात् १३८ जानन्नेवंमहालक्ष्मींसजहाराऽवनीसुताम् ॥ मातृवत्पाल १
॥ ३७ ॥ यामासत्वत्तःकांक्षन्वधंनिजम् १३९ ॥ श्रीरामचंद्रउवाच ॥ वालिसुग्रीवयोर्जन्मश्रोतुमिच्छामित्वन्मुखात् ॥ रवींद्रौवानराकारौजज्ञातइतितच्छ्रुतम् १४०
॥ अगस्त्यउवाच ॥ मेरौस्वर्णमयेपूर्वंसभायांब्रह्मणःकदा ॥ नेत्राभ्यांपतितंदिव्यमानंदाश्रुजलंतदा ४१ तद्गृहीत्वाकरेब्रह्माध्यात्वाकिंचित्तदत्यजत् ॥ भूमौपतितमा
त्रेणतस्माज्जातोमहाकपिः ४२ तमाहद्रुहिणोवत्सत्वमत्रवससर्वदा ॥ एवंबहुतिथेकालेगतेर्क्षविरजाःसुधीः ४३ कदाचित्पर्यटन्मेरौफलमूलार्थमुद्यतः ॥ अपश्यद्दिव्य
सलिलांवापींमणिशिलाचिताम् ४४ पानीयंपातुमगमत्तत्रच्छायामयंकपिम् ॥ दृष्ट्वाप्रतिकपिंमत्वानिपपातजलांतरे ४५ तत्राऽदृष्ट्वाहरिंशीघ्रंबहिरुत्प्लुत्यसंययौ ॥ अ
पश्यत्सुंदरींनारीमात्मानंविस्मयंगतः ४६ ततोददर्शमघवासोऽत्यजद्वीर्यमुत्तमम् ॥ तामप्राप्यैवतद्वीर्यंवालदेशेऽपतद्भुवि ४७ वालीसमभवत्तत्रशक्रतुल्यपराक्रमः ॥
भानुरप्यागमत्तत्रतदानीमेवभामिनीम् ४८ दृष्ट्वाकामवशोभूत्वाग्रीवादेशेऽसृजन्महत् ॥ बीजंतस्यास्ततःसद्योसुग्रीवोबलवानभूत् ४९ पुत्रद्वयंसमादायगत्वासानिद्रि
ताक्वचित् ॥ प्रभातेपश्यदात्मानंपूर्ववद्वानराकृतिम् १५० तद्वृत्तंतुविधिःश्रुत्वाकिष्किंधाराज्यमुत्तमम् ॥ ददौसवानरेंद्रायपुत्राभ्यांतत्रसंस्थितः ५१ मृतेर्क्षेविरजस्या
भूद्वालीपुर्यांकपीश्वरः ॥ एवंतेकथितंरामयथापृष्टंत्वयामम ५२ ॥ श्रीरामचंद्रउवाच ॥ यदाऽसौवालिनाबंधुःकिष्किंधायाबहिष्कृतः ॥ तदातस्यैवसचिवःश्रीमान्पव
ननंदनः ५३ नवेदकिंबलंनैजंवालितुल्यपराक्रमः ॥ इतिरामवचःश्रुत्वापुनस्तंमुनिरब्रवीत् ५४ केसरीनामविख्यातःकपिरंजनपर्वते ॥ तस्यास्तांचशुभेपत्न्यौवान
र्यौविकृदागिरौ ५५ प्लवंगस्यांजनीनाम्नीस्थितातावच्चखात्तदा ॥ पपातपायसमयःपिंडोगृध्रीमुखाद्भुवि ५६ यदानीतस्तुकैकेय्याकरादृध्याशुभःपुरा ॥ तंपिंडंभक्षया
मासवानरीह्यमृतोपमम् ५७ एतस्मिन्नंतरेतत्रमार्जारास्यासमागता ॥ पतिनासहितेतेद्वेक्रीडंत्यौवसनंतयोः ५८ अहरत्पवनोवेगाद्दृष्ट्वावायुस्तदूरवः ॥ अंजनींप्रा
र्थयामासतयाभोगंचकारसः ५९ तथैवप्रार्थयामाससमार्जारास्यांसनिर्ऋतिः ॥ तयाऽकरोद्रतिंतत्रसोऽपिपर्वतमूर्द्धनि १६० तयोस्ताभ्यांसमुत्पन्नौवानर्यांमारुतात्म
जः ॥ मार्जार्याःसमभूद्घोरःपिशाचोघर्घरस्वनः ६१ चैत्रेमासिसितेपक्षेहरिदिन्यांमघाभिधे ॥ नक्षत्रेससमुत्पन्नोहनुमान्रिपुसूदनः ६२ महाचैत्रीपूर्णिमायांसमुत्पन्नो
ऽञ्जनीसुतः ॥ वदंतिकल्पभेदेनबुधाइत्यपिकेचन ६३ बालभावेऽपियःपूर्वंदृष्ट्वोद्यंतंविभावसुम् ॥ मत्वापक्वफलंचेतिजिघृक्षुर्लीलयोत्प्लुतः ६४ योजनानांपंचशतंवायु ॥ ३७ ॥
वेगेनमारुतिः ॥ राहुस्तस्मिन्दिनेदर्शेययौसूर्यंरघूत्तम ६५ तावद्दृष्ट्वाघटुकामंरवेरग्रेकपिंस्थितम् ॥ तदाराहुर्भयादेवरविंमुक्त्वेंद्रमाययौ ६६ राहुःप्राहशचीनाथंतव
पीडांकरोम्यहम् ॥ दत्तःपूर्वंत्वयासूर्यःपीडांकर्तुंसुरेश्वर ६७ तत्रविघ्नंसमुत्पन्नंतत्त्वंशीघ्रंनिवारय ॥ तद्राहुवचनादिंद्रःसमारुह्यगजोपरि ६८ देवैर्युतोययौवेगाद्ददर्श

१ वायुस्तुदूरतःइतिपाठः । २ एकादश्यामित्यर्थः ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीहरिः

श्रीमदानन्दरामायणस्थविषयानुक्रमणिका

विषय — पृष्ठ

सारकाण्ड

प्रथम सर्ग

मङ्गलाचरण — १

रघुवंशकी संक्षिप्त वंशावली — २

रावणका ब्रह्मासे अपने मरणका हेतु पूछना, ब्रह्माका रामके हाथों रावणके मरणका भविष्य बतलाना और रावणका कौसल्याको सन्दूकमें बंद करके समुद्रनिवासी तिमिंगलको सौंपना — ३

महाराज दशरथके साथ कौसल्याका गांधर्व-विवाह — ४

दशरथजीका सुमित्रा-कैकेयीके साथ विवाह, महाराज दशरथका देव-दानवयुद्धमें जाना — ५

उस युद्धमें कैकेयीका रथकी टूटी धुरीमें अपना

राम-लक्ष्मणको लेकर विश्वामित्रका जनकपुरको प्रस्थान और अहल्योद्धार — ११

रामके आगमनसे जनकपुरनिवासिनी ललनाओंका हर्षोल्लास — १३

राजा जनक द्वारा अपनी प्रतिज्ञाकी घोषणा — १४

रावण द्वारा धनुष उठानेका प्रयास और उसमें विफलता, सभामें रामका आगमन — १५

सीताका रामको देखना और मुग्ध होकर मन ही मन देवताओंसे प्रार्थना करना — १७

रामके हाथों शिवधनुष टूटना — १८

राजा जनकके आज्ञानुसार सीताका राजसभामें आना और रामके गलेमें वरमाला डालना — १९

राजा जनकका महाराज दशरथके पास निमंत्रण भेजना, रामादि चारों भ्राताओंके विवाहका निश्चय और सीताके जन्मका वृत्तान्त — २१

मंदिरमें प्रवेश १२१

हनुमानका मैरावणकी पत्नीसे ऐरावण-मैरावण-के मरणका उपाय पूछना और उस नागकन्याका उन दोनोंकी मृत्युका उपाय बताना १२२

रामके द्वारा ऐरावण-मैरावणका वध १२४

उस नागकन्याको रामका वरदान, रावणका कुम्भकर्णको जगाना, रावणकी प्रेरणासे उसका समरभूमिमें जाना और रामके हाथों कुम्भकर्णका निधन १२५

मेघनादका निकुम्भिला देवीके मंदिरमें जाकर यज्ञ करना और हनुमान् तथा लक्ष्मण द्वारा यज्ञविध्वंस १२६

लक्ष्मण द्वारा मेघनादका वध १२७

सुलोचनाका सती होना १२८

रावणका सीताको रामका कटा हुआ नकली सिर दिखाना १२९

मन्दोदरीका रावणको समझाना और रावणका रामके समक्ष नकली सीताको काटना १३०

राम-रावणका भीषण युद्ध १३१

रामके हाथों रावणका वध १३२

द्वादश सर्ग

राम-सीताका मिलन १३३

रामकी अयोध्या लौटनेकी तैयारी और विभीषणके प्रश्न १३४

रामका त्रिजटाको वरदान १३५

रामका अवध-प्रस्थान, मार्गमें सम्पातीसे भेंट और रामका सीताको विविध दृश्य दिखाना १३६

उधर अवधि बीतते देखकर भरतका चितामें

त्रयोदश सर्ग

रामके यहाँ अगस्त्य आदि ऋषियोंका आगमन, रामका अगस्त्यसे मेघनादका वृत्तांत पूछना और उनका बताना १४६

रावण-कुम्भकर्ण आदिकी जन्मकथा १४७

भाताकी आज्ञासे रावणका शिवलिंग लेने कैलाश जाना और अपने मस्तक काटकर शिवजीको प्रसन्न करना तथा वरदान पाना १४८

रावण कुम्भकर्ण-विभीषणका तप करके ब्रह्माको प्रसन्न करना और उनसे वरदान पाना १४९

रावणको कुबेरपुत्र नलकूबरका शाप, मेघनादका इन्द्रको पराजित करना और उसका इन्द्रजित् नाम पड़ना १५०

रावणका बालिसे लड़ने जाना और बालिका उसे अपनी काँखमें रख लेना १५१

रावणका वानरराज वालिसे युद्ध करने जाना और परास्त होना १५२

रावणका राजा अनरण्यसे युद्ध और उनका रावणको शाप १५३

रावण-सनत्कुमारका वार्तालाप, रावणकी श्वेत-द्वीपयात्रा और वहाँकी स्त्रियोंके हाथों पिटना १५४

बालि-सुग्रीवकी जन्मकथा १५५

ब्रह्माका वालिको किष्किंधाका राज्य देना और हनुमान्‌की जन्मकथा १५६

हनुमान्‌का सूर्यको निगलना, हनुमान्‌पर इन्द्रका वज्रप्रहार, पवनका कोप और हनुमान्‌को ब्रह्माका वरदान १५७

इन्द्रका राहुको सूर्य देना और हनुमान्‌को

मृतेऋक्षविरजस्याभूद्वाली पुर्यां कपीश्वरः । एवं ते कथितं राम यथा पृष्टं त्वया मम ॥१५२॥

श्रीरामचन्द्र उवाच

यदाऽसौ वालिना बंधुः किष्किन्धाया बहिष्कृतः ।
तदा तस्यैव सचिवः श्रीमान्पवननंदनः ॥१५३॥
न वेद किं बलं नैजं वालितुल्यपराक्रमः । इति रामवचः श्रुत्वा पुनस्तं मुनिरब्रवीत् ॥१५४॥

अगस्तिरुवाच

केसरीनाम विख्यातः कपिरंजनपर्वते ।
तस्यास्तां च शुभे पत्न्यौ वानर्यविकटा गिरौ ॥१५५॥
प्लवंगस्याञ्जनीनाम्नी स्थिता तावच्च खात्तदा ।
पपात पायसमयः पिंडो गृध्रीमुखाद्भुवि ॥१५६॥
यदा नीतस्तु कैकेय्या कराद्गृध्र्या शुभः पुरा । तं पिंडं भक्षयामास वानरी ह्यमृतोपमम् ॥१५७॥
एतस्मिन्नंतरे तत्र मार्जारास्या समागता । पतिना रहिते ते द्वे क्रीडंत्यौ वसनं तयोः ॥१५८॥
अहरत्पवनो वेगाद्दृष्ट्वा वायुस्तदूरवः ।
अंजनीं प्रार्थयामास तया भोगं चकार सः ॥१५९॥
तथैव प्रार्थयामास मार्जारास्यां स निर्ऋतिः । तयाऽकरोद्रतिं तत्र सोऽपि पर्वतमूर्द्धनि ॥१६०॥
तयोस्ताभ्यां समुत्पन्नो वानर्यां मारुतात्मजः ।
मार्जार्याः समभूद्घोरः पिशाचो घर्घरस्वनः ॥१६१॥
चैत्रे मासि सिते पक्षे हरिदिन्यां मघाऽभिधे । नक्षत्रे स समुत्पन्नो हनुमान् रिपुसूदनः ॥१६२॥
महाचैत्रीपूर्णिमायां समुत्पन्नोऽञ्जनीसुतः । वदन्ति कल्पभेदेन बुधा इत्यादि केचन ॥१६३॥
बालभावेऽपि यः पूर्वं दृष्ट्वोद्यंतं विभावसुम् ।
मत्वा पक्वफलं चेति जिघृक्षुर्लीलयोत्प्लुतः ॥१६४॥

यह वृत्तान्त सुनकर ब्रह्माजीने वानरेन्द्र ऋक्षविरजाको किष्किंधा नगरीका उत्तम राज्य दे दिया। जहाँपर वह अपने दोनों पुत्रोंके साथ रहने लगा ॥ १५१ ॥ उस ऋक्षराजके मर जानेपर किष्किन्धापुरीका राजा कपीश्वर बाली हुआ। हे राम! जो आपने पूछा, मैंने वह सब कह दिया ॥ १५२ ॥ श्रीरामचन्द्र बोले—जब सुग्रीवको बालीने किष्किन्धासे बाहर निकाल दिया था, उस समय इनके मन्त्री ये वायुनन्दन हनुमान् भी साथ थे ॥ १५३ ॥ पर इनको बालीके समान अपना बल क्यों नहीं याद आया? रामके इस वचनको सुनकर मुनि अगस्त्य फिर कहने लगे–॥ १५४ ॥ अंजन पर्वतनिवासी केसरी नामसे विख्यात कपिकी दो वानरी स्त्रियें थीं ॥ १५५ ॥ किसी समय उस कपिकी अंजनी नामकी स्त्री वहाँ बैठी थी। इतनेमें आकाशसे किसी गृध्रीके मुखसे छूटकर पायसका एक पिण्ड आ गिरा ॥ १५६ ॥ यह पिंड वही था जो कि पहले कैकेयी-के हाथसे एक गृध्री छीन ले गयी थी। उस अमृततुल्य पिण्डको वानरीने खा लिया॥ १५७ ॥ इतनेमें वहाँ वह दूसरी मार्जारास्या वानरी भी आ पहुंची। पतिकी अनुपस्थितिमें वे दोनों क्रीड़ा कर रही थीं। तभी उन दोनोंके वस्त्रोंको पवनने उड़ाकर ऊँचे उठाया तथा उनकी जाँघोंको देख लिया। पश्चात् अंजनीसे प्रार्थना करके उसके साथ वायुने भोग किया ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ उसी प्रकार निर्ऋतिने मार्जारास्यासे प्रार्थना करके पर्वतके शिखरपर उसके साथ रति की ॥ १६० ॥ उन दोनोंसे उन दोनोंमें–वानरीसे मारुतात्मज हनुमान् तथा मार्जारीसे घोर घर्घरस्वन पिशाच उत्पन्न हुआ ॥ १६१ ॥ चैत्र शुक्ल एकादशीके दिन मघानक्षत्रमें रिपुदमन हनुमान्-का जन्म हुआ था ॥ १६२ ॥ कुछ पण्डित कल्पभेदसे चैत्रकी पूर्णिमाके दिन हनुमान्‌का शुभ जन्म हुआ, ऐसा कहते हैं ॥ १६३ ॥ वे हनुमान् बाल्यकालमें ही सूर्यको देख तथा उन्हें पका फल समझकर उसको लेनेकी

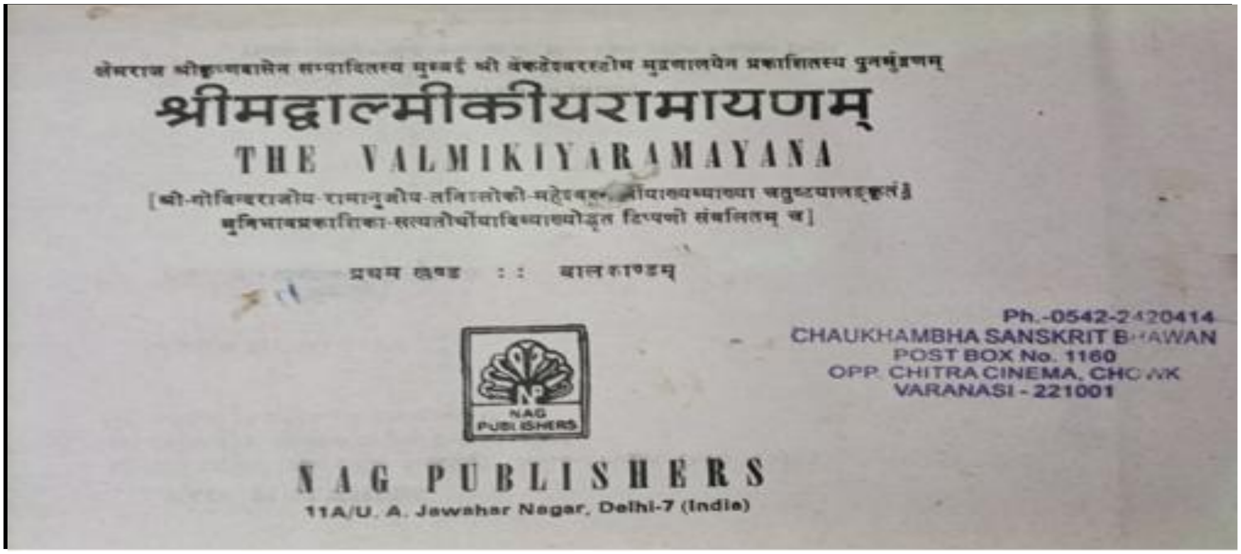

खेमराज श्रीकृष्णदासेन सम्पादितस्य मुम्बई श्री वेङ्कटेश्वरस्टीम मुद्रणालयेन प्रकाशितस्य पुनर्मुद्रणम्

श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणम्

THE VALMIKIYARAMAYANA

[श्री-गोविन्दराजीय-रामानुजीय-तनिश्लोकी-महेश्वरतीर्थीयाख्यव्याख्या चतुष्टयालङ्कृतं]
भूषिभावप्रकाशिका-सत्यतीर्थीयाविख्याताख्योद्धृत टिप्पणी संवलितम् च]

प्रथम खण्ड :: बालकाण्डम्

Ph.-0542-2420414
CHAUKHAMBHA SANSKRIT BHAWAN
POST BOX No. 1160
OPP. CHITRA CINEMA, CHOWK
VARANASI - 221001

NAG PUBLISHERS

NAG PUBLISHERS
11A/U. A. Jawahar Nagar, Delhi-7 (India)

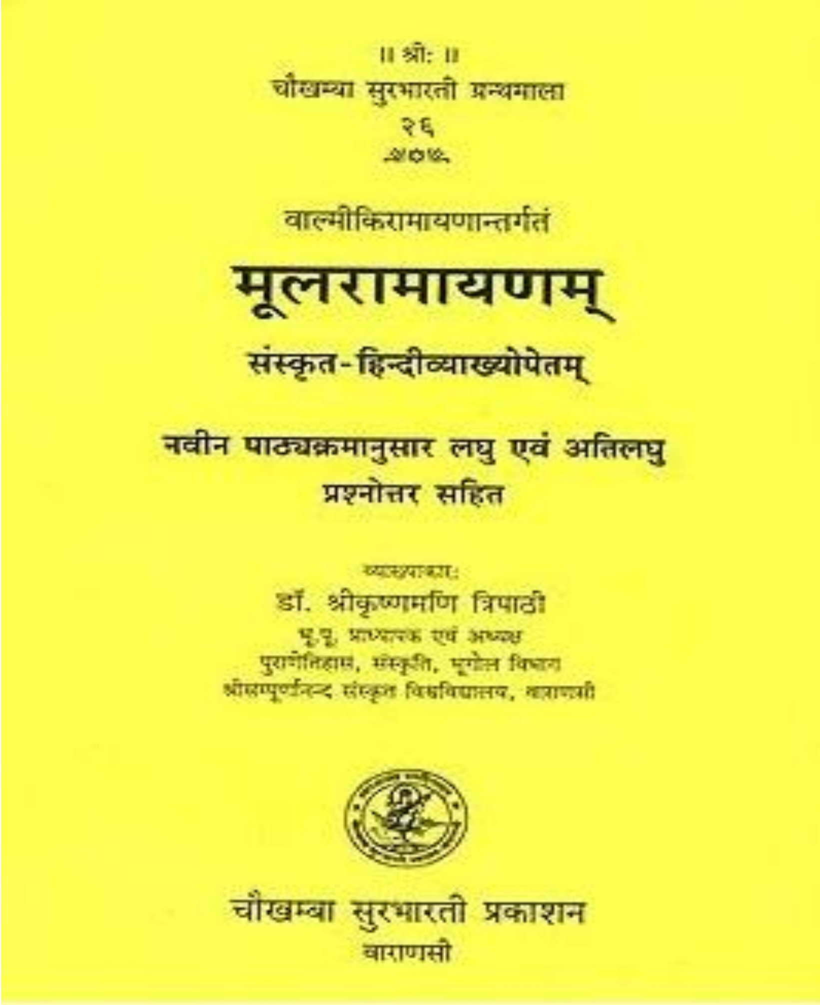

॥ श्रीः ॥
चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
२६

वाल्मीकिरामायणान्तर्गतं

मूलरामायणम्

संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम्

नवीन पाठ्यक्रमानुसार लघु एवं अतिलघु
प्रश्नोत्तर सहित

व्याख्याकारः
डॉ. श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी
पू.पू. प्राध्यापक एवं अध्यक्ष
पुराणेतिहास, संस्कृति, भूगोल विभाग
श्रीसम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

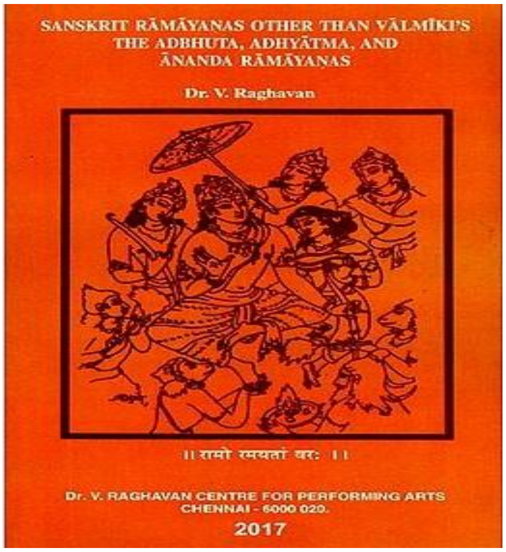
SANSKRIT RĀMĀYANAS OTHER THAN VĀLMĪKI'S
THE ADBHUTA, ADHYĀTMA, AND ĀNANDA RĀMĀYANAS
Dr. V. Raghavan
॥ रामो रमयतां वरः ॥
Dr. V. RAGHAVAN CENTRE FOR PERFORMING ARTS
CHENNAI - 6000 020.
2017

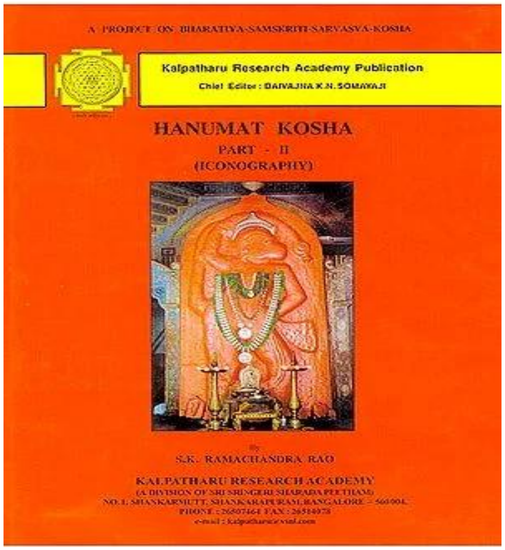
A PROJECT ON BHARATIYA-SAMSKRITI-SARVASVA-KOSHA
Kalpatharu Research Academy Publication
Chief Editor : DAIVAJNA K.N. SOMAYAJI
HANUMAT KOSHA
PART - II
(ICONOGRAPHY)
S.K. RAMACHANDRA RAO
KALPATHARU RESEARCH ACADEMY

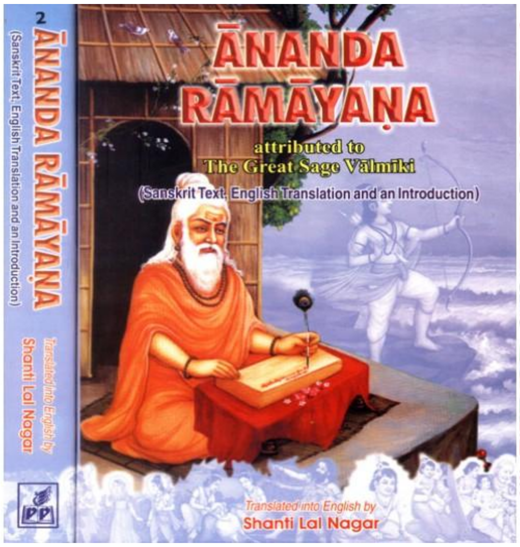
ĀNANDA RĀMĀYAṆA
attributed to
The Great Sage Vālmīki
(Sanskrit Text, English Translation and an Introduction)
Translated into English by
Shanti Lal Nagar
2
ĀNANDA RĀMĀYAṆA
(Sanskrit Text, English Translation and an Introduction)
Shanti Lal Nagar

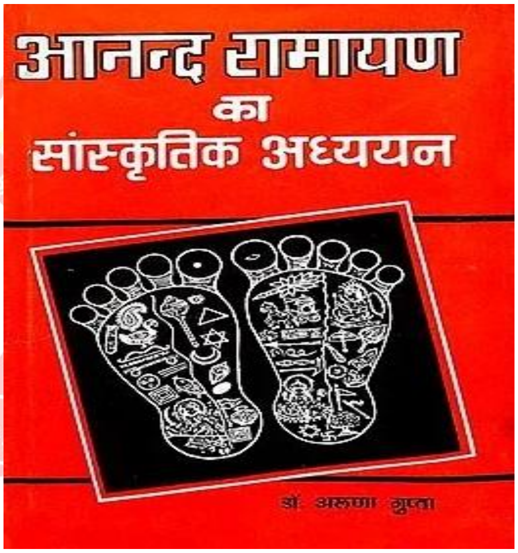
आनन्द रामायण
का
सांस्कृतिक अध्ययन
डॉ. अरुणा गुप्ता

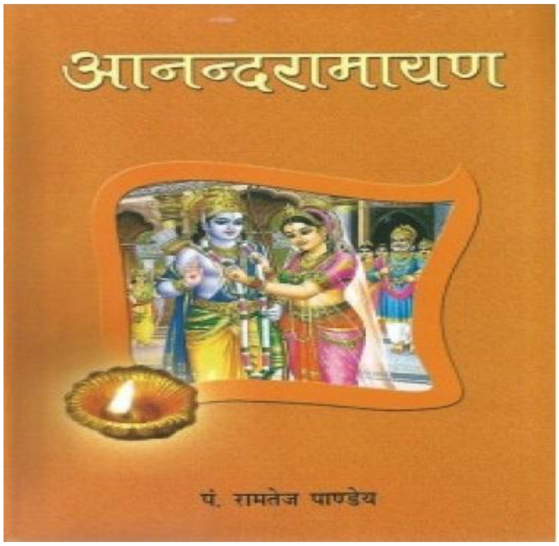
आनन्दरामायण
पं. रामतेज पाण्डेय

श्रीमद्वाल्मीकि-महामुनिकृत शतकोटिरामचरितान्तर्गत 110
आनन्द रामायण
१.सार-काण्ड २.यात्रा-काण्ड ३.याग-काण्ड ४.विलास-काण्ड ५.जन्म-काण्ड
६.विवाह-काण्ड ७.राज्य-काण्ड ८.मनोहर-काण्ड ९.पूर्ण-काण्ड
नौ काण्ड (सम्पूर्ण)
श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, श्रीशिवमहापुराण-भाषा, श्रीयोगवासिष्ठ-भाषा
श्रीमद्भागवत का अनुवादरूप सुखसागर तथा महाभारत आदि
ग्रन्थों के अनुवादक एवं अनेक पुस्तकों के मूल रचयिता
लेखक
पं० श्री रामलग्न पाण्डेय 'विशारद'
रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन
कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१
सन् 2012 ई०

10. श्री हनुमान जी का जन्म स्थल और जन्म वृत्तान्त निरूपण

जहाँ माता अञ्जना देवी ने हनुमान जी को जन्म दिया वही "किष्किन्धा" पर्वत बाद में अञ्जनाद्री नाम से विख्यात हुआ, किष्किन्धा पर्वत ही अञ्जनाद्रि पर्वत है ।

ततः प्रतीतं प्लवतां वरिष्ठमेकान्तमाश्रित्य सुखोपविष्टम् ।
सञ्चोदयामास हरिप्रवीरो हरिप्रवीरं हनुमन्तमेव ।। 4.65.34 ।।
अनेकशतसाहस्रीं विषण्णां हरिवाहिनीम् ।
जाम्बवान् समुदीक्ष्यैवं हनुमन्तमथाब्रवीत् ।। 4.66.1 ।।

अप्सराप्सरसां श्रेष्ठा विख्याता पुञ्जिकस्थला ।
अञ्जनेति परिख्याता पत्नी केसरिणो हरेः ।। 4.66.8 ।।
विख्याता त्रिषु लोकेषु रूपेणाप्रतिमा भुवि ।
अभिशापादभूत्तात वानरी कामरूपिणी ।। 4.66.9 ।।
दुहिता वानरेन्द्रस्य कुञ्जरस्य महात्मनः ।
कपित्वे चारुसर्वाङ्गी कदाचित् कामरूपिणी ।। 4.66.10 ।।
मानुषं विग्रहं कृत्वा रूपयौवनशालिनी ।
विचित्रमाल्याभरणा महार्हक्षौमवासिनी ।
अचरत् *पर्वतस्याग्रे प्रावृडम्बुदसन्निभे ।। 4.66.11 ।।

पर्वतगुहाओं कि बीच मे विद्यमान किष्किन्धा पम्पा सरोवर

https://www.youtube.com/watch?v=iHOsCOYef1o

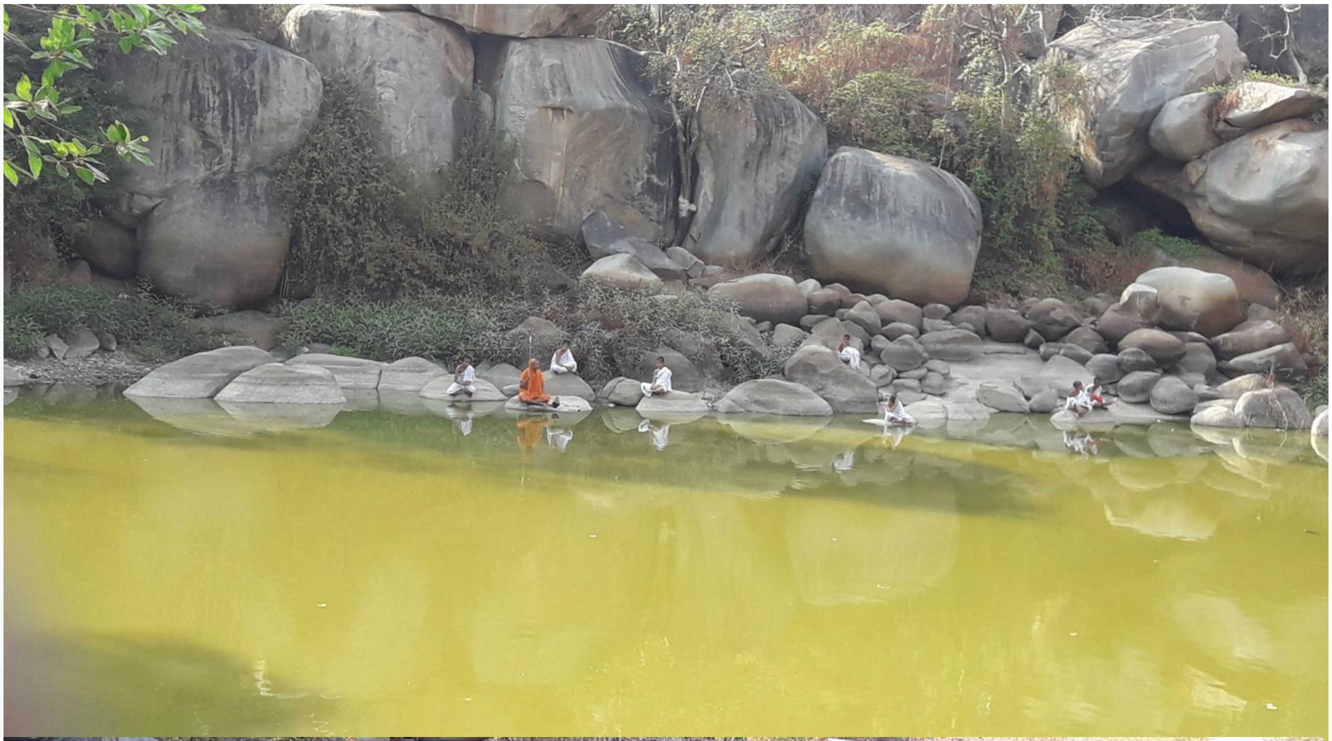

पम्पासरोवर

https://www.youtube.com/watch?v=iHOsCOYef1o

मूल पम्पाम्बिका तपस्थान मन्दिर्

श्री राम लक्ष्मण पम्पा क्षेत्र मे माता शबरी को दर्शन देना

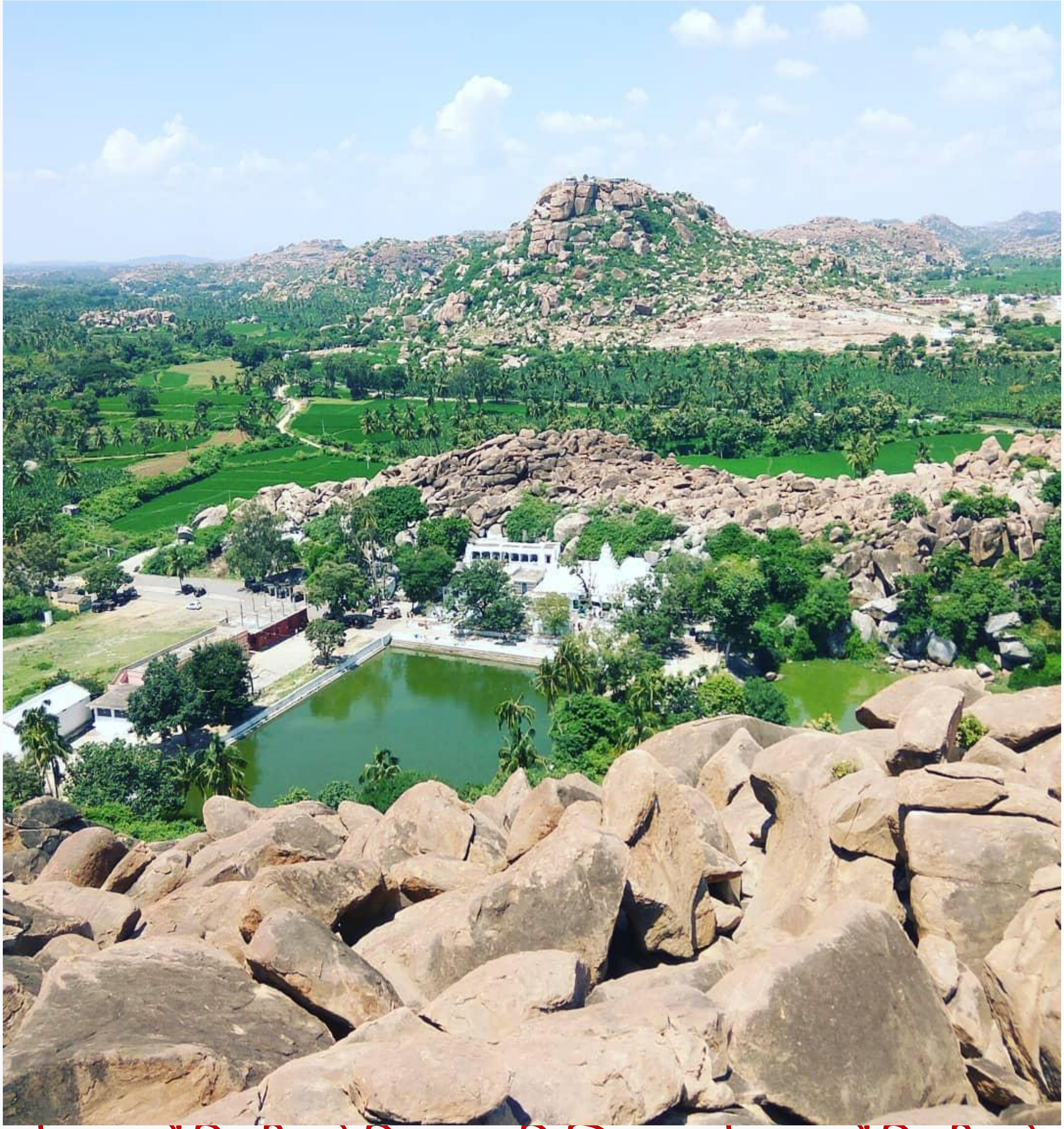

पर्वतगुहाओं कि बीच मे विद्यमान किष्किन्धा पर्वतगुहाओं कि बीच मे विद्यमान किष्किन्धा पम्पा सरोवर

https://www.youtube.com/watch?v=_1hgFOq_H4g&t=90s

पम्पा सरोवर - दूर मे स्थित किष्किन्धा अञ्जनाद्रि पर्वत

अप्सरेति निर्देश आर्षः ।। 4.66.811 ।।
तस्या वस्त्रं विशालाक्ष्याः पीतं रक्तदशं शुभम् ।
स्थितायाः *पर्वतस्याग्रे मारुतो ऽपहरच्छनैः ।। 4.66.12 ।

11. श्री हनुमान जन्मभूमि किष्किन्धा अञ्जनाद्रि पर्वत पर विराजमान ३ मन्दिर :

1. श्री बाल हनुमान् जी का मन्दिर

2. माता अंजनी देवी का मन्दिरउ

3. श्री राम दरबार मन्दिर, श्री अयोध्या रामपादुका,

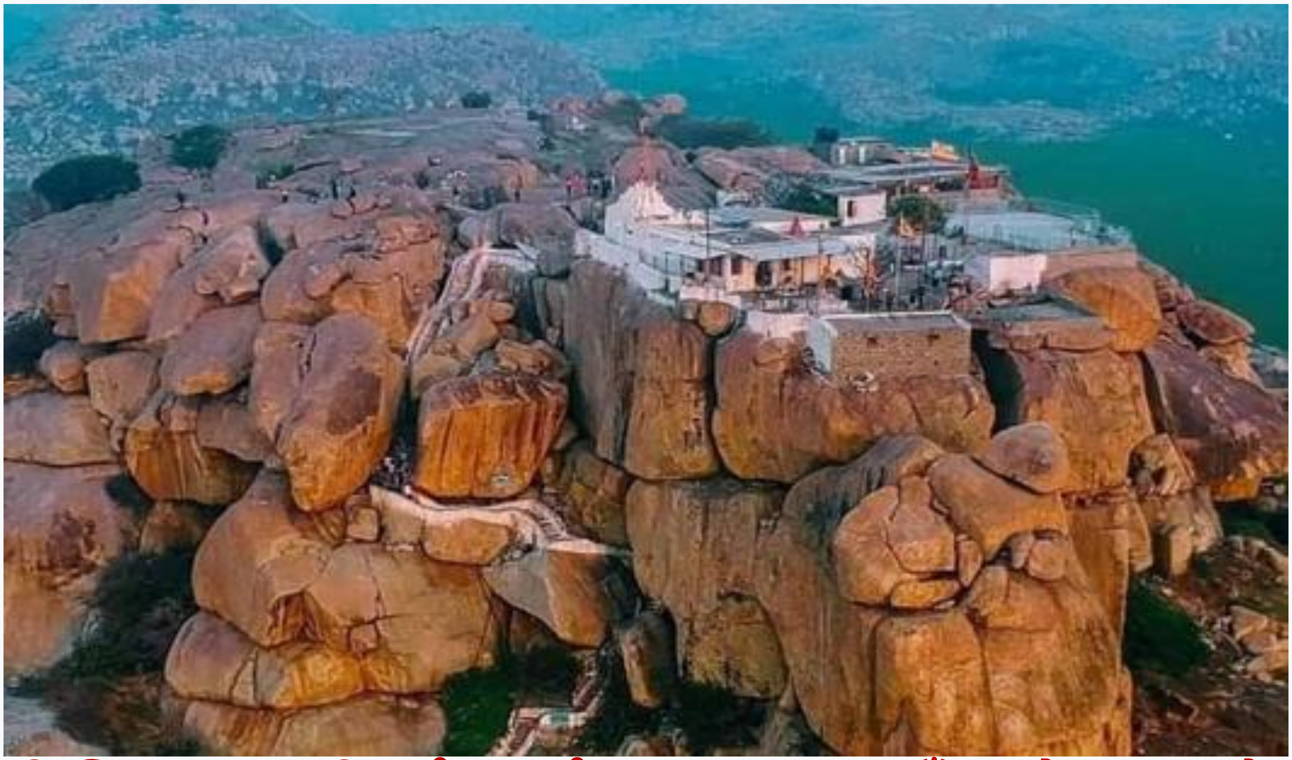

किष्किन्धा अञ्जनाद्रि पर्वत – पर्वत का अग्र भाग जहाँ वायु के अनुग्रह से अञ्जना देवी ने श्री हनुमान् जी को (पति केसरी देशान्तर गमन समय मे) जन्म दिया, ठीक उसी मूल स्थान मे श्री हनुमद् जन्मभूमि मंदिर है

पर्वत शिखर अग्र भाग में विराजमान ऐतिहासिक श्री हनुमान जन्मभूमि मन्दिर
गर्भगृह मूल स्वरूप बाल स्वरूप कि ऊपर सूर्य किरण
यही से सूर्य को दर्शन् किया और् फल समझकर अंतरिक्ष
अभ्युत्थितं ततः सूर्यं बालो दृष्ट्वा महावने ।
फलं चेति जिघृक्षुस्त्वमुत्प्लुत्याभ्यपतो दिवम् ॥ १९ ॥ 4 - 65 66 - 19

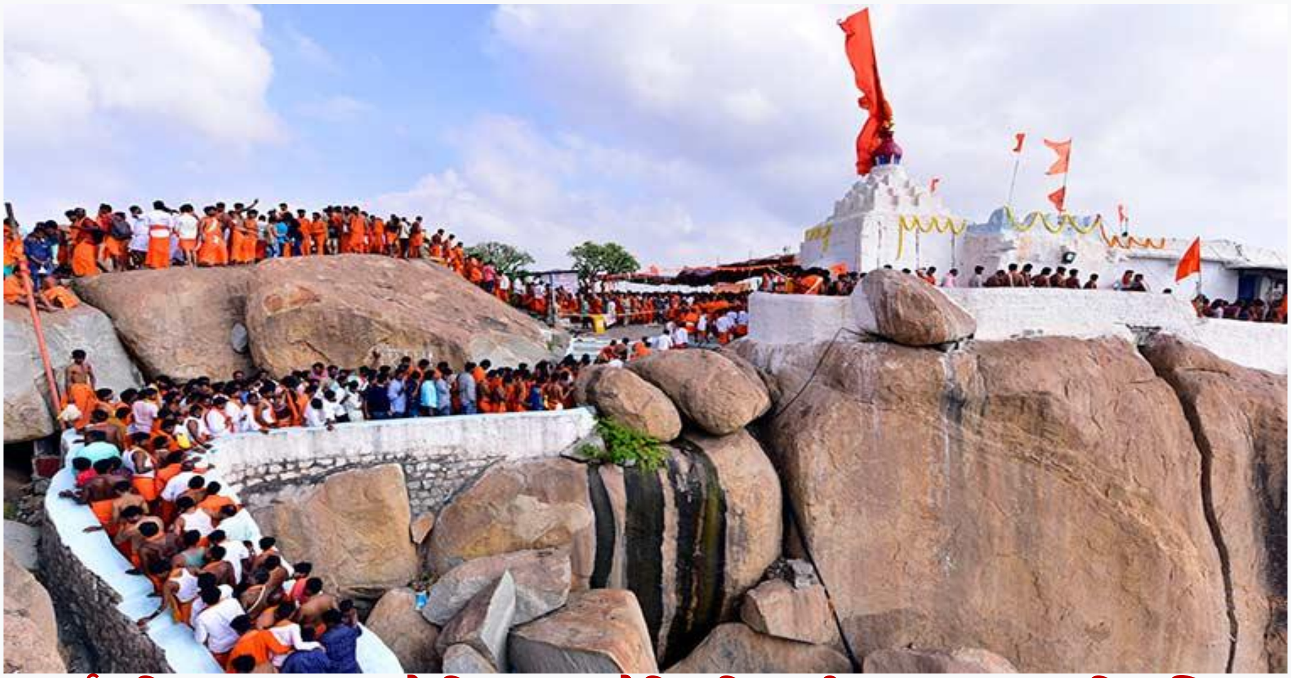

पर्वत शिखर अग्र भाग में विराजमान ऐतिहासिक श्री हनुमान जन्मभूमि मन्दिर

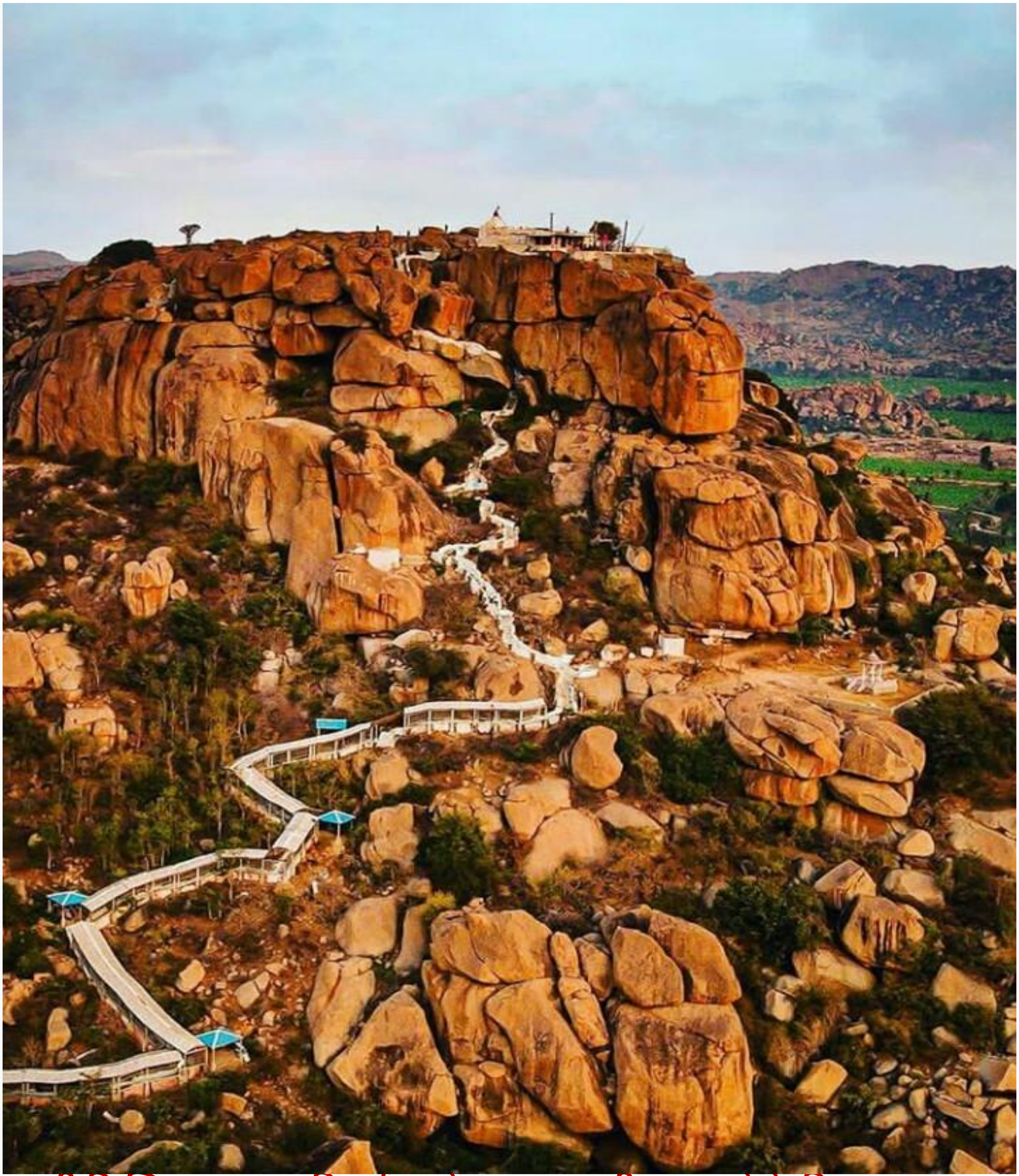

श्री किष्किन्धा अञ्जनाद्रि पर्वत प्रवेश द्वार पहाड़ी पर चढ़ने के लिए 575 सीढ़ियां हैं

https://www.youtube.com/watch?v=n2Wu39AU0Fg

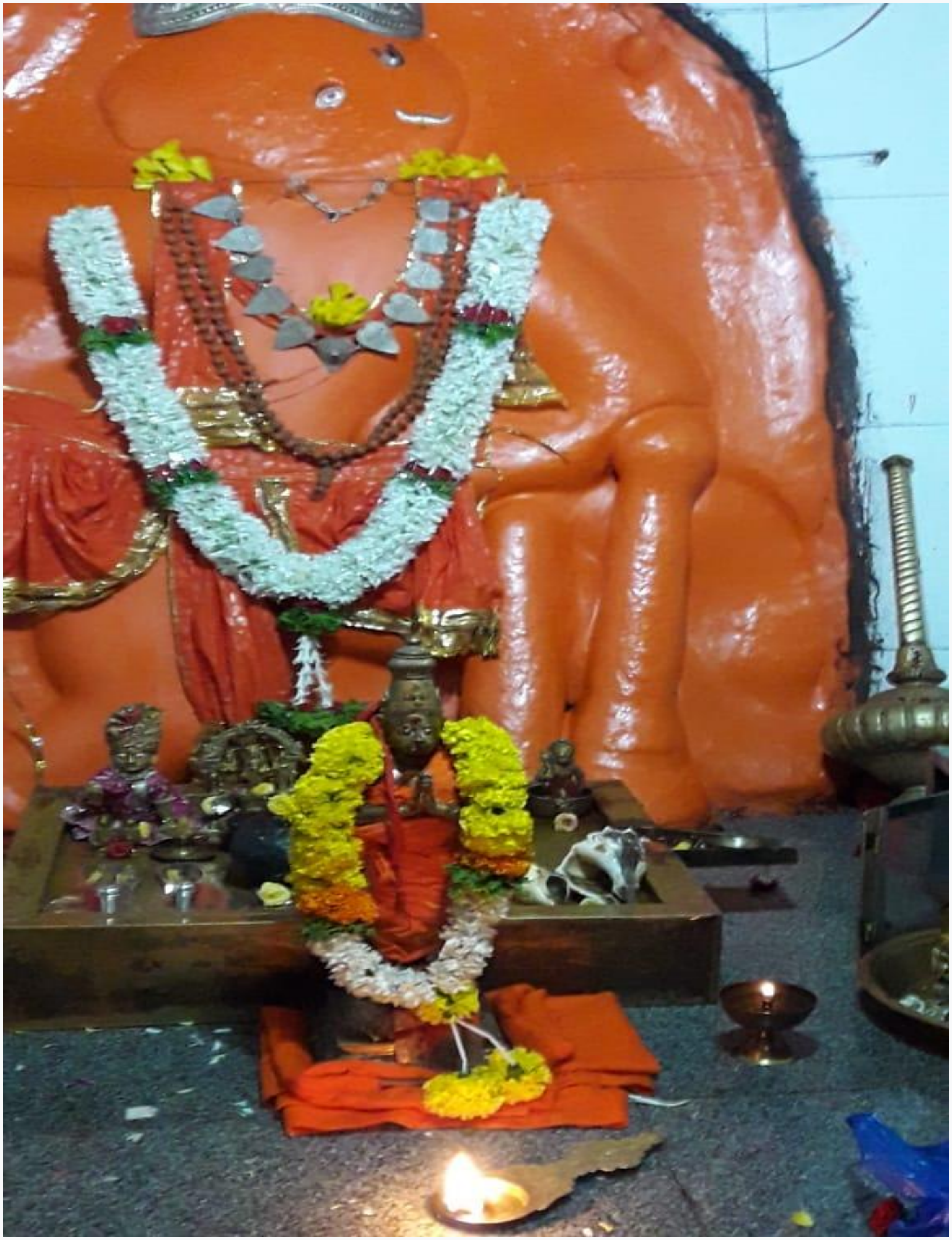

किष्किन्धा अञ्जनाद्रि पर्वत के ऊपर विराजमान
श्री हनुमद् जन्मभूमि बाल हनुमान जी का ऐतिहासिक पुरातन मंदिर

माता अंजना देवी की गोद में श्री बाला हनुमान

माता अञ्जना देवी की गोद में विराजमान
श्री बाल हनुमान जी

किष्किन्धा पर्वत के ऊपर जहा वायु देवता माता अञ्जना देवी को औरस पुत्र की रूप मे श्री हनमान् जी को अनुग्रह किया ठीक उसी स्थान पर वराजमान प्राचीन माता अञ्जना की गोद में विराजमान माता अञ्जना श्री बाल हनुमान जी का मंदिर

किष्किन्धा अञ्जनाद्रि पर्वत के ऊपर विराजमान श्री हनुमान जन्मभूमि में छोटा मन्दिर अत्यन्त पुरातन हैं । अञ्जनाद्रि पर्वत अत्यन्त विशाल रूप में है और पर्वत के लिये २ द्वार है एक उत्तर (पुराना) दक्षिण (नया) पर्वत के ऊपर चढने केलिये "५२५" सीडियां है, जहा माता अञ्जना देवी ने श्री बाल हनुमान को जन्म दिया उस गुफा के ऊपर (ठीक उसी जगह मे पर्वत के शिखर कोने पर (अचरत् पर्वतस्याग्रे, वा.रा.कि.सर्ग ६६ श्लो ११, स्थिताया: पर्वतस्याग्रे, श्लो १२,)

३ पुराने **(** १५*२० फीट् **)** दिव्य मन्दिर है ।
१) श्री हनुमान् जी का, **२)** माता अञ्जना देवी का । **३)** भगवान श्री रामचद्र दरबार मन्दिर, इस मन्दिर में माता अञ्जना देवी की गोद में बैठे हुये बाल हनुमान का दिव्य विग्रह भी विराजमान है । यह दोनों मन्दिरों में अभी भी पूजा हो रही हैं । विगत लाखों वर्षों से अनेक श्रद्धालु देश विदेश से इस मन्दिर में आकर भगवान का दर्शन प्राप्त कर रहे हैं । इसके साथ ही किष्किंधा में २०० छोटे मंदिर भी हैं, जो भगवान हनुमान के इतिहास पर प्रकाश डालते हैं

तु तत्रैव सम्भ्रान्ता सुवृत्ता वाक्यमब्रवीत् ।
एकपत्नीव्रतमिदं को नाशयितुमिच्छति ।
अञ्जनाया वचः श्रुत्वा मारुतः प्रत्यभाषत ।। 4.66.16 ।।
स तामिति । तां गतात्मा तद्गतचित्तः । तां पर्यष्वजतेति सम्बन्धः।। 15,16 ।।
न त्वां हिंसामि सुश्रोणि माभूत्ते सुभगे भयम् ।
मनसा ऽस्मि गतो यत्त्वां परिष्वज्य यशस्विनीम् ।। 4.66.17 ।।
नेति । न हिंसामि पातिव्रत्यान्न प्रच्यावयामि ।। 4.66.17 ।।

श्री किष्किन्धा अञ्जनाद्रि पर्वत प्रवेश द्वार

श्री किष्किन्धा अञ्जनाद्रि पर्वत मे विराजमान भगवान श्री रामचद्र दरबार मन्दिर, अयोध्या श्री रामपादुका

श्री बाल हनुमान मन्दिर पर्वत (श्री हनुमान जी का बाल्य लीला स्थान)

ಕೊಪ್ಪಳ
ಹನುಮನ ಹಳ್ಳಿ
Hanumanahalli

ಕೊಪ್ಪಳ
ಶ್ರೀ ಹನುಮ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟ

वीर्यवान् बुद्धिसम्पन्नस्तव पुत्रो भविष्यति ।
महासत्त्वो महातेजा महाबलपराक्रमः ।
लङ्घने प्लवने चैव भविष्यति मया समः ।। 4.66.18 ।।
एवमुक्ता ततस्तुष्टा जननी ते महाकपे। गुहायां त्वां महाबाहो प्रजज्ञे प्लवगर्षभम्।। वा.रा 4.66.19,20 ॥) ति.टी.व्या - ततस्तुष्टा मनसा महादैवततेजः संक्रम कथनात् गुहायां तत्पर्वतगुहायां तदानीमेवेति भावः| भावः अत्र गुहायां इत्युक्ते किष्किन्धायां, (तत्पर्वतगुहायां इत्युक्ते किष्किन्धायां |

स त्वं केसरिणः पुत्रः क्षेत्रजो भीमविक्रमः ।। 4.66.28 ।।
मारुतस्यौरसः पुत्रस्तेजसा चापि तत्समः ।
माल्यवान्नाम वैदेहि गिरीणामुत्तमो गिरिः ।
ततो गच्छति गोकर्णं पर्वतं केसरी हरिः ।। 5.35.80।।

बुद्ध्यस्व पवनात्मजम्' इति पवनात्मजत्वमुक्तम्, तत्कथं
वानरस्येत्यपेक्षायामाह <u>माल्यवानिति</u> । गच्छति अगच्छत् ।। 5.35.80।।

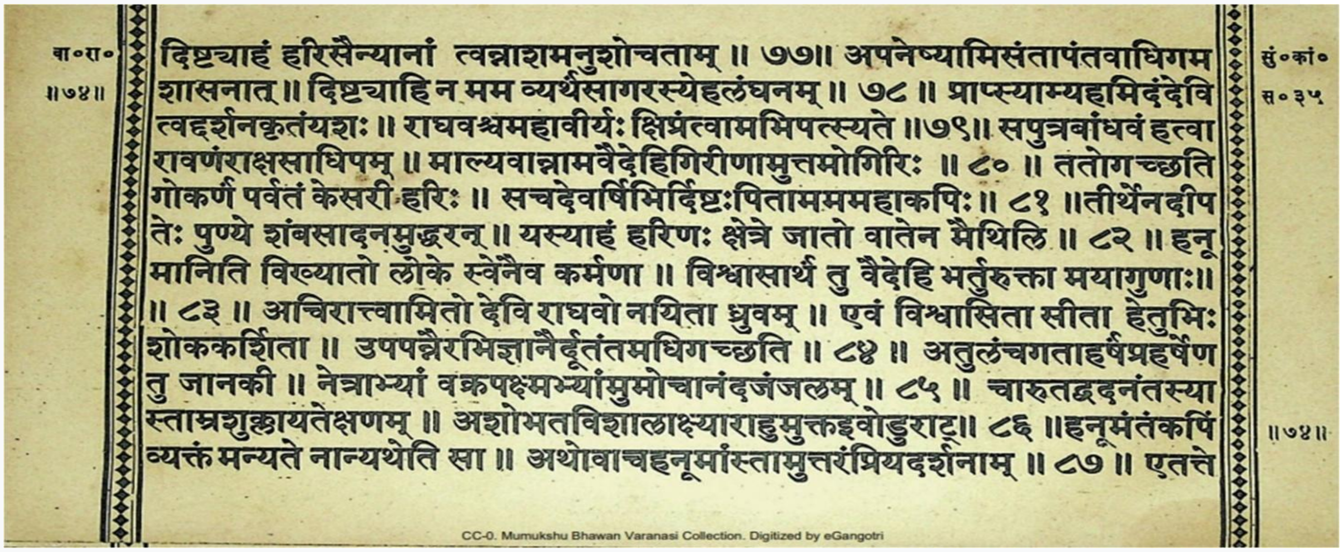
वा०रा० ॥७४॥ दिष्ट्याहं हरिसैन्यानां त्वन्नाशमनुशोचताम् ॥ ७७॥ अपनेष्यामिसंतापंतवाधिगम सुं०कां०
शासनात् ॥ दिष्ट्याहि न मम व्यर्थंसागरस्येहलंघनम् ॥ ७८ ॥ प्राप्स्याम्यहमिदंदेवि स०३५
त्वद्दर्शनकृतंयशः ॥ राघवश्चमहावीर्यः क्षिप्रंत्वामभिपत्स्यते ॥७९॥ सपुत्रबांधवं हत्वा
रावणंराक्षसाधिपम् ॥ माल्यवान्नामवैदेहिगिरीणामुत्तमोगिरिः ॥ ८० ॥ ततोगच्छति
गोकर्णं पर्वतं केसरी हरिः ॥ सचदेवर्षिभिर्दिष्टःपितामममहाकपिः ॥ ८१ ॥तीर्थेनदीप
तेः पुण्ये शंबसादनमुद्धरन् ॥ यस्याहं हरिणः क्षेत्रे जातो वातेन मैथिलि ॥ ८२ ॥ हनू
मानिति विख्यातो लोके स्वेनैव कर्मणा ॥ विश्वासार्थं तु वैदेहि भर्तुरुक्ता मयागुणाः॥
॥ ८३ ॥ अचिरात्त्वामितो देवि राघवो नयिता ध्रुवम् ॥ एवं विश्वासिता सीता हेतुभिः
शोककर्शिता ॥ उपपन्नैरभिज्ञानैर्दूतंतमधिगच्छति ॥ ८४ ॥ अतुलंचगताहर्षप्रहर्षेण
तु जानकी ॥ नेत्राभ्यां वक्रपक्ष्मभ्यांमुमोचानंदजंजलम् ॥ ८५ ॥ चारुतद्वदनंतस्या
स्ताम्रशुक्लायतेक्षणम् ॥ अशोभतविशालाक्ष्याराहुमुक्तइवोडुराट्॥ ८६ ॥हनूमंतंकपिं ॥७४॥
व्यक्तं मन्यते नान्यथेति सा ॥ अथोवाचहनूमांस्तामुत्तरंप्रियदर्शनाम् ॥ ८७ ॥ एतत्ते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स च देवर्षिभिर्दिष्टः पिता मम महाकपिः ।
तार्थे नदीपतेः पुण्ये शम्बसादनमुद्धरत् ।। 5.35.81।।
सः गोकर्णं गतः । देवर्षिभिः तत्रत्यैः दिष्टः नियुक्तः । शम्बसादनं
तीर्थोपद्रवकारिणमसुरं शम्बसादनाख्यम् । उद्धरत् उदहरत् ।
देवर्षिप्रार्थनया अवधीदित्यर्थः ।। 5.35.81।।
तस्याहं हरिणः क्षेत्रे जातो वातेन मैथिलि ।
हनुमानिति विख्यातो लोके स्वेनैव कर्मणा ।। 5.35.82।।
हरिणः हरेः केसरिणः क्षेत्रे पत्न्याम् अञ्जनायां जातः पितुर्देशान्तरगमनकाले
जातः । अनेनान्यक्षेत्रे कथमनयेनोत्पादनमिति शङ्का पराकृता ।। 5.35.82।।

हते ऽसुरे संयति शम्बसादने कपिप्रवीरेण महर्षिचोदनात् ।
ततो ऽस्मि वायुप्रभवो हि मैथिलि प्रभावतस्तत्प्रतिमश्च वानरः ।। 5.35.89।।

https://www.youtube.com/watch?v=pZJe8XS0dDQ&t=4s

किष्किन्धा मे सीतान्वेषण कि जानेसे पहले श्रीराम हनुमान को मुद्रिका प्रदान

किष्किन्धा के कई मंदिरों में श्री बाल हनुमान जीवन कथा, जन्म वृत्तान्त प्राचीन हस्तशिल्प कलाकृतियां,

माता सीता हनुमान को चूडामणि प्रदान करते हुए

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

https://asi.nic.in/hampi-photo-gallery/

Sri Sahasra Chitra Srirama Mandir

Then later changed it to (Hazari Rama) Temple

प्रत्नकीर्तिमपावृणु https://asi.nic.in/hampi-photo-gallery/

Sri Sahasra Chitra Srirama Mandir

Then later changed it to (Hazari Rama) Temple

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

https://asi.nic.in/hampi-photo-gallery/

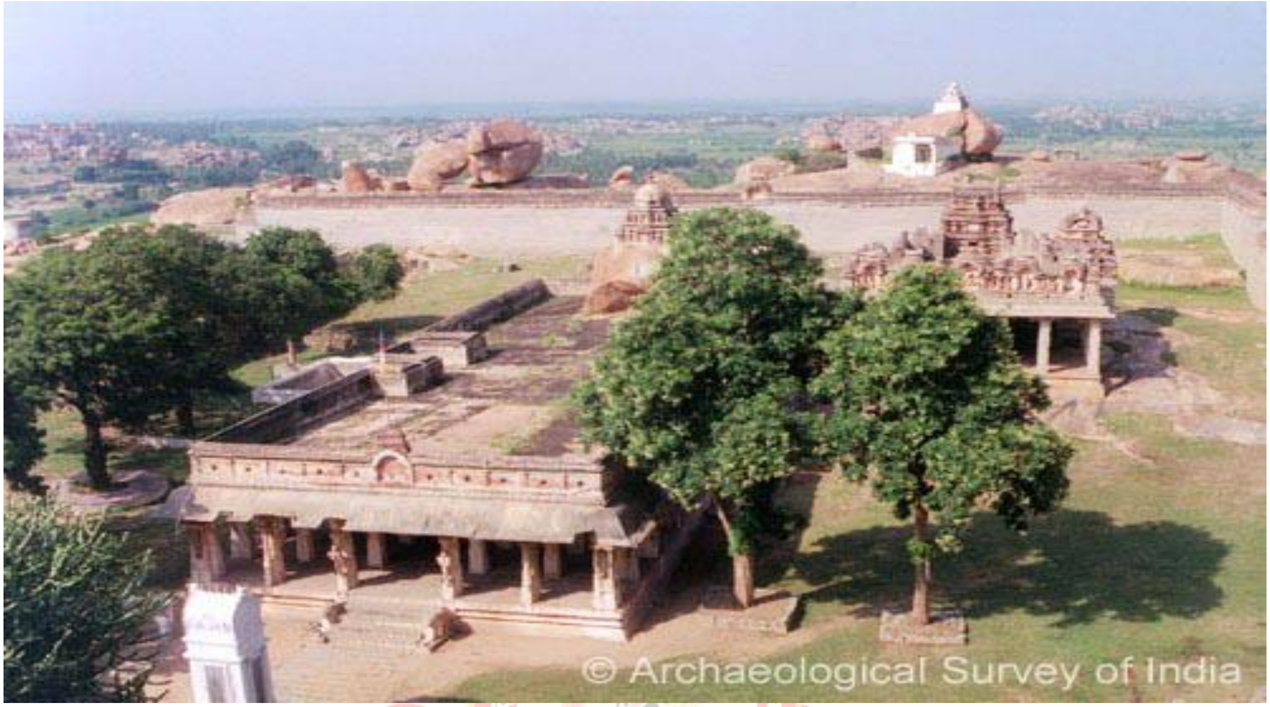

Sri Malyavanta Raghunatha Mandir - Malyavanta Parvata

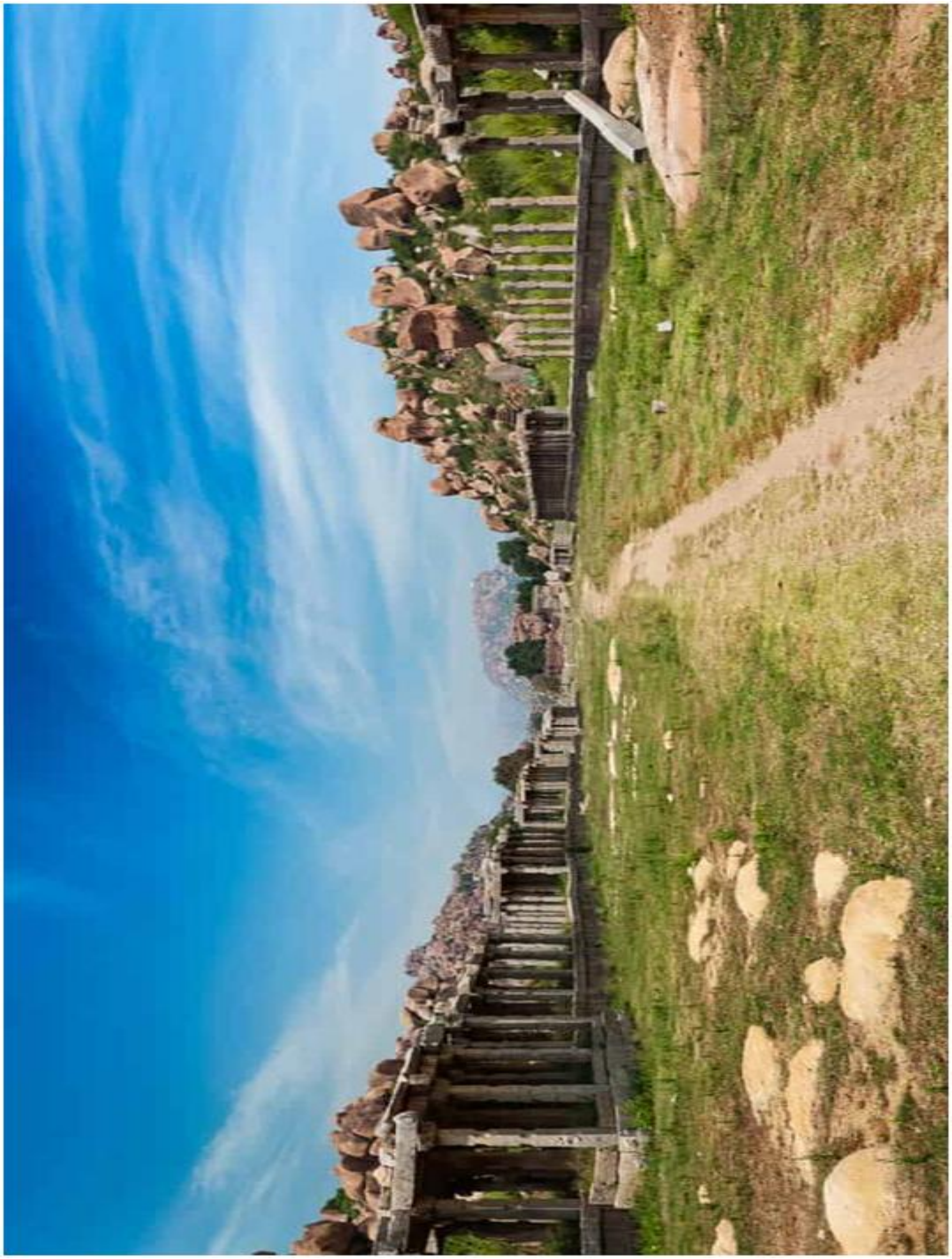

ऐतिहासिक पम्पाक्षेत्र् मे स्थित पुरातन मन्दिरों के पीछे विराजमान किष्किन्धा
पर्वत

किष्किन्धा के कई मंदिरों में श्री बाल हनुमान जीवन कथा, जन्म वृत्तान्त प्राचीन हस्तशिल्प कलाकृतियां,

किष्किन्धा के कई मंदिरों में श्री हनुमान जीवन कथा, जन्म वृत्तान्त
प्राचीन हस्तशिल्प कलाकृतियां,

माल्यवन्त पर्वत – प्रस्रवणगिरि

यम् तु पश्यसि तिष्ठन्तम् मध्ये गिरिम् इव अचलम् || ६-२८-२८
सर्व शाखा मृग इन्द्राणाम् भर्तारम् अपराजितम् |
तेजसा यशसा बुद्ध्या ज्ञानेन अभिजनेन च || ६-२८-२९
यः कपीन् अति बभ्राज हिमवान् इव पर्वतान् |
किष्किन्धाम् यः समध्यास्ते गुहाम् सगहन द्रुमाम् || ६-२८-३०
दुर्गाम् पर्वत दुर्गस्थाम् प्रधानैः सह यूथपैः |
यस्य एषा कान्चनी माला शोभते शत पुष्करा || ६-२८-३१
कान्ता देव मनुष्याणाम् यस्याम् लक्ष्मीः प्रतिष्ठिता |
एताम् च मालाम् ताराम् च कपि राज्यम् च शाश्वतम् || ६-२८-३२
सुग्रीवो वालिनम् हत्वा रामेण प्रतिपादितः |

एवम् उक्त्वा महातेजा रावणः पुनर् अब्रवीत् |
चारिता भवता सेना के अत्र शूराः प्लवम् गमाः || ६-३०-१६
कीदृशाः किम् प्रभावाः च वानरा ये दुरासदाः |
कस्य पुत्राः च पौत्राः च तत्त्वम् आख्याहि राक्षस || ६-३०-१७
तथात्र प्रतिपत्स्यामि ज्ञात्वा तेषाम् बल अबलम् |
अवश्यम् बल सम्ख्यानम् कर्तव्यम् युद्धम् इच्वता || ६-३०-१८

जन्म वृत्तान्त : धर्म संस्थापन के लिए एवम् असुरों का संहार करने के लिए श्री विष्णु भगवान ने अयोध्या में श्री राम चंद्र के रूप में अवतार लिया, , ब्रह्मा जी की प्रेरणा (देवतास्सर्वास्स्वयम्भूर्भगवानिदम् - 1.17.1) से समस्त देवताओं ने भी भगवान श्री राम जी की सहायता के लिए (विष्णोस्सहायान्बलिनस्सृजध्वं कामरूपिण: 1.17.2) वानरों के रूप में किष्किंधा में अवतार लिया उसी समय में श्री रुद्रात्मक श्री हनुमान् जी का अवतार भी हुआ ,
एकादशरुद्र शिव अवतार श्री हनुमान् जी

प्रश्न : कुछ लोग कहते है कि श्री हनुमान् जी रुद्र के अवतार है इस का क्या प्रमाण है ?

स) हाँ श्री हनुमान् जी रुद्र के अवतार हैं। शिवजी का हनुमान के रूप में अवतार तथा उनके चरित्र का वर्णन हैं श्री शिव महापुराण मे स्पष्ट सिद्ध है,

श्री शिवमहा पुराण :- शत रुद्र संहिता – अध्याय - २० मे
नन्दीश्वर उवाच : अत: परं श्रृणु प्रीत्या हनुमच्चरितं मुने ।
यथा चकारासु हरो लीलास्तद्रूपतो वरा:।१॥,
शिवावतारं च प्राप वरान्दत्तान् सुरर्षिभि: शि.पु अ-२०- श्लो ९ ॥
चकार सुहितं प्रीत्या रामस्य
रुद्रांश: ॥ श्लो १२ ॥, हरांशज: शि.पु ॥ श्लो १४॥, गिरिशांशज: ॥ श्लो १४॥,
श्लो : अप्सराप्सरसां श्रेष्ठा विख्याता पुञ्जिकस्थला।
अञ्जनेति परिख्याता पत्नी केसरिणो हरेः। 4.66.8॥
विख्याता त्रिषु लोकेषु रूपेणाप्रतिमा भुवि।
अभिशापादभूत्तात वानरी कामरूपिणी। 4.66.9॥

दुहिता वानरेन्द्रस्य कुञ्जरस्य महात्मनः।
मानुषं विग्रहं कृत्वा रूपयौवनशालिनी। 4.66.10॥

विचित्रमाल्याभरणा महार्हक्षौमवासिनी।
अचरत्पर्वतस्याग्रे प्रावृडम्बुदसन्निभे। 4.66.11॥

पुञ्जिकस्थला नाम की एक विख्यात अप्सरा थी वह समस्त अप्सराओं में अग्रगण्य थी, श्राप के कारण कपियोनी में महा मनस्वी वानर **कुञ्जर की पुत्री रूप मे जन्म** हुआ, वही अञ्जना देवी के नाम से विख्यात हुई। वह अञ्जना देवी इच्छानुसार रूप धारण करने वाली थी, उनका विवाह वानरराज श्री केसरी से हुआ, और वे दम्पती किष्किंधा में रहते थे, पम्पाक्षेत्र किष्किंधा में स्थित माल्यवन्त पर्वत पर रहने वाले केसरी एक दिन देवर्षियों के आदेश से शंबसादन नाम के एक राक्षस का संहार करने के लिए गोकर्ण क्षेत्र गए | उस समय (किष्किंधा में रूप और यौवन से सुशोभित होने वाली अञ्जना देवी मानवी स्त्री का शरीर धारण करके किष्किंधा पर्वत के शिखर पर

(स्थितायाः पर्वतस्याग्रे मारुतोऽपहरच्छनैः। 4.66.12॥)

श्री रंगेश्वर मंदिर

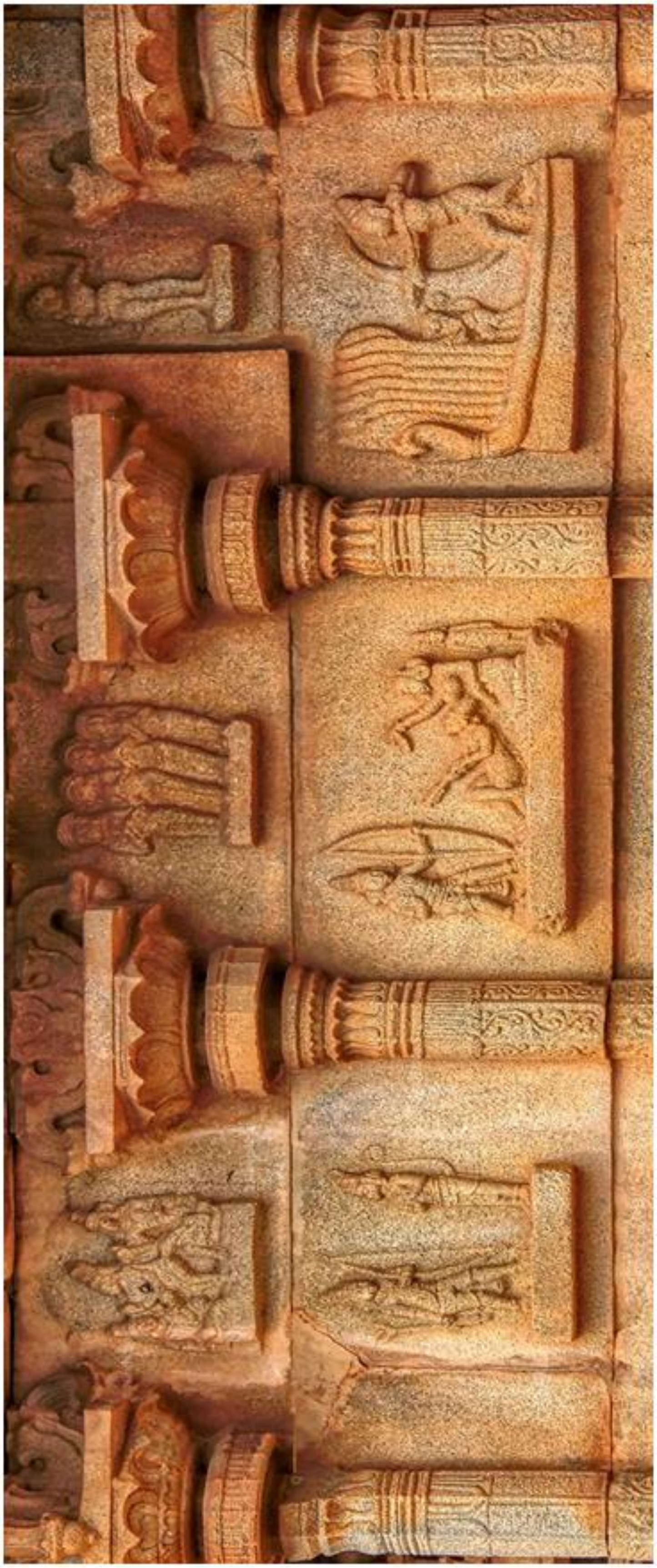

किष्किन्धा के कई मंदिरों में श्री बाल हनुमान जीवन कथा, जन्म वृत्तान्त
प्राचीन हस्तशिल्प कलाकृतियां,

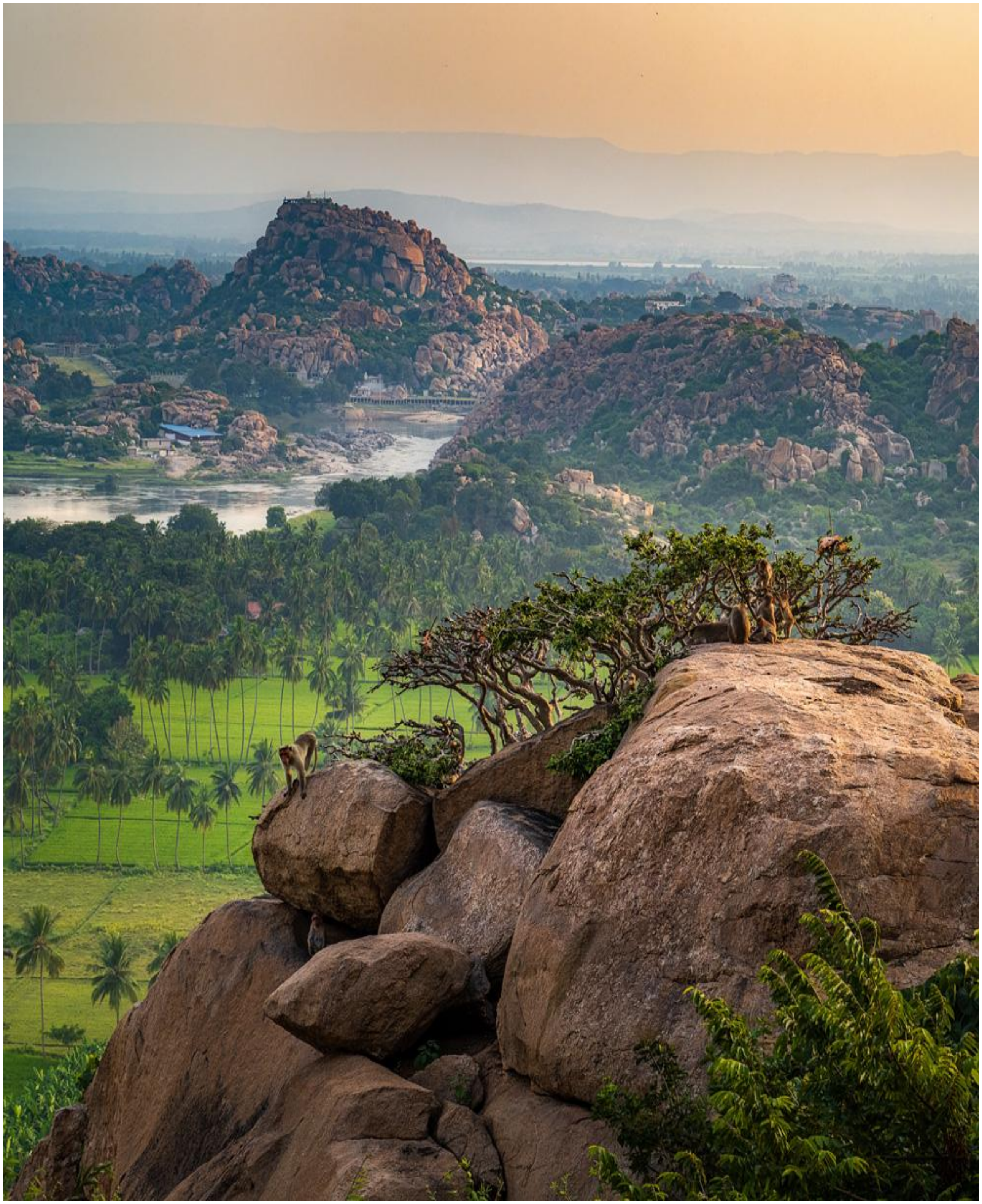

श्री किष्किन्धा अञ्जनाद्रि पर्वत से मतंग पर्वत का विहंगम दृश्य

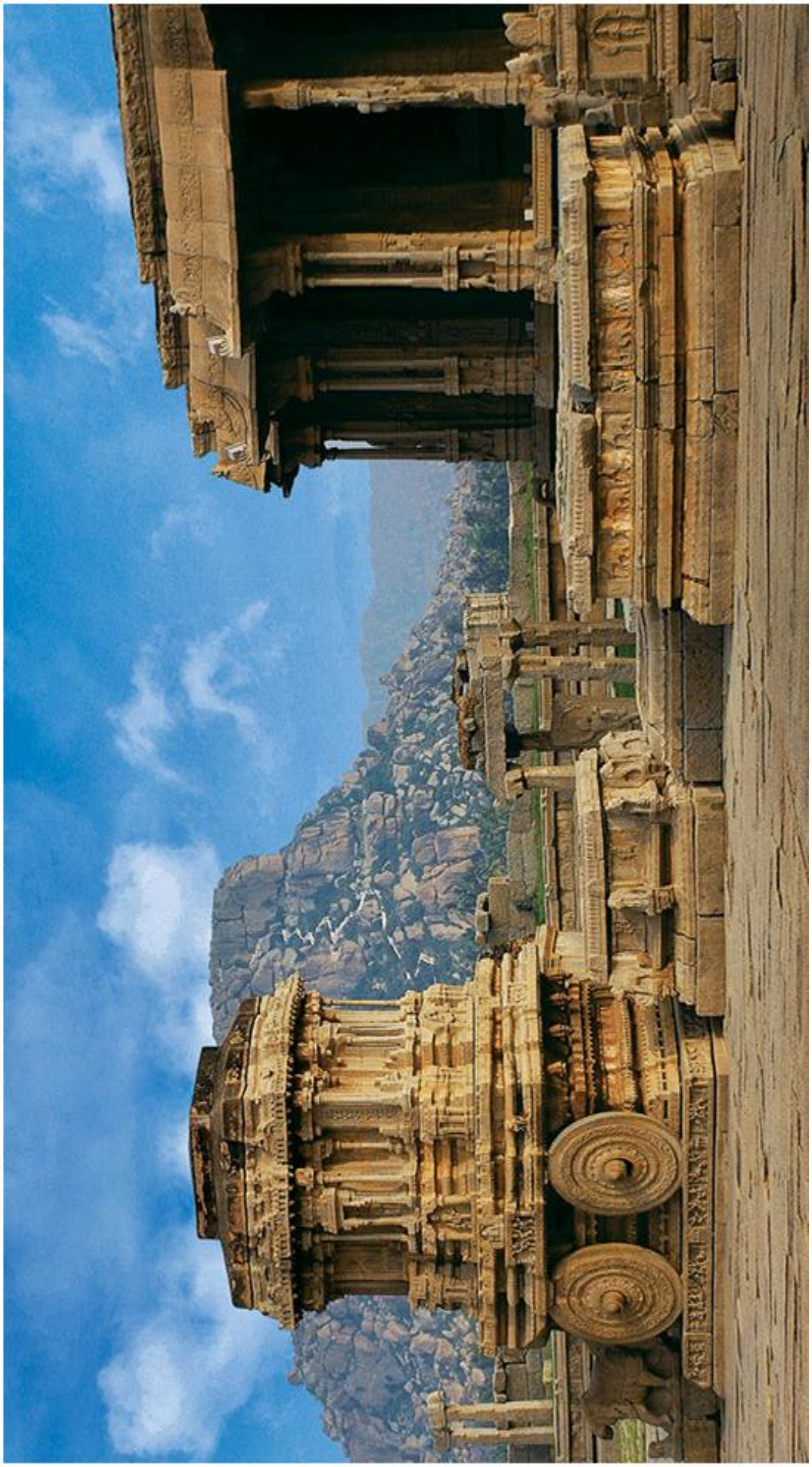

श्री विठ्ठल मन्दिर से किष्किन्धा अञ्जनाद्रि पर्वत का विहंगम दृश्य

unesco
World Heritage Convention

पर्वतस्याग्रे इति किष्किंधा अञ्जनाद्रि पर्वतस्याग्रे) विचर रही थी, तब वायु देवता ने लोक कल्याण के लिए मानसिक रूप से अञ्जना देवी के ऊपर अनुग्रह किया ।

(मनसाऽस्मि गतो यत्त्वां परिष्वज्य यशस्विनीम्।
वीर्यवान्बुद्धिसम्पन्नः पुत्रस्तव भविष्यति। 4.66.18॥
महासत्त्वो महातेजा महाबलपराक्रमः।)
लङ्घने प्लवने चैव भविष्यति हि मत्समः। 4.66.19॥)

तब वायु देवता अञ्जनी देवी से बोले, हे देवी ! श्री राम के कार्य की सहायता के लिए तुम्हारे गर्भ से मेरे ही अंश द्वारा तुम्हे एक पुत्र प्राप्त होगा, जो मेरे जैसा पराक्रम बुद्धि बल सम्पन्न होगा, ऐसा अनुग्रह करने के बाद अञ्जना देवी ने किष्किंधा पर्वत पर स्थित दिव्य गुहा में हनुमान जी को "चैत्र शुक्ल पूर्णिमा" "महा चैत्रीपूर्णिमायां समुत्पन्नो ऽञ्जनीसुतः - आ.रा.सा-१३,१६२" जन्म दिया

एवमुक्ता ततस्तुष्टा जननी ते महाकपे। गुहायां त्वां महाबाहो प्रजज्ञे प्लवगर्षभम्। 4.66.20॥
तदा शैलाग्रशिखरे वामो हनुरभज्यत।.
ततो हि नामधेयं ते हनुमानिति कीर्त्यते। 4.66.24॥
स त्वं केसरिणः पुत्रः क्षेत्रजो भीमविक्रमः। 4.66.29॥
मारुतस्यौरसः पुत्रस्तेजसा चापि तत्समः।
त्वं हि वायुसुतो वत्स प्लवने चापि तत्समः। 4.66.30॥ तब वायु देवता ने अञ्जना देवी से कहा हे देवी ! श्री राम के कार्य मे सहायता के लिए तुम्हारे गर्भ

(से मेरा ही अंश से तुम को एक पुत्र प्राप्त होगा,जन्म लेगा, जो मेरे जैसा

पराक्रमी, बुद्धि बल से सम्पन होगा, ऐसा अनुग्रह करने के बाद अञ्जना देवी ने किष्किंधा पर्वत पर स्थित दिव्य गुहा में हनुमान जी को "चैत्र शुक्ल पूर्णिमा" "महा चैत्रीपूर्णिमायां समुत्पन्नो ऽञ्जनीसुतः" - आ.रा.सा-१३,१६२") मे जन्म दिया "एवमुक्ता ततस्तुष्टा जननी ते महाकपे। गुहायां त्वां महाबाहो प्रजज्ञे प्लवगर्षभम्। 4.66.20॥

वाली और सुग्रीव का युद्ध

किष्किन्धा में श्री राम लक्षण से श्री हनुमान् का प्रथम भेंट

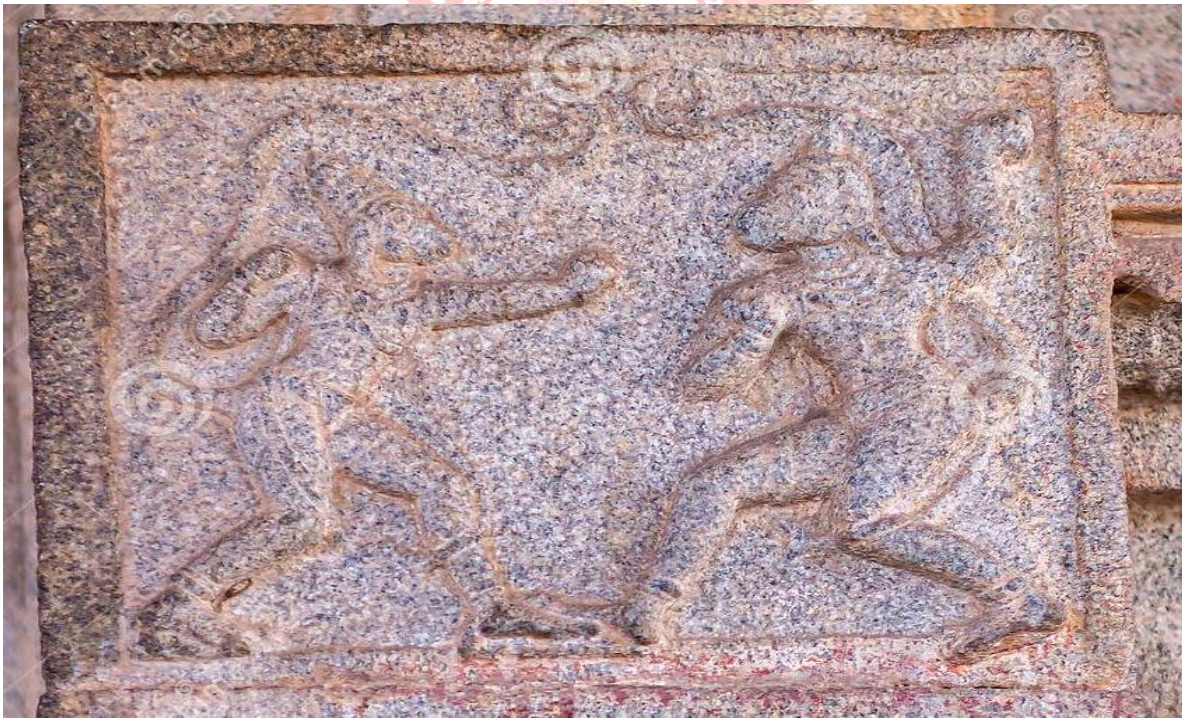

वाली और सुग्रीव का युद्ध

पम्पाक्षेत्र किष्किन्धा मे विराजमान अन्य पर्वत :

श्री हेमकूट पर्वत, ऋष्यमूक पर्वत, मातङ्ग पर्वत, माल्यवन्त पर्वत ,(प्रस्रवण गिरि) किष्किन्धा अञ्जनाद्रि पर्वत, गन्धमादन पर्वत,विप्रकूट पर्वत, तारा पर्वत, वाली पर्वत , जम्भुनाथेश्वर पर्वत

पम्पाक्षेत्र किष्किन्धा मे विराजमान विविध पर्वतों मे स्थित विविध गुफए : (निवास स्थान गुहा)

ऋष्यमूक पर्वत गुफा, मातङ्ग पर्वत गुफा, माल्यवन्त पर्वत गुफा, किष्किन्धा अञ्जनाद्रि पर्वत गुफा, विप्रकूट पर्वत गुफा, पम्पा सरोवर तट गुफा, सुग्रीव गुफा, सीता सेरगु गुफा, (जहाँ सीता माता जी का आभरण रखा) ,

पुराण, इतिहास, प्रमाण, काल मीमांसा : इतिहास क्या है? पुराण क्या है? अगर इन दोनों के बीच कुछ विरोधाभास है तो हमें किसको प्रमाण के रूप में लेना होगा ?

श्री हनुमान जी के जन्म के बारे में , मिलने वाले सारे प्रमाणों या सारे उपलब्ध ग्रन्थों में अत्यन्त परम प्रमाण है , श्रीमद् वाल्मीकि विरचित मूल रामायण एवं आनन्द रामायण श्री शिवमहापुराण यही एक मात्र प्रमाण ग्रन्थ है, और उसमें भी श्रीमद् वाल्मीकि विरचित मूल रामायण में स्वयं ही श्री हनुमान जी अपना परिचय देते हुए अपने जन्म वृत्तान्त के बारे में सीता माता को अपने पिता, माता जी के और अपने जन्म क्षेत्र के बारें में सुनाते हैं इससे बढकर कोई और परम प्रमाण अन्यत्र नहीं मिलेगा,

श्रुतिस्मृतिविरोधे तु श्रुतिरेव गरीयसि

अतएव जाबाल : इति ह पुरावृत्तमास्ते यस्मिन् स इतिहासः

श्रुति स्मृति विरोधे तु श्रुतिरेव गरीयसी । - स्मृतिचन्द्रिका, प्रथमखण्ड्ः,पृ,१६

तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ । ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि ॥

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः ।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥
तत्र धर्मे मुख्यं प्रमाणं वेद एव। वेदार्थमेव विसकलयन्ति स्मृतिः।
तदुभय समर्थितश्च आचारः। तदनुकूलैव च आत्मसन्तुष्टि धर्मे प्रमाणम् ॥

मन्वत्रिविष्णुहारीत याज्ञवल्क्योऽङ्गिराः। यमापस्तम्बसम्वर्ताः कात्यायनबृहस्पती॥ पराशरव्यासशङ्खलिखिता क्षगौतमो। शातातपो वशिष्ठश्च धर्मशस्त्रयोजकाः॥

वह सूक्ष्म होने से साधारण मनुष्यों के जानने में नहीं आता है तथा ज्ञानी पुरुषों के लिए अति समीप में और अज्ञानी पुरुषों के लिये दूर में भी स्थित नहीं है ।।१५।। और वह विभागरहित एक रूप से आकाश के समान परिपूर्ण हुआ भी चर, अचर संपूर्ण जीवों में पृथक् पृथक् के सदृश स्थित प्रतीत होता है तथा वह जानने योग्य परमात्मा विष्णु रूप से जीवों को धारण पोषण करनेवाला और संकर्षणरूप से संहार करनेवाला तथा प्रद्युम्नरूप से सबको उत्पन्न करनेवाला है ।।१६।। और वह परमात्मा अग्नि आदि ज्योतियों को भी ज्योति एवं माया से परे कहा जाता है तथा वह ब्रह्मबोध स्वरूप और जानने के योग्य है एवं तत्वज्ञान से प्राप्त होने वाला और सबके हृदय में स्थित है ।।१७।। और तैत्तिरीयोपनिषद् में लिखा है कि– यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति ।। यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व ।।तद्ब्रह्म।। तैत्ति भृगु० अनु० १ ।। जिससे ये संपूर्णभूत उत्पन्न होते हैं तथा जो समस्त जीवों की रक्षा और संहार करता है तथा जिससे मोक्ष को प्राप्त करते हैं उसको जानने की इच्छा करो, वही ब्रह्म है ।।१।। और वेदान्त दर्शन में भी लिखा है कि— जन्माद्यस्ययतः ।। वेदा० अ० १ पा० १ सूत्र २ ।। जिससे सम्पूर्ण चर अचररूप संसार की उत्पत्ति, पालन, संहार और मोक्ष होता है वही ब्रह्म है ।।२।। इस पूर्वोक्त प्रकार से दूसरे सूत्र का यह अर्थ है कि स्मृति से पूर्वभागार्थ कर्म को निश्चय करते हैं, और इतिहास तथा पुराण इन दोनों से उत्तर भागार्थ ब्रह्म को निश्चय करते हैं ।।२।।

अब श्रीवचनभूषणकार यह कहते हैं कि वेद के उत्तर भाग का अर्थ जो ब्रह्म है उसको निश्चय करनेवाले जो इतिहास और पुराण हैं, इन दोनों में कौन सा प्रबल है।

अनयोरुभयोर्मध्ये इतिहासः प्रबलः ॥ ३ ॥

अर्थः—(अनयोः) इतिहास और पुराण (उभयोः) इन दोनों के (मध्ये) मध्य में (इतिहासः) इतिहास (प्रबलः) प्रबल है। कारण कि उनके बहुत लोगों के परिग्रह करने से तथा सर्वत्र मध्यस्थ हो भूतकाल के अर्थ को प्रतिपादन करने से, वचन सौन्दर्य से और कर्ता के आततम होने से क्योंकि मूल रामायण के आदि में जो कुश-लव का मंगल स्तव है उसमें लिखा है कि—

वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे ।

वेदः प्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामायणात्मना । म० रा० १० ॥

वेद से जानने योग्य परपुरुष श्रीमन्नारायण भगवान् जब दशरथ महाराज के पुत्ररूप से उत्पन्न हुए तब वह वेद प्रचेता ऋषि के पुत्र जो वाल्मीकि महर्षि हैं उनके द्वारा साक्षात् रामायण रूप से हुआ ॥ १० ॥ और भी लिखा है कि — वेदे रामायणे पुण्ये भारते भरतर्षभ ॥ आदौचान्ते च मध्ये च हरिः सर्वत्र गीयते ॥ महाभारत० स्वर्गारो० पर्व १८ अ० ६ श्लोक ९३ ॥ सर्वत्र पुण्य वेद तथा रामायण और महाभारत के आदि तथा मध्य और अन्त में, हे भरतर्षभ ! श्रीमन्नारायण का वर्णन है ॥ और भी लिखा है कि—

धर्मे चार्थे च मोक्षे भरतर्षभ ।

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न कुत्रचित् ॥

। महाभारत स्वर्गारो० पर्व १८।५ ५० ॥

हे भरतर्षभ ! धर्म अर्थ, काम और मोक्ष के विषय में जो इस महाभारत में है सो अन्यत्र भी है और जो इस महाभारत इतिहास में नहीं है वह कहीं पर भी नहीं है ॥ ५० ॥ इससे स्पष्ट साबित होता है कि पुराण से इतिहास श्रेष्ठ है इसी बात को जगदाचार्य जी ने तीसरे सूत्र में कहा है कि इतिहास पुराण इन दोनों में इतिहास प्रबल है ॥ ३ ॥

अब श्रीमल्लोकाचार्य स्वामीजी अपने ही साक्षात्साधन करते हैं कि पुराण से इतिहास श्रेष्ठ है ।

॥ तेन स पूर्वं भवति ॥ ४ ॥

अर्थ —पुराण से इतिहास (तेन) प्रबल होने से (सः) वह इतिहास शब्द, इतिहास और पुराण इन दोनों के द्वन्द समास करने पर (पूर्वम्) पहले ॥ अभ्यर्हितं च ॥ इस वार्तिक से पूर्वनिपात (भवति) होता है । इसका तात्पर्य यह है कि इतिहासपुराणाभ्याम् ॥ महाभारत आदि प० १ अध्याय १ श्लोक ६७ ॥ इस श्लोक के पद में और ॥ इतिहास-पुराणानि ॥ अश्वलायन सूत्र अ० ३ ॥ इस सूत्र के पद में और इतिहासपुराणम् ॥ छान्दोग्य प्रपा० ७ खंड १ ॥ इस उपनिषद् के पद में तथा ॥ इतिहास पुराणम् ॥ शतप० अध्याय ११ प्र० ३ ब्रा० ८ कं० ८ ॥

इस वेद के ब्राह्मण भाग के पद में और स्मृतीतिहासपुराणैः ॥ श्रीवचन-भू० सूत्र १ ॥ इस सूत्र के पद में इतिहास और पुराण इन दोनों के साथ चार्थेद्वन्द्वः ॥ व्याक० अ० २ पाद २ सूत्र २६ । इस सूत्र से द्वन्द्व समास करने पर इतिहास शब्द से पुराण शब्द में अल्पस्वर है इससे ॥ अल्पाच्तरम् ॥ व्या० अ० २ पाद सूत्र ॥ ३४ ॥ इस सूत्र द्वारा पुराण शब्द का पूर्व निपात प्राप्त हुआ परन्तु अभ्यर्हितं च ॥ इस वार्तिक से श्रेष्ठ होने के कारण इतिहास शब्द का ही पूर्व निपात होता है और चौथे अध्याय के तीसरे पाद के महाभाष्य में लिखा है कि—

वेदा एव मूलप्रमाणं धर्माधर्मयोः,
यदद्दष्टम् हि वेदेषु तत् द्रष्टव्यं स्मृतौ किल ।
उभाभ्यां यदद्दष्टस्तु तत् पुराणेषु पठ्यते ॥
श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तधर्मयोग्यास्तु नेतरे॥
धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं प्रथमं श्रुतिः ।
द्वितीयं धर्मशास्त्रं तु तृतीयो लोकसंग्रहः ॥
उपविष्टो धर्मः प्रतिवेदम्। तस्यानुव्याख्यास्यामः।
स्मार्तो द्वितीयः।
तृतीयः शिष्टागमः। श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियं आत्मनः ।
सम्यक्संकल्पजः कामो धर्ममूलं इदं स्मृतम् ॥
श्रुतिस्मृति विरोधे तु श्रुतिरेव गरीयसी॥
श्रुतिस्मृतिपुराणेषु विरुद्धेषु परस्परम् ।
पूर्वं पूर्वं बलीयं स्यादिति न्यायविदो विदुः ॥

श्रुतिस्मृति पुराणां विरोधो यत्र द्रिश्यते ।
तत्र श्रोतं प्रमाणास्तु तयोर्ध्व्यधे स्मृतिर्वरा ॥

“आनयोरुभयोर्मध्ये इतिहास: प्रबल:” इतिहास और पुराण दोनों मे इतिहास ही प्रबल है”

यदि श्री हनुमान जी का जन्म अन्यत्र हुआ होता तो, जरूर श्री मद्वाल्मीकि जी अपने ग्रन्थों में रामायण मे उस प्रान्त का क्षेत्र का या वहा के देवता का उल्लेख करते ! परन्तु ऐसे किसी भी अन्य क्षेत्रों के बारें में यहां उल्लेख नहीं मिलता है, और यह भी विचारणीय अंश हैं कि श्री मद् वाल्मीकि रामायण काल, और पौराणिक काल , रामायण काल “त्रेतायुग” में घटित हुआ यह सभी श्री राम, माता सीता जी , और श्री हनुमान् जी के जन्म के बारें में साक्षात् वाल्मीकि जी ने स्वयं ही सब को साक्षी बनाकर उन लोगों के सामने ही लिखे हैं, अन्य ग्रन्थ ऐसे हीं हैं

नीतिनिधि
१४.वैदिक वाङ्मय

श्रुतिस्मृतिपुराणानां विरोधो यत्र दृश्यते।
तत्र श्रौतं प्रमाणं तु तयोर्द्वैधे स्मृतिर्वरा।।
(व्याසस्मृति १.४)

“श्रुति, स्मृति तथा पुराणोंका जहाँ विरोध हो, वहाँ वेदवचन ही प्रमाण है, स्मृति तथा पुराणोंके विरोधमें स्मृति प्रबल है।।”

श्रुतिद्वैधं तु यत्र स्यात् तत्र धर्मावुभौ स्मृतौ।
उभावपि हि तौ धर्मौ सम्यगुक्तौ मनीषिभिः।।
(मनुस्मृति २.१४)

“वेदवचनमें परस्पर विरोध होनेपर विवक्षावशात् अधिकारी आदिके भेदसे दोनोंका समान बल और समादर विहित है।।”

जहाँ सोमयागादिका फल अक्षय – अमृतत्व श्रुत हो, वहाँ “सर्वं कृतकं नश्वरम्” (नारदपरिव्राजकोपनिषत् ५), “न ह्यध्रुवैः प्राप्यते

प्रश्न) कल्प, मन्वन्तर भेद में कौनसे विषयों का स्वीकार करना चाहिए ?

उत्तर) : भगवान वेदव्यास जी के द्वारा प्रणीत किए गये अनेक सारे ग्रन्थों में विशेष रूप से १८ पुराणों में अनेक कल्प, अनेक मन्वन्तर और उस कल्प मे उस उस मन्वन्तर में अतीत घटनाओं का भी उल्लेख किया है ।, परन्तु अभी हम को चाहिये वर्तमान विषय में, वर्तमान युग मे,(त्रेतायुग) में श्री रामायण काल मे घटित इतिहास विषय "श्री हनुमान् जी का जन्म वृत्तान्त" इसके बारें में वर्तमान काल का वर्तमान युग में; (त्रेतायुग)मे श्री रामायण काल में घटित हुए विषयों केलिए श्री रामायण ही प्रमाण हैं और कोईभी इतिहास और पुराणों में परस्पर विषय भेद या परस्पर विरुद्ध वाक्य आया तो पुराणों से भी इतिहास को ही अधिक प्रामाणिक माना जायेगा,

सुन्दर काण्ड :

माल्यवान्नाम वैदेहि गिरीणामुत्तमो गिरिः।
ततो गच्छति गोकर्णं पर्वतं केसरी हरिः। 5.35.80॥

पर्वतों में माल्यवान (किष्किन्धा में माल्यवान् / प्रस्रवण गिरि)नाम से एक प्रसिद्ध उत्तम पर्वत है, वहां केसरी नामक वानर निवास करते थे, एक दिन वे वहा से गोकर्ण क्षेत्र पर्वत पर गए

स च देवर्षिभिर्दिष्टः पिता मम महाकपिः।
तीर्थे नदीपतेः पुण्ये शम्बसादनमुद्धरत्।5.35.81॥

देवर्षियों की आज्ञा से मेरे पिता "केसरी", उन्होंने समुद्र के तट पर विद्यमान उस पवित्र गोकर्ण तीर्थ में शंबसादन नामक दैत्य का संहार किया था |

तस्याहं हरिणः क्षेत्रे जातो वातेन मैथिलि।
हनुमानिति विख्यातो लोके स्वेनैव कर्मणा।5.35.82॥

(गो .टी. तस्येति – हरिण: हरे: केसरिण: क्षेत्रे पत्न्यामञ्जनायां जात: पितुर्देशान्तरगमन काले जात: अनेनान्य क्षेत्रे कथमन्येनोत्पादनमिति शङ्का पराकृता)

उन्हीं कपिराज केसरी की स्त्री के गर्भ से वायु देवता के द्वारा मेरा जन्म हुआ है | में लोगो में अपने ही कर्म के द्वारा हनुमान नाम से विख्यात हू,

हतेऽसुरे संयति शम्बसादने कपिप्रवीरेण महर्षिचोदनात्।
ततोऽस्मि वायुप्रभवो हि मैथिलि प्रभावतस्तत्प्रतिमश्च वानरः। 5.35.89॥

महर्षियों की प्रेरणा से कपिवर केसरी द्वारा युद्ध में शम्बसादन नामक असुर के मारे जाने पर मैंने पवनदेवता के द्वारा जन्म ग्रहण किया | अतः हे मैथिली ! मैं उन वायुदेवता के समान ही प्रभावशाली वानर हूं ||

रामे चित्तलयस्सदा भवतु मे
किष्किन्धा

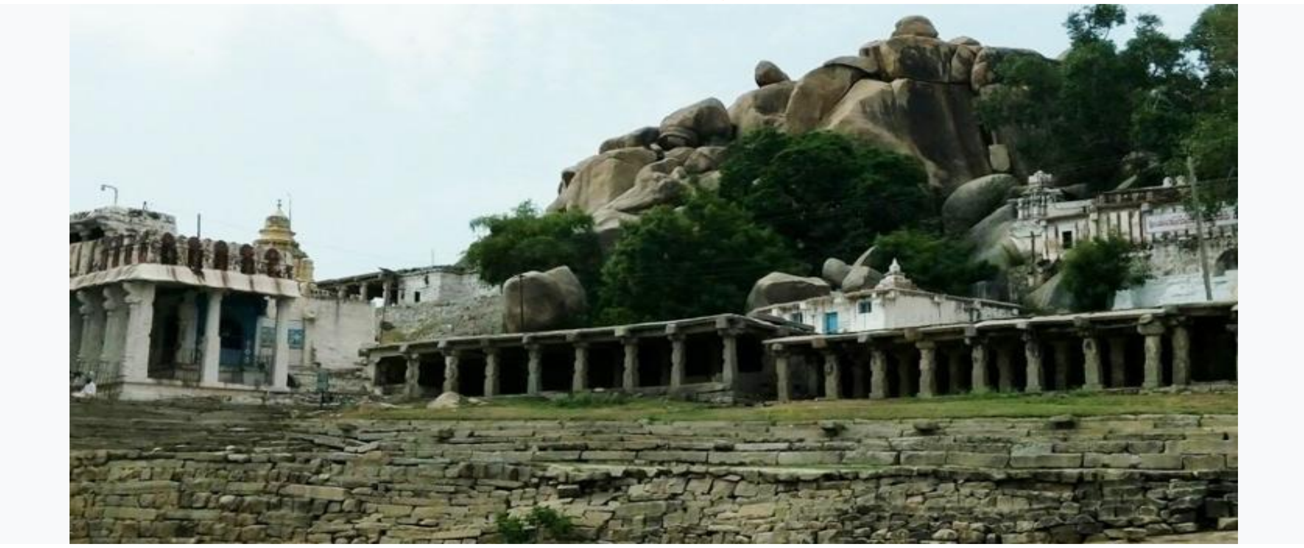

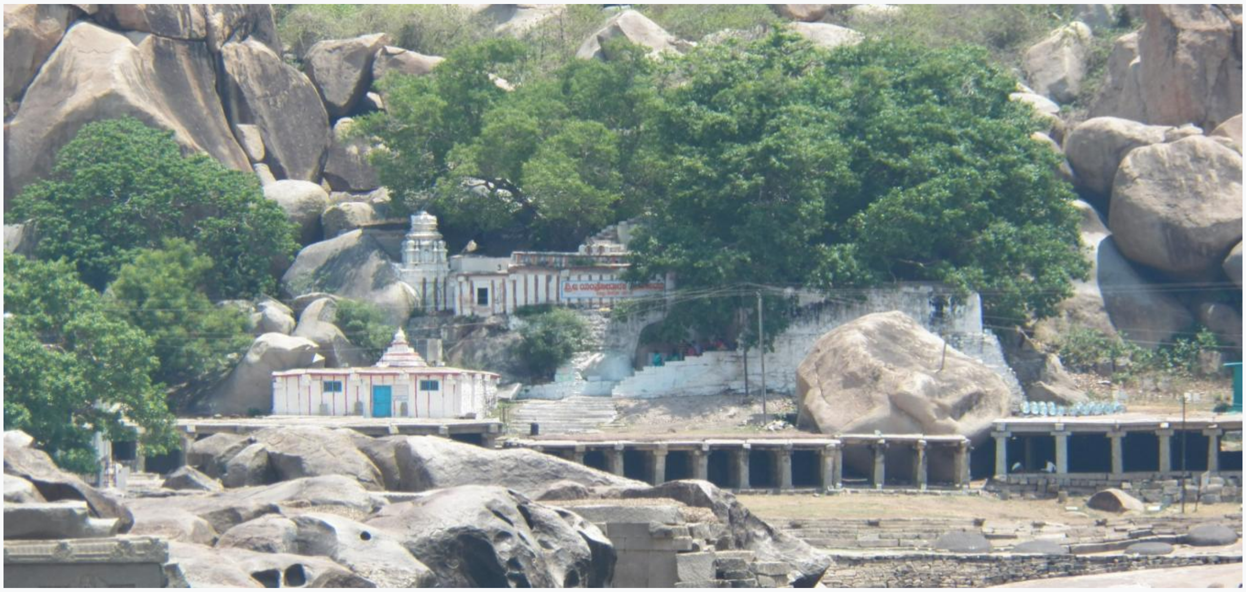

श्री यंत्रोद्धारक हनुमान मंदिर

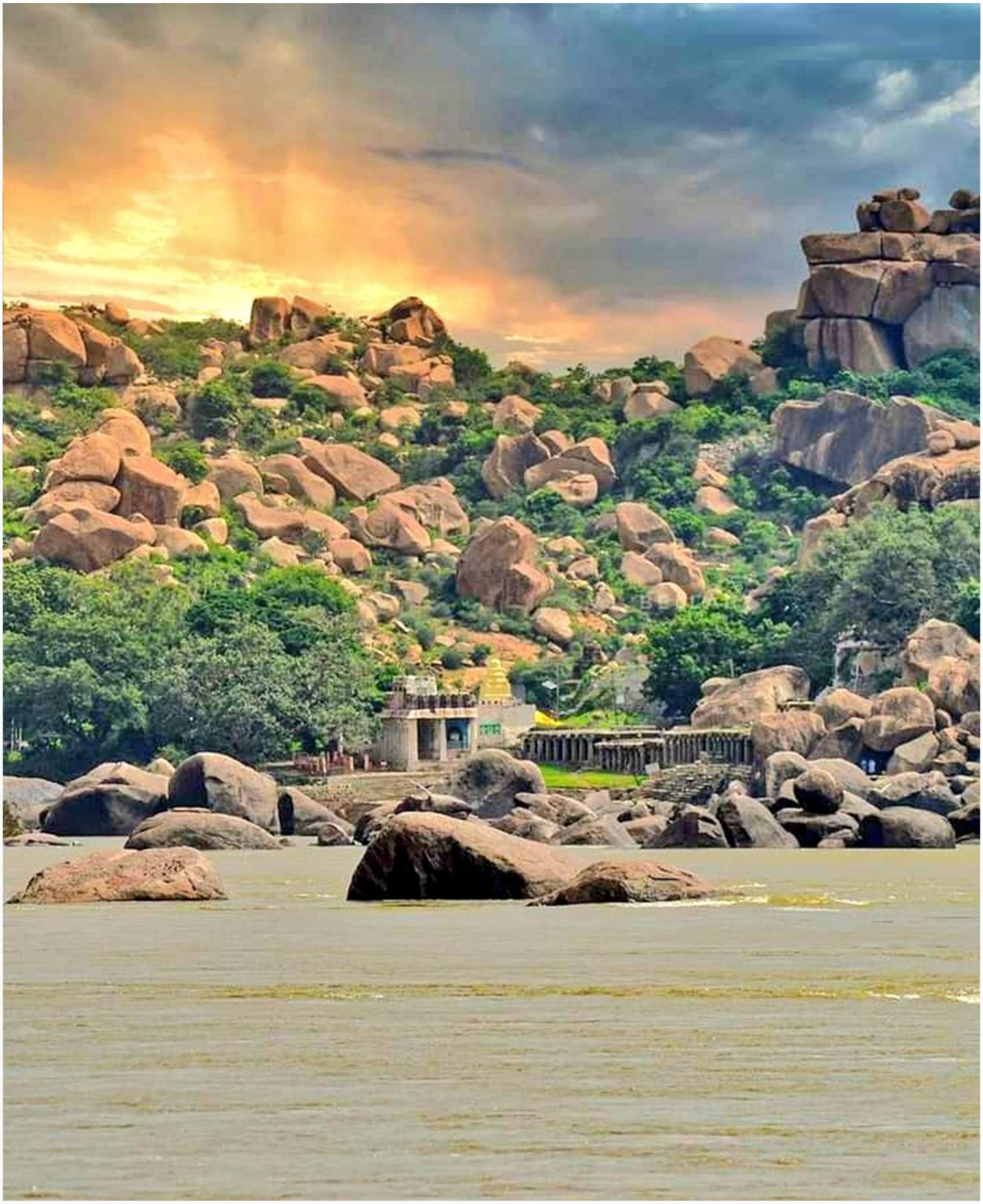

ऋष्यमूक पर्वत से मतंग पर्वत का दृश्य - तुंगभद्रा नदी

श्री कोदण्ड राम स्वामी मंदिर, सुदर्शन चक्र तीर्थ जहां भगवान श्री राम और हनुमान जी मिले थे

प्रश्न :- आपके पास इसके अलावा और क्या सबूत है ?
उत्तर :- **अञ्जन गाँव अञ्जन हल्लि" (माता अञ्जना देवी का जन्म स्थल)**

कर्नाटक के कोप्पल और बेल्लारी दोनों जिला में पम्पाक्षेत्र किष्किन्धा नगर

व्याप्त हैं उसी किष्किन्धा में अंजनी / अञ्जनाद्रि पर्वत है (उस पर्वत के बगल में एक "अञ्जन हल्लि" नामक बड़ा गाँव हैं जिस गाँव में माता अञ्जना देवी का जन्म हुआ ।

प्रश्न :- आपके पास इसके अलावा और क्या सबूत है ?
उत्तर :- हनुमान गाँव (हनुमन हल्लि) और हनुमान जी का घर : (जहाँ बाल हनुमान जी अपने बाल्य लीला की, और श्री हनुमान जी का निवास)

अञ्जन गाँव अञ्जन हल्लि" (माता अञ्जना देवी का जन्म स्थल) :

कर्नाटक के कोप्पल और बेल्लारी दोनों जिला में पम्पाक्षेत्र किष्किन्धा नगर व्याप्त हैं उसी किष्किन्धा में अंजनी / अञ्जनाद्रि पर्वत है (उस पर्वत के बगल में एक "अञ्जन हल्लि" नामक बड़ा गाँव हैं जिस गाँव में माता अञ्जना देवी का जन्म हुआ ।

हनुमान गाँव (हनुमन हल्लि) और हनुमान जी का घर : (जहाँ बाल हनुमान जी अपने बाल्य लीला की और श्री हनुमान जी का निवास) है :

पम्पाक्षेत्र किष्किन्धा नगर किष्किन्धा अञ्जनाद्रि पर्वत कि पास **हनुमान हल्लि** नामक एक और बड़ा गांव हैं, जिस जगह में **बाल हनुमन** अपने बाल्य लीला की और बडे हुये और निवास करते थे (यह् भी श्री हनुमन जी का घर और अन्य मुख्य कपि/वानरों का घरों काभी मद् वाल्मीकि रामायण मे उल्लेख है, इस के साथ साथ अङ्गद, उन्होंने राजमार्ग अङ्गद का रमणीय भवन देखा साथ ही वहाँ मैन्द, द्विविध, गवय, गवाक्ष, गज, शरभ, विद्युन्माली, सम्पाति, सूर्याक्ष, वीरबाहु, सुबाहु, नल, कुमुद,सुषेण, तारा, जाम्बवन्त, दधिवक्त्र, नील, सुपाटल, सुनेत्र)
अङ्गदस्य गृहं रम्यं मैन्दस्य द्विविधस्य च।

गवयस्य गवाक्षस्य गजस्य शरभस्य च।।4.33.9।।
विद्युन्मालेश्च सम्पाते स्सूर्याक्षस्य हनूमतः।
वीरबाहो स्सुबाहोश्च नलस्य च महात्मनः।।4.33.10।।
कुमुदस्य सुषेणस्य तारजाम्बवतोस्तथा।
दधिवक्त्रस्य नीलस्य सुपाटलसुनेत्रयोः।।4.33.11।।
एतेषां कपिमुख्यानां राजमार्गे महात्मनाम्।
ददर्श गृहमुख्यानि महासाराणि लक्ष्मणः।।4.33.12।।

इन महामनस्वी वानर शिरोमणियों के भी अत्यंत सुदृढ़ श्रेष्ठ भवन लक्ष्मण को दृष्टि गोचर हुए वे सब के सब किष्किन्धा नगर राजमार्ग पर ही बने हुए थे)

जिस जगह मे श्री हनुमान जी अपने बाल्य लीलाए करते थे उस जगह का नाम "**हनुमान् गाँव हैं / हनुमन हल्लि**" से विख्यात हुआ, आज भी यह गाँव विराजमान् हैं ।

प्रश्न :- आजकल कुछ लोग हनुमान की कुछ तस्वीरें देखकर ऐसा लग रहा है जैसे उनकी शादी हो गई है,

उत्तर :- हनुमान जी शुद्ध आजन्म बाल ब्रह्मचारी, अविवाहित हैं :

श्री हनुमान जी आजीवन ब्रह्मचारी है कुछ लोग अनावश्यक रूप से झूठा कल्पित ग्रंथो का निर्माण करते हुए हनुमान जी को गृहस्थ बताते है कि सूर्य की पुत्री सूवर्चला से विवाह किया है ऐसा दुष्प्रचार कर रहे है | टी.वी (T.V). इंटरनेट के माध्यम से लोग बिना प्रमाणों के स्वकपोल कल्पित कहानियों का प्रचार कर रहे है इससे भक्त लोग भ्रमित हो रहे है इसी लिए ऐसे ग्रंथो को टी.वी. (T.V) इंटरनेट मध्यमों में प्रसार होने वाले विषयों का कोई प्रमाणिकता और मूल नहीं है जब की वेद पुराण में श्री हनुमान जी

को शुद्ध ब्रह्मचारी माना है और श्री हनुमान जी चिरंजीवि है और भविष्य के ब्रह्मा जी है |

अप्रामाणिक ग्रंथो का निराकरण : अप्रामाणिक ग्रंथो के श्लोकों का स्वलिखित कपोल कल्पित पुराणों का निराकरण,
किसी भी तरह जो प्रमाणिकता नहीं है ऐसे ग्रंथों का सर्वदा निराकरण करना चाहिए आज कल कुछ नये नये ग्रंथ, कुछ स्वलिखित ग्रंथ आरहे हैं और यह पुराण के रूप मे प्रचारित हो रहे हैं, वैसे ही श्री हनुमान् जी के बारे में लोग दिखानेवाले पराशर संहिता इत्यादि ग्रंथो का कोई प्रामाणिकता नहीं हैं, ऐसे ग्रंथों की सर्वदा निराकरण करते हुए श्री शंकराचार्य गुरु परंपरा में आए हुए भगवान् नारायण से श्री शंकराचार्य तक आने वाले गुरु परंपराओं में श्री पराशर महर्षि संहिता नाम का कोई ग्रंथ उल्लेख नहीं है, आज कल पराशर संहिता के नाम पर जो ग्रंथ प्रचार हो रहे है वह ग्रंथ कोई अन्य व्यक्ति का स्वलिखित ग्रंथ है, इसकी कोई प्रामाणिकता नहीं है और इस में प्रतिपादन करने वाले विषयों (सूर्य पुत्रि सुवर्चला के साथ श्री हनुमान जी का विवाह इत्यादि) में भी कोई प्रामाणिकता नहीं है | ऐसे ग्रंथों से भक्त लोग सावधान रहे,

प्रमाणिकता का अर्थः श्रुति, स्मृति, शास्त्र पुराण इतिहास सम्मत वैदिक सम्प्रदाय आचार्य गुरुपरम्परा से आया हुआ / सर्वमत सम्मत हो, वैदिक सम्प्रदाय आचार्यों से अनुमोदित हो)

धार्मिक निर्णय : कोई भी आध्यात्मिक या धार्मिक निर्णय लेना है तो वह निर्णय परम्परागत धार्मिक आचार्यों का कर्तव्य और अधिकार है, प्रस्तुत विषय में विगत कुछ महीने पहले टि.टि.डि कमेटी ने तिरुपति में श्री

हनुमान जी के जन्मस्थल के बारें में अनावश्यक वक्तव्य देना, खुद ही निर्णय लेना सर्वदा अनुचित कार्य है,

और लौकिक कमेटी बना कर धर्माचार्यों के अनुमति विना, अनुमोदन विना निर्णय लेना सर्वदा अनुचित है । यह धर्माचार्यों का कर्तव्य है कि धार्मिक विषयों में देश काल, मान, परिस्थितियों के अनुसार आध्यात्मिक, धार्मिक, आचार, विचार इत्यादि विषयों मे शास्त्र युक्त, इतिहास पुराण वाक्यों में यदि परस्पर विरुद्ध वाक्य आया तो उसका समन्वय करके शास्त्र युक्त, सर्व सम्मत मार्गदर्शन, निर्देशन, निर्णय देश प्रजाओं को प्रदान करें । उनका कर्तव्य है । न आप का (टि.टि.डि/ अन्य /सरकार/) ।

इन्हिं परिस्थितियों में आप जब श्री हनुमान् जी के विषय में कुछ संदेश / नया नया निर्णय लेने के समय यह आप का कर्तव्य हैं कि आप सर्वप्रथम उन धर्माचार्यों कि दृष्टि में इन विषयों को लेकर जाए , परन्तु ऐसा भी नहीं किया अंतिम में आप के (टि.टि.डि) किए गए कार्य से धर्म का संरक्षण नही उसकी हानि ही हुई, सामान्य भक्त भी भ्रमित होने लगे हैं , और हो रहे है, आगे ऐसे अवैदिक कोई भी कार्य भविष्य मे कही भी नहीं होना चाहिए ।
और इस विषय में आप न पुजारी हैं, न धर्माचार हैं केवल एक लौकिक कमेटी बनाकर निर्णय लेना सर्वदा अनुचित हैं , इतना ही नही आप एक कुलपति होकर फकीर मुसलमान् साई को भी गुरू और भगवान के रूप मे वक्तव्य देना और प्रचार करना, आप जैसे लोग श्री हनुमान जी के बारे में बोलना, कुछ काल्पनिक ग्रंथोंको लेकर अनावश्यक रूप से श्री हनुमान जी के भव्य चरित्र को क्षति पहुचाना ये सर्वदा अनुचित कार्य हैं

कोई भी आध्यात्मिक या धार्मिक निर्णय लेना है तो वह निर्णय परम्परागत धार्मिक आचार्यों का कर्तव्य और अधिकार है, इसलिए आद्य शङ्कराचार्य भगवत्पाद जी ने भारत देश में चार दिशाओं में चार पीठों की स्थापना की, प्रस्तुत विषय में विगत कुछ महीने पहले टि.टि.डि कमेटी का तिरुपति में श्री हनुमान जी के जन्मस्थल के बारें में अनावश्यक वक्तव्य देना खुद ही निर्णय लेना सर्वदा अनुचित कार्य था,

टि.टि.डि कमेटी के द्वारा किया गया कार्य प्रोजेक्ट रिपोर्ट इत्यादि सर्वदा अनुचित, अप्रमाणिक है

और इन विषयों को बोलने वाले नये नये पुराण एवं एक कल्पित स्व लिखित - पराशर संहिता नामक ग्रन्थ दिखाना और इस को स्वयं महर्षि पराशर के साथ जोडना- जहां महर्षि पराशर से निर्मित ऐसा कोई ग्रंथ नही है, और "पहले कुछ बोलना, बाद में कुछ लिखना, अंतिम मे कुछ और आचरण करना" स्वप्रयोजन के अनुसार प्रमाणों को बदल देना सर्वदा अनुचित है । उदा:- श्री हनुमान जी के जन्म स्थल और तिथि के विषय को लेकर टि.टि.डि मनमाना आचरण करना।

१) आप के रिपोर्ट में श्री हनुमान जी का नया नया अनेक चार चार जन्म तिथियां बताना, श्रावण इत्यादि, "श्रावणे मासि नक्षत्रे श्रवणे हरिवासरे" (यह ज्योतिष सिद्धान्त केभी विरुद्ध है) बाद मे उस को बदलकर और आप नये तिथि "वैशाख दशमी" मे हनुमद जयन्ति मनाना,
२) टि.टि.डि देवस्थान् (बोर्ड) को ऐसे कोई कमेटी बनाने का अधिकार ही नही है,

३) तिरुपति कमेटी का कहना है कि "श्री हनुमान जी का सूर्य कि पुत्री सुवर्चला से विवाह हुआ,

कमेटी के अध्यक्ष रा.सं.संस्थान कुलपति जी फकीर मुसलमान साई को गुरु और भगवान कहते है ऐसे लोगों को श्री हनुमान जी के बारे में बोलना और कुछ काल्पनिक ग्रंथोंको लेकर अनावश्यक से श्री हनुमान जी के भव्य चरित्र को क्षति पहुचाना सर्वदा अनुचित कार्य है अंतिम में सामान्य भक्त भी भ्रमित होने लगे है , और हो रहे है , आगे ऐसे अवैदिक कोई भी कार्य भविष्य मे कहीं भी, किसी से भी नहीं होना चाहिए ।

वैदिक परम्पागत समस्त भक्त गण इस उपरोक्त निर्णय को मानकर आचरण करके सत्फलित, और भगवदनुग्रह प्राप्तकरे

श्री हनुमान जी का जन्म - श्री मद्वाल्मीकि रामायण में उल्लेख, (पम्पाक्षेत्र किष्किंधा) :

१) समुद्रोल्लंघन के समय श्री जाम्बवन्त जी ने पहलीबार श्री हनुमान जी को उनके जन्म वृत्तान्त के बारे में सुनाया , **(किष्किंधा काण्ड ६६ -८ से २९)**

२) जब श्री हनुमान जी लंका मे सीता माता जी से भेंट करते हैं, उस समय अपना परिचय देते हुए अपने जन्म के बारें में बताते हैं **(सुंदर काण्ड ३५ – ८१ से ९०)**

३) **युद्ध काण्ड :**

यम् तु पश्यसि तिष्ठन्तम् प्रभिन्नम् इव कुन्जरम् |
यो बलात् क्षोभयेत् क्रुद्धः समुद्रम् अपि वानरः || ६-२८-८

एषो अभिगन्ता लंकाया वैदेह्यास् तव च प्रभो |
एनम् पश्य पुरा दृष्टम् वानरम् पुनर् आगतम् || ६-२८-९
ज्येष्ठः केसरिणः पुत्रो वात आत्मज इति श्रुतः |
हनूमान् इति विख्यातो लन्घितो येन सागरः || ६-२८-१०
काम रूपी हरि श्रेष्ठो बल रूप समन्वितः |
अनिवार्य गतिः चैव यथा सततगः प्रभुः || ६-२८-११
उद्यन्तम् भास्करम् दृष्ट्वा बालः किल पिपासितः |

त्रियोजन सहस्रम् तु अध्वानम् अवतीर्य हि || ६-२८-१२
आदित्यम् आहरिष्यामि न मे क्षुत् प्रतियास्यति |
इति संचिन्त्य मनसा पुरा एष बल दर्पितः || ६-२८-१३
अनाधृष्यतमम् देवम् अपि देव ऋषि दानवैः |
अनासाद्य एव पतितो भास्कर उदयने गिरौ || ६-२८-१४
पतितस्य कपेर् अस्य हनुर् एका शिला तले |
किंचिद् भिन्ना दृढ हनोर् हनूमान् एष तेन वै || ६-२८-१५
सत्यम् आगम योगेन मम एष विदितो हरिः |
न अस्य शक्यम् बलम् रूपम् प्रभावो वा अनुभाषितुम् || ६-२८-१६
एष आशंसते लंकाम् एको मर्दितुम् ओजसा |

उत्तर काण्ड : श्री राम चन्द्र जी हनुमान जी के जन्म के विषय मैं महर्षि अगस्त्य से पूछते हैं " है! देववन्द्य महामुने भगवन् ! आप हनुमान जी के विषय मैं ये सब बातें यथार्थ रूप से विस्तार पूर्वक बताईये" : -

४) श्री राम चन्द्र जी हनुमान जी के जन्म विषय में महर्षि अगस्त्य से पूछते हैं(**उत्तर काण्ड उ. स ३५-१३॥)**

" हे ! देववन्द्य महामुने भगवान ! आप हनुमान जी के विषय में ये सब बातें यथार्थ रूप से विस्तार पूर्वक बताइए " तब श्री राम चन्द्र जी के ये युक्ति युक्त वचन सुनकर महर्षि अगस्त्य जी ने हनुमान जी के सामने ही उनके पिता, माता और श्री हनुमान जी के जन्म से लेकर चिरंजीव वर प्रदान और "भविष्य ब्रह्मा" वर प्राप्ति तक ऐसे अनेक सारे वृत्तान्त संपूर्ण रूप से सुनाए **(उत्तर काण्ड ३५ श्लो १३ से २१)** आगे ही |

एतन्मे भगवन् सर्वं हनूमति महामुने(मतौ) |
विस्तरेण यथातत्वं कथयाऽमरपूजित । उ. स ३५-१३॥
राघवस्य वचः श्रुत्वा हेतुयुक्तम् ऋषिस्तदा ।
हनूमतः समक्षं तं इदं वचनमब्रवीत् । १४ ॥
सत्यमेतद्रघुश्रेष्ठ यद् ब्रवीषि हनूमतः (ति)।
न बले विद्यते तुल्यो न गतौ न मतौ परः ॥ १५ ॥
यदि वाऽस्ति (त्व)ह्यभिप्रायः (सं)तत् श्रोतुं तव राघव ।
समाधय मतिम् राम निशामय वदाम्यहम् ॥ १८ ॥
सूर्यदत्तवरस्वर्णः सुमेरुर्नाम पर्वतः ।
यत्र राज्यं प्रशास्थस्य केसरी नाम वै पिता ॥ १९ ॥
तस्य भार्या बभूवेस्टा(वैषा) ह्यञ्जनेति परि श्रुता ।
जनयामास तस्यां वै वायुरात्मजमुत्तमम् ॥ २०॥
शालिशूकनिभाभासं प्रासूताऽमुं तदाऽञ्जना ।

फलान्याहर्तुकामा वै निष्क्रांता गहनेचरा(वरा)॥ २१॥

देव वन्ध्य महामुने भगवन आप हनुमान जी के विषय में ये सब बाते यथार्थ रूप से विस्तारपूर्वक बताइये । १३
श्री राम चंद्र जी के ये युक्ति युक्त वचन सुनकर महर्षि अगस्त्य जी हनुमान जी के सामने ही उनसे इस प्रकार बोले | १४

हे रघुकुल तिलक ! श्री राम ! हनुमान जी के विषय में आप जो कुछ भी कहते है यह सब सत्य ही है बल बुद्धि और गति में इसकी बराबरी करने वाला दूसरा कोई नहीं है | १५
महाबली श्री राम इन्होंने बचपन में भी जो महान कर्म किया था उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है उन दिनों ये बाल भाव से अनजान की तरह रहते थे | १७
हे रघुनंदन ! यदि हनुमान जी का चरित्र सुनने के लिए आपकी हार्दिक इच्छा हो तो चित्त को एकाग्र करके सुनिए मैं सारी बाते बता रहा हूँ | १८

भगवान सूर्य के वरदान से जिसका स्वरूप सुवर्णमय हो गया है ऐसा एक सुमेरु नाम से एक प्रसिद्ध पर्वत है जहां हनुमान जी के पिता केसरी राज्य करते है | १९
उनकी अंजना नाम से विख्यात प्रियतमा पत्नी थी उनके गर्भ (के अंश से) से वायु देव ने एक उत्तम पुत्र को जन्म दिया | २०

अंजना ने जब इनको जन्म दिया उस समय इनकी अंग क्रांति पिंगल जाड़े में पैदा होने वाले धन के अग्र भाग की भांति पिंगल वर्ण की थी । एक दिन माता अंजना फल लेने के लिए आश्रम से निकली और गहन वन में चली गई | २१

यह केवल प्रासंगिक प्रस्तावन है , यदि संपूर्ण विश्लेषण के लिए हमें रामायण का ही आश्रय लेना चाहिए , पुराणों में अनेक रूप से विविध कथाएं मिलती है जब पुराण और इतिहास में कोई परस्पर भेद कहानियां हैं तो उसमें अंतिम निर्णय के लिए इतिहास का ही आश्रय लेना चाहिए कि और श्री मद् वाल्मीकी रामायण कि यह विशेषता है की यह ग्रन्थ श्री राम जी और हनुमान जी के काल में ही लिखा गया था और महर्षि वाल्मीकि जी ने श्री लव , कुश के द्वारा अयोध्या में श्री राम चंद्र जी के सानिध्य में यह रामायण कथा सभी को सुनाई भी थी , और श्री राम एवं श्री हनुमान जी के जन्म के वृत्तान्त में १७ लाख वर्षों से तीनों युगो से आचरण करते आए है ऐसा संपूर्ण विवरण अन्यत्र कहीं नहीं मिलता है । कुछ पुराणों में अनेक कहानियाँ भी मिल सकती हैं । परंतु यह सभी असम्पूर्ण हैं । कुछ क ल्प भेद से भी मिलते हैं । वे असम्पूर्ण हैं ।

आदेश : इस विषय को लेकर भविष्य में कोई भी अनावश्यक वक्तव्य देना या व्याख्यान करने केलिए जरूरत नहीं है , सम्पूर्ण इतिहास, पुराण और अन्य विविध ग्रंथो विविध रामायण ग्रंथो का संपूर्ण विश्लेषण करने के बाद **हनुमान जी की जन्म स्थली किष्किंधा में स्थित अञ्जनाद्रि पर्वत पर ही है** , वायु के अनुग्रह से केसरी एवं अञ्जना देवी दम्पतियों से **चैत्र शुक्ल पूर्णिमा** को श्री हनुमान जी का जन्म हुआ, यही परम्परा से अभी

तक आचरण करते आ रहे हैं । और भविष्य में भी यही प्रमाण रूप में आचरण करने योग्य है. और अन्य विषय प्रामाणिक नहीं है, और ना होंगें,

निर्णय : श्री हनुमान जी श्री रुद्र के अवतार हैं , श्री वायु देवता के अनुग्रह से औरस पुत्र के रूप में , श्री केसरी एवं माता अञ्जनी दम्पतियों से किष्किंधा (गुहा) नगरी में , चैत्र शुल्क पूर्णिमा तिथि को पुत्र के रूप में जन्म लिया ।

श्री रामचन्द्र भगवान का जन्म जैसे अयोध्या में हुआ श्री सीता माता जी का जन्म जनकपुरी मे हुआ ये जितना सत्य हैं , वैसे ही श्री हनुमान जी का जन्म किष्किंधा मे हुआ ये भी उतना ही सत्य हैं ।

नास्ति रामायणात् परम् १.५.२१।, वाल्मीकिर्भगवान् ऋषिः (१.३.३८) :
सनातन धर्म के लिए मूल आधार वेद हैं | वह भगवत् स्वरूप है , साक्षात
चतुर्मुख ब्रह्मा जी की प्रेरणा से
वेद वेद्ये परे पुंसे जाते दशरथात्मजे ।
वेदः प्राचेतसादासीत् साक्षाद्रामायणात्मना ॥
तमुवाच ततो ब्रह्मा प्रहसन्न् मुनिपुंगवम् |
श्लोक एव त्वया बद्धो नात्र कार्या विचारणा ||
मच्छंदादेव ते ब्रह्मन् प्रवृत्तेयं सरस्वती ।
रामस्य चरितम् सर्वं कुरु त्वम् ऋषिसत्तम ॥

ततः पश्यति धर्मात्मा तत्सर्वं योगमास्थितः ।
पुरा यत् तत्र निर्वृत्तं पाणावामलकं यथा ॥
उनकी कृपा से महर्षि वाल्मीकि धर्मेणान्वेषते गतिम्,
तत्सर्वं तत्वतो दृष्ट्वा धर्मेण स महा द्युतिः ।

वाल्मीकिर्भगवान् ऋषिः १.३.३८)
के मुख से वेदों का सार रामायण के रूप में निकला (
वेदः प्राचेतसादासीत् साक्षाद्रामायणात्मना ॥ राम महा . २१,२२,२३)
यह वेद तुल्य है , महर्षि वाल्मीकि कि कृपा से वेद सूक्ष्म धर्मों का ग्रहण, धारण करने वाले
सतु मेधाविनौ दृष्ट्वा वेदेषु परिनिष्ठितौ |
वेदोपबृंहणार्थाय ताव ग्राहयत प्रभुः, ॥ १.४.६,
राम जी के जो प्रतिबिम्ब रूप है बिंबादिवो द्धृतौ बिंबौ रामदेहात् तथा परौ ॥ १.४.११,

उन लव कुश को उपदेश दिया, अयोध्या में अश्वमेध यज्ञ के समय दिव्य सभा मे समस्त अयोध्या वासियों के देखते हुए, साक्षात् श्रीराम जी कि उपस्थिति मे गायन आसीनः काञ्चने दिव्ये स च सिंहासने प्रभुः ।
उपोपविष्टः सचिवैर्भ्रातृभिश्च परन्तपः । 1.4.25 ॥
दृष्ट्वा तु रूपसम्पन्नौ तावुभौ नियतस्तदा ।
उवाच लक्ष्मणं रामः शत्रुघ्नं भरतं तथा । 1.4.26 ॥ किया,

यहाँ श्री राम, और माता सीता देवी का तथा समस्त देवताओं केअवतार रूप वानरों का समस्त दिव्य चरित्र को विस्तार रूप से बताने वाली ग्रंथ (काव्यं रामायणं कृत्स्नं सीतायास्श्चरितं महत्)श्रीमद् वाल्मीकि रामायण हैं ॥

नास्ति रामायणात् परम् | ऐसे श्री रामायण कर्ता।
वाल्मीकिर्भगवान् ऋषिः है

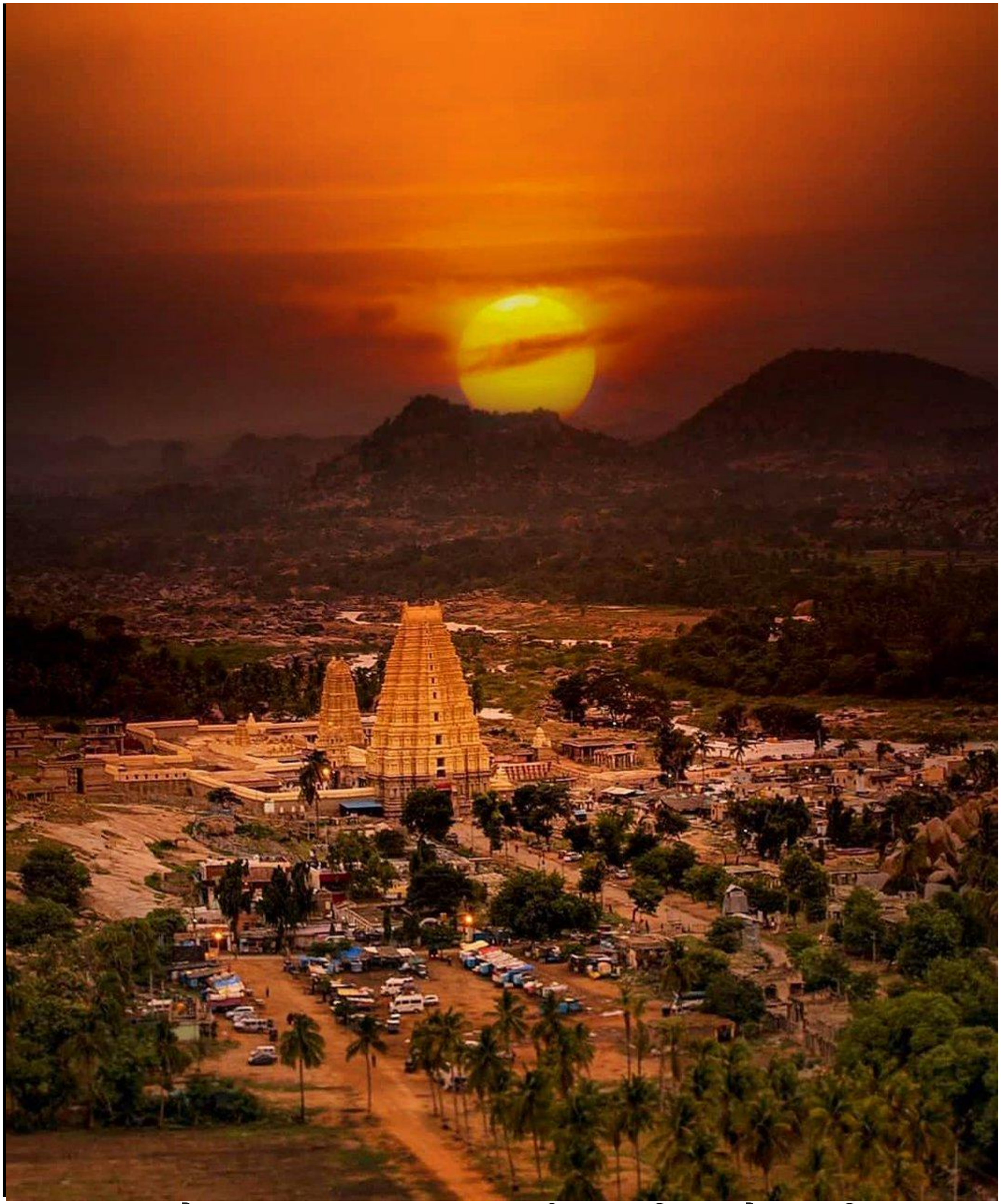

पम्पाक्षेत्र - राजाधिराज भगवान श्री पम्पा विरुपाक्षेश्वर मंदिर

శ్రీశంకరానంద గ్రంథమాల. 3.

శ్రీ

స్కాంద పురాణాన్తర్గత హేమకూటఖండాత్మక

సప్తర్షి యాత్రా ప్రకాశక

పంపా మాహాత్మ్యము. ౧

వేదాన్త విద్వచ్ఛిరోమణి,

కొరటమద్ది, వేంకటరామ శాస్త్రిగారిచే సంస్కరింపఁబడి

బ్రహ్మశ్రీయుత,

ఆస్తికభూషణ, భాస్కరాచార్య,

హాలహర్వి, వేంకటేశ్వర శాస్త్రులవారిచే

ప్రకటింపఁబడినది.

పంపా క్షేత్రము.

బళ్ళారి గురునాథ, రాయలసీమ ముద్రాశాలలయందు ముద్రితము.

1933.

శ్రీ

పంపావిరూపాక్షేశ్వర దేవాలయ

గోపుర మహాద్వారము.

శ్రీ

జగద్గురు

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

J. Srinivasa Sastrulu

17.4.37

ఓం

—• శ్రీవిరూపాక్షేశ్వర పరబ్రహ్మణే నమః •—

అథస్కాందపురాణాన్తర్గత పంపామాహాత్మ్య ప్రారంభః.

ఓం యస్మిన్ నామరూపాభ్యాం యాదేవీ సర్వమంగళా, తయోస్సంస్మరణాత్పుంసాం సర్వతో జయమంగళే ౧. ఓంనమః ప్రణవార్థాయ శుద్ధజ్ఞానైక మూర్తయే, నిర్మలాయ ప్రశాన్తాయ దక్షిణామూర్తయే నమః ౨. శ్రీహేమకూట నిలయః పంపాలింగన కాముకః, గంగాధరో విరూపాక్షో మంగళం దిశతాత్సదా ౩. వ్యాసం వసిష్ఠనప్తారం శక్తేః పౌత్ర మకల్మషం, పరాశరాత్మజం వందే శుకతాతం తపోనిధిం ౪. అనేకజన్మ సంప్రాప్త కర్మేంధన విదాహినే, జ్ఞానానిల ప్రదీపేన తస్మై శ్రీగురవే నమః ౫. పురాతు నైమిశారణ్యే మునయో వీతకల్మషాః, యజ్ఞమారేభిరే కర్తుం వర్షం ద్వాదశసమ్మితం ౬. ద్రష్టుం సమాగతా యాగం మునయో బ్రహ్మవాదినః, సుమంతో దేవలశ్చైవ పైలవ స్సుమతిర్భృగుః ౭. వామదేవశ్చ జాబాలి శ్శరభంగ స్సుతీక్ష్ణకః, మాండవ్యో ముద్గలో ధూమ్రః కౌండిన్యో రైభ్య ఏవచ ౮. గాలవో విధ్రువ శ్శాన్తో బోధాయనశుచివ్రతౌ, శౌనక స్సుమతిర్దీర్ఘ శతానంద శ్శతాతపః ౯. ఉద్దాలకో మహాసేనః కణాదో గర్గవామనౌ, ఏవమాద్యా మునిశ్రేష్ఠా స్సశిష్యాస్సపరిగ్రహాః ౧౦. లోకానుగ్రహకర్తార స్సదాబ్రహ్మవిచా

...తా, నా, గజాయుధధరాపి తా హంతుం బ్రహ్మాణముద్యతౌ ౫. తాభ్యాం
...మోహితాం దేవీం గుణాన్వితాం, యోగనిద్రాభిధాం సర్వలోకానాం మో
...౬. ప్రణమ్య ... దేవీం ప్రపన్నార్తి
... ప్రసీద విశ్వేశ్వరి [illegible] త్వాం శరణం ప్రపన్నో మాం
త్రాహి ... [illegible] నిర్దయాతీవ బాధి
తః ౮. దేవి త్వం [illegible] త్వం స్వాహా త్వం స్వధా
త్వం హి ... [illegible] శరణ్యా శరణార్థినాం,
... [illegible] పరమాం దేవీం రూప
... [illegible] ౧౧. త్వం
... లోకానాం [illegible] వాహం విచరామి త్వం
... ౧౨. ... [illegible] ... దేహి మమా
... శరణాగతవత్సలే! [illegible] ... సంహారణాయ వై,
... [illegible] అన్యద్వరం వృణే దేవి
... [illegible] ... ౧౫. అతో
... [illegible] ... స్వయమేవాగమి
ష్యతి ౧౬. తేన మే సకలా బాధా నాశం యాంతి ప సంశయః, సదా దయా తేమయ్యేవ
వర్తతా మభివర్ధతాం ౧౭. అశ్రితానాం కల్పవల్లీ మాం త్యజేథా న సర్వథా, ప్రార్థయా
... భక్తానుగ్రహదాయినీ ౧౮. * దేవీ * తథాస్తు భో ... జని
ష్యతి ..., "... ప్రాప్తే ... భవిష్యతి" ౧౯. తదా
... జని ... దేవి ... ౨౦. తతో విష్ణుస్సముత్థాయ జఘానాసురపుంగవౌ, తస్మాద్ ... జాతా
... ౨౧. ఇతి సర్వం ... కథితం ... త్రకం, శ్రోతుమి
చ్ఛామి ... భగవత్కథాం ౨౨. * ఋషయః * త్వద్వాక్యా
... నిర్వృతాః ౨౩. కథాం ... హేమ
కూటనివాసినః, * క్షేత్రపాలః * వక్ష్యామి శ్రీవిరూపాక్షం వక్ష్యామి పరయా
ముదా ౨౪. క్షేత్రేఽస్మిన్ సంప్రకాశంతే నగాః పుణ్యతమాస్సు భాః, మతంగో మాల్య
వాంశ్చైవ ఋష్యమూకాభిధో గిరిః ౨౫. కిష్కింధాద్రిర్హేమకూటః పంచైతే పుణ్య
పర్వతాః, అత్ర ద్వారాణి చత్వారి పంచక్రోశాత్మకే పురే ౨౬. ఉపద్వారాణి చ
త్వారి ... నివసంతి సదా దేవాః ... ద్విజాః ౨౭
... కోటీనాం ... తుంగభద్రా ... చకాస్తి

కపి రూపాశ్చ
మతంగో మాల్యవాంశ్చైవ
ఋష్యమూకాభిధో గిరిః
హేమకూటకః
5

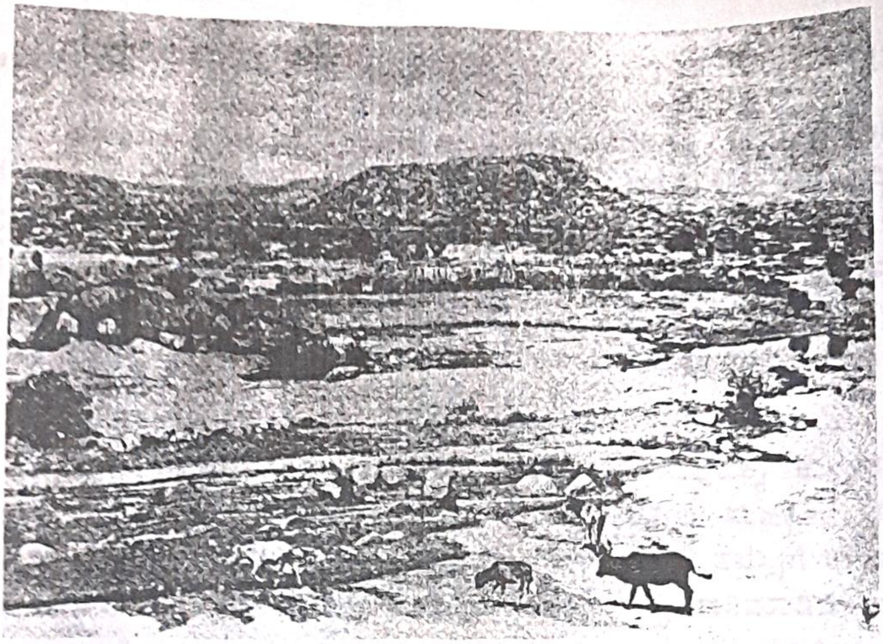

ಸೀತಾಸರೋವ, ಸುಗ್ರೀವ ಗವಿ (ಪುಟ–101)

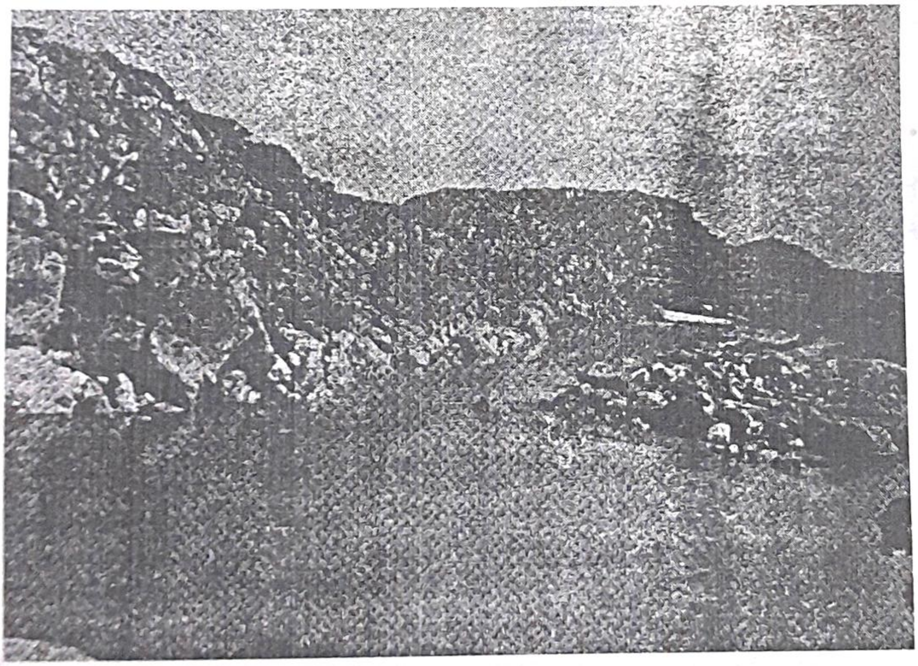

ಚಕ್ರತೀರ್ಥ, ಋಷ್ಯಮೂಕ (ಪುಟ–111)

ॐ
जय पंपा विरुपाक्ष

ಶ್ರೀ ವೇದವ್ಯಾಸ ಮಹರ್ಷಿ ಪ್ರಣೀತ

ಸ್ಕಾಂದಪುರಾಣದ ಭಾಗತ್ರಯಾತ್ಮಕವಾದ

ಪಂಪಾಮಾಹಾತ್ಮ್ಯೆ

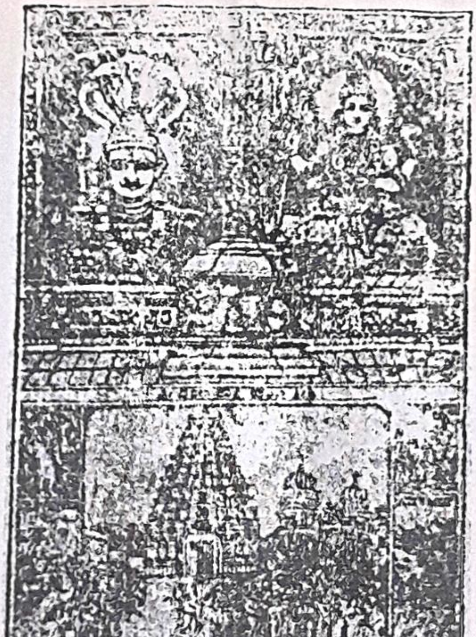

ಶ್ರೀ ಪಂಪಿ ಮಹಾಕ್ಷೇತ್ರವು

ವಿಜಯನಗರದ ಇತಿಹಾಸ ಮತ್ತು ಮಾರ್ಗದರ್ಶಕ
ವನ್ನೊಳಗೊಂಡ ಐತಿಹಾಸಿಕ ವಿಭಾಗ
ಹಾಗೂ **28** ಚಿತ್ರಗಳ ಸಹಿತ.

ಡಿಸೆಂಬರ್ 1963

శ్రీ స్కాంద పురాణాంతర్గగత హేమకూటఖండాత్మక
సప్తర్షి యాత్రా ప్రకాశక

శ్రీ పంపా మహాత్మ్యము

(అర్థ సహితము)

ఆంధ్రానువాదము : శ్రీమతి సుధా భాస్కరరావు

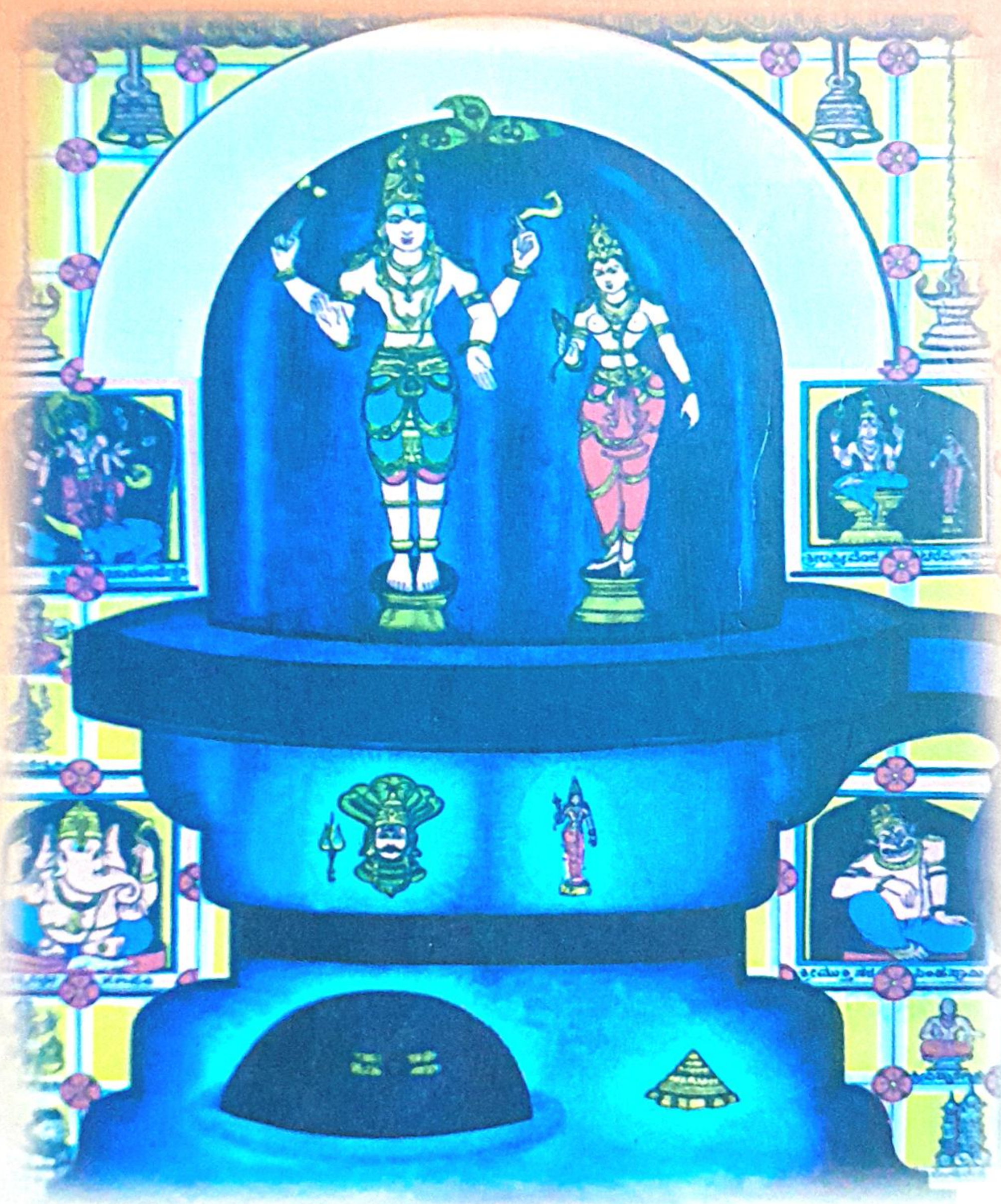

ప్రకాశకులు

శ్రీ హిరేహాళు గవియప్ప రంగనగౌడు

२ अध्याय   सप्तर्षि पम्पाक्षेत्र प्रवेश

स्कंध उवाचा   श्लोक सं : ६

तां दृष्ट्वा दिव्य तत्त्वज्ञां तुंग कल्लोल मालिनीम् |

आप्लावयन्त किष्किन्धा पर्वताग्र शीलोच्छ्रयात् ||

पुनाति सर्व क्षेत्रं हि दर्शनामभिषेचनात् |

पुनाति स्मरणा देव सर्वान् पम्पापुरी सदा || 14 ||

एष किष्किन्ध नामहि दृश्यते धरणी धरः || 22 ||

अस्यैव हृदयस्थायि हेमकूटो यमद्रिराट् || 23 ||

मध्ये किष्किन्ध शैलस्य महतोस्य महानैम् |

दृश्यते हेमकूटोयः परितः पञ्चयोजनः || 24 ||

अञ्जेनेश्चवेणुश्च   याष्टिको दुर्गकोहलः

एवमन्येष गान्धर्व वेदाध्यायार्थवेदिनः || 36 ||

14 अध्याय

आग्नेय नैऋत्य उपद्वार प्रशंसा

पुरा रामो दशग्रीवं जेतु कारस्सुर द्विषं |

सर्व क्षेत्रोत्तमे तत्र स्थित्वा युक्तस्तपस्य भूत् ||

विरूपाक्षं हृदि ध्यात्वा हेमकूटाधि दैवतम् |

तपसि स्थिर चित्तो भूद्राम स्सौमित्रिणा सह || 12

तपसा तस्य संतुष्ठो विरूपाक्षो महेश्वर: |

दशग्रीव जयेसिद्धिं ददौ तस्मै स्तुति प्रियः || 13

आगताश्च ममोपातं तत्वधोपाय मीप्स्वव: |

गुहायामत्र दुर्गायां किष्किन्धायां भविष्यति || 37

मध्यभाग श्री हरिश्चन्द्रोपाख्यान - 20 अध्याय

अशेष हेमकूटाख्यो गिरि: किष्किन्ध मध्यग: |

अत्रास्ते हि विरूपाक्ष: साम्भो विश्वाधिक शिशव : 16

राजापि रुधिराकीर्णां वराह पदी पद्दतिं |

अनु सृत्यज वाद्दूरं किष्किंधां पुनरभ्यगात् 77

66 अध्याय

आम्र कूटेश्वर महिमा सुत उवाच :

तत्र सप्तर्षय: प्राज्ञा: किष्किन्धां समुपागता:

आम्र कूटा ह्वय क्षेत्रं ददृशु: पुण्य वर्धनम् || 1

66 अध्याय

श्री रंगनाथ नामक शिव प्रादुर्भाव:

सूत उवाच :

अथ ते सप्त मुनय: किष्किन्धा नगरान्तिकम् |

संप्राप्य भक्तियोगेन पप्रच्छु: क्षेत्रनायकम् || 1

रचयामास किष्किन्धा पुरं देवपुरोपमम् |

राज्येभिषिच्य विधिवद्वालिनं बलशालिनं || 20 ||

जगाम विश्वकर्मापि स्वर्ग लोकं मुदान्वित:

किष्किन्धां पालयामास वाली बल समन्वितः || 21 ||

हनूमन्नल नीलादि कपि वर्यैमहात्मभि: |

सुग्रीवो युवराजो भूदग्रजस्य ममतेस्थित: || 22 ||

एवं वालिनि किष्किन्धा पाल्यमाने महाबले |

एक दाराक्ष सोभ्येत्य दुम्दुभिर्नाम दुर्मद: || 23 ||

वालिनो बलवेगं सदुम्दुभि: सोढुमक्षम: |

पालायमान: संत्रस्त: प्रविवेश गिरेर्गुहाम || 27 ||

अञ्जनाद्रि (अंजनाद्रि) प्रतीकाश: सर्वलोक भयंकर:

आजगाम गजो मार्गवशाद् रंगेश मन्दिरं || 40 ||

श्री मद्भारत वर्षस्य दक्षिणे भागे आस्थित:

तुंग भद्रा नदी तीरी विरुपाक्षाख्यया शिव: 76

अस्य वृत्तमुदारं तत्पम्पा माहात्म्य नामकं |

पुराण सारानुधृत्यं निर्मितं मुनिना पुरा || 77 ||

ब्रह्म उवाच -

भूतले हेमकूटाख्य गिररस्त्वमृतपदः

तदुत्तरेर्ध क्रोशान्ते विप्रकूट भिधो गिरिः || 28 ||

तत्तीरे सरः कंजषंड मंडित मिष्टदं |

तत्र स्नात्वा गिरेर्दिव्य गुहायां परमं तपः || 29|

गुहाया परमं तप्त मारेभे विजितेन्द्रिया |

सिद्धासना स्तुतिपरा नसाग्रस्तस्य लोचना ||

7 अध्याय

श्री पम्पा विरुपाक्षेश्वर विवाह

ततः पम्पा गुहायां सा सुस्थिर परमासने |

इतः परंच चक्षुर्भ्यां पुमां सं नावलोकये || 2 ||

तदुत्तरे गुहा रम्यां रहा योग्यं निरीक्षय सा |

मनोहि हेतु स्सर्वीषां इंद्रियाणां प्रवर्तने || 3||

गुहायां देव पूज्यायां विवेश परया मुदा |

निश्चला तप्त मारेभे शिवध्यान परायणा || 8||

34 पृष्ठ

क्षेत्रेस्मिन् संप्रकाशते नागाः पुण्यतमाश्शुभाः

मतंगो माल्यवांश्चैव ऋष्यमूका भिधो गिरिः || 25 ||

किष्किन्धाद्रिः हेमकूटः पंचैते पुण्य गोचरा :

तत्र द्वाराणि चत्वारि पंचक्रिशात्मके पुरे || 26 ||

इति तासां वचशृत्वामर्षिता नागकन्यका :

ददुरप्सरसां शापं कपयो भवते तिता : || 97 ||

इत्युक्त्वा शंकरेणाध कालवीक्षण तत्पराः

इति दीन वच शृत्वा तासा मीश स्तदाब्रवीत |

त्रेतायुगे दाशरधोर्जनिष्यत्य सुरांतकः || 103 ||

इत्युक्ताः शंकरेणाध कालवीक्षण तत्पराः ||

चक्रिरे स्सरो स्सोवासं किष्किन्धायां शिवार्चकाः || 105 ||

(पृष्ठ 313)

तरेतायुगे दाशरधिः लक्ष्मणेन समन्वितः

सीतया सह ताताज्ञावशदागत्य काननम् || 40 ||

सीतामदृष्ट्वा शोकार्तः कोशलेन्द्रो वनाद्वनं ||

मार्गमाणो जगामासौ किष्किन्धा नगरान्तिकम् || 42 ||

तेन तुष्ठा महादेव: प्रत्यक्षो भूत्सुखप्रद: ||

स्वयं रामो बभूवाथ भवानी जनकात्मजा || 86 ||

" (दक्षिण अयोध्या - पम्पाक्षेत्र किष्किन्धा स्वर्ण हम्पि) "

स्कन्दो लक्ष्मणरूपे भूद्भरतो भूद्गणाधिप: ||

वीरभद्रश्च शत्रुघ्न: अयोध्या सीन्माल्यवद्गिरि: || 87 ||

इयं नूनं अयोध्यासौ राम: सीता समन्वित: ||

भ्रातृभि: सहित: श्री मानासनेहि विराजते || 91 ||

कृतार्थोहमयोध्यायां सिंहासनगतं विभु: ||

सीतया सहितं राममपश्यं भ्रातृभिर्युतं || 95 ||

ರೂಪದಿಂದದ್ದಾರೆ ಕಾಮಧೇನ್ವಾದಿಗಳೇ ದ್ರುಮ (ದೊಡ್ಡ ದೊಡ್ಡ ಮರ)ಗಳು. ಋಷಿಗಳೇ ಕಪಿಗಳು. ಪ್ರಮಥಗಣಗಳೇ ಹುಲ್ಲು ಪೊದೆ ಬಳ್ಳಿ, ಜಲಚರಗಳು.* ಹೀಗೆ ದಕ್ಷಿಣಕಾಶೀ ಎನಿಸಿದ ಈ ಕ್ಷೇತ್ರ ಸರ್ವಪಾಪವಿನಾಶಕ. ಇದರಲ್ಲಿ ಒಂದು ದಿನ ವಾಸಮಾಡಿದರೂ ಸಕಲಪಾಪಗಳು ನಾಶವಾಗಿ ಶಂಭುವನ್ನು ಸೇರಲು ದಾರಿಯಾಗುತ್ತದೆ. ಇಂತು 7ನೇ ಅಧ್ಯಾಯ.

ಅಧ್ಯಾಯ 8 (i) ಪಂಪಾ ಪೂರ್ವವೃತ್ತಾಂತ

ವಿವಾಹಕಥೆ ಕೇಳಿದ ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳು ಆಕೆಯ ಪೂರ್ವವೃತ್ತಾಂತವನ್ನು ತಿಳಿಯಲಿಚ್ಛಿಸಿದರು. ಅದನ್ನು ಕ್ಷೇತ್ರಪಾಲ ಹೀಗೆ ವಿವರಿಸಿದನು—

ಪೂರ್ವದಲ್ಲಿ ಪ್ರಲಯಕಾಲದಲ್ಲಿ ವಿಷ್ಣು ವಟಪತ್ರದ ಮೇಲೆ ಮಲಗಿಕೊಂಡು ನಿದ್ರೆಮಾಡಿದನು. ಅವನ ಕರ್ಣಮಲದಿಂದ ಹುಟ್ಟಿದ ಗದಾಯುಧಧಾರಿಗಳಾದ ಮಧು-ಕೈಟಭರೆಂಬ ಇಬ್ಬರು ದೈತ್ಯವೀರರು ಬ್ರಹ್ಮನನ್ನು ಕೊಲ್ಲಲು ಉದ್ಯುಕ್ತರಾದರು. ಆಗ ಬ್ರಹ್ಮ ಯೋಗನಿದ್ರೆಯನ್ನು ಸ್ತುತಿಸಿ ವಿಷ್ಣುವನ್ನು ಎಬ್ಬಿಸುವಂತೆ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿ ಆಕೆ ತನ್ನ ಮಗಳಾಗಬೇಕೆಂದೂ ಕೇಳಿಕೊಂಡ. ಆ ದೇವಿ 'ಚಾಕ್ಷುಷಮನ್ವಂತರದಲ್ಲಿ ನಿನ್ನ ಮಗಳಾಗುತ್ತೇನೆ' ಎಂದು ವರಕೊಟ್ಟು ಅದೃಶ್ಯಳಾದಳು. ಅತ್ತಲಾಗಿ ವಿಷ್ಣು ನಿದ್ರೆಯಿಂದೆದ್ದು ಮಧು ಕೈಟಭರನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದ. ದೇವಿ ತಾನು ಕೊಟ್ಟಿದ್ದ ವರದಂತೆ ಬ್ರಹ್ಮನ ಮಾನಸ ಪುತ್ರಿಯಾಗಿ ಜನಿಸಿದಳು. ಅವಳೇ ಪಂಪಾ.

(ii) ಹರಮಿತ್ರನ ಕಥೆ

ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರ—ಪಂಚಕ್ರೋಶಾತ್ಮಕವಾದ ಈ ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ 1. ಮತಂಗ, 2. ಮಾಲ್ಯವಾನ್(ಅಥವಾ ಮಾಲ್ಯವಂತ), 3. ಋಷ್ಯಮೂಕ, 4. ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾದ್ರಿ ಮತ್ತು

---

*ಪುರಂದರದಾಸರು ರಚಿಸಿರುವ ತುಂಗಭದ್ರಾನದಿಯ ಸ್ತೋತ್ರದ ಕೆಲವಂಶವನ್ನು ಈ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಉದಹರಿಸಬಹುದು.

ತುಂಗೇ ಶುಭದೇ ಸುತರಂಗೆ !...
ಧರೆಗೆ ದಕ್ಷಿಣ ವಾರಣಾಸಿ ನೀನೆನಿಸಿದೆ ।
ಶಿಲೆಯೆಲ್ಲ ಶಿವಮಯವು
ಜಲವೆಲ್ಲ ಹರಿಮಯವು ।
ಮಳಲು ಮೃತ್ತಿಕೆಯೆಲ್ಲ ಮುನಿಮಯವು ।
ಬೆಳೆದಿದ್ದ ದರ್ಭೆಗಳು ಬ್ರಹ್ಮಮಯ ನೀನಿದ್ದ ।
ಸ್ಥಳದಿ ಜಡಜೀವ ಸರ್ವಂ ವಿಷ್ಣುಮಯವು ॥

ಇತ್ಯಾದಿ.

ಪ್ರಕಾಶಕ :

ಪಿ. ವಿಷ್ಣು ತೀರ್ಥ

ನವವೃಂದಾವನ, ಆನೆಗೊಂದಿ (ಗಂಗಾವತಿ ತಾ|| ರಾಯಚೂರು ಜಿಲ್ಲೆ)

ಪ್ರಥಮ ಸಂಸ್ಕರಣ 1000 ಪ್ರತಿ

Copyright Registered.

★

ಬೆಲೆ : ನಾಲ್ಕು ರೂಪಾಯಿ.

★

ಮುದ್ರಕರು :

1 ರಿಂದ 120 ಪುಟಗಳು—ಶ್ರೀರಾಮ ಪ್ರೆಸ್, ಬೆಂಗಳೂರು-4

121 ರಿಂದ 256 ಪುಟಗಳವರೆಗೆ ಶ್ರೀ ಸತ್ಯಾನಂದ ಪ್ರೆಸ್,

ಭಾಷ್ಯಂ ರೋಡ್, ಬೆಂಗಳೂರು-2.

107. (9) ಹಂಪೆಯ ಪೂರ್ವದ್ವಾರ ವರ್ಣನೆ

ವಾಸ್ತವವಾಗಿ ಹೇಮಕೂಟ ಅಸಾಧಾರಣವಾದ ವೈಭವವುಳ್ಳದ್ದು. ಇದು ಸ್ಥಾವರವಾದ ಕಲ್ಲುಗುಡ್ಡವಲ್ಲ, ಇದು ಶಂಭುವಿನ ಒಂದು ಸ್ವರೂಪವೇ ಸರಿ[1]. ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾದ್ರಿಯ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಪಂಚಯೋಜನ ವಿಸ್ತೀರ್ಣವುಳ್ಳ ಈ ಕ್ಷೇತ್ರಕ್ಕೆ[2] ನಾಲ್ಕು ಮಹಾದ್ವಾರಗಳೂ ನಾಲ್ಕು ಉಪದ್ವಾರಗಳೂ ಇವೆ.

ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು ಯೋಜನ ದೂರದಲ್ಲಿರುವ ಪೂರ್ವದ್ವಾರದಲ್ಲಿ ಕಿನ್ನರಸೇವಿತನಾದ ಕಿನ್ನರೇಶ ಇದ್ದಾನೆ. ಅವನು ತಪೋನಿಷ್ಠನಾಗಿದ್ದರೂ ಕಿನ್ನರಗಾನಾಸಕ್ತನಾಗಿದ್ದಾನೆ.

108. (10) ಕಿನ್ನರೇಶ

ಕಿನ್ನರರು ಈ ಕಿನ್ನರೇಶನ ಅನುಗ್ರಹದಿಂದಲೇ ಗಾನವಿದ್ಯಾನಿಪುಣರಾಗಿ ನಾನಾ ವಾದ್ಯಗಳನ್ನು ಬಾರಿಸುತ್ತ ಈ ದೇವನ ಧ್ಯಾನಮಾಡುತ್ತಿರುತ್ತಾರೆ. ನಾರದರೂ ಈ ಸ್ವಾಮಿಯ ಸೇವೆಯಿಂದಲೇ ಸಿದ್ಧರಾಗಿ ನಾದವಿದ್ಯಾನಿಪುಣರಾದರು. ಹಾಗೆಯೇ ತುಂಬುರಾದಿಗಳೂ ಇಲ್ಲೇ ಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆದರು. ಈ ದ್ವಾರಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಅನೇಕ ಆಖ್ಯಾನಗಳಿವೆ ; ಅವನ್ನೆಲ್ಲ ಹೇಳುವುದು ಅಸಾಧ್ಯವಾದ್ದರಿಂದ ಸಂಕ್ಷೇಪವಾಗಿ ಹೇಳಿದ್ದೇನೆ.

[ಸೂಚನೆ—ಕಿನ್ನರೇಶನ ಕಥೆ ಮತ್ತು ಪೂರ್ವದ್ವಾರದ ವರ್ಣನೆ ಹಿಂದೆ ೨೨-೨೬ನೇ ಪುಟಗಳಲ್ಲಿ ಬಂದಿದೆ.]

---

1 ಪೂರ್ವಭಾಗದ 7ನೇ ಅಧ್ಯಾಯದ ಕಡೇ ಭಾಗ ನೋಡಿ.

2 ಹಂಪೆಯು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ಹತ್ತು ಭಾಸ್ಕರ ಕ್ಷೇತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದು. ಆ ಭಾಸ್ಕರ ಕ್ಷೇತ್ರಗಳು ಯಾವುವೆಂದರೆ—1. ಕಾಶೀ, 2. ಪುಷ್ಪಗಿರಿ, 3. ಕಂಚಿ, 4. ನಿವೃತ್ತ, 5. ಅಲಂಪುರೀ, 6. ಶ್ರೀಶೈಲ, 7. ಹಂಪೆ, 8. ರಾಮೇಶ್ವರ, 9. ಕೇದಾರ, 10. ಗೋಕರ್ಣ.

ಅಲ್ಲದೆ ಹಂಪೆಗೆ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ, ವಿದ್ಯಾನಗರ, ವಿಜಯನಗರ, ವಿದ್ಯಾವಿಜಯನಗರ ಎಂಬ ಹೆಸರುಗಳೂ ಉಂಟು. ವಾದಿರಾಜ ಸ್ವಾಮಿಗಳು ಹಂಪೆಯ ಮಹಿಮೆಯನ್ನು ವರ್ಣಿಸುತ್ತಾ

ಪಂಪಾ ಸಂಪತ್ಕರೀ ಸೇಯಂ ಕಿಂ ಪಾಪಂ ನ ಹರೇನ್ನೃಣಾಮ್ ।
ಯೋಽಧೋಮುಖೀಕರೋತ್ಯೇ-(ನೋ ನಾಮೋ) ತನ್ನಾಮೋಚ್ಚಾರಣಮಾತ್ರತಃ ॥

ಎಂದು ಹೇಳಿದ್ದಾರೆ. ಎಂದರೆ ಪಂಪಾ ಎಂಬ ಹೆಸರು ಹೇಳೋಣ ಮಾತ್ರ ಪಾಪಗಳು ತಲೆಕೆಳಗಾಗುತ್ತವೆ, (ಪಾಪಂ ಎಂಬ ಅಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಹಿಂದೆ ಮುಂದೆ ಮಾಡಿದರೆ ಪಂಪಾ ಎಂದಾಗುತ್ತದೆ. ಗಮನಿಸಿ.)

ఏడుకోట్ల తీర్థములను మహిమను తెలిపెదను. ఇది పాప నాశకము, పవిత్రమూ అయినది. దీనిని దుర్బుద్ధి గలవారికి తెలుపరాదు.

దుర్వినీతాయ మూఢాయ గురుద్రోహరతాయ చ ।
అభక్తాయ, కుశీలాయ శివనింద పరాయచ ॥ 65

దుర్వినీతుడికి మూఢునికి, గురుద్రోహము చేయువానికి, భక్తుడు కానివాడికి, దుశ్శీలునకు మరియు శివనింద యందాసక్తుడై వాడికి,

నదేయం సర్వథా దేవి గోపనీయం ప్రయత్నతః ।
సచ్ఛాత్రాయ సుశీలాయ శైవానుష్ఠాన శీలినే ॥ 66

దేవీ నిశ్చయముగా తెలుపగూడదు. ప్రయత్నపూర్వకముగా ఈ రహస్యమును రక్షించవలెను. కేవలం సచ్ఛిష్యునికి, సుశీలునికి, శైవానుష్ఠానశీలునికి మాత్రమే (అనుగ్రహింప వలెను.)

శాన్తాయ భక్తియుక్తాయ సన్మార్గ నిరతాయ చ ।
మద్భక్తాయ మహాయోగ నిరతాయ మదాత్మనే ॥ 67

శాంతశీలునికి, భక్తిగలవాడికి, సన్మార్గమున నడుచు వాడికి, నా భక్తునికి, నాయందే మనస్సు గల వాడికి, మహాయోగమునందు నిరతుడైన వాడికి,

ఆహోరాయ భక్త్యాదాతవ్యం మహాత్మ్యం మమ పార్వతి ।
ఇత్యుక్త్వా పార్వతీం ప్రాహ ప్రత్యక్షరం మనోహరాం ॥ 68

పార్వతీ నా మహిమాతిశయ రహస్యమును భక్తితో స్వీకరించు వాడికి, ఇవ్వవచ్చును. ఇలా చెప్పిన మహేశ్వరుడు పార్వతిని సంబోధించి ఒక్కొక్క అక్షరమునందూ మనోహర మగు రహస్యమైన అంశముగల కథను చెప్పనుపక్రమించెను.

సంహితాం శాంకరీం దివ్యా కలి కల్మషనాశనీం ।
తాం జగ్రాహ తదా సాధ్వీ పార్వతీ భక్తినమ్రధీః ॥ 69

దివ్యమూ కలిదోష నివారకమూ, అయిన శంకర సంబంధ సంహితను భక్తి, నమ్రత గల సాధ్వీ, దేవిపార్వతి గ్రహించెను.

స్కంద కుమారమాహూ యసాది సంప్రోక్తవతభూత్ ।
సనత్కుమార ఋషయే స్కందః ప్రాదాచ్ఛివాజ్ఞయా ॥ 70

సుతుడైన స్కంద దేవునికి తెలిపెను. స్కందుడు శివాజ్ఞవలె సవత్కుమార ఋషికి ప్రసాదించెను.

మహ్యాం ప్రాయ ఋషి స్సాక్షాత్పంపా మహత్మ్య మిష్టదం ।
తత్తే కించిత్ప్రక్ష్యామి శ్రుతం యథార్థముత్తమం ॥ 71

ఇష్టప్రదమైన ఈ పంపా మహత్మ్యమును సాక్షాత్ సనత్కుమార ఋషి నాకు తెలిపెను. యథార్థముగా నాచే ఏమి వినడమైనదో అలాంటి ఉత్తమ విచారమును నీకు నేను తెలిపెదను.

ఇత్యుక్త్వా నారదాయాద్బ్రహ్మా శాంకర సంహితాం ।
నారదో వ్యాసమునయే పురాణమిదమబ్రవీత్ ॥ 72

ఈ విధముగా బ్రహ్మాదు శాంకర సంహితను నారదుడికి తెలిపెను. తర్వాత నారదుడు ఈ పురాణమును వ్యాసమునికి వివరించెను.

వ్యాసానుగ్రహతశ్చాహం జ్ఞాతవాంస్తన్ముఖాత్తథా ।
తత్ప్రవక్షామి యుష్మాకం యథామతి మహర్షయః ॥ 73

మహర్షులారా! వ్యాసముని అనుగ్రహ ఫలముగా దానిని నేను అతని ముఖతః విన్నాను. యథామతిగా దానిని మీకు తెలిపెదను.

రహస్యానాం రహస్యం తద్గోపనీయం ప్రయత్నతః ।
శివభక్తాయ శాన్తాయ ధీమతేచ ముముక్షవే ॥ 74

రహస్యములందు అత్యంత రహస్యము. అందుచే ప్రయత్న పూర్వకముగా దానిని గోప్యముగా రక్షించవలెను. శివభక్తునికి శాంతస్వభావుడికి, బుద్ధిమంతుడికి మరియు మోక్షార్థికి,

వక్తవ్యమిదమన్యస్మై న కదా కదాచిత్తుత్సుఖ ప్రదం ।
దుఃఖాంబుధౌ నిమజ్జంతం లోకమాలోక్య శంకరః ॥ 75

దీనిని బోధించవలెను. సుఖప్రదమగు ఈ రహస్యము అన్యులకు సూచింపరాదు. దుఃఖసాగరమున మునిగియున్న లోకమును అవలోకించి శంకరుడు.

శ్రీమద్భారత వర్షస్య దక్షిణే భాగే అస్థితః ।
తుంగభద్రానదీ తీరే విరూపాక్షాఖ్యయా శివః ॥ 76

శ్రీ భారతదేశపు దక్షిణ భాగమునందు గల తుంగభద్రానదీ తీరమున శివుడు విరూపాక్ష అను పేరుతో నెలగొని యున్నాడు.

అస్యవృత్తముదారం తత్పంపామహత్మ్య నామకం
పురాణ సారానుద్ధృత్యం నిర్మితం మునినా పురా ॥ 77

ఈతని ఉదార చరితమును పంపామహత్మ్య మను పేరు గల పురాణ సారమును తీసుకొని, పూర్వమున మునితో ఈ గ్రంథము రచింపబడినది.

శ్రోతవ్యం పఠనీయం చ శర్మదం సర్వదేహినాం ।
అస్య శ్రవణ మాత్రేణ జనాయాస్యంతి సద్గతిం ॥ 78

పంపా ఉవాచ - పంపా పలికెను

ఇత్యుక్త పితరం ప్రాహ పంపా మధురయా గిరా ।
కుత్రస్థితో మహాదేవః పరస్సర్వ గుణాకరః ॥ 26

ఇలాచెప్పిన తండ్రికి మధురమైన మాటలతో పంపా అడిగెను. సకల గుణములకూ ఆకరుడైన ఆ మహాదేవుడు ఎక్కడున్నాడు?

విధినా కేన సుప్రీతో భవతీహ మహేశ్వరః ।
తదాప్రాహాత్మభూ సమ్యగాలోచ్య తనయాం శుభాం ॥ 27

ఏ విధి విధానముచే మహేశ్వరుడు సుప్రీతుడగును అని ప్రశ్నింపగ. బ్రహ్మదు సావధానముగా ఆలోచించి శుభాంగి యగు తన పుత్రికతో,

బ్రహ్మా ఉవాచ - బ్రహ్మదు తెలిపెను.

భూతలే హేమకూటాఖ్య గిరరస్త్యమృతపదః ।
తదుత్తరేర్ధ క్రోశాంతే విప్రకూటభిధో గిరిః ॥ 28

భువిపైన అమృతప్రదమైన హేమకూట పర్వతము గలదు. దానికి ఉత్తరమున అర్ధక్రోశ దూరమున విప్రకూటమను గిరి గలదు.

తత్తీరే సరః కంజషండ మండితమిష్టదం ।
తత్రస్నాత్వాగిరేర్దివ్య గుహాయం పరమం తపః ॥ 29

దాని తీరమున సరోవర మొకటి కలదు. సరోవరము తామర పూల సమూహాలతో శోభాయమానమూ, ఇష్టదాయకము అయి యున్నది. అచట స్నానము చేసి ఆ గిరియందలి దివ్యగుహ యందు పరమ తపమును చేయుము.

కురుత్వం శంభు సత్పాదధ్యానేనాహర్నిశం సుతే ।
తేన తుష్టో మహేశస్తు ప్రత్యక్షో భవతి ధ్రువం ॥ 30

పుత్రికా! నీవు పగలు రాత్రి శంభువు యొక్క సచ్చరణము లను ధ్యానించుము. అందువలన మహేశ్వరుడు సంతుష్టుడై శీఘ్రముగా, నిశ్చయముగా ప్రత్యక్షుడగును.

ఇతి పిత్రా సమాదిష్టా పంపాశ్రీ విప్రకూటకం ।
గత్వా సరసి సుస్నాతా ధృత వస్త్రాసకంచుకా ॥ 31

ఇలా తండ్రితో ఆదేశమును పొంది పంపాశ్రీ విప్రకూటము నకు వెడలి సరస్సుయందు సుస్నాతురాలై కంచుకముతో వస్త్రధారణ చేసెను.

గుహాయాం పరమం తప్తుమారేభే విజితేంద్రియా ।
సిద్ధాసనా స్తుతిపరా నాసాగ్రన్యస్తలోచనా ॥ 32

ఇంద్రియ నిగ్రహురాలై పరమోచ్చ తపమును ఆరంభించెను. సిద్ధాసనమందు కూర్చొని ఈశ్వరుని స్తుతించుచూ నాసాగ్రమున తన దృష్టిని కేంద్రీకరించెను.

హృత్కర్ణికాంతరే శంభుం సంస్థాప్యన్మన్యవస్థయా ।
రేచకైః పూరకైః కుంభైర్వాయు మాపూర్య యత్నతః ॥ 33

మనస్సు యందు శంభు రూపమును కర్ణములందు నామమును స్థిత గొలిపి, రేచక, పూరక, కుంభకముల ద్వార వాయువును ప్రయత్న పూర్వకముగా నింపుకొని

మనోదృష్టి శరీరాణి హ్యే కత్ర స్థాపితా పరే ।
ఫలాహార క్వచిత్కాలే క్వచిత్పర్ణాశహ్య భూత్ ॥ 34

మనస్సు, దృష్టి మరియు శరీరమును ఒకచోట ఏకాగ్రతతో నిలిపి, కొంతకాలము ఫలములను స్వీకరించి మరికొద్ది కాలము కేవలం ఆకులను సేవించు చుండెను.

వాయుభక్షా నిరాలంబ శివధ్యానైక నిశ్చలా ।
ఇత్యేవం శతవర్షాణి వ్యతీతాని ద్విజోత్తమాః ॥ 35

బ్రాహ్మణోత్తములారా! ఆపైన కేవలం గాలిని సేవించుచూ తర్వాత దేనినీ స్వీకరించక, నిరాలంభముగా కేవలం శివ ధ్యానము నందు నిశ్చల చిత్తముతో తపమున వందేళ్లు గడిపినది.

తస్యా ఉపరి వల్మికోజాతః కంటక సంయుతః ।
తస్యాస్తపోజాత తేజో బ్రహ్మస్థానాద్వినిర్గతం ॥ 36

ఆమెపై పుట్ట పెరిగి ముళ్లచెట్లతో ఆవృతమై యుండెను. ఆమె తపముచే ఉదయించిన తేజస్సు ఆమె బ్రహ్మ రంధ్రము నుండి బయటికి వెడలుచుండెను.

వ్యాప్తం త్రివిష్టపం దేవాస్తేన కాతరాం గతాః ।
సేంద్రావిస్మయ చిత్తాశ్వ గురుమామంత్ర్య యత్నతః ॥ 37

ఆ తపోతేజము స్వర్గమును ఆవరించెను. ఆ దేవతలు కాతుర గొన్న. ఇంద్రాది దేవతలు ఆశ్చర్యచకితులై ప్రయత్న పూర్వకముగా దేవగురు బృహస్పతిని ఆమంత్రించిరి.

దేవాః ఊచుః - దేవతలు పలికిరి

ప్రోచుః ప్రాంజలస్సర్వే తేజః కారణమద్భుతం ।
తపోభిర్బాధతేస్మాన్వైస్స్వర్గస్థానేపి సద్గురో ॥ 38

దేవతలందరూ అద్భుతమగు ఆ తేజస్సును గూర్చి తమ ఆచార్యునికి వివరించిరి. సద్గురువరా! ఆ తపోజ్వాల స్వర్గము నందు గల మనలను బాధించుచున్నది.

ఏడవ అధ్యాయము
శ్రీపంపా విరూపాక్షేశ్వరుల వివాహము

ఋషయ ఊచుః - ఋషులు ప్రశ్నించిరి.

తతః కిమకరోత్పంపా విప్రకూటే మహనగే ।
తస్యాశ్చరిత్రమతులం శుభద వక్తుమర్హసి ॥ 1

ఆ తర్వాత. విప్రకూటమను ఆ మహా పర్వతమున పంపా ఏమి చేసెను? అసాధారణమైన, శుభదాయకమూ అయిన ఆమె చరితమును చెప్పుటకు నీవే సమర్థుడివి.

క్షేత్రపాల ఉవాచ - క్షేత్రపాలుడు తెలిపెను.

తతః పంపా గుహాయాం సా సుస్థిర పరమాసనే ।
ఇతః పరంచ చక్షుర్భ్యాం పుమాం సం నావలోకయే ॥ 2

అపుడు పంపా గుహయందు సుస్థిరముగా పరమాసనమున కూర్చుని, ఇకముందు ఈ కన్నులతో పర పురుషుని చూడను,

అత్ర క్రూరాస్సమా యాంతి తపోభంగకరాస్సదా ।
తేన మే విఫలా జాతాః క్రియాస్సర్వాస్సరస్తటే ॥ 3

ఇచట తపోభంగము చేయుటకై సదాక్రూరులు వచ్చు చుందురు. అందుచే ఈ సరసితటమున ఇంతకాలము చేసిన నా తపము విఫలమయ్యెను.

త్యక్త్వేదం పరమం గుహ్య స్థానమన్యత్సమాశ్రయే ।
ఇత్యాలోచ్యోత్తరే తీరే కాసారం పాపనాశకం ॥ 4

ఈ స్థానమును త్యజించి పరమ రహస్యమైన వేరొక స్థానము ఆశ్రయించెదను అని ఆలోచించి ఉత్తర తీరమున గల పాపనాశక కాసారమునకు వెడలెను.

తదుత్తరే గుహాం రమ్యాం రహో యోగ్యాం నిరీక్ష్యసా ।
మనో హి హేతు స్సర్వేషామింద్రియాణాం ప్రవర్తనే ॥ 5

ఆ ఉత్తర దిశ యందు గల సుందరమూ యోగ్యమూ అయిన గుహను చూసిన ఆమె! అన్ని ఇంద్రియ వికారములకు మనస్సే కారణమని నిశ్చయించు కొనెను.

మనస్సమాధినావస్మిన్ స్నాత్వాతప్తుం సమారభే ।
ఇదం మనోహరం పుణ్యం మనుద్వేగకరం మమ ॥ 6

సరోవరమున స్నానము చేసి మనస్సును స్థిరగొలిపి, తపమును ఆరంభించెను. ఈ స్థానము మనోహరము పుణ్య ప్రదము అయియున్నది. నాయందు ఉద్వేగ వికారములు కలుగకున్నవి.

యోగ్యం తీర్థంభవత్యేవేవం నిశ్చిత్య సత్వరం ।
మానసే సరసి స్నాత్వా పంపానిశ్చల మానసా ॥ 7

ఇది యోగ్యమైన తీర్థమని మనసున ఆలోచించి వెంటనే సరస్సు నందు స్నానమాచరించిన పంపా నిశ్చల మానసయై,

గుహాయాం దేవపూజ్యాయాం వివేశ పరయా ముదా ।
నిశ్చలా తప్త మారేభే శివధ్యాన పరాయణా ॥ 8

అత్యంత సంతోషమున దేవపూజ చేయ గుహలో ప్రవేశించెను. దృఢ మనస్సుతో శివధ్యాన పరాయణయైన పంపా తపస్సును మరల ఆరంభించెను.

త్రికాలార్చనయా సమ్యక్సమాధిపరనిష్ఠయా ।
సిద్ధస్వస్తిక గోపద్మ వరాదీన్పరికల్ప్యచ ॥ 9

త్రికాలముల యందు శివార్చన చేయుచూ సమాధి యందు నిష్ఠగలదై, సిద్ధ, స్వస్తిక, గోపద్మ మొదలగు ఉత్తమ చిహ్నాలను పరికల్పన చేయుచూ.

శివనామాని సర్వాణి స్వాంగేన్యస్య సుముద్రయా ।
భస్మ రేఖాంకిత లసత్ఫాలస్థల విరాజితా ॥ 10

శివనామములన్నిటిని తన శరీరమున ఉత్తమ ముద్రల ద్వారా నిలిపి, భస్మరేఖలు లలాటమున విరాజిల్లు చుండగ

రుద్రాక్షాభరణైర్యుక్తా మౌనమాలంబ్య యత్నతః ।
మనోవాక్కాయజాన్ దోషాన్ సంహృత్య పరమేశ్వరి ॥ 11

ఆ పరమేశ్వరి రుద్రాక్షాభరణములతో అలంకృతురాలై, ప్రయత్నపూర్వకముగా మనో, వాక్, కాయములచే కలిగిన దోషములను సంహరించి.

నిర్గుణాష్టాంగ యోగేన సమారాధయదీశ్వరం ।
తతస్సంపూజయామాస షడ్లింగాని యథాక్రమం ॥ 12

...త్యగోత్రోద్భవయైన కన్య పంపను అక్షత ...స్వయముగా వివాహము చేసి ఇచ్చెను.

...పౌత్రాయ ధీమతే ।
... విరూపాక్షాభిధాయచ ॥ 40

సదాశివుని ముది మనమడు, శ్రీరుద్రుని మనముడు, మహేశ్వరుని సుతుడూ, ధీమంతుడైన విరూపాక్ష యను వరునికి పంపను వివాహము చేసి ఇచ్చెను.

హేమ కూటాద్రి గేహాయ సద్యోజాత సుగోత్రిణే ।
తదా మంగళసూత్రం శ్రీశంకరః కన్యకా గళే ॥ 41

హేమకూటాద్రియందు నివసించువాడు. సద్యోజాత గోత్రజునికి, సుతను నివ్వగ, శ్రీశంకరుడు కన్యకంఠమునకు మంగళసూత్రమును,

బబంధ మహాదాశీర్భిస్సర్వ మంగళ దాయకం ।
జగుర్గంధర్వపతయోన నృతుశ్చప్సరోగణాః ॥ 42

అందరి మహాశీర్వాదముతో మంగళదాయకమైన మాంగల్యమును కట్టెను. గంధర్వుల యజమాని చెప్పగ అప్సరల సమూహము నర్తించెను.

గీతావాదిత్ర భేర్యాదీన్ వాదయంతం పరస్పరం ।
మహోత్సవం తదాచక్రుర్భోజనాద్యైరనే కదా ॥ 43

గీతములు పాడువారు, భేరి మొదలగు వాద్యములను మ్రోగించుచూ, పరస్పరులు మహోత్సవమందు పాల్గొనుచూ, బహువిధమగు భూరి భోజనాదులను భుజించిరి.

వస్త్రాలంకార భూషాద్యైరన్యోన్యం సమలంకృతాః ।
వివాహ శుభదం కృత్వా విరూపాక్ష వరాజ్ఞయా ॥ 44

వస్త్రాలంకార భూషణాదులచే చక్కగా అలంకరించుకొని వివాహమును శుభదాయకముగా చేయుటయే గాక, విరూపాక్షుని ఆజ్ఞవలె,

స్వం స్వంధామ యయుస్సర్వేదేవాద్యా ఋషయస్తదా ।
పంపయా శ్రీవిరూపాక్షో రేమే తత్ర ముదాన్వితః ॥ 45

దేవతలు మరియు ఋషులందరూ తమ తమ నివాసము లకు వెడలిరి. అచట శ్రీవిరూపాక్షుడు పంపాదేవితో సంతోష ముగా రమించెను.

భక్త్యాప్రాహ పతిం సాధ్వీ వరం రహసి సంస్థితా ।
త్వాము ద్దిశ్య బహూనబ్దాన్ తపస్సిద్ధ్యర్థమగ్రతః ॥ 46

సాధ్వియైన పంపా తనపతితో రహస్యము నందు భక్తితో ఇలా వరము అడిగెను. నిను గూర్చి చాలా సంవత్సరముల తపస్సిద్ధి కోసమే.

నిరాహారా దివారాత్రం స్థితాత్వత్ప్రాప్తయే శివ ।
తస్మాన్మమాభిధాం దేహి క్షేత్రస్యాస్య మహేశ్వర ॥ 47

నిరాహారాముతో రాత్రింపగళ్లు నిన్ను పొందుట కనియే శంభో, తపము చేసితిని. అందుచే మహేశ్వరుడా ఈ క్షేత్రమునకు నా పేరును ప్రసాదించుము.

యాచమానాం శివః పంపాం సంతోష్యచ ముహూర్ముహుః ।
దత్తవాన్ వరమత్యంతం భార్యాయై ప్రీతిముద్వహన్ ॥ 48

అని వేడిన పంపాంబికను శివుడు మరల మరల సంతోష పరచి అత్యంత ప్రేమతో భార్యకు అత్యుత్తమ వరమును ప్రసాదించెను.

తదాదితశ్శుభంక్షేత్రం పంపాభిధమ భూతలం ।
యస్మిన్ సరసి సా పంపాస్నాతాభక్తి సమన్వితా ॥ 49

అపుడు ఆ క్షణముచే శుభప్రదమగు ఆ క్షేత్రము "పంపా క్షేత్ర"మని పేరుపొందెను. ఏ సరస్సు నందు పంపాంబిక భక్తితో స్నానము చేసెనో,

పంపాసర ఇతి ఖ్యాతిరభూత్తస్య మహర్షయః ।
క్షేత్రేస్మిన్ సకలాదేవా నివసంతి సదామలా ॥ 50

మహర్షులారా! ఆ సరోవరము పంపా సరోవరమనే ఖ్యాతి నొందెను. ఈ క్షేత్రమున సర్వదా పరిశుద్ధులైన దేవతలు నివసించెదరు.

వృక్షరూపాయక్ష నాగాః కిన్నరాః కోకిలాదయః ।
గంధర్వామృగ సంఘాశ్చ బ్రహ్మాద్యాస్తీర్థ రూపిణః ॥ 51

యక్షలు, నాగులు, వృక్షరూపమును దాల్చిన, కిన్నరులు, కోయిలాది పక్షులైరి, గంధర్వులు హరిణ సమూహమైన (జింకలు) బ్రహ్మదులు తీర్థరూపమున వెలిసిరి.

సిద్ధాః పాషాణ రూపాశ్చ, కామధేన్వాదయో ద్రుమాః ।
ఋషయః కపిరూపశ్చా తృణగుల్మ లతాదయః ॥ 52

సిద్ధులు, పాషాణ రూపము దాల్చిరి. కామధేను మొదలగు నవి కల్పవృక్షములైనవి. అటులనే ఋషులు కోతిరూపమును గడ్డి, పొదలు, లతలై విరూపాక్షుని సన్నిధిన నిలిచిరి.

పాలనే మారణే సృష్టౌ కారణం త్వమేవహి ।
వరాన్ దేహి మనోభీష్టాన్ శరణాగత వత్సలే ॥ 13

పాలన, మారణ మరియు సృష్టికి నీవే కారణురాలివి. శరణాగత వత్సలవైన హే దేవీ! నా మనోభీష్టములను దీర్చు వరములను ప్రసాదింపుము.

లోకయస్వ మహావిష్ణుం స్థిత్వా సంహారణ వై ।
కృత్వా సుఖం త్రిలోకాన్యాం పరిపాలయమాం శివే ॥ 14

శివానీ! స్థితి సంహారార్థమై మహావిష్ణువును మేల్కొలుపుము. త్రిలోకములకు సుఖములను కలిగించి, నన్ను పరిపాలించుము.

అన్యద్వరం వృణేదేవి. త్వద్దర్శనం రోమహర్షణం ।
శృణుష్వ దర్శనాదేవ సంతోష స్సముజాయత ॥ 15

దేవీ! నా ప్రార్థనము నందు కలిగిన మరొక వరమును వినుము. నీ దర్శన మాత్రమున సంతోషముతో రోమాంచనము కలిగినది.

అతో మే పుత్రికాభూత్వా పూతం కురు పరార్థినం ।
శంకరస్త్వా శుభవస్య స్వయమేవాగమిష్యతి ॥ 16

అందుచే నా పుత్రికగా జన్మించి ఈ పరార్థిని పవిత్రుడిగా చేయుము. నీ జనన వలన శంకరుడు స్వయముగా వచ్చును.

తేన మే సకలబాధా నాశం యాంతి న సంశయః ।
సదా దయా తే మయ్యేవ వర్తతామభివర్తతాం ॥ 17

దీనే నా అన్ని అన్ని ఆటంకములు నాశమగును అనుటలో సందేహము లేదు. నా యందు నీ దయా ఎప్పుడూ వర్ధించు చుండని.

ఆశ్రితానాం కల్పవల్లీ మాం త్యజేథా న సర్వథా ।
ప్రార్థయంతం జనం ప్రాహ భక్తానుగ్రహ దాయినీ ॥ 18

ఆశ్రితులకు కల్పవల్లివి! నన్నెప్పుడూ దూరము చేయకుము. ఇలా ఏకవిధముగా ప్రార్థించుచున్న బ్రహ్మనికి భక్తానుగ్రహ దాయినియైన.

దేవీ ఉవాచ - దేవీ ఇలా పలికెను

తథాస్తుతే [illegible] జనిష్యే తవసూతకే ।
[illegible] విరూపాక్షో భవిష్యతి ॥ 19

[illegible] నీ అభీష్టము వలె నీ గర్భమున జనించెదను. [illegible] నన్ను పొందుటకొరకు విరూపాక్షుడే వచ్చును.

తదాహం తవసద్గర్భే జనిష్యే చతురానన ।
ఇతిపత్వా వరంతస్మై దేవీ చాంతర్దధే ద్విజాః ॥ 20

చతుర్ముఖా! అపుడు నీ గర్భమున జనించెదనుయను వరము నిచ్చి విప్రులారా! దేవి అంతర్ధానమయ్యెను.

తతో విష్ణుం సముత్థాయ జఘానాసురపుంగవౌ ।
తస్మా బ్రహ్మోదరే జాతా దేవీ దేవైస్తుతా సతీ ॥ 21

ఆపైన విష్ణువు యోగనిద్రతో మేల్కొని అసురద్వయులైన మధుకైటభులను సంహరించెను. అందుచే దేవతలచే స్తుతింప బడి. "సతీ"గా యున్న ఆమె బ్రహ్మోదరమున జనించెను.

ఇతిసర్వం మయాదివ్యం కథితం సచ్చరిత్రకం ।
శ్రోతుమిచ్ఛత కించాన్యద్వక్ష్యామి భగవత్కథాం ॥ 22

ఇలా దివ్యమూ, సచ్చరితమూ అయిన కథానకము నాచే చెప్పబడెను. వేరేదైన భగవత్కథా వినుటకు ఇష్టమున్న వేరొక కథను చెప్పెదను.

ఋషయః ఊచు - ఋషులు చెప్పిరి

త్వద్వాక్యామృత నిష్యందైర్వయమానంద నిర్భరాః ॥ 23

నీ మాటల అమృతధారచే మనం అతులిత ఆనందమును పొందితిమి.

కథాంబ్రూహి మహేశస్య హేమకూట వాసినః ।

క్షేత్రపాల ఉవాచ

నత్వాదౌ శ్రీవిరూపాక్షం వక్ష్యామి పరమాముదా ॥ 24

హేమకూటనివాసియైన మహేశుని కథను తెలుపుము. క్షేత్రపాలుడు పలికెను. మొదట శ్రీవిరూపాక్షునికి నమస్కరించి పరమ సంతోషమున తెలిపెదను.

క్షేత్రేస్మిన్ సంప్రకాశంతే నగాః పుణ్యతమాశ్శుభాః ।
మతంగో మాల్యవాంశ్చైవ ఋష్యమూకాభిధో గిరిః ॥ 25

ఈ క్షేత్రము నందు అత్యంత పుణ్యకరమగు శుభదాయక మైన మతంగ, మాల్యవాన్, ఋష్యమూకాది పర్వతములు శోభించుచున్నవి.

కిష్కింధాద్రిర్హేమకూటః పంచైతే పుణ్యగోచరాః ।
అత్ర ద్వారాణి చత్వారి పంచక్రోశాత్మకే పురే ॥ 26

కిష్కింధ, హేమకూటయును ఐదు పుణ్యగోచర పర్వత ములు ఈ పంచక్రోశాత్మక పురమునకు నాల్గుద్వారములు గలవు.

సూర్యం సమ్ప్రార్థయామాస సతీలోకహితార్థినీ ।
తతస్సూర్యోదయశ్చాభూన్మాధవ్యా వాక్యతః క్షణాత్ ॥ 92

లోకహితకారిణియైన ఆ సతి సూర్యుని ప్రార్థించెను. మాధవి మాటవలన సూర్యుడు ఆ క్షణమునే ఉదయించెను.

ఉభయోర్వరదానాని కృత్వా విష్ణ్వాదయ స్సురాః ।
క్షేత్ర యాత్రాం తథా కృత్వా స్వం స్వంధామ యయుర్ముదా ॥ 93

విష్ణువే మొదలగు దేవతలు ఇద్దరికీ (మాధవీ - మాండవ్య) వరము నిచ్చి అనంతరము క్షేత్రయాత్రను ముగించి తమ తమ స్థానములకు సంతుష్టమానసులై వెడలిరి.

మాధవీ పతిమాలింగ్య యయౌ గేహం శివాజ్ఞయా ।
ఇహలోకేఖిలాన్ భుక్త్వాభోగాన్ దేవైస్సుదుర్లభాన్ ॥ 94

మాధవీ పతిని ఆలింగించి ఈశ్వరాజ్ఞచే ఇంటికి వెడలెను. దేవతలచేతనూ పొందనసాధ్యమగు సర్వసుఖములను ఈ లోకమున అనుభవించిరి.

పత్యాసహ యయౌ సాధ్వీకైలాస మందిరం ।

క్షేత్రపాల ఉవాచ -

అద్యాపి వర్తతే క్షేత్రం పతి సంజీవనౌషధం ॥ 96

సాధ్వీమణి పతితో శివుని సాన్నిధ్యమైన కైలాసమునకు వెడలెను. క్షేత్రపాలుడు తెలిపెను. పతి సంజీవనియైన ఆ క్షేత్రము ఇప్పుడూ గలదు.

మాండవ్యోస్తి సమీపేతు గుహాయాం సుస్థిరాసనం ।
మాఘే మాసే సితే పక్షే చాష్టమ్యాం సోమవాసరే ॥ 97

సమీపమున గల గుహాయందుండు స్థిరాసీనుడై మాండవ్యుడు తపమున మగ్నుడై వెలసియున్నాడు. మాఘ మాసపు శుక్ల పక్షము అష్టమి సోమవారము.

స్నానం కుర్యాదత్ర తీర్థే పశ్చాన్మాండవ్య దర్శనం ।
యః కరోతి సపూతాత్మా ముక్తిమేతి న సంశయః ॥ 98

ఈ తీర్థమున స్నానమాచరించి తర్వాత ఋషి మాండవ్యుని దర్శనం చేయవలెను. ఎవరు చేసెదరో అతడు పవిత్రాత్ముడై ముక్తిని పొందుటలో సంశయమే లేదు.

సూత ఉవాచ - సూతుడు తెలిపెను.

ఇత్యుక్త్వా క్షేత్రపాలస్తు స్నాత్వా సప్తర్షి భర్యుతః ।
మాండవ్యం పూజ యిత్వా తుయాత్రార్థం ప్రయయౌముదా ॥ 99

అని చెప్పి, క్షేత్రపాలుడు సప్తర్షుల సమేతముగా స్నానము చేసి మాండవ్యమునినీ పూజించి, సంతసించి యాత్రార్థముగా ప్రయాణించిరి.

మాధవీ చరిత మద్భుతం చ యోబోధయ త్యనిశ మగ్రణీ స్సతాం।
సాధయత్యఖిల లోక సంపదో మోదమేతి గిరీశాలయేచ సః ॥100

సజ్జనులందు శ్రేష్ఠుడైన వాడు, మాధవి యొక్క అద్భుత చరితమును బోధించునో, అతడు సకల లోకసంపదను పొందును అంతేగాక కైలాసము నందూ ఆనందమును పొందును.

ఇతి శ్రీస్కాంధపురాణే హేమకూటఖండే పంపామహాత్మ్యే
కాంచనతీర్థ ప్రశంసా యాం మాండవ్యాశ్రమ - మాధవీ
పాతివ్రత్యమహిమ వర్ణనం నామ త్రయో వింశోధ్యాయః
అను స్కాందపురాణపు హేమకూట ఖండము నందలి
పంపామహాత్మ్యము నందు
కాంచన తీర్థ ప్రశంస, మాండవ్యాశ్రమము, మాధవీ పాతివ్రత్య
మహిమ వర్ణనయను ఇరవై మూడవ అధ్యాయము
సంపూర్ణము.

ఇరవై ఎనిమిదవ అధ్యాయము

విరూపాక్షునిచే జాంబవతునికి వరప్రదానం

సూత ఉవాచ - సూతుడు తెలిపెను.

తతో జాంబవతీశస్య క్షేత్రం ప్రాప్య మహర్షయః ।
క్షేత్రపాలం సమావీక్ష్య భక్తినమ్రధియా బ్రువన్ ॥ 1

మహర్షులు జాంబవతీశుని క్షేత్రమును చేరిన తర్వాత, క్షేత్రపాలుని వీక్షించి భక్తి నమ్రతలతో ఇలా పలికిరి.

ఋషయః ఊచుః ఋషులు అడిగిరి.

కథం నామా భవ జాంబవతేశ్వర ఇతి ప్రభో ।
విచిత్రిదమాఖ్యానం బ్రూహి త్వం శిష్యవత్సల ॥ 2

స్వామీ! జాంబవతేశ్వరయను పేరు ఎలా గలిగెను? శిష్యులైన మాయందు ప్రీతిగలవాడా! ఆశ్చర్యకరమగు ఈ వాఖ్యానమును తెలుపుము.

తత్తస్సర్వం మిదం జ్ఞాత్వా కరిష్య మోద్య సంస్మృతైః ।
ఇతి తేషాం వచస్సమ్యక్ జ్ఞాత్వాలోచ్య యథామతి ॥ 3

దీనిని తెలుసుకొని మేము దానినే గుర్తుచేసుకొనుచూ ఆచరించెదము. వారి సరియైన మాటలను విని ఆలోచించి తనకు తెలిసినంత,

అఘోరస్యాస్యమహత్మ్యం వక్తుంసముపచక్రయె ।

క్షేత్రపాల ఉవాచ -

పురాసిద్భువి పౌలస్త్యో రావణా లోకరావణః ॥ 4

క్షేత్రపాలుడు అఘోరుని మహిమను చెప్పునుపక్రమించెను. పూర్వము భూమియందు పులస్త్యున వంశమున రావణుడు. జనించెను. ఇతడు లోకమును దుఃఖమునందు ముంచెను.

పులస్త్య ననువాడు బ్రహ్మ మానస పుత్రులందొకడు. కృత యుగపు అంత్యభాగమున పుట్టి మేరుపర్వత క్రిందిభాగమున తపమాచరించు చుండెను. తృణబిందు ముని పుత్రిక 'గో' ఇతని పత్ని వారి సుతుడు విశ్రవసుడు.

తస్యమానం చ తేనేదం సలేభే నిర్వృతిం జగత్ ।
జగత్క్షేమం చింతయతో బ్రహ్మణో నాసికాంతరాత్ ॥ 5

అతనిచే దుఃఖమునకు గురియగుచున్న ఈ జగతి నివృత్తిని పొందలేదు. లోకక్షేమమును గూర్చి చింతించు చున్న బ్రహ్మని ముక్కు ద్వారముచే,

ఋక్ష రూపధరః కశ్చదగ్రత స్సమజాయత ।
తం దృష్ట్వావా భీషణాకారం ఋక్షరూపధరం విధిః ॥ 6

భల్లూక రూపమును ధరించి వాడొకడు పుట్టెను. ఆ భయంకర ఆకారమును చూసి బ్రహ్మడు

విస్మయం పరమం లేభే తదుత్పత్తిమచింతయత్ ।
అయం జృంభార వజ్జా తస్మాజ్జాంబద దాహ్వాయః ॥ 7

ఆశ్చర్యపడెను. ఆతని పుట్టుక గూర్చి ఆలోచించెను. గట్టిగా ఆవలించినపుడు పుట్టి అంగాంగములను వెడల్పు చేసి గాత్రమును పెంచుకొన్నందుకు ఇతని పేరు జాంబవ అని అగుగాక అని,

ఇత్యుక్త్వా పద్మజస్తస్య బలం వీక్ష్య సవిస్మయః ।
పుత్రమాలింగ్య హర్షేణ ముమోచానందనా జలమ్ ॥ 8

పలికిన పద్మ సంభవుడు. అతని బలమును ఆశ్చర్యమున చూసి సుతుని సంతోషముగా ఆలింగించుకొని ఆనంద భాష్పము లను కార్చెను.

జాంబవాన్ పితరం దృష్ట్వా ప్రోవాచ ప్రణిపత్యతం ।

జాంబవాన్ ఉవాచ -

సృష్టస్త్వయా కుతస్తాత్ పరమానంద నిర్భర ॥ 9

జాంతవంతుడు తండ్రిని చూసి నమస్కరించి ఇలా పలికెను. అత్యంత ఆనందమును సంభ్రమించుచున్న పితా! నేను నీచే ఎందుకు సృష్టించ బడితిని?

అద్వితీయ స్వరూపో హ మృషాకృతి రకల్మషః ।
మయి కార్యం కిమస్తేశ దాతుమాజ్ఞామి హార్హసి ॥ 10

భల్లూకము వంటి అద్వితీయ రూపమును దాల్చిన నేను నిష్కల్మశుడను. స్వామి నాకార్యమేమని ఆజ్ఞాపించుటకు నీవే అర్హుడవు.

ఉవాచేత్థాం జాంబవంతం బ్రహ్మా కాలోచితం వచః ।
త్వజ్జన్మనా సుఖమభూల్లోకానాం వచ్మి కారణమ్ ॥ 11

ఈవిధముగ పలకరించబడిన బ్రహ్మడు కాలోచితమైన మాటలను పలికెను. జాంబవంతునికి నీ పుట్టుకచే లోకము లకు సుఖము కలుగును. దానికి కారణమును చెప్పెదను.

లంకా యాం రావణోనామ మద్దత్తవరదర్పిత ।
తేనె దం దుఃఖితం సర్వభువన సచరాచరమ్ ॥ 12

నాచే వరమివ్వబడిన రావణుడనువాడు లంకయందు దర్పములో మెరుస్తున్నాడు. అతని కారణముగా సకల చరాచర వస్తువులలో గూడి అన్ని లోకములు దుఃఖించుచున్నవి.

మనుష్యేణ మృతిస్తస్య కల్పితా పూర్వమేవ హి ।
త్రేతాయాం తద్వధర్థం శ్రీరామనామ జనిష్యతి ॥ 13

మానవుడి మృత్యువు అతనికన్న ముందే నిశ్చయింపబడి యుండును. అనగా జనన - మరణములు పూర్వ నిర్ణితములు త్రేతాయుగమున రావణుని వధించుటకనియే విష్ణువు శ్రీరామ యను పేరున జనించును.

సహాయార్థం తస్య జాతస్త్వమ్ భల్లూక స్వరూపతః ।
మహాబలం యుతస్త్వం చిరాయుస్మాన్ భవిష్యసి ॥ 14

అతని సహాయార్థం అనగా లోకశోక నివారణకై భల్లూక వేషధారిగా నీవు జనించియున్నావు. మహాబలశాలియైన నీవు చిరాయువుగా వుండెదవు.

హేమకూటాద్యామ్యదిశి వర్తతే దివ్యకాననమ్ ।
తద్గత్వా శ్రీవిరూపాక్ష ధ్యానం కురు మహామతి ॥ 15

హేమకూట పర్వత దక్షిణమున దివ్యమైన కాననము గలదు. మహామతే! నీవు అక్కడికి వెళ్లి శ్రీవిరూపాక్షుని ధ్యానించుము.

తేన తే సిద్ధయస్సర్వాస్సమేష్యంతి గిరీశతః ।
పితృవాక్యం సమాకర్ణ్య జాంబవాన్ ప్రయయౌ ముదా ॥ 16

దానిచే అన్ని సిద్ధులు గిరీశుని దయచే సిద్ధించును. పితృ వాక్యమును విన్న జాంబవంతుడు సంతోషముగా వెడలెను.

దదర్శ పురతో దివ్యం క్షేత్రరాజం మనోహరం ।
సాలతాల సమాకీర్ణం జంబూకుంజ విరాజితం ॥ 7

దివ్యమూ మనోహరము అయిన క్షేత్రరాజమును ఎదురుగా చూచెను. సాల, తాటి, నేరడు వృక్షములు, లతాకుంజములు ఆ క్షేత్రమున విరాజిల్లు చుండెను.

మందారైః పారిజాతైశ్చ బిల్వై రామ్లక తైరపి ।
వ్యాప్తం క్రూరమృగై ర్హీనం నాదభాసుర మిష్టదం ॥ 8

మందార, పారిజాత బిల్వ, అమ్ల (ఉసిరిక) మొదలగు వృక్ష సమూహములచే వ్యాప్తమై యుండి, క్రూరమృగములచే నిండి, గాలివీచి నపుడంతా, వెదురు వృక్షముచే వచ్చు ఇంపైన వేణునాదము శోభాయమానముగా నుండెను.

సర్వర్తుర్గుణం సంపూర్ణం సర్వానందకరం వనమ్ ।
తత్ర జంబూ నికుంజేషు కృతవాసో జితేంద్రియః ॥ 9

అన్ని ఋతు గుణములతో సంపూర్ణముగా సర్వానంద దాయకమైయున్న ఆ వనమున జితేంద్రియుడైన ఋక్షుడు నేరేడు వృక్ష సమూహమధ్య నివసించెను.

మౌనీ జంబూ ఫలాహార స్తపః కుర్వన్నహర్నిశమ్ ।
అనుజ్ఞ యాథ చండస్య గణపం వీర సంజ్ఞకమ్ ॥ 20

జంబూ ఫలములను ఆహారముగా స్వీకరించుచూ మౌనిగా నుండి రాత్రింబగళ్ళు తపము చేయుచుండెను. పిదప చండున ఆజ్ఞవలె "వీర" యను పేరుగల గణపతిని,

(చండ - శివుని పరిషదలందు ఒకడు, ఇతనికి చండి, చండికేశ్వర, చండేశ, చండఘంట మొదలగు పేర్లు గలవు.)

భద్రాం హైమవతీం కాళీం విరూపాక్షం దయానిధిం ।
సమభ్యర్చ్య తదా దేవం ప్రదక్షిణమథాకరోత్ ॥ 21

సర్వమంగళమైన హైమవతిని, కాళిని, దయానిధియైన విరూపాక్షుని అర్చించి, దేవదేవ విరూపాక్షుని ప్రదక్షిణం చేసెను.

సర్వేంద్రియాణి సంయమ్య నివేశ్యమన ఆత్మని ।
భావయన్పరమాత్మానం హేమకూటాధివాసినం ॥ 22

అన్ని ఇంద్రియములను సంయమమునందుంచి మనస్సును ఆత్మనియందు విలీనము చేసి, హేమకూటాధివాసిని పరమాత్మునిగా భావించి

నిత్యం ప్రదక్షిణాంచక్రే క్షేత్రం తత్పంచ యోజనం ।
అదృష్ట పూర్వం కేనాపి క్షేత్రం తపసి లిప్సతా ॥ 23

పంచయోజన విస్తారమగు ఆ క్షేత్రమును నిత్యమూ ప్రదక్షిణ చేయుచుండెను. ఆ క్షేత్రమున పూర్వము తపనాచరించిన వారెవరూ ఇలా చేసింది లేదు.

ఋక్షరాజై తపస్తపై వర్షాణాయయుతం గతం ।
దృష్ట్వా తాం తపసోవృత్తిం తస్య జాంబవతో ద్విజాం ॥ 24

ఋక్షరాజు ఇలా తపము చేయుచుండగనే పదివేల సంవత్సరములు గడిచినవి. ద్విజశ్రేష్ఠులారా! జాంబవంతుని ఆవిధమగు అద్భుత తపశ్చర్యను గాంచి,

శంమ్భోర్వచన మాకర్ణ్య జాంబవాన్ పునరబ్రవీత్ ।

జాంబవాన్ ఉవాచ –

యదితుష్టోసి దేవ త్వం కల్పాయర్దేహిమే శివ ॥ 38

శంకరుని మాటలను విన్న జాంబవంతుడు మరల చెప్పెను. ఒకవేళ నీవు నా యందు ప్రసన్నుడవై యున్నచో దేవా! శివా! నాకు ఒక కల్పాంతము వరకు ఆయుష్యమును కరుణించుము.

(కల్పము. బ్రహ్మని ఒక పగలు.

1000 యుగములు 432 మిలియన్ సంవత్సరములు

మానుష లెక్కముమున ప్రపంచమును కొలుచు సమయ కాలము)

బలం తేజః క్షమాం ధైర్యం గాంభీర్యమతి సాహసం ।

సర్వత్ర జయశీలత్వం దేహిమే పరమేశ్వర ॥ 39

బలము, తేజము, క్షమా, ధైర్యము, గాంభీర్యము, సాహసము, అన్ని యెడల జయశీలతను పరమేశ్వర నాకు కరుణింపుము.

జాంబవద్వచనం శృత్వా ప్రోవచ పరమేశ్వరః ।

శ్రీవిరూపాక్ష ఉవాచ –

కృతే దేవహితార్థాయ విష్ణుర్వామన రూపభృత్ ॥ 40

జాంబవంతుని మాటలకు పరమేశ్వరుడు చెప్పెను. దేవతల హితమునకై కృతయుగమున విష్ణువు వామన రూపమును ధరించును.

త్రివిక్రమవ తారేణ బలిం నిర్భంధయత్య సౌ ।

త్రిభిః పదైర్జగత్సర్వ మాక్రమిష్యతి తేజసా ॥ 41

త్రివిక్రమావతారముని దాల్చి బలిచక్రవర్తిని నిర్బంధిం చుటయే గాక, మూడు అడుగులతో విశ్వమంతటిని తన తేజో బలముచే ఆక్రమించును.

తస్య ప్రదక్షిణం కర్తుం యత్నం కురు మహామతే ।

తేన తేకీర్తిరమలా లోకే ఖ్యాతిం గమిష్యతి ॥ 42

అతనికి ప్రదక్షిణ చేయు ప్రయత్నమును మహామతియైన నీవు చేయుము. అందుచే పరిశుద్ధమైన నీ కీర్తి లోక ప్రసిద్ధ మగును.

బలం తే విష్ణుకృపయా వర్ధతే భువి విస్తృతం ।

త్రేతాయాం కోసలేంద్రస్య రామస్యాకర్మణః ॥ 43

త్రేతాయుగమున కోసలేంద్రుడైన రామునికి సహకరించు కార్యము చేయు కారణమున విష్ణు కృపచే నీ బలము వర్ధించును. విస్తారమగు భువియందు నీ కీర్తి వ్యాపించును.

దశగ్రీవవధో ద్యోగే సాహాయ్యం చ కరిష్యసి ।

తేన చక్రభృతాభూయ సంప్రాప్తి ద్వాపరే యుగే ॥ 44

దశకంఠుడైన రావణ వధా కార్యమున సహాయము చేసెదవు. మరల ద్వాపర యుగమున అతనిచే (విష్ణువుచే) చక్రమును పట్టించెదవు.

తత్రో భవసి యుద్ధేత్వం మణిహేతో శ్శివంకర ।

త్వం కతౌ సుమహాకాయో భగవద్భక్తి మావయోః ॥ 45

మంగళకరుడా! మణి కారణముగా (శ్యమంతకమణి) యుద్ధమునందు రక్షింపబడెదవు. నీవు కలియుగమున మహాకాయుడవై వారిద్దరి యందు అనగా బ్రహ్మ మరియు విష్ణువునందు భగవద్భక్తి గల

ఖ్యాతిం గమిష్యతి భవాన్ యావదాచంద్రతారకం ।

విరూపాక్షశ్చర్భుత్వా జాంబవాన్వక్యమబ్రవీత్ ॥ 46

నీవు చంద్రతారకలున్నంత వరకు ప్రఖ్యాతుడుగా నుండెదవు. విరూపాక్షుని అనుగ్రహపు మాటలను విన్న జాంబవతుడు మరల ఇలా పలికెను.

బహుకాల మిహాదాస్యం కృత్వా సిద్ధిం గతోర్వ్యయం ।

తస్మాన్మదాఖ్యయా క్షేత్రం భూ తత్త్వత్కృపయా విభో ॥ 47

నేను చాలకాలము నీ సేవను చేసి సిద్దిని పొందిన వాడైతిని. నీ కృపచే విభో! ఈ క్షేత్రము నా పేరున ప్రసిద్దిగాంచని.

మద్భక్తి మచలాం దేహి యావజ్జన్మ మహాప్రభో ।

ఇత్యుక్తస్సశివః ప్రాహ జాంబవంతం మహాబలమ్ ॥ 48

మహాప్రభో! జన్మయున్నంత వరకు నీ యందలి నా భక్తిని నిశ్చల గొలపుము. ఇలా అని చెప్పగ, శివుడు మహా బలిష్ఠుడైన జాంబవంతునికి ఇలా తెలిపెను.

శ్రీ శివ ఉవాచ – శ్రీ శివుడు పలికెను.

మత్తస్సర్వ వరాన్ లబ్ధ్వా త్వదభీష్టార్థదాయకాన్ ।

సుఖం తిష్ఠమహాప్రాజ్ఞ సర్వబాధా వివర్జితః ॥ 49

నీ మనోవాంచలన్నిటిని వరముగా నాచే పొందియున్నావు. అన్ని బాధవివర్జితుడై సుఖముగా నుండుము హే మహాప్రాజ్ఞ.

ద బ్రాహ్మరశిల్ప

ఈ తీర్థమున స్నానము చేయుచున్న దుర్వృతులైన మీరు తీర్థ రాజమునే నిందించుచున్నారు. ఇక్కడ మౌనముగా నుండండి లేనిచో వేరే ఎక్కడకైన వెళ్లండి.

ఇతి తాసాం వచశ్శ్రుత్వామర్షితా నాగకన్యకాః ।
దదురప్సరసాం శాపం కపయో భవతే తితాః ॥ 97

అని అన్న వారి మాటలను విన్న నాగకన్నియలు. ఓర్పును కోల్పోయి, అప్సరలకు మీరు మర్కటములు కాండి అని శపించిరి.

శాపవాక్యం సమాకర్ణ్య నాగకన్యా సమీరితం ।
పునరప్సరసః శాపం దదుస్తాసామమర్షితా ॥ 98

నాగ కన్నియల శాపమును విన్న అప్సరలు కుపితులై వారికి తిరుగు శాపమునిచ్చిరి.

సదావక్రాచరా యాయం సర్వప్రాణి విహింసకాః ।
స్వపుత్ర భక్షకాః ప్రాయో నష్టవంశాభవిష్యథ ॥ 99

సర్వద వక్రముగా చలించు మీరు ప్రాణులన్నిటిని హింసించెదరు. మీ సంతతిని మీరే భక్షిస్తూ ప్రాయహః మీ వంశమును మీరే నష్టపరచు చున్నారు.

ఇత్థం పరస్పరం శప్తాః ప్రయయుర్దేవకన్యకాః ।
చక్రతీర్థం సమాసాద్య సమారాధ్య జగత్పతిం ॥ 100

ఇలా పరస్పరులు శపించుకొని, దేవకన్నికలు అచట నుండి చక్రతీర్థమునకు వెడలి జగత్పతిని ఆరాధించిరి.

తోషయామీ సురీశానం భక్తిభావసమన్వితాః ।
ప్రసన్నమీశ్వరం నత్వా వవ్రిరేప్సరసో వరాన్ ॥ 101

ఈశ్వరుని భక్తిభావముతో అర్చించి సంతసింపచేసిరి ఆ అప్సరలు. ప్రసన్నుడైన శంకరుని వారు వరములను వేడిరి.

శాపేన నాగకన్యానాం కపిరూపేణ కర్శితాః ।
పాహ్యస్మాన్కృపాయా దేవ పూర్వరూపం దిశాధునా ॥ 102

నాగకన్నియల శాపముచే కపిరూపముతో బాధపడుచున్న వారు "స్వామి కృపతో పూర్వరూపమును ప్రసాదించి మనలను కాపాడుము".

ఇతి దీన వచశ్రుత్వా తాసా మీశ స్తదాబ్రవీత్ ।
త్రేతాయుగే దాశరథేర్జనిష్యత్య సురాంతకః ॥ 103

వారి దీన వచనములను విన్న ఈశ్వరుడు ఇలా తెలిపెను. త్రేతాయుగమున అసురాంతకుడైన దాశరథి జనించును.

సహాయ్యార్థం తస్యదేవాః సర్వేవానరజన్మని ।
యుష్మద్గర్భే జనిష్యంతి తదాముక్తా భవిష్యథ ॥ 104

అతని సహాయార్థము దేవతలందరూ కపి జన్మన మీ గర్భములచే జనించెదరు. అపుడు మీరు ఈ శాపముచే విముక్తి నొందెదరు.

ఇత్యుక్తాః శంకరేణాథ కాలవీక్షణ తత్పరాః ।
చక్రిరే స్సరోస్సోవాసం కిష్కిందాయాం శివార్చకాః ॥ 105

ఇలా అని శంకరుడు చెప్పగా వారు కాలమును నిరీక్షిస్తూ యుండిరి. శివుని అర్చించుచూ కిష్కింద యందలి ఒక సరోవర సనిహము నివసించసాగిరి.

ఋషయః ఊచుః – ఋషులు ప్రశ్నించిరి.

కిమకుర్వన్మహానాగస్తద్వాదాద సవిస్తరం ।

క్షేత్రపాల ఉవాచ –

నాగానాం దుస్తరం ఘోరం తపో దృష్ట్వా మహేశ్వర ॥ 106

ఆపైన ఆ నాగులు ఏమి చేసినవి అనుదానిని సవిస్తారముగా తెలుపుము. క్షేత్రపాలుడు చెప్పెను. ఆ నాగుల ఘోర తపమును చూసి

అవిరాసీద్ధరస్తేషాం పురతః కరుణాకరః ।
పార్వత్యా సహిత శ్రీమాన్వృషభోపరి సంస్థితః ॥ 107

కరుణాకరుడైన హరుడు పార్వతీ సమేతముగా వృషభా రూఢుడై వారి ఎదురు అవతరించెను.

జటామండల మధ్యస్థ గంగేందు కృతభూషణః ।
తానబ్రవీన్మహానాగాం స్తపసా నిశ్చలాన్ శివ ॥ 108

జటామండల మధ్యన గంగను, చంద్రుని అలంకరించు కొని నిశ్చల తపమునందున్న అనాగలను గూర్చి ఈశ్వరుడు ఇలా పలికెను.

భోభో నాగాః ప్రసన్నోస్మి తపసా నిశ్చలేనవః ।
దాస్యామి దుర్లభం లోకేవృణుధ్వం వరముత్తమం ॥ 109

ఓ! నాగులారా మీ నిశ్చల తపముచే నేను ప్రసన్నుడైతిని లోకమున దుర్లభమైనదానిని ఇచ్చెదను. ఉత్తమ మగు వరమును కోరుడు.

ఇతి దివ్య వచశ్రుత్వా విరూపాక్షస్య పన్నగాః ।
తపసో విరతా దృష్ట్వా పురస్థం పరమేశ్వరం ॥ 110

అరవై ఒకటవ అధ్యాయము
మాల్యవద్గిరి మహిమా

సూత ఉవాచ – సూతుడు తెలిపెను

సప్తర్షియ శ్శుభాః క్షేత్రపాల యుక్తా మహీధరం ।
మాల్యవంతం సమాసాద్య దృష్ట్వా తత్రత్య వైభవం ॥ 1

శుద్ధులైన సప్తర్షులు క్షేత్రపాలుని జతగూడి పర్వతమైన మాల్యవంతమును సమీపించి, అచట గల వైభవము చూసి

ఆశ్చర్యేణ యుతాః క్షేత్రపాలం ప్రప్రచ్ఛు రాదరాత్ ।

ఋషయ ఊచుః –

క్షేత్రపాల మహాప్రాజ్ఞా రాజతేయం మహాగిరిః ॥ 2

ఆశ్చర్య చకితులై మునులు ఆదరముతో క్షేత్రపాలుని అడిగిరి మహాప్రాజ్ఞుడైన క్షేత్రపాలుడా ఈ మహాన్ గిరి చక్కగా రాజిల్లు చున్నది.

భక్తిర్విదర్శనాదస్య జాయతేస్మాసుసాత్వికీ ।
కిం నామాస్య కథాం బ్రూహి గిరిశ్చిత్తా పహారిణీం ॥ 3

ఈ సాత్విక పర్వత దర్శన మాత్రమున మనకు భక్తి కలుగుచున్నది. దీని పేరేమి? చిత్తాపహారకమైన ఈ పర్వత కథను తెలుపుము.

క్షేత్రపాల ఉవాచ –

శ్రీవిరూపాక్ష పాదాబ్జం స్మృత్వా వక్ష్యామి సాంప్రతం ।
మాల్యవద్గిరీ మహత్మ్యం సుఖదం శృణుతాదరాత్ ॥ 4

క్షేత్రపాలుడు తెలిపెను, శ్రీవిరూపాక్షుని పాదకమలములను స్మరించి ఇపుడే చెప్పెదను. సుఖదాయకమైన మాల్యవంతగిరి మహిమను ఆదరమున వినుడు.

మాలాకారీ పురా కశ్చిన్మాల్యవానితి కేరళే ।
జయసింహ మహీపాల పురేవాసం చకారం సః ॥ 5

పూర్వము మాల్యవాన యను పేరుగల పూలవాడు కేరళ దేశమున యుండెను. అతడు రాజు జయసింహుని నగరమున నివసించుచుండెను.

నిత్యం పార్థివ పూజార్థం కృత్వా కుసుమ మాలికాః ।
సంతోషార్థం మహీభర్తు ర్దిర్శతిస్మ సుఖాశయః ॥ 6

నిత్యమూ రాజు పూజకోసం పూలమాలలను కట్టి రాజుని సంతసింప సుఖాశయము కోరి ఇచ్చుచుండెను.

ఇత్థం బహుతిథే కాలేగతే పార్థివ సత్తమః ।
ఏ కదా సుమమాలాయాం బాలమేకం నిరీక్ష్యసః ॥ 7

ఇలా ఆ పూలవాడు ఇస్తూ చాలాకాలము గతించెను. ఒకసారి ఆ రాజుకు పూలమాల యందు కేశమొకటి అగుపించెను.

రుషా పరిచరా నూచే ప్రయాదోయం విభాతి వః ।
పూజాకుసుమ మాలాయాం కేశం పశ్యత దుర్భగాః ॥ 8

కోపముతో సేవకులకు చెప్పెను. మీ నుండియే ఈ ప్రమాదము జరిగినది అని అనిపించును. దౌర్భాగ్యులారా పూజా పుష్పముల యందు కేశము కలదు చూసితిరా?

ఇతి రాజ్ఞో వచశ్శ్రుత్వా భీతాస్తే పరిచారికాః ।
రాజానం ప్రణిపత్యో చుర్యుక్త్యా మధురవాదినః ॥ 9

అనురాజ మాటలను విన్న సేవకలు భయపడి మధుర ముగా పలుకలగల వారు రాజునికి నమస్కరించి ఉపాయముతో ఇలా పలికిరి.

నజానామో నయం రాజన్ మాల్యవత్కృత సాహసం ।
నిర్మాల్య మివనోభాతి యోషిత్కేశ మిదం ప్రభో ॥ 10

మాకేమి తెలియదు. ఇది మాల్యవంతునిచే జరిగిన సాహసము. మాకు ఈ పూలమాల నిర్మాల్య పూలనే తోచును. స్వామి! కేశము పూలతో చుట్టబడినది.

ఇతి తద్వచసా రుష్టో మాల్యవంతం నృపస్తదా ।
భటైరానీయ సంతర్జ్య జగాద పరుషాక్షరం ॥ 11

భటుల మాటలచే కుపితుడైన రాజు చారుల ద్వారా మాల్యవంతుని పిలిపించి, భయపెట్టి కఠినముగా

కిపరేవిపరీతా బుద్ధిరద్య దురాశయ ।
యోషిన్నిర్మాల్యమానీయ పూజార్థమదిశః ఖిల ॥ 12

ఏరా! దురాశయుడా! నీ బుద్ధి విచలితమైనదా? దుష్టుడా! కేశము గల నిర్మాల్యమును తెచ్చి పూజచేయ నిచ్చితివా?

దోషి త్వం గచ్ఛ కుత్రాదేశే మాతిష్ఠ మామకే ।
ఇతి వాదిని రాజేంద్రే మాల్యావానబ్రవీర్భయా ॥ 13

నీవు దోషివి, నాదేశము నుండకు ఎక్కడికైననూ వెళ్లుము. ఇలా రాజు పలుకగా మాల్యవానుడు భయభీతుడై.

అహమప్యనుకంపయాత్రనిత్యం త్వయి సదార్చితః ।
ప్రసన్నః ఇత్థం లబ్ధవరో ధీమాన్ సత్యవ్రత పరాయణః ॥ 38

నీపైని అనుకంపముచే ఈ గిరి శిఖరమున సదా వంధ్యుడనై ప్రసన్నముగా నివసించెదను. ఈ విధముగా సత్యవ్రత పరాయణుడు. ధీమంతుడూ అయిన మాల్యవంతుడు ఉత్తమమైన వరమును పొందెను.

నిత్యం స్వనామ్నే విఖ్యాతే స్థిత్వాస్మిన్భూధరోత్తమే ।
శ్రీశంకరార్చనిరతో బభూవానంద నిర్భరః ॥ 39

తన నామముతో గల ఉత్తమమైన పర్వతమున, శాశ్వతముగా శ్రీశంకరుని అర్చన యందు ఆనందముగా నిరతుడై యుండెను.

త్రేతాయుగే దాశరథిర్లక్ష్మణేన సమన్వితః ।
సీతయా సహ తాతాజ్ఞావశదాగత్య కాననం ॥ 40

త్రేతాయుగమున దశరథ పుత్ర శ్రీరాముడు లక్ష్మణ, సీతా సమేతుడై తండ్రియాజ్ఞకు కట్టుబడి అడవికి వచ్చి,

పంచవట్యామువాసాథ రావణో రాక్షసేశ్వరః ।
మాయయా వంచమిత్వాతం చోరయామాస మైథిలీం ॥ 41

పంచవటిని నివసించెను. అటుపైన రాక్షస రాజైన రావణుడు మాయతో అతనిని వచించి మైథిలిని అపహరించి తీసుకెళ్లెను.

సీతామదృష్ట్వా శోకార్తః కోసలేంద్రో వనాద్వనం ।
మార్గమాణో జగా మా సౌ కిష్కిందా నగరాంతికం ॥ 42

సీతను కానక కోసలేంద్రుడైన రామచంద్రుడు దుఃఖార్తుడై వనవనము తిరుగుచూ కిష్కిందానగర సమీపమునకు వచ్చెను,

హనుమద్వచనాత్సఖ్యం సుగ్రీవేణ చకారసః ।
వాలి సుగ్రీవయోః సంఖ్యే వాలినం సుదురాసదం ॥ 43

శ్రీరాముడు హనుమంతును మాటలవలె సుగ్రీవునితో స్నేహము చేసెను. వాలీ సుగ్రీవుల మధ్యన యుద్ధము జరిగెను ఓడించలేని వాలిని.

శరణై కేన హత్వాతం సుగ్రీవం రాజ్యనాయకం ।
కృత్వాత్ర భూధరే రామో వర్షాకాల మనీనయత్ ॥ 44

ఒకే బాణముచే చంపి, సుగ్రీవుని ఆ రాజ్యమునకు నాయకుని చేసి, ఆ భూభాగమున రాముడు వర్షాకాలమును గడిపెను.

ఏ కదా లక్ష్మణం ప్రాహ సీతా నిరహ విప్లవః ।
శృణు లక్ష్మణ మద్వాక్యం మమానుజ హితం తవ ॥ 45

ఒకసారి సీతావిరహముచే శోకించు రాముడు లక్ష్మణుని గూర్చి ఇలా పలికెను. లక్ష్మణా నీవు నా సోదరుడవు నీ మేలుకై ఈ నా మాటలను వినుము.

మహితే స్నేహమధికం పశ్యన్నపి కరోమికిం ।
నిరుపాయాదిదం వచ్మి సీతావిరహ కాతరః ॥ 46

నీకు నాయందు అధిక ప్రేమగలదని తెలిసియూ, సీతా విరహ కాతురడైన నేను వేరే ఉపాయము గానక ఈ మాటలను చెప్పుచున్నాను.

మదర్థం త్వం మహారణ్యేకుతో దుఃఖ మవాప్స్యసి ।
గచ్ఛాయోధ్యాపురం తాత సర్వసంపన్సమృద్ధిమత్ ॥ 47

నాకై నీవెందుకు ఈ అడవియందు దుఃఖమును అనుభ వించెదవు. సకల సంపదలచే నిండియున్న అయోధ్యకు వెళ్లుము.

సుఖీభూయాః చిరంరాజే భరతావిభిరన్వితః ।
తత్రాపి స్మర మాం నిత్యం తవ ప్రేమాస్పదం సదా ॥ 48

భరతాదుల గూడి సుఖముగా నుండుము. అక్కడను నన్ను సదా స్మరించుచూనుండుము. నేను నీ ప్రేమకు పాత్రుడను.

సీతా విరహ దావాగ్ని ర్మాం దహత్యతి దారుణం ।
న సహే య మసూన్యక్ష్యా మ్యద్య ప్రాయోప వేశతః ॥ 49

సీతావిరహాగ్ని నన్ను చాలా దారుణముగా దహించు చున్నది. సహింపనసాధ్యముగా నున్నది. ప్రాయోపవేశము చేసి నేనిప్పుడే ప్రాణములను త్యజించెదను.

అయోధ్యాం పునరాగత్య న పశ్యామిజనాన హం ।
ఇత్యుక్త్వా శ్రుముఖం దీనం పశ్యంతం లక్షణం కదా ॥ 50

అయోధ్యకు తిరిగి వచ్చి ఆ జనులను నేను చూడలేను, ఇలాగని పలికి కన్నీళ్లతో లక్ష్మణుని దైన్యభావమున చూస్తూ

గుహమా విశదార్తః స రామస్తూష్ణీ మమథో ముఖః ।
లక్ష్మణ స్తద్వచః శ్రుత్వా వజ్రాహతివ ద్రుమః ॥ 51

దీనుడై రాముడు అవనతముఖుడై గుహను ప్రవేశించెను. ఆ మాటలను విన్న లక్ష్మణుడు పిడుగు పడిన వృక్షము వలె

పపాత మూర్ఛితో భూమౌ పునరుత్థాయ దుఃఖితః ।
చింతయామాస గుహద్వార మహామతిః ॥ 52

పలుకుచూ లక్ష్మణుడు కన్నీళ్లు గార్చుచు మౌనముగా వుండి పోయెను. దానిని విన్నమాల్యవంతుడు శుభలక్షణముగల లక్ష్మణుని గూర్చి ఇలా పలికెను.

మాల్యవాన్ ఉవాచ – మాల్యవానుడు తెలిపెను.

శృణూ లక్ష్మణమద్వాక్యం సర్వేశ్వర మనామయం ।
విరూపాక్ష్యం సముద్దిశ్య తపః కురు మహామతే ॥ 66

లక్ష్మణుడా! నా మాటలను వినుము. సర్వేశ్వరుడూ, అనామయుడూ అయిన విరూపాక్షుని గూర్చి మహామతివైన నీవు తపమునాచరించుము.

ఇత్త్యుక్త్వోపదిదేశాస్మై విరూపాక్ష మహామనుం ।
తత్రైవ లక్ష్మణ స్తీవ్రం తపశ్చక్రేథ శంకరం ॥ 67

ఇలా అని పలికి అతనికి ఉదారుడూ ఉదాత్తుడైన విరూపాక్ష మంత్రమును ఉపదేశించెను. లక్ష్మణుడు అచటనే నిలిచి శంకరుని గూర్చి తీవ్రముగా తపము చేయసాగెను

తతోరామం సమాసాద్య మాల్యనాన్వీక్ష్య దుఃఖితం ।
గుహావాసం మహా చింతాసింధుమగ్న విమోచత ॥ 68

ఆపైన మాల్య వంతుడు శ్రీరాముని సమీపమునకు ఏతెంచి గుహవాసియై, మహా చింతాసాగరమున మునిగియున్న అతని దుఃఖమును విమోచన చేసెను.

రామ రామ మహాబాహో జగదార్తి నివారక ।
త్వం దుఃఖిత ఇతీదం మే చిత్రం భాతి సురార్చిత ॥ 69

రామ, మహావీరుడా, జగతి దుఃఖమును నివారణ చేయువాడా! సురులచే పూజింపబడు నీవు దుఃఖితుడై యున్నావు, అను విషయమే నాకు విచిత్రముగా యున్నది.

మా శోకం కురు కల్యాణ మనః స్థైర్యంవహ ప్రభో ।

రామ ఉవాచ –

కిం కరోమి మునే సీతాం వినాలంజీవితేన మే ॥ 70

మంగళ స్వరూపుడా! దుఃఖింపకు ప్రభో ధైర్యమును తెచ్చుకో అనగా, రాముడు ఇలా పలికెను. ఓ మునివరా! ఏమి చేయను సీతా వినా నా జీవితమే లేదు.

న సహే విరహం తస్యాః క్వవామసుఖం భవేత్ ।
న గచ్ఛేయమతో రాజ్యం బంధుదర్శనతోష్యలం ॥ 71

ఆమె విరహమును సహించలేను. ఆమె లేని నాకు సుఖమైననూ ఎక్కడిది? రాజ్యమునకు వెళ్లలేను, బంధు దర్శనము చేయలేను.

గుహాయా మేవ తిష్ఠామి కృత్వా ప్రాయోపవేశనం ।
ఏవ వదంతం శ్రీరామం సంమాన్య మునిరబ్రవీత్ ॥ 72

గుహయందే ప్రాయోపవేశము చేసెదను అని పలుకు శ్రీరాముని సన్మాన్యుడైన ఆ ముని ఇలా పలికెను.

రామ రామ మహాబాహో జానే త్వాం పరమేశ్వరం ।
మాయాజాల విర్ముక్తం సచ్చిదానంద విగ్రహం ॥ 73

రామ రామ మహాబాహో! నిన్ను పరమేశ్వరుడని, మాయాజాల విముక్తుడవని, సచ్చిదానంద స్వరూపుడవని తెలిసి యున్నాను.

పురాణ పురుషం సాక్షాన్నారాయణమనామయం ।
నిత్యానపాయినీ శక్తిస్తవోర్త్తనయా మతా ॥ 74

పురాణ పురుషుడవు, అనామయుడైన సాక్షాత్ శ్రీమన్నారాయణుడవు, నిత్యయూ, పాపరహితయూ, నీ శక్తి స్వరూపిణయూ, భూమి కన్యయూ అయినది ఆమె.

యువాం ప్రధానపురుషో జగద్ధేతూ జగన్మయౌ ।
భూభార హరణార్థాయ కుర్వాథేన్య విడంబనాం ॥ 75

మీరిద్దరు జగద్వ్యాపకులూ జగతికి కారణకర్తులు. భూభార నివారణార్థమై వచ్చియున్నారు. నరులవలె విడంబనం చేయు చున్నారు లేక ఈ లీలాద్వార నరులను విడంబన చేయు చున్నారని అనుకోనా?

తథాపి లౌకికాచార మనుసృత్య వదామ్యహం ।
విరూపాక్షం సమారాధ్య తీర్త్వాపత్సింధుమావిలం ॥ 76

అయిననూ లౌకికా ఆచరణను అనుసరించి నేను ఈ మాటలను చెప్పెదను. విరూపాక్షుని ఆరాధించి ఈ ఆపద సముద్రమును దాటుము. దుఃఖింప వలదు.

సీతాం ప్రాప్య సుఖేనైన గంతాసి నిజపత్తనం ।
ఇత్యుక్త్వోపాదిశన్మంత్రం రామాయ చతురక్షరం ॥ 77

సీతను పొంది మఖముగా నీ నిజనగరమునకు వెళ్లెదవు. అని సాంత్వన గొలుపుచూ రామునికి నాల్గక్షరముల శివ మంత్రమును ఉపదేశించెను.

భక్త్యా జజాప తన్మంత్రం పావనం రఘుసత్తమః ।
తేన తుష్టా విరూపాక్షః ప్రత్యక్షోభూదుమాయుతః ॥ 78

పావనుడైన శ్రీరాముడు అమంత్రమును భక్తితో జపింపగా సంతుష్టుడైన విరూపాక్షుడు ఉమాసమేతుడై ప్రత్యక్షమైయ్యెను.

కోటి సూర్యప్రతీకాశం శివం దృష్ట్వా రఘూద్వహం ।
భక్త్యా పులకితాం స్సన్ప్రణనామ సదండవత్ ॥ 79

కోటిసూర్య ప్రకాశముతో వెలుగుచున్న శివునిచూసి శ్రీరఘు వంశజుడు రోమాంచిత విగ్రహుడై భక్తితో దండ ప్రణామము చేసెను.

తదా రామం సమాలింగ్య ముదా ప్రాహ మహేశ్వరః ।
రామ భానామితేసర్వం భావమాశర హరిణః ॥ 80

మహేశ్వరుడ రామచంద్రుని ఆలింగనముచేసి ప్రేమతో ఇలా చెప్పెను. హేరామ! నీ భావమును భరింపరాని నీ తాపమును తెలిసియున్నాను.

సీతా నిమిత్తమసురాన్హత్వా దశముఖాదికాన్ ।
తయా సహముదాయోధ్యాయం ప్రాప్య రాజ్యమకంటకం ॥ 81

సీతను నిమిత్తముగా చేసుకొని రావణాది రాక్షసులను సంహరించి ఆపైన సీతతో గూడి అయోధ్యను చేరి అకంటకమగు రాజ్యమును పొంది,

భర్తాసి పంక్తిరుద్ర సాహస్రవర్ష పర్యంత మాదరాత్ ।
ఇత్యుక్త్వా రామమీశాన స్తేనసంపూజతో ముదా ॥ 82

స్వామియై, రుద్రని ఒకవేయి సంవత్సరము పర్యంతము ఆదరముగా అయోధ్యను పరిపాలించెదవు అని పలికెను శ్రీరాముడు ఈశానుడిని ప్రేమతో పూజించెను.

అత్రైవాస్తి ప్రసన్నాఖ్యో భక్తాభీష్ట ప్రదాయకః ।

ఋషయ ఊచుః -

లబ్ధ్వా మాల్యవతో మంత్రం కించకారాధి లక్షణః ॥ 83

ప్రసన్న యను పేరుతో భక్తాభీష్టములను తీర్చుచూ అక్కడే వున్నారు. ఋషులు అడిగిరి. మాల్యవంతునితో మంత్రోప దేశము పొందిన లక్ష్మణుడు తర్వాత ఏమి చేసెను?

వద విస్తరో విద్వన్ శ్రోతుంకౌతూహలం హి నః ।

క్షేత్రపాల ఉవాచ -

అత్రైవ లక్ష్మణ స్తీవ్రం తపశ్చక్రేధ శంకరం ॥ 84

విద్వాంసుడా! విస్తారముగా తెలుపుము. మనకు కుతూహలముగా నున్నది. క్షేత్రపాలుడు చెప్పెను. లక్ష్మణుడు అచటనే నిలిచి ఉగ్రమైన తపమునాచరించెను.

నిత్యం తీర్థోదకస్నాయీ నిరాహారో జితేంద్రియః ।
తపశ్చక్రే విరూపాక్షం సర్వదా హృది భావయన్ ॥ 85

నిత్యము తీర్థోదకమున స్నానమాచరించి నిరాహారియూ జితేంద్రియుడూ అయి సదా హృదయమున విరూపాక్షుని భావించుచూ ఘోర తపమునాచరించెను.

తేన తుష్టో మహాదేవః ప్రత్యక్షోభూత్సుఖప్రదః ।
స్వయం రామో బభూవాథభవానీ జనకాత్మజా ॥ 86

దానితో సంతుష్టుడైన మహాదేవుడు సుఖదాయకముగా ప్రత్యక్షుడైయ్యెను. తనే స్వయముగా శ్రీరాముడు కాగా తల్లి భవాని జానకియైయ్యెను.

స్కందో లక్ష్మణరూపే భూద్భరతో భూద్గణాధిపః ।
వీరభద్రశ్చ శత్రుఘ్నోయోధ్యా సీన్మాల్యవద్గిరిః ॥ 87

స్కందుడు రూపమున లక్ష్మణుడు కాగా, గణపతి భరతుడైయ్యెను. వీరభద్రుడు శత్రుఘ్నుడు కాగా మాల్యవంతగిరి అయోధ్యావలె అయ్యెను.

చండీనాద్యా దండధరాః ప్రమథాః పరిచారికాః ।
సనకాదియుతః శంభుః సింహాసన మధిష్ఠితః ॥ 88

చండీనాద్యులు దండధరులుగా, ప్రమథ గణములు పరిచారకులైయ్యిరి. సనకాదులు రాగా శంభువు సింహాసనమున అధిరోహితుడైయ్యెను.

అవిరాసీద్విరూపాక్షః సర్వసంపత్సమృద్ధిమాన్ ।
సమాధి విరతోభూత్వ దృష్ట్వుతాన్ లక్ష్మణస్తదా ॥ 89

సకల సంపదనుసమృద్ధిగాగల విరూపాక్షుడు లక్ష్మణుని ఎదురుగా అవిర్భూతుడైయ్యెను. సమాధివిరతుడైన లక్ష్మణుడు వారందరిని తన ఎదురుచూసి

విస్మృత్యాత్మాన మున్మత్తన దాసీనః క్షణం విభుః ।
అథాశ్చర్య యుతః స్వాంతే తర్కయామాస లక్ష్మణః ॥ 90

చూసి విభువును తనను తానే మరచి క్షణకాలం ఉన్మత్తుడై ఉదాసీనుడైయ్యెను. ఆశ్చర్యముతో లక్ష్మణుడు అంతర్యమున ప్రసన్నుడైయ్యెను.

ఇయంనూనమయోధ్యాసౌ రామః సీతా సమన్వితః ।
భ్రాతృభిః సహితః శ్రీమానాసనేహి విరాజతే ॥ 91

ఇది నిశ్చయముగా అయోధ్యాయే, సీతాసమేతుడై రాముడు సోదరులతో గూడి సింహాసనమున అరూఢుడై విరాజిల్లు చున్నాడు.

కిమాశ్చర్య మిదం రామః సీతావిరహకాతురః ।
మాల్యద్గిరి మాసాద్య మామాజ్ఞాప్య వివేశగుహాః ॥ 92

ఇదేమి యాశ్చర్యము! రాముడు సీతా విరహమున కాతురుడైన మాల్యవంతగిరి యని జ్ఞాపకం చేసుకొని గుహను ప్రవేశించెను.

సదాశివ సముద్దిశ్య తపశ్చక్రే సుదుస్తరం ।
ఏతావత్కాల పర్యంత మావామద్రివరే స్థితా ॥ 93

లక్ష్మణుడు శంభువుని గూర్చి దుస్తరమగు తపమును చేసెను. ఇంతకాలము మనమిద్దరము మాల్యవంత పర్వతము పైనే వున్నాము.

స్వప్నోవా మే మనోభ్రాంతిః కథం వేద్మిస్థితిం నిజాం ।
తత్సత్యమే తత్సత్యం వా భ్రాంతోహం శైవ య యా ॥ 94

ఇది స్వప్నమా? మనోభ్రాంతియా? నిజము ఎలా తెలియును? ఇది సత్యమా? లేక అది సత్యమా? లేక నే భ్రాంతుడై యున్నానా? శివ మాయయా?

తపమునకు ముందు లక్ష్మణుడు రాముని స్థితిని తెలిసి యుండెను. కాని ఇపుడు దానికి విభిన్నమైన స్థితిని చూసి లక్ష్మణునికి సంశయమును కలిగెను.

కృతార్థోహమయోధ్యాయాం సింహాసనగతం విభుః ।
సీతయా సహితం రామమపశ్యం భ్రాతృభిర్యుతం ॥ 95

అయోధ్యయందు సింహాసనారూఢుడైన ప్రభువుని చూసి కృతార్థుడనైతిని సీతా సమేతుడై అనుజులతో గూడియున్న శ్రీరాముని చూసితిని.

ఇత్యుక్త్వా దండవద్భూమౌ సాష్టాంగం ప్రణనామసః ।
హృదిస్మరన్నుమాపాక్షం భక్త్యా నిశ్చల మానసః ॥ 96

ఇలా చెప్పి లక్ష్మణుడు భూమిపై దండప్రణామములు చెల్లించెను. భక్తితో ఉత్తరు హృదయమందు స్మరించుచూ నిశ్చల మనస్కుడైయుండెను.

విరూపాక్ష స్తమాశ్వాస్య పరిష్వజ్యభుజై స్తదా ।
అశ్రుక్లిన్నదలా వీక్ష్య తుష్టుష్టం తవ లక్ష్మణః ॥ 97

విరూపాక్షుడు అతడిని లేవనెత్తి కౌగలించుచూ ఆనంద బాష్పములను కార్చుచుండగ ఆ అశ్రుబిందువులు లక్ష్మణునిపై పడెను. కన్నీళ్లు కార్చుచూ లక్ష్మణుని గూర్చి శివుడు ఇలా పలికెను.

భ్రాతృ భక్తిం సమాశ్వాసుభ్రాతృనాం సత్వదిష్టపే ।
అశ్రుక్లి దలావీక్ష్య తుష్టుష్టం తవ లక్ష్మణః ॥ 98

వత్సా! భూలోకమున నియంతటి భ్రాతృ భక్తుని చూడలేదు. నీ అచలమగు భక్తిని చూసి, లక్ష్మణుడా! నిన్ను సంతోష పరుచటకై

సీతా కృత్యార్యయా యుక్తో రామరూపమదారయం ।
అనేన తవసంకల్ప సిద్ధిర్భూయాన్నసంశయః ॥ 99

ఆర్యా! సీతతో యుండునటుల రామరూపమును దాల్చితిని. ఈ నీ సంకల్పము సిద్ధించుటలో ఏ సంశయము లేదు.

మయిరామేభిదా నాస్తి భేదకృన్నరకం వ్రజేత్ ।
సురైః సంప్రార్థితో విష్ణుర్భూభార హరణాయచ ॥ 100

నేను మరియు రాముని యందు ఏ భేదములేదు. అలా భావించిన నరకమును పొందెదరు. దేవతలచే ప్రార్థింప బడి భూభార హరణమునకై విష్ణువు.

దశానన వధార్థాయ దేవానాం హితకామ్యయా ।
అవతారంచకారా సౌ రామరూపేణ మాధవః ॥ 101

దశకంఠుని సంహారమునకై దేవతుల హితమునకై, మాధవుడే రామ రూపమున అవతారమును దాల్చెను.

సీతా నిమిత్త మసురాన్హత్వా దశముఖాదికాన్ ।
యాతాయోధ్యా ముదరామః సీతాలక్ష్మణ సంయుతః ॥ 102

సీత నిమిత్తముగా అసురులైన దశముఖాదులను సంహరించి, ప్రసన్నుడైన రాముడు సీతాలక్ష్మణ సమేతుడై అయోధ్యకు వెడలెను.

అవతారామసారేణ కురుతేనృవిడంబనాం ।
తత్ర మోహం మా భజస్వమాయాయా పరతోస్తి సః ॥ 103

రాముడు నిజముగా రక్షింపగలవాడు. కేవలం నరుల విడంబనార్థము ఈ లీల. మోహమునకు లోబడకు. అతడు మాయనుండి బయటనే యున్నాడు.

క్షేత్రపాల ఉవాచ క్షేత్రపాలుడు తెలిపెను

ఇతి తద్వచనం శ్రుత్వా లక్షణః ప్రాహభక్తితః ।
అత్రావేనైవ రూపేణ స్థిరో భవ సురార్చిత ॥ 104

శంకరుని ఆ మాటలను ఆలకించిన లక్ష్మణుడు భక్తిచే ఇలా పలికెను. దేవతలతో అర్చింపబడు ప్రభూ ఇచట ఇదే రూపమున నివసించుము.

రామ రూపిణమీశం త్వాం పూజయామి దివానిశం ।
భ్రాతృ భిః సహితం సీతారూపిణ్యా శివాయానం ॥ 105

పవిత్రము పాపనాశయు అయిన అచట నీవు స్నాన విధిని ఆచరించుము. వ్యాధుడు అడిగెను. పూజ్యుడా ధర్మవత్సలమైన శబరీ యను ఆమె ఎవరు?

తన్నామ్నా ప్రథితం తీర్థం కథమాపీద్య దాండజ ।

కపోత ఉవాచ -

అసౌ నిషాదయో షాసీ చ్ఛబరీ ధర్మచారిణీ ॥ 57

ఖగలారా! ఆ తీర్థము ఆమె పేరున ఎలా ప్రసిద్ధి నొందెను. కపోతము తెలిపెను. ఈమె నిషాద స్త్రీయై యుండి ధర్మమార్గ మున నడచు చుండెను.

త్రేతాయామత్ర శుశ్రూషమకరోత్వారి క్షాంక్షిణాం ।
సంమార్జయంతి భక్తాసౌ నిత్యమాశ్రమ చత్వరం ॥ 58

త్రేతాయుగమున ఇచట శబరి సాదుసంతుల సేవ చేయు చుండెను. భక్తితో రోజు ఆశ్రమము చిమ్మి శుద్ధిచేయు చుండెను.

మునిభ్యః ప్రదదౌ నీత్వా వన్యవస్తూని యత్నతః ।
స్నేహేబాలకాం స్తత్ర లాలయం తపస్వినాం ॥ 59

అడవి యందలి పండిన వస్తువులను తెచ్చి మునులకు ఇచ్చుచుండెను. మరియు స్నేహముగా వారి పిల్లలను లాలించు చుండెను.

ఇత్థం కలిపయే కాలేగతే తత్రత్య తాపసాః ।
దృష్ట్వా తాం భక్తి సంపన్న మిదమాహర్పయాన్వితా ॥ 60

ఈ విధముగా చాలాకాలము గడువచుండగా ఆతపస్వులు భక్తి సంపన్నయైన ఈమెను చూసి దయపూర్ణులై ఇలా పలికిరి.

అయే భక్తాసినామే త్వం తవశ్రేయో భవిష్యతి ।
అస్యాశమే మహాతోయం వర్తతే తీర్థముత్తమం ॥ 61

అమ్మా! నీవు భక్తురాలివి. నీకు మంగళమగును. ఈ ఆశ్రమ మందు ఉత్తమ తీర్థము గలదు.

స్నాత్వాత్ర మితాహారా రామనామ సదాజప ।
తద్దర్శనం మదా భూయాత్తదా ముక్తా భవిష్యసి ॥ 62

ఆ తీర్థమున స్నానమాచరించి మితఆహారియై సర్వదా రామనామమును జపించుము. ఎపుడు అతని దర్శన మగునో అపుడు నీవు ముక్తిని పొందెదవు.

దశాననాది దైత్యానాం వినాశాయ స లక్ష్మణః ।
సభార్యో రాఘవో భ్యేత్య వనమాశ్వాస్య తాపసాన్ ॥ 63

దశాననాది రాక్షసులు వినాశముకై లక్ష్మణ, భార్యతో వనమును చేరిన రాముడు తపస్వులకు ఆశ్వాసన నిచ్చి యున్నాడు.

ఇదా నీం చిత్రకూటాద్రావాశ్రమే వసతి ప్రభుః ।
రామణేన హృతాం భార్యాం వచ్చిన్వన్దం దకాననే ॥ 64

ప్రభు శ్రీరామచంద్రుడు ఇపుడు చిత్రకూట పర్వతమున ఆశ్రమమును కట్టుకొని వసించుచున్నాడు. రావణునిచే అపహరించబడిన తనభార్యను దండాకావనమున వెదకుచూ,

అగమిష్యతి స్తోత్రైవ తావద్ధ్యాన పరాభవ ।
ఇత్యాదిష్టా తపోవృద్దైః శబరీ ధర్మచారిణి ॥ 65

నీ స్తుతి ధ్యానముచే శ్రీరాముడు వచ్చును. అందుచే అతని ధ్యానమున లీనమగును. ఇలా తపోవృద్దులు ధర్మచారిణియై శబరికి ఆదేశించిరి.

నిత్యం తీర్థోదకే స్నాత్వా రామనామ జజాపసా ।
దశానన్న హృతాం భార్యధరామో మహోవనే ॥ 66

శబరి నిత్యము తీర్థోదకమున స్నానము చేసి రామ నామమును జపించసాగెను. దశకంఠునిచే సీత అపహరించ బడినపుడు శ్రీరాముడు ఈ మహోవనమున,

విచిన్వన్ జానకీమేతదాజగాను తపోవనం ।
ధనుర్బాణధరం శాంతం లక్ష్మణేన సమన్వితం ॥ 67

జానకిని వెదుకుచూ ఈ తపోవనమునకు వచ్చెను. విల్లంబు లను ధరించిన శాంతచిత్తుడైన లక్షణునితో జతగూడి యుండెను.

రామమందీనర శ్యామం దృష్ట్వా నందాస్రుపూరితా ।
ప్రణమ్య దండనద్భూమౌ స్తుతించక్రే ముదాన్వితా ॥ 68

కలువపూలవలె శ్యామలవర్ణుడైన రాముని చూసి ఆనందా శ్రువులు రాల్చుచూ, దండప్రణామములచే సంతోషంగా స్తుతింప సాగెను.

శబరీ ఉవాచ - శబరి తెలిపెను.

రామరామ నమామ్యద్య తవదింఘ్రి పంకజం ।
సమాశ్రితాఘ హరణం మమతారక మాదిమం ॥ 69

రామ! రామ! నీ దివ్య పాదపద్మములకు నమస్కరించెదను అదిదేవుడు, పాపహారకుడు, నా ఉద్దారకుడు అయిన నిన్ను ఆశ్రయించియున్నాను.

జనామి త్వాం పరాత్మానం జగదానంద కారణం ।
మాయాజాల వినిర్ముక్తం సచ్చిదానంద విగ్రహం ॥ 70

అరవై యారవ అధ్యాయము
ఆమ్రకూటేశ్వర మహిమ.

సూత ఉవాచ – సూతుడు తెలిపెను.

తతః సప్తర్షయః ప్రాజ్ఞాః కిష్కింధాం సముపాగతాః ।
ఆమ్రకూటాహ్వయ క్షేత్రం దదృశుః పుణ్యవర్ధనం ॥ 1

అక్కడి నుండి ప్రాజ్ఞులైన సప్తర్షులు కిష్కిందకు వచ్చి చేరిరి. అచట పుణ్యవర్ధకమైన ఆమ్రకూటమను క్షేత్రమును చూసిరి.

తత్ర పుష్పఫలో పేతాన్సువాసిత దిగంతరాన్ దృష్ట్వా ।
నానా విధాన్వృక్షాన్ సరాంసి వివిధానిచ ॥ 2

అచట దిగంతమువరకు వ్యాపించియున్న ఫలపుష్పముల సువాసన వివిధ వృక్షములను, వివిధమైన సరస్సులను చూసి

సంతుష్ట మనసః సర్వే ప్రపచ్ఛుః క్షేత్రపాలకం ।

ఋషయ ఊచుః

కిమిదం క్షేత్రం అత్యంత రమణీయం సుఖాస్పదం ॥ 3

హర్షచిత్తులైన వారు క్షేత్రపాలుని ప్రశ్నించిరి. అత్యంత రమణీయమూ సుఖాశ్రయము అయిన ఈ క్షేత్రమేదని?

విరాజతే మహాలింగం పారమేశ్వర మవ్యయం ।
అస్య మహత్వమతులం వదాస్మాకం దయాకర ॥ 4

అవ్యయుడైన పరమేశ్వరుని మహాలింగము విరాజిల్లు చున్నది. ఓ దయాశాలి! అతులమగు దీని మహిమను మనకు తెలుపుము.

క్షేత్రపాల ఉవాచ – క్షేత్రపాలుడు తెలిపెను.

ఆమ్రకూటస్య మహాత్త్మ్యం సర్వాభీష్ట ప్రదాయకం ।
వక్ష్యామి యుష్మదానంద వృద్ధ్యర్థం మునిపుంగవాః ॥ 5

మునివర్యులా! సర్వాభీష్టములను తీర్చగల ఆమ్రకూట మహిమను అధికమగు ఆనందము కలుగుటకై మీకు తెలిపెదను.

పురా శమనిధిర్నామా కాత్యాయన కులోద్భవః ।
మాతాపితృవిహీనో భూజ్జాత్యంధో చంధు వర్జితః ॥ 6

పూర్వము కాత్యాయన కుల సంజాతుడైన శమనిధి యను జాత్యంధుడు మాతాపితృ విహీనుడై బంధు బాంధవులచే వర్జితుడై యుండెను.

భూసురైరుపనీతః సన్ప్రజ్ఞాన చక్షుర్జితేంద్రియః ।
శైవానుష్ఠాన తత్త్వజ్ఞః శివభక్తి పరాయణః ॥ 7

బ్రాహ్మణులచే ఉపనీతుడై, ప్రజ్ఞావంతుడు, జితేంద్రియుడు శైవానుష్ఠాన తత్త్వమును తెలిసినవాడు శివభక్తపరాయణుడూ అయి యుండెను.

సదా పంచాక్షరీ మంత్ర జజాప పరమాదరాత్ ।
వినా లింగార్చనం కించిన్నాశ్నాతి క్షుధితోసి సః ॥ 8

సదా పంచాక్షరీ మంత్రమును ఆదరముతో జపించు చుండెను. ఆకలి గొన్ననూ, లింగార్చన చేయనిదే ఏమియూ స్వీకరించెడి వాడు కాదు.

స్నానార్థమే కదా తుంగామాజగామ నభస్యసౌ ।
ప్రవాహే పతితోజ్ఞానాదగాధ సలిలే క్షరన్ ॥ 9

స్నానార్థము ఒకసారి తుంగా నదికి వచ్చెను. అంధుడై నందున తెలియక రభసముగా ప్రవహించు నదిలోపడి నీటిలో కొట్టుకో పోయెను.

ఉచ్చైరువాచ సంత్రస్తశ్శివే వగతిర్మమ ।
అప్లావ్యమానో వేగేన ప్రవాహేణ మహీయసే ॥ 10

సంత్రస్తుడైన అతడు శివుడే గతియని గట్టిగా అరిచెను. వేగముగా ప్రవహించు ప్రవాహముతో అతడు తేలిపోవుచుండెను.

తతో విదూరే పంపాయా స్తీరమాప విధేర్బలాత్ ।
కూలపాదప మూలాని ధృత్వా ప్రాప సరిత్తటం ॥ 11

ఆవిధముగా సమీపమున నందుగల పంపాక్షేత్రము తటమునకు దైవబలమున వచ్చెను. తీరమున గల వృక్ష వేళ్లను గట్టిగా పట్టుకొని నదీతటము చేరెను.

శ్రాంతస్తదాతటేస్థిత్వా సస్మారశివమవ్యయం ।
శివ శంభో మహేశాన తవ పదాంబుజ ద్వయం ॥ 12

ఆయాసముతో అలసియున్న అతడు తటము నందు నిలిచి అవ్యయుడైన శంభువును స్మరించెను. శివా, శంభువా, ఈశానుడా నీపాద యుగళమును నమ్మియున్నాను.

భవతారమేవాద్య శరణం నాన్యదస్తి మే ।
ఇతి స్మరన్మహారణే సంచచార సుదుఃఖితః ॥ 13

భవతారకుడైన నిన్నే మొర బోయియున్నాను. నాకన్యగతి లేదు అని దుఃఖించుచూ మహారణ్యమును తిరుగు చుండెను.

కిష్కింధా

అరవై ఏడవ అధ్యాయము

రంగనాథ నామక శివప్రాదర్భావము

సూత ఉవాచ – సూతుడు తెలిపెను.

అథతే సప్తమునయః కిష్కింధా నగరాంతికం ।
సంప్రాప్య భక్తియోగేన పప్రచ్ఛుః క్షేత్రనాయకం ॥ 1

అచటి నుండి ఆ సప్తర్షులు కిష్కింధా నగరమును సమీపించి భక్తియోగముతో క్షేత్ర నాయకును ప్రశ్నించిరి.

సమీపే నగరం భాతి కస్యేదం కౌతుకాస్పదం ।
ప్రాకార గోపురస్ఫార పరిఖాభి లంకృతం ॥ 2

సమీపమున నగరమును గలదు. కుతూహలమునకు కారణ మగుచున్నది. గోపురములు, విశాలప్రాకారములు, కందకము లతో అలంకృతమై అలంకృతమై

పురందర పురేణాపి స్పర్ధమానం సమృద్ధిమత్ ।
ఆసన్నే సమ్యగాభాతి దేవతాతనం శుభం ॥ 3

సమృద్ధి విషయమున పురందరుని అమరావతితో స్పర్ధించు నటుల అగుపించును. శుభ దేవమందిరముతో చక్కగా శోభించు చున్నది.

ప్రాసాదః కస్యదేవస్య వైజయంతో సమో వరః ।

క్షేత్రపాల ఉవాచ –

సంప్రవక్ష్యామి యుస్మాకం కిష్కింధాఖ్యాముత్తమం ॥ 4

ఈ ప్రాసాదము ఏ దేవునిది? వైజయంతమునకు సమానముగా నున్నది అని ప్రశ్నింపగ క్షేత్రపాలుడు తెలిపెను. ఉత్తమమైన ఈ కిష్కింధా ఉపాఖ్యానమును మీకు తెలిపెదను.

ఏకాగ్రమనసః సర్వే శ్రుణుధ్వం మునిసత్తమాః ।
అహల్యా తనయౌ తీర్థమహిమ్నా కీశరూపిణౌ ॥ 5

మునివరులారా! ఏకాగ్రమనస్సు గలవారై వినుడు. అహల్యా పుత్రులిద్దరు, తీర్థ మహిమచే వానరరూప ధారులై యుండిరి.

వాలి సుగ్రీవ నామానే మాత్రాజ్ఞాస్తౌ మహావనే ।
చరంతే క్షుత్పిపాసాభ్యాం పీడితా గతి బాలకౌ ॥ 6

వాలి, సుగ్రీవ యను పేరుగల వారిద్దరూ తల్లి ఆజ్ఞచే మహావనముందు సంచరించుచుండ ఆకలి దాహముతో బాధ పడుచుండిరి.

నిరీక్ష్య నారదోప్యాహ వానరౌ కరుణాన్వితః ।
యువ యోర్జ్ఞాన దృష్ట్యాహం వేద్మిపుర్వా పరస్థితి ॥ 7

నారదులు ఆ వానరులను గమనించి కరుణ గలిగి, వారితో ఇలా పలికిరి. మీ పూర్వాపరములను జ్ఞానదృష్టితో నేను తెలుసుకున్నాను.

శుక్ర సూర్య సుతౌ తీర్థమహిమ్నా కీశతాం గతౌ ।
తథాపి యువమోరేకముపాయం సుఖదం బ్రువే ॥ 8

ఇంద్రుడు సూర్యుని కుమారులైన మీరు తీర్థమహిమ వలన వానరత్వమును పొందియున్నారు. అయిననూ సుఖదాయకమైన ఉపాయమొకటి మీ ఇద్దరికీ తెలిపెదను.

ఇదా నీం వాసవానితౌ హేమకూటే మహానగే ।
యువయోః సుఖవృర్ధ్యర్థం కురుతస్తప ఉత్తమం ॥ 9

ఇపుడు మీరిద్దరూ హేమకూటమను మహాపర్వతమున నివసించుచూ మీకు సుఖము వృద్ధించుటకు ఉత్తమమైన తపమును చేయుడు.

తద్యువామపి తత్రైవ గత్వా భక్తి సమన్వితౌ ।
శ్రీవిరూపాక్ష ముద్దిశ్య కురుతం తపముత్తమం ॥ 10

మీరిద్దరూ అక్కడికి వెళ్లి భక్తిపూర్వకముగా శ్రీవిరూపాక్షుని గూర్చి ఉత్తమ తపమును ఆచరింపుడు.

శివప్రసాదా ద్యువయోః శ్రేయో భవతి శాశ్వతం ।
ఏవం నారద వాక్యం తే శ్రుత్వా బ్రూతాం కిశోరకౌ ॥ 11

ఈశ్వరుని కృపతో మీ ఇద్దరికి శాశ్వతమగు శ్రేయస్సు కలుగును. నారదుల ఈ మాటలను విన్న ఆ కిశోరులిద్దరు ఇలా పలికిరి.

కథం కర్తవ్య మానాభ్యామీశ్వరార్థం తపః పరం ।
కథమావం మహాదేవో బిభర్తి కరుణాకరః ॥ 12

ఈశ్వరుని గూర్చి మనచే ఉత్తమ తపము ఎలా సాధ్యము? కరుణాకరుడైన మహదేవుడు ఎలా మాపై కరుణచూపి రక్షించును?

త్వమాపయోర్గురు ర్దుఃఖసాగరాత్తారయాశునౌ ।
ఇతి తద్వచనం శ్రుత్వా నారదః కరుణాన్వితః ॥ 13

మీరపుడే మమ్మల్ని దుఃఖసాగరముచే పారుచేసి యున్నారు మీరే మా గురువులు" వారి మాటలను విని కరుణాన్వితుడైన నారదుడు.

ఉపాదిదేశ సర్వేశ విరూపాక్ష మహామనుం ।
ఉపదిష్టో నారదేన క్షేత్రేస్మిన్ పుణ్యకాననే ॥ 14

సర్వేశ్వరుడైన విరూపాక్షుని మహామంత్రమును ఉపదేశించెను. నారదులచే ఉపదేశము నొంది వాలి - సుగ్రీవులు ఆ పుణ్యక్షేత్ర మహాకాననమున

శ్రీవిరూపాక్ష ముద్దిశ్య తపశ్చ కృతాదరాత్ ।
ఉపవాస కృశా దాంతౌ సదా ధ్యానపరాయణౌ ॥ 15

విరూపాక్షుని గూర్చి బహు ఆదరముగా తపము చేసిరి. ఉపవాసము చేస్తూ, అరిషడ్వర్గములను జయించినవారై సర్వదా ధ్యానమగ్నులై యుండెడి వారు.

కేన తుష్టో మహాదేవ ప్రత్యక్షో భూదుమాధవః ।
ఉవాచ సుధాసారైః సేచయన్నివ సూక్తిభిః ॥ 16

దానిచే సంతుష్టుడైన ఉమాధవుడు ప్రత్యక్షుడై అమృతము కురిపించు మధుర వాణితో వారిని పలుకరించెను.

భో! వత్సౌ భువనఖ్యాత వీర్యౌ వానర పార్థివౌ ।
యువా మైశ్వర్య సంపన్నౌ భవతం బలశాలినౌ ॥ 17

ఓ వత్సులారా! మీరిద్దరూ లోకమున కీర్తినొంది వానర రాజులై. ఐశ్వర్య సంపన్నులు, బలశాలులూగా జీవింపుడు.

ఇత్థం తయోర్వరం దత్వా విశ్వకర్మాణ మబ్రవీత్ ।
అనయోః సుఖవాసార్థం పురం వానరయోర్వరం ॥ 18

ఇలా వారిద్దరికి వరమును అనుగ్రహించి. శంకరుడు విశ్వకర్మునికి ఇలా ఆజ్ఞాపించెను. ఈ ఇద్దరు వానరులు సుఖవాసమునకు ఉత్తమ పురమునొకటిని,

రచయేతి ముదాజ్ఞాప్య ధ్యానగమో భవత్ప్రభుః ।
విశ్వకర్మా గిరీశాజ్ఞాం ధృవా శిరసి బుద్ధిమాన్ ॥ 19

నిర్మించుమని సంతోషముగా తెలిపి, ప్రభువు, స్వయం ధ్యానమున మునిగెను. గిరిజేశుని ఆజ్ఞను విశ్వకర్ముడు శిరోధారణచేసి.

రచయామా కిష్కింధపురం దేవపురోపమం ।
రాజ్యేభిషిచ్య విధివద్పాలనం బలశాలినం ॥ 20

దేవనగరికి సరిసమానముగా కిష్కిందా నగరమును రచించెను. బలశాలియగు వాలికి విధిపూర్వకముగా పట్టాభిషేకము చేసి రాజ్యమున నిలిపెను.

జగామ విశ్వకర్మాపి స్వర్గలోకం ముదాన్వితః ।
కిష్కింధాం పాలయామాస వాలీబలసమన్వితః ॥ 21

తనకార్యమును ముగించిన దేవశిల్పి విశ్వకర్ముడు సంతసముగా స్వర్గమునకు వెడలెను. బలశాలియైన వాలి. తన సైన్య బలముతో కిష్కింధను పరిపాలించెను.

హనుమన్నల, నీలాది కపివర్యై ర్మహాత్మభిః ।
సుగ్రీవో యువరాజో భూదగ్రజస్య మతేస్థితః ॥ 22

హనుమ, నల, నీలాది కపివరేణ్యుతో గూడి అగ్రజుని అభిప్రాయము వలె యువరాజుడై అతనితో గూడి యుండెను.

ఏవం వాలిని కిష్కింధాం పాల్యమానే మహాబలే ।
ఏకదా రాక్షసోభ్యేత్య దుంధభిర్నామ దుర్మదః ॥ 23

ఈ విధముగా వాలి కిష్కిందను పాలించుచుండగా ఒకసారి దుర్మదుడైన దుంధుబి యను రాక్షసుడు

వాలినా యుద్ధమాకాంక్షన్ జగర్జన నగరాంతికం ।
తచ్ఛృత్వా సహమానో సౌవాలీ బలవతాం బలీ ॥ 24

నగర సమీపమునకు వచ్చి యుద్ధాకాంక్షియై గట్టిగా గర్జించెను. దానిని విని సహనము గోల్పోయి బలిష్టులందు బలశాలియైన వాలి.

యుద్ధాయ నిర్యయౌ తూర్ణం సుగ్రీవ సహితః పురాత్ ।
ప్రవృత్తః సమరోభీమో దైత్యవానర యోర్మహాన్ ॥ 25

విల్లంబులతో సుగ్రీవ సమేతుడై యుద్ధమునకు సిద్ధుడై, నగరము నుండి వెడలెను. దైత్య వానరులందు మహా భీమభయంకర యుద్ధము సంఘటించెను.

ముష్టిభిర్నఖదంతైశ్చ పర్వతానొకహైరపి ।
తద్యుద్ధమభవ ద్ఘోరం వృత్ర - వాసవయోర్వివ ॥ 26

ముష్టితో గ్రుద్దుచూ, గోళ్లతో పరచుచూ, పళ్లతోకరచుచూ, పర్వతములనెత్తి పరస్పర పైవేయుచూ, జరుగుచున్న ఆ ఘన ఘోర యుద్ధము ఇంద్ర - వృత్రాసురుల నడుమ యుద్ధమువలె యుండెను.

వాలినో బలవేగం సదుందభిః సోదు మక్షయః ।
పాలాయమానః సంత్రస్తః ప్రవిశేష గిరేర్గుహారి ॥ 27

మీరపుడే మమ్మల్ని దుఃఖసాగరముచే పారుచేసి యున్నారు మీరే మా గురువులు" వారి మాటలను విని కరుణాన్వితుడైన నారదుడు.

ఉపాదిదేశ సర్వేశ విరూపాక్ష మహామనుం ।
ఉపదిష్టౌ నారదేన క్షేత్రేస్మిన్ పుణ్యకాననే ॥ 14

సర్వేశ్వరుడైన విరూపాక్షుని మహామంత్రమును ఉపదేశించెను. నారదులచే ఉపదేశము నొంది వాలి - సుగ్రీవులు ఆ పుణ్యక్షేత్ర మహాకాననమున

శ్రీవిరూపాక్ష ముద్దిశ్య తపశ్చ కృతాదరాత్ ।
ఉపవాస కృశా దాంతౌ సదా ధ్యానపరాయణౌ ॥ 15

విరూపాక్షుని గుర్చి బహు ఆదరముగా తపము చేసిరి. ఉపవాసము చేస్తూ, అరిషడ్వర్గములను జయించినవారై సర్వదా ధ్యానమగ్నులై యుండెడి వారు.

కేన తుష్టో మహాదేవ ప్రత్యక్షో భూదుమాధవః ।
ఉవాచ సుధాసారైః సేచయన్నివ సూక్తిభిః ॥ 16

దానిచే సంతుష్టుడైన ఉమాధవుడు ప్రత్యక్షుడై అమృతము కురిపించు మధుర వాణితో వారిని పలుకరించెను.

భో! వత్సౌ భువనఖ్యాత వీర్యౌ వానర పార్థివౌ ।
యువా మైశ్వర్య సంపన్నౌ భవతం బలశాలినౌ ॥ 17

ఓ వత్సులారా! మీరిద్దరూ లోకమున కీర్తినొంది వానర రాజులై. ఐశ్వర్య సంపన్నులు, బలశాలులూగా జీవింపుడు.

ఇత్థం తయోర్వరం దత్త్వా విశ్వకర్మాణ మబ్రవీత్ ।
అనయోః సుఖవాసార్థం పురం వానరయోర్వరం ॥ 18

ఇలా వారిద్దరికి వరమును అనుగ్రహించి. శంకరుడు విశ్వకర్మునికి ఇలా ఆజ్ఞాపించెను. ఈ ఇద్దరు వానరులు సుఖవాసమునకు ఉత్తమ పురమునొకటిని,

రచయేతి ముదాజ్ఞాప్య ధ్యానగమో భవత్ప్రభుః ।
విశ్వకర్మా గిరీశాజ్ఞాం ధృవా శిరసి బుద్ధిమాన్ ॥ 19

నిర్మించుమని సంతోషముగా తెలిపి, ప్రభువు, స్వయం ధ్యానమున మునిగెను. గిరిజేశుని ఆజ్ఞను విశ్వకర్ముడు శిరోధారణచేసి.

రచయామా కిష్కింధపురం దేవపురోపమం ।
రాజ్యేభిషిచ్య విధివద్వాలనం బలశాలినం ॥ 20

దేవనగరికి సరిసమానముగా కిష్కిందా నగరమును రచించెను. బలశాలియగు వాలికి విధిపూర్వకముగా పట్టాభిషేకము చేసి రాజ్యమున నిలిపెను.

జగామ విశ్వకర్మాపి స్వర్గలోకం ముదాన్వితః ।
కిష్కింధాం పాలయామాస వాలీబలసమన్వితః ॥ 21

తనకార్యమును ముగించిన దేవశిల్పి విశ్వకర్ముడు సంతసముగా స్వర్గమునకు వెడలెను. బలశాలియైన వాలి. తన సైన్య బలముతో కిష్కింధను పరిపాలించెను.

హనుమన్నల, నీలాది కపివర్యై ర్మహాత్మభిః ।
సుగ్రీవో యువరాజో భూదగ్రజస్య మతేస్థితః ॥ 22

హనుమ, నల, నీలాది కపివరేణ్యుతో గూడి అగ్రజుని అభిప్రాయము వలె యువరాజుడై అతనితో గూడి యుండెను.

ఏవం వాలిని కిష్కింధాం పాల్యమానే మహాబలే ।
ఏకదా రాక్షసోభ్యేత్య దుంధభిర్నామ దుర్మదః ॥ 23

ఈ విధముగా వాలి కిష్కిందను పాలించుచుండగా ఒకసారి దుర్మదుడైన దుంధుబి యను రాక్షసుడు

వాలినా యుద్ధమాకాంక్షన్ జగర్జన నగరాంతికం ।
తచ్ఛృత్వా సహమానో సావాలీ బలవతాం బలీ ॥ 24

నగర సమీపమునకు వచ్చి యుద్ధాకాంక్షియై గట్టిగా గర్జించెను. దానిని విని సహనము గోల్పోయి బలిష్టులందు బలశాలియైన వాలి.

యుద్ధాయ నిర్యయౌ తూర్ణం సుగ్రీవ సహితః పురాత్ ।
ప్రవృత్తః సమరోభీమో దైత్యవానర యోర్మహాన్ ॥ 25

విల్లంబులతో సుగ్రీవ సమేతుడై యుద్ధమునకు సిద్ధుడై, నగరము నుండి వెడలెను. దైత్య వానరులందు మహా భీమభయంకర యుద్ధము సంఘటించెను.

ముష్టిభిర్నఖదంతైశ్చ పర్వతానొకపైరపి ।
తద్యుద్ధమభవ ద్ఘోరం వృత్ర - వాసవయోర్వివ ॥ 26

ముష్టితో గ్రుద్దుచూ, గోళ్లతో పరచుచూ, పళ్లతోకరచుచూ, పర్వతములనెత్తి పరస్పర పైవేయుచూ, జరుగుచున్న ఆ ఘన ఘోర యుద్ధము ఇంద్ర - వృత్రాసురుల నడుమ యుద్ధమువలె యుండెను.

వాలినో బలవేగం సదుందభిః సోదు మక్షయః ।
పాలాయమానః సంత్రస్తః ప్రవిశేష గిరేర్గుహారి ॥ 27

వాలి మరియు దుందుభుల బలము మరియు పోరాడు వేగమును వర్ణింపనసాధ్యము. భయపడి పరిగెదుచున్న దుందుభి ఒక గిరియందలి గుహను ప్రవేశించగ, అతనిని చూసి

ప్రవిశన్నతు సుగ్రీవమాహ వీరోలి ధైర్యవాన్ ।
అ సహాయోసురం యావదహం హత్వాబిలాద్భహిః ॥ 28

వీరుడు, ధైర్యవంతుడూ అయిన వాలి సుగ్రీవునితో ఇలా పలికెను. అసహాయకుడైన ఆ రాక్షసుని చంపి ఈ బిలము నుండి బయటికి

ఆగమిష్యామి తావత్వం ద్వారితిష్ఠ సురక్షకః ।
ఇత్యుక్త్వానుజం వాలీ ప్రవిశ్యబిలమాత్మవాన్ ॥ 29

వచ్చెదను. అంతవరకూ ఈ బిలద్వారమున సుగ్రీవుడా! నీవు రక్షకుడవై నిలువుము అని సోదరునికి చెప్పి వాలి బిలమును స్వయం ప్రవేశము చేసెను.

అమాసమసురేణా సౌ యుద్ధం చక్రేతి భైరవం ।
మాసాత్పరం గుహాద్వారాన్నిర్గతం రుధిరం బహు ॥ 30

ఒకమాస పర్యంతము రాక్షసునితో భీకర యుద్ధము చేసెనని అనిపించెను. నెల గడచిన పిదప బిలద్వారముచే అధికమగు రక్తము ప్రవహించసాగెను.

సుగ్రీవః శోణితం దృష్ట్వా గుహాయాం భయవిహ్వలః ।
అసురేణ హతోవాలీ మృతస్త చ్ఛోణితం ఖలు ॥ 31

సుగ్రీవుడు గుహనుండి వచ్చిన రక్తముచూసి భయ విహ్వలుడై అసురునిచే అగ్రజుడై వాలి హతుడైనని ఇది అతని రక్తమేనని భావించెను.

ఇతి మత్వాతి దుఃఖార్తః శిలయాగహ్వ రాననం ।
పిదాయ పురమాగత్య చక్రే తసౌర్ధ్వదైహికం ॥ 32

అధికశోకాన్వితుడై గుహద్వారమును శిలతో మూసి నగరమునకు వచ్చి అతని పేరుతో ఔర్ధ్వ క్రియలను చేసెను.

ఆలోచ్య మంత్రిణః సర్వే జాంబవత్ప్రముఖాస్తదా ।
అనిచ్ఛంతం చ సుగ్రీవం చక్రుః సామ్రాజ్య నాయకం ॥ 33

జాంబవత మొదలగు ప్రముఖ మంత్రులు సమాలోచన చేసి, సుగ్రీవునికి ఇష్టము లేకున్ననూ బలవంతముగా సామ్రాజ్య నాయకుని చేసిరి.

విహత్యతరసా వాలీ దైత్యం నిర్గంతు మాయయో ।
గుహాపిపద్ధ పాషాణం దృష్ట్వా క్రోధ సమన్వితః ॥ 35

వాలి రాక్షసుడి సంహరించి గుహ నుండి బయటికి రావడానికై వేగముగా వచ్చెను కాని గుహద్వారమును మూసియున్న, శిలను చూసి కోపోద్రిక్తుడయ్యెను.

పదానిహత్య నిస్సార్య తచ్ఛిలం ప్రాపపత్తనం ।
రాజ్యాభిషిక్తి మనుజం దృష్ట్వా రుషః కపీశ్వరః ॥ 36

కాలితో తన్ని ఆ శిలను బ్రద్దులు గొట్టి నగరమునకు వచ్చెను. రాజ్యభీషక్తుడైన సోదరుని చూసి కపీశ్వరుడైనవాలి.

ఉవాచ భర్త్సయన్థూర్తరే వానర దుర్మతే ।
అంతర్మయి ప్రవిష్టే త్వం పదాయశిలయా గుహాం ॥ 37

తమ్ముడైన సుగ్రీవుని నిందించుచూ, ఓయీ దుర్మతీ, ధూర్తుడా నేను గుహను ప్రవేశించగానే, నీవు శిలతో గుహద్వారమును మూసి

ఆతతాయి పురం ప్రాప్య సుహృజ్జాయా సమన్వితః ।
నిష్కంటకమిదం రాజ్యం ప్రాప్య తుష్ఠసి యత్ఫల ॥ 38

వధార్హుడా, నగరము వచ్చి, మిత్రులతో నిష్కంటకమైన రాజ్యమును పొంది సంతోషించుచున్న దుష్టుడవు.

తన్నిహ దూరాత్మానా మిత్యుక్త్వా నిజఘానతం ।
ప్రార్థయంతిమపి క్రోధాత్సుగ్రీవం పత్వతాదిభిః ॥ 39

దురాత్ముడవైన నిన్ను చంపెదను అని అనుచూ ప్రార్థించుచున్ననూ వినక క్షమించక, క్రోధవశుడై పర్వతాదులచే ఘాతించెను.

నిర్గత్య నగరాత్సోపి ఋష్యమూకముపావసత్ ।
దైత్య దేహస్య విక్షేపాత్కృద్ధలేపసశాపతః ॥ 40

సుగ్రీవుడు కిష్కిందను విడిచి ఋష్యమూక పర్వతమున నివసించెను. రాక్షసుని దేహమును విసిరిన కారణమున ఋషి శాపమునకు గురియైన వాలి. ఋష్యమూక పర్వతమునకు ప్రవేశించ నిషిద్ధుడైయ్యెను.

(దుంధుబి సోదరుడు ఆ మాయావి దేహమును చిమ్మిన కారణమున అది మతంగముని ఆశ్రమ పరిసరము పడి కలుషితమైన కారణమున ఋష్యమూక పర్వతము నందు నివసించుచున్న మతంగముని వాలికి శాపమిచ్చి అక్కడికి రాకుండా, అడ్డుపడెను.)

అత్రనాయాతి వాలీతి నిర్భయం స్థితవాన్కపిః ।
అథాసుర హృతాం భార్యాం మార్గమాణో రఘూద్వహః ॥ 41

వాలి ఇక అచటకు రాదని తెలిసి సుగ్రీవుడు నిర్భీతుడై స్థిరముగా నిలిచెను. ఆపైన భార్యయైన సీతను రాక్షసుడు అపహరించగ రఘువంశోద్భవ శ్రీరాముడు అక్కటికి

అజగామాథ సుగ్రీవస్తేన సఖ్యం చకారసః ।
రామోపి వాలినం హత్వా సుగ్రీవం రాజ్యపాలకం ॥ 42

వచ్చెను, మరియు సుగ్రీవుడు అతనితో స్నేహము చేసెను. శ్రీరాముడు వాలిని చంపి సుగ్రీవుని రాజ్య పాలకునిగా చేసెను.

రాజ్యేభిషిక్తః సుగ్రీవం ముదా ప్రాహ రఘూద్వహం ।
గచ్ఛ సౌమ్య సుఖేనత్వం కిష్కింధాం పాలయాధునా ॥ 43

రాజ్యాభిషక్తుని చేసి రాఘవుడు సంతోషముగా సుగ్రీవునితో ఇలా చెప్పెను. సౌమ్యుడా! నీవు వెళ్లి సుఖముగా కిష్కింధను పాలింపుము.

ఇత రామ వచః శ్రుత్వా సుగ్రీహః ప్రాహ నమ్రధీః ।
అసహాయః కథం రాజ్యం పాలయామి సకంటకం ॥ 44

అని అన్న రాముని మాటలను విన్న సుగ్రీవుడు వినమ్రతతో ఇలా తెలిపెను. కంటకములతో నిండిన ఈ రాజ్యమును అసహాయుడైన నేను ఎలా పాలించను?

అసురాః సంచరిష్యంతి దండకే పాపి సఃఖలాః ।
ఈతిబాధాశ్చ బహ్వ్యాస్తత్కథం మమసుఖం భవేత్ ॥ 45

పాపులూ, దుష్టులూ అయిన రాక్షసులు దండకవనమున సంచరించుచున్నారు. మరియు ఈతిబాధలు ఇలా అసంఖ్యముగా నుండగ నాకు సుఖము ఎలా జరుగును?

ఏవం సుగ్రీవ వచనం శ్రుత్వా రామః ప్రహృష్టధీః ।
రహసి ప్రాహ ధర్మాత్మా సుగ్రీవం వినయాన్వితం ॥ 46

సుగ్రీవుని ఆ మాటలను విని సంతుష్టుడై, ధర్మాత్ముడైన రాముడు, వినయశీలుడైన సుగ్రీవునికి రహస్యముగా ఇలా తెలిపెను.

సుగ్రీవ శ్రుణుమద్వాక్యం తవాభ్యుదయ కారణం ।
పంపాపతిర్విరూపాక్షః సమస్త జగతాం ప్రభుః ॥ 47

సుగ్రీవుడా! నీ అభ్యుదయమునకు కారణమగు నా మాటను వినుము. పంపాపతియైన విరూపాక్షుడు సమస్త జగతికి ప్రభువు.

సఏవ సృజతే విశ్వం స ఏవావతి హంతిచ ।
తద్భయాత్పవతే వాతుదయం యాతి భాస్కరః ॥ 48

అతడే విశ్వమును సృజించును. రక్షించును మరియు హరించును. అతని భయముచే పవనుడు గాలిని వీచును మరియు సూర్యుడుదయించును.

పర్జన్యోగ్నిః ప్రచేతాశ్చ స్వస్వకార్య విచక్షణాః ।
సర్వస్వతంత్రో భగవాన్ సర్వేశః సర్వగోచ్యుతః ॥ 49

వరుణుడు వర్షమును కురిపించును. అగ్ని జ్వలించును. ఇలా వీరందరూ స్వకార్యములను విచక్షణతో నిర్వహించెదరు. శ్రీ భగవానుడు సర్వతంత్ర స్వతంత్రుడు, సర్వేశుడు అన్నిటి యందు ప్రవేశింపగల చ్యుతిలేనివాడు.

తదంశజా వయం సర్వేవిశ్వకార్య విచక్షణాః ।
సంగతంచ ప్రజావత్యాం స్వభక్తమపి వాలినం ॥ 50

మనమంతా అతని అంశజులము జగతి కార్య విచక్షణతో పాలింపువారము. తన తమ్ముని భార్యను వశము చేసుకొనియున్న వాలిని, భక్తుడైయున్ననూ, కూడ

దుర్మార్గ నిరతం హత్వామద్రూమేణా మృతం దదౌ ।
ఏవమేవా సురపతీం పరస్త్రీ కాముకం ఖలం ॥ 51

దుర్మార్గియై నందున నాచే హతమార్చి, అతనికి అమృతత్వమును కరుణించెను. ఈ విధముగా రాక్షసరాజు పర స్త్రీ కాముకడైన దుష్టరావణుని

ఘాతయిత్వాతు మద్ద్వారా దదౌ నిర్వాణ మీశ్వరః ।
యదా దుష్టస్స్వభక్తో భూదన్య రూపైస్తదైవతం ॥ 52

నాచే ఘాతినొందించి, ఈశ్వరుడు నిర్వాణమునిచ్చును. ఎపుడు తన భక్తుడు దుష్టడగునో అపుడు అన్యరూపముచే అతనిని కాపాడును.

శిక్షయిత్వాప్యసౌ మోక్షం పక్షపాతాద్ధ దాతిహి ।
విరూపాక్షా సమోదేవో దయాళుర్నాస్తి కశ్చన ॥ 53

దండిచియైననూ సరే, భక్త పక్షపాతియైన ఈశ్వరుడు మోక్షమునే ప్రసాదించును. విరూపాక్షునికి సమానమగు దేవుడు దయామయడు మరియొకడు లేడు.

అనుగ్రహం స్వభక్తానాం దుష్టానాం నిగ్రహం తథా ।
రక్షణం సర్వలోకానాం కరోతి కరుణాకరః ॥ 54

తన భక్తులను అనుగ్రహించి, దుష్టులను నిగ్రహించి, కరుణాకరుడైన శంకరుడు సర్వలోకములను రక్షించును.

యేయథా భావయం తీశం తాంస్తథైవ భజత్య సౌ ।
స్వయం భక్తపరాధీనః శంకరో లోకశంకరః ॥ 55

ఎవరు ఎలా భావించెదరో అటులనే వారిని కాపాడును. ఈశ్వరుడు స్వయం భక్తుల ఆధీనుడు, శంకరుడు లోక శుభంకరుడు.

కృపయా రక్షతీ శస్త్వాభజస్వ తమముమాధవం ।
ఇతి రామ వచః శ్రుత్వా సుగ్రీవః శాంతమానసః ॥ 56

కృపతో ఈశ్వరుడు నిన్ను కాపాడును ఆ ఉమాధవుని సేవించుము. రాముని హితవచనములను విని సుగ్రీవుడు శాంత మనస్కుడయ్యెను

ప్రణమ్య రాఘవం భక్త్యా కిష్కింధా నగరం యయౌ ।
నిత్య మారాధయన్భక్త్యా విరూపాక్షం దయాకరం ॥ 57

రాఘవునికి భక్తితో నమస్కరించి, కిష్కింధకు వెడలెను. దయా మయుడైన విరూపాక్షుని నిత్యమూ భక్తితో ఆరాధించుచూ

దశవర్ష సహస్రాణి సర్వైశ్వర్యయుతో హరిః ।
ధర్మేణ పాలయామాస రాజ్యం నిహత కంటకం ॥ 58

పదివేల సంవత్సర కాలము కపి సుగ్రీవుడు సకల సంపదలను అనుభవించుచూ, రాజ్యకంటకులను నిగ్రహించుచూ, ధర్మమున పరిపాలించు చుండెను.

అథ దశరథి ప్రాప వైకుంఠం నిజమందిరం ।
ఇతి వృత్తాంత మాకర్ణ్య దుఃఖితో భూత్కపీశ్వరః ॥ 59

అటుపిమ్మట శ్రీరాముడు తన నిజమందిరమగు వైకుంఠ మునకు వెడలెను. కపీశ్వరుడు ఈ సంగతి తెలిసి అతీవ దుఃఖించెను.

రామమిందీవరశ్యామ ముదారాంగమతి ప్రియం ।
కథం పశ్యామి నేత్రాభ్యాం త్రాతారం మనుసంకటే ॥ 60

ఇందీవరశ్యాముడు, ఉదార చరితుడు, నాకు అతి ప్రియు డైన రాముడు నా సంకటమున రక్షకుడైన శ్రీరాముని ఈ కన్నులో ఇంకెలా చూడను?

కింమే రాజ్యేన శూన్యేన కిం భోగైర్వర్జితేనవా ।
గతస్స్వధామ శ్రీరామస్త్యక్త్వామాం వృజినార్ణవే ॥ 61

శూన్యమైన రాజ్యము, లేక భోగ భాగ్యములచే ఏమి ప్రయోజనము? శ్రీరామచంద్రుడు నన్ను పాపసాగరమున విడిచి, తన స్వస్థానమునకు వెడలెను.

ఇతి చింతా తురో భూత్వా త్యక్త్వా రాజ్యసుఖానిచ ।
వైరాగ్యదనిశం ధ్యాయన్నువాస పరమేశ్వరం ॥ 62

ఇలా చింతాక్రాంతుడై రాజ్యసుఖములను త్యజించి వైరాగ్యముతో సదా పరమేశ్వరుని ధ్యానించుచూ జీవించు చుండెను.

తదంతరేసురః కుంభకర్ణ పుత్రో మహాబలః ।
మహోగ్రో వివరం జ్ఞాత్వా పూర్వవైర మనుస్మరన్ ॥ 63

అటుపిదప కుంభకర్ణుని పుత్రుడు మహాబలుడూ, మహోగ్రుడు పూర్వవైర వివరములను స్మరించి

స్వసైన్య సహసాగత్య కాలయామాస వానరాన్ ।
తందాంగదా ముఖావీరా ధృత పర్వత పాదపాః ॥ 64

తన సైన్య బలముతో వచ్చి వానరులను వధించెను. అంగద మొదలగు మహాన్ వీరులు పర్వతములను వృక్షము తీసికొని

పరివార్యాసురాన్జఘ్నుర్నదంతః పర్వాతాదిభిః ।
నానావిధ ప్రహరణైర్జఘ్నుస్తానపి రాక్షసాః ॥ 65

పరివారముతో గూడి రాక్షసులను నుజ్జు గుజ్జు చేసిరి. రాక్షసులూ వానరులను నానా విధముగా హింసించిరి.

సంప్రహారస్తుములః సంజజ్ఞే హరిరక్షసాం ।
ఉగ్రధన్వా మహోగ్రశ్చ శరాసారైః కర్తీశ్వరాన్ ॥ 66

రాక్షసులు, కపీశ్వరుల నడుమ ఘోర యుద్ధము జరుగు చుండగ మహావిల్లుకారుడైన మహోగ్రుడు, కపినాయకుల, శర వర్షమును

నివార్యతర సోత్పుత్య సుగ్రీవం శిథిలేంద్రియం ।
రామచింతాతురం దీనం హంతుముద్యుక్తనాన్బలః ॥ 67

నివారించుచూ వేగముగా శిథిలేంద్రియుడైన సుగ్రీవునిపై పడెను. రామ చింతాతురుడై, దీనుడైన అతనిని ఆ దుష్టుడు సంహరింప చూసెను.

అంగద ప్రముఖావీరా సన్నహ్యా పునరుద్యతాః ।
పాషాణైః పాదపైర్దైత్యం మర్ధయామాసురా యుద్ధైః ॥ 68

అంగాదాది వీరులు యుద్ధసన్నద్ధులై మరల రాక్షసునిపై బడిరి. శిలలు, వృక్షములను ఆయుధముగా వాడి రాక్షసులను వధించిరి.

తదా మహోగ్రః కుపితో గదామాదాయ వీర్యవాన్ ।
నిపాత్య తరసాకీ నర్ధ ధనుజాధిపః ॥ 69

అపుడు కుపితుడైన వీర మహోగ్రుడు గదనెత్తుకొని వానరుపై బడెను. ధనుజేంద్రుడు రభసముతో కపులను మర్దించెను.

మహానందాబ్ధి మగ్నోభూద్యుక్తః సుందరభార్యయా ।
ఏవం సర్వసమృద్ధస్య సుఖినస్తస్య యౌవనే ॥ 27

సుందర భార్యతో గూడి మహానంద సాగరమున మునిగియుండెను ఈ విధముగా సర్వసమృద్ధి సుఖముతో నందుండగ యౌవనమున

జాతో మహానహంకారః సర్వసన్మార్గభేదకః ।
ఔదార్య శౌర్యధైర్యేషు మత్సమో నాస్తిసంపదా ॥ 28

అన్ని సన్మార్గములను భేదించు మహాన్ అహంకారము జనించెను. ఔదార్యము, శౌర్యము, అతనిలో ధైర్యమున నాకెవరు సమానులు లేరు. సంపదయందూ నన్ను మించిన వారెవ్వరూ లేరు.

అహం సర్వకలాభిజ్ఞః సార్వభౌమ పదే స్థితః ।
విద్యాధికోస్మి విప్రేభ్యః క్షత్రియేభ్యో బలాధికః ॥ 29

అన్ని కళలందు నేను అభిజ్ఞుడను సార్వభౌమ పదవిని నిలచినవాడను, విద్యతో విప్రుల కన్న, బలములో క్షత్రియు కన్ననూ బలాఢ్యుడను.

అధికోస్తి మనుష్యేభః సంపద్రూప గుణేష్వహం ।
ఏవమాత్మని నిశ్చిత్య దేవలః స్వయదూషితః ॥ 30

సంపద, రూపము, గుణములందు ఇతరుల కన్న నేను అధికడను ఈవిధముగా దేవలుడు తనలో తానే నిశ్చయించు కొని స్వయందూషితుడైయ్యెను.

ఆజన్మ దీనః సామ్రాజ్య మకస్మాత్ప్రాప్యయౌవ్వనే ।
నిరహంకారిణో లోకే విరలాః సంతి సాధనః ॥ 31

పుట్టినపుడు దీనుడై యుండి, యౌవ్వనమున సామ్రాజ్యమును పొందెను. ఇలా వుండియూ లోకమున నిరహంకారులుగా మిగులు సజ్జనులు అతివిరళము.

స్మయేన దేవలః సాధూనర్చయామాస నాప్యసౌ ।
సభాయం బహుమా నార్హనవమత్య మనీషిణః ॥ 32

ఈ విధముగా దేవలుడు అహంకారముతో సాధువులను అర్చించలేదు. సభలో బహుమాన యోగ్యులైన కోవిదులను అవమానించెడివాడు.

మదాంధః పాలయామాస రాజ్యం సర్వసమృద్ధిమత్ ।
కదాచిదాగతో మార్గవశాత్ప్రజ్ఞానిధిర్వరః ॥ 33

మదాంధుడైన రాజ సర్వసమృద్ధియైన రాజ్యమును పాలించు చుండెను. ప్రజ్ఞానిధియు శ్రేష్ఠుడు అయిన వ్యక్తి యొకడు మార్గవశమును అకస్మాత్తుగా వచ్చి

వివేశ కౌతుకా దృష్ట్వా దేవలస్య సభాం మునిః ।
దృష్ట్వాపి మునిమాయాంతం నోదతిష్ఠన్నృపాసనాత్ ॥ 34

దేవలుని సభను కుతూహలముతో ముని ప్రవేశించి చూసెను ముని లోపలికి వచ్చినది చూసియూ రాజు సింహాసనము నుండి పైకి లేవలేదు.

ప్రణనామనతం దర్పా త్కుశలం నాప్య పృచ్ఛత ।
సింహాసనే సమాసీనం ప్రసార్య చరణౌ మదార్ ॥ 35

అంతేకాగ అతనికి నమస్కరించ లేదు. దర్పముతో కూడిన అతడు ముని క్షేమమునూ విచారించక మదముతో సింహాసన మున కాలుజాపి కూర్చొని యుండెను.

మదాంధం దేవలం దృష్ట్వా సుకోప ముని పుంగవ ।
రేరే దేవల దుష్టాత్మనౌ రాజ్యానర్హస్త ముద్ధతః ॥ 36

మదాంధుడైన దేవలుని చూసి మునివర్యుడు కుపితుడై, ఓయీ దేవలుడా! దుష్టాత్ముడైన నీవు రాజ్యమును పాలింప అనర్హుడవు.

ఆ జన్మ దుర్గతో దైవాత్సంప్రాప్య విముహ్యసి ।
అవమత్యద్విజా న్పూజ్యాన్మత్తో ద్విప వాసియత్ ॥ 37

జన్మతో దుర్గతికుడైన నీవు దైవ వశమున సంపదను పొంది, మోహమునకు వశమైయున్నావు. ద్విజులను తిరస్కరించి మదించిన ఏనుగువలె గల నీవు

తత్కుంజరో వనేభూత్వా సంచరస్వ నృపాధమ ।
ఇత్థం ప్రజ్ఞానిధేః శాపాద్ద్విపో భూత్వా నృపోవనే ॥ 38

అలాంటి ఏనుగులై వనమున సంచరించుము నృపాధమ ఇలా ప్రజ్ఞానిధి శాపముచే రాజు ఏనుగై అడవి యందు

సంచచార బహునబ్దాన నృంజ యన్నాశ్రమ ద్రుమాన్ ।
కాలేన మహతా పంపాక్షేత్రం ప్రావ విధేర్బలాత్ ॥ 39

సంచరించుచూ ఆశ్రమములందు పెరిగియున్న అసంఖ్యాత వృక్షములను నాశనము చేయుచుండెను. విధి బలములో కాలాంతరమున పంపాక్షేత్రమునకు చేరెను.

అంజనాద్రి ప్రతీకాశః సర్వలోక భయంకరః ।
ఆజగామ గజో మార్గవశాద్రంగేశ మందిరం ॥ 40

రెండవ అధ్యాయము
సప్తర్షుల పంపాక్షేత్ర ప్రవేశము

స్కంద ఉవాచ - స్కందదేవుడు తెలిపెను.

తే సమీక్ష్య మహాక్షేత్రం విరూపాక్షస్య విశ్రుతం ।
అవతేరుర్మహీం పుణ్యామాకాశాదాత్మవేదినః ॥ 1

ప్రసిద్ధమగు విరూపాక్షుని మహాక్షేత్రమును చూసిన ఆత్మ జ్ఞానులైన ఆ మహర్షులు పుణ్యప్రదమగు ఆ విశాలభువివైపు ఆకాశము నుండి దిగసాగిరి.

అవతీర్య ముదాయుక్తాః క్షేత్రం తత్ప్రవివిక్షవః ।
ఆశ్చర్య లబ్ధగతయః క్షణం తస్థు స్తపోధనాః ॥ 2

సంతోషముతో, భువికి దిగి ఆశ్చర్యముతో మూకవిస్మితులై, క్షణకాలము అచట నిలిచిన ఆ తపోధనులు ఆ క్షేత్రమును ప్రవేశించిరి.

ఉపేతం పంచభిః క్రోశైః ముఖ్యద్వార చతుష్టయం ।
చతుర్భిరప్యుపద్వారైః శోభితం పరమోత్సవైః ॥ 3

పరమ సంతోషముతో, ఐదు క్రోశ విస్తారము, నాల్గు ముఖ్యద్వారములను పొంది, నాల్గు ఉపద్వారములచే శోభించు చున్న విరూపాక్షుని మందిరమును ప్రవేశింపగ,

ఇద మాకృష్ట కైలాసం సద్యస్సిద్ధి విధాయకం ।
పంపాక్షేత్ర మితి ప్రాజ్ఞాః ప్రోచ్యావైక్షంత సర్వతః ॥ 4

ఇక్కడికి ఆకర్షింపబడి వచ్చిన కైలాసము. సర్వసిద్ధులను వెంటనే పంచగలది. జ్ఞానులు దీనిని పంపాక్షేత్రమని పిలిచెదరు, అని పలికిన ఋషులు అన్ని దిశలందు చూసిరి.

తా పశ్చహ్యాచలోదీర్ణా విష్ణుదేహ సముద్భవాః ।
పరిస్మహో ప్రభావేన తుంగభద్రా సమాగతాః ॥ 5

సహ్యాద్రి నుండి దిగివచ్చు విష్ణుదేహ సముద్భవయైననది, క్షేత్రప్రభావముచే ఇచట ప్రవహించు తుంగభద్రతో సమాగమమొందెను.

తాందృష్ట్వా దివ్యతత్త్వజ్ఞాం తుంగకల్లోల మాలినీం ।
అప్లావయంత కిష్కింధా పర్వతాగ్ర శిలోచ్చయాత్ ॥ 6

శ్రేష్ఠమైన, దివ్యతత్త్వజ్ఞానియైన ఉత్తుంగ తరంగ మాలల ఆమెను చూసి, కిష్కింధ పర్వతాగ్ర ఉచ్చశిల నుండి గంగా ఇచట ఉద్భవించెనని,

ప్రహర్షమతులం జగ్ముస్తస్సమహాత్మ్యవేదినః ।
యత్రభాగీరథీ పుణ్యానర్మదాచ సరస్వతి ॥ 7

దాని మహిమను తెలిసి వారు చాలా సంతసించిరి. ఎచట భాగీరథీ, పుణ్యదాయినియైన నర్మదా మరియు సరస్వతి,

నిమ్నావతీ గోమతీచ వశిష్ఠ ప్రపదాశివా ।
విశోకాచ వితన్వాచ చైకౌక గండకీ తథా ॥ 8

నిమ్నావతీ, గోమతీ, మరియు వశిష్ఠుల పాదాశ్రయముచే ఉద్భవించిన, శివానది, విశోకా, వితన్వా మరియు ఏకాకినియైన గంధకీయు చేరి,

యమునా కాశ్యపే చిత్రాసరయూ సర్వపాపహా ।
నేత్రావతి, వేదవతీ, శీఘ్రమగా శీఘ్రవర్తినీ ॥ 9

యమునా, కాశ్యపీ - చిత్రా సర్వపాపహారిణియైన సరయూ, అటులనే నేత్రావతీ శీఘ్రవర్తనులూ ప్రవహించి,

కుశావతీ కుశోద్వర్తా ఫల్గునీ పాపహారిణీ ।
శితద్రుశ్చ వేదికాసైతవాహిని ॥ 10

కుశావతీ, కుశోద్వర్తా, పాపనాశినియైన ఫల్గుణీ, శితద్రు, మరియు వేదికా, సైతవాహినులూ,

బాహుదా, కృష్ణవేణీచ, సరయూః పాపనాశినీ ।
ప్రభాసా, శారదా, చంద్రభాగ, కుటిలగామినీ ॥ 11

బాహుదా, కృష్ణవేణి, సరయూ, మరియు పాపనాశినీ, ప్రభాసా, శారదా, కుటిలగామినియైన చంద్రభాగా, కలిసి,

వారణాసే విశాలా చ పుణ్యదా పూర్ణిమాహ్వయా ।
మలప్రహరి కావేరీ వరదా బ్రహ్మనిర్మితా ॥ 12

వారణాసీ (వారణ మరియు అసి నదుల సంగమం) విశాలా మరియు పుణ్య దాయినియైన పూర్ణిమా, మలప్రహారీ కావేరి, బ్రహ్మనిచే సృజించబడిన వరదా మిళితమై

తాపీ, పయోష్ణీ, శిశిరా ప్రణీతా పాపనాశినీ ।
గోదావరీ, భీమరథీ వేగా పుష్కరమందినీ ॥ 13

తాపీ, ప్రయోష్ణి, శిశిరా, ప్రణీతా, పాపనాశినీ, గోదావరీ, భీమరథి, వేగా, పుష్కరమందినీ నదులన్నియూ సంగమమై,

పునాతి సర్వక్షేత్రం హి దర్శనామభిషేచనాత్ ।
పునాతి స్మరణా దేవ సర్వాన్పంపాపురీ సదా ॥ 14

విరూపాక్షుని దర్శన, అభిషేకములచే అన్ని క్షేత్రములు పునీతముగును. స్మరణ మాత్రముచే అన్ని క్షేత్రములు పంపా క్షేత్రములగును.

శతయోజన మాత్రేపి యః స్థిత్వా హేమకూటధీః ।
తస్య సిద్ధ్యంతి కర్మాణీత్యాహుః పూర్వవిదో బుధాః ॥ 15

హేమకూట పర్వతమునుండి వందయోజన దూరము నందు నిలిచి విరూపాక్షుని గూర్చి చింతించిననూ వారి కార్యము లన్నియూ సిద్ధించును అని పూర్వమున బుధులు చెప్పియున్నారు.

హేమకూటం గమిష్యామీత్యేకం వాయః పదం క్షిపేత్ ।
దశాశ్వమేధాధిక ఫలం సోపి ప్రాప్నోతి సన్మతే ॥ 16

సన్మతీ! ఎవరైననూ హేమకూటము వెళ్లెదనని ఒకసారి పలికిననూ చాలు, పది అశ్వమేధ యాగములను చేసిన ఫలము పొందును.

నమశ్శివాయ లోకేశ మానసినతోస్మ్యహం ।
అమేయం హేమకూటస్య యత్తత్త్వ వక్తుముత్సహే ॥ 17

ఈశ్వరునికి, లోకేశ్వరునికి నమస్కారము మహాత్ముడై నీకు నతమస్తకుడనై నమస్కరించెదను. హేమకూట మహిమను చెప్పుటకు ఉత్సుకుడనైయున్నానో అది మాటలకు అందనిది.

బుద్ధి సద్విషయా యోగే నిష్పత్యూహాయ కల్పతే ।
విహంతి ప్రతిబన్ధంచ సాధీయాంస్తన్మనోమయః ॥ 18

బుద్ధి యోగమునందు సద్విషయములందుకలుగు ఆటంకములను దూరము చేయ చింతించును. దానిని సాధించు వారు మనోమయమునుదాటి ప్రతిబంధకములను దూరము చేసుకొనెదరు.

యథా దృష్టం యథాశక్తి యథామతి యథాశ్రుతం ।
హేమకూటస్య మహాత్మ్యముదీర్యతాం సాదరం ॥ 19

ఎలా చూచితినో, యథాశక్తి నా బుద్ధికి ఎంత తెలియునో, ఎంత వినియున్నానో, అంత మాత్రము హేమకూటమహిమను తెలిపెదను. ఆదరముతో వినుడు.

నత క్షేత్రస్య వైశిష్ట్యం క్షేత్రేశోऽపి జగత్త్రయే ।
కిమితే సర్వదుష్కృత విష్ణుం తృప్తిం నేదినః ॥ 20

మూడులోకములందు ఈ క్షేత్ర వైశిష్ట్యము చాలామందికి తెలియదు. అన్ని తెలిసినవారు ఈ క్షేత్రమున ఎవరు నివసించ లేదు?

కైలాసాద్రౌ జగద్వందే నహిస్థానాని కింవిభో ।
జ్ఞాతవ్యో హేమకూటస్య ప్రభావో హేషయత్సదా ॥ 21

కైలాసా పర్వతమును నివసించు జగద్వంద్యుడైన ప్రభో! నీవు లేని స్థానము ఏది గలదు? హేమకూట ప్రభావమును సదా చక్కగా తెలుసుకోవలెను.

ఏష కిష్కింధ నామహి దృశ్యతే ధరణీ ధరః । 22

ఇచట కనిపించునది కిష్కింధయను పర్వతము.

అస్యైవ హృదయస్థాయి హేమకూటో యమద్రిరాట్ ॥ 23

దీని హృదయ భాగమునందుండునదే పర్వతరాజయైన ఈ హేమకూటమూ,

మధ్యే కిష్కింద శైలస్య మహతోస్వ మహోన్నైం ।
దృశ్యతే హేమకూటోయః పరితః పంచయోజనః ॥ 24

కిష్కింధ పర్వతపు మధ్యగల మహత్తరమైన ఈ హేమ కూటము చుట్టూ, ఐదుయోజన విస్తీర్ణమువరకు అగుపించును.

అత్ర ద్వారాణి చత్వారి ముఖ్యాన్యాహుర్మనీషిణః ।
ఉపద్వారాణి చత్వారి ఏషు సిద్ధ్యంతి సత్క్రియాః ॥ 25

ఇచట నాల్గు ముఖ్య ద్వారములు, మరియు నాల్గు ఉపద్వారములు గలవని, ఈ ఉపద్వారములందు సత్కార్యములు సిద్ధించునని, మహా పండితులు పలికియున్నారు.

అత్ర పూర్వం మహాదేవః చచార తపముత్తమం ।
యోగస్థానమిదం శంభోరాదిసిద్ధస్స యోగినః ॥ 26

పూర్వము మహాదేవుడు ఇచట ఉన్నతమగు తపము నాచరించెను. శంభవు మొదల్కొని సిద్ధిపొందిన యోగుల యోగస్థానమిది.

తపశ్చర్యా ప్రవృత్తేత్ర దేవదేవం న్యషేవత ।
కులాచల గణాస్సప్త సూక్ష్మరూపో మరుద్గణః ॥ 27

కుల పర్వతములు సప్తగణములు, మరుద్గణములు సూక్ష్మ రూపమును దాల్చి తపోమగ్నుడైన దేవదేవుని సేవించిరి.

స్మారితోస్మి మహాకాలా ద్విష్ణువృద్ధ త్వయాధునా ।
హేమకూట ప్రసంగేతు ప్రహర్షభరితం మనః ॥ 28

విష్ణువృద్ధుడా! చాలా కాలనంతరము నీ కారణమున నేను దీనిని స్మరణ చేసుకున్నాను. ఈ హేమకూట ప్రసంగ కారణమున మనస్సు హర్షభరితమైనది.

(కులపర్వతములు – గోమేధ, చంద్ర, నారద, దుంధుభి, సోమత, సమనస, వైభ్రాజ.)

నానా ఉపహారములుచే సంతుష్టురాలగు మరియు దుర్గితినాశినియైన దుర్గా మరియు అనేక పుణ్య తీర్థములు గలవు. అందులో ఎవరు స్నానము చేసెదరో.

జౌజ్వల్యం పరమంయాంతి బహిరంతశ్చ సర్వదా ।
భైరవాజ్ఞాం సకృల్లబ్ధ్వా విఘ్నేశ మభివంద్య చ ॥ 27

వారు సర్వదా బయట మరియు లోపల ఉజ్వలమగు కాంతిని పొందెదరు. భైరవుని అనుజ్ఞ నొంది విఘ్నేశునికి వందించి,

ఆర్యాం సంపూజ్య విధివత్ కిన్నరేశం భజంతియే ।
జితకామా స్తే భవంతి జితేంద్రియాః ॥ 28

విధిపూర్వకముగా ఆర్యను పూజించి, కిన్నరేశ్వరుని భజించెదరో, వారు కామమును జయించి జితేంద్రియు లగుదురు.

కిన్నరేశ్వరమభ్యర్చ్య తత్రదేవీ సరస్వతీ ।
రంజయంతి చతుర్వక్త్రం తథా శ్రీ ర్బ్రహ్మణఃప్రియా ॥ 29

ఇచట కిన్నరేశ్వరుని పూజించిన సరస్వతి దేవి చతుర్ముఖ బ్రహ్మని రంజించి ఆ బ్రహ్మనికి ప్రియమైయ్యెను.

నారద స్సర్వ యోగీంద్రః కృత్వాపి సుమహత్తపః ।
సిద్ధో భూన్నాదవిద్యాయాం కిన్నరేశ్వర పూజయా ॥ 30

సర్వ యోగులందు అగ్రగణ్యుడైన నారదుడు మహతపమును ఆచరించి, కిన్నరేశ్వరుని పూజించుట వలన నాద విద్యయందు సిద్ధిని పొందుటయేగాక,

ఉపలేభే చ మహతీం మహతీంచ సులక్షణాం ।
సంగీత దేవతా సక్షాత్సముని కిన్నరేశ్వరాత్ ॥ 31

మహిమతో గూడిన సులక్షణమగు 'మహతీ' యను వీణను సాక్షాత్ సంగీత అధిదేవత యగు కిన్నరేశ్వరి చేతనే పొందెను.

తుంబురుస్సకలాన్ కామాన్ లబ్ధేశస్స ప్రసాదతః ।
పూర్వద్వారేత్ర దేవస్య తపః కృత్వా భవత్కృతీ ॥ 32

తుంబురులు పూర్వద్వారమునందుగల కిన్నరేశ్వరుని తపముచే సాక్షాత్కరించుకొని, సకల కామలనను అతని అనుగ్రహముచే పొంది కృతకృత్యుడైయ్యెను.

విశ్వావసుశ్చ క్షేత్రేస్మిన్ పరం విశ్వాసమాశ్రితః ।
అవాప్య మహతీం వీణాం సదాభూద్దేవ గాయనః ॥ 33

పరమ విశ్వాసముచే విశ్వావసువు ఈ క్షేత్రమున కిన్నరేశ్వరుని మెప్పించి మహతీ వీణను పొంది సదాకాలము దేవగాయకుడైయ్యెను.

(విశ్వావసు

(1) కశ్యప - ప్రాధేయందు జనించిన దేవగంధర్వ శాపమునొంది రామాయణ కాలమున కబంధుడిగా జనించెను.

(2) 60 సంవత్సరములందు ఒక సంవత్సరపు పేరు.

(3) జమదగ్ని పుత్రులందొకడు - తల్లి రేణుకను చంపుటకు ఒప్పక శాపగ్రస్తుడై జటాయు పక్షియైయెను. (రుమణ్యంత, సుషేణ, మరియు రామ సోదరులు)

(4) ఒక రాక్షసుడు మాల్యవంతుని పుత్రి "అనల" ఇతని పత్ని ఇతని పుత్రి కుంభీసి)

భావనా విదితస్తస్మాద్భగవాన్ పరమో మునిః ।
మతంగో పి మహతా యోగీ హ యోగి కిన్నరేశ్వం సేవయా ॥34

భావనలను తెలిసి భగవాన్ మతంగ మునిగూడా, కిన్నరేశ్వరుని సేవించి యోగియైయున్న అతడు మహాయోగియై,

పితాభవ స్సరస్వతాః నాద సిద్ధాన్త పారగః ।
అత్రైవ సుచిర కాలం తపః కృత్వా శివాజ్ఞయా ॥ 35

నాదసిద్ధాంతమున పారంగతుడై సరస్వతికి తండ్రియైయెను. శివుని ఆజ్ఞవలె దీర్ఘకాలము ఇచటనే తపమునాచరించి

అంజేనేశ్చవేణుశ్చ యాష్టికో దుర్గకోహలః ।
ఏవ మన్యేష గాంధర్వ వేదాధ్యాయార్ధవేదినః ॥ 36

అంజనేయ, వేణు, యాష్టిక, దుర్గకోహల ఇంకను అన్యులు గాంధర్వ వేధాధ్యాయనము చేసిరి. అర్ధమును తెలిసిన

ఋషియోత్రైవ వాసేన ప్రయాతాః పరమాంగతిం ।
స్థానం తత్పరమం శంభో వాసేన ప్రయాతాః ॥ 37

ఋషులు ఇచట నివసించుచు, పరమాగతిని పొందిరి. శంభవు నివసించు పరమోచ్చ స్థానము,

సమున్మిషిత సారస్యం సదా కిన్నరగీతిభిః ।
గాయంతి కిన్నరాస్తత్ర సుస్వరం హృష్ట చేతసః ॥ 38

సర్వద కిన్నరులు సంగీతముతో గూడియుండి, కిన్నరులు అచట సదా సంతుష్టచిత్తులై సుస్వరమగు సంగీతమును గాయనము చేయుచుందురు.

పదనాల్గవ అధ్యాయము
ఆగ్నేయ నైరుత్య ఉపద్వార ప్రశంస

భరద్వాజ ఉవాచ - భరద్వాజులు తెలిపిరి

ఏవం ద్వారాణి ముఖ్యాని కథితాని మయానఘ ।
ఉపద్వారాణి వక్ష్యామి శృణు శుద్ధేన చేతసా ॥ 1

అనఘా! నాచే ముఖ్య ద్వారముల గూర్చి చెప్పబడెను. ఉపద్వారములను గూర్చి తెలిపెదను శుద్ధ మనస్సుతో వినుము.

అస్త్యేవ బ్రహ్మకుండస్య వహ్నికోణే శుభప్రదే ।
నామ్నాస్తి ద్రౌపదీ క్షేత్రం నానాసిద్ధి ఫలప్రదం ॥ 2

ఈ బ్రహ్మకుండపు శుభప్రదమగు అగ్నిమూలయందు నానాసిద్ధులకు ఫలదాయకమైన ద్రౌపదీ క్షేత్రమని ప్రసిద్ధమగు స్థానము గలదు.

తత్రాస్తే భైరవోనామ్నారురుః క్షేత్రాధిపాలకః ।
సిద్ధగంధర్వ గీర్వాణ యక్ష కిన్నర పూజితః ॥ 3

అచట భైరవయను పేరున రురు యను క్షేత్రధిపాలకుడు యున్నాడు సిద్ధ, గంధర్వ, గీర్వాణ, (బ్రహ్మ), యక్ష కిన్నరులచే పూజితుడు.

పాల్యతే తత్పరం క్షేత్రంరురుణా భైరవేణహి ।
వినా తదాజ్ఞాం కేనాం కేనాపి ప్రవేష్టుం తన్నశక్యతే ॥ 4

రురుయను భైరవునిచే ఆ ఉత్తమ క్షేత్రం పాలింపబడు చున్నది. అతని ఆజ్ఞ లేనిదే ఎవరి చేతనూ దానిని ప్రవేశింపన సాధ్యము.

వినాయక ఇతిఖ్యాతో విఘ్నేశో విఘ్నహృత్సతాం ।
అద్యాస్తి ద్రౌపదీ క్షేత్ర మమర్త్యైభిరవందితం ॥ 5

సజ్జనుల విఘ్నములను హరించు విఘ్నేశుడు ఇచట వినాయకయని ఖ్యాతుడు. దేవతలచేతను వందింపబడు ద్రౌపదీ క్షేత్రము ఇప్పటికీ కలదు.

మహామాయేతి విఖ్యాతా వహ్ని ద్వారాధిదేవతా ।
ప్రపంచయతి భక్తానాం ప్రభావమనుయాయినాం ॥ 6

వహ్నిద్వారపు అధిదేవత మహామాయయని ఖ్యాతిగలది. భక్తుల, అనుయాయుల ప్రభావమును విస్తరించి సర్వత్ర ప్రకటించును.

భైరవ ఏవ సర్వాహి ముఖ్య ద్వారాధిదేవతాః ।
శక్తయః సిద్ధిదాః పుంసాముపద్వారాధిదేవతాః ॥ 7

అన్ని ముఖ్యద్వారముల అధిదేవతలు భైరవులే అయియున్నారు నరులకు సిద్ధిదాయకులైన శక్తిదేవతలే ఉపద్వారములకు అధిదేవతలు.

సాశక్తిశ్చ పరాపూర్ణా సర్వసంపత్కరీ స్థితా ।
మహామాయా మహానాదా మహాభోగా మహోదయా ॥ 8

ఆశక్తి పరదేవతయు పూర్ణురాలు, సర్వసంపత్కరియూ, ధృద, మహామాయా, మహానాదా మహాభోగా మహోదయ అని.

తత్రాస్తి సద్యః ఫలదం రామతీర్థం మితిశ్రుతం ।
యత్రస్నాత్వా నరోయాతి సర్వాన్కామాన నశ్వరాన్ ॥ 9

రామతీర్థమని తెలుపబడు తీర్థము గలదు. దాని పేరు విన్ననే ఫలదాయకమైనది. ఏ నరుడు రామతీర్థమున స్నానమాచరించునో అతడు శాశ్వతమగు సర్వకామనలను పొందును.

పురారామో దశగ్రీవం జేతు కారస్సుర ద్విషం ।
సర్వక్షేత్రోత్తమే తత్ర స్థిత్వా యుక్తస్తపస్య భూత్ ॥ 10

పూర్వము శ్రీరాముడు, సురద్వేషియగు దశకంఠరావణుని జయించు ఇచ్ఛతో అన్ని క్షేత్రములందు అత్యుత్తమమగు ఈ రామగిరి క్షేత్రమున యుక్తమగు తపమునందు మగ్నుడైయ్యెను.

ఏకాంత యోగ సిద్ధస్యదేవ దేవస్య తేజసా ।
విరూపాక్షసయసంరుద్ధ సమాహిత మనాశ్చిరం ॥ 11

ఏకాంతమున తపము చేసి యోగసిద్ధుడైయ్యెను. దేవదేవ విరూపాక్షుని తేజమునుండి అతని మనస్సు ఏకాగ్రతనొందెను.

విరూపాక్షం హృది ధ్యాత్వా హేమకూటాధి దైవతం ।
తపసి స్థిర చిత్తో భూద్రామస్సౌమిత్రిణా సహ ॥ 12

హేమకూటప్ప అధిదైవమైన విరూపాక్షుని ధ్యానించి తపముచే రాముడు లక్ష్మణునితో గూడి స్థిర చిత్తుడైయ్యెను.

తపసా తస్య సంతుష్టో విరూపాక్షో మహేశ్వరః ।
దశగ్రీవ జయేసిద్ధిం దదౌ తస్మైస్తుతిప్రియః ॥ 13

పూరయత్సఖలాన్కామాం స్తేషా దేవీ సనాతనీ ।
మహాశబ్దం సముచ్చార్య భైరవీతి సముచ్చరన్ ॥ 27

భైరవియను మహిమగల శబ్దమును గట్టిగా ఉచ్చరించిన చాలు వారి అన్ని కామనలను సనాతనియగు ఆ దేవి పూర్ణము చేయును.

నమః పదం పదేదేష మంత్రస్త్రా వత్రప్రముచ్యతే ।
మంత్రేణానేన యేదేవీం భైరవీం పూజయన్త్యమీ ॥ 28

ఎవరు తల్లిపాదములకు నమస్కరించి ఈ భైరవీ మంత్రమును పదే పదే ఉచ్చరించెదరో ఆ మంత్రము వారిని బంధనము నుండి విడిపించును. ఈ మంత్రముచే ఈ దేవి భైరవిని ఎవరు పూజించెదరో.

విజిత్య సకలానోకాన్త్రదుష్యంతి స్థిరాయుషః ।
భైరవీమంత్రసిద్ధానాం తిష్ఠంతి పునరః క్వచిత్ ॥ 29

కుటిలతను నాశనము చేసి సకలలోకములను జయించి చిరాయువులగుదురు. భైరవీ మంత్రసిద్ధి నొందినవారు ఎదుట వేరేవరు నిలువగలరు.

బేతాళ అపి కూశ్మాండా స్తథాన్యే దారుణాగ్రహః ।
తత్ర భక్షప్రియో నామామహిమ్నాంధామ విఘ్నరాట్ ॥ 30

బేతాళములు, కూష్మాండములు మరి ఇతర దారుణ గ్రహములు గూడ నిలువజాలవు. అచట భక్షప్రియయను పేరున నొందిన విఘ్నరాజు నివసించియున్నాడు.

ప్రదదాత్యుపసన్నేభ్యో విశ్వార్థం పరమీప్సితాన్ ।
ప్రలంబోదర మర్ధేందు స్రవతం సం త్రిలోచనం ॥ 31

విశ్వకల్యాణమునకై అతనిని ప్రార్థించువారికి పరమ అభీష్టములను ప్రసాదించును. లంబోదరుని, అర్ధచంద్రుడిని ధరించిన త్రిలోచనుడిని.

భక్షప్రియమందే ధ్యాయంతి తేహి నిర్విఘ్నసిద్ధయః ।
పురా దుందుభి నామాసీద్దానవో దేవకంటకః ॥ 32

ఎవరు భక్షప్రియుని ధ్యానించెదరో, వారు నిర్విఘ్నసిద్ధులు పూర్వము దేవతలకు కంటకప్రాయుడైన దుందుభియను పేరుగల దానవుడుండెను.

విజితం సమరాస్సర్వే మంత్రం చక్రుః పరస్పరం ।
వయం తపోభిస్సంతోష్య హేమకూటేశ్వరం శివం ॥ 33

వాడు దేవతలందరిని గెలిచెను. దేవతలు పరస్పరం మంత్రాలోచన చేసి, తాము హేమకూటేశ్వరుడైన శివుని తపము ద్వారా సంతసింపజేసి,

జేష్యామో దుందుభిందైత్యం ఇతితే నిశ్చయం ।
దధుః తే సరితీరామాసాద్య తపశ్చకు రనిందితం ॥ 34

దుందుభియను రాక్షసుని జయించెదము అని దృఢముగా నిశ్చయించుకొని నదీతీరమునందు వారు అనింద్యమగు తపమును ఆచరించిరి.

తేభ్యస్తపోభి సంతుష్టస్సాన్నిధ్యమకరోచ్ఛివః ।
కృత సాన్నిధ్య మాత్మానం తుష్టువుస్తే దివౌకసః ॥ 35

వారి తపముచే సుప్రసన్నుడైన శివుడు వారికి తన సాన్నిధ్యము ప్రకటగొలిపెను. శివ సాన్నిధ్యముచే దేవతలు చాలా సంతోషమును అనుభవించిరి.

దేవస్తత్స్తోత్ర సంతుష్టః ప్రోవాచ ప్రహసన్యురాన్ ।

దేవ ఉవాచ

జనామి జనతాభావం యాయం దుందుభి నా జితాః ॥ 36

దేవతల స్తోత్రముచే సంతుష్టుడైన శివుడు మందస్మితముడై ఇలా పలికెను. మీ భావమును నేను తెలిసియున్నాను. మీరు దుందుభిచే జయించబడియున్నారు.

ఆగతాశ్చమమోపాతం తద్వధోపాయ మీప్సవః ।
గుహాయామత్ర దుర్గాయాం కిష్కింధాయాం భవిష్యతి ॥ 37

నన్ను పొందుటకు వచ్చిన మీకు అతని వధోపాయమును తెలిపెదను. ఈ కిష్కంద దుర్గమునందుగల గుహయందు జరుగును.

అతి దైవాసురబలో వాలినామా మహేశ్వరః ।
వానరాణామధిపతిః సహనిష్యతి దుందుభిం ॥ 38

అతీవదైవ మరియు అసురబలమును పొందియున్న వాలి యను భూపతిగలడు. వానరరాజుయైన వాలి దుందుభిని సంహరించును.

ప్రశాంతోపప్లవం సర్వం భవిష్యతి జగత్త్రయం ।
స్థిత్వాత్ర పరమా భక్త్యా మాయర్చ్యయతి శంకరం ॥ 39

కలిగియున్న ఉపద్రవములను నివారణమై మూడు లోకములందూ శాంతి నెలగొనును. అసైన ఇక్కడికి వచ్చి నిలిచి నన్ను శంకరుని రూపమున పరమభక్తిచే అర్చింపుడు.

పుణ్యశ్లోకుడగు హరిశ్చంద్రుడు అదృష్టవశమున తమ ఆశ్రమమునకు వచ్చెనని, వసిష్ఠుల ఆశ్రమవాసులు సంతోషించిరి.

తతో నిజాభిముఖ్యేన ప్రశాంతాధ్వ పరిశ్రమం ।
సపృష్ట్వా కుశలం రాజ్యే రాజానం మునిరబ్రవీత్ ॥ 14

అపుడు రాజు మొదలగువారికి కలిగిన మార్గాయాసము ఉపశమనముకాగా, ఆ మునివరుడు, రాజుని క్షేమ సమాచారములను విచారించుచూ రాజ్యక్షేమమునూ గూర్చి ప్రశ్నించెను.

వసిష్ఠ ఉవాచ - వసిష్ఠులు అడిగిరి

ఆగతోసి మహారాజ మృగయావ్యపదేశతః ।
ఉద్దేశమిమ ముర్వ్యాం యచ్ఛ్రేయసామేకసంచయః ॥ 15

కోనలేశ్వరుడా! వేట కారణముతో ఆశ్రమమునకు వచ్చియున్నావు. భూమి, దేశ, శ్రేయస్సు ఉద్దేశముతో వచ్చియున్నావు కదా!

అశేష హేమకూటాఖ్యో గిరిః కిష్కింద మధ్యగః ।
అత్రాస్తేహి విరూపాక్షః సాంబో విశ్వాధికశ్శివః ॥ 16

హేమకూటమను పర్వతము సంపూర్ణముగా కిష్కింధ మధ్యన గలదు. ఈ గిరియందు విరూపాక్షుడు తన దేవితో నివసిస్తూ, విశ్వమునకు అధికమగు మంగళమును కలుగజేయుచున్నాడు.

ఇదం క్షేత్రం మహాభాగ భుక్తిముక్తి ప్రదం నృణాం ।
అత్ర ఏవాత్ర మేవాసః ప్రియ స్థానేషు సత్స్వపి ॥ 17

మహాభాగా! ఈ క్షేత్రము మానవులకు భోగమోక్షములను ప్రసాదించును. అందుచే ఇచటనే నా ఆవాసము. అటులనే ఇది సజ్జనులకు ప్రియమగు స్థానము.

పుణ్యైః పురాకృతైరేవ క్షేత్రం త్వం దృష్టవానిదం ।
అత్ర పుణ్యాని తీర్థాని క్షేత్రాణి శుభదాన్యపి ॥ 18

పూర్వ జన్మపు పుణ్యఫలముగా నీవు ఈ క్షేత్రమును దర్శించియున్నావు. ఇచట పుణ్యతరమగు తీర్థోదకములు, మరియు శుభదాయకములగు క్షేత్రములు గూడా గలవు.

ఆశ్చర్య సిద్ధయశ్చాత్ర సిద్ధాశ్చాత్ర తపస్వినః ।
భృగురత్రి భరద్వాజో దుర్వాసో వ్యాస గౌతమాః ॥ 19

ఇచట ఆశ్చర్యకరమగు సిద్ధులు లభించును, సిద్ధులు, తపస్వులూ అయిన భృగు, అత్రి, భరద్వాజ, దుర్వాస, వ్యాస, గౌతమ మొదలగువారు నివసించియున్నారు.

కణాదః కపిలోస్తో దధీచిర్భట దేవతాః ।
వాల్మీకీరుషమన్యుశ్చ విశ్వామిత్రశ్చ కశ్యపః ॥ 20

కణాద, కపిల, అగస్త్య, దధీచి, భటదేవతలు, వాల్మీకీ రుషమన్యు , విశ్వామిత్ర మరియు కశ్యపుడు

క్రతుర్మరీచిరన్యేపి మునయో వీతకల్మషాః ।
నివసంత్యత్ర రాజేంద్ర విరూపాక్ష దిదృక్షయా ॥ 21

రాజేంద్రుడా! క్రతూ, మరీచీ మరియు ఇతర దోషదూరులైన మునులు, ఇచట విరూపాక్షుని దర్శించు కాంక్షతో నివసించియున్నారు.

స్కందో నందీ మహాకాలో వీరభద్రశ్చ భైరవః ।
భృంగి విష్ణురజ శక్రస్తథైవాన్యాశ్చా దేవతాః ॥ 22

స్కంద, నంది, మహాకాల, వీరభద్ర మరియు భైరవుడు, భృంగీ, విష్ణు, బ్రహ్మ, ఇంద్ర అటులనే ఇతర దేవతలూ ఇచట నివసించియున్నారు.

ఉపాసంతే విరూపాక్షం భక్త్యాయుక్తాస్సదాముదా ।
ఏకకాలం, ద్వికాలం వా త్రికాలం నిత్యమేవ వా ॥ 23

వీరందరూ విరూపాక్షునియందు భక్తిగలవారై సంతోషముతో ఉపాసన చేసెదరు. నిత్యము, ఒకసారి లేక రెండు, మూడు సార్లు ఉపాసన చేయువారుయున్నారు.

యేర్చయంతి విరూపాక్షం విజ్ఞేయాస్తే గణేశ్వరాః ।
ప్రసంగాచ్ఛృణు రాజేంద్ర వక్ష్యమాణ మిదంమయా ॥ 24

రాజేంద్ర! ఎవరు విరూపాక్షుని అర్చించెదరో వారు గణాదులకు అధిపతులగుదురు. ఈ ప్రసంగము గూర్చి తెలిపెదను.

విరూపాక్షస్య మహాత్మ్య సర్వధర్మ సముచ్ఛయం ।
స్నానశీలో భవేచ్ఛుద్ధో నరకంనైవ పశ్యతి ॥ 25

విరూపాక్షుని సర్వధర్మ సముచ్ఛయ మహిమను తెలిసినవాడు స్నానమాచరించి శుద్ధుడైన అతడు నరకదర్శనము చేయడు.

దానశీలో భవేద్భోగీ దేవేభ్యో లభతే వరాన్ ।
జపాతా మానవాప్నోతి సత్యేన పరమాం గతిం ॥ 26

రక్తముతో ఎర్రబడి కన్నులందు రోషాగ్ని ఉద్భవించెను. దానికి ప్రతిగా చెట్లలందుగల పూలనుండు మకరందము నిండియున్ననూ అగ్ని కణములు వెడలుచుండెను.

తత్పుటా సహసోదగ్రాః సంహతాః పరితోరుషాః ।
అపపాతాగ్రతో వేగా దనాదృత్యబలం విభోః ॥ 69

ఆ క్రూర జంతువు శరీరముపైగల రోమములు నిమిరి నిలిచెను. అది కోపముతో ఎదురుగా గల రాజుని బలమును లెక్కింపక వేగముగా ఎదురుగానున్న వారిపై బడెను.

తతస్తమన్యతో దృష్ట్వా దృష్టమాత్రాద్భయప్రదం ।
అహెూ వరాహ ప్రాచండ్యమితి విస్మయతా సకృత్ ॥ 70

చూసిన భయము కలుగు నటులగల దానిని ఇంకొకవైపు నుండి చూసి అందరూ అహెూ! దాని ప్రచండతనమా! అని విస్మయమునొందిరి.

అవమత్యేతరాన్ సర్వానభియాతేషమామితి ।
కోపాశ్చర్య పరీతాత్మా ప్రతీయాయ మహీపతిః ॥ 71

ఎదురుగా వస్తున్న మిగిలిన ఎవరిని లెక్కజేయక, కోపము, ఆశ్చర్యములతో ఆవరించబడి రాజు ప్రతి దాడి చేసెను.

స తమా కృష్ట ధన్వానం భీషణ భృకుటీ ముఖం ।
దృష్ట్వా ప్రతి నివృత్తో భూద్భయ ముత్తం భయన్నిల ॥ 72

అతడు భృకుటిని ముడివేసి భీషణముగా బిల్లును ఈడ్చిన భయంకరుడైన రాజును చూసి, భయమునకు అదివెనక్కి తిరిగెను.

అనుదుద్రావతం రాజా మోక్తు కామః శితం తరం ।
సోప్య నైష్టతమేకాగ్రం విపినాద్విపినం జనాత్ ॥ 73

పదునైన బాణములు విడుచు ఇచ్ఛగలవాడై రాజు దానిని వెంబడించెను. ఆ వరాహము అతని ఏకాగ్రతను ఎదురించలేక జనులచే దూరముగా అడవి నుండి అడవికి పరిగెత్తెను.

శరం ముమోచ ముంచామీత్యేవమాశావశం వదం ।
పదం జహార దూరం సమ్మృగః సన్నికర్షేచరన్నివ ॥ 74

బాణమును విడిచెదను అని ఆశావశుడై ఆ మృగము చలించుచున్నపుడే బాణమును విడిచెను.

సగత్వా దూరమధ్వానం తస్మిన్నేదీయసి క్షణాత్ ।
శిలాయుత శిలాఘోరం ముమోచ నిశితం శరం ॥ 75

అతడు దూరముగా సాగి, దానిని సమీపమున యున్నాను. అని భావించుచుండగా, అది క్షణమాత్రమున దూరముగు చుండెను. అప్పుడు రాజు ఘోరమగు బాణమును విడిచెను.

స శరేణానువిద్ధాంగ ప్రాక్షరత్నతజేక్షితః ।
దుద్రావ ధైర్యమాలంబ్య ధ్వనినారుద్ధ దిజ్ముఖః ॥ 76

బాణముచే ఘాతింపబడగ, ఆ పంది కళ్లలలో రక్తము నిండగా, ధైర్యమును అవలంబించి, దిఙ్మూఢయై గట్టిగా అరుస్తూ పరిగెత్తెను.

రాజాపి రుధిరాకీర్ణాం వరాహ పదీపద్ధతిం ।
అను సృత్యజవాద్దూరం కిష్కింధాం పునరభ్యగాత్ ॥ 77

రాజు గూడ ఈ వరాహపు పాదగురుతులను అనుసరించి, వేగముగా చాలా దూరము వరకు సాగి ఎదురుగాగల కిష్కింధను చేరెను.

వనే వనే తమ న్వీక్ష్యబభ్రముః ఖలు సైనికాః ।
అపశ్యంతః క్వచిదపి శ్రాతాస్తస్థు స్తతస్తః ॥ 78

సైనికులు, అడవియందు దానిని వెతుకుచూ తిరిగిరి. కాని ఎక్కడను కానక అలసినవారె ఆపైన అక్కడక్కడ విశ్రాంతికై నిలిచిరి.

సా చంద్రమతీరాజ్ఞీ కుమారశ్చ కులోద్భవాః ।
సత్యకీర్తిశ్చతే శ్రాంతా రాజానం దదృశుర్వనే ॥ 79

రాణి చంద్రమతీ మరియు వంశోద్ధారకుడైన లోహితాశ్వుడు సత్యకీర్తయు, అలసిపోయిన రాజును మరియు ఇతరులనూ చూసిరి.

సమేత్యతాన్ భూమిపతిర్జితాత్మా తేభ్య స్స్వవృత్తం సకలం విభావ్య
తైరార్ద్రచిత్తైస్సముపాస్యమానో మూలేతరోః క్వాపి నృపోన్యక్షిదత్॥ 80

జితాత్ముడైన రాజా హరిశ్చంద్రుడు భార్య, పుత్ర మరియు ఇతర బంధువును సమీపించి వారికి తన విచారములన్నిటిని తెలిపెను. విని వారి హృదయములు ద్రవించెను వారిచే ఉపచరింపబడుచున్న రాజు ఒక వృక్షమూలమున విశ్రాంతికై విరమించెను.

ఇతి శ్రీస్కాంద పురాణే హేమకూటఖండే
పంపామహాత్మ్యే మధ్యమ భాగే హరిశ్చంద్రోపాఖ్యానే మాయా
వరాహ ప్రభావో నామ వింశోధ్యాయః (20)

అనున శ్రీస్కాంద పురాణపు హేమకూటఖండమున
పంపామహాత్మ్యమునందలి మధ్యమ భాగమునందు
హరిశ్చంద్రో పాఖ్యానమున మాయావరాహ ప్రభావమను
ఇరవైయవ అధ్యాయము సంపూర్ణము.

ಅರವತ್ತಾರನೆಯ ಅಧ್ಯಾಯ

ಆಮ್ರಕೂಟೇಶ್ವರ ಮಹಿಮಾ

ಸೂತ ಉವಾಚ ಸೂತನು ಹೇಳಿದನು.

ತತ್ರ ಸಪ್ತರ್ಷಯಃ ಪ್ರಾಜ್ಞಾಃ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಂ ಸಮುಪಾಗತಾಃ ।
ಆಮ್ರಕೂಟಾಹ್ವಯಕ್ಷೇತ್ರಂ ದದೃಶುಃ ಪುಣ್ಯವರ್ಧನಂ ॥1॥

ಅನಂತರ ಜ್ಞಾನಿಗಳಾದ ಸಪ್ತ ಋಷಿಗಳು ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಗೆ ಬಂದು ಸೇರಿದರು. ಅಲ್ಲಿ ಪುಣ್ಯವರ್ಧಕವಾದ ಆಮ್ರಕೂಟವೆಂಬ ಕ್ಷೇತ್ರವನ್ನು ನೋಡಿದರು.

ತತ್ರಪುಷ್ಪಫಲೋಪೇತಾನ್ಸುವಾಸಿತದಿಗಂತರಾನ್ ದೃಷ್ಟ್ವಾ ।
ನಾನಾವಿಧಾನ್ವೃಕ್ಷಾನ್ ಸರಾಂಸಿ ವಿವಿಧಾನಿಚ ॥2॥

ಅಲ್ಲಿ ಹೂ ಹಣ್ಣುಗಳಿಂದ ಕೂಡಿ ಪರಿಮಳಯುಕ್ತವಾದ ದಿಗಂತರಗಳನ್ನು ನೋಡಿ, ನಾನಾವಿಧವಾದ ಮರಗಳನ್ನು ವಿವಿಧ ಸರಸ್ಸುಗಳನ್ನು ಸಹ ಕಂಡು,

ಸಂತುಷ್ಟಮನಸಃ ಸರ್ವೇ ಪಪ್ರಚ್ಛುಃ ಕ್ಷೇತ್ರಪಾಲಕಂ ।
ಋಷಯ ಊಚುಃ
ಕಿಮಿದಂ ಕ್ಷೇತ್ರಮತ್ಯಂತ ರಮಣೀಯಂ ಸುಖಾಸ್ಪದಂ ॥3॥

ಹರ್ಷಚಿತ್ತರಾದ ಅವರು ಕ್ಷೇತ್ರಪಾಲಕನನ್ನು ಪ್ರಶ್ನಿಸಿದರು. *ಋಷಿಗಳು ಹೇಳಿದರು.* ಅತ್ಯಂತ ರಮಣೀಯವೂ ಸುಖದ ತಾಣವೂ ಆದ ಈ ಕ್ಷೇತ್ರವಾವುದು ಎಂದು.

ವಿರಾಜತೇ ಮಹಾಲಿಂಗಂ ಪಾರಮೇಶ್ವರಮವ್ಯಯಂ ।
ಅಸ್ಯಮಹಾತ್ಮ್ಯ ಮತುಲಂವದಾಸ್ಮಾಕಂ ದಯಾಕರ ॥4॥

ಅವ್ಯಯನೂ, ಪಾರಮೇಶ್ವರನ ಮಹಾಲಿಂಗವೂ ಶೋಭಿಸುತ್ತಿದೆ. ದಯಾಶಾಲಿಯೆ, ಅಸಮಾನವಾದ ಇದರ ಮಹಿಮೆಯನ್ನು ನಮಗೆ ಹೇಳುವವನಾಗು.

ಕ್ಷೇತ್ರಪಾಲ ಉವಾಚ ಕ್ಷೇತ್ರಪಾಲ ಹೇಳಿದನು.

ಆಮ್ರಕೂಟಸ್ಯ ಮಹಾತ್ಮ್ಯಂ ಸರ್ವಾಭೀಷ್ಟಪ್ರದಾಯಕಂ ।
ವಕ್ಷ್ಯಾಮಿ ಯುಷ್ಮದಾನಂದ ವೃದ್ಧ್ಯರ್ಥಂ ಮುನಿಪುಂಗವಾಃ ॥5॥

ಮುನಿವರ್ಯರೆ, ಸರ್ವ ಅಪೇಕ್ಷೆಗಳನ್ನು ಪೂರೈಸುವ ಆಮ್ರಕೂಟದ ಮಹಿಮೆಯನ್ನು, ನಿಮಗೆ ಆನಂದವನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸಲೋಸುಗ, ಹೇಳುತ್ತೇನೆ.

ಪುರಾಶಮನಿಧಿರ್ನಾಮಾ ಕಾತ್ಯಾಯನಕುಲೋದ್ಭವಃ ।
ಮಾತಾಪಿತೃವಿಹೀನೋ ಭೂಜ್ಯಾಂತ್ಯಂಧೋ ಬಂಧುವರ್ಜಿತಃ ॥6॥

ಹಿಂದೆ ಶಮನಿಧಿ ಎಂಬ ಕಾತ್ಯಾಯನ ಕುಲ ಸಂಜಾತನು, ತಾಯಿತಂದೆಯರಿಲ್ಲದೆ, ಹುಟ್ಟಿನಿಂದಲೇ ಕುರುಡನಾಗಿ ಬಂಧುಗಳಿಂದ ವರ್ಜಿತನಾಗಿದ್ದನು.

ಭೂಸುರೈರುಪನೀತಃ ಸನ್ತತ್ತ್ವಜ್ಞಶ್ಚಜಿತೇಂದ್ರಿಯಃ ।
ಶೈವಾನುಷ್ಠಾನ ತತ್ತ್ವಜ್ಞಃಶಿವಭಕ್ತಿಪರಾಯಣಃ ॥7॥

ಬ್ರಾಹ್ಮಣರಿಂದ ಕರೆದೊಯ್ಯಲ್ಪಟ್ಟು ಪ್ರಜ್ಞಾವಂತನಾಗಿ ಜಿತೇಂದ್ರಿಯನಾಗಿ, ಶೈವ ಅನುಷ್ಠಾನದ ತತ್ತ್ವವನ್ನು ಅರಿತವನು, ಶಿವಭಕ್ತ ಪರಾಯಣನಾಗಿದ್ದನು. (ಬ್ರಾಹ್ಮಣರಿಂದ ಉಪನಯನ ಸಂಸ್ಕಾರ ಪಡೆದು)

ಸದಾಪಂಚಾಕ್ಷರೀ ಮಂತ್ರಂ ಜಜಾಪ ಪರಮಾದರಾತ್ ।
ವಿನಾಲಿಂಗಾರ್ಚನಂ ಕಿಂಚಿನ್ನಾಶ್ನಾತಿ ಕ್ಷುಧಿತೋಪಿಸಃ ॥8॥

ಯಾವಾಗಲೂ 'ಓಂ ನಮಃ ಶಿವಾಯ' ಎಂಬ ಪಂಚಾಕ್ಷರೀ ಮಂತ್ರವನ್ನು ಪರಮ ಪ್ರೀತಿಯಿಂದ ಜಪಿಸುತ್ತಿದ್ದನು. ಹಸಿವೆಯಿಂದ ಬಳಲಿದ್ದರೂ, ಲಿಂಗಾರ್ಚನೆ ಮಾಡದ ಹೊರತು ಕಿಂಚಿತ್ತಾದರೂ ಆಹಾರವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ.

ಸ್ನಾನಾರ್ಥಮೇಕದಾ ತುಂಗಾಮಾಜಗಾಮ ನಭಸ್ಯಸೌ ।
ಪ್ರವಾಹೇಪತಿತೋಜ್ಞಾನಾದಗಾಧಸಲಿಲೇಕ್ಷರನ್ ॥9॥

ಒಂದು ದಿನ ಸ್ನಾನ ಮಾಡುವ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ರಭಸದಿಂದ ಹರಿಯುತ್ತಿದ್ದ ತುಂಗಾನದಿಗೆ ಬಂದನು. ಆದರೆ ಅಂಧನಾದ ಕಾರಣ ಅಜ್ಞಾನ ವಶದಿಂದ ಪ್ರವಾಹದಲ್ಲಿ ಆ ನೀರಿನಲ್ಲಿ ತೇಲುತ್ತಾ ಇದ್ದನು.

ಉಚ್ಚೈರುವಾಚ ಸಂತ್ರಸ್ತ ಶ್ಶಿವೇವಗತಿರ್ಮಮ ।
ಆಪ್ಲಾವ್ಯಮಾನೋ ವೇಗೇನ ಪ್ರವಾಹೇಣ ಮಹೀಯಸೇ ॥10॥

ಬಳಲಿದ ಆತನು ನನಗೆ ಶಿವನೇ ಗತಿಯೆಂದು ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಹೇಳಿದನು. ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ವೇಗವಾಗಿ ಹರಿಯುತ್ತಿದ್ದ ತುಂಗಾನದಿಯ ಪ್ರವಾಹದಲ್ಲಿ ತೇಲಿ ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದನು.

ತತೋವಿದೂರೇ ಪಂಪಾಯಾಸ್ತೀರಮಾಪವಿಧೇರ್ಬಲಾತ್ ।
ಕೂಲಪಾದಪಮೂಲಾನಿ ಧೃತ್ವಾಪ್ರಾಪ ಸರಿತ್ತಟಂ ॥11॥

ಅನಂತರ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿಯೇ ಪಂಪಾತೀರಕ್ಕೆ ದೈವಬಲದಿಂದ ಬಂದು ಸೇರಿದನು. ನದಿಯ ತೀರಕ್ಕೆ ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದಿದ್ದ ಮರಗಳ ಬೇರುಗಳನ್ನು ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಹಿಡಿದುಕೊಂಡು ನದೀದಡವನ್ನು ಸೇರಿದನು.

ಶ್ರಾಂತಸ್ತದಾತಟೇಸ್ಥಿತ್ವಾ ಸಸ್ಮಾರ ಶಿವಮವ್ಯಯಂ ।
ಶಿವಶಂಭೋಮಹೇಶಾನ ತವಪಾದಾಂಬುಜದ್ವಯಂ ॥12॥

ಆಯಾಸದಿಂದ ಬಳಲಿದ್ದ ಆತನು ದಡದಲ್ಲಿ ನಿಂತು ಅವ್ಯಯನಾದ ಶಂಭುವನ್ನು ಸ್ಮರಿಸಿದನು. ಶಿವನೇ, ಶಂಭುವೇ, ಈಶಾನನೇ ನಿನ್ನ ಪಾದಯುಗಳಗಳನ್ನು ನಂಬಿರುವ,

ಭವತಾರಕಮೇವಾದ್ಯ ಶರಣಂ ನಾನ್ಯದಸ್ತಿಮೇ ।
ಇತಿಸ್ಮರನ್ನಹಾರಣ್ಯೇ ಸಂಚಚಾರ ಸುದುಃಖಿತಃ ॥13॥

ನಾನು ಭವತಾರಕನಾದ ನಿನ್ನನ್ನೇ ಮೊರೆ ಹೊಕ್ಕಿರುವೆ,

ಅರವತ್ತೇಳನೆಯ ಅಧ್ಯಾಯ

ರಂಗನಾಥನಾಮಕ ಶಿವಪ್ರಾದುರ್ಭಾವಃ

ಸೂತ ಉವಾಚ ಸೂತನು ಹೇಳಿದನು.

ಅಥತೇ ಸಪ್ತಮುನಯಃ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ನಗರಾಂತಿಕಂ ।
ಸಂಪ್ರಾಪ್ಯ ಭಕ್ತಿಯೋಗೇನ ಪಪ್ರಚ್ಛುಃ ಕ್ಷೇತ್ರನಾಯಕಂ ॥1॥

ಮುಂದೆ ಆ ಸಪ್ತರ್ಷಿಗಳು ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಪಟ್ಟಣದ ಸಾಮಿಪ್ಯವನ್ನು ಹೊಂದಿ, ಭಕ್ತಿಯೋಗದಿಂದ ಕ್ಷೇತ್ರನಾಯಕನನ್ನು ಪ್ರಶ್ನಿಸಿದರು..

ಸಮೀಪೇ ನಗರಂ ಭಾತಿ ಕಸ್ಯೇದಂ ಕೌತುಕಾಸ್ಪದಂ ।
ಪ್ರಾಕಾರಗೋಪುರಸ್ಫಾರ ಪರಿಖಾಭಿರಲಂಕೃತಂ ॥2॥

ಸಮೀಪದಲ್ಲಿ ನಗರವೊಂದಿದೆ. ಆಶ್ಚರ್ಯಕ್ಕೆ ದಾರಿ ಮಾಡಿಕೊಡುವ ಇದು ಯಾವುದು ? ದೊಡ್ಡ ಪ್ರಾಕಾರ, ಗೋಪುರಗಳು, ಕಂದಕಗಳಿಂದ ಅಲಂಕೃತವಾಗಿರುವ ಈ ಪಟ್ಟಣವಾವುದು ?

ಪುರಂದರ ಪುರೇಣಾಪಿ ಸ್ಪರ್ಧಮಾನಂ ಸಮೃದ್ಧಿಮತ್ ।
ಆಸನ್ನೇ ಸಮ್ಯಗಾಭಾತಿ ದೇವತಾತನಂ ಶುಭಂ ॥3॥

ಸಮೃದ್ಧಿಯ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ, ಈ ನಗರವು ಇಂದ್ರನ ಅಮರಾವತಿಯೊಡನೆ ಸ್ಪರ್ಧೆಗಿಳಿದಂತಿದೆ. ಶುಭಪ್ರದವಾದ ದೇವಮಂದಿರವಿದ್ದು, ಬಹಳ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಶೋಭಿಸುತ್ತಿದೆ.

ಪ್ರಾಸಾದಃ ಕಸ್ಯದೇವಸ್ಯ ವೈಜಯಂತಸಮೋವರಃ ।
ಕ್ಷೇತ್ರಪಾಲ ಉವಾಚ
ಸಂಪ್ರವಕ್ಷ್ಯಾಮಿ ಯುಷ್ಮಾಕಂ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಖ್ಯಾನಮುತ್ತಮಂ ॥4॥

ಯಾವದೇವರ ಭವನವು, ಬಹಳ ಅತ್ಯುನ್ನತ ಉಪ್ಪರಿಗೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿದೆ ? ಎಂದು ಪ್ರಶ್ನಿಸಲು. * ಕ್ಷೇತ್ರಪಾಲನು ಹೇಳಿದನು* ಉತ್ತಮವಾದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯ ಈ ಕಥೆಯನ್ನು ನಿಮಗೆ ಹೇಳುತ್ತೇನೆ.

ಏಕಾಗ್ರಮನಸಃ ಸರ್ವೇ ಶೃಣುಧ್ವಂ ಮುನಿಸತ್ತಮಾಃ ।
ಅಹಲ್ಯಾತನಯೌ ತೀರ್ಥಮಹಿಮ್ನಾಕೀಶರೂಪಿಣೌ ॥5॥

ಮುನಿವರ್ಯರೇ ನೀವೆಲ್ಲರು ಏಕಾಗ್ರತೆಯುಳ್ಳವರಾಗಿ ಮನಸ್ಸಿಟ್ಟು ಕೇಳಿರಿ. ಅಹಲ್ಯೆಯ ಮಕ್ಕಳಿಬ್ಬರು ತೀರ್ಥ ಮಹಿಮೆಯಿಂದ ವಾನರರೂಪಧಾರಿಗಳಾಗಿದ್ದರು.

ವಾಲಿಸುಗ್ರೀವನಾಮಾನೌ ಮಾತ್ರಾಪ್ಯಾಪ್ತೌ ಮಹಾವನೇ ।
ಚರಂತೌ ಕ್ಷುತ್ಪಿಪಾಸಾಭ್ಯಾಂ ಪೀಡಿತಾವತಿಬಾಲಕೌ ॥6॥

ಬಾಲಕರಾದ ವಾಲಿ, ಸುಗ್ರೀವನೆಂಬ ಈವರ್ರು, ತಾಯಿಯಿಂದ ಅಟ್ಟೆ ಮಾಡಲ್ಪಟ್ಟು, ಘೋರವಾದ ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಅಲೆದಾಡುತ್ತಲು, ಹಸಿವು ಬಾಯಾರಿಕೆಗಳಿಂದ ಬಳಲುತ್ತಿದ್ದರು.

ನಿರೀಕ್ಷ್ಯ ನಾರದೋಽಪ್ಯಾಶುವಾನರೌಕರುಣಾನ್ವಿತಃ ।
ಯುವಯೋರ್ಜ್ಞಾನದೃಷ್ಟ್ಯಾಹಂ ವೇದ್ಮಿ ಪೂರ್ವಾಪರಸ್ಥಿತಿಂ ॥7॥

ನಾರದನು ಅವರನ್ನು ಗಮನಿಸಿ ಕರುಣೆಯು ಉಕ್ಕಿ ಬಂದು, ಆ ವಾನರರನ್ನು ಹೀಗೆಂದು ಹೇಳಿದನು. ನಿಮ್ಮ ಪೂರ್ವಪರಗಳನ್ನು ಜ್ಞಾನದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ತಿಳಿದಿರುವೆನು.

ಶಕ್ರಸೂರ್ಯಸುತೌ ತೀರ್ಥಮಹಿಮ್ನಾಕೀಶತಾಂಗತೌ ।
ತಥಾಪಿಯುವಯೋರೇಕಕ ಮುಪಾಯಂ ಸುಖದಂ ಬ್ರುವೇ ॥8॥

ಇಂದ್ರ ಮತ್ತು ಸೂರ್ಯರ ಮಕ್ಕಳಾದ ನೀವು ತೀರ್ಥದ ಮಹಿಮೆಯಿಂದ ವಾನರತ್ವವನ್ನು ಹೊಂದಿರುವಿರಿ. ಹಾಗಾದಾಗ್ಯೂ ನಿಮ್ಮಿಬ್ಬರಿಗೂ ಸುಖದಾಯಕವಾದ ಉಪಾಯವನ್ನು ನಾನು ಹೇಳುವೆನು.

(ಕ) ಇದಾನೀಂ ವಾಸವಾವಿತ್ಯೌ ಹೇಮಕೂಟೇ ಮಹಾನಗೇ ।
ಯುವಯೋಃ ಸುಖವೃದ್ಧ್ಯರ್ಥಂ ಕುರುತ ಸ್ತಪಉತ್ತಮಂ ॥9॥

ಈಗ ಇಂದ್ರನ ಮತ್ತು ಸೂರ್ಯನ ಮಕ್ಕಳು ದೊಡ್ಡ ಪರ್ವತವಾದ ಹೇಮಕೂಟದಲ್ಲಿ ನಿಮ್ಮಿಬ್ಬರಸುಖವು ಹೆಚ್ಚಾಗಲು ಉತ್ತಮವಾದ ತಪಸ್ಸನ್ನು ಆಚರಿಸಿರಿ.

ತದ್ಯುವಾಮಪಿ ತತ್ರೈವ ಗತ್ವಾಭಕ್ತಿಸಮನ್ವಿತೌ ।
ಶ್ರೀವಿರೂಪಾಕ್ಷಮುದ್ದಿಶ್ಯ ಕುರುತಂ ತಪುತ್ತಮಂ ॥10॥

ನೀವಿಬ್ಬರು ಅಲ್ಲಿಗೇ ಹೋಗಿ ಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಕೂಡಿ ಶ್ರೀವಿರೂಪಾಕ್ಷನನ್ನು ಉದ್ದೇಶಿಸಿ ಉತ್ತಮವಾದ ತಪಸ್ಸನ್ನು ಆಚರಿಸಿರಿ.

ಶಿವಪ್ರಸಾದಾದ್ಯುವಯೋಃ ಶ್ರೇಯೋ ಭವತಿಶಾಶ್ವತಂ ।
ಏವಂನಾರದವಾಕ್ಯಂತೌ ಶ್ರುತ್ವಾಬ್ರೂತಾಂಕಿಶೋರಕೌ ॥11॥

ಈಶ್ವರನ ಕೃಪೆಯಿಂದ ನಿಮ್ಮಿಬ್ಬರಿಗೂ ಶಾಶ್ವತವಾದ ಶ್ರೇಯಸ್ಸು ಉಂಟಾಗುತ್ತದೆ, ನಾರದನ ಈ ಮಾತನ್ನು ಕೇಳಿದ ಆ ಎಳೆಯರು ಹಾಗೆಂದರು.

ಕಥಂ ಕರ್ತವ್ಯಮಾವಾಭ್ಯಾಮೀಶ್ವರಾರ್ಥಂ ತಪಃ ಪರಂ ।
ಕಥಮಾವಾಂ ಮಹಾದೇವೋ ಬಿಭರ್ತಿಕರುಣಾಕರಃ ॥12॥

ಈಶ್ವರನನ್ನು ಕುರಿತು ನಮ್ಮಿಬ್ಬರಿಂದ ಉತ್ತಮವಾದ ತಪಸ್ಸು ಹೇಗೆ ಸಾಧ್ಯ. ಕರುಣಾಕರನಾದ ಮಹಾದೇವನು ಹೇಗೆ ತಾನೆ ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಕರುಣೆ ತೋರಿ ರಕ್ಷಿಸುವನು.

ತ್ವಮಾಪಯೋರ್ಗುರುರ್ದುಃಖ ಸಾಗರಾತ್ತಾರಯಾಶುನೌ ।
ಇತಿತದ್ವಚನಂ ಶ್ರುತ್ವಾ ನಾರದಃ ಕರುಣಾನ್ವಿತಃ ॥13॥

'ನೀನು ನಮ್ಮಿಬ್ಬರಿಗೂ ಈಗಲೇ ದುಃಖ ಸಾಗರದಿಂದ ಪಾರು ಮಾಡುವವರಾಗಿರಿ. ನೀವೇ ನಮ್ಮ ಗುರುಗಳು.' ಅವರ ಈ ಮಾತನ್ನು ಕೇಳಿದ ನಾರದನು ಕರುಣಾಳುವಾಗಿ,

ಉಪಾದಿದೇಶಸರ್ವೇಶ ವಿರೂಪಾಕ್ಷಮಹಾಮನುಂ ।
ಉಪದಿಷ್ಟೌ ನಾರದೇನ ಕ್ಷೇತ್ರೇಸ್ಮಿಮ್ಮಣ್ಯಕಾನನೇ ॥14॥

ಸರ್ವೇಶ್ವರನಾದ ವಿರೂಪಾಕ್ಷನ ಮಹಾಮಂತ್ರವನ್ನು ಉಪದೇಶ ಮಾಡಿದನು. ನಾರದನಿಂದ ಉಪದೇಶ ಪಡೆದ ವಾಲಿ ಸುಗ್ರೀವರು ಈ ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರದ ಮಹಾಕಾನನದಲ್ಲಿ,

ಶ್ರೀವಿರೂಪಾಕ್ಷ ಮುದ್ದಿಶ್ಯ ತಪಶ್ಚಕ್ರತುರಾದರಾತ್ ।
ಉಪವಾಸಕೃಶೌ ದಾಂತೌಸದಾಧ್ಯಾನಪರಾಯಣೌ ॥15॥

ಶ್ರೀ ವಿರೂಪಾಕ್ಷನನ್ನು ಕುರಿತು, ಬಹಳ ಆದರದಿಂದ ತಪಸ್ಸು ಮಾಡಿದರು. ಉಪವಾಸ ಮಾಡಿ, ಅರಿಷಡ್ವರ್ಗವನ್ನು ಜಯಿಸಿದವರಾಗಿ ಸರ್ವದಾ ಧ್ಯಾನ ಮಗ್ನರಾಗಿರುತ್ತಿದ್ದರು.

ಕೇನ ತುಷ್ಟೋ ಮಹಾದೇವ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷೋಭೂದುಮಾಧವಃ ।
ಉವಾಚಚ ಸುಧಾಸಾರೈಃ ಸೇಚಯನ್ನಿವಸೂಕ್ತಿಭಿಃ ॥16॥

ಅದರಿಂದ ಯಾವತ್ತೂ ಸಂತುಷ್ಟನಾದ ಮಹಾದೇವನು ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷನಾದನು. ಮತ್ತು ಉಮಾಧವನು, ಅಮೃತದ ಧಾರೆಯಿಂದ ಸಿಂಚನಗೊಳಿಸಿದ್ದಾನೆಯೋ ಎನ್ನುವಂತಹ ಮಧುರವಾಕ್ಕುಗಳಿಂದ ಅವರೀರ್ವರನ್ನು ಮಾತನಾಡಿಸಿದನು.

ಭೋವತ್ಸೌಭವನನಖ್ಯಾತವೀರ್ಯೌ ವಾನರಪಪಾರ್ಥಿತೌ ।
ಯುವಾಮೈಶ್ವರ್ಯಸಂಪನ್ನೌ ಭವತಂ ಬಲಶಾಲಿನೌ ॥17॥

ಎಲೈ ಮಕ್ಕಳೆ, ನೀವಿಬ್ಬರು ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಕೀರ್ತಿಯನ್ನು ಪಡೆದು ವಾನರರಾಜರುಗಳಾಗಿ, ಐಶ್ವರ್ಯ ಸಂಪನ್ನರಾಗಿ, ಬಲಶಾಲಿಗಳಾಗಿರಿ.

ಇತ್ಥಂ ತಯೋರ್ವರಂ ದತ್ವಾ ವಿಶ್ವಕಕರ್ಮಾಣಮಬ್ರವೀತ್ ।
ಅನಯೋಃ ಸುಖವಾಸಾರ್ಥಂ ಪುರಂ ವಾನರಯೋರ್ವರಂ ॥18॥

ಹೀಗೆ ಅವರಿಬ್ಬರಿಗೆ ವರವನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದ ಶಂಕರನು ವಿಶ್ವಕರ್ಮನನ್ನು ಕುರಿತು ಇಂತೆಂದನು. ಈ ಇಬ್ಬರು ವಾನರರ ಸುಖದ ನೆಲೆಗಾಗಿ ಉತ್ತಮವಾದ ಪುರವೊಂದನ್ನು,

ರಚಯೇತಿ ಮುದಾಜ್ಞಾಪ್ಯ ಧಾನಗಮ್ಯೊಭವತ್ಪ್ರಭುಃ ।
ವವಿಶ್ವಕರ್ಮಾಗಿರೀಶಾಜ್ಞಾಂ ಧೃವಾ ಶಿರಸಿಬುದ್ಧಿಮಾನ್ ॥19॥

ನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡೆಂದು ಸಂತೋಷದಿಂದ ಅಪ್ಪಣೆಯಿತ್ತ ಪ್ರಭುವು ಸ್ವಯಂ ಧ್ಯಾನದಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿದನು. ಬುದ್ಧಿವಂತನಾದ ದೇವಶಿಲ್ಪಿ ವಿಶ್ವಕರ್ಮನು ಗಿರಿಜೇಶ್ವರನ ಅನುಜ್ಞೆಯನ್ನು ಶಿರೋಧಾರಣೆ ಮಾಡಿ,

ರಚಯಾಮಾ ಕಿಕಿಂಧಾ ಪುರಂ ದೇವಪುರೋಪಮಂ ।
ರಾಜ್ಯೇಭಿಷಿಚ್ಯವಿಧಿವದ್ವಾಲಿನಂ ಬಲಶಾಲಿನಂ ॥20॥

ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಪಟ್ಟಣವನ್ನು ದೇವತೆಗಳ ನಗರಿ ಅಮರಾವತಿಗೆ ಸರಿಸಮವಾಗಿ ರಚಿಸಿದನು. ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿ ಬಲಶಾಲಿಯಾದ ವಾಲಿಯನ್ನು ವಿಧಿವತ್ತಾಗಿ ಪಟ್ಟಾಭಿಷೇಕ ಮಾಡಿ ನೆಲೆ ನಿಲ್ಲಿಸಿದನು.

ಜಗಾಮ ವಿಶ್ವಕರ್ಮಾಪಿ ಸ್ವರ್ಗಲೋಕಂ ಮುದಾನ್ವಿತಃ ।
ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಂ ಪಾಲಯಾಮಾಸ ವಾಲೀಬಲ ಸಮನ್ವಿತಃ ॥21॥

ತನ್ನ ಕೆಲಸವನ್ನು ಮುಗಿಸಿದ ವಿಶ್ವಕರ್ಮನು ಸಂತಸದಿಂದ ಸ್ವರ್ಗಲೋಕಕ್ಕೆ ಹೋದನು. ವಾಲಿಯು ಬಲಶಾಲಿಯಾದುದಲ್ಲದೆ, ತನ್ನ ಸೈನ್ಯ ಬಲದೊಂದಿಗೆ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯನ್ನು ಪರಿಪಾಲಿಸಿದನು.

ಹನೂಮನ್ನಲ ನೀಲಾದಿಕಪಿವರ್ಯೈರ್ಮಹಾತ್ಮಭಿಃ ।
ಸುಗ್ರೀವೋ ಯುವರಾಜೋ ಭೂದಗ್ರಜಸ್ಯಮಮತೇಸ್ಥಿತಃ ॥22॥

ಹನುಮ, ನಲ, ನೀಲನೇ ಮೊದಲಾದ ಕಪಿವರೇಣ್ಯರ ಜೊತೆಗೂಡಿದನು. ಅಗ್ರಜನ ಅಭಿಪ್ರಾಯದಂತೆ ಸುಗ್ರೀವನು ಯುವರಾಜನಾಗಿ ಅವನೊಡನೆ ನೆಲೆನಿಂತನು.

ಏವಂ ವಾಲಿನಿ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾಂ ಪಾಲ್ಯಮಾನೇಮಹಾಬಲೇ ।
ಏಕದಾರಾಕ್ಷಸೋಭ್ಯೇತ್ಯ ದುಂದುಭಿರ್ನಾಮ ದುರ್ಮದಃ ॥23॥

ಈ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಮಹಾಬಲಶಾಲಿಯಾದ ವಾಲಿಯು ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯನ್ನು ಪರಿಪಾಲಿಸುತ್ತಿರಲು, ಒಂದುದಿನ, ದುರ್ಮದನಾದ ದುಂಧುಬಿ ಎಂಬೋರ್ವ ರಾಕ್ಷಸನು ಎದುರಾಗಿ,

ವಾಲಿನಾಯುದ್ಧಮಾಕಾಂಕ್ಷನ್ ಜಗರ್ಜನಗರಾಂತಿಕಂ ।
ತಚ್ಛ್ರುತ್ವಾ ಸಹಮಾನೋಸೌವಾಲೀ ಬಲವತಾಂಬಲೀ ॥24॥

ನಗರದ ಸಮೀಪಕ್ಕೆ ಬಂದು, ವಾಲಿಯೊಡನೆ ಯುದ್ಧಾಕಾಂಕ್ಷಿಯಾಗಿ, ಜೋರಾಗಿ ಗರ್ಜಿಸಿದನು. ಅದನ್ನು ಕೇಳಿ ಸಹನೆ ಮೀರಿ, ಬಲಿಷ್ಟರಲ್ಲಿ ಬಲಶಾಲಿಯಾದ ಈ ವಾಲಿಯು,

ಯುದ್ಧಾಯ ನಿರ್ಯಯೌ ತೂರ್ಣಂ ಸುಗ್ರೀವಸಸಹಿತಃ ಪುರಾತ್ ।
ಪ್ರವೃತ್ತಃ ಸಮರೋಭೀಮೋ ದೈತ್ಯವಾನರಯೋರ್ಮಹಾನ್ ॥25॥

ಸುಗ್ರೀವ ಸಮೇತನಾಗಿ ಯುದ್ಧಕ್ಕೆ ಬಿಲ್ಲುಬಾಣಗಳೊಡನೆ ಸಿದ್ಧನಾಗಿ, ನಗರದಿಂದ ಹೊರಗೆ ಹೊರಟನು. ದೈತ್ಯ ವಾನರರೊಡನೆ ಮಹಾನ್ ಭೀಮ ಭಯಂಕರವಾಗಿ ಯುದ್ಧವು ಸಂಘಟಿತವಾಗಲು,

ಮುಷ್ಟಿಭಿರ್ನಖದಂತೈಶ್ಚಪರ್ವತಾನೋಕಹೈರಪಿ ।
ತದ್ಯದ್ಧಮಭವದ್ಘೋರಂ ವೃತ್ರವಾಸವಯೋರಿವ ॥26॥

ಮುಷ್ಟಿಗಳಿಂದ ಗುದ್ದುತ್ತಾ, ಉಗುರುಗಳಿಂದ ಪರಚುತ್ತಾ, ಹಲ್ಲುಗಳಿಂದ ಕಚ್ಚುತ್ತಾ, ಪರ್ವತಗಳನ್ನೆತ್ತಿ ಪರಸ್ಪರ ಹಾಕುತ್ತಾ ನಡೆಯುತ್ತಿದ್ದ ಆ ಘನಘೋರವಾದ ಯುದ್ಧವು, ಇಂದ್ರ–ವೃತ್ರರ ನಡುವಿನ ಯುದ್ಧವೆಂಬಂತೆ ಆಗುತ್ತಿತ್ತು.

ವಾಲಿನೋ ಬಲವೇಗಂ ಸದುಂದುಭಿಃ ಸೋಢುಮಕ್ಷಮಃ ।
ಪಾಲಾಯಮಾನಃ ಸಂತ್ರಸ್ತಃ ಪ್ರವಿವೇಶ ಗಿರೇರ್ಗುಹಾಂ ॥27॥

ವಾಲಿ ಮತ್ತು ದುಂದುಭಿಗಳ ಬಲವನ್ನು ಮತ್ತು ಹೊಡೆಯುವ ವೇಗವನ್ನು ಬಣ್ಣಿಸಲು ಅಸಾಧ್ಯವು. ಹೆದರಿ ಓಡುತ್ತಿದ್ದ ದುಂದುಭಿಯನ್ನು ಕಂಡು ಗಿರಿಯ ಗುಹೆಯನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಿದ ಅವನನ್ನು ನೋಡಿ,

ಮಹಾನಂದಾಬ್ಧಿ ಮಗ್ನೋಭೂದ್ಯುಕ್ತಃ ಸುಂದರಭಾರ್ಯಯಾ ।
ಏವಂ ಸರ್ವಸಮೃದ್ಧಸ್ಯ ಸುಖಿನಸ್ತಸ್ಯ ಯೌವನೇ ॥27॥

ಸುಂದರವಾದ ಹೆಂಡತಿಯೊಡಗೂಡಿ ಮಹಾನಂದ ಸಾಗರದಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿದ್ದನು. ಈ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಸರ್ವ ಸಮೃದ್ಧಿಯಿಂದ ಸುಖಿಯಾಗಿದ್ದನು ಅವನ ಯೌವನದಲ್ಲಿ.

ಜಾತೋಮಹಾನಹಂಕಾರಃ ಸರ್ವಸನ್ಮಾರ್ಗಭೇದಕಃ ।
ಔದಾರ್ಯಶೌರ್ಯಧೈರ್ಯೇಷು ಮತ್ಸಮೋನಾಸ್ತಿಸಂಪದಾ ॥28॥

ಎಲ್ಲ ಸನ್ಮಾರ್ಗಗಳನ್ನು ಭೇದಿಸುವಂತಹ ಮಹಾನ್ ಅಹಂಕಾರವು ಹುಟ್ಟಿತು. ಔದಾರ್ಯ, ಶೌರ್ಯ, ಧೈರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ನನಗೆ ಸಮನಾರಿಲ್ಲ. ಸಂಪತ್ತಿನಿಂದಲೂ ನನ್ನನ್ನು ಮೀರಿಸುವವರಿಲ್ಲ.

ಅಹಂಸರ್ವಕಲಾಭಿಜ್ಞಃ ಸಾರ್ವಭೌಮಪದೇಸ್ಥಿತಃ ।
ವಿದ್ಯಾಧಿಕೋಸ್ಮಿ ವಿಪ್ರೇಭ್ಯಃ ಕ್ಷತ್ರಿಯೇಭ್ಯೋ ಬಲಾಧಿಕಃ ॥29॥

ನಾನು ಎಲ್ಲ ಕಲೆಗಳಲ್ಲೂ ಅಭಿಜ್ಞನು. ಸಾರ್ವಭೌಮ ಪದವಿಯಲ್ಲಿ ನಿಂತಿರುವೆನು. ಬ್ರಾಹ್ಮಣರಿಗಿಂತಲೂ ವಿದ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಅಧಿಕನಾಗಿರುವೆನು. ಬಲದಲ್ಲಿ ಕ್ಷತ್ರಿಯರಿಗಿಂತಲೂ ಬಲಾಢ್ಯನು.

ಅಧಿಕೋಸ್ಮಿ ಮನುಷ್ಯೇಭ್ಯಃ ಸಂಪದ್ರೂಪಗುಣೇಷ್ವಹಂ ।
ಏವಮಾತ್ಮನಿ ನಿಶ್ಚಿತ್ಯ ದೇವಲಃ ಸ್ಮಯದೂಷಿತಃ ॥30॥

ಸಂಪತ್ತಿನಲ್ಲಿ, ರೂಪದಲ್ಲಿ, ಗುಣದಲ್ಲಿ ಸಹ ಇತರ ಮನುಷ್ಯರಿಗಿಂತ ನಾನು ಅಧಿಕನಾಗಿರುವೆನು. ಈ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ದೇವನು ತನ್ನಲ್ಲಿಯೇ ತಾನು ನಿಶ್ಚಯಿಸಿ ಸ್ವಯಂದೂಷಿತನಾದನು.

ಅಜನ್ಮದೀನಃ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯಮಕಸ್ಮಾತ್ಪ್ರಾಪ್ಯಯೌನೇ ।
ನಿರಹಂಕಾರಿಣೋಲೋಕೇ ವಿರಲಾಃ ಸಂತಿಸಾಧವಃ ॥31॥

ಹುಟ್ಟಿನಿಂದ ದೀನನಾಗಿದ್ದ ದೇವಲನು ಯೌವನದಲ್ಲಿ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಹೊಂದಿದನು. ಲೋಕದಲ್ಲಿ ಹೀಗಿದ್ದು ನಿರಹಂಕಾರಿಗಳಾಗಿಯೇ ಉಳಿಯುವ ಸಜ್ಜನರು ಅತಿ ವಿರಳ.

ಸ್ಮಯೇನ ದೇವಲಃ ಸಾಧೂನರ್ಚಯಾಮಾಸ ನಾಪ್ಯಸೌ ।
ಸುಭಾಯಾಂ ಬಹುಮಾನಾರ್ಹಾನವಮತ್ಯಮನೀಷಿಣಃ ॥32॥

ಈ ದೇವಲನು ಅಹಂಕಾರದಿಂದ ಸಾಧುಗಳನ್ನು ಅರ್ಚಿಸಲಿಲ್ಲ. ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ಬಹುಮಾನಿತರಾಗಲು ಅರ್ಹರಾದ ಕೋವಿದರನ್ನು ಅವಮಾನಿಸುತ್ತಿದ್ದನು.

ಮದಾಂಧಃ ಪಾಲಯಾಮಾಸ ರಾಜ್ಯಂಸರ್ವಸಮೃದ್ಧಿಮಾತ್ ।
ಕದಾಚಿದಾಗತೋಮಾರ್ಗವಶಾತ್ಪ್ರಜ್ಞಾನಿಧಿರ್ದ್ವಿಜಃ ॥33॥

ಮದಾಂಧನಾದಂತಹ ರಾಜನು ಸರ್ವಸಮೃದ್ಧಿಯಾದ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಪರಿಪಾಲನೆ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದನು. ಪ್ರಜ್ಞಾನಿಧಿಯು, ಶ್ರೇಷ್ಠನು ಆದವನೋರ್ವನು ಮಾರ್ಗವಶನಾಗಿ, ಒಮ್ಮೆ ಅಕಸ್ಮಾತ್ತಾಗಿ ಬಂದನು.

ವಿವೇಶಕೌತು ಕಾ ದ್ದೃಷ್ಟ್ವಾದೇವಲಸ್ಯ ಸಭಾಂ ಮುನಿಃ ।
ದೃಷ್ಟ್ವಾಪಿ ಮುನಿಮಾಯಾಂತಂ ನೋದತಿಷ್ಠನ್ನೃಪಾಸನಾತ್ ॥34॥

ಮುನಿಯು ಒಳಗೆ ಪ್ರವೇಶ ಮಾಡಿದನು. ದೇವಲನ ಸಭೆಯನ್ನು ಕುತೂಹಲದಿಂದ ನೋಡಿದ್ದನು. ಮುನಿಯು ಒಳಗೆ ಬಂದದನ್ನು ನೋಡಿಯೂ ಸಹ ರಾಜನು ತನ್ನ ಸಿಂಹಾಸನದಿಂದ ಮೇಲೆ ಏಳಲಿಲ್ಲ.

ಪ್ರಣನಾಮ ನತಂದರ್ಪಾತ್ಕುಶಲಂ ನಾಪ್ಯಪೃಚ್ಛತ ।
ಸಿಂಹಾಸನೇ ಸಮಾಸೀನಂ ಪ್ರಸಾರ್ಯ ಚರಣೌ ಮದಾತ್ ॥35॥

ಅಲ್ಲದೆ ಆತನಿಗೆ ನಮಸ್ಕಾರ ಮಾಡಲಿಲ್ಲ. ದರ್ಪದಿಂದ ಕೂಡಿದ ಅವನು, ಮುನಿಯ ಕ್ಷೇಮವನ್ನು ಸಹ ವಿಚಾರಿಸಲಿಲ್ಲ. ಮದದಿಂದ ಸಿಂಹಾಸನದಲ್ಲಿ ಕಾಲು ಚಾಚಿ ಕುಳಿತಿದ್ದವನನ್ನು,

ಮದಾಂಧಂ ದೇವಲಂ ದೃಷ್ಟ್ವಾಚುಕೋಪಮುನಿಪುಂಗವಃ ।
ರೇರೇದೇವಲದುಷ್ಟಾತ್ಮನ್ ರಾಜ್ಯಾನರ್ಹಸ್ತ್ವಮುದ್ಧತಃ ॥36॥

ಮಧಾಂಧನಾದ ದೇವಲನನ್ನು ಕಂಡು ಮುನಿವರ್ಯನು ಕುಪಿತನಾದನು. ಎಲೈ ದೇವಲನೆ ದುಷ್ಟಾತ್ಮನಾದ ನೀನು ರಾಜ್ಯಭಾರ ಮಾಡುವುದಕ್ಕೆ ಅಯೋಗ್ಯನೇ ಸರಿ.

ಆಜನ್ಮದುರ್ಗತೋ ದೈವಾತ್ಸಂಪತ್ಪ್ರಾಪ್ಯಾವಿಮುಹ್ಯಸಿ ।
ಅವಮತ್ಯದ್ವಿಜಾನ್ಪೂಜ್ಯಾನ್ಮತ್ತೋದ್ವಿಪ ಇವಾಸಿಯತ್ ॥37॥

ಹುಟ್ಟಿನಿಂದ ದುರ್ಗತಿಕನಾದ ನೀನು ದೈವವಶದಿಂದ ಸಂಪತ್ತನ್ನು ಪಡೆದು ಮೋಹಕ್ಕೆ ಒಳಗಾಗಿರುವೆ. ದ್ವಿಜರನ್ನು ಪೂಜ್ಯರನ್ನು ಕಡೆಗಾಣಿಸಿ ಮದಿಸಿದ ಆನೆಯ ಹಾಗೆ ಇರುವ ಯಾವ ನೀನು,

ತತ್ಕುಂಜರೋ ವನೇಭೂತ್ವಾ ಸಂಚರಸ್ವ ನೃಪಾಧಮ ।
ಇತ್ಥಂಪ್ರಜ್ಞಾನಿಧೇಃ ಶಾಪಾದ್ದ್ವಿಪೋ ಭೂತ್ವಾನೃಪೋವನೇಃ ॥38॥

ಅಂಥಹದೊಂದು ಆನೆಯಾಗಿ, ನೀಚನಾದ ರಾಜನೇ, ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಸಂಚರಿಸು. ಹೀಗೆ ಪ್ರಜ್ಞಾನಿಧಿಯ ಶಾಪದಿಂದ ರಾಜನು ಕಾಡಿನಲ್ಲಿ ಆನೆಯಾಗಿ,

ಸಂಚಚಾರ ಬಹೂನಬ್ದಾನ್ಸಂಜಯನ್ನಾಶ್ರಮದ್ರುಮಾನ್ ।
ಕಾಲೇನಮಹತಾ ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರಂ ಪ್ರಾಪವಿಧೇರ್ಬಲಾತ್ ॥39॥

ಸಂಚರಿಸುತ್ತಾ, ಆಶ್ರಮದಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದು ನಿಂತಿದ್ದ ಅಸಂಖ್ಯಾತ ಮರಗಳನ್ನು ನಾಶ ಮಾಡತ್ತಿರಲು ವಿಧಿ ಬಲದಿಂದ ಕಾಲಾಂತರದಲ್ಲಿ ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರಕ್ಕೆ ಹೋದನು.

ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪ್ರತೀಕಾಶಃ ಸರ್ವಲೋಕ ಭಯಂಕರಃ ।
ಆಜಗಾಮಗಜೋಮಾರ್ಗವಶಾದ್ರಂಗೇಶಮಂದಿರಂ ॥40॥

ಅಂಜನಾದ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಬೆಳಗುತ್ತಾ ಸರ್ವಲೋಕ ಭಯಂಕರನಾದ ರಂಗೇಶ ಮಂದಿರಕ್ಕೆ, ಹಾಗೆಯೇ ಚಲಿಸುತ್ತಾ ಇದ್ದ ಆನೆಯು ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಬರುತ್ತಾ, ತಲುಪಿತು.

पम्पाक्षेत्र तुंगभद्रा नदी तट पर, श्री हेमकूट पर्वत पर विराजमान
विजयनगर साम्राज्य राजधानि (हम्पी) - अधि देवता राजाधिराज भगवान
श्री पम्पा विरुपाक्षेश्वर मंदिर

हेमकूट पर्वत पर वराजमान श्री हनमान् मन्दिर

पंपक्षेत्र विजयनगर साम्राज्य राजधानी

unesco
World Heritage Convention

Group of Monuments at Hampi (India)

https://whc.unesco.org/en/documents/109357

unesco
World Heritage Convention

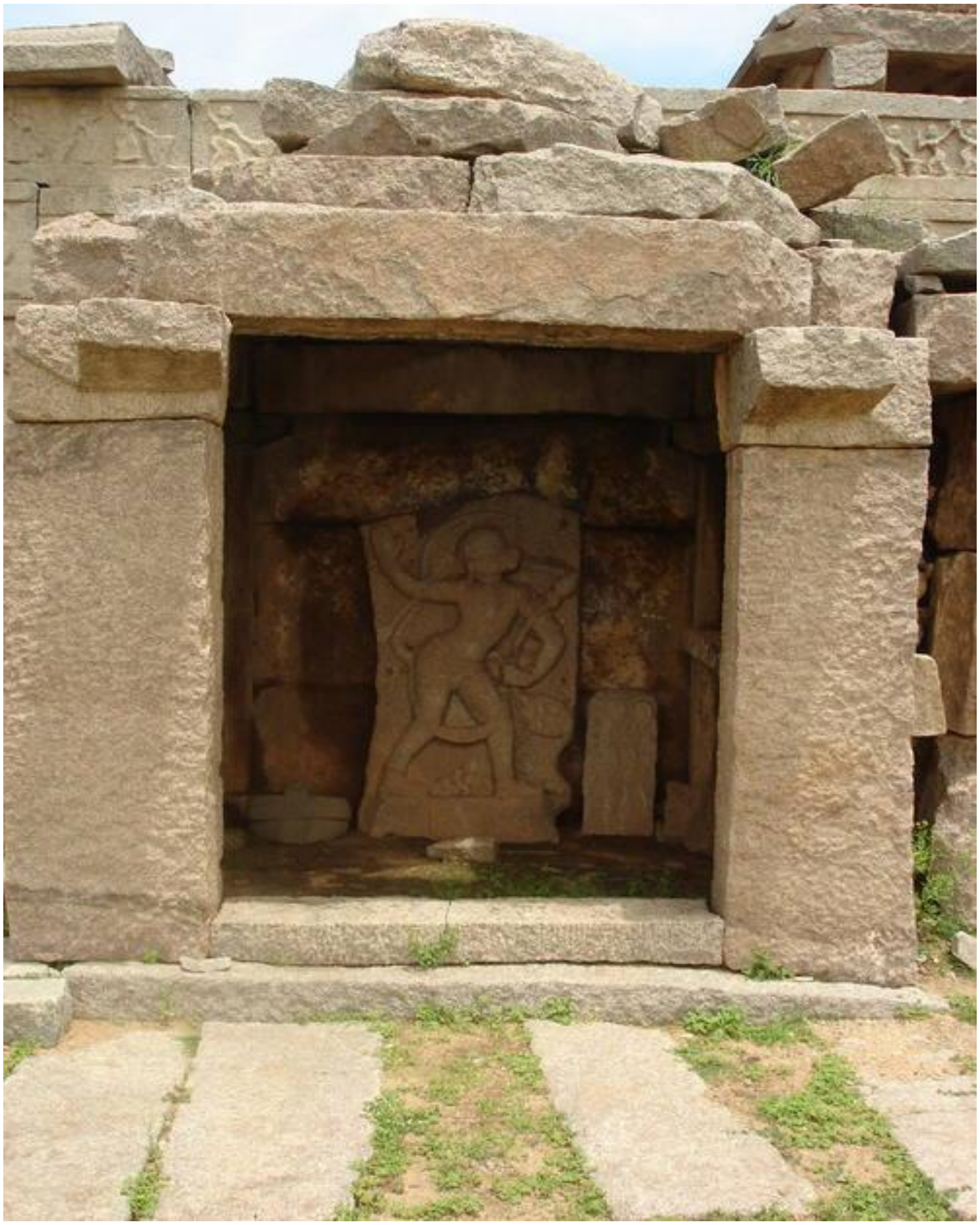

unesco https://whc.unesco.org/en/documents/109330

unesco
World Heritage Convention

Lord Sri Hanuman – Pampakshetra Kishkindha

unesco https://whc.unesco.org/en/documents/109362

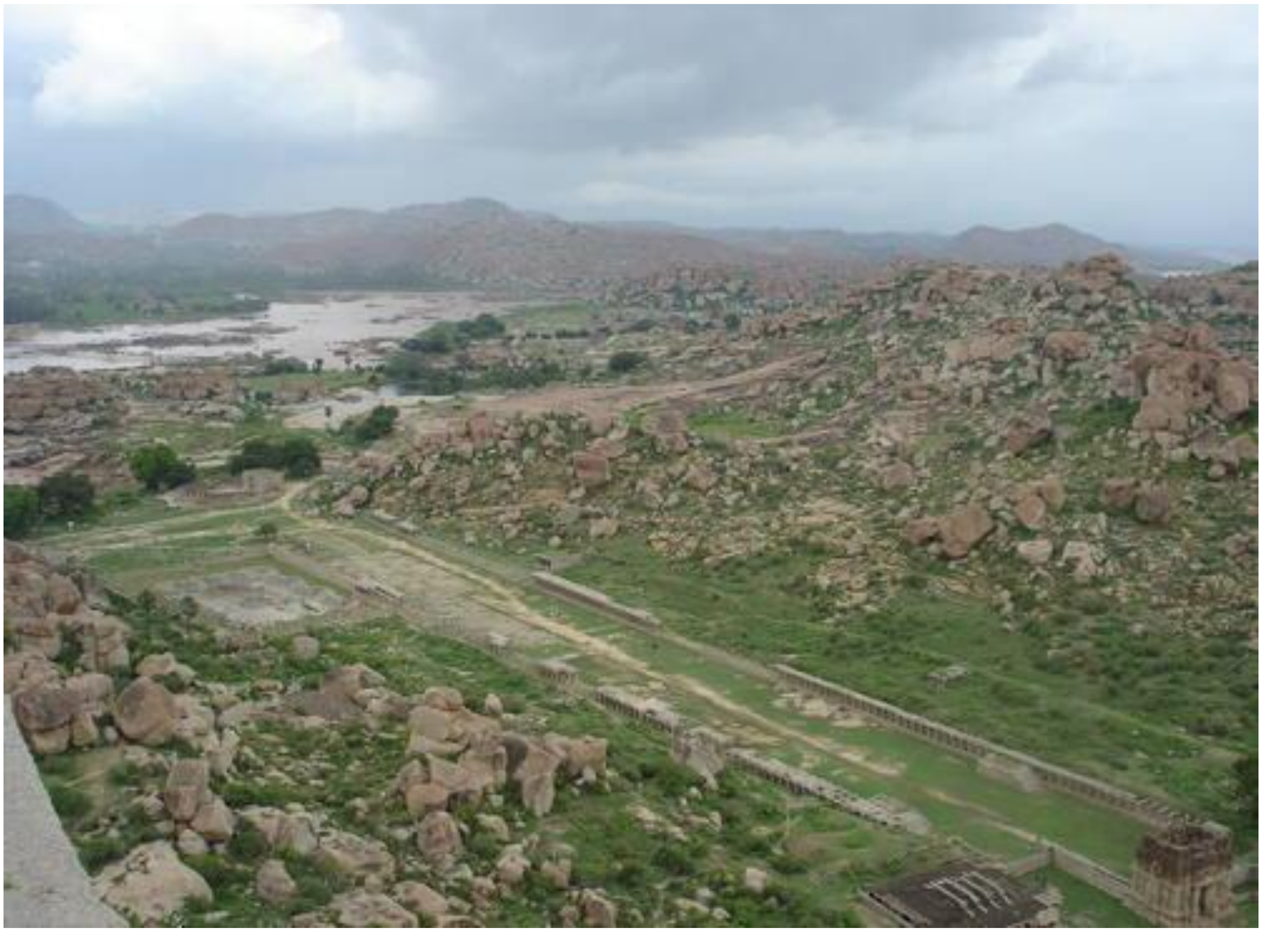

Pampakshetra Kishkindha Hampi

unesco https://whc.unesco.org/en/documents/109360

उत्तर दिशा प्रवेश द्वार के सामने से श्री किष्किंधा अंजनाद्री

ऋष्यमूक पर्वत से श्री किष्किंधा अंजनाद्री पहाड़ी का दृश्य,

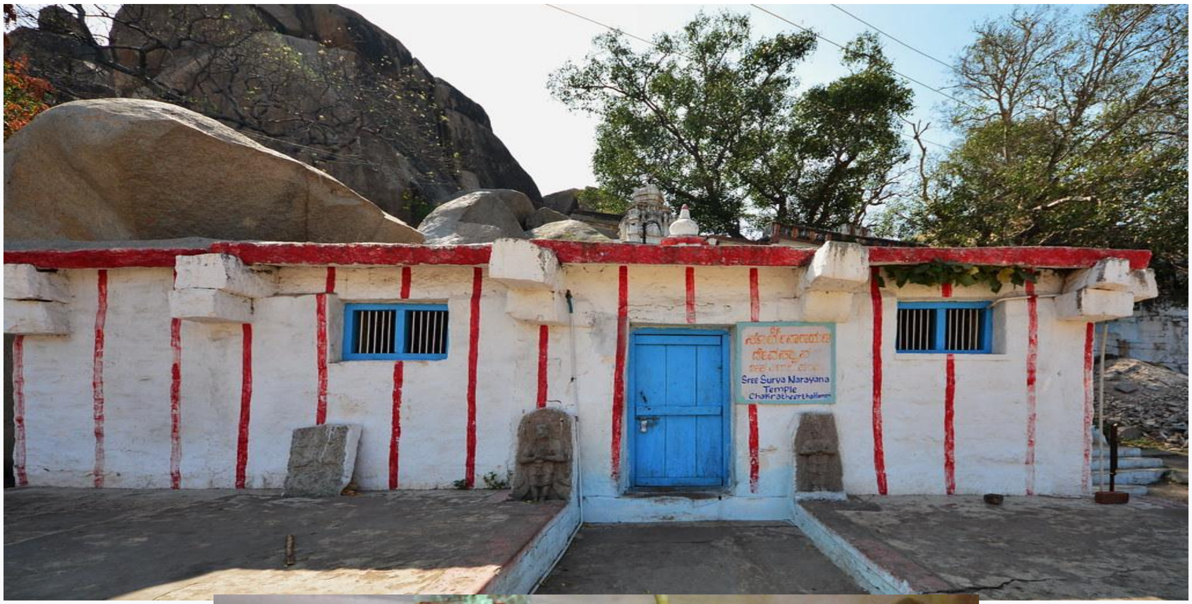

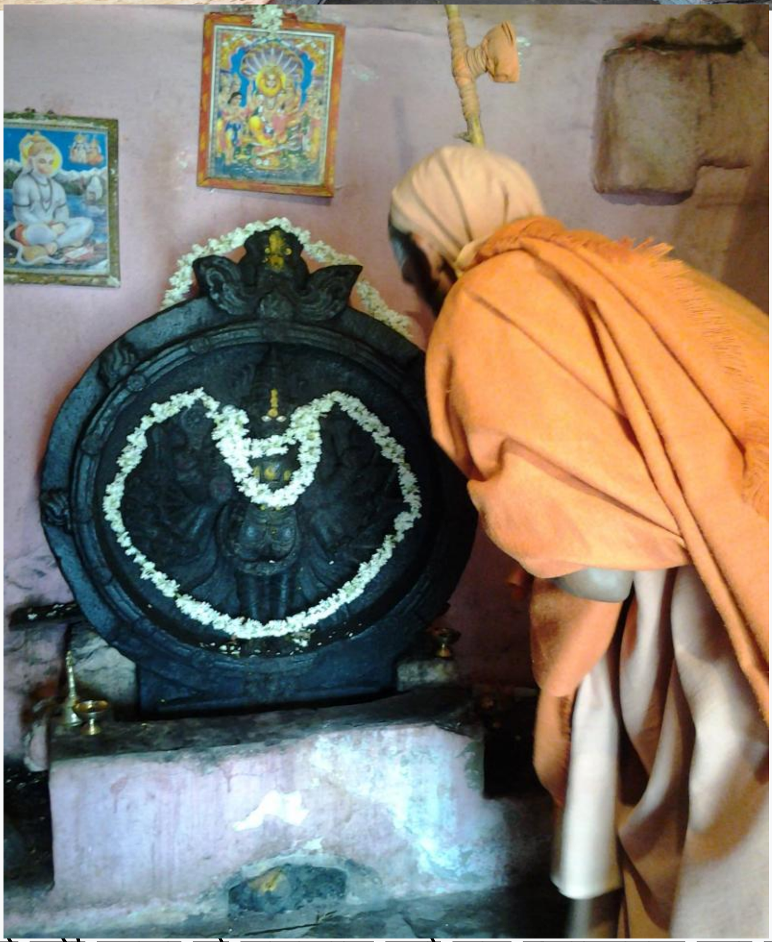

भगवान सूर्य की कृपा से हनुमान को नव व्याकरण का ज्ञान हुआ।
ष्किंडा में सूर्यनारायण मंदिर श्री सूर्यनारायण की कृपा का प्रतीक है।

श्री पम्पाक्षेत्र हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा अंजनाद्रि पर्वत पर विराजमान
मूल मन्दिर मे बाल स्वरुप हनुमान जी

श्री पम्पाक्षेत्र हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा मे निर्माण होनेवाले
नवीन "श्री बाल हनुमद् समेत माता अंजनी मन्दिर – प्रारूप"

भगवान हनुमान जी के बारे में झूठा प्रचार करने वाले कुछ अप्रमाण ग्रंथ पुराण, संहिता, पी.एच.डी और अन्य शोध कार्यों के नाम पर प्रचार होनेवाली इस नकली पुस्तकों से सावधान रहें

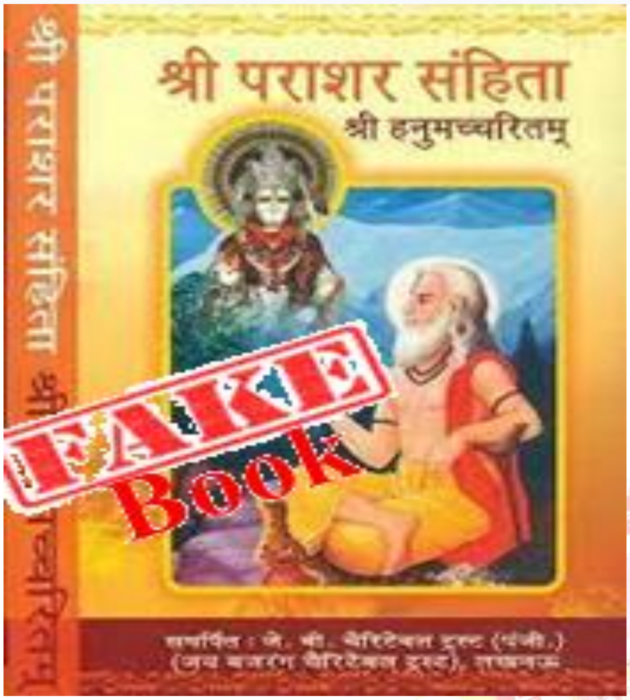

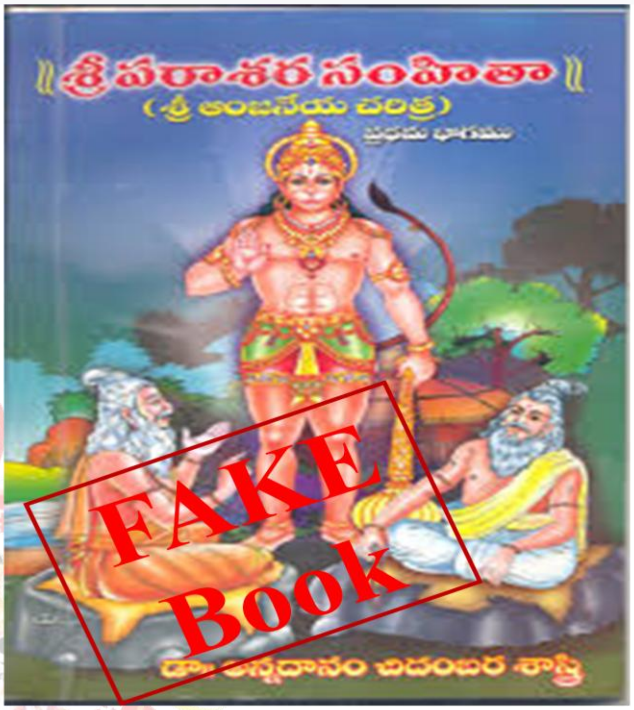

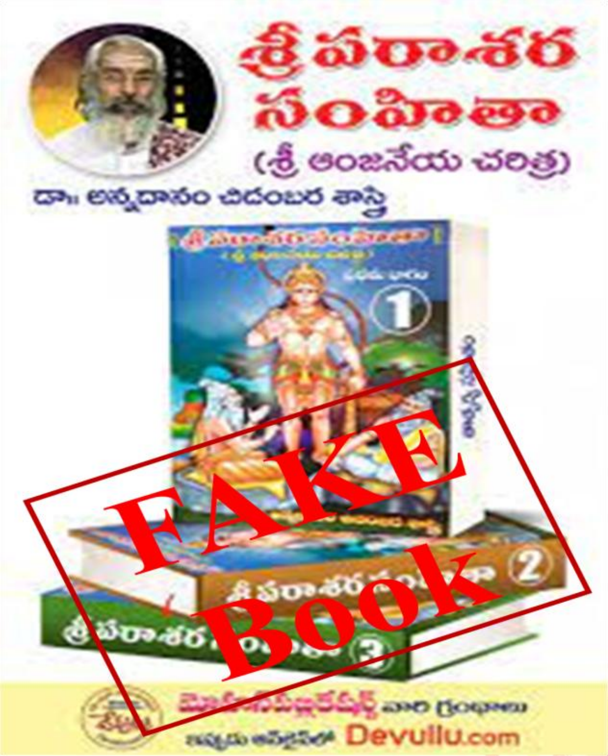
శ్రీ పరాశర
సంహితా
(శ్రీ ఆంజనేయ చరిత్ర)
డా॥ అన్నదానం చిదంబర శాస్త్రి
FAKE
Book
Devullu.com

PDF
FAKE
Book

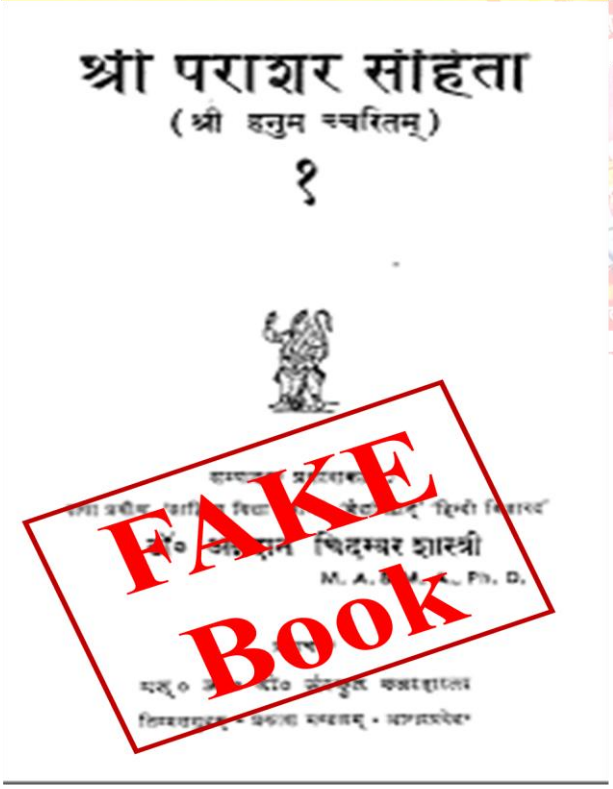
श्री पराशर संहिता
(श्री हनुम च्चरितम्)
१
FAKE
Book

శ్రీ హనుమజ్జన్మ స్థలం - అంజనాద్రి
గ్రంథకర్త
FAKE
Book

श्री हनुमान जन्मस्थान पर टीटीडी की नकली पुस्तकें, नकली दस्तावेज, नकली शोध

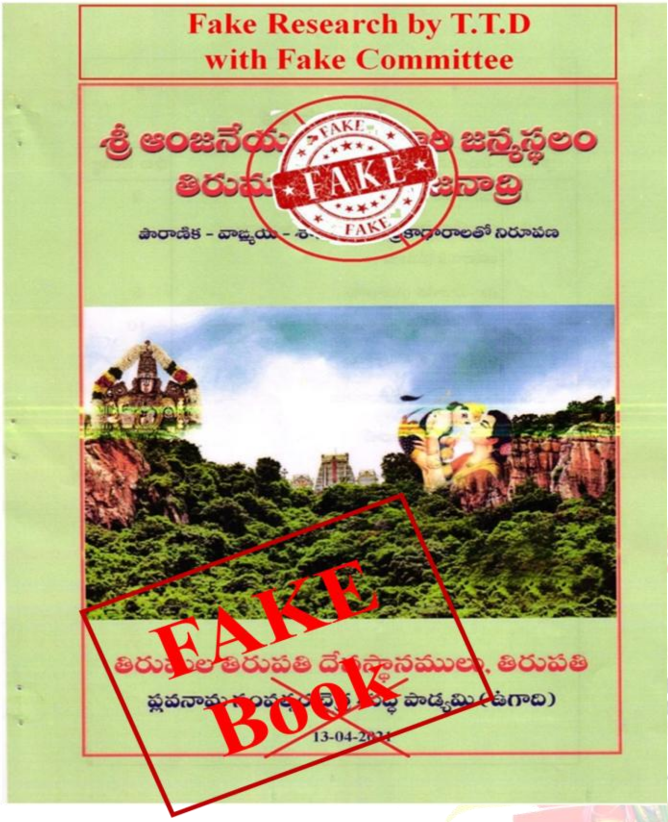

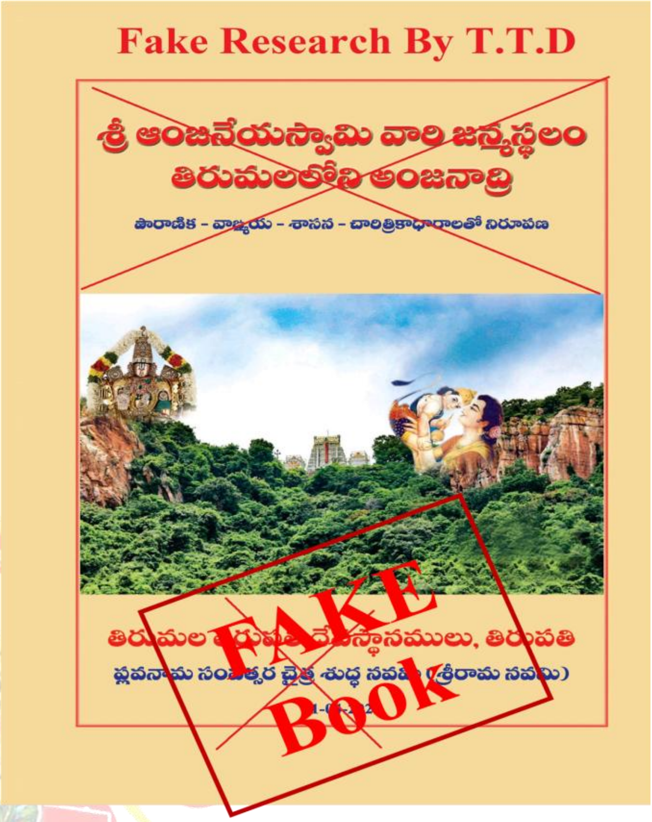

टीटीडी फर्जी रिसर्च, पहली किताब 13-04 -2021

टीटीडी फर्जी रिसर्च, दूसरी किताब 21-04-2021

,

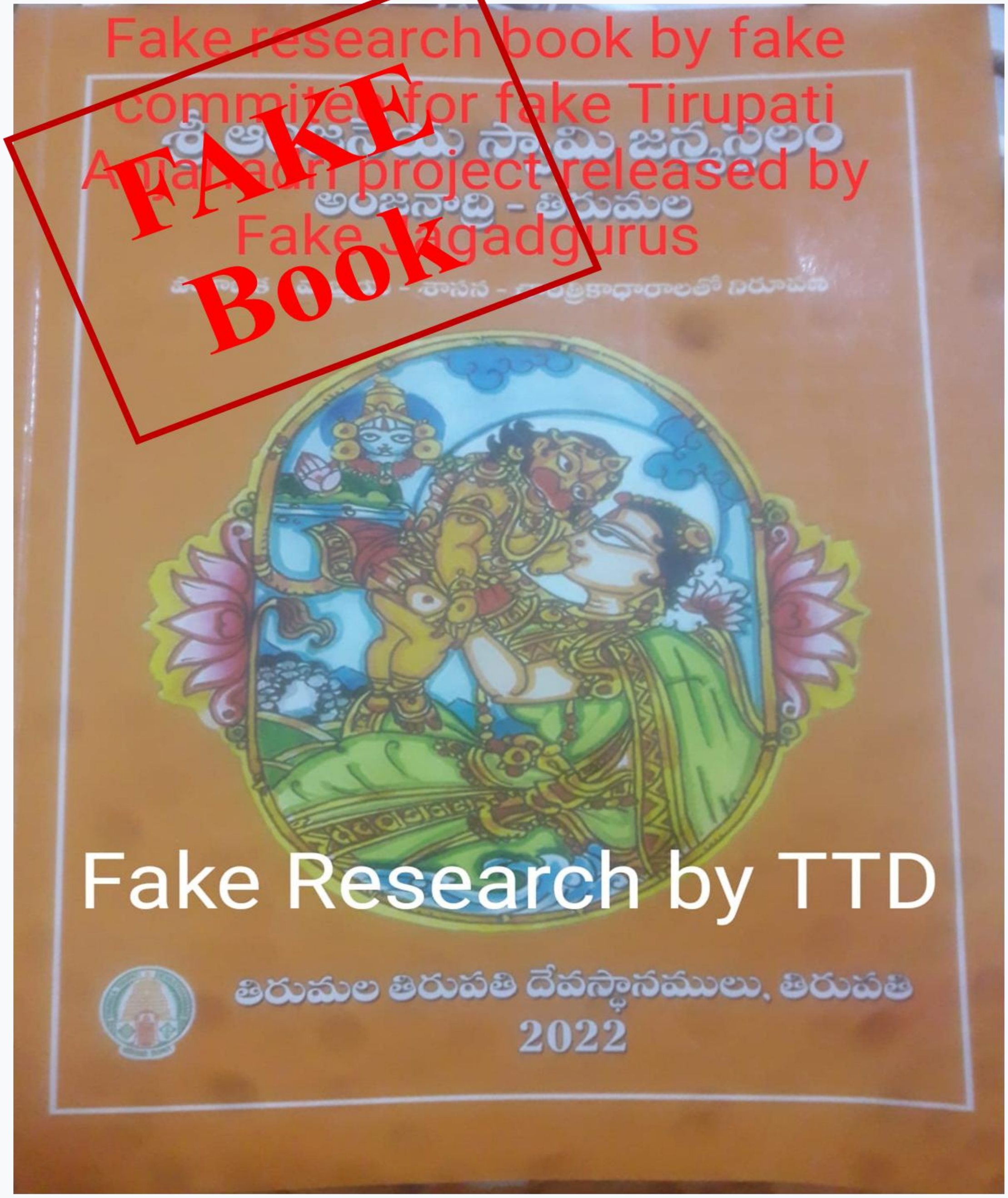

टीटीडी फर्जी रिसर्च तीसरा किताब 16-02-2022

మొదటి పుస్తకము 13-04-2021

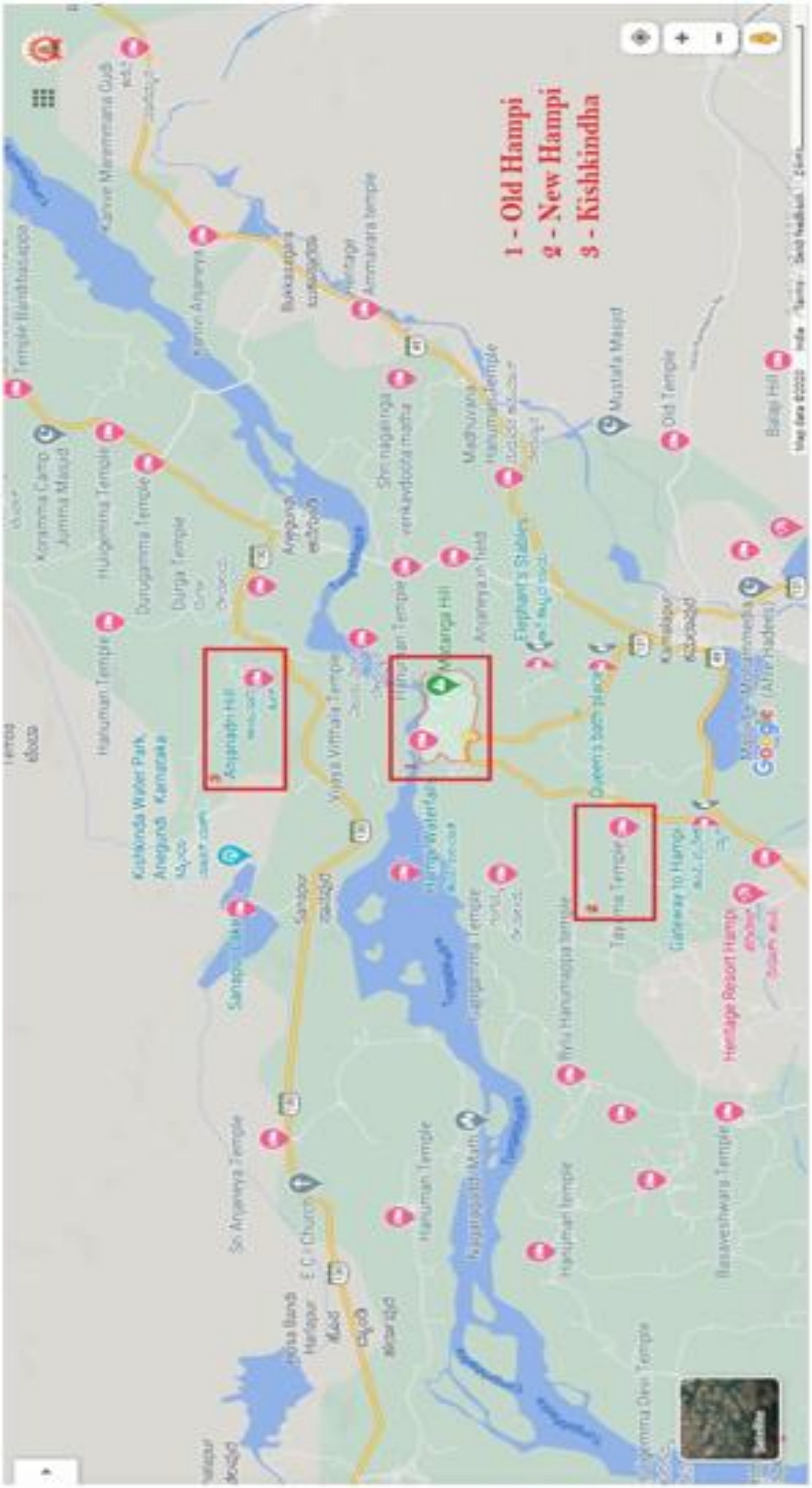
1 - Old Hampi
2 - New Hampi
3 - Kishkindha

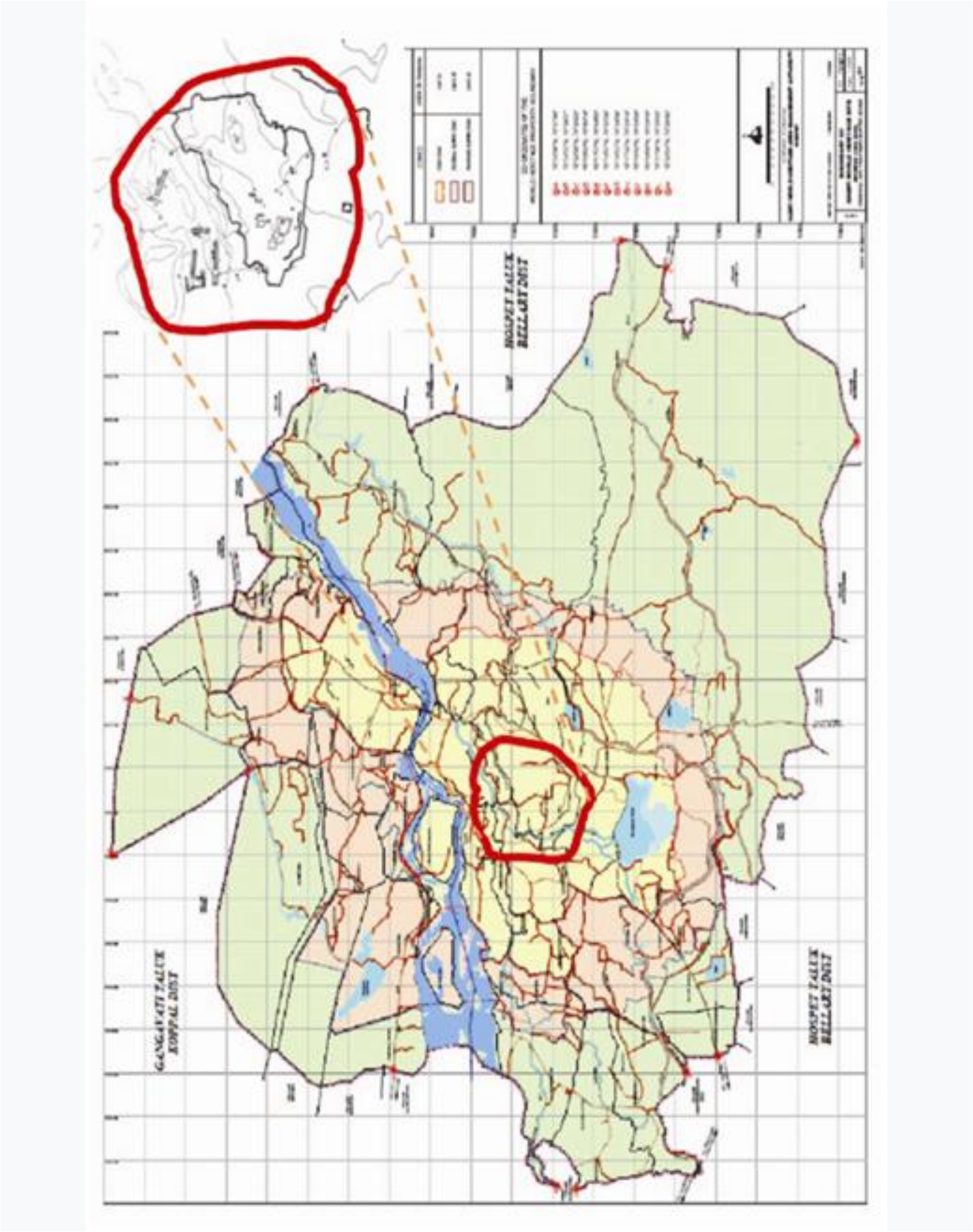
HOSPET TALUK
BELLARY DIST
GANGAVATI TALUK
KOPPAL DIST
HOSPET TALUK
BELLARY DIST

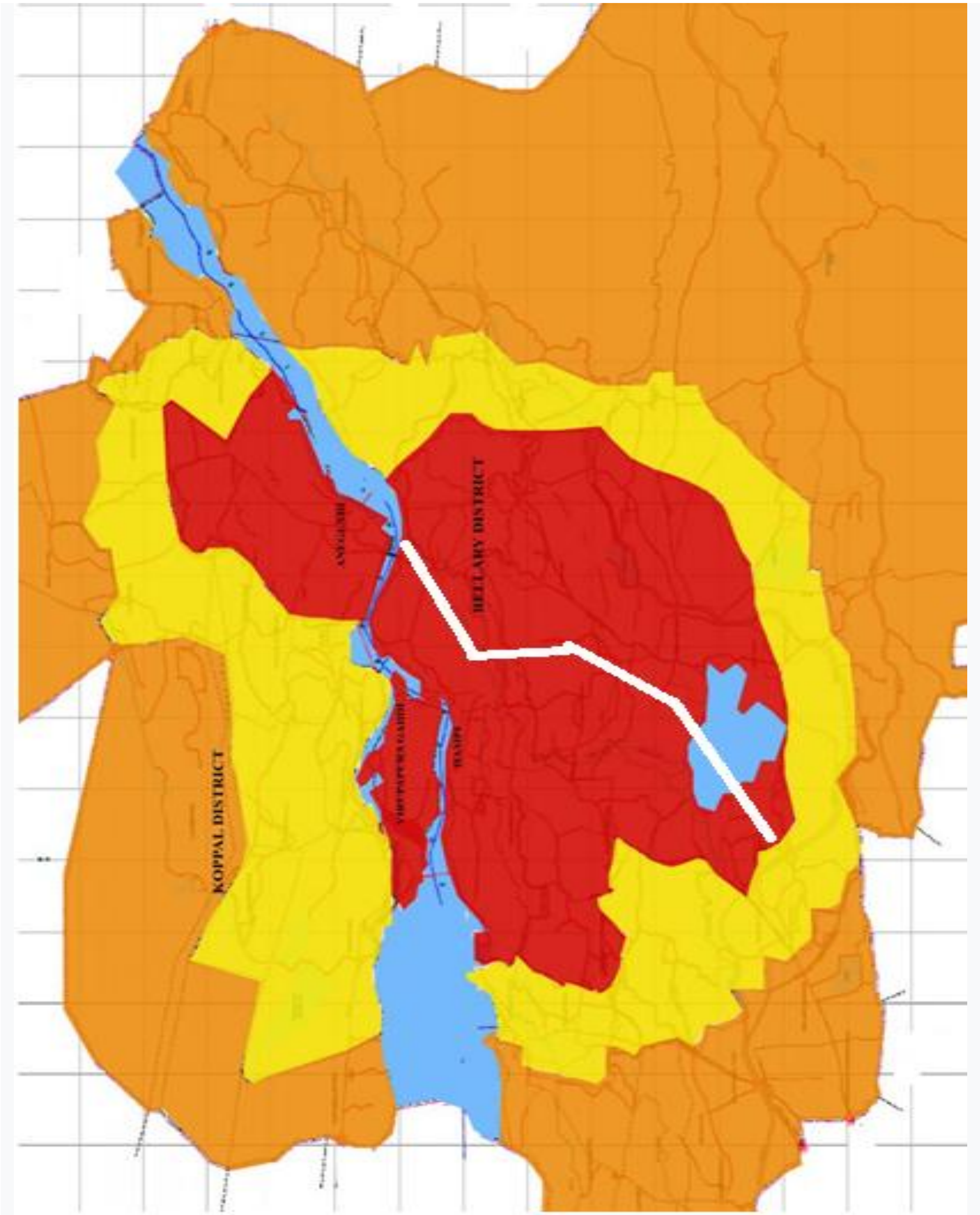
ANEGUNDI
BELLARY DISTRICT
HAMPI
KOPPAL DISTRICT

1. Pampa Sarovar , 2. Kishkindha Anjanadri Hills , 3. Anjanahalli, 4. Hanumana Halli,1,
5. Chikkarampura Village, 6. Dodda Rampura, Village, 7. Ayodhya Village,

Anjanahalli, (Birth Place of Mata Anjana Devi, there is big village village with the name of Mata Anjanadevi in kishkinhda left side to the Kishkindha Anjanadri Hills)

Kishkindha Anjanadri Hills - (Birthplace of Lord Sri Hanuman,)

Hanumana Halli the place where Lord hanuman gronup - just opposite to Kishkindha Anjanadri Hills there isa village dedicated to lord hanuman

Anjanadri Halli Village 1, 2

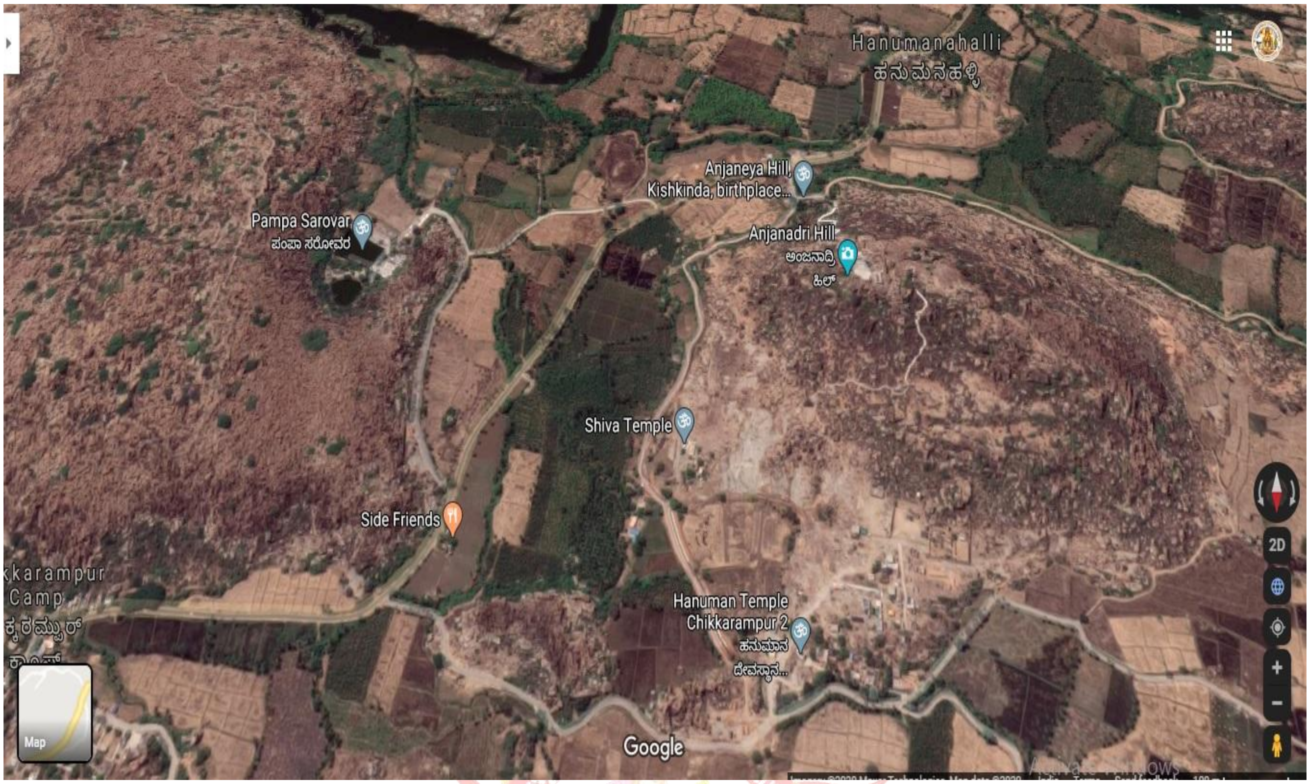

Pampa Sarovar – Kishkindha Anjanadri Hills

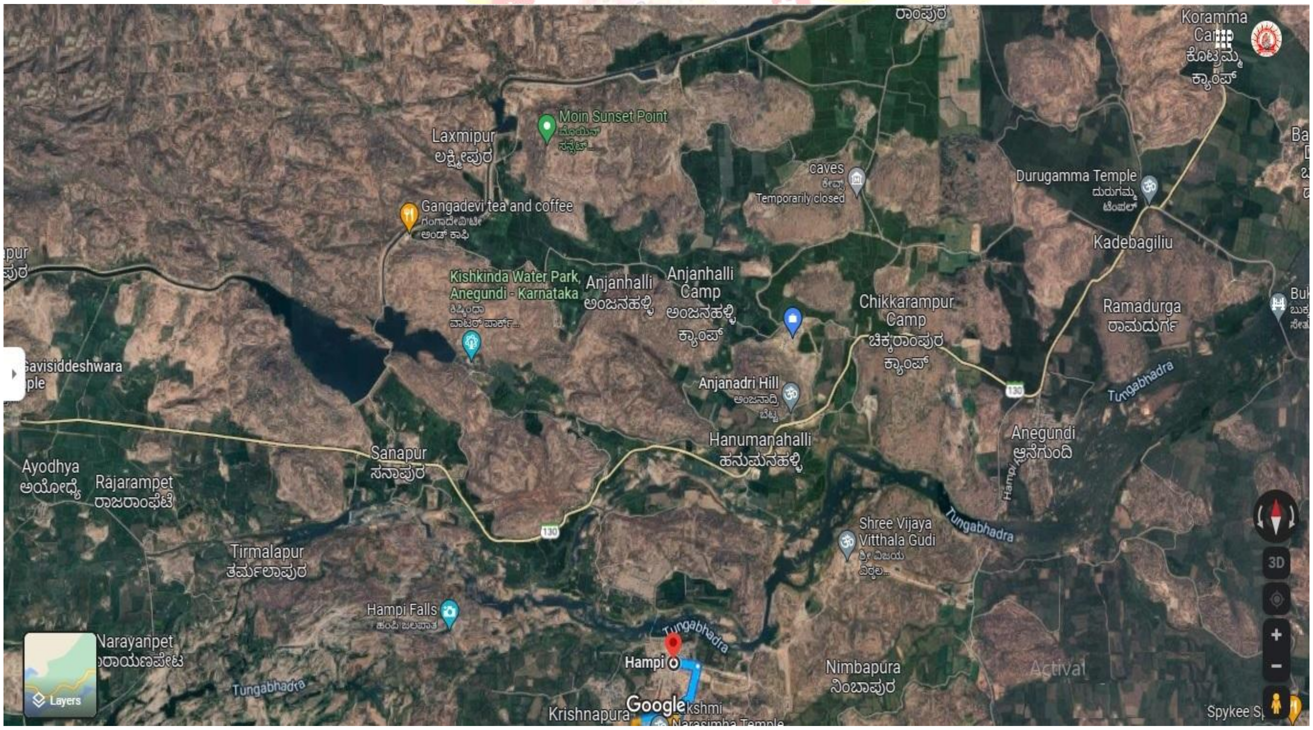

Description: Picture: shows the mountains and wood of Kishkindha where Rama and Lakshman met Sugriva and made friendship with him with the help of Hanuman. Four scenes relating their friendship have been depicted here. It is made with line drawing.

C.18-19th Century C.E. AM-MIN-162, Allahabad Museum, Allahabad

https://www.indianculture.gov.in/museum-paintings/rama-and-sugriva-friendship-scene

Ministry of Culture
Government of India

ARCHAEOLOGICAL
SURVEY OF INDIA

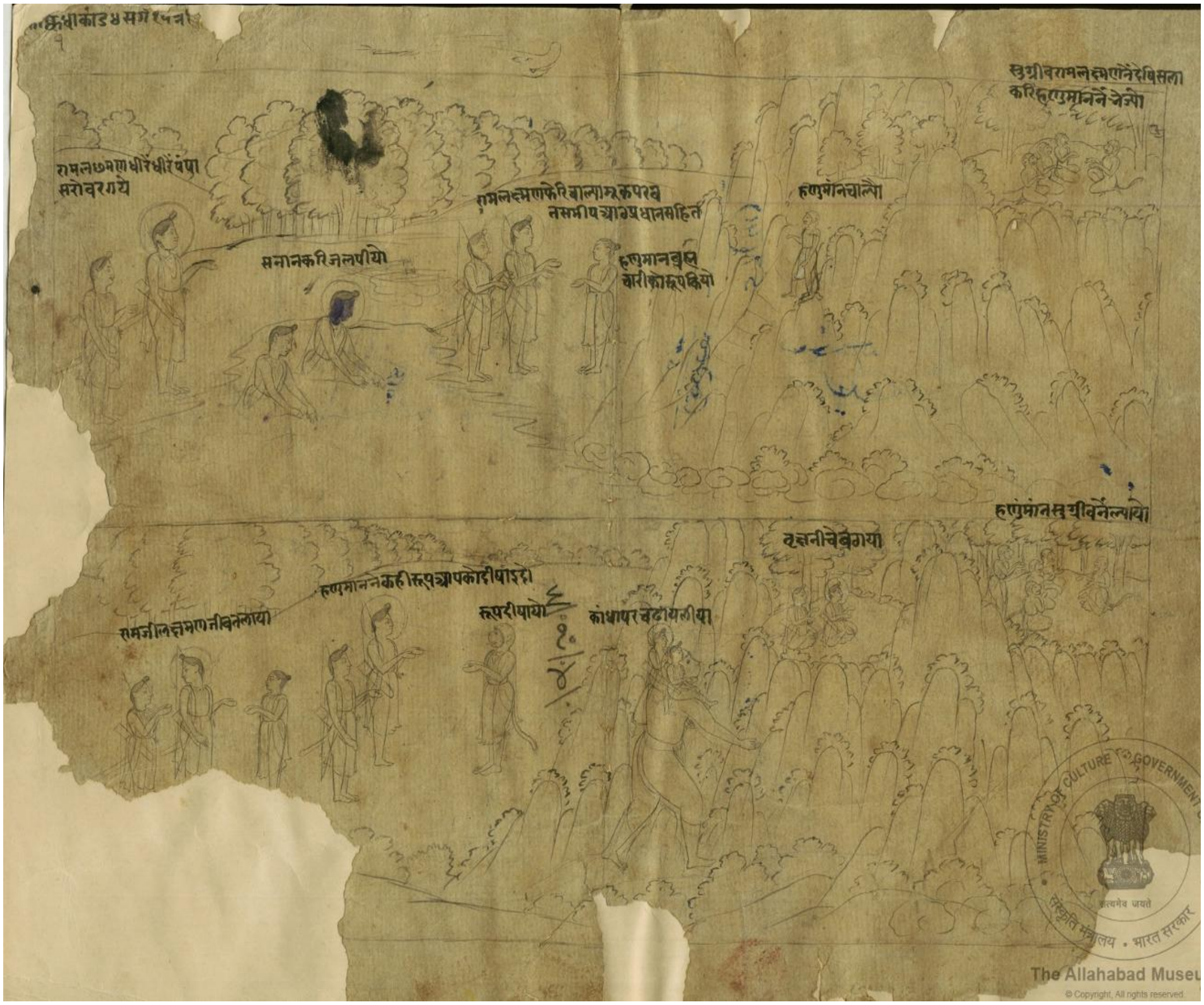

Description: Picture depicts a scene of Kishkindha Kand of Ramayana. On the left top corner, Rama and Lakshman taking both in the Pampasar, next Hanuman met them in the guise of a Brahman, then Hanuman is shown coming to see and examine Rama and Lakshman who they were. Below on the left corner, Hanuman exposed himself and next he is seen taking them on his shoulders. Finally Hanuman is shown before Sugriva with Rama and Lakshaman. The style of painting is Rajasthani. C.18-19th Century C.E. AM-MIN-164

https://www.indianculture.gov.in/museum-paintings/rama-and-sugriva-friendship-scene

Queastin : Where is Kishkindha ?

वाल्मीकि रामायण में ऋषि वाल्मीकि द्वारा इसका स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है जब श्री वाल्मीकि रामायण लिख रहे थे, तब उन्होंने एक काण्ड का नाम किष्किन्धा रखा। यह स्थान भारत सरकार के एएसआई और यूनेस्को द्वारा अन्य सभी विभागों द्वारा पहचाना और संरक्षित किया गया है

अब श्री हनुमद जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट इस प्राचीन राजधानी वन किष्किंधा की सुरक्षा के लिए काम कर रहा है

we have plenty of evidencess from Sri Valmiki Ramayana, and other vedic texts which can glorify about this pace as the captial city of tretayuga's kishkindha nagara, established by Vanaras

in a recnt (Dwaparayuga anta) days king Janamejeya King Vikramaditya also mentions Pampakshetra kishkindha in their Shasanas

Sri Satya Harishchandra also visits this place,

Not only during tretayuga even in dwapara yuga also there was a relatons between Hastinapur and Kishkindha

before the Mahabharata War Bhagavan Lord Sri Krishna sends Pandavas to Pampakshetra kishkindha for tapasya,

चक्रवर्ती राजा जनमेजय शसन (शिलालेख)

"श्रीकुरुवंशावतंस श्रीजनमेजयभूपालनां दानशासनपत्रं ।

श्लो ॥ पांतु वो जलदस्यामाः शार्ङ्गज्याघातकर्कशाः ।
त्रैलोक्यमंडटस्तम्भाश्चत्वारो हरिबाहवः ॥ १

"स्वस्तिश्री जयाभ्युदये युधिष्ठिरशके प्लवंगाख्ये (ख्य) एकोननवती (८९) वत्सरे सहस्यमासि अमावास्यायां सोमवासरे श्रीमन्महाराजाधिराज-परमेश्वरो वैयग्रणी वैयाघ्र (?) पाद गोत्रजः श्रीजनमेजयभूपः किष्किधा-नगर्यां सिंहासनस्थः सकलवर्णाश्रमधर्मप्रतिपालकः पश्चिमदेशस्थसीतापुर–वृकोदरक्षेत्रे तत्रत्य मुनिबृन्द मठस्य गरुडवाहनतीर्थश्रीमच्छिष्यकैकचाधै–राधितसीतारामस्य पूजार्थं कृतभूदान शासन मस्मत्प्रपितामहयुधिष्ठिरा-धिष्ठितमुनिवृन्दक्षेत्रस्य चतुःसीमापरिमितिक्रमः :—

"पूर्वभागे .... उत्तरवाहिन्यास्तुंगभद्रयाः पश्चिमे दक्षिणभागे अगस्त्याश्रमसंगमादुत्तरे । पश्चिमे पाषाणनद्याः पूर्वे । उत्तरभागे च्छिन्न–नद्या दक्षिणे । ये (ए) तन्मध्यस्थितमुनिबृन्दक्षेत्रं भवच्छिष्यपारंपरा–चंद्रार्कपर्यंतं निधिनिक्षेपजल पाषाणाछिण्या (?) गामिसिद्धसाध्यतेजः स्वाम्यसहितं स्वबुध्याऽनुकूल्येनाऽस्मता पित्रूणां विष्णुलोकप्राप्त्यर्थं हरिहर-सन्निधावुपरागसमये सहिरण्येन तुङ्गभद्राजलाधारापूर्वकं क्षेत्रं यतिहस्ते दत्तो (त्तवान्, अ) (?) स्म्यहं । एतद्धर्मसाधनस्य साक्षिणः ॥

श्लो ॥ आदित्यचंद्रावनिलोऽनलश्च द्यौर्भूमिरापोहृदयं यमश्च ।
अहश्च रात्रिश्च उभे च संध्ये धर्मश्च जानाति नरस्य वृत्तं ॥ (२)

" दानपालनयोर्मध्ये दानाच्छ्रेयोऽनुपालनं ।
दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनादत्युत्तमं पदं ॥ (३)

" स्वदत्ताद्द्विगुणं पुण्यं परदत्तानुपालने ।
परदत्तापहारेण स्वदत्तं निष्फलं भवेत् ॥ (४)

" मद्दत्ता पुत्रिका ज्ञेया पितृदत्ता सहोदरी ।
अन्यदत्ता तु जननी दत्तभूमिं परित्यजेत ॥ (५)

" अन्यैस्तु छर्दितं छद्वे श्वभिश्च छर्दितं न तु ।
ततः कष्टो ततो नीचः स्वयं दत्तापहारकः ॥ (६)

" स्वदत्तां परदत्तां वा ब्रह्मवृत्तिं हरेतयः ।
षष्ठिर्वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥ (७)

"श्रीकुरुवंशावतंस श्रीजनमेजयभूपालनां दानशासनपत्रं ।

श्लो ॥ पांतु वो जलदस्यामाः शार्ङ्गज्याघातकर्कशाः ।
त्रैलोक्यमंडटस्तम्भाश्चत्वारो हरिबाहवः ॥ १

"स्वस्तिश्री जयाभ्युदये युधिष्ठिरशके प्लवंगाख्ये (ख्य) एकोननवती (८९)वत्सरे सहस्यमासि अमावास्यायां सोमवासरे श्रीमन्महाराजाधिराज-परमेश्वरो वैयग्रणी वैयाघ्र (?) पाद गोत्रजः श्रीजनमेजयभूपः किष्किंधा-नगर्यां सिंहासनस्थः सकलवर्णाश्रमधर्मप्रतिपालकः पश्चिमदेशस्थसीतापुर–वृकोदरक्षेत्रे तत्रत्य मुनिबृन्द मठस्य गरुडवाहनतीर्थश्रीमच्छिष्यकैकचार्धै–राधितसीतारामस्य पूजार्थं कृतभूदान शासन मस्मत्प्रपितामहयुधिष्ठिरा-धिष्ठितमुनिवृन्दक्षेत्रस्य चतु:सीमापरिमितिक्रमः :—

"पूर्वभागे .... उत्तरवाहिन्यास्तुंगभद्रयाः पश्चिमे दक्षिणभागे अगस्त्याश्रमसंगमादुत्तरे । पश्चिमे पाषाणनद्याः पूर्वे । उत्तरभागे च्छिन्न–नद्या दक्षिणे । ये (ए) तन्मध्यस्थितमुनिबृन्दक्षेत्रं भवच्छिष्यपारंपरा–चंद्रार्कपर्यंतं निधिनिक्षेपजल पाषाणाछिण्या (?) गामिसिद्धसाध्यतेजः स्वाम्यसहितं स्वबुध्याऽनुकूल्येनाऽस्मता पित्रूणां विष्णुलोकप्राप्त्यर्थं हरिहर-सन्निधावुपरागसमये सहिरण्येन तुङ्गभद्राजलाधारापूर्वकं क्षेत्रं यतिहस्ते दत्तो (त्तवान्, अ) (?) स्म्यहं । एतद्धर्मसाधनस्य साक्षिणः ॥

मधुगंगा, पूर्वोत्तरभागे स्वर्गद्वारनदी, दक्षिणे सरस्वती, मंदाकिन्योः संगमः, एतन्मध्ये श्रीकेदारक्षेत्रं भवच्छिष्यपरंपरया चंद्रार्कपर्यंतं निधिनिक्षेप जल-पाषाणागामि सिद्धसाध्यतेजःस्वाम्यसहित मनुभोवतुं स्वबुध्यानुकूल्ये नास्म-न्मातृपितॄणां शिवलोकप्राप्त्यर्थं श्रीकेदारेश्वरसन्निध उपरागसमये सहिरण्य-मंदाकिनी जलधारापूर्वकं क्षेत्रमिदं हस्ते दत्तवानस्मि । एतद्धर्मसाधनस्य साक्षिणः ।

श्लो ॥ आदित्यचंद्रावनिलोऽनलश्च । द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च ।
अहश्च रात्रिश्च उभे च संध्ये धर्मश्च जानाति नरस्य वृत्तं ॥(२)

" दानपालनयोर्मध्ये दानाच्छ्रेयोऽनुपालनं ।
दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनाद्द्विगुणं फलं ॥ (३)

" स्वदत्ता पुत्रिका ज्ञेया पितृदत्ता सहोदरी ।
अन्यदत्तातु जननी दत्तभूमि परित्यजेत् ॥ (४)

" स्वदत्तां परदत्तांवा ब्रह्मवृत्ति हरेतयः ।
षष्ठिवर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥ (५)

"स्वस्तिश्री जयाभ्युदययुधिष्ठिरशके प्लवंगाख्ये एकोननवतितम (८९) वत्सरे सहसिमासि अमावास्यायां सोमवासरे श्रीमन्महाराजाधिराजपर-मेश्वर वैयाघ्रपदगोत्रज श्रीजनमेजयभूपो इंद्रप्रस्थनगरीसिंहासनस्थः सकल-वर्णाश्रमधर्मप्रतिपालको उत्तरहिमालये श्रीकेदारक्षेत्रं तत्रत्यमुनयः उषामठस्य श्रीगोस्वामिआनंदलिंगजंगमाय श्रीमच्छिष्यज्ञानलिङ्गजङ्गमद्वाराराधित-श्रीकेदारनाथस्य पूजार्थं दत्तवंतः चतुस्सीमा परिमितिक्रमः ॥ पूर्वभागे दक्षिणवाहिनी मंदाकिनी । पश्चिमदक्षिणभागे क्षीरगंगा उत्तरपश्चिमे

earth and for the protection of the virtuous, Sri-Krishna was given birth to by Dhevaki at *moonrise* when the Moon was in the fourth quarter of asterism Rohini, conciding with Harshana Yoga and Kowlava Karana, on Ashtami of the dark fortnight of the lunar month of Sravana, at the time when the rising sign was Taurus, with Jupiter and Rahu in Cancer, the Sun in Leo, Mercury in Virgo, Saturn in conjunction with Venus in Libra, and Mars and Kethu located in Capricorn. To abstain from

From Brahma Samhita, quoted by Kalaprakashika

ARCHAEOLOGICAL SURVEY OF INDIA

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

Hampi-Group of monuments at Hampi (1986), Karnataka, Source : https://asi.nic.in/hampi/

Hampi-Group of monuments at Hampi (1986), Karnataka Traditionally known as Pampakshetra of Kishkindha, Hampi is situated on the southern bank of the river Tungabhadra. Once it was the seat of the mighty Vijayanagara empire.

The monuments of Vijayanagara city, also known as Vidyanagara in honour of the sage Vidyaranya were built between AD 1336-1570, from the times of Harihara-I to Sadasiva Raya. A large number of royal buildings were raised by Krishnadeva Raya (AD 1509-30), the greatest ruler of the dynasty. The period witnessed resurgence of Hindu religion, art, architecture in an unprecedented scale. The contemporary chroniclers who came from far off countries-such as Arabia, Italy, Portugal and Russia visited the empire, have left graphic and glowing accounts of the city. It covers

an area of nearly 26 sq km and is stated to be enclosed by seven lines of fortifications.

Extensive remains of the palaces can be seen within innermost enclosure of the ancient Vijayanagara. The various religious and secular structures which include Hindu and Jaina temples, audience hall of the king, the magnificent throne platform to witness the festivals and other events, the king's balance (tulabhara) are awe-inspiring.

Temples of this city are noted for their large dimensions, florid ornamentation, bold and delicate carvings, stately pillars, magnificent pavilions and a great wealth of iconographic and traditional depictions which include subjects from the Ramayana and the Mahabharata. The largest extant temple is that of Pampapati (now in worship) was extensively renovated. Its magnificent entrance tower was caused by Krishnadeva Raya. The Vitthala temple is an excellent example of Vijayanagara style. The monolithic statues of Lakshmi, Narasimha and Ganesa are noted for their massiveness and grace.

The Krishna temple, Pattabhirama temple, Hazara Ramachandra and Chandrasekhara temple as also the Jaina temples, are other examples. Majority of these temples were provided with widespread bazaars flanked on either side by storeyed mandapas. Among secular edifices mention may be made of the Zenana enclosure wherein a massive stone basement of the Queen's palace and an ornate pavilion called 'Lotus-Mahal are only remnants of a luxurious antahpura. The corner towers of arresting elevation,

the Dhananayaka's enclosure (treasury), the Mahanavami Dibba carrying beautifully sculptured panels, a variety of ponds and tanks, mandapas, the elephant's stables and the row of pillared mandapas are some of the important architectural remains of this city.

Recent excavations at the site have brought to light a large number of palatial complexes and basements of several platforms. Interesting finds include a large number of stone images, both in round and relief, beautiful terracotta objects and stucco figures that once embellished the palaces. In addition many gold and copper coins, household utensils, a square stepped-tank (sarovara) at the south-west of Mahanavami Dibba, and a large number of ceramics including the important variety of porcelain and inscribed Buddhist sculptures of 2nd -3rd century AD have also been unearthed.,

m

INDIA
WORLD HERITAGE
CULTURAL AND NATURAL SITES
NATURAL SITES
CULTURAL SITES
MODERN CITIES
NANDA DEVI AND VALLEY OF FLOWERS NATIONAL PARKS
CHAMOLI
QUTB MINAR
DELHI
HUMAYUN'S TOMB
RED FORT
KEOLADEO NATIONAL PARK
BHARATPUR
FATEHPUR SIKRI
AGRA
TAJ MAHAL
AGRA FORT
KHAJURAHO
GROUP OF TEMPLES
DARJEELING HIMALAYAN RAILWAYS
KAZIRANGA NATIONAL PARK
MANAS WILD LIFE SANCTUARY
BODH GAYA
MAHABODHI TEMPLE
CHAMPANER-PAVAGARH Archaeological Park
SANCHI
SANCHI STUPA
BHIMBETKA
PAINTED ROCK SHELTERS
KOLKATA
SUNDERBANS NATIONAL PARK
SUN TEMPLE
KONARK
ROCKCUT CAVES
ELLORA
AJANTA
ROCKCUT CAVES
ELEPHANTA
MUMBAI
CHHATRAPATI SHIVAJI TERMINUS (Formerly Victoria Terminus)
GROUP OF TEMPLES
PATTADAKAL
GROUP OF MONUMENTS
HAMPI
GOA
CHURCHES & CONVENTS
ARABIAN SEA
BAY OF BENGAL
GROUP OF MONUMENTS
MAHABALIPURAM
CHENNAI
OOTY
GANGAIKONDACHOLAPURAM
DARASURAM
THANJAVUR
THE GREAT LIVING CHOLA TEMPLES
BRIHADISWARA TEMPLE
LAKSHADWEEP
ANDAMAN AND NICOBAR ISLANDS

In 1972, the General Conference of UNESCO adopted a resolution with overwhelming enthusiasm creating thereby a 'Convention concerning the protection of the World Cultural and Natural Heritage'. The main objectives were to define the World Heritage in both cultural and natural aspects; to enlist Sites and Monuments from the member countries which are of exceptional interest and universal value, the protection of which is the concern of all mankind; and to promote co-operation among all Nations and people to contribute for the protection of these universal treasures intact for future generations.

The List of recorded sites on the World Heritage now stands at 981 which include both cultural and natural wonders, and endowment that is shared by all mankind and the protection of which is the concern of the entire mankind. These include 759 cultural, 193 natural and 29 mixed properties in 137 state parties. India is an active member State on the World Heritage from 1977 and has been working in close co-operation with other International agencies like ICOMOS (International Council on Monuments and Sites), IUCN (International Union for the Conservation of Nature and Natural Resources) and ICCROM (International Centre for the study of Preservation and Restoration of Cultural Property).

There are 40 World Heritage Properties in India out of which 32 are Cultural Properties and 7 Natural and 1 Mixed Properties.

GOVERNMENT OF KARNATAKA
Official Website

Karnataka
One state. Many worlds.
Department of Tourism

Attractions in Anegundi - Anjanadri Hill: Climb 570 steps to visit Anjaneya Temple, said to be the birthplace of Lord Hanuman. Just across the Tungabhadra River is the fortress town Anegundi, pre-dating Vijayanagara and the city's 14th-century headquarters. More ancient than Hampi, Anegundi lies in **the mythical kingdom of Kishkinda**, ruled by monkey king Sugriva (from the Epic Ramayana). **The Anjaneya Hill is, believed to be the birthplace of the monkey god Hanuman,** can be easily spotted from Anegundi, thanks to the temple at the hilltop and a white trail of steps zigzagging all the way to the top. Anegundi and its tranquil surroundings are dotted with forgotten temples and fortifications. The dilapidated Huchappayana Matha Temple, near the river, is worth a visit for its black stone lathe-turned pillars and fine panels of dancers. The other places of tourist interest are the sacred **Pampa Sarovara**, Chintamani Temple and the Ranganatha Temple. https://www.karnataka.gov.in/new-page/TOURISM/kn,

हम्पी चट्टानी पहाड़ियों के इस क्षेत्र की पहचान रामायण के किष्किंधे के रूप में की जाती है।

Hampi This area of rocky hills is identified as Kishkindhe of Ramayana. https://www.karnatakatourism.org/tour-item/anegundi/

www.karnatakatourism.org/lord-hanumans-largest-statue-to-come-soon/

This Train Covers holy places Sri Sita Janmabhoomi (Janakpuri) to Sri Ramajanmabhoomi(Ayodhya) to Sri Hnumad Janmabhpppmi (Kishkindha)

https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1836061,

7 नवम्बर से भारतीय रेलवे शुरू करने जा रहा है रामायण यात्रा ट्रेन , दिल्ली से चल कर रामेश्वरम तक रामायण से जुड़े सभी तीर्थस्थलों का 17 दिन का टूर , ट्रेन दिल्ली के सफरदरजंग रेलवे स्टेशन से चलेगी. ये ट्रेन यात्रियों को भगवान श्रीराम से जुड़े सभी धार्मिक स्थलों के दर्शन कराएगी. पूरी यात्रा में कुल 17 दिन लगेंगे. यात्रा का पहला पड़ाव अयोध्या होगा , अयोध्या: राम जन्मभूमि मंदिर, हनुमान गढ़ी, सरयू घाट। नंदीग्राम: भारत-हनुमान मंदिर और भरत कुण्डी जनकपुर: राम-जानकी मंदिर। सीतामढ़ी: सीतामढ़ी और पुनौरा धाम में जानकी मंदिर। वाराणसी: तुलसी मानस मंदिर, संकट मोचन मंदिर और विश्वनाथ मंदिर। सीता संहिता स्थल , सीतामढ़ी: सीता माता मंदिर। प्रयाग: भारद्वाज आश्रम, गंगा-यमुना संगम, हनुमान मंदिर। श्रृंगवेरपुर: श्रृंग ऋषि समाधि और शांता देवी मंदिर , राम चौरा। चित्रकूट: गुप्त गोदावरी , रामघाट, भरत मिलाप मंदिर , सती अनुसुइया मंदिर। नासिक: त्रयंबकेश्वर मंदिर , पंचवटी, सीता गुफा , कालाराम मंदिर। पंपाक्षेत्र हम्पी किष्किन्धा : श्री पंपा विरूपाक्ष मंदिर , श्री हनुमाद् जन्मभूमि अंजनाद्री हिल, ऋषिमुख द्वीप, सुग्रीव गुफा, चिंतामणि मंदिर, माल्यवंत रघुनाथ मंदिर। रामेश्वरम: शिव मंदिर और धनुषकोडी

॥ शं नो विष्णुः ॥

श्रीहनुमज्जन्मभूमि-विमर्श

मूल लेखक : स्वामी गोविन्दानन्द सरस्वती (पम्पाक्षेत्र)
परिष्कर्ता : अंकुर नागपाल (दिल्ली)

इन दिनों आंजनेयाद्रि (किष्किन्धा—हम्पी, कर्णाटक), अंजनाद्रि (तिरुपति, आन्ध्रप्रदेश), गोकर्ण (कर्णाटक), अंजनेरी (नासिक), कैथल (हरियाणा), अंजनीगुफा (डांग, गुजरात) एवं आंजन गाँव (गुमला, झारखण्ड) — इन सात स्थलों को हनुमज्जन्मभूमि के रूप में प्रचारित किया जा रहा है। परन्तु इन सभी में किष्किन्धा-स्थित आंजनेयाद्रि ही प्रशस्तरूप से श्रीहनुमज्जन्मभूमि है; जो कि सम्प्रति हमारे परमपूज्य चारों जगद्गुरु शंकराचार्यों सहित अनेक धर्माचार्यों के द्वारा समर्थित हैं। समर्थन के मूल में प्रचुर शास्त्रप्रमाण उपलब्ध हैं; जिनको इस आलेख में पाठकों की सुविधा हेतु संकलित किया जा रहा है।

सर्वप्रथम यह स्मरणीय है कि वैदिक धर्मावलम्बियों के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रमाण वेद ही है; जिसका विरोध करने पर हम परमात्मा को भी पूज्य नहीं मानते। इसीलिए वेदविरुद्ध उपदेश करने वाले नारायणावतार बुद्ध को अपूज्य मानकर हम लोगों ने किसी मन्दिर में स्थान नहीं दिया। प्रमाणकुशल महर्षियों एवं पूर्वाचार्यों ने अर्थविचार की जिस मर्यादा को स्थिर किया है; तदनुसार वेद के अर्थ का निर्धारण स्मृति, इतिहास एवं पुराणों के द्वारा होना चाहिए : **'इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्'** (महाभारत 1.1.292)। इतिहास तथा पुराणों में परस्पर विरोध मिलने पर इतिहास का प्रमाण प्रबल होता है, जबकि दोनों इतिहासों में ज्येष्ठ/पूर्ववर्ती होने के कारण रामायण सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है : **'अनयोरुभयोर्मध्ये इतिहासः प्रबलः। इतिहासश्रेष्ठेन श्रीरामायणेन...'** (श्रीवचनभूषण 3, 5)। श्रुति (वेद), स्मृति (इतिहास एवं धर्मशास्त्र) तथा पुराणों में परस्पर विरोध होने पर स्मृति को पुराण से तथा श्रुति को स्मृति से प्रबल माना गया है (व्यासस्मृति 1.4, ब्रह्मसूत्र 2.1.1)। जबकि श्रुतियों में परस्पर विरोध होने पर विवक्षानुसार अर्थ करना श्रेयस्कर है (मनुस्मृति 2.14)। ऐसी स्थिति में श्रीहनुमान् के जन्मस्थान-विषयक प्रमाणवचनों का हमें सर्वोच्च प्रमाणग्रन्थ में अनुसन्धान करना चाहिए; ताकि उससे निम्नवर्ती प्रमाणों का स्वतः निराकरण हो जाए। इस विमर्श के लिए वाल्मीकीय रामायण सर्वमान्य एवं सर्वश्रेष्ठ प्रमाणग्रन्थ है। अतः हम उसी के प्रमाणों को पाठकों के समक्ष रखते हैं :

सीताजी की खोज हेतु वानरसेना-सहित निकले हनुमानजी को समुद्रतट पर उनके बल का स्मरण करवाते समय जाम्बवान् ने यह सूचित किया कि आपका जन्म एक गुहा (गुफा) में हुआ है : **'एवमुक्ता ततस्तुष्टा जननी ते महाकपे। गुहायां ते महाबाहो प्रजज्ञे प्लवगर्षभ'** (वाल्मीकीय रामायण 4.66.20)। शंका : इस श्लोक में 'किष्किन्धा' शब्द का प्रयोग नहीं किया गया, तो क्यों किष्किन्धा को हनुमज्जन्मभूमि माना जाए? समाधान : वस्तुतः वानरों की 'किष्किन्धा' नगरी इस पर्वतक्षेत्र में विद्यमान अनेक गुफाओं के बीच बनी थी : **'बभूव नगरी रम्या किष्किन्धा गिरिगह्वरे'** (वही 4.26.41)। अनेक गुफाओं के समूह में स्थित होने से स्वयं वाल्मीकीय रामायण में ही 'किष्किन्धा' के साथ 'गुहा' शब्द का सामानाधिकरण्य प्रयोग मिलता है : **'किष्किन्धां रामसहितो जगाम च गुहां तदा'** (1.1.67), **'प्रविवेश गुहां रम्यां किष्किन्धां रामशासनात्'** (4.33.1), **'किष्किन्धां यः समध्यास्ते गुहां सगहनद्रुमाम्'** (6.28.30) **'किष्किन्धां विशतुर्हृष्टौ सिंहौ गिरिगुहामिव'** (7.34.43) इत्यादि। तदतिरिक्त; **'इमां गिरिगुहां रम्यामभिगन्तुमितोऽर्हसि'** (4.26.7), **'सुसमृद्धां गुहां रम्यां सुग्रीवो वानरर्षभः'** (4.26.9), **'इयं गिरिगुहा रम्या विशाला युक्तमारुता'** (4.26.15), **'प्रविवेश पुरीं रम्यां किष्किन्धां वालिपालिताम्'** (4.26.18), **'अभिषिक्ते तु सुग्रीवे प्रविष्टे वानरे गुहाम्'** (4.27.1), **'गुहां प्रविष्टे सुग्रीवे विमुक्ते गगने घनैः'** (4.30.1) इत्यादि अनेक स्थलों का व्याख्यान करते समय भूषण-तिलक-माहेश्वरी-अमृतकतक-आदि व्याख्याताओं ने भी किष्किन्धा एवं गुहा में विशेषण-विशेष्य-भाव माना है। वस्तुतः यहाँ पूर्वमीमांसादर्शन (6.8.31) का 'छागपशुन्याय' समझना चाहिए; यदनुसार रामायण में किष्किन्धा को सामान्यतः गुहा तथा प्रसंगवश गुहा को विशेषतः किष्किन्धा कहा गया है। इसके अतिरिक्त; महाभारत (2.32.18) में भी **'गुहामासादयामास किष्किन्धां लोकविश्रुताम्'** के द्वारा किष्किन्धा को गुहा ही कहा गया है। **'पारस्करप्रभृतीनि च सञ्ज्ञायाम्'** (अष्टाध्यायी 6.1.157) सूत्र के महाभाष्य-काशिका-आदि सभी प्रामाणिक व्याख्यानों में 'किष्किन्धा' को 'गुहा' की संज्ञा माना है।

फलतः इन श्लोकों को देखकर यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जाम्बवान् द्वारा प्रयुक्त 'गुहा' शब्द वस्तुतः 'किष्किन्धा' के लिए ही प्रयुक्त है। अतः यह सिद्ध है कि श्रीहनुमान् का अवतार किष्किन्धा क्षेत्र में ही हुआ है। गुमला, कैथल या डांग में प्रचारित हनुमज्जन्मस्थानों के मूल में कोई शास्त्रप्रमाण नहीं है। वहाँ केवल कुछ दस-बीस वर्षों से दुष्प्रचारित अप्रामाणिक जनश्रुतियाँ ही हैं; जो कि वाल्मीकीय रामायण के विरुद्ध होने से आदरणीय नहीं है। यदि तत्तत् स्थान के मान्य विद्वान् अपने पक्ष में वाल्मीकीय रामायण से श्रेष्ठ अथवा तुल्य बल वाला कोई प्रमाण दें, तो हम अवश्य ही उनका आदर करेंगे। तदतिरिक्त; गोकर्ण में हनुमज्जन्मभूमि की सम्भावना स्वयं वाल्मीकीय रामायण से ही निरस्त होती है। कारण कि श्रीहनुमान् ने सीताजी के समक्ष अपना परिचय देते हुए यह कहा कि जब मेरे पिता—केसरी शम्बसादन दैत्य को मारने हेतु गोकर्ण गए हुए थे,

तब उन्हीं की पत्नी—अंजना के गर्भ से वायुदेव के द्वारा मेरा जन्म हुआ : **'ततो गच्छति गोकर्णं पर्वतं केसरी हरिः। स च देवर्षिभिर्दिष्टः पिता मम महाकपिः। तीर्थे नदीपतेः पुण्ये शम्बसादनमुद्धरन्। यस्याहं हरिणः क्षेत्रे जातो वातेन मैथिलि'** (5.35.81-83)। प्रसंगवश इस स्थल की तिलकटीका उल्लेखनीय है : **'तस्य हरिणः हरेः केसरिणः क्षेत्रे पत्न्याम् अञ्जनायां जातः पितुः देशान्तरगमनकाले जातः अनेन अन्यक्षेत्रे कथम् अन्येन उत्पादनमिति शङ्का पराकृता'**। इसी की पुष्टि अन्यत्र की गई कि एक दिन माता अंजना अकेले पर्वत पर भ्रमण कर रहीं थीं, जब वायुदेव ने उनकी हिंसा किए बिना श्रीहनुमान् को उनके गर्भ में स्थापित किया। तब गुहा (अर्थात् किष्किन्धा-स्थित आंजनेयाद्रि) में ही श्रीहनुमान् का जन्म हुआ (4.66.8-20)। फलतः गोकर्ण में हनुमान् का जन्म असम्भव है; क्योंकि उनके जन्मकाल के समय केसरीजी की गोकर्णयात्रा का उल्लेख है तथा उपर्युक्त श्लोकगत 'गोकर्ण' एवं 'क्षेत्र' शब्द में सामानाधिकरण्य नहीं है; जिससे दोनों में एकत्व की कल्पना हो सके।

तदतिरिक्त **'अञ्जने त्वं हि शेषाद्रौ तपस्तप्त्वा सुदारुणम्। पुत्रं सूतवती यस्माल्लोकत्रयहिताय वै। प्रसिद्धिं यातु शैलोऽयमञ्जने नामतस्तव। अञ्जनाचल इत्येव नात्र कार्या विचारणा'** (ब्रह्माण्डपुराणोक्त वेंकटाचलमाहात्म्य 5.64-65) इत्यादि वचनों में तिरुपति में माता अंजना की तपस्या का वर्णन मिलता है; जिसके बल पर कुछ लोगों को वहीं हनुमज्जन्मभूमि की भ्रामक कल्पना कर ली है। किन्तु उक्त श्लोकों में **'शेषाद्रौ'** शब्द का अन्वय **'तप्त्वा'** के साथ करने से ही वाल्मीकीय रामायण के साथ उसकी संगति लग सकेगी। कदाचित् इसीलिए 'श्रीवेंकटाचलमाहात्म्यम्—हिन्दी' (यद्दनपूडि वेंकटरमणराव, तिरुमल-तिरुपति-देवस्थानम्, 2013, पृ.70) में लिखा है : 'अंजनादेवी के तप का पर्वत होने के कारण उस पर्वत को अंजनाद्रि नाम स्थिर हुआ'। ब्रह्मपुराण (84.2-12) में गौतमी के पैशाचतीर्थ (वर्तमान नासिक) में श्रीहनुमान् के जन्म का उल्लेख है : **'गिरिर्ब्रह्मगिरेः पार्श्वे अञ्जनो नाम नारद। तस्मिञ्शैले मुनिवर शापभ्रष्टा वराप्सरा। अञ्जना नाम तत्राऽऽसीदुत्तमाङ्गेन वानरी ... गीतं नृत्यं हास्यं च कुर्वत्यौ गिरिमूर्धनि। वायुश्च निर्ऋतिश्चापि ते दृष्ट्वा सस्मितौ सुरौ। कामाक्रान्तधियौ चोभौ तदा सत्वरमीयतुः। भार्ये भवेतामुभयोरावां देवौ वरप्रदौ। ते अप्यूटचतुरस्त्वेतद्रेमाते गिरिमूर्धनि। अञ्जनायां तथा वायोर्हनुमान्समजायत'**। किन्तु यदि दुर्जनतोषन्याय से थोड़ी देर के लिए यदि ब्रह्माण्डपुराण के पूर्वोक्त वचन द्वारा तिरुपति को श्रीहनुमान् का जन्मस्थान मानें, तो भी ब्रह्म और ब्रह्माण्ड — इन दोनों पुराणों में ही परस्पर विरोध प्राप्त होगा। तुल्य बल वाले इन दोनों प्रमाणों में किसका पक्ष लिया जाए? और फिर ये दोनों पक्ष इतिहास—वाल्मीकीयरामायण से विरुद्ध हैं। अतः श्रेयस्कर यही है कि हम इन दोनों से प्रबल—वाल्मीकीय रामायण द्वारा निर्दिष्ट—किष्किन्धा को ही हनुमज्जन्मभूमि मानें : **'गुहायां ते महाबाहो प्रजज्ञे प्लवगर्षभ '** (4.66.20)। पुराण की अपेक्षा इतिहास (तत्रापि रामायण) की प्रामाण्य-श्रेष्ठता को हम ऊपर दिखला चुके हैं। एतदतिरिक्त अन्य रामायणों में जो कुछ है; वह वाल्मीकिवाणी का अनुवाद ही है। रामचरित्र के विषय में श्रीवाल्मीकि से विरुद्ध कुछ भी प्रमाण नहीं है। अतः उन सभी परवर्ती ग्रन्थों के उद्धरण-अनुवाद-समीक्षण-आदि अनावश्यक हैं। महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास को भी श्लोकलेखन सिखाने वाले महर्षि वाल्मीकि हैं : **'रामायणं पाठितं मे प्रसन्नोऽस्मि कृतस्त्वया। करिष्यामि पुराणानि महाभारतमेव च'** (बृहद्धर्मपुराण 1.30.55)। अतः वे भी आदिकवि वाल्मीकि का विरोध नहीं कर सकते।

फलतः किष्किन्धा ही श्रीहनुमान् की निर्विवाद जन्मभूमि है। नारायणस्मृतिः।।

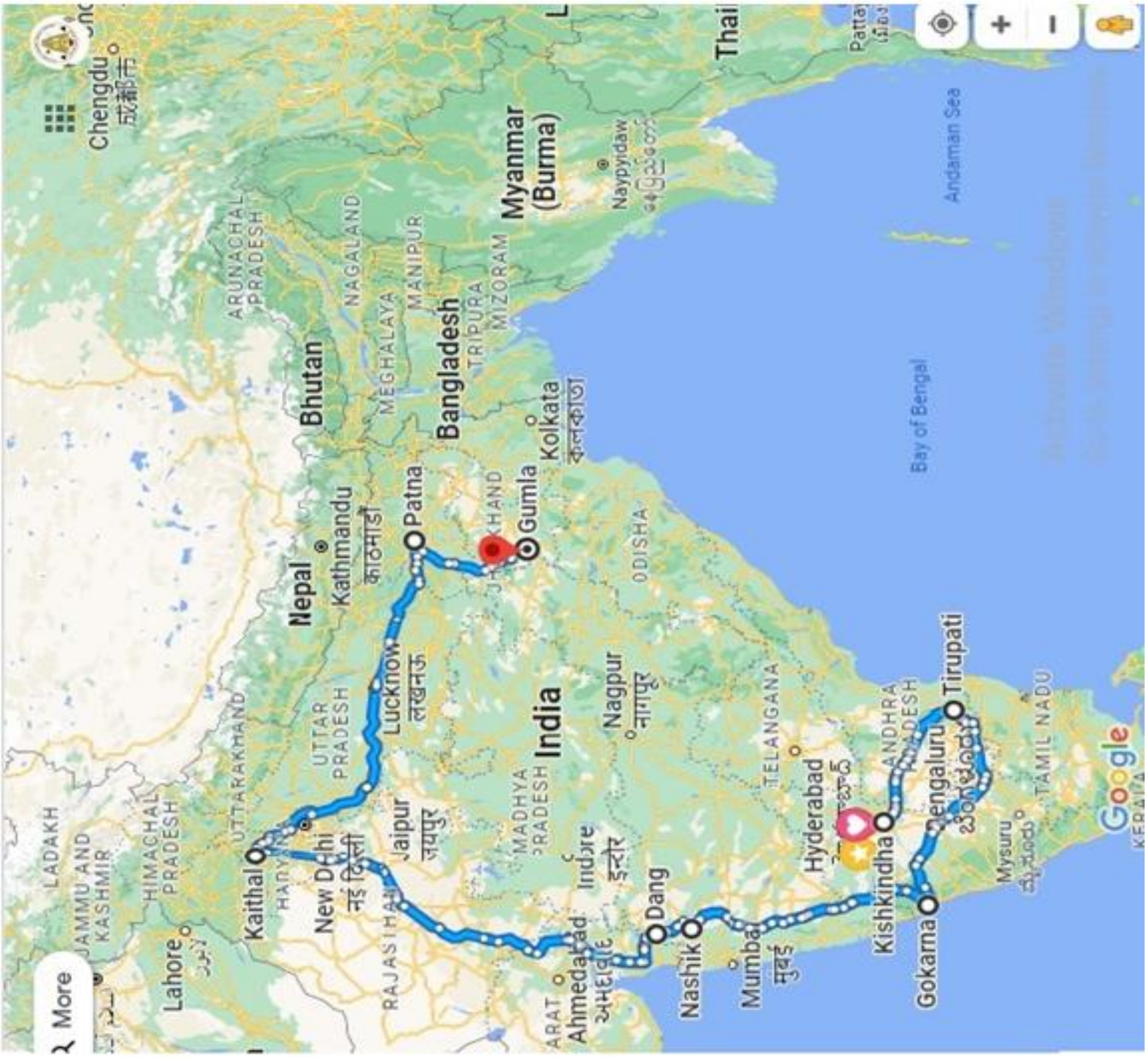

Kishkindha, Gangavathi, Karnataka

Tirupati, Andhra Pradesh

Gokarna, Karnataka

Nashik, Maharashtra

Dang, Gujarat

Kaithal, Haryana 136027

Patna, Bihar

Gumla, Jharkhand 835207

तिरुपति – (आन्ध्रप्रदेश)

टि.टि.डि. कमेटी की हार हनुमान जन्मभूमि ट्रस्ट का जीत :
टि.टि.डि कमेटी का निराकरण :

On 21 April 2021 TTD,
TTD Fake committee conducted a Meeting in Tirupati

https://www.indiatoday.in/magazine/up-front/story/20210503-the-many-birthplaces-of-hanuman-1794390-2021-04-23,

1) April 21, on the occasion of Sri Rama Navami, the Tirumala Tirupati Devasthanams (TTD), custodian of the richest Hindu shrine, unveiled “mythological, epigraphic and geographic evidence” to claim that Tirumala is the birthplace of the Hindu god Hanuman. To bolster the claim, the TTD had constituted an eight-member committee, including Sanskrit and Vedic scholars and even a scientist from the Indian Space Research Organisation (ISRO), in December 2020 to produce “irrefutable” evidence on the purported Hanuman janmabhoomi. This came after questions were raised during the special religious discourses the TTD held

in June last year when participants asked why there were uncertainties about the birthplace. It seems bhakts were mentioning several places with similar-sounding names.

2) https://www.thehindu.com/news/national/andhra-pradesh/tirumala-to-stake-claim-as-birthplace-of-lord-hanuman/article34290398.ece

The panel consists of the Vice-Chancellor of National Sanskrit University Prof. Muralidhar Sharma, Vice-Chancellor of SV Vedic University Prof. Sannidhanam Sharma**, ISRO scientist Remella Murthy,** Deputy Director of State Archaeology Vijaykumar, professors Ranisadasiva Murthy, J. Ramakrishna and Sankara Narayana with the TTD SV Higher Vedic Studies project director Akella Vibhishana Sharma as the convener. After several rounds of discussions and research, the committee finally declared to have collected adequate evidences to establish that Anjanadri is the original birthplace of Lord Hanuman.

3) In December, the Tirumala Tirupati Devasthanams (TTD), which manages the temples together with the Tirumala Venkateswara Temple in Andhra Pradesh, shaped an professional panel comprising Vedic students, archaeologists, **and an ISRO scientist to examine and submit a report by April 21 pinpointing the actual birthplace of Hanuman.**

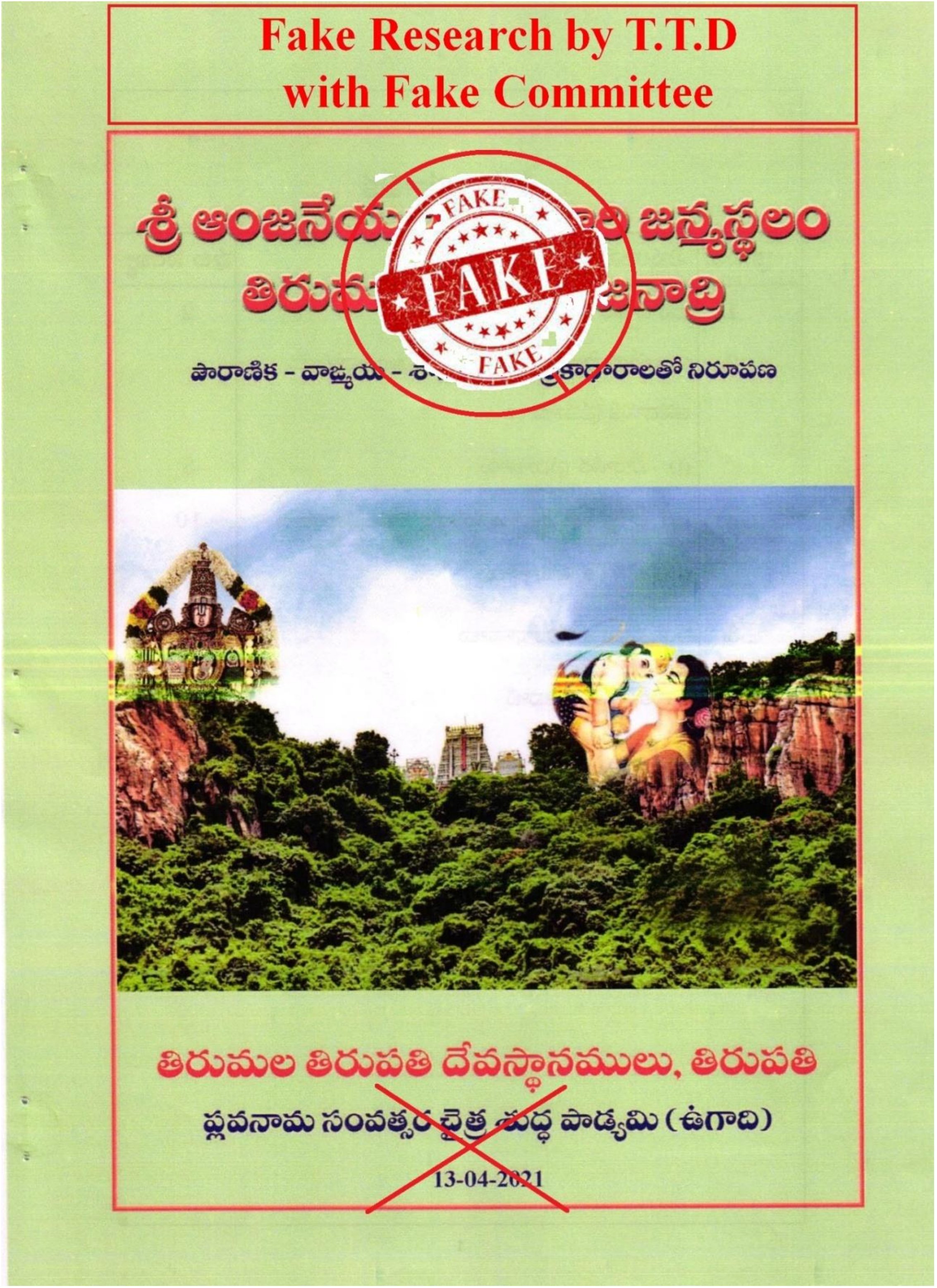

First Book Released by TTD on 13-04-2021

విషయసూచిక

క్ర.సం.	విషయము	పుట సంఖ్య
1.	ఉపోద్ఘాతం	2
2.	ఆంజనేయస్వామి వారి జన్మస్థలం అంజనాద్రియే అనడానికి ప్రమాణాలు	
	(i) పౌరాణిక ప్రమాణాలు	3
	(ii) వాఙ్మయప్రమాణాలు మరియు శాసనప్రమాణాలు	10
	(iii) భౌగోళిక ప్రమాణాలు	13
3.	సందేహాలు – సమాధానాలు	15
4.	సవాల్ – ఎ – జవాబ్	16

FAKE

FAKE

FAKE

Fake Research by T.T.D
with Fake Committee

1

ఇది టి.టి.డి వారు నాలుగు నెలలు తయారుచేసిన రిపోర్ట్

ఈ విషయములు ఎంత ప్రామాణికమో ముందర ఖండనములో చూసెదరు

जय विरूपाक्ष - जय श्रीराम - जय हनुमान्

श्री हनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट (रि)

Sri Hanumad Janma Bhoomi Teertha Kshetra Trust (Reg.135/20),

Kishkindha – Pampakshetram –Koppal Dist , Karnataka – 583234, BHARAT,

8500411115/8,

Ref le no: 30/1 **Date**: 30-04-2021,

Place: Pampkshetra Kishkindha,

From: *H.H. Office of the Administration & P.S*

To

The Respected Chairman T.T.D,

Copy to

1. Honorable Governor of Karnataka, A.P, Tamilnadu,
2. Chief Minister Govt of Karnataka, A.P, Tamilnadu,
3. Sri Javahar Reddy I.A.S E.O ,T.T.D,
4. Committee Members,
5. Members T.T.D Board,
6. Chairman I.S.R.O Bangalore Headquarters,
7. Upa Kulapati - Sri Venkateshwara Veda Vishva Vidyalayam, Tirupati,
8. V. Muralidhara Sharma, vice-chancellor of the National Sanskrit University, Tirupati,

............జయ విరూపాక్ష, జయ శ్రీరామ , జయ హనుమాన్.........

ఓమ్ నమో వేంకటేశాయ

విషయము : శ్రీ హనుమద్ జన్మభూమి తీర్త్ క్షేత్ర ట్రస్ట్ (రి) టి.టి.డి యొక్క పసలేని వాదనను మరియు హనుమద్ జన్మభూమి విషయములో వారి సాక్ష్యాలు , పుస్తకాలు మరియు ప్రెస్‌మీట్‌లను నకిలీ , నిరాధారమైన, కల్పిత సాక్ష్యంగా పూర్తిగా నిరాకరిస్తూ కొట్టివేయుచున్నది, టి.టి.డి వారు శ్రీ హనుమంతుని జన్మస్థళ విషయములో శ్రీ హనుమంతులవారు తిరుపతిలో జన్మించేరు అనే వివిధ వాదనలు, ప్రమాణాలుగా చూపించే వివిధ విషయాలు, కపోలకల్పిత విషయాలని, దానికి వేసిన కమిటీ సంపూర్ణముగా అప్రమాణమని, వారు సమర్పించిన నివేదిక కూడా అసత్యములని, అప్రామాణ్యములని, అశాస్త్రీయములని, అవైదికములని, అవైజ్ఞానికములని, ఇతిహాస విరుద్ధములని, సంపూర్ణముగా ఖండించుచూ ఇటువంటి అజ్ఞానపు మూర్ఖపు పనులు, ఆలోచనలు ఇకముందర చెయ్యవద్దని సవినయముగా మీకు తెలుపుతూ మీ తప్పు మీరు తెలుసుకొని సరిదిద్దుకొనుటకు మీకు ౭ రోజులు సమయ అవకాశమును కల్పిస్తూ లేనియడల శాస్త్రార్థమునకు సిద్ధమవ్వవలసినదిగా (ఈ శాస్త్రార్థము నందు మీ అభిప్రాయములు మీ కమిటీ నివేదికలు అన్నీ అసత్యములని నిరూపించెదము) అని మీకు తెలిపుతూ ఈ పత్రము మూలకముగా మీకు విషయమును తెలియ జేయుచున్నాము,

1

On 30-04-2021 from SHJBTKTrust Sri Swamiji Wrote a letter to TTD

ಸಮರ್ಥವಾಣಿ
ಉಜ್ವಲ ಕನ್ನಡ ದಿನಪತ್ರಿಕೆ
27/04/2021
ಮಂಗಳವಾರ
Tuesday
ಕೊಪ್ಪಳ ಆವೃತ್ತಿ

ಆಂಜನೇಯ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ವಿವಾದ:ಗೋವಿಂದಾನಂದಸ್ವಾಮಿ ಆಕ್ರೋಶ
ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹನುಮನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ:ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖ
ಸ್ಪಷ್ಟತೆಗೆ ಸರಕಾರ ಮತ್ತು ಪ್ರಮುಖ ಮಠಾಧೀಶರ ನಿರ್ಲಕ್ಷ್ಯ

ಸಮರ್ಥವಾಣಿ ವಾರ್ತೆ

ಗಂಗಾವತಿ,ಏ.26: ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಗಂಗಾವತಿ ತಾಲೂಕಿನ ಆನೆಗೊಂದಿ ಭಾಗದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಪ್ರದೇಶವೆಂಬುದು ತ್ರೇತಾ ಯುಗದ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖಿಸ ಲಾಗಿದೆ. ಸ್ವತಃ ಜಾಂಭುವಂತನೇ ಹನುಮಂತ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿರುವ ಬಗ್ಗೆ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಪ್ರಸ್ತಾಪಿಸಲಾಗಿದೆ. ಆದರೆ ಆಂಧ್ರದ ಅನ್ನದಾನ ಚಿದಂಬರ ಶಾಸ್ತ್ರಿ ಎಂಬುವವರು ಸುಳ್ಳು ದಾಖಲೆಗಳನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ಟಿಟಿಡಿ ಮೂಲಕ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿದೆ ಎಂದು ಹೇಳಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇಂತಹ ಹೇಳಿಕೆಗಳು ಬರುತ್ತಿದ್ದರೂ ರಾಜ್ಯ ಸರಕಾರ ಅಥವಾ ಪೇಜಾವರ ಸೇರಿದಂತೆ ಇನ್ನಿತ ಪ್ರಮುಖ ಮಠಾಧೀಶರು ಈ ಕುರಿತು ಸ್ಪಷ್ಟತೆ ನೀಡುತ್ತಿಲ್ಲ ಎಂದು ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತೀರ್ಥಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್‌ನ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ ಮಹಾರಾಜ ಸ್ವಾಮಿಗಳು ಆಕ್ರೋಶ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದರು. ಮತ್ತು ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳವೆಂದು ಸಾಬೀತುಪಡಿಸಲು ನಾವು ಸ್ವತಃ ತಿರುಪತಿಗೆ ಹೋಗಿ ಸ್ಪಷ್ಟನೆ ನೀಡುತ್ತೇವೆ ಎಂದು ಹೇಳಿದರು.

ನಗರದ ಪತ್ರಿಕಾ ಭವನದಲ್ಲಿ ಅವರು ಸುದ್ದಿಗೋಷ್ಠಿ ನಡೆಸಿ ಮಾತನಾಡಿ ದರು. ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಭು ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಹೇಗೆಂಯೋ ಅದೇ ರೀತಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹೊರತು ಇನ್ಯಾವ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲ. ಆದರೆ ಟಿಟಿಡಿ ಈಗ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತಮ್ಮ ತಿರುಮಲ ಎಂದು ಇತ್ತೀಚಿನ ಲಿಖಿತ ದಾಖಲೆಗಳನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ಹೇಳಿಕೆ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿದೆ. ಅದೇ ರೀತಿ ರಾಮಚಂದ್ರಪುರ ಮಠದ ಸ್ವಾಮಿಗಳು ಗೋಕರ್ಣದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿದೆ ಎಂದು ಸಮರ್ಥಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಇದು ಸುದ್ಧ ಸುಳ್ಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದೆ. ಅಂಜನಾದ್ರಿಯ ಪರ್ವತದ ಗುಹೆಯಲ್ಲಿ ವಾಯುಪುತ್ರ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿರುವುದು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ ಸೇರಿದಂತೆ ಇನ್ನಿತರ ಪುರಾಣ ಮತ್ತು ಸಾವಿರಾರು ವರ್ಷಗಳ ಸಂಸ್ಕೃತ ಇತಿಹಾಸಗಳ ಪುಸ್ತದಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಲಾಗಿದೆ. ಇದಕ್ಕೆ ಎಲ್ಲಾ ದಾಖಲೆಗಳು ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಲಭ್ಯವಿವೆ. ಹನುಮಂತ ಬಾಲ್ಯದಲ್ಲೆ ಆಟವಾಡಿರುವ ಪುರಾವೆಯಿಂದಲೇ ಹತ್ತಿರದಲ್ಲೆ ಬಾಲ ಹನುಮ ಮಂದಿರ ಇದೆ. ಜೊತೆಗೆ ಹನುಮನಹಳ್ಳಿ ಮತ್ತಿತರ ಗ್ರಾಮಗಳು ಇದಕ್ಕೆ ಸಾಕ್ಷಿಯಾಗಿವೆ ಎಂದು ಸ್ವಾಮಿಜೀ ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸಿದರು.

ಕಳೆದ ಎರಡು ವರ್ಷಗಳ ಹಿಂದೆಯೇ ತಿರುಪತಿಯ ಅನ್ನದಾನ ಚಿದಂಬರ ಶಾಸ್ತ್ರಿ ಎಂಬುವವು ನಮ್ಮೊಂದಿಗೆ ಚರ್ಚಿಸಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿದೆ ಎಂದು ನಾವು ಉಲ್ಲೇಖಿಸುತ್ತಿದ್ದೇವೆ. ನೀವು ನಮ್ಮೊಂದಿಗೆ ಕೈ ಜೋಡಿಸಿ ಎಂದು ನನಗೆ ಕರೆ ಮಾಡಿದ್ದರು. ಆದರೆ ನಾನು ಇದಕ್ಕೆ ಒಪ್ಪದೇ ತಿರುಗೇಟು ನೀಡಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂದು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಿ ಈ ಪವಿತ್ರ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತ ಅಯೋಧ್ಯೆ ರಾಮನ ಮಂದಿರದಂತೆ ಮಹತ್ವ ಪಡೆದು ಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಮತ್ತು ದೇಶ ವಿದೇಶಗಳ ಜನರಿಗೆ ಇದೊಂದು ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರವಾಗಬೇಕೆಂದು ನಾವು ಸತತ ಪ್ರಯತ್ನಿಸುತ್ತಿದ್ದೇವೆ. ರಾಮಮಂದಿನ ನಿರ್ಮಾಣಕ್ಕಾಗಿ ಹೇಗೆ ಶ್ರೀರಾಮಮಂದಿರ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್ ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಿದೆಯೋ ಅದೇ ರೀತಿ ಹನುಮದ್ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್ ರಚನೆ ಮಾಡಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಕೂಡಾ ಪ್ರತಿ ವರ್ಷ ಹತ್ತಾರು ರೀತಿಯ ಹನುಮ ಉತ್ಸವಗಳು ಜರುಗುವಂತೆ ಮಾಡುವ ಪ್ರಯತ್ನಕ್ಕೆ ಮುಂದಾಗಿದ್ದೇವೆ. ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದ ಮೇಲೆ ಕೇವಲ ಚಿಕ್ಕದಾದ ದೇಗುಲವಿದ್ದು, ಅದು ಸಾಕಷ್ಟು ಭಕ್ತರು ಬೆಟ್ಟ ಏರಿ ದರ್ಶನ ಪಡೆಯಲು ಕಷ್ಟ ಮತ್ತು ಅಲ್ಲಿ ಉತ್ಸವ ಆಚರಣೆಗೂ ತೊಂದರೆಯಾಗುತ್ತದೆ. ಇದನ್ನು ಅರಿತು ಪರ್ವತದ ಕೆಳಗಡೆ ಕನಿಷ್ಠ 50 ಎಕರೆ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಭವ್ಯವಾದ ಹನುಮಂತನ ಮಂದಿರ ನಿರ್ಮಿಸಿ ಬೆಟ್ಟ ಏರಲು ಸಮಸ್ಯೆಯಾಗುವ ಭಕ್ತರಿಗೆ ಇಲ್ಲಿ ದರ್ಶನದ ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಮಾಡಬೇಕು ಮತ್ತು ಇಲ್ಲಿ ನಿತ್ಯ ಹನುಮಾನ್ ಉತ್ಸವ ನಡೆಯಬೇಕೆಂಬುದು ಟ್ರಸ್ಟ್‌ನ ಪ್ರಮುಖ ಉದ್ದೇಶವಾಗಿದೆ. ಈ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಈಗಾಗಲೇ ನಾವು ಸರಕಾರ ಮತ್ತು ಜಿಲ್ಲಾಧಿಕಾರಿಗಳೊಂದಿಗೆ ಚರ್ಚಿಸಿದ್ದೇವೆ. ಮತ್ತು ದೇಶದ ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬ ಭಕ್ತರಲ್ಲಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಭಕ್ತಿ ಅತ್ಯಂತ ಭಕ್ತಿ ಸಂಚಾರವಾಗಬೇಕೆಂಬ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ದೇಶಾದ್ಯಂತ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ರಥಯಾತ್ರೆ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ದ್ದೇವೆ ಎಂದು ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸ್ವಾಮಿಜೀ ಹೇಳಿದರು.

ಸಾವಿರಾರು ವರ್ಷ ಗಳಿಂದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂದು ನಂಬಿಕೊಂಡಿರುವ ಭಕ್ತರಿಗೆ ಟಿಟಿಡಿ ಟ್ರಸ್ಟ್ ಶಾಖ್ ನೀಡಿ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿದೆ ಎಂದು ಸುಳ್ಳು ದಾಖಲೆ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡುತ್ತಿದೆ. ಆದರೂ ನಮ್ಮ ರಾಜ್ಯ ಸರಕಾರ ಅಥವಾ ಸಚಿವರುಗಳು ಯಾವುದೇ ಚಕಾರ ಎತ್ತುತ್ತಿಲ್ಲ. ಮತ್ತು ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಹಲುವ ಪವಿತ್ರ ಧಾರ್ಮಿಕ ಮಠಾಧೀಶರು ಕೂಡಾ ಇದಕ್ಕೆ ಸ್ಪಷ್ಟನೆ ನೀಡುತ್ತಿಲ್ಲ. ಏಕೆಂದರೆ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿರುವ ತಮ್ಮ ಮಠಗಳಿಗೆ ಇದರಿಂದ ಧಕ್ಕೆ ಬರಬಹುದು ಎಂಬ ಭಯದಿಂದ ಇಲ್ಲಿನ ಪೇಜಾವರ ಸೇರಿದಂತೆ ಇನ್ನಿತರ ನಿತ್ಯ ರಾಮನ ಪೂಜೆ ಮಾಡುವ, ರಾಮಾಯಣ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿರುವ ಮಠಾಧೀಶರು ಹೇಳುತ್ತಿಲ್ಲ. ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿ ತಮ್ಮ ಮಠಕ್ಕೆ ಧಕ್ಕೆಯಾಗುತ್ತದೆ ಎಂಬ ಭಯ ಅವರಿಗಿದೆ ಎಂದು ಸ್ವಾಮಿಜೀ ಕಿಡಿ ಕಾರಿದರು. ಟ್ರಸ್ಟ್‌ನ ಕಚೇರಿ ಪ್ರಮುಖ ಅಭಿಷೇಕ ಇದ್ದರು.

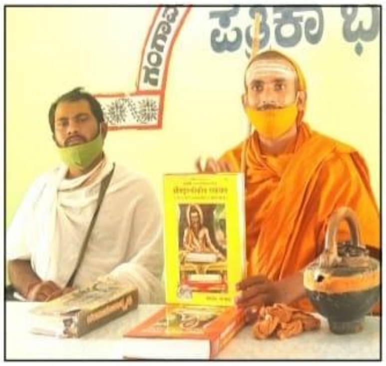

ಅಯೋಧ್ಯೆ ಪ್ರಸಾದ ನಾಳೆ ಅಂಜನಾದ್ರಿಗೆ ಸಮರ್ಪಣೆ

ನಾವು ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿನ ಪ್ರಸಾದ ಮತ್ತು ಶ್ರೀರಾಮನ ಕೆಲವು ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ತಂದಿದ್ದು, ನಾಳೆ ಹನುಮ ಜಯಂತಿಯ ಶುಭ ದಿನದಂದು ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಮೂಲ ಹನುಮನ ಮಂದಿರಕ್ಕೆ ಸಮರ್ಪಿಸುತ್ತಿದ್ದೇವೆ. ಕೊವಿಡ್ ನಿಯಮಗಳನ್ನು ಕಡ್ಡಾಯವಾಗಿ ಅನುಸರಿಸಬೇಕಿರುವುದರಿಂದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದ ಅರ್ಚಕರ ಮೂಲಕ ಈ ಪ್ರಸಾದವನ್ನು ಸಮರ್ಪಿಸಲಾಗುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ಜಿಲ್ಲಾಧಿಕಾರಿಗಳು ಕೂಡಾ ಸಹಮತ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದ್ದಾರೆ. ನಂತರ ರಾಜ್ಯಾದ್ಯಂತ ಸಂಚರಿಸಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂದು ಸಾಬೀತು ಮಾಡುವ ದಾಖಲೆಗಳ ಸಮೇತ ಭಕ್ತರಿಗೆ ಮನದಟ್ಟು ಮಾಡುತ್ತೇವೆ.

ಗೋವಿಂದಾನಂದಸ್ವಾಮಿಜೀ,
ಹನುಮದ್ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್

4 ರಾಜ್ಯ

‘ಹನುಮನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ: ತಿರುಪತಿಗೆ ನಾನೇ ಹೋಗಿ ಸ್ಪಷ್ಟನೆ ನೀಡುವೆ’

ಪ್ರಜಾವಾಣಿ ವಾರ್ತೆ

ಗಂಗಾವತಿ (ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ): ‘ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂದು ಸಾಬೀತುಪಡಿಸಲು ನಾವು ಸ್ವತಃ ತಿರುಪತಿಗೆ ಹೋಗಿ ಸ್ಪಷ್ಟನೆ ನೀಡುತ್ತೇವೆ’ ಎಂದು ಹಂಪಿಯ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತೀರ್ಥಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್‌ನ ಪೀಠಾಧಿಪತಿ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ ಮಹಾರಾಜ ಸ್ವಾಮೀಜಿ ಸೋಮವಾರ ಹೇಳಿದರು.

ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ

ಸುದ್ದಿಗೋಷ್ಠಿಯಲ್ಲಿ ಅವರು, ‘ಆಂಧ್ರದ ಅನ್ನದಾನ ಚಿದಂಬರ ಶಾಸ್ತ್ರಿ ಎಂಬುವವರು ಸುಳ್ಳುದಾಖಲೆ ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿದೆ ಎಂದು ಟಿಟಿಡಿ ಮೂಲಕ ಹೇಳಿಸಿದ್ದಾರೆ. ನಮ್ಮ ರಾಜ್ಯ ಸರ್ಕಾರ ಅಥವಾ ಪೇಜಾವರ ಮತ್ತಿತರ ಪ್ರಮುಖ ಮಠಾಧೀಶರು ಈ ಕುರಿತು ಮಾತನಾಡುತ್ತಿಲ್ಲ’ ಎಂದು ಅಸಮಾಧಾನ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದರು.

‘ತಾಲ್ಲೂಕಿನ ಆನೆಗೊಂದಿ ಭಾಗದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಪ್ರದೇಶವೇ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ. ಈ ಕುರಿತು ತ್ರೇತಾಯುಗದ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಲಾಗಿದೆ. ಪ್ರಭು ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಅಯೋಧ್ಯೆ ಹೇಗೆಯೋ ಅದೇ ರೀತಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹೊರತು ಇನ್ನಾವ ಸ್ಥಳವಲ್ಲ’ ಎಂದರು.

‘ಟಿಟಿಡಿ ಈಗ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತಿರುಮಲ ಎಂದು ಹೇಳಿಕೆ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿದೆ. ರಾಮಚಂದ್ರಾಪುರ ಮಠದ ಸ್ವಾಮಿಗಳು ಗೋಕರ್ಣದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿದೆ ಎಂದು ಸಮರ್ಥಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಇವು ಶುದ್ಧ ಸುಳ್ಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿವೆ’ ಎಂದು ಹೇಳಿದರು.

‘ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದ ಗುಹೆಯಲ್ಲಿ ವಾಯುಪುತ್ರ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿರುವುದು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ ಸೇರಿದಂತೆ ಇನ್ನಿತರ ಪುರಾಣ ಮತ್ತು ಸಾವಿರಾರು ವರ್ಷಗಳ ಸಂಸ್ಕೃತ ಇತಿಹಾಸ ಪುಸ್ತಕಗಳಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖಗೊಂಡಿದೆ. ಇದಕ್ಕೆ ಎಲ್ಲಾ ದಾಖಲೆಗಳು ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಲಭ್ಯವಿವೆ’ ಎಂದು ಸ್ವಾಮೀಜಿ ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸಿದರು.

ಟಿಟಿಡಿ ವಿರುದ್ಧ ಗೋವಿಂದಾನಂದಸ್ವಾಮಿ ಆಕ್ರೋಶ

ಗಂಗಾವತಿ : ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಗಂಗಾವತಿ ತಾಲೂಕಿನ ಆನೆಗೊಂದಿ ಭಾಗದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಪ್ರದೇಶವೆಂಬುದು ತ್ರೇತಾಯುಗದ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲೆ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಲಾಗಿದೆ. ಸ್ವತಃ ಜಾಂಭುವಂತನೇ ಹನುಮಂತ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿರುವ ಬಗ್ಗೆ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಪ್ರಸ್ತಾಪಿಸಲಾಗಿದೆ. ಆದರೆ ಆಂಧ್ರದ ಅನ್ನದಾನ ಚಿದಂಬರ ಶಾಸ್ತ್ರಿ ಎಂಬುವವರು ಸುಳ್ಳು ದಾಖಲೆಗಳನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ಟಿಟಿಡಿ ಮೂಲಕ ತಿರುಮದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿದೆ ಎಂದು ಹೇಳಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇಂತಹ ಹೇಳಿಕೆಗಳು ಬರುತ್ತಿದ್ದರೂ ರಾಜ್ಯ ಸರಕಾರ ಅಥವಾ ಪೇಜಾವರ ಸೇರಿದಂತೆ ಇನ್ನಿತ ಪ್ರಮುಖ ಮಠಾಧೀಶರು ಈ ಕುರಿತು ಸ್ಪಷ್ಟತೆ ನೀಡುತ್ತಿಲ್ಲ ಎಂದು ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತೀರ್ಥಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ ಮಹಾರಾಜ ಸ್ವಾಮಿಗಳು ಆಕ್ರೋಶ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದರು. ಮತ್ತು ಆಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳವೆಂದು ಸಾಬೀತುಪಡಿಸಲು ನಾವು ಸ್ವತಃ ತಿರುಪತಿಗೆ ಹೋಗಿ ಸ್ಪಷ್ಟನೆ ನೀಡುತ್ತೇವೆ ಎಂದು ಹೇಳಿದರು.

ಸ್' ಊ ೯ ವ್') ವಾ ರ' ನಗರದ ಪತ್ರಿಕಾ ಭವನದಲ್ಲಿ ಅವರು ಸುದ್ದಿಗೋಷ್ಠಿ ನಡೆಸಿ ಮಾತನಾಡಿದರು. ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಭು ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಹೇಗೆಯೋ ಅದೇ ರೀತಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹೊರತು ಇನ್ನಾವ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲ. ಆದರೆ ಟಿಟಿಡಿ ಈಗ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತಮ್ಮ ತಿರುಮಲ ಎಂದು ಇತ್ತೀಚಿನ ಲಿಖಿತ ದಾಖಲೆಗಳನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ಹೇಳಿಕೆ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿದೆ. ಅದೇ ರೀತಿ ರಾಮಚಂದ್ರಪುರ ಮಠದ ಸ್ವಾಮಿಗಳು ಗೋಕರ್ಣದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿದೆ ಎಂದು ಸಮರ್ಥಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಇದು ಸುದ್ದ ಸುಳ್ಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದೆ. ಆಂಜನಾದ್ರಿಯ ಪರ್ವತದ ಗುಹೆಯಲ್ಲಿ ವಾಯುಪುತ್ರ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿರುವುದು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ ಸೇರಿದಂತೆ ಇನ್ನಿತರ ಪುರಾಣ ಮತ್ತು ಸಾವಿರಾರು ವರ್ಷಗಳ ಸಂಸ್ಕೃತ ಇತಿಹಾಸಗಳ ಪುಸ್ತದಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಲಾಗಿದೆ. ಇದಕ್ಕೆ ಎಲ್ಲಾ ದಾಖಲೆಗಳು ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಲಭ್ಯವಿವೆ. ಹನುಮಂತ ಬಾಲ್ಯದಲ್ಲೆ ಆಟವಾಡಿರುವ ಪುರಾವೆಯಿಂದಲೇ ಹತ್ತಿರದಲ್ಲೆ ಬಾಲ ಹನುಮ ಮಂದಿರವಿದೆ. ಜೊತೆಗೆ ಹನುಮನಹಳ್ಳಿ ಮತ್ತಿತರ ಗ್ರಾಮಗಳು ಇದಕ್ಕೆ ಸಾಕ್ಷಿಯಾಗಿವೆ ಎಂದು ಸ್ವಾಮಿಜೀ ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸಿದರು.

ಕ' ಳ' ದ' ಎರಡು ವರ್ಷಗಳ ಹಿಂದೆಯೇ ತಿರುಪತಿಯ ಅನ್ನದಾನ ಚಿದಂಬರ ಶಾಸ್ತ್ರಿ ಎಂಬುವವು ನಮ್ಮೊಂದಿಗೆ ಚರ್ಚಿಸಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿದೆ ಎಂದು ನಾವು ಉಲ್ಲೇಖಿಸುತ್ತಿದ್ದೇವೆ. ನೀವು ನಮ್ಮೊಂದಿಗೆ ಕೈ ಜೋಡಿಸಿ ಎಂದು ನನಗೆ ಕರೆ ಮಾಡಿದ್ದರು. ಆದರೆ ನಾನು ಇದಕ್ಕೆ ಒಪ್ಪದೇ ತಿರುಗೇಟು ನೀಡಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂದು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಿ ಈ ಪವಿತ್ರ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತ ಅಯೋಧ್ಯೆ ರಾಮನ ಮಂದಿರದಂತೆ ಮಹತ್ವ ಪಡೆದುಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಮತ್ತು ದೇಶ ವಿದೇಶಗಳ ಜನರಿಗೆ ಇದೊಂದು ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರವಾಗಬೇಕೆಂದು ನಾವು ಸತತ ಪ್ರಯತ್ನಿಸುತ್ತಿದ್ದೇವೆ. ರಾಮಮಂದಿನ ನಿರ್ಮಾಣಕ್ಕಾಗಿ ಹೇಗೆ ಶ್ರೀರಾಮಮಂದಿರ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್ ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಿದೆಯೋ ಅದೇ ರೀತಿ ಹನುಮದ್ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್ ರಚನೆ ಮಾಡಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಕೂಡಾ ಪ್ರತಿ ವರ್ಷ ಹತ್ತಾರು ರೀತಿಯ ಹನುಮ ಉತ್ಸವಗಳು ಜರುಗುವಂತೆ ಮಾಡುವ ಪ್ರಯತ್ನಕ್ಕೆ ಮುಂದಾಗಿದ್ದೇವೆ. ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದ ಮೇಲೆ ಕೇವಲ ಚಿಕ್ಕದಾದ ದೇಗುಲವಿದ್ದು, ಅದು ಸಾಕಷ್ಟು ಭಕ್ತರು ಬೆಟ್ಟ ಏರಿ ದರ್ಶನ ಪಡೆಯಲು ಕಷ್ಟ ಮತ್ತು ಅಲ್ಲಿ ಉತ್ಸವ ಆಚರಣೆಗೂ ತೊಂದರೆಯಾಗುತ್ತದೆ. ಇದನ್ನು ಅರಿತು ಪರ್ವತದ ಕೆಳಗಡೆ ಕನಿಷ್ಠ ೫೦ ಎಕೆರೆ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಭವ್ಯವಾದ ಹನುಮಂತನ ಮಂದಿರ ನಿರ್ಮಿಸಿ ಬೆಟ್ಟ ಏರಲು ಸಮಸ್ಯೆಯಾಗುವ ಭಕ್ತರಿಗೆ ಇಲ್ಲಿ ದರ್ಶನದ ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಮಾಡಬೇಕು ಮತ್ತು ಇಲ್ಲಿ ನಿತ್ಯ ಹನುಮಾನ್ ಉತ್ಸವ ನಡೆಯಬೇಕೆಂಬುದು ಟ್ರಸ್ಟ್ ಪ್ರಮುಖ ಉದ್ದೇಶವಾಗಿದೆ. ಈ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಈಗಾಗಲೇ ನಾವು ಸರಕಾರ ಮತ್ತು ಜಿಲ್ಲಾಧಿಕಾರಿಗಳೊಂದಿಗೆ ಚರ್ಚಿಸಿದ್ದೇವೆ. ಮತ್ತು ದೇಶದ ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬ ಭಕ್ತರಲ್ಲಿ ಆಂಜನಾಧ್ರಿ ಭಕ್ತಿ ಅತ್ಯಂತ ಭಕ್ತಿ ಸಂಚಾರವಾಗಬೇಕೆಂಬ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ದೇಶಾದ್ಯಂತ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ರಥಯಾತ್ರೆ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದ್ದೇವೆ ಎಂದು ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸ್ವಾಮಿಜೀ ಹೇಳಿದರು.

ಸಾವಿರಾರು ವರ್ಷಗಳಿಂದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂದು ನಂಬಿಕೊಂಡಿರುವ ಭಕ್ತರಿಗೆ ಟಿಟಿಡಿ ಟ್ರಸ್ಟ್ ಶಾಖ್ ನೀಡಿ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿದೆ ಎಂದು ಸುಳ್ಳು ದಾಖಲೆ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡುತ್ತಿದೆ. ಆದರೂ ನಮ್ಮ ರಾಜ್ಯ ಸರಕಾರ ಅಥವಾ ಸಚಿವರುಗಳು ಯಾವುದೇ ಚಕಾರ ಎತ್ತುತ್ತಿಲ್ಲ. ಮತ್ತು ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಹಲುವ ಪವತ್ರ ಧಾರ್ಮಿಕ ಮಠಾಧೀಶರು ಕೂಡಾ ಇದಕ್ಕೆ ಸ್ಪಷ್ಟನೆ ನೀಡುತ್ತಿಲ್ಲ. ಏಕೆಂದರೆ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿರುವ ತಮ್ಮ ಮಠಗಳಿಗೆ ಇದರಿಂದ ಧಕ್ಕೆ ಬರಬಹುದು ಎಂಬ ಭಯದಿಂದ ಇಲ್ಲಿನ ಪೇಜಾವರ ಸೇರಿದಂತೆ ಇನ್ನಿತರ ನಿತ್ಯ ರಾಮನ ಪೂಜೆ ಮಾಡುವ, ರಾಮಾಯಣ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿರುವ ಮಠಾಧೀಶರು ಹೇಳುತ್ತಿಲ್ಲ. ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿ ತಮ್ಮ ಮಠಕ್ಕೆ ಧಕ್ಕೆಯಾಗುತ್ತದೆ ಎಂಬ ಭಯ ಅವರಿಗಿದೆ ಎಂದು ಸ್ವಾಮಿಜೀ ಕಿಡಿ ಕಾರಿದರು. ಟ್ರಸ್ಟ್ ಕಚೇರಿ ಪ್ರಮುಖ ಅಭಿಷೇಕ ಇದ್ದ

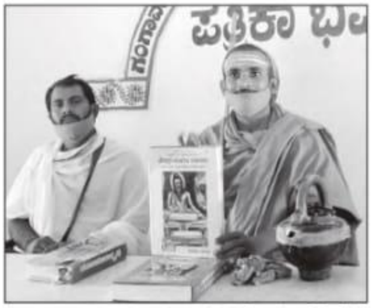

ಅಯೋಧ್ಯೆ ಪ್ರಸಾದ ನಾಳೆ ಅಂಜನಾದ್ರಿಗೆ ಸಮರ್ಪಣೆ

ನಾವು ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿನ ಪ್ರಸಾದ ಮತ್ತು ಶ್ರೀರಾಮನ ಕೆಲವು ವಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ತಂದಿದ್ದು, ನಾಳೆ ಹನುಮ ಜಯಂತಿಯ ಶುಭ ದಿನದಂದು ಆಂಜನಾದ್ರಿ ಮೂಲ ಹನುಮನ ಮಂದಿರಕ್ಕೆ ಸಮರ್ಪಿಸುತ್ತಿದ್ದೇವೆ. ಕೊವಿಡ್ ನಿಯಮಗಳನ್ನು ಕಡ್ಡಾಯವಾಗಿ ಅನುಸರಿಸಬೇಕಿರುವುದರಿಂದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದ ಅರ್ಚಕರ ಮೂಲಕ ಈ ಪ್ರಸಾದವನ್ನು ಸಮರ್ಪಿಸಲಾಗುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ಜಿಲ್ಲಾಧಿಕಾರಿಗಳು ಕೂಡಾ ಸಹಮತ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದ್ದಾರೆ. ನಂತರ ರಾಜ್ಯಾದ್ಯಂತ ಸಂಚರಿಸಿ ಅಂಜನಾಧ್ರಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂದು ಸಾಬೀತು ಮಾಡುವ ದಾಖಲೆಗಳ ಸಮೇತ ಭಕ್ತರಿಗೆ ಮನದಟ್ಟು ಮಾಡುತ್ತೇವೆ.

ಗೋವಿಂದಾನಂದಸ್ವಾಮೀಜಿ
ಹನುಮದ್ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್.

Pg 02
ಕಿತ್ತೂರ ಕರ್ನಾಟಕ
Kittur Karnataka
Gadag edition, Apr 27, 2021
450+ Newspapers | 18 Languages
Download paperboy
paperboy

जय विरूपाक्ष - जय श्रीराम - जय हनुमान्

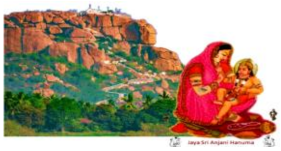

श्री हनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट् (रि)

Sri Hanumad Janma Bhoomi Teertha Kshetra Trust (Reg.135/20),

Kishkindha – Pampakshetram –Koppal Dist , Karnataka – 583234, BHARAT,

✆ 8500411115/8,

Ref le no: 8/1 **Date**: **8-05-2021,**

Place: Pampkshetra

Kishkindha,

From: *H.H. Office of the Administration & P.S*

To

Sri Dr. K. Sivan, Chairmen ISRO
Headquarters Bangalore,

Copy to P.M's Office Govt of INDIA

URJENT Most immediate

Sub : Misuse of I.S.R.O with the name of Scientific Research by T.T.D Seeking clarification from I.S.R.O regarding "TTD's claim that I.S.R.O Scientists help T.T.D for finding out the birthplace of lord hanuman according to geologically, scientifically with their scientific research and provided the evidences to T.T.D and helped finding out the birthplace of Lord Hanuman,

Recently the "T.T.D administration conducted a public press meet in Tirupati saying that they have formed a committee for finding out the Hanuman Janmabhoomi and they are claiming that scientists from I.S.R.O also worked and did 4 months research on our request and gave the scientific evidences" even the same published by the all print and electronic media and spreading all over Indian

Here when we came to know this immediately we condemned this, now we wanted to know the facts weather you people "I.S.R.O involved in this task or not? And some organizations misusing the name of I.S.R.O and misleading the devotees and society for their selfishness which causes the very bad impact on I.S.R.O and the society

We again request the I.S.R.O authorities to give a immediate proper replay on this matter for us as early as possible

Requesting answers for our query :

1) Any Tirupati Officials approached I.S.R.O ? Yes or No
2) If approached what did they requested I.S.R.O,
3) Have you appointed any person officially to do research on this matter and give a report to T.T.D
4) Have you or your I.S.R.O did any survey in finding Sri Hanuman Janmabhoomi with the request of T.T.D
5) We request the concerned authorities to provide a reply immediately without any delay
6) Have your any employee or appointed by you worked with T.T.D
7) If you appoint a person on the request of T.T.D regarding finding out the birthplace of lord Hanuman can you tell me the appointment of that person and his details
8) We wanted to know what research you have done and scientifically evidence research papers with proofs along with team members and their names from ISRO by the request of T.T.D

Our mail ID : hanumadjanmabhoomitrust@gmail.com

With the orders of H.H   With blessings

Regards,

Sri Hanumad Janma Bhoom
Teertha Kshetra Trust (R)
श्री गोविन्दानन्द सरस्वती
(Sri Sri Sri Govindananda
Saraswati Swami Ji)
FOUNDER TRUSTEE

Office of the Admin & P.S to H.H

Sri Pampakshetra Kishkindha Swarnahampi - Bhaktinagara Samrajya,

Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust ®

Office: Kishkindha, Sri Hanumad Janmabhoomi , Anegondi, Gangavati T.Q, Koppal District, Karnataka – 583234, ✆: 8500411115/8

Ashram: SwarnaHampi (New Hampi), Hospet TQ. Bellary Dist, Karnataka 583239, ✆ : 8762711113/6,

hanumadjanmabhoomitrust@gmail.com, kishkindhasamsthanam@gmail.com,

www.kishkindha.org   Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust   @ SHJBTKTrust

On 08-05-2021 from SHJBTKTrust Sri Swamiji Wrote a letter to ISRO for knowing the facts

जय विरूपाक्ष - जय श्रीराम - जय हनुमान्
श्री हनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट् (रि)
Sri Hanumad Janma Bhoomi Teertha Kshetra Trust (Reg.135/20),
Kishkindha – Pampakshetram –Koppal Dist , Karnataka – 583234, BHARAT,
✆ 8500411115/8,

Ref le no: 12/1 Date: 12-05-2021

Place: Pampkshetra Kishkindha,

From: *H.H. Office of the Administration & P.S*

To

గౌరవనీయులైన

టి.టి.డి ఈ.ఓ, చైర్మన్, కమిటీ ముఖ్యస్థులు, మరియువారి బృందము వారికి

మీరు కడు ఆదరముతో వ్రాసిన పత్రము నకు మా సమాధానము

విషయము : టి.టి.డి అధికారులు : మా లేఖకు సమాధానము పంపడానికిమేము ౧౦ రోజుల సమయము ఇచ్చుచున్నాము, లాక్డౌన్ తరువాత మేము సమావేశాన్ని ఏర్పాటుచేస్తాము,

మా సమాధానము : ౧౦ లేదా ౨౦ రోజులు లేదా లాక్డౌన్ తరువాత ఎందుకు..? మేము రేపే సిద్ధముగా ఉన్నాము.మాకు ౧౦ లేదా ౨౦ రోజులు అవసరం లేదు మీరు సిద్ధమా....?

మీపత్రములో మీరు మమ్ములను మా ప్రశ్నలు ఏమిటి ? అని అడుగు చున్నారు... "మీరు చేసిన ౪ నెలల సంశోధన పై మీకు లేశమాత్రమూనమ్మకము లేదు".....ఉంటే మమ్ములను మీ ప్రశ్నలు పంపండి అని అడుగరు,
ఇంత కష్టపడి మీరు సంశోధన చేసి మీకు మీరేనిర్ణయాలు చేసుకొనిన , అనేక రకాలుగా అటు పురాణ, ఇతిహాస, వైజ్ఞానికముగా వడపోసి తయారుచేసిన మీ పనిపై మీకు నమ్మకము లెదా....? ఈవిషయానికి ఎవరు ఎప్పుడైనా ఎటువంటి ప్రశ్నలు అడిగినా సమాధానము చెప్పు ధైర్యము, విషయము మీయందు లెదా....?

మాప్రశ్నలు అన్ని సభయందే , ఒక వేళ సభయందు మేము అడుగు ప్రశ్నలకి సమాధానము చెప్పలేము అని ఒప్పుకోండి,

సూచన : అసలు ఈ పత్రము వ్రాయవలసినది మీరుకాదు...మీయందు గౌరవము ఉండి మీ పత్రమునకు కూడా సమాధానము ఇచ్చుచున్నాము.........ముఖ్య అధికారిఈ.ఓ లేదా చైర్మెన్, కమిటీ ముఖ్యులు, భాధ్యత నుండి

తప్పించుకొను చున్నారు.. ఈ.ఓ తరపునలేదా కమిటీ ముఖ్యులు, లేదా ఈ ముగ్గురు అధికారుల బృందము తరపున వారి సమ్మతితో మీరు పంపినట్టుగాభావించు చున్నాము…

ఇకపై మాకు పత్రము రావలసినది….మీ నుంచి కాదు….టి.టి.డి ఈ.ఓ లేదా చైర్మెన్నుంచి అదికూడా వారి లెటర్ పేడ్ మీద, (ఎందుకనగా అసలు విషయము వచ్చినప్పుడు….తమని తాము రక్షించుకొనుటకు అసలు….దీనికి మేము భాధ్యులము కాము ఈ పని వీరికి ఇచ్చితిమి వీరు చేసినారు, దానిలో మాకు సంబంధము లేదు మేము కేవలము అధికారులము మాత్రమే అని, ఇది చదవమంటే మైకులో చదివినాము అని తప్పించుకొనుటకు ప్రయత్నించెదరు ఈ తప్పిదమునకు కారణము వీరే అని ఒకరికి ఇంకొకరు… ఇంకొకరిని చూపి తప్పించుకొను ప్రయత్నము చేసెదరు కావున ఈ విషయమందు టి.టి.డి ఈ.ఓ మరియూ చైర్మెన్, కమిటీ ముఖ్యస్థులు, సభ్యులు ఈ ముగ్గురు భాధ్యులు, మీనుండి ఈ ముగ్గురు సభ్య బృందము నుండి ఎవరునుండి అయిననూ మాకు ఎటువంటి పత్రము వచ్చిననూ అది మీ ముగ్గురునీ భాధ్యులుగా చేయును,)

ఇక ముందర పత్రములతో సమయము వ్యర్థము చేయవద్దు…. మీ విలువలుపై మీకు నమ్మకము ఉన్న ఎడల చర్చ సభ తేదీ ప్రకటించండి……సమయము తిథి మీరు చెబుతారా….మేము తెలియజేయవలెనా….నిర్ణయించుకొని దీనికి ప్రత్యుత్తరము ఇచ్చున్నప్పుడు …

మిగతా విషయములు పదేపదే వ్రాయవలసిన అవసరము లేదు తేదీ ప్రకటన చేయండి చాలు

మాసంస్థ అధీకృత ఈ మైల్ : hanumadjanmabhoomitrust@gmail.com,

ట్రస్ట్ అధ్యకులు శ్రీ పూజ్య స్వామివారిఆదేశానుసారము

With the orders of H.H   With blessings

Regards,

Sri Hanumad Janma Bhoom
Teertha Kshetra Trust (R)
(Sri Sri Sri Govindananda
Saraswati Swami Ji)
FOUNDER TRUSTEE

Office of the Admin & P.S to H.H

Copy to Press

On 12-05-2021 from SHJBTKTrust Sri Swamiji Wrote 2nd letter to TTD

టి.టి.డి వారు వారి నకిలీ సంశోధనమును తెలుగులో మాత్రమే చేసినారు, ఇందులో వారు చెప్పేవి అంతా బూటకపు మాటలు పౌరాణిక, వాఙ్మయ, శాసన ఆధారాలు అని చెబుతారే కానీ అవి ఎక్కడా కనబడవు, సత్యములు కావు వీరు ఈ పుస్తకమునందు వివరించు అంశములు ఏరకముగా అసత్యములో ప్రస్తుతము నిరూపింపబడును,

మొట్టమొదటిగా ఇది కమిటీ నివేదిక ఇందు 8 సభ్యులు కలరు, అసలు ఇక్కడ ముఖ్య విషయము ఏమిటి అనగా టి.టి.డి దేవస్థానము నియమములు, చట్టము ప్రకారము, అ సలు అచ్చట వారి అధికారములు ప్రకారము, టి.టి.డి వారికి ఇటువంటి ఏదైనా ఒక ధార్మిక విషయముపై కమిటీని వేసే అధికారము గాని, అందునా రెండు రాష్ట్రముల మధ్య గల సంబంధములను శంతిభద్రతలను పాడుచేయు విధముగా తమంతటతామే వారే నిర్ణయించుకుని, ఒక ధార్మిక ఆచార్యుల వారి కర్తవ్యము అయిన భౌగోళిక అంశాలతో ముడిపడిఉన్న ఇటువంటి విషయాలలో తలదూర్చ అహికారమే లేదు

ತಿರುಪತಿಯಲ್ಲೇ ಸುದ್ದಿಗೊಷ್ಠಿ: ಟಿಟಿಡಿಗೆ ಒಂದು ವಾರದ ಗಡುವು

ಅಯೋಧ್ಯೆಯಿಂದ ತಂದ ಪ್ರಸಾದ, ವಸ್ತ್ರ ಹನುಮನಿಗೆ ಸಮರ್ಪಣೆ

ಪ್ರಜಾಪರ್ವ ವಾರ್ತೆ
ಗಂಗಾವತಿ ಏ.26:
ಹನುಮ ಜಯಂತಿ ಅಂಗವಾಗಿ ತಾಲ್ಲೂಕಿನ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ದೇಗುದಲ್ಲಿ ಮಂಗಳವಾರ ನಡೆಯುವ ಧಾರ್ಮಿಕ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮಕ್ಕೆ ಅಯೋಧ್ಯೆಯಿಂದ ತರಲಾದ ವಿಶೇಷ ವಸ್ತ್ರ ಹಾಗೂ ಪ್ರಸಾದವನ್ನು ಸಮರ್ಪಿಸಲಾಗುವುದು ಎಂದು ಹನುಮಾನ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್ ಅಧ್ಯಕ್ಷ ಸ್ವಾಮಿ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ ಹೇಳಿದರು.

ಸ್ವಾಮಿಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ

ನಗರದ ಪತ್ರಿಕಾಭವನದಲ್ಲಿ ಸೋಮವಾರ ಸುದ್ದಿಗೋಷ್ಠಿಯಲ್ಲಿ ಮಾತನಾಡಿ, ರಾಮನ ಭಕ್ತ ಹನುಮನಿಗಾಗಿಯೇ ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ರಾಮಜನ್ಮ ಭೂಮಿಗೆ ಶಿಲಾನ್ಯಾಸ ಏರ್ಪಡುವ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷ ಪೂಜೆ ಸಲ್ಲಿಸಲಾಗಿತ್ತು.

ಅಲ್ಲಿ ಸಲ್ಲಿಸಿದ ಪೂಜೆ ಬಳಿಕ ಸಿಕ್ಕ ವಿಶೇಷ ಪ್ರಸಾದ ರೂಪದ ವಸ್ತ್ರ, ಯಜ್ಞೋಪವಿತ, ಹಾಗೂ ಆಹಾರ ರೂಪದ ಪ್ರಸಾದವನ್ನು ಹನುಮನಿಗೆ ಸಮರ್ಪಿಸಿ ಬಳಿಕ ಭಕ್ತರಿಗೆ ನೀಡುವ ಉದ್ದೇಶಕ್ಕೆ ಮಂಗಳವಾರ ಬೆಳಗ್ಗೆ ಪ್ರಸಾದವನ್ನು ಅರ್ಚಕರಿಗೆ ಸಮರ್ಪಿಸಲಾಗುವುದು ಎಂದರು.

ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ರಾಮನ ಮಂದಿರ ಹೇಗೆ ಭವ್ಯವಾಗಿ ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಲಿದೆಯೋ ಅದೇ ಮಾದರಿಯಲ್ಲಿ ಹನುಮ ಜನ್ಮ ಭೂಮಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯಲ್ಲೂ ಹನುಮ ಮಂದಿರ ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಬೇಕು ಎಂಬುವುದು ಅಸಂಖ್ಯಾತ ಭಕ್ತರ ನಿಲುವು ಎಂದರು.

ಇದಕ್ಕಾಗಿ ಮುಂದಿನ ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವದಲ್ಲಿಯೇ ಅತಿ ಎತ್ತರದ ಅಂದರೆ 121 ಮೀಟರ್ ಎತ್ತರದ ಹನುಮ ವಿಗ್ರಹ ಸ್ಥಾಪನೆ ಕಾರ್ಯ ಕೈಗೊಳ್ಳಲಾಗುತ್ತಿದೆ. 12 ವರ್ಷದ ಈ ಯೋಜನೆಗೆ ಎಲ್ಲರಿಂದಲೂ ಸಹಕಾರ ಸಿಗುತ್ತಿದೆ ಎಂದು ಸ್ವಾಮೀಜಿ ಹೇಳಿದರು.

ಬಳಿಕ ಇತ್ತೀಚಿಗೆ ಟಿಟಿಡಿ ಸೃಷ್ಟಿಸಿದ ಹನುಮ ಜನ್ಮ ಭೂಮಿ ಹಾಗೂ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯ ಬಗ್ಗೆ ಅನಾಗತ್ಯದ ವಿವಾದದ ಬಗ್ಗೆ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ ತೀವ್ರ ಆಕ್ರೋಶ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದರು. ಪುರಾಣ ಹಾಗೂ ಕಾವ್ಯಗಳ ಮೂಲಗಳನ್ನೆ ತಿರುಚುವ ವ್ಯಕ್ತಿಯೊಬ್ಬರಿಂದ ಈ ಕೃತ್ಯ ನಡೆಯುತ್ತಿದೆ.

ಅತಿ ಶೀಘ್ರ ಬೆಂಗಳೂರಿನಲ್ಲಿ ಈ ಬಗ್ಗೆ ಸುದ್ದಿಗೋಷ್ಠಿ ನಡೆಸಲಾಗುವುದು. ಬಳಿಕ ತಿರುಪತಿಗೆ ತೆರಳಿ ಅಲ್ಲಿಯೂ ಮಾಧ್ಯಮದ ಮೂಲಕ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯ ಮೂಲದ ಬಗ್ಗೆ ಪೌರಾಣಿಕೆ ಹಿನ್ನೆಲೆ ಸಾಕ್ಷಿ ನೀಡಲಾಗುವುದು. ಬಳಿಕ ಒಂದು ವಾರ ತಿರುಪತಿಯಲ್ಲಿಯೇ ಉಳಿಯಲಿದ್ದು, ಟಿಟಿಡಿಗೆ ವಾರದ ಗಡವು ನೀಡಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ದೇಗುಲದ ಬಗ್ಗೆ ವಿನಾಃಕಾರಣ ಗೊಂದಲ ನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡಿರುವ ಬಗ್ಗೆ ಸಾಕ್ಷಿ ನೀಡಲು ಪಂಥಹ್ವಾನ ನೀಡಲಾಗುವುದು.

ಅವರು ಸವಾಲು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದರೆ ಸೂಕ್ತ ಸಾಕ್ಷ್ಯಗಳನ್ನು ನೀಡಬೇಕು, ತಮ್ಮಲ್ಲಿರುವ ಸಆಕ್ಷ್ಯಗಳನ್ನು ಒದಗಿಸಿ ಚರ್ಚೆಗೆ ಸಿದ್ಧರಿದ್ದೇವೆ. ಹನುಮನ ವಿವಾದಕ್ಕೆ ಕೆದಕಿರುವುದು ಒಂದು ಷಡ್ಯಂತ್ರ. ಹಿಂದು ಧರ್ಮದ ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು, ಪೌರಾಣಿಕ ಹಿನ್ನೆಲೆಗಳನ್ನು ವಿರೂಪಗೊಳಿಸುವ ಷಡ್ಯಂತ್ರ ನಡೆದಿದೆ ಎಂದು ಸ್ವಾಮೀಜಿ ಆರೋಪಿಸಿದರು.

ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಗಂಗಾವತಿ ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿರುವುದು ಎಂಬ ವಿಚಾರ ಸಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಗೊತ್ತು. ಆದರೆ ನಾಡಿನ ಯಾವೊಂದು ಮಠಾಧೀಶರು ಟಿಟಿಡಿಯ ವಿಚಾರವನ್ನು ಪ್ರಶ್ನಿಸುವ ಮಟ್ಟಕ್ಕೆ ಹೋಗುತ್ತಿಲ್ಲ. ಇದಕ್ಕೆ ಕಾರಣವೂ ಇದೆ. ರಾಜ್ಯದ ಎಲ್ಲಾ ಮಠಾಧೀಶರ ಶಾಖಾ ಮಠಗಳು ತಿರುಪತಿ ಯಲ್ಲಿವೆ. ಇಲ್ಲಿನ ಮಠಾಧೀಶರು ಅಲ್ಲಿಗೆ ಭೇಟಿ ನೀಡಿದಾಗ ವೇಂಕಟೇಶ್ವರದ ದರ್ಶನ ಭಾಗ್ಯಕ್ಕೆ ಧಕ್ಕೆಯಾಗಬಹುದು, ಅಥವಾ ಟಿಟಿಡಿಯು ನಮ್ಮ ಶಾಖಾ ಮಠಗಳಿಗೆ ಬಾಗಿಲು ಹಾಕಿಸ ಬಹುದುಎಂಬ ಆತಂಕ ಬಹುತೇಕ ಮಠಾಧೀಶರಲ್ಲಿದೆ. ಹೀಗಾಗಿ ಯಾರೊಬ್ಬ ಸ್ವಾಮೀಜಿಗಳು ಟಿಟಿಡಿಯ ವಿರುದ್ಧ ಸೊಲ್ಲೆತ್ತುತ್ತಿಲ್ಲ. ಆದರೆ ನಾವು ಹಾಗಲ್ಲ. ಈ ಬಗ್ಗೆ ಸೂಕ್ತ ಸಾಕ್ಷ್ಯ ಗಳನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ಮೂಲ ಅಂಜನಾದ್ರಿಗೆ ಧಕ್ಕೆಯಾಗದಂತೆ ಹೋರಾಟ ಮಾಡಲಾಗುವುದು ಎಂದರು.

From:
Dr.AVSS VIBHISHANA SARMA,
MA PhD.,
PROJECT OFFICER (FAC).

Office of the Project Officer
S.V.Institute of Higher Vedic Studies
T.T.Devasthanams :: Tirupati.
Mobile:7702505222

<u>Roc.NoTTD-35021(88)/30/2020-SVIHVS SEC-TTD, dt.25.05.2021</u>.

To,

శ్రీ గోవిందానంద సరస్వతి స్వామీజీ
వ్యవస్థాపక ధర్మకర్త,
శ్రీ హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్టు(ఆర్),
అనెగొంది, కర్ణాటక.

ఆర్యా,

తిరుమల తిరుపతి దేవస్థానములు, భక్తుల కోరిక మేరకు శ్రీ ఆంజనేయస్వామివారి జన్మస్థలాన్ని సాధికారంగా నిర్ధారించడానికి ఒక ఉన్నతస్థాయి కమిటీని డిసెంబరు 15, 2020లో నియమించింది. వారు పౌరాణిక - చారిత్రక - వాఙ్మయ - శాసనాధారాలతో ప్రాథమిక నివేదన తయారుచేశారు. అంజనాదేవి మతంగ ముని ఆదేశంతో పుత్ర సంతానానికై తిరుమల చేరి తపస్సు చేసింది. హనుమను వాయు కటాక్షం చేత పుత్రునిగా పొందింది. తరువాత హనుమ ఈ అంజనాద్రి నుండి వానర రాజధాని కిష్కింధకు చేరి సుగ్రీవునికి మంత్రిగా వెలుగొందాడని పేర్కొన్నది. ఈ నివేదికను 21.04.2021న(శ్రీరామ నవమి) ప్రకటించారు. వెంటనే ఎంతోమంది పండితులు, శ్రీవారి భక్తులు, మేధావులు వివిధ రంగాలకు చెందినవారు బహుముఖంగా తిరుమల తిరుపతి దేవస్థానములను కొనియాడారు.

కానీ, మీరు మాత్రం కిష్కింధే హనుమ జన్మస్థలమని పేర్కొంటూ తితిదేకి ఒక లేఖ రాశారు. దానిలో ఏ ఆధారాలు, ప్రమాణాలు చూపకుండా, సంబంధం లేని ఏవో అవాస్తవ అంశాలను కూడా ప్రస్తావించారు. మీ స్థాయికి తగని విధంగా విమర్శించడం దురదృష్టకరం. దీనికి ప్రతిస్పందించిన తిరుమల తిరుపతి దేవస్థానములు మిమ్మల్ని తగు ప్రమాణాలు చూపాలని కోరడం జరిగింది.

మీరు మళ్లీ 19.05.2021 నాడు - ఏ ఆధారాలు చూపకుండా, మీ వాదనే నిజమని చెబుతూ లేఖ వ్రాశారు. తిరుపతి క్షేత్రానికి వచ్చి, పండితులతో చర్చకు వెంటనే సిద్ధమని తెలియజేశారు.

ఈ నేపథ్యంలో మీరు శ్రీ వేంకటేశ్వరస్వామివారి దర్శనానికై తిరుమలకు విచ్చేశారు. కనుక మీరు వచ్చి తిరుపతిలో ఒక బహిరంగ ప్రజావేదికపై చర్చను తగిన ప్రమాణాలతో చేపట్టవచ్చు. మీరు వచ్చే తేదీని వెంటనే తెలియజేస్తే మేధావులను పండితులను, పాత్రికేయులను, వారితోబాటుగా తిరుమల తిరుపతి దేవస్థానములు నియమించిన కమిటీ సభ్యులను కూడా ఆహ్వానిస్తాము. అలాగే చర్చావేదికను కూడా సిద్ధపరుస్తాము.

మీ ప్రత్యుత్తరానికి నిరీక్షిస్తూ...

సదా శ్రీవారి సేవలో...

డా. ఎ.వి.ఎస్.ఎస్. విభీషణశర్మ 25/5/2021
ప్రాజెక్టు అధికారి,
ఎస్వీ ఉన్నత వేదాధ్యయన సంస్థ,
తిరుమల తిరుపతి దేవస్థానములు, తిరుపతి.

నారాయణ......
మేము ఈ విషయంపై చర్చకై
ఎప్పటినుంచో సిద్ధముగానున్నాము
ఇప్పుడే రమ్మంటారా...? మీదే ఆలస్యము...!

ఇతి
నారాయణ స్మరణ పూర్వకం
श्री गोविन्दानन्द सरस्वती 25/05/21
(3.00 గం. మధ్యాహ్నం)
మకాము:- శ్రీ పుష్పగిరి మఠము, తిరుమల (8500411118 / 8762711113)

TTD is givien a letter to Sri Swamiji accepecting for open debate

26-05-2022 राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान तिरुपति में आयोजित शास्त्रार्थ

https://www.youtube.com/watch?v=KMlsT2772aU&t=20s
https://www.youtube.com/watch?v=4KcjMqnjFUI&t=124s
https://www.youtube.com/watch?v=C1ebUNC4pW0&t=201s
https://www.youtube.com/watch?v=L1I0C_dus2U&t=9s
https://www.youtube.com/watch?v=0nL2H5rCH14

श्री हनुमान जी के जन्म के बारे में टी.टी.डी कमिटी वाले लोग अनावश्यक रूप से विवादों को खडा करके संपूर्ण शास्त्र ज्ञान के बिना अनावश्यक कार्य कर रहे हैं जबकि अंजना देवी के पति और हनुमान जी के पिता केसरी को एक राक्षस के रूप में बता रहे है इतना ही नहीं अंजना देवी के पिता का नाम केसरी बता रहे हैं | यह सर्वदा अनुचित है और हनुमान जी की जन्म तिथि को लेकर भी भ्रम फैला रहे है | कुछ समय श्रावण बोलेंगे कुछ समय वैशाख बोलेंगे कुछ समय कार्तिक बोलेंगे

ऐसे अनेक सारे विषयों को लेकर प्रमाणों को छोड़कर स्वयं ही असली इतिहासों को क्षति पहुंचा रहे है कुछ लोगों का लिखा हुआ प्रक्षिप्त पन्क्तियों का उल्लेख कर रहे हैं, जिसमे श्री वेङ्कटाचल माहात्म्य (सङ्कलन ग्रंथ) में श्लो : श्रावणे मासि नक्षत्रे श्रावणे हरि वासरे । यह श्लोक अप्रमाणिक है असम्बद्ध है ज्योतिष सिद्धान्त के अनुसार सर्वत्र विरुद्ध है |

फकीर मुसलमान शिर्डी वाले साईं को गुरु और भगवान् मानने वाले लोगो को रामायण के बारे या हिंदू देवी देवता के बारे में बोलने का अधिकार ही नहीं है |

तिरुपति कमेटी का अभिप्राय यह है कि" श्री हनुमान जी का जन्म तिरुपति में हुआ है" जबकि संपूर्ण रामायण में हनुमान जी के जन्म का वृत्तान्त आता है वहां कही भी टि.टि.डि तिरुपति का और उस क्षेत्र का कही भी एक मात्र प्रामणिक उल्लेख नहीं मिलता है, तिरुपति वाले लोग सब कुछ आसत्य बोल रहे है |

उदा : तिरुपति कमेटी का कहना है कि " पितरो केसरी नाम राक्षस:
श्री हनुमान जी के पिता केसरी त्रेतायुग में एक राक्षस थे ! और अञ्जनी के पिता केसरी हैं ! और पति भी केसरी हैं , यहां २ केसरी कहा से आए ? यह सर्वदा अनुचित है, श्री मद्वाल्मीकि रामायण के और अनेक प्रमाणों के अनुसार केसरी एक वानर राजा थे और वानर श्रेष्ठ, प्रज्ञाशाली थे ।

पद्मकेसर संकाश: तरुणार्क निभानन: ।
बुद्धिमान् वानर: श्रेष्ठ: सर्ववानरसत्तम: ॥ (वा.रा कि.३९ सर्ग श्लो १७)
अनीकैर्बहु साहस्रै:वानराणां समन्वित: ।
पिता हनुमत: श्री मान् केसरी प्रत्यदृश्यत ॥ १८
माल्यवान्नाम वैदेहि गिरीणामुत्तमो गिरिः।
ततो गच्छति गोकर्णं पर्वतं केसरी हरिः। 5.35.80 ॥
पर्वतों में माल्यवान (किष्किन्धा में माल्यवान् / प्रस्रवण गिरि)नाम से एक प्रसिद्ध उत्तम पर्वत है, वहां केसरी नामक वानर निवास करते थे, एक दिन वे देवर्षियों की आज्ञा से गोकर्ण क्षेत्र पर्वत पर गए,
स च देवर्षिभिर्दिष्टः पिता मम महाकपिः।
तीर्थे नदीपतेः पुण्ये शम्बसादनमुद्धरत्। 5.35.81॥
देवर्षियों की आज्ञा से मेरे पिता केसरी ने समुंद्र के तट पर विद्यमान उस पवित्र गोकर्ण तीर्थ में शंबसादन नामक दैत्य का संहार किया था |

और शम्बसादन जैसे राक्षस का संहार करने वाले वानर श्रेष्ठ राजा केसरी थे ।

टि.टि.डि वाले येभी कहते है कि श्री राम जी किष्किन्धा से लंका जानेके समय और वहा से सीता माता जी के साथ फिर अयोध्या जाने के समय पुष्पक विमान में तिरुपति आये यह भी असत्य है ऐसा कही भी उल्लेख नहीं हैं श्री मद् वाल्मीकि रामायण में स्पष्ट लिखा है कि “श्री राम भगवान् ने किष्किंधा से लंका जाने के मार्ग और लंका से किष्किंधा होते हुए अयोध्या आने वाले मार्ग तक” यहा संपूर्ण रामायण में तीन काण्ड सुंदर काण्ड /किष्किंधा काण्ड / युद्ध काण्ड मे कही भी ऐसा उल्लेख नहीं है कि श्री राम जी “तिरुपति”/ वेंङ्कटाचल” गये यहा किष्किंधा का ही सब जगह उल्लेख है

वा.रा यु.सर्ग १२५, १२६ ॥ १२५,१२६,१२७
एषा सा दृश्यते सीते ! किष्किंधा चित्र कानना ।
सुग्रीवस्य पुरी रम्यायत्र वाली मया हतः १९
एवम् उत्कोऽथ वैदेह्या: राघव: प्रत्युवाच ताम्।
एवमस्त्विति किष्किंधा प्राप्य संस्थाप्य राघव: ॥
विमानं प्रेक्ष्य सुग्रीवं वाक्यमेतदुवाच ह । २२
एषा सा दृश्यतेऽयोद्या राजधानी पितुर्मम ।
अयोध्यां कुरु वैदेहि ! प्रणामं पुनरागत ॥ ५२

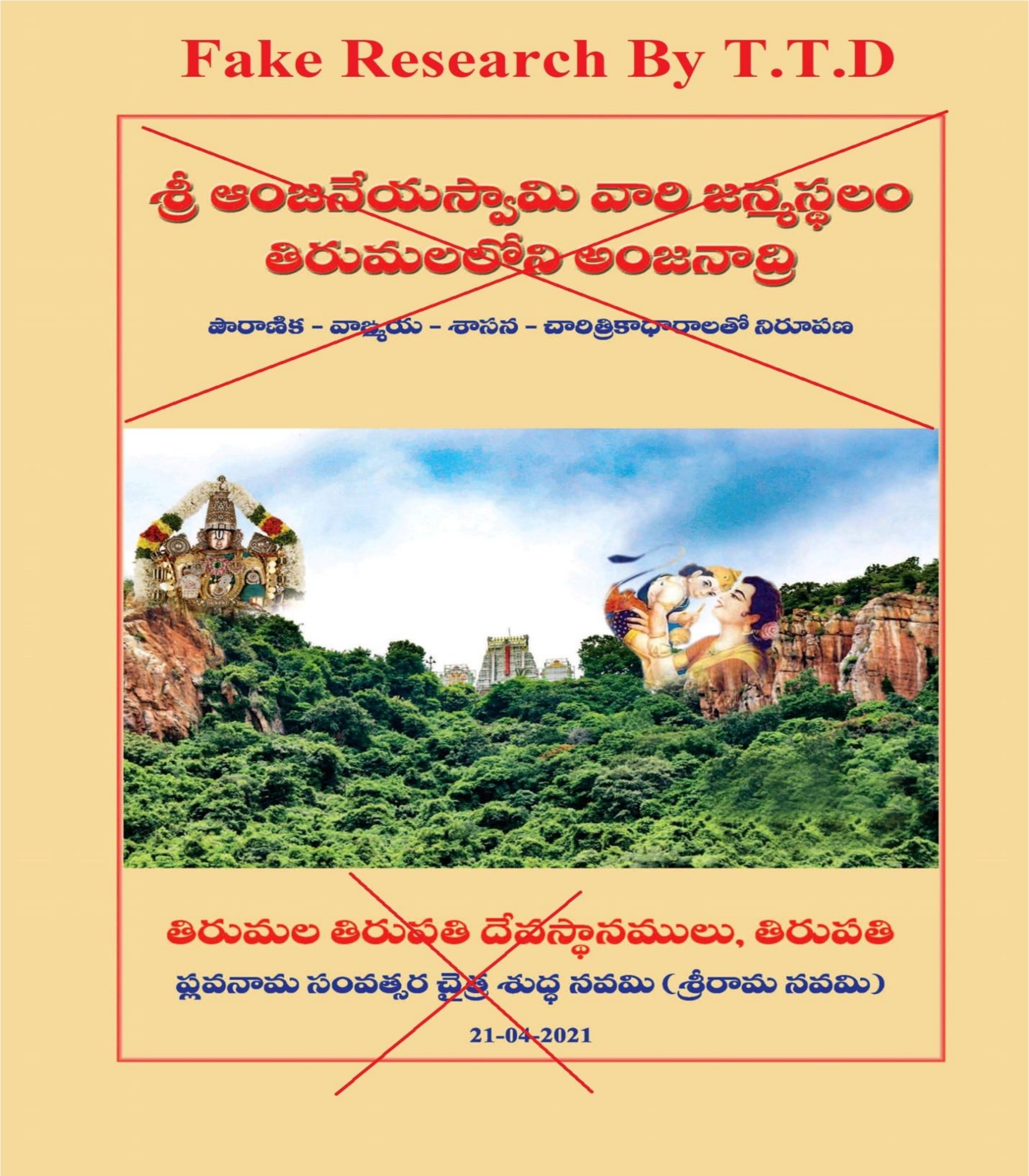

21-04-2021 को टीटीडी द्वारा जारी पहली पुस्तक

शास्त्रार्थ के बाद टीटीडी के जेईओ व कमेटी सदस्यों ने की प्रेस मीट

राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय - तिरुपति में प्रेस मीट

https://www.youtube.com/watch?v=TKToP1P0xaA&t=444s

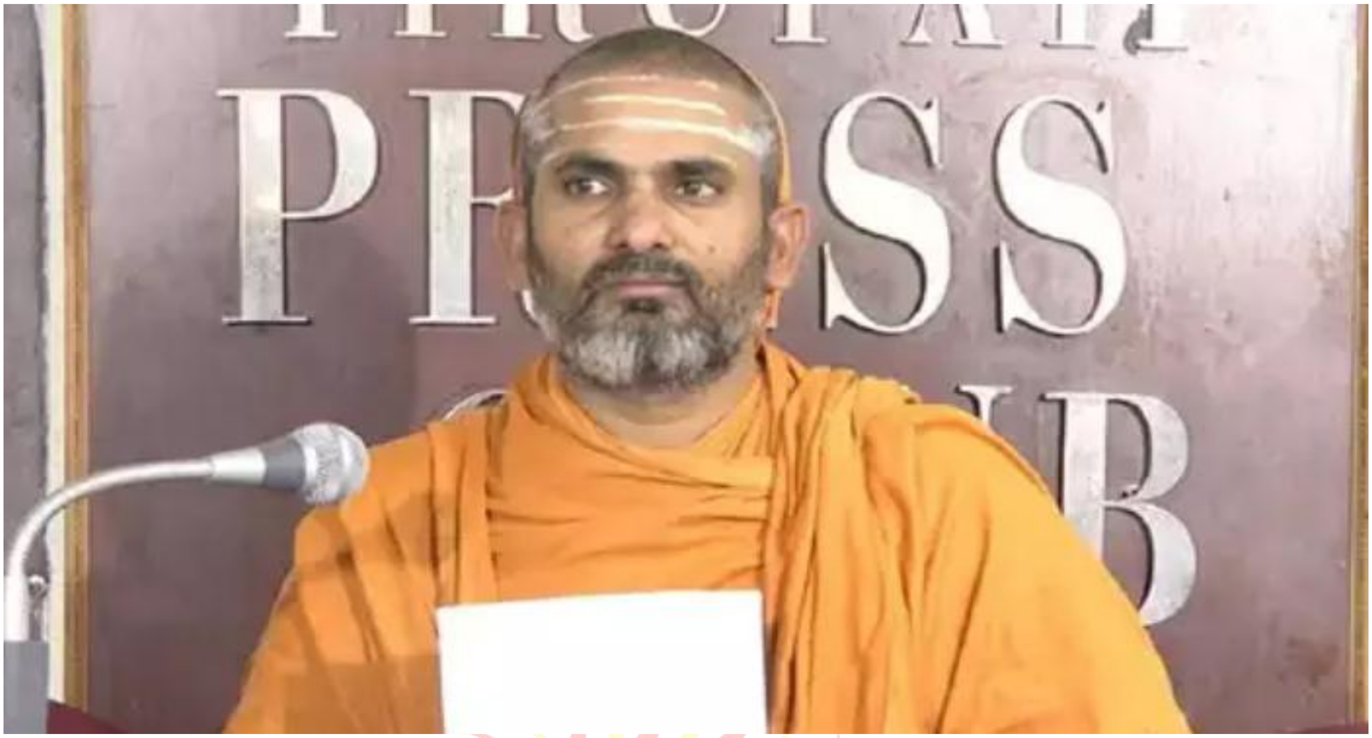

https://www.youtube.com/watch?v=0nL2H5rCH14&t=7s

26-05-2022 श्री गोविंदानंद सरस्वती स्वामीजी ने तिरुपति में प्रेस मीट में टीटीडी द्वारा प्रस्तुत पूरी फर्जी परियोजना रिपोर्ट की निंदा की,

https://www.youtube.com/watch?v=JqKRR16w6fE&t=9359s

https://www.youtube.com/watch?v=C1ebUNC4pW0&t=39s
https://www.youtube.com/watch?v=6h-2581f6FU
https://www.youtube.com/watch?v=V8-PHrTSXs8

https://www.youtube.com/watch?v=9sZ47zo-A4k&t=9s

अगले दिन राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में बहस के बाद और श्री स्वामीजी तिरुपति प्रेस क्लब में प्रेस मीट

After losing the Debeate with Govindananda Saraswati Swamijii,
TTD released Marphing Video, it's not a wonder nobody will believe this ...but.... the next day only TTD entire team got redhandedly caught the Next day only Sri Swamijis team released the original video ,

गोविंदानंद सरस्वती स्वामीजी के साथ बहस हारने के बाद, टीटीडी ने मार्फिंग वीडियो जारी किया, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है, इस पर कोई विश्वास नहीं करेगा...लेकिन.... अगले दिन केवल टीटीडी की पूरी टीम रंगे हाथों पकड़ी गई अगले दिन केवल श्री स्वामीजी की टीम ने मूल वीडियो जारी किया, यह घटना बताती है कि स्वार्थ के लिए कौन और क्या

कर सकता है,

టీటీడీ వర్సెస్ హనుమద్ ట్రస్ట్
టీటీడీ ఏం చెబుతోంది ?
TV9 తెలుగు
ప్రెస్‌మీట్
జన్మస్థలంపై చెరోమాట
మీడియాను పిలవడానికి కూడా ఒప్పుకోలేదు-గోవిందానంద సరస్వతి
OLLOW US ON TV9 WEBSITE
SUBSCRIBE NOW

NEWSROOM
టీటీడీ ప్రమాణాలతో మేము ఏకీభవించలేదు-గోవిందానంద
TV9 తెలుగు
తిరుపతి
హనుమా.. కనుమా
బహిరంగ చర్చ అని చెప్పి అంతర్గతంగా చర్చ పెట్టారు
FOLLOW US ON TV9 WEBSITE
SUBSCRIBE NOW

Graphics Video by (T.T.D)

Vs

Original Video by(SHJBTKT)

Activate W
Go to Setting

టి.టి.డి వారి నయ వంచన, మోసము, దగా, కుట్ర పూరిత చర్య, పరువు కోసము ఎంతకైనా బరితెగించే టి.టి.డి కమిటీ ఇప్పటివరకూ టి.టి.డి వారు చేసిన గ్రాఫిక్స్ వీడియో చూసారుగా.... ఇప్పుడు చూడండి అసలు వీడియో... ,

బయట పడిన టి.టి.డి వారి నయ వంచన, మోసము, దగా, కుట్ర పూరిత చర్య, పరువు కోసము ఎంతకైనా బరితెగించే టి.టి.డి కమిటీ బహిరంగ సవాలు అని పిలిచి బహిరంగ చర్చ చేస్తామని చెప్పి వ్రాతపూర్వకముగా పత్రము ఇచ్చి నమ్మించి, మోసము చేసి, 30 మంది పత్రికా విలేఖరులను గేటు దగ్గల తాళము వేసి, కేవలము స్వామివారినే లోపల పెట్టి వారి ప్రశలకు సమాధానము ఇవ్వకుండగా...స్వామివారు టి.టి.డి వాదనను పుస్తకములను ప్రమాణములుగా లేవని ఒప్పుకోక కమిటీవారి పుస్తకములను ఖండన చేస్తూ ఉంటె ....

సహించలేక.....వాళ్ళ సొంత కెమేరాలు పెట్టి గ్రాఫిక్స్ తో వీడియోలు తీస్తూ ....వారికి కావలసిన విధముగా ఎడిట్ చేస్తూ సమాజానికి మేము ఓడిపోయేము అని చెప్పుకోలేక తిరిగి స్వామివారే టి.టి.డి వారి తో ఏకీభవిస్తున్నారని దొంగ వీడియే ఒకటి తీసి గ్రాఫిక్స్ తో రిలీస్ చేయటము వారి పరువు కాపాడుకొనుటకు కుట్రతో స్వామివారిని అడ్డుకొనలేక,

పక్కదారులలో ఇటువంటి వీడియోలు రిలీస్ చేస్తూ వేంకటేశ్వరునిని, శ్రీ హనుమంతుని, సమస్త భక్తులను మోసము చేస్తున్న టి.టి.డి కమిటీ ఇలాంటివారిని ఏమని అనాలి...? చూడండి ....? స్వామివారిని మాట్లాడనివ్వకుండగా... స్వామివారి శిష్యుడు వీడియో తీస్తూఉంటే ఏ రకముగా అడ్డుకుంటున్నారో .... ఇది అసలు వీడియో

TTD द्वारा नकली मॉर्फिंग वीडियो,

अगले ही दिन टीटीडी बहस हारने के बाद टीटीडी ने श्री गोविंदानंद सरस्वती स्वामीजी पर नकली वीडियो मॉर्फिंग वीडियो जारी करते हुए कहा "श्री स्वामीजी टीटीडी से सहमत थे,

श्री स्वामीजी की टीम से तुरंत मूल वीडियो जारी किया गया, हमने कभी उम्मीद नहीं की थी कि टीटीडी ऐसा करेगा लेकिन यह कलियुग है,

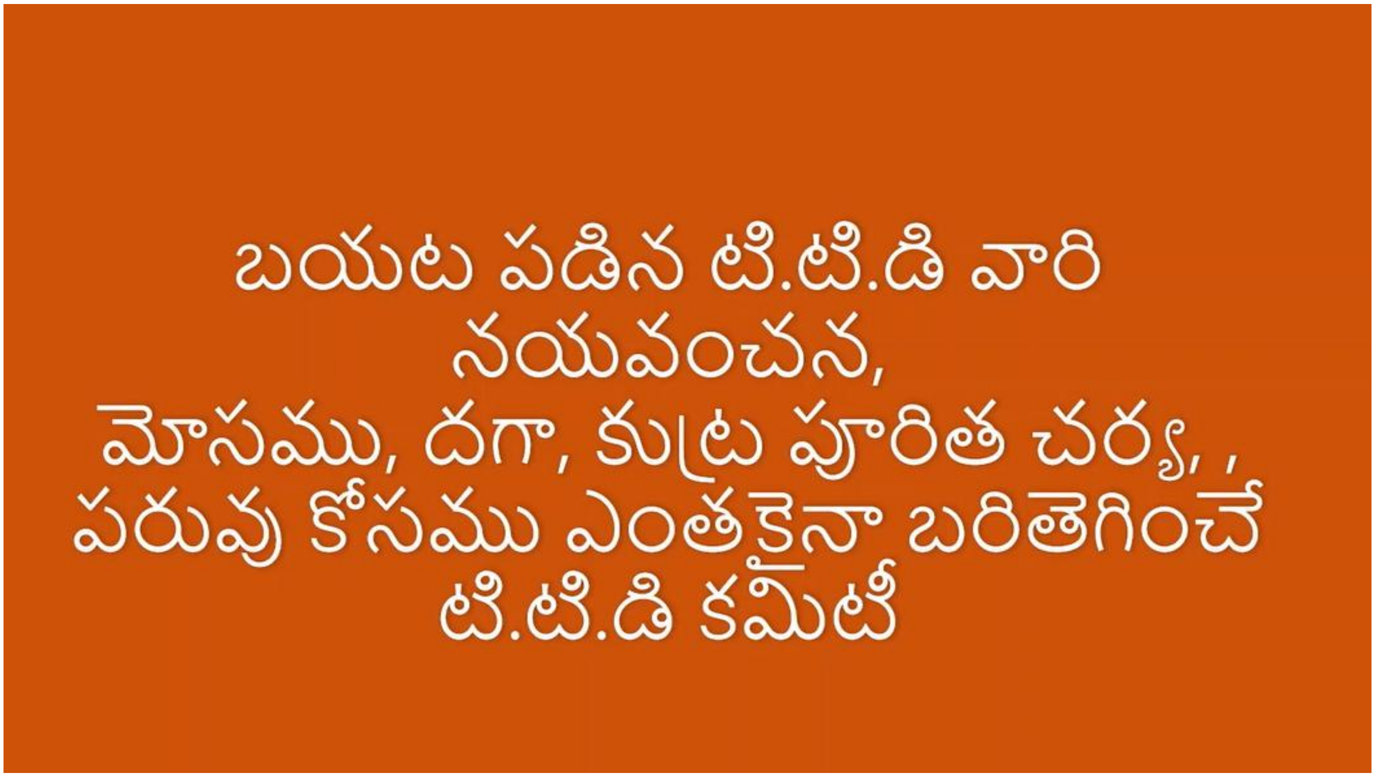

https://www.youtube.com/watch?v=Tqyp3nhb4ss,

https://www.youtube.com/watch?v=uEhFOEyEAOY

Original Video from Sri Swamijis Student

స్వామివారి శిష్యుడు వీడియో తీస్తూఉంటే ఏ రకముగా అడ్డుకుంటున్నారో
....

స్వామివారి శిష్యుడు వీడియో తీస్తూఉంటే ఏ రకముగా అడ్డుకుంటున్నారో
....

श्री "आकेल्ला विभीषण" शर्मा हमारे छात्र को वीडियो लेने से रोकने के लिए आ रहे हैं

श्री अकेला विभीषण शर्मा ने हमारे छात्र को वीडियो लेने के लिए रोका, और "सेल फोन कैमरा" के सामने खड़ा हो गया, लेकिन हमारे छात्र ने वीडियो ले लिया

Complete video:

https://www.youtube.com/watch?v=Tqyp3nhb4ss,

https://www.youtube.com/watch?v=BAXyFPKxRLE

यह वास्तव में टीटीडी समिति पर शर्म की बात है

यह वास्तव में टीटीडी समिति पर शर्म की बात है

ARCHAEOLOGICAL SURVEY OF INDIA

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

Dr K. Muniratna Director , Epigraphy, ASI, Mysore,

Conclusion

The birth place of hanuman as Anjanadri in Sheshachalam ranges existing a the foot o fthe Tirumala hills very close to Tirupati in Chittoor dit. Of A.P. stretching from Tirupati to SriSailam.

This area is dense forest with number of existing water springs, sacred theerthas, water falls, huge hill ranges, thick forest, with number o rare spices of flora and fauna.

In this area there is a very possibilities of existing of a human habitation . though this area is a present also covered with thick reserved forest and rank visitation is not accessible to venture and study on archaeological and anthropological point of view in micro level due to the existence of wild animals and strict vigilance and surveillance systems provided in the forest to safeguard the rare species of red sander wood smuggling activies.

However we cannot root out the ancient habitation in this seshachalam area. The recent research traced out some of the tribal settlement and rock art like ancient petrogliphs and pictograph engraved on the rock of prehistoric nature give clear indications of archaeological importance and ancient human habitation in Seshachalam ranges where the Anjanadri is existing.

As Venkatachla Mahatryam attests the visit of rama along with vanaras to seshachalam in the context or Vaikunta Guha episode.

As the birth place of hanuman in seshachalam hill range attested in so many puranas and venkatachala mahatyam the reference o f this literature is to b estudies in micro level to proceed further dimensions of scope of archaeological exploration and excavation with the help of latest technologies to achieve our goal.

ARCHAEOLOGICAL
SURVEY OF INDIA

Dr K. Muniratna Director , Epigraphy, ASI, Mysore,

[illegible]

భారతదేశంలోని వందలకొలది తీర్థ, క్షేత్రాల వర్ణనలు వాటిచుట్టూ అల్లుకున్న పురాగాథలు, మాహాత్మ్యాలు పురాణాలలో విస్తారంగా కనిపిస్తాయి. వీటన్నింటినీ ప్రత్యక్ష ప్రమాణాలతో నిర్ధారించడానికి పురావస్తుశాస్త్రపు పరిధి చాలదు. అందులోనూ శాసనాల పాత్ర ఇంకా పరిమితమైంది.

తిరుమలకు సంబంధించిన శాసనాధారాలు క్రీ.శ. 9వ శతాబ్ది మొదటిపాదంనుండి మాత్రమే లభిస్తున్నాయి. అందువల్ల ఈ క్షేత్రానికి సంబంధించిన పౌరాణిక గాథలను ఇవి నిర్ధారించలేవు.

పైన వివరించిన శాసన ఆధారాల ప్రకారం అంజనగిరి/అంజనాద్రి అనేది సప్తగిరుల్లో ప్రసిద్ధమైన గిరిగా చెప్తోంది కానీ, ఏ శాసనంలోనూ ఆంజనేయుడి జన్మస్థానం గురించీ, తిరుమలగిరుల్లో అంజనాద్రే ఆంజనేయుడి జన్మస్థానమని చెప్పే ఆధారాలుగానీ శాసనాలలో మనకు ఇప్పటివరకూ లభించలేదు.

Official letter from Dr K. Muniratna Director, Epigraphy, ASI, Govt of India , Mysore,

Sub: till now we did get any evidences for providing tirupati is birthplace of lord hanuman

https://www.youtube.com/watch?v=XClKNdhK0u8

" यह हमारा विश्वास है, हमें विश्वास है, हम इसे सुधारेंगे अभिवृद्धि करेंगे - जिनको विश्वास है वे आएंगे,

- श्री वाई.वी सुब्बा रेड्डी टीटीडी चेयरमैन - 19 जून 2021

(सभापति स्वयं बता रहा है कि यह उसका विश्वास है, विश्वास वास्तविक सत्य से भिन्न है, कल कोई अन्य व्यक्ति दूसरी जगह से कुछ और कहता है - इसे प्रमाण या सत्य नहीं माना जाएगा)

पहली बहस हारने के बाद दूसरी बार टीटीडी ने फर्जी पीठाधिपति के साथ वेबिनार किया, **ttd** ने जनता को धोखा दिया, कि वे दूसरी बैठक अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार कर रहे हैं, लेकिन तथ्यों को जानने के बाद तिरुपति में कमरे के अंदर बैठे केवल **10** सदस्यों ने **2** घंटे बर्बाद कर दिया, कुछ नहीं किया, लोगों को फिर से धोखा देते हुए कहा कि सभी पीठाधिपति ने हमारे शोध को मंजूरी दे दी है, वास्तविक तथ्य यह है कि **ttd** तमिलनाडु से कुरतलम के एक नकली **2** जगद्गुरु के **1** नकली शंकराचार्य को लाया, और दूसरा चित्रकूट से, इस तरह से पूरा **ttd** अपने स्तर पर साबित करने की पूरी कोशिश कर रहा है लेकिन अंत में **ttd** असफल रहा

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE

सत्यमेव जयते

"The Union Government on Tuesday clarified that it was not considering announcing one of the seven sacred hills of Lord Venkateswara in Tirumala, Anjanadri, as the birthplace of Lord Hanuman."

EDITION IN | DELHI 32°C **THE TIMES OF INDIA**

City | **Hyderabad** Mumbai Delhi Bengaluru Kolkata Chennai Agra Agartala Ahmedabad Ajmer Allah

CIVIC ISSUES CRIME POLITICS SCHOOL AND COLLEGES SECUNDERABAD CITIZEN REPORTER WEATHER VIDEOS PHOTOS POLL

NEWS / CITY NEWS / HYDERABAD NEWS / No Plan To Declare Anjanadri Hills As Lord Hanuman's...

THIS STORY IS FROM JULY 21, 2021

No plan to declare Anjanadri Hills as Lord Hanuman's birthplace: Centre

U Sudhakar Reddy / TNN / Updated: Jul 21, 2021, 12:11 IST

SHARE AA

ARTICLES

No plan to declare Anjanadri Hills as Lord Hanuman's birthplace: Centre

ISB Healthcare Management programme: Readying workin...

Telangana & Andhra Pradesh borrowed Rs 94,000 crore fro...

S.C...

Hyderabad: Man

Govt of India rejected and denied the demand of TTD,

Union minister of culture and tourism G Kishan Reddy said that government was aware of the release of a booklet on Anjanadri Hills. "But, there is no proposal under government's consideration to declare it as the birthplace of the lord," he said while replying to a question in the Rajya Sabha.

YSRC MP V Vijayasai Reddy (from Andhra) demanded that the Centre declare Anjanadri Hills as the birthplace of Lord Anjaneya Swamy at the national level. The Tirumala Tirupati Devasthanams (TTD) released a 20-page booklet titled 'Tirumala's Anjanadri', terming it as Lord Hanuman's birthplace. The booklet carrying epigraphical, scientific and mythological evidence projected Anjanadri, one of the seven hills at Tirumala, as the birthplace of the lord.

The TTD said it will develop an Anjaneya temple at the hills near Akasha Ganga in Tirumala soon.

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE

सत्यमेव जयते

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CULTURE
LOK SABHA
UNSTARRED QUESTION NO.2203
ANSWERED ON 02.08.2021

DISPUTE BETWEEN ANDHRA PRADESH AND KARNATAKA OVER BIRTH PLACE OF HANUMAN

2203. SHRI SANGANNA AMARAPPA:

Will the Minister of Culture be pleased to state:

(a) whether recently there was a clash between Andhra based TTD Board and Karnataka State about the Birthplace of Hanuman and was in discussion in all medias. TTD claims that Hanuman was born in one of the Seven Hills of Tirupati and is about to submit a report, whereas Karnataka had displayed documentary evidences to prove Hanuman was born in Anjanadri situated in Koppal District;

(b) whether this matter has come to the notice of the Union Government;

(c) if so, the measures which the Government has taken to investigate the fact;

(d) if not, steps taken to direct the ASI to inspect and submit a detailed report about birthplace of Hanuman; and

(e) the action taken to declare the actual birthplace of Hanuman at the earliest to avoid further clashes between the neighbouring States?

ANSWER

THE MINISTER OF CULTURE, TOURISM AND DEVELOPMENT OF NORTH EASTERN REGION

(SHRI G.KISHAN REDDY)

(a) &(b) Yes, Sir. Government is aware about the matter through reports in media.

(c)to(e) No proposal is under consideration.

*****

“No Proposal is under consideration”

Govt of India Orders

After the clashes between A.P and Karnataka the issue went to Parliament Sri Sanganna who is the local M.P from Kishkindha asked Govt then the Govt of India completely rejected the fake TTD activities and said we are not considering

“No Proposal is under consideration” श्री हनुमद जन्मभूमि के संबंध में भारत सरकार का बहुत महत्वपूर्ण संदेश, भारत सरकार इस मुद्दे में प्रवेश नहीं कर सकती है, उसी तरह कोई भी राज्य सरकार भी इसमें शामिल नहीं है, विषय यह विशुद्ध रूप से धर्मिका निर्णय से संबंधित है, और यह हिंदू धर्म आचार्यों की जिम्मेदारी है

किसी सरकार को नहीं

टि.टि.डि. कमेटी की हार हनुमान जन्मभूमि ट्रस्ट का जीत :

श्री गोविंदानन्द स्वामी जी द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देने में टि.टि.डि कमेटी पूरी तरह विफल रहे,

अंतिम परिणाम - टि.टि.डि के चैयरमेन ने (19 जून, 2021 - टीटीडी बोर्ड की बैठक में) खुद हार की घोषणा की और स्वीकार किया कि वे भविष्य में इस तरह के कार्यक्रम, घोषणा, चर्चा, इत्यादि नहीं करेंगे,

भारत मे सनातन वैदिक धर्म आचार्यों ने भी टि.टि.डि कमेटी को निराकरण किया, भारत सरकार ने भी संसद में टि.टि.डि के विचारों को खारिज किया,

अब टि.टि.डि कमेटी के हारने पर श्री हनुमद जन्मभूमि ट्रस्ट विजय उत्सव मना रहा है, इस संदर्भ में आज

“स्वस्ति श्री प्लव नाम सं आश्वीयुज शुक्ल दशमी ‘15-10-2021’
श्री हनुमद् जन्मभूमि अञ्जनाद्रि पर्व पर पुस्तक विमोचन
स्थल : श्री हनुमान जन्मभूमि किष्किन्धा,
जय विरूपाक्ष – जय श्रीराम – जय हनुमान

Fake Bhoomi Pooj Drama By TTD

నిరంతర ఓటములతో అవమానాలతో తాము చేసిన తప్పును కప్పిపుచ్చుకోవటానిక, జనాలని ఏదో ఒకటి చేసి నమ్మించటానికి చేసే ఇంకొక నాటము ఈ భూమిపూజ ,

ఎవరినైనా వాళ్ళ వలలో వేసుకోవాలి అంటే ఇంకేముంది ముందర శ్రీ వేంకటేశ్వరుని ఉపయోగించుకుని, వారిని తిరుపతి పిలిపించి వారికి విశేష దర్శనములు, సన్మానములు, పూర్ణ కుంభ స్వాగతాలు, ధ్ర్యోధనుడు శ్రీ కృష్ణు నిని ఎరవేసి పట్టుకోవటానికి ఏరకముగా ప్రయత్నించాడో అదేరకముగా వీళ్ళ స్వార్థానికి ఎవ్వరినైనా శ్రీ స్వామివారి గర్భగుడిలోకి పంపించటానికి కూడా వెనుకాడరు, ఈ నకిలీ అధికారులు, నకిలి పండితులు,

ఇంకే ముంది ముందర వేంకటేశ్వరస్వామి ఇంకేమి మాట్లాడ గలరు ఇలా వేంకటేశ్వరస్వామివారిని ముందర పెట్టుకొని చేసే వ్యాపారము తప్ప ఇందులో ఏదీ లేదు,

श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा - पम्पाक्षेत्र – कर्नाटक

अंजनीगर्भ संभूत कपीन्द्र सचिवोत्तम । रामप्रिय नमस्तुभ्यं हनुमन् रक्ष सर्वद ॥

ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್ (ರಿ.135/2020) – ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ,

Sri Hanumad Janma Bhoomi Teertha Kshetra Trust (Reg.135/20),

SRI PAMPAKSHETRA KISHKINDHA SWARNAHAMPI BHAKTINAGARASAMRAJ SAMSTHANAM – KARNATAKA Kishkindha – Pampakshetram –Koppal Dist , Karnataka – 583234, BHARAT, ✆ 8500411115/8,

---

Ref le no: 01/1 **Date**: 10-02-2022,

Place/Camp: **Kishkindha**

From: H.H . Office of the Administration& P.S

పత్రికా ప్రకటన తేదీ: 10-02-2022, స్థళము: శ్రీ హనుమత్ జన్మభూమి - కిష్కింధా (కర్నాటక)

విషయము, నిర్ణయము : తి.తి.దే, కమిటీ వారు తిరుపతి లో చేప్పే హనుమత్ జన్మభూమి నకిలీగా నిర్ధారణ,

....

Sri Hanumad Janmabhoomi Kishkindha Sri Hanuman Ratham inauguration in Tirupati TTD's foolish so called Bhoomi pooja Khandanam Sri Hanumad Janma Bhoomi Masters Plan Inaguration in Tirupati, Press conference

1) ఇస్రో పెరు దుర్వినియోగం చేస్తున్న తి.తి.దె దీనిపై తి.తి.దే, కమిటీ పై భారత దేశ ప్రభుత్వం సంస్థ పేరును స్వప్రయోజనం కోసం

దుర్వినియోగం చేస్తున్నందుకు చట్టనేరం, **ఇది క్రిమినల్** కేసులు గా

నమోదు,

2) భక్తి పేరుతో నకిలీ, తప్పుడు వ్యాఖ్యానాలు, నకిలీ సృష్టించిన **పత్రాలతో**

వ్రాసిన ప్రోజెక్ట్ రిపోర్ట్ చేసిన కమిటీ వారిపై క్రిమినల్ కేసు, ఒకసారి

తి.తి.దే బోర్డు మీటింగ్ లో ఇకముందు ఇటువంటి తప్పిదములు చేయమని వారి తప్పులను తెలుసు కొని ఛైర్మన్ కమిటీలు మూలకంగా ఒప్పుకోని మరలా తిరిగి తప్పుడు పనులు ఆరంభిచుట,

4) భారత ప్రభుత్వం కూడా తిరుపతి లో ఒక అంజనాద్రి ఉన్నదని, అది శ్రీ హనుమంతుని జన్మభూమి అని చెప్పుటకు గాని, తి.తి.దే ని సంపూర్ణంగా నిరాకరించింది

5) భారత ప్రభుత్వ ఎపిగ్రఫీ శాఖ మైసూర్ వారు కూడా తి.తి.దే వాదనని దీనిని ఖండిస్తూ తిరుపతి శ్రీ హనుమతుల వారి జన్మభూమి అనుటకు ఎటువంటి ఆధారాలు లేవు అని తేల్చి చెప్పినారు,

6) భారత పార్లమెంటులో కూడా చర్చ వచ్చి పార్లమెంటులో ప్రభుత్వం ఈ విషయం తమ దృష్టికి వచ్చినట్లు చెబుతూ తి.తి.దే నకిలీ ప్రస్తావనను సంపూర్ణంగా తిరస్కరించారు,

7) జగద్గురువులు శ్రీ శంకరాచార్యులు శృంగేరీ, ద్వారకా, పురి, బదరీ, మరియూ కాంచీ, అలాగే శ్రీ రామానుజ, శ్రీ రామానందీయ సాంప్రదాయ ఆచార్యులు, అయోధ్య లో ని ఆచార్యులు శ్రీ మధ్వాచార్యులు ఉడుపీ, మఠం ఆచార్యులు భారత దేశం లో ఉన్న సమస్త ఆచార్యులు స్పష్టంగా తిరుపతి ని నిరాకరించినారు , పంపాక్షేత్రము కిష్కింధ మాత్రమే శ్రీ హనుమత్ జన్మభూమి గా నిర్ణయము చేసి రి"

8) శృంగేరీ, ద్వారకా, బదరీ, జగద్గురువు లు వారి స్వహస్తాలతో ఈ విషయం సమస్త జనాలకు తెలియుటకు నిజమైన " శ్రీ హనుమత్ జన్మభూమి" పంపాక్షేత్ర కిష్కింధ- శ్రీ హనుమత్ జన్మభూమి జన్మభూమి కిష్కింధా రథయాత్రను జగద్గురువు లు వారి చేతులమీదుగా ఆరంభము చేసిరి,

9) అసలు రాజ్యాంగ భద్ధముగా, గానీ సుప్రీంకోర్టు ఆదేశాల మేరకు గాని తి.తి.దే నియమాలు మేరకు వారికి ఇటువంటి కమిటీలు చేయటం గాని నిర్ణయాలు తీసుకునే హక్కు గాని లేదు,

10) కాంట్రాక్టు పేర లతో డబ్బులు సంపాదించడానికే ఈ ప్రాజెక్టు,

తి.తి.దే వారి ధ్యేయం కేవలం హనుమతుల వారి పేరు చెప్పుకుని " కోండపై కోన్ని జీర్ణోద్ధార పనులు అని పేరు పెట్టి సివిల్ కాట్రాంక్ట బిజినెస్ తో డబ్బులు సంపాదించడానికే ఈ నకిలీ తిరుపతి హనుమత్ జన్మభూమి సృష్టించ బడినది,

11) దీనిపై శ్రీ హనుమత్ జన్మభూమి తీర్ధ క్షేత్ర ట్రస్ట్ శ్రీ గోవిందానంద సరస్వతీ స్వామి వారే సాక్షత్ భారత దేశం లో ఉన్న, జగద్గురువులు శంకరాచార్యులు, శ్రీ రామానుజ ఆచార్యులు, శ్రీ మధ్వాచార్యులు ఇలా అనేక మంది సనాతన ధర్మ హిందూ ధర్మాచార్యులను స్వతహాగా కలిసి సప్రామాణిక శ్రీ మద్ వాల్మీకి రామాయణం, ఇత్యాది, ఆనందరామాయణం, శ్రీ శివమహాపురాణం, స్థళ పురాణం ఆచార్యులు పరంపరా, భౌగోళిక ప్రమాణము లతో, ఇతిహాసముల తో, పంపాక్షేత్ర కిష్కింధా అంజనాద్రి యే అసలైన శ్రీ హనుమత్ జన్మభూమి గా, చైత్ర పూర్ణిమ శ్రీ హనుమత్ జయంతి తిథి గా, నిరూపణ చేయుట జరిగినది,

12) తిరుపతి, తి.తి.దే కమిటీ వారు చేప్పేవి నకిలీగా భారత సనాతన హిందూ ధర్మాచార్యులచే, నిరూపణ, నిర్ణయించ బడినవి

13) శ్రీ గోవిందానంద సరస్వతీ స్వామివారి యొక్క వీడియోలు మార్ఫింగ్ చేసి ప్రచారము చేస్తున్న టి.టి.డి మరియు వారి చానల్, మరుయు చైర్మన్, ఈ.ఓ, జే.ఈ.ఓ, కమిటీ లపై క్రిమినల్ కేసు,

14) కొన్ని అంశములు :

“తిరుపతి నకిలీ హనుమత్ జన్మభూమి" పుస్తకం విడుదల,

పుస్తకం లోని విషయములు, ఏవిధముగా ఈ చర్చ అరంభమైనది ?

ఏమి కావిలని, దేని గురించి ఏవిధముగా, తి.తి.దే వారు ఈ చర్చ అరంభిచారు ?

ఏవిధముగా శ్రీ హనుమతుల వారి ఇతిహాసము తిరిగి వ్రాయటము మరియూ తప్పుడు పుస్తకములను ప్రచురణ చేయటం జరిగినది,

ఏవిధముగా, తిరుపతి లో ని పండితులు అధికారులు కు తమ స్వార్ధములకు, పదవులకు అమ్ముడుపోయి ఈ కార్యములో అధికారులు కు సహకరించినారు,

అసలు తి.తి.దే వారికి ఇటువంటి కమిటీలు వేసే అధికారము గాని నిర్ణయాలుతీసుకునే అధికారము గానీ లేవు, అది చట్టవిరుద్ధం,

ఏరకముగా భారత దేశములో ని సమస్త ఆచార్యులు స్పష్టంగా తిరుపతి ని తిరస్కరించారు,

ఏవిధముగా భారత దేశ ప్రభుత్వము, పార్లమెంటులో కూడా తిరుపతి ని తిరస్కరించారు,

ఈ మెత్తం లో తిరుపతి కమిటీ వారి పరాజయము ఇలా అనేక విషయాలతో కలిసి సప్రామాణిక

ఏరకముగా తిరుపతి, కమిటీ వారు వారు వ్రాసే పుస్తకాలు కు జగద్గురువు లు ను సైతం మోసంచేయటానికి చేసిన ప్రక్రియలో, జగద్గురువు లు ఏ రకముగా తి.తి.దే, కమిటీ వారిని, వారి యొక్క కృతులను జగద్గురువు లు సంపూర్ణముగా తిరస్కరించారు,

ఏరకముగా శ్రీ గోవిందానంద సరస్వతీ స్వామి వారు తి.తి.దే వారి తప్పుడు నివేదిక లను, నకిలీ కమిటీ, నకిలీ సృష్టించి న పుస్తకాలు ను నిరాకరించారు, ఖండించి నారు

15) ఈ తిరుపతి నకిలీ హనుమత్ జన్మభూమి విషయంపై సమగ్ర నివేదిక, పుస్తకం, విడుదల,

16) **ప్రామాణిక** " శ్రీ హనుమత్ జన్మభూమి - పంపాక్షేత్ర కిష్కింధా

అంజనాద్రి " స ప్రమాణాలతో పుస్తకము విడుదల...............

అధీకృత కార్యాలయము,

శ్రీ హనుమత్ జన్మభూమి తీర్థ క్షేత్ర ట్రస్ట్ (రి)

By the Order of His Holiness

श्री
विरूपाक्ष,

Office of the Admin & P.S

https://www.youtube.com/watch?v=MdD4It7jo9E&t=675s

https://www.youtube.com/watch?v=MKVqhQLwKGw&t=43s

https://www.facebook.com/10000776840512/videos/1820689374768282/

तिरुपति (आन्ध्र)

HIGH COURT OF ANDHRA PRADESH

AMARAVATI

AP.High court

---

https://www.newindianexpress.com/states/andhra-pradesh/2022/feb/16/dont-build-any-temple-on-anjanadri-andhra-hc-2420073.html

https://timesofindia.indiatimes.com/city/vijayawada/hc-stays-ttds-hanuman-temple-on-anjanadri-hill/articleshow/89602772.cms

TTD had planned a 'bhumi puja' today

▶ **From P 1**

Rambabu further argued that constructing a temple on top of Anjanadri hill is nothing but lowering the prominence of Lord Venkateswara.

The standing counsel for TTD, A Sumanth, told the high court that they are not constructing any new temple on top of Anjanadri hill. The proposed works are for beautification of the hill for tourism development. Considering the arguments on both sides, Justice Nimmagadda Venkateswarlu directed the TTD not to take up any construction works on top of Anjandri hill. However, the court allowed the temple body to go ahead with beautification works.

The TTD was supposed to perform 'bhumi puja' for the development of Hanuman janmabhoomi atop Anjanadri hill on Wednesday. The temple body formed an expert committee last year which declared the place near Tirumala as the birthplace of Lord Hanuman.

However, Kishkinda-based Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust raised objections to the TTD's claims. "Kishkinda in Karnataka is the birthplace of Lord Hanuman and we have the epigraphic evidence to prove it," Govindananda Saraswati, founder trustee of Hanumad trust, said.

HC stays TTD's Hanuman temple on Anjanadri hill

Srikanth Aluri & Sandeep Raghavan | TNN

Vijayawada/Tirupati: The AP high court on Tuesday directed the Tirumala Tirupati Devasthanams (TTD) not to take up any kind of construc-

HC stays TTD's Hanuman temple on Anjanadri hill

Srikanth Aluri & Sandeep Raghavan | TNN

Vijayawada/Tirupati: The AP high court on Tuesday directed the Tirumala Tirupati Devasthanams (TTD) not to take up any kind of construction works, including building of temple, on top of Anjanadri hill near Tirumala.

The court directed the TTD executive officer and the principal secretary to endowments department to file counter affidavits with all details pertaining to the proposed constructions. The high court, however, allowed the TTD to take up beautification works.

One Agraharam Raghavendra along with two others from Kurnool moved the high court challenging the proposed construction being taken up by the TTD on top of Anjanadri hill.

They argued that building a temple atop Anjanadri, which is part of seven hills of Tirumala, is against the Puranas.

Arguing on behalf of the petitioners, K Rambabu told the court that according to the Puranas, human beings are not allowed to consecrate any idols anywhere on seven hills. "The TTD is planning to construct a temple for Lord Hanuman under the presumption that Anjanadri hill is the birthplace of Lord Hanuman. However, there is no scientific evidence or mention in the Puranas to support the claim of the TTD," he argued and sought directions to stop the works which are scheduled to begin on Wednesday.

►Continued on P4

HIGH COURT OF ANDHRA PRADESH AT AMARAVATI

MAIN CASE No: W.P.No.3954 of 2022

PROCEEDING SHEET

Sl. No.	DATE	ORDER	OFFICE NOTE.
01	15.02.2022	**NVL, J** Sri A.Sumanth, learned Standing Counsel appearing for the respondent No.3. Learned Government Pleader for Endowments appearing for respondent Nos.1 and 2. It is contended by the learned Standing Counsel that the 3rd respondent is going to perform bhoomi pooja for beautification of the existing temple and there is no new construction of temple. Hence, this court directed the respondents not to make any civil constructions other than beautification works and the respondents can go ahead to perform bhoomi pooja and beautification works. Post on 21.02.2022 in the motion list. **NVL, J** BSP	

तीसरी किताब-2022,

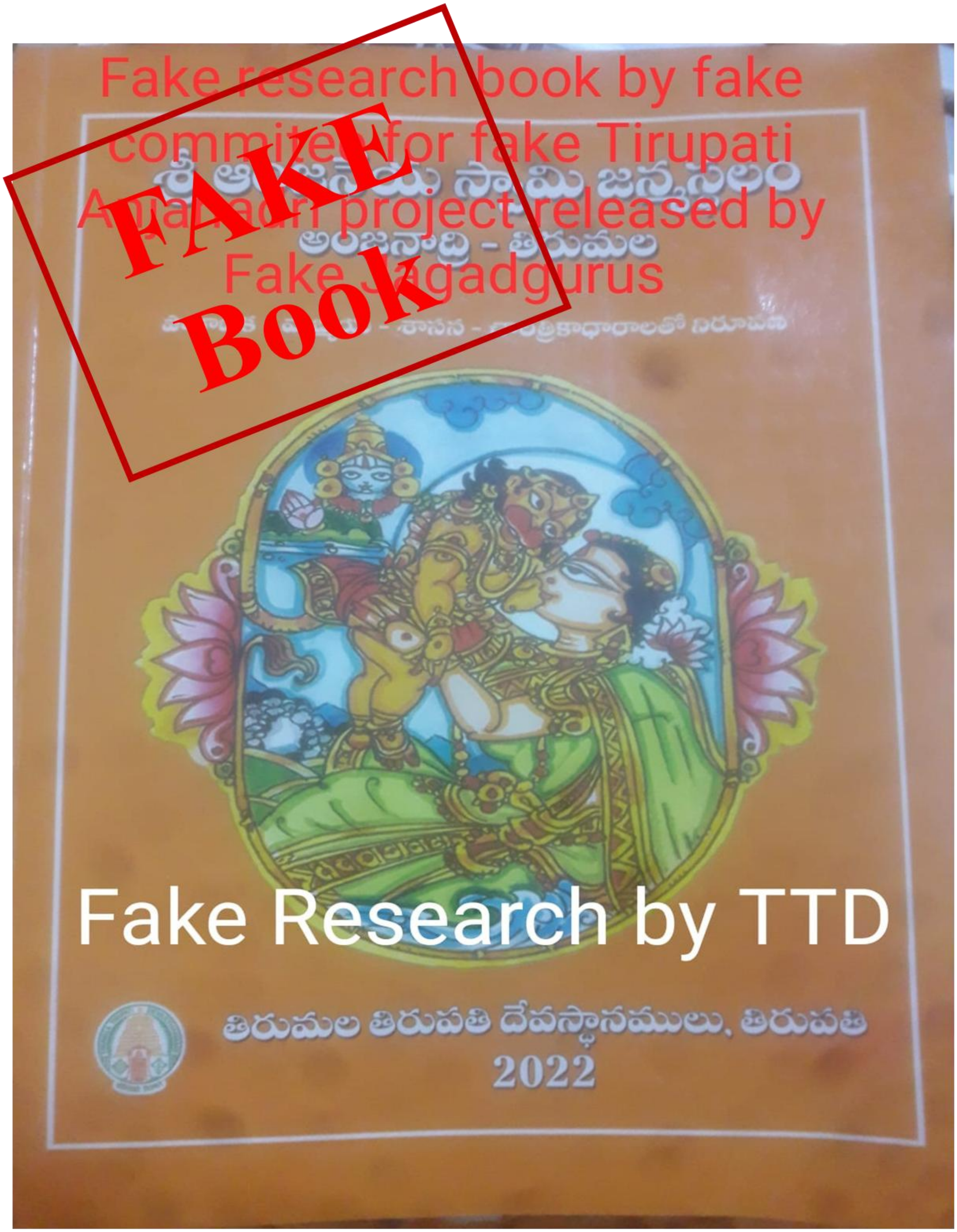
Fake research book by fake
commitee for fake Tirupati
project released by
Fake Jagadgurus
FAKE
Book
Fake Research by TTD
తిరుమల తిరుపతి దేవస్థానములు, తిరుపతి
2022

कृष्णदास संस्कृत सीरीज ४१
॥ श्रीः ॥
ब्रह्माण्ड-महापुराणम्
डॉ. के. वी. शर्मणा संशोधितम्
(तदीयया भूमिकया श्लोकानुक्रमण्या च सहितम्)
चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

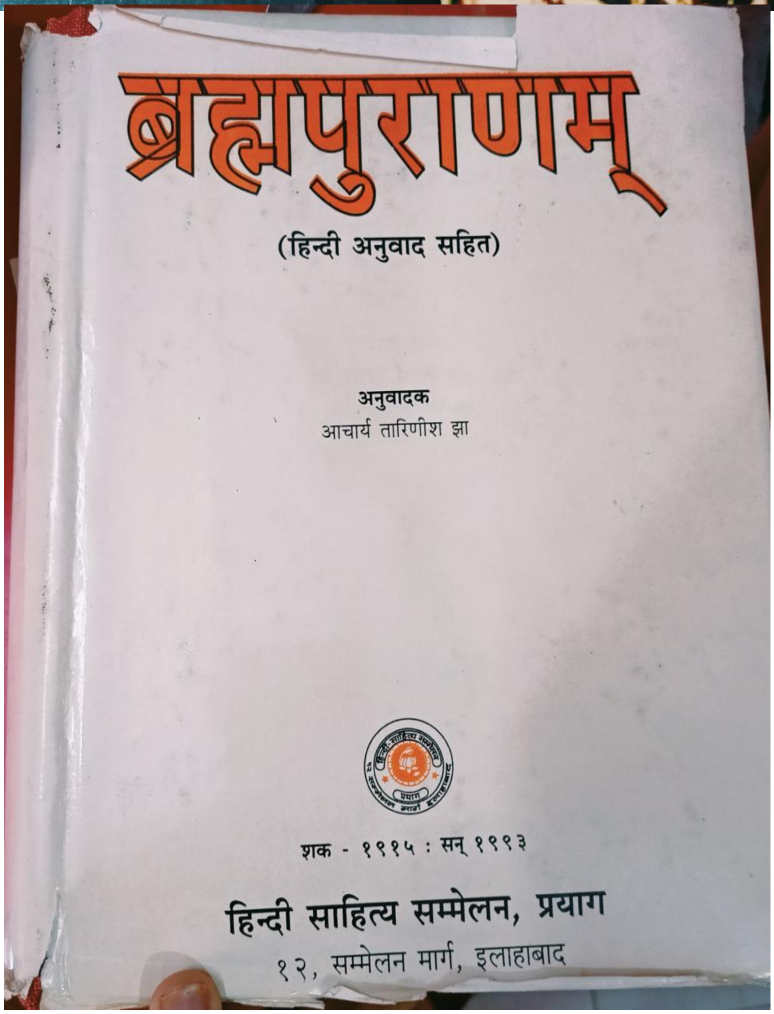
ब्रह्मपुराणम्
(हिन्दी अनुवाद सहित)
अनुवादक
आचार्य तारिणीश झा
शक - १९१५ : सन् १९९३
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
१२, सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद

In the High Court of Judicature for State of Andhra Pradesh

At Amaravathi

I.A.No. of 2022

In

W.P.No. 3954 of 2022

Between:

Agraharam Raghavendra & 2 Ors

...Petitioners

And

State of A.P, Rep by its Prl Secretary Endowments Dept & 2 Ors

COUNTER AFFIDAVIT FILED ON BEHALF OF RESPONDENT NO. 3

I, Dr.K.S.Jawahar Reddy IAS, s/o Late Sri K.S.Eashwar Reddy, aged about 57 years, Occ: Executive Officer, T.T.Devasthanams, do hereby solemnly affirm and sincerely state on oath as under that

TTD Counter Affidavit in A.P High Court

15

doubts arising in the minds of people about birth places of Lord Hanuman.

39. Since TTD believe the evidences, it is the duty of TTD to bring it to the notice of devotees that Lord Hanuman was born at Anjanadri in Tirumala in Treta Yuga. TTD never objected nor filed any legal cases against other places where people are believing that those places are birthplaces of Lord Hanuman. TTD is not forcing public to accept these evidences. The people who are convinced with the evidences can come for darshan of Sri Balanjaneya swamy. In fact, it should be left to the wisdom of devotees either to believe or disbelieve the evidences and decide to have darshan of Sri Bala Anjaneya swamy at Akasa Ganga.

40. It is also submitted that TTD also accepts the fact that Anjanadri in Tirumala is the birth place of Lord Hanuman and Kishkinda is the work place of Lord Hanuman as he served as Minister to Sugriva, the King of Kishkindha. Hence, both places are closely connected to Lord Hanuman. Devotees visiting these two places are always blessed by Lord Hanuman. Hence, it is left to the pilgrims to decide to have darshan of Lord Hanuman at any place as per their wish and will.

TTD Counter Affidavit in A.P High Court

तिरुपरि कमेटी, टि.टि.डि ई.ओ अन्ध्र हैकोर्ट मे समर्पिति किया गया अफडिबिट्,

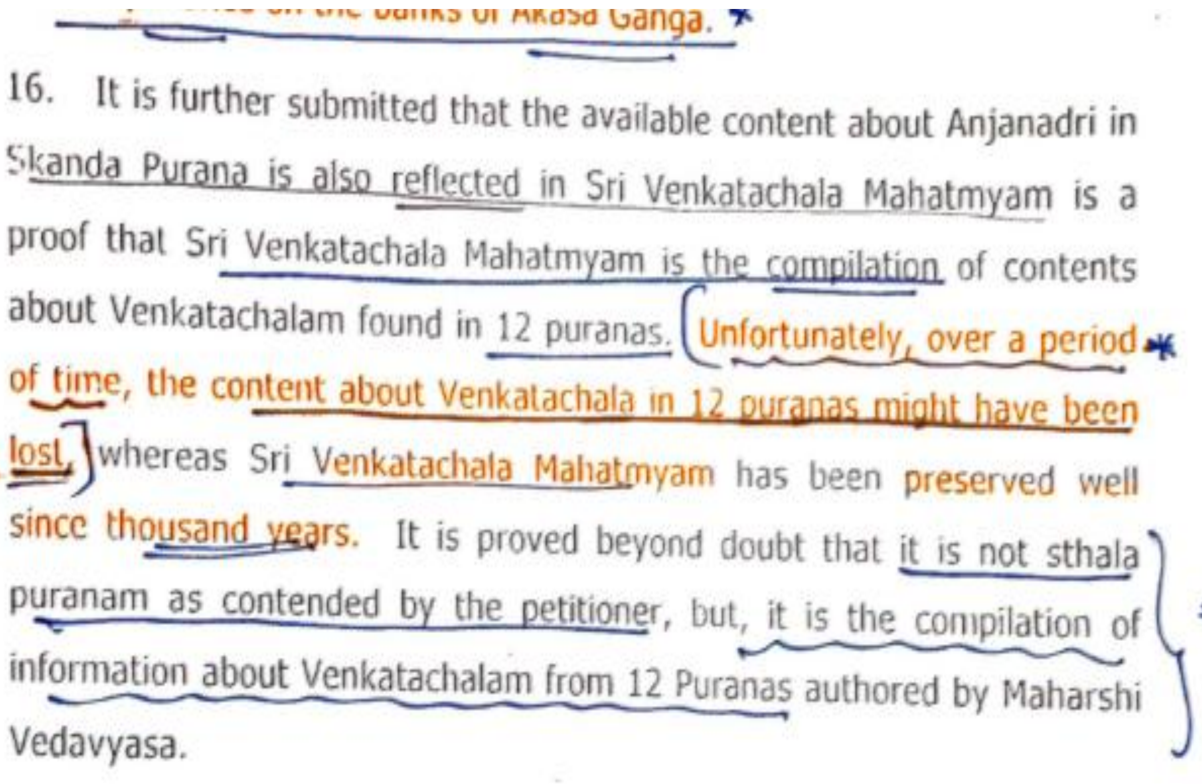

...on the banks of Akasa Ganga.

16. It is further submitted that the available content about Anjanadri in Skanda Purana is also reflected in Sri Venkatachala Mahatmyam is a proof that Sri Venkatachala Mahatmyam is the compilation of contents about Venkatachalam found in 12 puranas. Unfortunately, over a period of time, the content about Venkatachala in 12 puranas might have been lost, whereas Sri Venkatachala Mahatmyam has been preserved well since thousand years. It is proved beyond doubt that it is not sthala puranam as contended by the petitioner, but, it is the compilation of information about Venkatachalam from 12 Puranas authored by Maharshi Vedavyasa.

टि.टि.डि वाले येभी कहते है कि श्री राम जी किष्किन्धा से लंका जानेके समय और वहा से सीता माता जी के साथ फिर अयोध्या जाने के समय पुष्पक विमान में तिरुपति आये

यह भी असत्य है ऐसा कही भी उल्लेख नहीं हैं

श्री मद् वाल्मीकि रामायण में स्पष्ट लिखा है कि "श्री राम भगवान् ने किष्किंधा से लंका जाने के मार्ग और लंका से किष्किंधा होते हुए अयोध्या आने वाले मार्ग तक"
यहा संपूर्ण रामायण में तीन काण्ड सुंदर काण्ड /किष्किंधा काण्ड / युद्ध

काण्ड मे कही भी ऐसा उल्लेख नहीं है कि श्री राम जी "तिरुपति"/ वेंङ्कटाचल" गये यहा किष्किंधा का ही सब जगह उल्लेख है

वा.रा यु.सर्ग १२५, १२६ ॥ १२५,१२६,१२७
एषा सा दृश्यते सीते ! किष्किंधा चित्र कानना ।
सुग्रीवस्य पुरी रम्यायत्र वाली मया हत: १९
एवम् उत्कोऽथ वैदेह्या: राघव: प्रत्युवाच ताम्।
एवमस्त्विति किष्किंधा प्राप्य संस्थाप्य राघव: ॥
विमानं प्रेक्ष्य सुग्रीवं वाक्यमेतदुवाच ह । २२
एषा सा दृश्यतेऽयोद्या राजधानी पितुर्मम ।
अयोध्यां कुरु वैदेहि ! प्रणामं पुनरागत ॥ ५२

श्री गोविंदानन्द स्वामी जी द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देने में टि.टि.डि कमेटी पूरी तरह विफल रहे,

अंतिम परिणाम - टि.टि.डि के चैयरमेन ने (19 जून, 2021)- टीटीडी बोर्ड की बैठक में) खुद गल्लत् की घोषणा की और स्वीकार किया कि वे भविष्य में इस तरह गल्लत् कार्यक्रम, घोषणा, चर्चा, इत्यादि नहीं करेंगे,

भारत मे सनातन वैदिक धर्म आचार्यों ने भी टि.टि.डि कमेटी को निराकरण किया, भारत सरकार ने भी संसद में टि.टि.डि के विचारों को खारिज किया,

अब टि.टि.डि कमेटी के हारने पर
श्री हनुमद जन्मभूमि ट्रस्ट विजय उत्सव मना रहा है, इस संदर्भ में आज
"स्वस्ति श्री प्लव नाम सं आश्वीयुज शुक्ल दशमी '15-10-2021'
श्री हनुमद् जन्मभूमि अञ्जनाद्रि पर्व पर पुस्तक विमोचन

स्थल : श्री हनुमान जन्मभूमि किष्किन्धा,

जय विरूपाक्ष – जय श्रीराम – जय हनुमान

हनुमद् जन्मभूमि श्री किष्किंधा हनुमान कि जय हो

तिरुपति कमिटी “मेरु पर्वत” खणनम्,

तमतिक्रम्य शैलेन्द्रं महेन्द्रपरिपालितम् ।
षष्टिं गिरिसहस्राणि काञ्चनानि गमिष्यथ ।। 4.42.34 ।।

तरुणादित्यवर्णानि भ्राजमानानि सर्वतः ।
जातरूपमयैवृक्षैः शोभितानि सुपुष्पितैः ।। 4.42.35 ।।

तेषां मध्ये स्थितो राजा मेरुरुत्तरपर्वतः ।
आदित्येन प्रसन्नेन शैलो दत्तवरः पुरा ।। 4.42.36 ।।
विश्वेदेवाश्च मरुतो वसवश्च दिवौकसः ।
आगम्य पश्चिमां सन्ध्यां मेरुमुत्तरपर्वतम् ।। 4.42.39 ।।

आदिच्यमुपतिष्ठन्ति तैश्च सुर्यो ऽभिपूजितः ।
अदृश्यः सर्वभूतानामस्तं गच्छति पर्वतम् ।। 4.42.40 ।।

योजनानां सहस्राणि दश तानि दिवाकरः ।
मुहूर्तार्धेन तं शीघ्रमभियाति शिलोच्चयम् ।। 4.42.41 ।।

शृङ्गे तस्य महद्दिव्यं भवनं सूर्यसन्निभम् ।
प्रासादगणसम्बाधं विहितं विश्वकर्मणा ।। 4.42.42 ।।

टि.टि.डि कमेटी का निराकरण : हमने टि.टि.डि के शोध सामग्री का विश्लेषण किया जो टि.टि.डि साबित करना चाहता था कि भगवान हनुमान ने तिरुपति में जन्म लिया था लेकिन अंत में निराधार और झूठा निकला, भगवान हनुमान ने तिरुपति में जन्म नहीं लिया

తిరుమల హనుమంతుని జన్మస్థలమని..

నిరూపిస్తే రూ.5 లక్షల బహుమతి

హనుమ జన్మభూమి తీర్థ క్షేత్ర ట్రస్ట్ వ్యవస్థాపకులు గోవిందానంద సరస్వతి స్వామి టిటిడి సవాల్

తిరుపతి - ఆంధ్రనాడు

తిరుమలలోని అంజనాద్రి హనుమంతుని జన్మస్థలమని నిరూపిస్తే రూ.5 లక్షల నగదు బహుమతి అందిస్తానని హనుమ జన్మభూమి తీర్థ క్షేత్ర ట్రస్ట్ వ్యవస్థాపకులు గోవిందానంద సరస్వతి స్వామి పేర్కొన్నారు. ఎక్కడైనా కనీస ఆధారాలు ఉన్నట్లు చూపెట్టినా వారు బహుమతికి అర్హులేనని అన్నారు. కర్ణాటక లోని కిష్కింద ప్రాంతం హనుమంతుని జన్మస్థలమని, ఆయన త్రేతాయుగంలో పుట్టినట్లు వాల్మీకి రామాయణంలో ఉందని గట్టిగా వాదనలు వినిపిస్తున్నారు. ఇటీవల కాలంలో తిరుమలలోని అంజనాద్రి హనుమంతుని జన్మస్థానం అని టిటిడి అంటున్న నేపథ్యంలో దీన్ని ఆయన వ్యతిరేకిస్తున్నారు. ఈ మేరకే హై కోర్టును ఆశ్రయించారు. యథాతథ స్థితిని కొనసాగించాలన్న కోర్టు ఆదేశించింది. ఈ క్రమంలోనే గత వారం టిటిడి ఆకాశ గంగ ప్రాంతంలో భూమి పూజ చేసిన నేపథ్యంలో కోర్టు ధిక్కరణ వాజ్యం కూడా దాఖలు చేస్తామని అంటున్న ఆయన మాటలు యథాతథంగా ఆంధ్ర నాడు పాఠకుల కోసం............

సనాతన ధర్మాన్ని, హనుమంతుని ఇతిహాసాన్ని కాపాడుకోవడానికే.. పాటు పడుతున్నాం.. మమల్ని అడ్డుకుంటున్నారు...

హనుమంతుల వారు కర్ణాటకలోని కిష్కింద ప్రాంతంలోని పంపా క్షేత్రంలో అంజనాద్రి సరోవరంలో అంజనీ దేవికి జన్మించినట్లు వాల్మీకి రామాయణంలో రాయబడింది. ఆయన పుట్టిన తిథి చైత్ర శుక్ల పూర్ణిమ అని ఆనంద రామాయణంలో పేర్కొన్నారు. కానీ టిటిడి వ్యాపార ధోరణితో సనాతన ధర్మాన్ని, ఇతిహాసాలను వక్రీకరిస్తోంది. హనుమంతుడు జన్మించింది తొలుత జాపాలి అని, తరువాత ఆకాశ గంగ ప్రాంతంలోకి మార్చి ఇష్టం వచ్చినట్లు వ్యవహరిస్తున్నారు. అలాగే ఆయన జన్మ తిథిని మొదట శ్రావణ మాసంలో, తరువాత వైశాఖంలో నిర్వహిస్తున్నారు. ఇటీవలే టిటిడి హనుమంతుని పై ఓ పుస్తకాన్ని ప్రచురించిందని, అది పూర్తిగా తప్పులు తడకలుగా ఉంది. ఆయన రెండు చోట్ల పుట్టినట్లు శాశనాలు ఉన్నాయని, ఆయన తండ్రి ఓ రాక్షసుడని, ఆయనకు పెళ్లి జరిగిందని అందులో

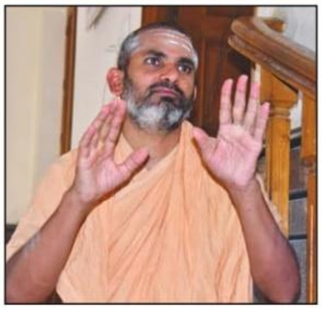

పొందుపరిచారు. ఏకంగా హనుమంతుని ఇతిహాసాన్ని వక్రీకరిస్తే మేమెలా మౌనంగా ఉంటాము. దీన్ని ప్రశ్నించిన మమల్ని అడ్డుకుంటున్నారు. కనీసం తిరుపతిలో ఉండటానికి కూడా లేకుండా అడ్డంకులు సృష్టిస్తున్నారు. హనుమంతుల వారు లంకలోకి వెళ్ళినపుడు కలిగిన స్థితి.. ఇప్పుడు మాకు కలుగుతోంది.

జీయర్ల వ్యవస్థను నాశనం చేసి, ఇస్రో పేరును దుర్వినియోగం చేశారు

ఆకాశ గంగ ప్రాంతంలో టిటిడి హనుమంతుని పేరుతో భూమి పూజ నిర్వహించింది. దానికి సుందరీకరణ అని పేరు పెట్టింది. తిరుమల క్షేత్రంలో ఎలాంటి దైవ కార్యక్రమంలోనైనా జీయర్ల పాత్ర ఉండాల్సిందే. అలాంటిది భూమి పూజ కోసం

తరువాయి (2లో)

తిరుమల హనుమంతుని జన్మస్థలమని..

నిరూపిస్తే రూ.5 లక్షల బహుమతి

(మొదటి పేజీ తరువాయి)

వారిని పక్కన పెట్టారు. కేవలం ఉద్యోగులే ఈ దైవ కార్యక్రమం నిర్వహించి జీయర్ల వ్యవస్థను నాశనం చేశారు. ఈ కార్యక్రమానికి శ్రీ వైష్ణవులెవ్వరూ రాలేదు. కంచి స్వాముల వారు గైరుహాజరయ్యారు. దీనికి తోడు ఇతిహాసాలను వక్రీకరించడానికి ఇస్రో పేరును దుర్వినియోగం చేస్తున్నారు. లభ్యమైన అన్ని ఆధారాలను పరిశీలించిన ఎపిగ్రిటీ విభాగం వారు కూడా తిరుమల హనుమత్ జన్మస్థానం అనడానికి ఆధారాలు లేవని నివేదిక ఇచ్చారన్నారు.

కిష్కిందలో హనుమ దేవాలయ నిర్మాణానికి సంపూర్ణ భారత రథ యాత్ర నిర్వహిస్తాం

కర్ణాటక ప్రాంతంలోని కిష్కింద పర్వతంపై పంపా నది క్షేత్రంలో అంజనాద్రి సరోవరం హనుమంతుని జన్మ స్థలమని పురాణ ఇతిహాసాలలో లభ్యమైనా కూడా, టిటిడి తిరుమల క్షేత్రంలోని అంజనాద్రి కొండ ఆయన పుట్టారని ఇతిహాసాలను అపహాస్యం చేస్తున్నారు. దీన్ని మేము చూస్తూ ఊరుకోము. కిష్కిందలో హనుమ దేవాలయం నిర్మిస్తాం. దీనికోసమే సంపూర్ణ భారతదేశ రథయాత్ర నిర్వహిస్తాం. రథంలో కిష్కింద హనుమత్ సమేత సీతారాముల ఉత్సవ విగ్రహాలు ఊరేగిస్తాం. దేశంలోని ప్రతి గ్రామానికీ వెళతాం. టిటిడి చర్యలు దైవ ద్రోహమని భారతీయులందరికీ తెలియ జేస్తాం. ఇందు కోసం 12 సంవత్సరాల ప్రణాళిక రూపొందించాం. ఆరు నూరైనా హనుమ దేవాలయం నిర్మిస్తాం. ఈ కార్యక్రమాన్ని లాంఛనంగా త్వరలోనే ప్రారంభిస్తాం. అందు కోసం జీయర్లను కిష్కింధకు ఆహ్వానించాం.

టిటిడి కోర్టు ధిక్కరణకు పాల్పడింది... దీన్ని కోర్టులోనే సవాల్ చేస్తాం...

హనుమంతుని జన్మస్థానం తిరుమల క్షేత్రం కాదని మేము కోర్టును ఆశ్రయించాము. ఈ మేరకు కోర్టు ఇచ్చిన ఆదేశాలను మేము స్వాగతించాము. అయితే టిటిడి కోర్టు ఆదేశాలు పాటించడం లేదు. వ్యాపార ధోరణితో వ్యవహరిస్తూ ఇతిహాసాలను, పురాణాలను వక్రీకరి స్తున్నారు. హనుమంతుని పేరుపై పటిష్ట నిర్మాణాలకు భూమి పూజ సైతం చేసింది. అయితే సుందరీకరణ మాత్రమే నిర్వహిస్తామని కోర్టుకు తెలిపిన టిటిడి కోర్టు ఆదేశాలను కూడా ధిక్కరణకు పాల్పడింది. దీన్ని కూడా మేము కోర్టులోనే సవాల్ చేస్తాం.

హనుమంతుని జన్మ స్థానం పై టిటిడి తగిన ఆధారాలను చూపెట్టకుండా చేస్తున్న కార్యక్రమాలను తిరుపతికి వచ్చి శాంతి యుతంగా వ్యతిరేకిస్తుంటే పోలీసులు, నిఘా విభాగాల అధికారులతో కలిసి తమను అడ్డుకుంటున్నారని గోవిందానంద సరస్వతి స్వామి ఆరోపించారు. ఆశ్రయం కల్పించిన వారిని బెదిరిస్తున్నారని విమర్శించారు. ఎన్ని అడ్డంకులు సృష్టించినా కిష్కిందే జన్మస్థానమని నిరూపిస్తామని సవాల్ చేశారు.

టిటిడి పదేపదే తిరుమలలో శాసనాధారాలు ఉన్నా యంటూ భక్తులను మభ్య పెడుతోందని అన్నారు. అలా ఉంటే బహిరంగంగా చూపించవచ్చు కదాని ప్రశ్నిం చారు. ఎవరైనా సరే తిరుమల క్షేత్రంలోని అంజనాద్రి హను మంతుని జన్మ స్థానమని ఆదారాతో నిరూపిస్తే రూ.5 లక్షల బహుమానం ఇస్తామని ప్రకటిచారు. తగిన ఆధా రాలతో 8762711113 నెంబరుకు ఫోన్ చేయాలని సూచించారు.

Conclusion

అన్నిరకాలుగా తిరుపతి కమిటీ వారు సంపూర్ణముగా పరాజయమును పొందినారు,

గత ౨ సంవత్సరముల నుండి, నిరంతరముగా తప్పుడు సాక్ష్యాలతో తప్పుడు (3 సార్లు మార్చి) నివేదికలతో తిరుపతి లో శ్రీ హనుమంతులవారి జన్మస్థలమని నిరూపించటానికి చాలా ప్రయత్నములు చేసారు కానీ సర్వవిధములా పరాజితులైనారు ,

చివ్వరకు ఏమి నిర్ణయము ఐనది అనగా !, అది మేము చెప్పే కంటే టి.టి.డి వారే చెబితే బావుంటుంది,

టి.టి.డి వారి యొక్క అధర్మాన్ని చూసి, వారిని కట్టడి చేయటకు హైకోర్ట్ లో కేసు వేయబడినది,

తిరుపతి కమిటీ వారిని కోర్ట్ మూలకముగా ప్రశ్నించటము జరిగినది,

దానికి ఇంక ఏమి చేయాలో తెలియక చెవ్వరికి కోర్ట్ లో టి.టి.డి ఏమి చెప్పారో మీరే చూడండి

,

ఇది సాక్షాత్ తిరుపతి ఈ.ఓ ఆంధ్రా హైకోర్ట్ లో సమర్పించిన అధికారిక అఫడవిట్

All india Yatra Started from Tirupati

After TTD losed the debeate then SHJBTKT announced their victory and contiuned the all india Yatra,

15

doubts arising in the minds of people about birth places of Lord Hanuman.

39. Since TTD believe the evidences, it is the duty of TTD to bring it to the notice of devotees that Lord Hanuman was born at Anjanadri in Tirumala in Treta Yuga. TTD never objected nor filed any legal cases against other places where people are believing that those places are birthplaces of Lord Hanuman. TTD is not forcing public to accept these evidences. The people who are convinced with the evidences can come for darshan of Sri Balanjaneya swamy. In fact, it should be left to the wisdom of devotees either to believe or disbelieve the evidences and decide to have darshan of Sri Bala Anjaneya swamy at Akasa Ganga.

40. It is also submitted that TTD also accepts the fact that Anjanadri in Tirumala is the birth place of Lord Hanuman and Kishkinda is the work place of Lord Hanuman as he served as Minister to Sugriva, the King of Kishkindha. Hence, both places are closely connected to Lord Hanuman. Devotees visiting these two places are always blessed by Lord Hanuman. Hence, it is left to the pilgrims to decide to have darshan of Lord Hanuman at any place as per their wish and will.

41. Writ Petition filed by the petitioners by invoking extraordinary jurisdiction of this Hon'ble Court is not maintainable. There are no merits in the contention of petitioners. Petitioners approached this Hon'ble Court with false and frivolous allegations. Hence, the same is liable to be dismissed with exemplary costs.

42. It is also submitted that in ecclesiastical and religious matters, it is the principle of law that the Hon'ble Courts would refrain to interfere, as it involves disputed questions of facts. On that sole ground alone, this Writ Petition is liable to be dismissed *in limini*. It may also be appreciated that after this Respondent has come out with the publication in relation to the birth place of Lord Hanuman, the Petitioner did not do anything and he did not raise any objections. The said publication of this Respondent is in public domain. For the first time, by way of the present Writ Petition many things are being alleged. It may also be appreciated by this Hon'ble Court that the Civil or Secular rights of the public in general or of the Petitioners' in particular are being affected by the actions of this Respondent. It is also not known, barring the assertion of the Petitioner, whether he is a "person interested", as defined under the Endowments

[illegible]LADUGU KRISHNA MOHAN
ADVOCATE
[illegible] No: 502, Sai Classic Apartments
CURRENCY NAGAR

[illegible]
[illegible] DEVASTHANAMS
TIRUPATHI

After TTD losed the debeate then SHJBTKT announced their victory and contiuned the all india Yatra,

ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ - ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಅಂಜನಾದ್ರಿ - ವಿಜಯೋತ್ಸವ

ತಿರುಪತಿ(ಟಿ.ಟಿ.ಡಿ) ಅವರ ಘೋರ ಪರಾಜಯ - ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಅವರ ದಿಗ್ವಿಜಯ

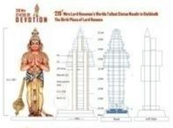

ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ವೈಭವ ಭಕ್ತಿಯಾತ್ರೆ ೨ ತಿಂಗಳು, ೨೪ ಜೂಲೈ ದಿಂದ ೨೦ ಸೆಪ್ಟೆಂಬರ್ ವರೆಗೂ ಸಂಪೂರ್ಣ ಬೆಂಗುಳೂರು ಮಹಾನಗರದಲ್ಲಿ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ರಥ ಯಾತ್ರೆ

ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರ – ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಜೀರ್ಣೋದ್ಧಾರ ಪುನರ್ವೈಭವ ಮಹಾಕಾರ್ಯ

ಶ್ರೀ ರಾಮದೂತ ಶ್ರೀ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಪುಣ್ಯಭೂಮಿದಲ್ಲಿ ತುಂಗಭದ್ರಾ ನದೀ, ಪಂಪಾಸರೋವರ ತಟದಲ್ಲಿ ಪವನ ಸುತ, ಅಂಜನಾ ಪುತ್ರ ಶ್ರೀ ಹನುಮಂತನ 215 ಮೀಟರ್ ದಿವ್ಯ ವಿಗ್ರಹ, ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಮಂದಿರ ನಿರ್ಮಾಣವು

೩೧ ಕೋಟಿ ವರ್ಷಗಳ ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ ಪೌರಾಣಿಕ,ರ್ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ, ನಾಗರಿಕತೆಗಳಿಗೆ ಐತಿಹಾಸಿಕ ಮಹಾಸಾಮ್ರಾಜ್ಯಗಳ ಐತಿಹಾಸಿಕ ರಾಜಧಾನಿಯಾಗಿ ಭವ್ಯ ಚರಿತ್ರ ಉಳ್ಳ ಈ ದಿವ್ಯ ಭೂಮಿ ಶ್ರೀ ಪಂಪಾವಿರೂಪಾಕ್ಷ ದೇವರು ನೆಲಿಸಿದಂತಹ ಪುಣ್ಯ ಭೂಮಿ ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರವಾಗಿ ಸಪ್ತಋಷಿಗಳ ಸಾನ್ನಿಧ್ಯದಿಂದ, ಸತ್ಯಸಂಧ ನಾದ ಸತ್ಯಹರಿಶ್ಚಂದ್ರನ, ತ್ರೇತಾಯುಗದಲ್ಲಿ ದರ್ಮಮೂರ್ತಿ ಆದ ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ ನಡೆಯಾಡಿ ಧರ್ಮಸಾಮ್ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಸ್ಥಾಪಿಸಿದ ಧರ್ಮ ಭೂಮಿಯಾಗಿ, ಶ್ರೀ ಜಾಂಬವಂತ, ಸುಗ್ರೀವ, ಶ್ರೀ ಹನುಮ, ಅಂಗದಾದಿ ಮಹಾಭಾಗವತರ ಜನ್ಮಸ್ಥಲವಾಗಿ ಹೇಮಕೂಟ, ಅಂಜನಾದ್ರಿ, ಋಷ್ಯಮೂಕ, ಮಾತಂಗ, ಗಂಧಮಾದನ ಪರ್ವತಗಳ ಪವಿತ್ರ "ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯ" ಭಕ್ತಿಭೂಮಿ ಆಗಿ ದ್ವಾಪರಯುಗದಲ್ಲಿ ಪಂಚಪಾಂಡವರನ್ನು ಪುನೀತಗೊಳಿಸಿದ ಪುಣ್ಯಭೂಮಿ ಆಗಿ ಕಲಿಯುಗದಲ್ಲಿ ಭಗವಾನ್ ವೇದವ್ಯಾಸರ, ಶ್ರೀ ವಿದ್ಯಾರಣ್ಯರ ವಿದ್ಯಾ, ವಿಜಯನಗರ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯ ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ ಭೂಮಿ ಆಗಿ , ಶ್ರೀ ಕಷ್ಣದೇವರಾಯರ ಕರ್ಮ ಭೂಮಿಯಾಗಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಹೊಂದಿದ ಈ ಪವಿತ್ರಕ್ಷೇತ್ರವು ಪ್ರಸ್ತುತ ಕಲಿಯುಗ ಪ್ರಭಾವದಿಂದ ಕಣ್ಮರೆಯಾಗಿರುವ ಪೂರ್ವವೈಭವವನ್ನು ಭಗವಂತನ ಪ್ರೇರಣಾ, ಸಂಕಲ್ಪಗಳಿಂದ ಭವಬಂಧನಗಳಿಂದ ಮುಕ್ತಿಯನ್ನು ಅನುಗ್ರಹಿಸುವ ಭಗವಂತನೇ ಲಕ್ಷ್ಯವಾಗಿ, ಅದರ ಸಾಧನೆ ಭಕ್ತಿಯಾಗಿ ಮಹಾಭಾಗವತರ ನಡೆದಿರುವ ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಸಮಸ್ತ ಭಗವದ್ಭಕ್ತರಗಾಗಿ ಭಗವಂತನೆಯಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾಗಿ ತನ್ನ ೩೧ ಕೋಟಿ ವರ್ಷಗಳ ಪೂರ್ವ ವೈಭವವನ್ನು ಮತ್ತೆ ಹಿಂತರಲು ಈ ೩೧ ಕೋಟಿ ಸಂ|| ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರ ೧೭ ಸಂ|| ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯ ೬೦೦ ಸಂ|| ವಿದ್ಯಾ, ವಿಜಯನಗರ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯ ರಾಜಧಾನಿ ಆದಈ ಪಾವನ ಪುಣ್ಯ ಭೂಮಿ ಯ ಜೀರ್ಣೋದ್ಧಾರ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮವು ಆ ಪರಮಾತ್ಮನ ಪ್ರೇರಣೆಯಿಂದ ಜಗದ್ಗುರುಗಳವರ ಆಶೀರ್ವಾದದಿಂದ ಪರಮಪೂಜ್ಯ ಶ್ರೀ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತೀ ಸ್ವಾಮಿಗಳವರ ಮಾರ್ಗದರ್ಶನದಲ್ಲಿ ೧೫ ಸಂ ಹಿಂದೆ ಆರಂಭವಾಗಿ **ಶ್ರೀ ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರ – ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಜೀರ್ಣೋದ್ಧಾರ ಪುನರ್ವೈಭವ ಮಹಾಕಾರ್ಯ** ತ್ರೇತಾಯುಗದಲ್ಲಿ ಯಾವಧರ್ಮ ಮೂರ್ತಿ ಧರ್ಮ ಸ್ಥಾಪನೆಕ್ಕಾಗಿ ಅಯೋಧ್ಯೆಯಿಂದ ಕಿಷ್ಕಿಂದೆ ಗೆ ಬಂದು ಜಾಂಬವಂತ, ವಾಲಿ,ಸುಗ್ರೀವ, ಹನುಮಂತ, ಅಂಗದ ಶಬರೀ ಇತ್ಯಾದಿ ಮಹಾಭಾಗವತರನ್ನು ಉದ್ಧರಿಸಿ ಅವರ ಪ್ರಿಯವಾದ ಶ್ರೀ ಹನುಮಂತರನ್ನು ಚಿರಂಜೀವಿ ಯಾಗಿ, ಭವಿಷ್ಯದ್ ಬ್ರಹ್ಮ ಯಾಗಿ ಅನುಗ್ರಹಿಸಿದ ಶ್ರೀ ರಾಮದೂತನಾದ ಶ್ರೀ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳವಾದ ಈ ಪುಣ್ಯಭೂಮಿದಲ್ಲಿ ತುಂಗಭದ್ರಾ ನದೀ, ಪಂಪಾಸರೋವರ ತಟದಲ್ಲಿ ಪವನ ಸುತ, ಅಂಜನಾ ಪುತ್ರ ಶ್ರೀ ಹನುಮಂತನ 215 **ಮೀ ಭಕ್ತಿ ವೈಭವ** ವಿಗ್ರಹ ನಿರ್ಮಾಣವು ಭವಿಷ್ಯದ್ ಬ್ರಹ್ಮಗೆ ಭಗವಂತನ ಸ್ಫುರಣೆಯಿಂದ ಭಾಗವತ ಭಕ್ತಾದಿಗಳ ಭಕ್ತಿದಿಂದ ಅರ್ಪಿಸುವ ಭಕ್ತಿ ಪುಷ್ಪಾಂಜಲಿ ತದಂಗ ಸಂಪೂರ್ಣ ಭಾರತ ೧೨ ವರ್ಷ, ನಮ್ಮ ಬೆಂಗುಳೂರು ಮಹನಗರದಲ್ಲಿ ೨ ತಿಂಗಳು, **ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ರಥ ಯಾತ್ರೆ**

శ్రీ హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్ట్ (రి) పంపాక్షేత్రము – కిషింధా

(శ్రీ ప్లవనామ సం.ఆశ్వీయుజ దశమీ విజయదశమి – 15, అక్టోబర్ 2012)

12 సంవత్సరముల శ్రీ హనుమద్ జన్మభూమి కిష్కింధా రథ యాత్ర లో

మొదటి సంవత్సరము ముఖ్య విషయములు, నివేదిక

1. శ్రీ హనుమద్ జన్మభూమి కిష్కింధ లో నిర్మించబోవు హనుమద జన్మభూమి మందిరము నకు విజయదశమి పర్వదినమున నన్దా, **భద్రా**, జయా రిక్తా శిలలకు పంపాక్షేత్ర కిష్కింధా స్వర్ణహంపి యందు శోభాయాత్ర, మరియూ శిలాన్యాసము కార్యము సంపన్నము (11 -03-2021)
2. అయోధ్య లో శ్రీ హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్ట్ కార్యాలయము ఉద్ఘాటన ,
3. హరిద్వార్ లో మహాకుంభములో శ్రీ హనుమద్ జన్మభూమి కిష్కింధ రథము ఉద్ఘాటన , శోభాయాత్ర,
4. అయోధ్య లో శ్రీ హనుమద్ జన్మభూమి కిష్కింధ రథానికి విశేష పూజ ఉత్సవ మూర్తులకు శ్రీరామనవమి రోజున శ్రీ రామ జన్మభూమి ప్రధాన అర్చకులచే చర ప్రతిష్ఠ, అయోధ్య లో కిష్కింధా తరపున శ్రీ రామనవమి మహోత్సవము ఆచరణ,

   శ్రీ రామజన్మభూమి లో గర్భ గృహమునందు విరాజమైన శ్రీరామ, భరత,లక్ష్మణ,శతృఘ్నులకు రజత యజ్ఞోపవీతములు, శ్రీ బాలరాములవారికి రజత ధనుష్య సమర్పణము,
5. అయోధ్య నుండి కిష్కింధ కు అయోధ్యా శ్రీరాముల వారి పాదుకలు శ్రీ హనుమద్ జన్మభూమి కిష్కింధా **అంజనాద్రి** పై గర్భగృహము లో మహా **శివరాత్రి** పర్వదినములో ప్రతిష్ఠ,
6. పంపాక్షేత్రము లో హనుమద్ జన్మభూమి శ్రీ కిష్కింధా రథము ఉద్ఘాటన ,
7. శ్రీ హనుమద్ జన్మభూమి విషయములో తిరుపతి వారు చేస్తున్న అవైదిక కార్యక్రములను ఖండిస్తూ పత్రము

8. శ్రీ గోవిందానంద సరస్వతీ స్వామివారిచే తిరుపతి కమిటీ కి సవాలు , ఖండనా పత్రము, మరియు తిరుపతిలో శాస్త్ర సభా తిరుపతి కమిటీ పండితులతో ఈ విషయముపై చర్చ

9. శ్రీ హనుమద్ జన్మభూమి విషయములో తిరుపతి కమిటీ వారి ఘోర పరాజయము కిష్కింధా వారి విజయము, హనుమద్ జన్మభూమి ట్రస్ట్ సప్రమాణములుతో రెండుసార్లు తిరుపతి యందే ప్రెస్ మీట్,

10. వివిధ శ్రీ జగద్గురు శంకరాచార్య , శ్రీ రామానుజ, శ్రీ మధ్వ పరంపరా ఆచార్యుల సాన్నిధ్యంలో శాస్త్ర పరిషత్ లో హనుమద్ జన్మభూమి ట్రస్ట్ ప్రతిపాదన త్రిమతస్థ ఆచార్యులు ఏక ముక్త కంఠముతో పంపాక్షేత్ర కిష్కింధా **అంజనాద్రి** పర్వతమే శ్రీ హనుమంతుని జన్మస్థలమని నిర్ధారణ,

11. రెండు రాష్ట్రములలోని , భారత దేశములోని మరియూ సమస్త భక్తులను తప్పుదారి పట్టిస్తూ శ్రీ హనుమంతులవారి భవ్య చరిత్రను వక్రీకరించిన టి.టి.డి వారిపై వారి నివేదికలపై కేంద్రము, వివిధ యంత్రాంగములు టి.టి.డి వారి వైఖరిని సంపూర్ణముగా ఖండన నిరాకరణ,

12. చివ్వరకు ఈ విషయము రెండు రాష్ట్రముల మధ్య అనవసర గోడవలకు దారితీస్తూ పరిణామములు

13. భారత పార్లమెంట్ లో కూడా దీనిపై చర్చ అంధ్ర ప్రభుత్వము మరియూ టి.టి.డి కమిటీ ని వారి నివేదికలను, సంపూర్ణాముగా తిరస్కరించిన భారత ప్రభుత్వము మరియూ భారత సాంస్కృతిక శాఖ

(02.08.2021)

14. నిరంతర ఓటములతో చివ్వరకు అనేక దుష్పరిణామములకు దారి తీస్తున్న టి.టి.డి వారి అజ్ఞానపు చర్యలతో

చివ్వరకు వారు చేసిన తప్పును తెలుసుకుని "ఇకముందర ఇటువంటి కార్యములు " కార్యములు అనవసరపు గందరగోళాలు సృష్టించుట , అనవసరపు నివేదికలు ఇచ్చుట ఇటువంటి కార్యక్రమములు చేయబోమని తప్పు ఒప్పుకునుట, (ఇప్పటివరకూ అసలు హంపి కి హనుమంతులవారి సంబంధమే లేదనే వారు అనేక మాటలు మార్చి) చివ్వరకి మేము అనుకుంటుంన్నాము తిరుపతిలో పుట్టేడు అని దిని పై విశ్వాసము ఉన్న వాళ్ళు ఇక్కడికి రావచ్చు అనే స్థితి కి రావలసి వచ్చినది..ఇది కూడా ఇంకొక నాటకము ఇక్కడ వీరు చేప్పేది ఇది కూడా తప్పే ఒక సంస్థకి చైర్మెన్ గా ఉంటూ ఇలా అభిప్రాయాలు చేప్పడానికి అధికారము

లేదు ఒక ఒకవేళ అభిప్రాయము చెప్పాలంటే చైర్మెన్ పదవికి రాజీనామా చేసి బయటకి వెళ్ళి చెప్పాలి అప్పుడుకూడా కాదు ఎందుకంటే అది ఒక "వ్యక్తి అభిప్రాయమే" అభిప్రాయాలు సత్యాలు కావు ! ఇక్కడ చైర్మెన్ గా ఉంటూ నా అభిప్రాయము చెబుతానంటే కుదరదు , సత్యము అని నిర్థారించిన తరువాత మాత్రమే అది కూడా ధర్మా చార్యుల నుండి అమోదనము పొందిన వాటి నుండి మాత్రమే , వీరు చెప్పుచుగానీ ఈ రకముగా వీరి సొంత అభిప్రాయాలు చెప్పటానికి గాని ఇటువంటి అనావశ్యక కార్యములు చేయుట కు కానీ వీరికి అధికారము లేదు కనుక ఈ రకముగా వారు చేసిన తప్పును ఒక్కసారే ఒప్పుకోవటనికి అభిమానముతో ఇలా ఇంకొక ఘూటకము చివ్వరకి తమ తప్పును తెలుసుకొని ఇటువంటి కార్యములను ఇక ముందర చేయబోమని ఓటమిని అంగీకరించుట,

15. టి.టి.డి కమిటీ పరాజయము , కిష్కింధా దిగ్విజయము న కర్నాటకా లో కిష్కింధా విజయోత్సవములు ఆచరణ

(రెండునెలలు – బెంగుళూర్ లో)

16. శ్రీ శ్రీ పరమహంస పరివ్రాజక గోవిందానంద సరస్వతీ స్వామివారిచే శ్రీ హనుమద్ జన్మభూమి పంపాక్షేత్ర కిష్కింధా అంజనాద్రి – కర్నాటక పుస్తకము ఉద్ఘాటన, (ప్లవ. విజయదశమి 5102021)

శ్రీ హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్ట్ (రి)

అధికార ప్రతినిధి ముఖ్య కార్యాలయము,

Sri Pampakshetra Kishkindha Swarnahampi - Bhaktinagara Samrajya,
Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust ®
Office: Kishkindha, Sri Hanumad Janmabhoomi , Anegondi, Gangavati T.Q, Koppal District, Karnataka – 583234, ✆: 8500411118/5
Ashram: SwarnaHampi (New Hampi), Hospet TQ. Bellary Dist, Karnataka 583239, ✆ : 8762711113/6,
hanumadjanmabhoomitrust@gmail.com,
www.kishkindha.org Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust @ SHJBTKTrust

ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್ (ರಿ)

ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರ – ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ - ಕರ್ನಾಟಕ.

(ಶ್ರೀ ಪ್ಲವನಾಮ ಸಂ. ಆಶ್ವೀಯುಜ ದಶಮೀ - ವಿಜಯದಶಮೀ - 15, ಅಕ್ಟೋಬರ್ 2012)

೧೨ ವರ್ಷಗಳ ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ರಥ ಯಾತ್ರೆ ಅಂಗಭಾಗವಾಗಿ ಮೊದಲನೇಯ ವರ್ಷದಲ್ಲಿ ನಡಿದ ಮುಖ್ಯ ಘಟನೆಗಳು, ಕಾರ್ಯಗಳು - ನಿವೇದಿಕೆ

1. ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಕಿಷ್ಕಿಂಧ ಯಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮಾಣಮಾಡಲಿರುವ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಮಂದಿರಕ್ಕೆ ವಿಜಯದಶಮಿ ಪರ್ವದಿನದಲ್ಲಿ ನನ್ದಾ, ಭದ್ರಾ, ಜಯಾ, ರಿಕ್ತಾ ಶಿಲಗಳಗೆ ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಸ್ವರ್ಣಹಂಪಿ ಯಲ್ಲಿ ಶೋಭಾಯಾತ್ರೇ ಮತ್ತು ಶಿಲಾನ್ಯಾಸ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮ ಸಂಪನ್ನ ಗೊಂಡಿದೆ,
2. Sri Hanumad Janmabhoomi Kishkindha Ratha Yatra from Pampakshetra , 15-03-2021

ఈనాడు
epaper.eenadu.net

అయోధ్య వరకూ రథయాత్ర

రూ.40 లక్షలతో సిద్ధమైన వాహనం-నేడు హంపీలో ప్రారంభం

హొసపేటె: హనుమంతుడి జన్మస్థలంగా విశ్వసిస్తున్న కిష్కింద పరిసరాల్లో ఉన్న హంపీ నుంచి శ్రీరాముడి జన్మస్థానమైన అయోధ్య వరకూ జగదభిరాముడి పాదుకలతో రథయాత్ర సోమవారం (నేడు) హంపీలో ప్రారంభంకానుంది. కొత్త హంపీ(పునరావాస కేంద్రం)లోని శ్రీహనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్టు ఆధ్వర్యంలో రూ.40 లక్షలు ఖర్చుచేసి రథయాత్ర కోసం వాహనాన్ని సిద్ధం చేశారు. అందులో అయోధ్య నుంచి తీసుకొచ్చిన శ్రీరాముడి పాదుకలను పెట్టి, రథయాత్ర సాగిస్తారు. రథం లోపల శ్రీరాముడు, హనుమంతుడి జన్మ ఇతివృత్తాలను తెలిపే బొమ్మలను, ప్రతిమలను తీర్చిదిద్దారు. హంపీ నుంచి ప్రారంభమయ్యే రథయాత్ర దేశమంతటా పర్యటించి 12 ఏళ్ల అనంతరం అయోధ్య చేరుకుంటుందని ట్రస్టు నిర్వాహకులు గోవిందానంద సరస్వతి స్వామీజీ తెలిపారు. అప్పుడు ఆ పాదుకలను అయోధ్యలోని శ్రీరాముడి సన్నిధిలో సమర్పిస్తారు. రథయాత్ర మార్గంలో రాముడు, హనుమంతుడి మహిమలను చాటే భజనలు, నృత్య కార్యక్రమాలను ఏర్పాటు చేశారు. ఆ రథంలో రామాయణంలో ప్రముఖ పాత్రలైన వాలి, సుగ్రీవుడి ప్రతిమలను ఉంచారు. రాత్రిపూట రథానికి విద్యుద్దీపాలతో అలంకరిస్తారు.

భక్తాగ్రేసరుడిని ఆలింగనం చేసుకుంటూ..

సీతారామలక్ష్మణుల ప్రతిమలు

గత ఏడాది విజయదశమి నాడు కొప్పళలోని అంజనాద్రిలో రథ నిర్మాణం పూర్తి చేశారు. ఇటీవల శివరాత్రి రోజు ఈ రథానికి హంపీలో పూజలు చేశారు. మార్గంలో పెద్ద ఎత్తున రాముడు, హనుమంతుడి భక్తులు పాల్గొనే అవకాశం

అయోధ్యకు యాత్ర చేపట్టే రథం

ఉందని ట్రస్టు నిర్వాహకులు తెలిపారు. హంపీ నుంచి ప్రారంభమయ్యే రథయాత్ర కొప్పళ జిల్లాలో ప్రవేశించి పది రోజులు సాగుతుంది. రాష్ట్రంలోని ప్రతీ జిల్లాలో పది రోజుల వంతున రథయాత్ర జరుగుతుందని నిర్వాహకులు తెలిపారు.

eenadu epaper

(c) eenadu

Date : 15/03/2021 EditionName : ANDHRA PRADESH(KARNATAKA) PageNo : 01

ఈనాడు
epaper.eenadu.net

హంపీ నుంచి.. అయోధ్య దాకా సాగే రథయాత్ర
సోమవారమే ప్రారంభం. వివరాలు.. 4లో

Date : 16/03/2021 EditionName : ANDHRA PRADESH(KARNATAKA)
PageNo : 01

3.

4.

5.

6.

హంపీ నుంచి హనుమద్ రథయాత్ర ప్రారంభం

హొసపేట, న్యూస్‌టుడే: హంపీలోని శ్రీహనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్టు ఆధ్వర్యంలో హంపీ నుంచి అయోధ్యకు చేపట్టిన కిష్కింధ హనుమద్ రథయాత్ర సోమవారం ప్రారంభమైంది. హంపీ వద్ద తుంగభద్ర నదీ తీరంలో ట్రస్టు అధ్యక్షుడు గోవిందానంద సరస్వతి స్వామి నేతృత్వంలో వేద పండితులు ప్రత్యేక పూజలు చేసి రథయాత్రను ప్రారంభించారు. తొలుత గంగాదేవికి పూజలు చేసి, రథంలో ఏర్పాటు చేసిన విరూపాక్షుడు, వినాయకుడు, సీతారామలక్ష్మణులకు హారతులు పట్టారు. ఈ సందర్భంగా స్వామి మాట్లాడుతూ ఈ రథయాత్ర కర్ణాటక, కేరళ, తమిళనాడు, ఆంధ్రప్రదేశ్, తెలంగాణ సహా పలు ప్రముఖ రాష్ట్రాల్లో సంచరించి, 12ఏళ్ల తర్వాత అయోధ్య శ్రీరాముడి సన్నిధికి చేరుతుందన్నారు. అయోధ్యలో రాముడి జన్మస్థానానికి ఎంత ప్రాధాన్యం ఉందో, కిష్కింధలో హనుమంతుడి జన్మస్థానానికి కూడా అంతే ప్రాముఖ్యత ఉంది. ఈ నేపథ్యంలో రథయాత్ర ముగిసేలోగా ఆనెగుందిలోని అంజనాద్రి కొండపై హనుమంతుడి ఆలయం ఏర్పాటు చేయాలన్న సంకల్పంతో ఈ యాత్ర ప్రారంభించాం. కొండపై హనుమంతుడి భారీ విగ్రహాన్ని కూడా ఏర్పాటు చేస్తామన్నారు. రామజన్మభూమి, హనుమంతుడి జన్మస్థలంపై ప్రజల్లో అవగాహన కల్పించేందుకు రథయాత్ర దోహదపడుతుందన్నారు. రాష్ట్రంలో ప్రతి జిల్లాలో పది రోజుల చొప్పున రథయాత్ర సాగుతుందని వివరించారు. ట్రస్టు ప్రముఖులు గుత్తి చంద్రశేఖర్, రంగస్వామి తదితరులు పాల్గొన్నారు.

సీతారాములతో లక్ష్మణుడు

రథంలో కొలువైన హంపీ విరూపాక్షుడు

Date : 16/03/2021 EditionName : ANDHRA PRADESH(KARNATAKA) PageNo : 02

7. ಅಯೋಧ್ಯೆ ಯಲ್ಲಿ ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್ ಕಾರ್ಯಾಲಯ ಉದ್ಘಾಟನೆ,

Sri Hanumad Janmabhoomi Branch Office in Ayodhya

Sri Sita Raja Mahala

8. ಹರಿದ್ವಾರ್ ಮಹಾ ಕುಂಭದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ರಥ ಉದ್ಘಾಟನೆ, ಶೋಭಾಯಾತ್ರೆ,

9. ಅಯೋಧ್ಯೆ ಯಲ್ಲಿ ಶ್ರೀ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ರಥಕ್ಕೆ ವಿಶೇಷ ಪೂಜೆ, ಉತ್ಸವ ಮೂರ್ತಿಗಳಿಗೆ ಶ್ರೀರಾಮನವಮಿ ದಿವಸ ಶ್ರೀ ರಾಮಜನ್ಮಭೂಮಿ ಪ್ರಧಾನ ಅರ್ಚಕರ ದಿಂದ ಚರ ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ,
ಅಯೋಧೆ ಯಲ್ಲಿ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಪರವಾಗಿ ಶ್ರೀ ರಾಮ ನವಮಿ ಮಹೋತ್ಸವ ಆಚರಣೆ ಶ್ರೀ ರಾಮ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಯಲ್ಲಿ ವಿರಾಜಮಾನರಾದ ಬಾಲ ಶ್ರೀ

ರಾಮ, ಭರತ, ಲಕ್ಷ್ಮಣ,ಶತ್ರುಜ್ಞ್ನ ರಗೆ ರಜತ ಯಜ್ಞೋಪ ವೀತ, ಶ್ರೀ ರಾಮದೇವರೆಗೆ ರಜತ ಧನುಷ್ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಹನುಮಂತ ದೇವರ ಪರವಾಗಿ ಸಮರ್ಪಣೆ, (21st Aprl 2021)

10. ಅಯೋಧ್ಯೆ ಯಿಂದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧ ಗೆ ಶ್ರೀ ರಾಮ ದೇವರ ಪಾದುಕೆಗಳು ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಮೇಲೆ ಗರ್ಭ ಗ್ರುಹದಲ್ಲಿ ಮಹಾ ಶಿವರಾತ್ರಿ ಪರ್ವದಿನದಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಷ್ಠೆ,

11.

12. ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಶ್ರೀ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ರಥ ಉದ್ಘಾಟನೆ,

13. ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ತಿರುಪತಿ ಅವರು ಮಾಡುತ್ತಿರುವಾವೈದಿಕ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮಗಳನ್ನುಖಂಡಿಸುತ್ತಾ ತಿರುಪತಿ kamiti ge ಪತ್ರ, (02 – May 2021)

14. Sri Hanumad Jayanti Chaitra Poornima 27th Sri Hanumad Jayanti in Anjanadri Kishkindha Parvata - pampasarover
15. ಶ್ರೀ ಶ್ರೀ ಪರಮಹಂಸ ಪರಿವ್ರಾಜಕ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತೀ ಸ್ವಾಮಿಗಳವರಿಂದ ತಿರುಪತಿ ಕಮಿಟೀಗೆ ಸವಾಲ್ , ಖಂಡನಾ ಪತ್ರ, ಮತ್ತು ತಿರುಪತಿದಲ್ಲಿ ಶಾಸ್ತ್ರ ಸಭಾ ಟಿ.ಟಿ.ಡಿ ಪಂಡಿತರ ಜೊತೆ ಈ ವಿಷಯವಾಗಿ ಶಾಸ್ತ್ರ ವಿದ್ವಾಂಸರ ಜೊತೆ ಚರ್ಚೆ, (26-05-2021)
16. 14-05-2021ಅಕ್ಷಯ ತೃತಿಯ ದಂದು ಜರಗಿತು, ರಥಶಿಲ್ಪಿ ಶ್ರೀ ರಾಜಗೋಪಾಲ ಆಚಾರ್ಯ ನೇತ್ರುತ್ವದಲ್ಲಿ ಜರಗಿತು ಇದಕ್ಕೆ "ಅಯೋಧ್ಯೆ ಶ್ರೀ ರಾಮ ರಥ" ಎಂದು ನಾಮಕರಣ ಮಾಡಲಾಯಿತು,
17. ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ತಿರುಪತಿ ಕಮಿಟೀ ಅವರ ಘೋರ ಪರಾಜಯ ಮತ್ತು ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಯ ವಿಜಯ, ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಟ್ರುಸ್ಟ ಸ ಪ್ರಮಾಣಗಳಿಂದ ಎರಡು ಸಾರಿ ತಿರುಪತಿಯಲ್ಲೇ ಪ್ರೆಸ್ ಮೀಟ್, 27th May 2021
18.

19. ಶ್ರೀ ಜಗದ್ಗುರು ಶಂಕರಾಚಾರ್ಯ, ಶ್ರೀ ರಾಮಾನುಜ, ಶ್ರೀ ಮಧ್ವ, ಪರಂಪರಾಗತ ಆಚಾರ್ಯರ ಸಾನ್ನಿಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಶಾಸ್ತ್ರ ಪರಿಷತ್ ದಲ್ಲಿ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಟ್ರುಸ್ಟ ಪ್ರತಿಪಾದನೆಗೆ ತ್ರಿಮತಸ್ಥ ಆಚಾರ್ಯರು ಏಕ ಮುಕ್ತ ಕಂಠ ದಿಂದ ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರ ಕಿಷ್ಕಿಂಧ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತವೇ ಶ್ರೀ ಹನುಮಂತ ದೇವರ ಜನ್ಮ ಸ್ಥಳ ಅಂತ ನಿರ್ಧಾರಣೆ, 12-08-2021
20. ಓಪನ್ ಚಾಲೆಂಜ್ TTD ಅವರ ಈ ಪುಸ್ತಕದ ಪ್ರಕಾರ, ಶ್ರೀ ಹನುಮಾನ್ ತಿರುಪತಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದರು, TTD ಅವರ ಈ ಪುಸ್ತಕದ ವಿಷಯಗಳು ನಿಜವೆಂದು ಸಾಬೀತು ಪಡಿಸುವವರಿಗೆ .1,00,000/- ಒಂದು ಲಕ್ಷ ರೂಪಾಯಿ ಬಹುಮಾನ, ಸಾರ್ವಜನಿಕ ಪ್ರಕಟಣೆ (07-08-2021)
21. 30, 31 -07-2021, webneer khandanam

22. ಎರಡು ರಾಷ್ಟ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಭಾರತ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಮತ್ತು ಇನ್ನಿತರ ಸಮಸ್ತ ಭಕ್ತರನ್ನು ತಪ್ಪು ದಾರಿ ಪಟ್ಟಿಸುವ ಮತ್ತು ಶ್ರೀ ಹನುಮಂತ ದೇವರ ಭವ್ಯ ಚರಿತ್ರೇ ಯನ್ನು ಅನಾವಶ್ಯಕವಾಗಿ ವಕ್ರೀಕರಿಸಿದ ಟಿ.ಟಿ.ಡಿ ಅವರ ನಿವೇದಿಕಗಳನ್ನು ಭಾರತ ಸರಕಾರ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಶಾಖೇ ನಿರಾಕರಣೆ,
23. ಕೊನೆಗೂ ಎರಡು ರಾಷ್ಟ್ರಗಳ ನಡುವೆ ಅನಾವಶ್ಯಕ ವಾದ ಗೊಂದೆಲೆಗಳು, ದುಷ್ಪರಿಣಾಮಗಳು ಸೃಷ್ಠಿ,
24. ಭಾರತ ಪಾರ್ಲಮೆಂಟ್ ದಲ್ಲಿಯೂ ಸಹಾ ಈ ವಿಷಯವಾಗಿ ಚರ್ಚೇ ಆಂಧ್ರ ಪ್ರಭುತ್ವದ ಮತ್ತು ಟಿ.ಟಿ.ಡಿ ಕಮಿಟೀ ನನ್ನು ಅವರ ನಿವೇದಿಕೆಗಳನ್ನು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ತಿರಸ್ಕರಿಸಿದ ಭಾರತ ಸರಕಾರ, ಅಧಿ ಕೃ ತ ಪತ್ರ ಜಾರಿ, (Govt of India Min of Culture Lok Sabha U.Q.No Dt. 02.08.2021)
25. ಟಿ.ಟಿ.ಡಿ ಅವರ ಅನೇಕ ಅಜ್ಞಾನ ನದ ಕಾರ್ಯಗಳಿಂದ ಕೊನೆಗೂ ಟಿ.ಟಿ.ಡಿ ಚೈರ್ಮನ್ ಟಿ.ಟಿ.ಡಿ ಸಭಾಮುಖವಾಗಿ ಇಂತಹ ಕೆಲಸಗಳಿ ಇನ್ನುಮೇಲೆ ನಾವು ಮಾದುವದಿಲ್ಲ ಅಂತ ತಪ್ಪು ಒಪ್ಪಿಗೆ
26. ಟಿ.ಟಿ.ಡಿ ಕಮಿಟೀ ಅವರ ಪರಾಜಯ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ದಿಗ್ವಿಜಯ ಕರ್ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಆಚರಣೆ, (24 ಜೂಲೈ ದಿಂದ 20 ಸೆಪ್ಟೆಂಬರ್ 2021)
27. ನಮ್ಮ ಕರ್ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರ ಕಿಷ್ಕಿಂಧ ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ದಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮಾಣ ವಾಗಲಿರುವ ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ದೇವಸ್ಥಾನ , ೨೧೫ ಮೀ "ಭಕ್ತಿವೈಭವ ವಿಗ್ರಹ" ಬಗ್ಗೆ ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯಪಾಲರ ಜೊತೆ ಚರ್ಚೆ, 06-Sept-2021
28. ಪೂಜ್ಯ ಶ್ರೀ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತೀ ಸ್ವಾಮಿಗಳಾವರಿಂಡ "ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ – ಅಂಜನಾದ್ರಿ" , ಕರ್ನಾಟಕ ಪುಸ್ತಕ ಉದ್ಘಾಟನೆ, (ವಿಜಯದಶಮಿ ೧೫-೧೦-೨೦೨೧)
29. ವಿಜಯದಶಮಿ ಪರ್ವದಿನ ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರದಲ್ಲಿ ವಿಜಯದಶಮಿ ಆಚರಣೆ ಪೂರ್ವಭಾವಿ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮದ ಅನುಸಾರವಾಗಿ ಯಾಥಾವತ್ತಾಗಿ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ರಥ ಯಾತ್ರೆ

ಶ್ರಿ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್ (ರಿ)

ಅಧಿಕಾರ ಪ್ರತಿನಿಧಿ – ಮುಖ್ಯ ಕಾರ್ಯಾಲಯ

Sri Pampakshetra Kishkindha Swarnahampi - Bhaktinagara Samrajya,
ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್ (ರಿ)
Office: Kishkindha, Sri Hanumad Janmabhoomi , Anegondi, Gangavati T.Q, Koppal District, Karnataka – 583234, ✆: 8500411118/5
Ashram: SwarnaHampi (New Hampi), Hospet TQ. Bellary Dist, Karnataka 583239, ✆ : 8762711113/6,
hanumadjanmabhoomitrust@gmail.com,
www.kishkindha.org Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust @ SHJBTKTrust

SVBC TTD

27 May 2021

హనుమ జన్మస్థలం తిరుమలే :

టిటిడి పండితుల కమిటీ అధ్యక్షులు ఆచార్య మురళీధర శర్మ

అనేక పురాణాలు, కావ్య ఇతిహాసాల ప్రమాణాలను అనుసరించి హనుమంతుని జన్మస్థానం తిరుమలేనని టిటిడి పండితుల కమిటీ అధ్యక్షులు, జాతీయ సంస్కృత విశ్వవిద్యాలయం ఉపకులపతి ఆచార్య మురళీధర శర్మ స్పష్టం చేశారు. తిరుపతిలోని జాతీయ సంస్కృత విశ్వవిద్యాలయంలో గురువారం సాయంత్రం జరిగిన మీడియా సమావేశంలో ఆచార్య మురళీధర శర్మ మాట్లాడారు.

హనుమ జన్మస్థానం తిరుమల కాదని, పంపా నదీ తీరంలో ఉన్న "అంజనహళ్లి"గా కర్ణాటక రాష్ట్రం అనెగొందిలోని శ్రీ హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్టు వ్యవస్థాపక ధర్మకర్త శ్రీ గోవిందానంద సరస్వతి స్వామి పేర్కొంటున్నారని చెప్పారు. ఈ విషయాన్ని చర్చించడానికి శ్రీ గోవిందానంద సరస్వతి స్వామివారిని గురువారం ఉదయం జాతీయ సంస్కృత విశ్వవిద్యాలయానికి ఆహ్వానించామన్నారు. దాదాపు మూడు గంటల పాటు జరిగిన ఈ చర్చలకు శ్రీ కుప్పా విశ్వనాథశర్మ న్యాయనిర్ణేతగా వ్యవహరించినట్లు చెప్పారు.

న్యాయనిర్ణేతగా వ్యవహరించినట్లు చెప్పారు.

హనుమంతుని జన్మస్థలం కన్నా తిరుమలకు ఉన్న పేర్లను, హనుమంతుని జననకాలం గురించే శ్రీ గోవిందానంద సరస్వతి స్వామి విశ్లేషించారని వివరించారు. పైగా పురాణాలు సమన్వయం కావడం లేదని అభిప్రాయపడ్డారని తెలిపారు. శ్రీ గోవిందానంద సరస్వతి స్వామి వాదాన్ని ప్రమాణాల ప్రకారం ఖండించినట్లు చెప్పారు. అంతేగాక వారి వాదనలో ఎలాంటి ఆధారాలు చూపలేకపోయారని వివరించారు. పురాణాలు భారతీయ సంస్కృతికి మూలమైనవిగా అంగీకరించాలని కోరామన్నారు. అంతేగాక ఉత్తరాలతో టిటిడిని చులకన చేయవద్దని స్వామిజీకి విజ్ఞప్తి చేశామన్నారు. ఉభయపక్షాల వాదనలను ఆసాంతం విన్న శ్రీ కుప్పా విశ్వనాథ శర్మ టీటీడీ కమిటీ నిర్ణయం సముచితమని, శ్రీ గోవిందానంద సరస్వతి స్వామి వాదనలో పస లేదని తేల్చి చెప్పారని తెలియజేశారు.

మీడియా సమావేశంలో టిటిడి పండితుల కమిటీ సభ్యులు ఆచార్య రామకృష్ణ, ఆచార్య శంకర నారాయణ, ఆచార్య రాణి సదాశివమూర్తి, కన్వీనర్ డాక్టర్ ఆకెళ్ల విభీషణ శర్మ పాల్గొన్నారు.

Marphing video from ttd, ttd commitee,
https://www.youtube.com/watch?v=uEhFOEyEAOY

SVBC TTD

@svbcttdofficial

https://www.facebook.com/svbcttdofficial/posts/2924431227877874

Sri govindananda saraswati swamiji totally condemed ttd's view and fake books which claims hanuman took birth in tirupati and rejected so called fake ttd commitee

when the ttd commitee cheated sri swamiji @ National Sanskrit University

immedeately sri swamiji came out and conducted press meet next day also sri swamiji conducted open press meet in Tirupati press club for 4 hrs

https://www.youtube.com/watch?v=F7KTM-CySXs&t=11s

https://www.youtube.com/watch?v=eb3q--Earhk

https://www.youtube.com/watch?v=KMIsT2772aU&t=11s

https://www.youtube.com/watch?v=JqKRR16w6fE&t=13139s

https://www.youtube.com/watch?v=BQ_bUgLO5OO

https://www.youtube.com/watch?v=UMaJqf8E6YM

https://www.youtube.com/watch?v=_Pv7ePU27rE&t=3031s

https://www.youtube.com/watch?v=MdD4It7jo9E

https://www.youtube.com/watch?v=rEprl04GWY0&t=11s

https://www.youtube.com/watch?v=-i6ZooGV5iA&t=300s

https://www.youtube.com/watch?v=8GIfQAei75Y

https://www.youtube.com/watch?v=sjkM2IUJdno

Hence through this letter I request you initiate appropriate action against the said persons in accordance with law.

. मुनीरथनम रेड्डी निदेशक ए.एस.आई. एपिग्राफी द्वारा मैसूर से एपिग्रॉफी विभाग का पत्र दस्तावेज़

20. Mr.Bhatnagar given very authentic and convincing details on Ramas exhiles of 14 years and return to Ayodhaya dates in his book titles "dating the era of Rama" published by Rupa and co

Conclusion

The birth place of hanuman as Anjanadri in Sheshachalam ranges existing a the foot o fthe Tirumala hills very close to Tirupati in Chittoor dit. Of A.P. stretching from Tirupati to SriSailam.

This area is dense forest with number of existing water springs, sacred theerthas, water falls, huge hill ranges, thick forest, with number o rare spices of flora and fauna.

In this area there is a very possibilities of existing of a human habitation . though this area is a present also covered with thick reserved forest and rank visitation is not accessible to venture and study on archaeological and anthropological point of view in micro level due to the existence of wild animals and strict vigilance and surveillance systems provided in the forest to safeguard the rare species of red sander wood smuggling activies.

However we cannot root out the ancient habitation in this seshachalam area. The recent research traced out some of the tribal settlement and rock art like ancient petroglíphs and pictograph engraved on the rock of prehistoric nature give clear indications of archaeological importance and ancient human habitation in Seshachalam ranges where the Anjanadri is existing.

As Venkatachla Mahatryam attests the visit of rama along with vanaras to seshachalam in the context or Vaikunta Guha episode.

As the birth place of hanuman in seshachalam hill range attested in so many puranas and venkatachala mahatyam the reference o f this literature is to b estudies in micro level to proceed further dimensions of scope of archaeological exploration and excavation with the help of latest technologies to achieve our goal.

భారతదేశంలోని వందలకొలది తీర్థ, క్షేత్రాల వర్ణనలు వాటిచుట్టూ అల్లుకున్న పురాగాథలు, మాహాత్మ్యాలు పురాణాలలో విస్తారంగా కనిపిస్తాయి. వీటన్నింటినీ ప్రత్యక్ష ప్రమాణాలతో నిర్ధారించడానికి పురావస్తుశాస్త్రపు పరిధి చాలదు. అందులోనూ శాసనాల పాత్ర ఇంకా పరిమితమైంది.

తిరుమలకు సంబంధించిన శాసనాధారాలు క్రీ.శ. 9వ శతాబ్ది మొదటిపాదంనుండి మాత్రమే లభిస్తున్నాయి. అందువల్ల ఈ క్షేత్రానికి సంబంధించిన పౌరాణిక గాథలను ఇవి నిర్ధారించలేవు.

పైన వివరించిన శాసన ఆధారాల ప్రకారం అంజనగిరి/అంజనాద్రి అనేది సప్తగిరుల్లో ప్రసిద్ధమైన గిరిగా చెప్తోంది కానీ, ఏ శాసనంలోనూ ఆంజనేయుడి జన్మస్థానం గురించీ, తిరుమలగిరుల్లో అంజనాద్రే ఆంజనేయుడి జన్మస్థానమని చెప్పే ఆధారాలుగానీ శాసనాలలో మనకు ఇప్పటివరకూ లభించలేదు.

भारत सरकार के पुरालेख विभाग ने स्पष्ट रूप से घोषणा की कि ऐसा कोई सबूत नहीं है जो तिरुपति में हनुमान के जन्म को साबित कर सके, अब तक हमें ऐसा कोई सबूत / शिलालेख नहीं मिला है जो यह साबित कर सके कि तिरुपति भगवान हनुमान का जन्मस्थान है

ಸಮರ್ಥವಾಣಿ
ಉಜ್ವಲ ಕನ್ನಡ ದಿನಪತ್ರಿಕೆ
30/05/2021
ಭಾನುವಾರ
Sunday
ಕೊಪ್ಪಳ ಆವೃತ್ತಿ

ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಹನುಮದ್ ತೀರ್ಥಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್‌ನ ವ್ಯವಸ್ಥಾಪಕ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ ಸ್ವಾಮಿಜೀ ತಿರುಪತಿಯಲ್ಲಿ ಸಮರ್ಥನೆ

ಕರ್ನಾಟಕದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ

ಟಿಟಿಡಿ ಪಂಡಿತ ಪರಿಷತ್ ಚರ್ಚೆಯಲ್ಲಿ ತಿರುಗೇಟು । ಬಹಿರಂಗ ಚರ್ಚೆಗೆ ಬರಲು ಸ್ವಾಮಿಜೀ ಸವಾಲು

ಸಮರ್ಥವಾಣಿ ವಾರ್ತೆ
ತಂಜಾವೂರು ಅಕ್ಷಯ

ತಿರುಪತಿ,ಮೇ 29: ಪ್ರಭು ಶ್ರೀರಾಮ ಚಂದ್ರನ ಪರಮ ಭಕ್ತ, ವಾಯು ಪುತ್ರ, ಭಾರತದ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಗ್ರಾಮದ ಆರಾಧ್ಯ ದೈವವಾಗಿರುವ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಾನ ಕರ್ನಾಟಕದ ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಕಿಷ್ಕಿಂದೆ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಜನ್ಮತಾಳಿರುವುದು ರಾಮಾಯಣವಷ್ಟೆ ಅಲ್ಲ ಪುರಾಣ, ಪುಣ್ಯಕಥೆಗಳಲ್ಲು ಸಾಬೀತಾಗಿದೆ. ಇದು ಸತ್ಯವು ಕೂಡಾ. ಆದರೆ ಇಂತಹ ಎಲ್ಲಾ ಸತ್ಯ ಸಂಗತಿಯನ್ನು ಮರೆ ಮಾಚಿ ಸುಳ್ಳು ಕಂತೆಗಳನ್ನು ಜೋಡಿಸಿ ಭಕ್ತರ ಭಾವನೆಗೆ ಟಿಟಿಡಿ ಧಕ್ಕೆ ತರುತ್ತಿದೆ ಎಂದು ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಹನುಮದ್ ತೀರ್ಥಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್‌ನ ವ್ಯವಸ್ಥಾಪಕ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ ಸ್ವಾಮಿಜೀ ಖುದ್ದು ತಿರುಪತಿಗೆ ಭೇಟಿ ನೀಡಿ ಸಮರ್ಥಿಸಿಕೊಂಡಿದ್ದಾರೆ.

ಕಳೆದ ಗುರುವಾರ ತಿರುಪತಿಯಲ್ಲಿ ಟಿಟಿಡಿ ಪಂಡಿತ ಪರಿಷತ್ತಿನ ಚರ್ಚೆಯಲ್ಲಿ ಭಾಗ ವಹಿಸಿದ್ದ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸ್ವಾಮಿಜೀಗಳು ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳವಾಗಿದೆ ಎಂದು ದಾಖಲೆ ಸಮೇತ ಪ್ರತಿಪಾಧಿಸಿ ನಂತರ ಸುದ್ದಿಗೋಷ್ಠಿಯಲ್ಲಿ ದಾಖಲೆ ಸಮೇತ ಅವರು ಮಾತನಾಡಿದ್ದಾರೆ. ಹನುಮಂತ ತಿರುಮಲದ ಏಳುಬೆಟ್ಟಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದಾದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿಯೇ ಜನಿಸಿದ್ದಾನೆ ಎಂದು ಶ್ರಿರಾಮನವಮಿ ದಿನದಂದು ಟಿಟಿಡಿ ಪ್ರಕಟಣೆ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿ ದೇಶದ ಸಮಸ್ತ ಭಕ್ತರಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳದ ಬಗ್ಗೆ ಗೊಂದಲ ಮೂಡಿಸಿತ್ತು. ಈ ಕುರಿತು ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯಲ್ಲೆ ಜನಿಸಿರುವುದಾಗಿ ಕರ್ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ದಾಖಲೆ ಸಮೇತ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಿದ್ದ ಸ್ವಾಮಿಜೀಗಳು ತಿರುಪತಿಯಲ್ಲಿ ನಡೆದ ಚರ್ಚೆಯಲ್ಲಿ ಖುದ್ದು ಭಾಗವಹಿಸಿ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಹನುಮನಂತ ಜನ್ಮಸ್ಥಾನ ಎಂದು ತಮ್ಮ ನಿಲುವು ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿ ದರಲ್ಲದೇ ವಾಲ್ಮೀಕಿರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತ ಹುಟ್ಟಿದ್ದು ಕಿಷ್ಕಿಂದೆ ಎಂಬುದು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಉಲ್ಲೇಖವಾಗಿದೆ. ಮಾಲ್ಯವಂತ ಪರ್ವತ, ಮಾತಂಗ ಪರ್ವತ, ಋಷ್ಯಮೂಕ ಪರ್ವತ, ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತ, ಪಂಪಾಸರೋವರ, ತುಂಗಭದ್ರಾ ನದಿ ಇವೆಲ್ಲವೂ ಕೂಡಾ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖವಾಗಿವೆ. ಸ್ವತಃ ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ ಹನುಮಂತನನ್ನು ಮೊದಲ ಬಾರಿಗೆ ಬೇಟಿಯಾದ ಸ್ಥಳ ಋಷ್ಯಮೂಕ ಪರ್ವತ ಎಂಬುದು ಸಾವಿರಾರು ವರ್ಷಗಳ ದಾಖಲೆಯಲ್ಲಿ ಕಂಡು ಬರುತ್ತದೆ. ಮತ್ತು ದೇಶ, ವಿದೇಶದ ಭಕ್ತರು ನಂಬಿದ್ದಾರೆ. ಆದರೆ ಈಡೀ ರಾಮಾಯಣವನ್ನೇ ಟಿಟಿಡಿ ಪ್ರಮಾಣವಾಗಿ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳದೇ ತಾವು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದ ದಾಖಲೆಗಳೇ ಸತ್ಯ ಎಂದು ಸುಳ್ಳು ಸಂಗತಿಯನ್ನು ಹರಿ ಬಿಡುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಕೇವಲ ನಾಲ್ಕು ತಿಂಗಳು ಸಂಶೋಧನೆ ನಡೆಸಿ ಹನುಮಂತ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ತಿರುಮಲ ಎಂದು ಕಮಿಟಿ ಪ್ರಕಟಿಸಿ ಏಕಾಏಕಿ ಪುಸ್ತಕ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿದೆ. ಈ ಹಿಂದೆ ಧಾರ್ಮಿಕ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ತೀರ್ಮಾನ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುತಿದ್ದವರು ಆದಿ ಶಂಕರಾಚಾರ್ಯರು, ಮಧ್ವಾಚಾರ್ಯರು, ರಾಮಾನುಜಾಚಾರ್ಯರು. ಇಂತಹ ಪುಜ್ಯರ ಮಠಗಳ ಪಿಠಾಧಿಪತಿಗಳನ್ನು ಟಿಟಿಡಿ ಪಂಡಿತರು ಭೇಟಿಯಾಗದೇ ತಮಗೆ ಇಷ್ಟ ಬಂದ ಸಂಶೋಧಕರ ದಾಖಲೆಗಳು ಸತ್ಯವೆಂದು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಟಿಟಿಡಿ ಪಂಡಿತರು ಹನುಮ ಭಕ್ತರಿಗೆ ಅಪಚಾರ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾರೆ ಎಂದು ಗೋವಿಂದನಾಂದಸ್ವಾಮಿ ತಿರುಪತಿಯಲ್ಲಿ ನಡೆಸಿದ ಸುದ್ದಿಗೋಷ್ಠಿಯಲ್ಲಿ ಘಂಟಾ ಘೋಷವಾಗಿ ಹೇಳಿದರು. ಈ ವಿಷಯನ್ನು ಶೃಂಗೇರಿ ಮಠ ಮತ್ತು ಕಂಚಿಕಾಮಕೋಟಿ ಪೀಠಾಧಿಪತಿಗಳ ಮುಂದೆ ಪ್ರಸ್ತಾಪ ಮಾಡುತ್ತೇವೆ. ಹನುಮ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತಿರುಮಲ ಬೆಟ್ಟದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಎಂದು ಪ್ರಕಟನೆ ಮಾಡುವಾಗ ಅದೇ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿರುವಂತಹ ಪೆದ್ದಜಿಯಂಗಾರ್ ಸ್ವಾಮಿಜಿಯನ್ನು ಕಮಿಟಿ ಯಾಕೆ ಭೇಟಿಯಾಗಿಲ್ಲ ಎಂದು ಸ್ವಾಮಿಜೀಗಳು ಟಿಟಿಡಿಯನ್ನು ಪ್ರಶ್ನಿಸಿದ್ದು, ಸತ್ಯವನ್ನು ಮರೆ ಮಾಚುವುದೇ ಅವರ ಪ್ರಮುಖ ಉದ್ದೇಶ ಎಂಬುದು ಇದು ಎತ್ತಿ ತೋರಿಸುತ್ತದೆ. ಟಿಟಿಡಿ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿದ ಪುಸ್ತಕದಲ್ಲಿ ಹನುಮನ ತಾಯಿ ಅಂಜನಾದೇವಿಯನ್ನು ದೇವತೆಗಳು ಸ್ಮರಿಸಿರುವ ಸಂದರ್ಭ ಬ್ರಂಹಾಂಡ ಪುರಾಣದ ತೀರ್ಥಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಇದೆ ಎಂದು ಹೇಳುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಆದರೆ ಬ್ರಂಹಾಂಡ ಪುರಾಣದಲ್ಲಿ ತೀರ್ಥಕಂಡವೇ ಇಲ್ಲ ಎಂದು ಸ್ವಾಮಿಜೀ ತಿರುಪತಿಯ ಪತ್ರಕರ್ತರಿಗೆ ಮನವರಿಕೆ ಮಾಡಿದರು. ಹನುಮಂತ ಜನಿಸಿದ ದಿನಾಂಕದ ವಿಷಯದಲ್ಲೂ ಟಿಟಿಡಿ ಗೊಂದಲು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದೆ. ಈ ಕುರಿತು ಅವರಿಗೆ ಪೂರ್ಣ ಪ್ರಮಾಣದ ಮಾಹಿತಿಯು ಇಲ್ಲ. ಅವರು ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿದ ಪುಸ್ತಕದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಹುಟ್ಟಿನ ಬಗ್ಗೆ ಮೂರು ತಿಥಿಗಳು ನಮೂದಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಟಿಟಿಡಿಗೆ ಜನ್ಮದಿನವೆ ಗೊತ್ತಿಲ್ಲದಾಗ ಮೂರು ತಿಥಿಗಳನ್ನು ಯಾಕೆ ನಮೂದಿಸಿದರು ಎಂಬುದು ಅವರ ಸುಳ್ಳಿನ ಸರಮಾಲೆ ಬಹಿರಂಗಪಡಿಸುತ್ತಿದೆ. ಪುರಾಣೇತಿಹಾಸದಲ್ಲಿ ಇಲ್ಲದ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ತಂದು ತಮ್ಮ ಪರವಾಗಿ ಹನುಮ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ತಿರುಮಲ ಎಂದು ಸುಳ್ಳು ದಾಖಲಾತಿಗಳನ್ನು ತೋರುಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ ಇದು ಸತ್ಯಕ್ಕೆ ದೂರವಾದ ಸಂಗತಿ ಯಾಗಿದೆ. ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ ಸೇರಿದಂತೆ ಪುರಾಣ, ಪುಣ್ಯಕಥೆಗಳು ಮತ್ತು ಸಾವಿರಾರು ವರ್ಷಗಳ ಸಂಶೋಧಿತ ದಾಖಲೆಗಳನ್ನು ನಂಬದ ಟಿಟಿಡಿ ಪಂಡಿತರು ಇತ್ತೀಚಿನ ನಾಲ್ಕು ತಿಂಗಳದ ಸಂಶೋಧನೆಯೇ ಸತ್ಯ ಎಂದು ಒಪ್ಪುತ್ತಿರುವುದು ಅವರ ಅಪ್ರಬುದ್ಧತೆಗೆ ಸಾಕ್ಷಿಯಾಗಿದೆ. ಮತ್ತು ರಾಮ ಮತ್ತು ಹನುಂತನ ಇತಿಹಾಸ ನಮಗೆ ತಿಳಿಯುವುದು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ ಮುಖ್ಯ, ಇಂತಹದ್ದನ್ನೆ ಒಪ್ಪದ ಟಿಟಿಡಿಯವರು ಹನುಮಂತನ ಬಗ್ಗೆ ಅವರಿಗೆ ಇರುವ ಶ್ರದ್ಧೆಯ ಬಗ್ಗೆ ನಮಗೆ ಅನುಮಾನ ಮೂಡುತ್ತಿದೆ ಎಂದು ಗೋವಿಂದನಾಂದ ಸ್ವಾಮಿಜೀ ಕಿಡಿ ಕಾರಿದರು.

ಈ ಹನುಮ ಜನ್ಮಭೂಮಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದಂತೆ ತಿರುಮಲ ತಿರುಪತಿ ದೇವಸ್ಥಾನ ಆಡಳಿತ ಮಂಡಳಿ ಒಂದು ಕಮಿಟಿ ನೇಮಕ ಮಾಡಿದಾಗ ಆ ಕಮಿಟಿಯ ಎಲ್ಲಾ ಸದಸ್ಯರು ಎಲ್ಲಾ ಪುರಾಣ, ಇತಿಹಾಸಗಳನ್ನು ಕೂಲಂಕುಷವಾಗಿ, ತ್ರಿಕರಣ ಶುದ್ಧಿಯಿಂದ ಸಂಶೋಧನೆ ನಡೆಸಿ ನಂತರ ಇದರ ಬಗ್ಗೆತೀರ್ಮಾನ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಬೇಗಿತ್ತು. ಕಮಿಟಿಯ ಸದಸ್ಯರ ಮೇಲೆ ಟಿಟಿಡಿ ಒತ್ತಡ ಹಾಕಿ, ಹನುಮಂತ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ತಿರುಮಲ ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿರುವ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಎಂದು ತಪ್ಪಾದ ದಾಖಲೆಗಳನ್ನು ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣಕ್ಕೆ ಪ್ರಮಾದ ವೆಸಗಿದ್ದಾರೆ ಅಸಂಪೂರ್ಣಜ್ಞಾನ, ಸುಳ್ಳು ದಾಖಲಾತಿಗಳೊಂದಿಗೆ ಟಿಟಿಡಿ ಆಡಳಿತಮಂಡಳಿ ತಮ್ಮ ಸ್ವಲಾಭಕ್ಕಾಗಿಂಯೇ ಹನುಮ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತಿರುಮಲೇ ಎಂದು ತಿರುಚಲು ಮುಂದಾಗಿದೆ. ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳವಾಗಿದೆ ಎಂಬ ಸತ್ಯವನ್ನು ದೇಶ ವಿದೇಶದ ಖ್ಯಾತ ಇತಿಹಾಸಕಾರರ ಮುಂದೆಯೂ ಸಮರ್ಥನೆ ನೀಡುತ್ತೇನೆ ಎಂದು ಸ್ವಾಮಿಜೀ ತಿಳಿಸಿದರು.

ಪ್ರಧಾನಿ ಮೋದಿ ಕೂಡಾ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಗೆ ಶರಣಾಗಿದ್ದಾರೆ

ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯದ ಆನೆಗೊಂದಿ ಗ್ರಾಮದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದ ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳವೆಂದು ಶ್ರದ್ಧೆಯಿಂದ ಇಂದು ದೇಶ, ವಿದೇಶಗಳ ಭಕ್ತರು ಬರುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಅಷ್ಟೆ ಅಲ್ಲ ಕೇಂದ್ರ ಮತ್ತು ವಿವಿಧ ರಾಜ್ಯದ ಸಚಿವರು ಕೂಡಾ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಅಂಜನಾದ್ರಿಗೆ ಆಗಮಿಸಿ ಹನುಮಂತನ ದರ್ಶನ ಪಡೆಯುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. 2019 ರ ಲೋಕಸಭೆ ಚುನಾವಣೆ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಬಳ್ಳಾರಿಗೆ ಬಂದಿದ್ದ ಪ್ರಧಾನಮಂತ್ರಿ ನರೇಂದ್ರ ಮೋದಿ ಅವರು ಸಹ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ನಾನು ಬಂದಿದ್ದೇನೆ ಎಂದು ಲಕ್ಷ ಲಕ್ಷ ಜನರ ಮುಂದೆ ಬಹಿರಂಗವಾಗಿ ಹೇಳಿಕೆ ನೀಡಿದ್ದಾರೆ. ಇಂತಹ ಎಲ್ಲ ಸತ್ಯವನ್ನು ಮರೆ ಮಾಚುವ ಟಿಟಿಡಿ ಆಡಳಿತ ಮಂಡಳಿ ತಮ್ಮ ಸ್ವಲಾಭಕ್ಕಾಗಿ ಈಗ ತಿರುಮಲದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಹೆಸರು ಹರಿಬಿಟ್ಟಿದ್ದಾರೆ. ಇದನ್ನು ಭಕ್ತರು ಎಂದಿಗೂ ಒಪ್ಪುವುದಿಲ್ಲ ಎಂದು ಗೋವಿಂದನಾಂದ ಸರಸ್ವತಿ ಸ್ವಾಮಿಜೀ ತಿರುಪತಿಯ ಮಾಧ್ಯಮಗಳ ಮುಂದೆ ತಿಳಿಸಿದರು.

హనుమంతుని జన్మస్థలంపై తేలని నిర్ణయం

- తమ పరిశోధనలకు కట్టుబడి ఉన్న పండిత పరిషత్
- కిష్కింధే జన్మస్థలమని గోవిందానంద సరస్వతి స్వామి ఉద్ఘాటన

ఈనాడు, తిరుపతి: హనుమంతుని జన్మస్థలంపై జరిగిన చర్చలో ప్రతిష్టంభన నెలకొంది. ఇటు తితిదే నియమించిన పండిత పరిషత్.. అటు హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్టు ఎవరికివారు తమ అభిప్రాయాలకు కట్టుబడి ఉండటంతో ఆంజనేయుడి జన్మస్థలంపై స్పష్టత రాలేదు. తాము పురాణాలను అనుసరించి నిర్ణయం ప్రకటించామని పరిషత్ కన్వీనర్, సంస్కృత విద్యాపీఠం వీసీ మురళీధరశర్మ స్పష్టం చేశారు. ఈ మొత్తం వ్యవహారాన్ని శృంగేరి పీఠంతోపాటు కంచి పీఠాధిపతుల దృష్టికి తీసుకెళ్తున్నట్లు హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్టు వ్యవస్థాపకులు గోవిందానంద సరస్వతి స్వామీజీ చెప్పారు. తిరుమలలోని అంజనాద్రే హనుమంతుని జన్మస్థలం అంటూ తితిదే ఏర్పాటు చేసిన పండిత పరిషత్ ఆధారాలతో ప్రకటించింది. అభ్యంతరాలుంటే చర్చకు సిద్ధమంటూ ప్రకటించింది. ఈ నేపథ్యంలో కర్ణాటకలోని కిష్కింధ ప్రాంతమే హనుమంతుని జన్మస్థలమని హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్టు వ్యవస్థాపకులు గోవిందానంద సరస్వతి పలుమార్లు తితిదే అధికారులకు లేఖ రాశారు. దీన్ని ఆమోదించకుంటే చర్చకు రావాల్సిందిగా కోరారు. దాంతో గురువారం ఉదయం తితిదే ఏర్పాటు చేసిన పండిత పరిషత్ కన్వీనర్ మురళీధర్‌శర్మతోపాటు తితిదే అదనపు ఈవో ధర్మారెడ్డి, రాణీసదాశివమూర్తి, ఏటీ షణశర్మ, శంకరనారాయణ, రామకృష్ణ చర్చలో పాల్గొన్నారు. హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్టు నుంచి గోవిందానంద సరస్వతి స్వామి పాల్గొన్నారు. ఎవరి వాదనలు వారు వినిపించారు. చివరికి ఏమీ తేల్చకుండానే చర్చను ముగించారు.

హనుమంతుని జన్మస్థలంపై చర్చిస్తున్న పండితులు

ఎవరితో సంప్రదించకుండానే ప్రకటిస్తారా?

గోవిందానంద సరస్వతి స్వామి మీడియాతో మాట్లాడుతూ హనుమంతుని జన్మస్థలంపై ప్రకటన చేసే ముందు కనీసం తమతో సంప్రదించలేదని చెప్పారు. పండిత పరిషత్‌కు ప్రామాణికతే లేదని ఆరోపించారు. ఇటువంటి ప్రకటన చేసే సమయంలో కనీసం పెద్ద జీయంగార్‌ను ఎందుకు పక్కన కూర్చోబెట్టుకోలేదని, ఆయనతో ఎందుకు సంప్రదించలేదని ప్రశ్నించారు.

పురాణాల ఆధారంగానే నిర్ణయం: మురళీధరశర్మ

పురాణ, చారిత్రక, శాసన ప్రమాణాలను పరిగణనలోకి తీసుకునే తిరుమలలో హనుమంతుడు జన్మించిన విషయాన్ని స్పష్టంగా పేర్కొన్నట్లు సంస్కృత విద్యాపీఠం వీసీ మురళీధరశర్మ పేర్కొన్నారు. 'కిష్కింధే హనుమంతుడి జన్మస్థలమని ఏ పురాణంలో ఉందో గోవిందానంద సరస్వతి స్వామి చెప్పలేదు. గోవిందానంద సరస్వతి స్వామికి కనీస ప్రాథమిక జ్ఞానం లేదు' అని శర్మ వివరించారు.

మదురైలో 72 గంటల్లో 500 పడకలతో ఏర్పాటు చేసిన కేంద్రం పరిశీలిస్తున్న తమిళనాడు సీఎం స్టాలిన్

వారంలో తగ్గుతుంది

10 లక్షల టీకా డోసులు పూర్తి

- జూన్ రెండో వారంలో స్పుత్నిక్ అందుబాటులోకి
- అపోలో అనుపత్రుల గ్రూప్ వెల్లడి

డ్లు విజయవాడ 541 | చిల్లరగా (డజను) 78

నేడు హనుమంతుని జన్మస్థలంపై చర్చ

సంస్కృత విద్యాపీఠంలో నిర్వహణ

ఈనాడు, తిరుపతి: అంజనాద్రే హనుమంతుని జన్మస్థలమని తితిదే నియమించిన కమిటీ ప్రకటించిన విషయం తెలిసిందే. ఈ నిర్ణయంపై ఎవరికైనా అభ్యంతరాలు ఉంటే చర్చకు సిద్ధమని అధికారులు ప్రకటించారు. తితిదే చేసిన ప్రకటన సరైంది కాదని, నిర్ణయాన్ని మార్చుకోవాలని కర్ణాటకలోని హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్టు తరఫున పలుమార్లు అధికారులకు లేఖలు రాశారు. ఈ నేపథ్యంలో హనుమంతుని జన్మస్థలంపై గురువారం తిరుపతిలోని సంస్కృత విద్యా పీఠంలో చర్చ నిర్వహించాలని నిర్ణయించారు. హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్టు తరఫున గోవిందానంద సరస్వతి స్వామీజీ, తితిదే తరఫున కమిటీ కన్వీనర్ మురళీధర్‌శర్మ పాల్గొనున్నారు.

పంపా క్షేత్రమే హనుమంతుని జన్మస్థలం

గోవిందానంద సరస్వతి స్వామీజీ

కర్ణాటకలోని పంపా క్షేత్రం కిష్కంధలోని అంజనాద్రి పర్వతమే హనుమంతుని జన్మస్థలంగా తమ వాదన నిరూపితమవుతుందని శ్రీ హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్టు వ్యవస్థాపకులు గోవిందానంద సరస్వతి స్వామీజీ అన్నారు. బుధవారం స్వామీజీ తిరుమలలో గోశాలను సందర్శించి మాట్లాడారు. గురువారం చర్చ ముగిసిన తర్వాత తితిదే పాలకమండలి సభ్యులను, ఉన్నతాధికారులను పంపాక్షేత్రం తీసుకెళతామని చెప్పారు.

జూన్ నుంచి అలిపిరి నడక మార్గం మూసివేత

తిరుపతి(తితిదే), న్యూస్‌టుడే: తిరుపతి నుంచి తిరుమలకు వెళ్లే అలిపిరి నడక మార్గాన్ని జూన్ 1 నుంచి ...

హనుమంతుని జన్మస్థలంపై తేలని నిర్ణయం

- తమ పరిశోధనలకు కట్టుబడి ఉన్న పండిత పరిషత్
- కిష్కింధే జన్మస్థలమన్న గోవిందానంద సరస్వతి స్వామి

ఈనాడు, తిరుపతి: హనుమంతుని జన్మస్థలంపై జరిగిన చర్చలో ప్రతిష్టంభన నెలకొంది. ఇటు తితిదే నియమించిన పండిత పరిషత్.. అటు హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్టు ఎవరికివారు తమ అభిప్రాయాలకు కట్టుబడి ఉండటంతో ఆంజనేయుడి జన్మస్థలంపై స్పష్టత రాలేదు. తాము చర్చలకు సిద్ధమని, పురాణాలను అనుసరించి నిర్ణయం ప్రకటించామని పరిషత్ కన్వీనర్, సంస్కృత విద్యాపీఠం వీసీ మురళీధరశర్మ స్పష్టం చేశారు. ఈ మొత్తం వ్యవహారాన్ని శృంగేరీ పీఠంతోపాటు కంచి పీఠాధిపతుల దృష్టికి తీసుకెళ్లనున్నట్లు హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్టు వ్యవస్థాపకులు గోవిందానంద సరస్వతి స్వామీజీ చెప్పారు. తిరుమలలోని అంజనాద్రే హనుమంతుని జన్మస్థలం అంటూ తితిదే ఏర్పాటు చేసిన పండిత పరిషత్ శ్రీరామనవమి నాడు ఆధారాలతో ప్రకటించింది. ఎవర్కైనా అభ్యంతరాలుంటే చర్చకు సిద్ధమంటూ ప్రకటించింది. ఈ నేపథ్యంలో కర్ణాటకలోని కిష్కింధ ప్రాంతమే హనుమంతుని జన్మస్థలమని హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్టు వ్యవస్థాపకులు గోవిందానంద సరస్వతి పలు మార్లు తితిదే అధికారులకు లేఖ రాశారు. దీన్ని ఆమోదించకుంటే చర్చకు రావాల్సిందిగా కోరారు. దాంతో గురువారం తితిదే ఏర్పాటు చేసిన పండిత పరిషత్ కన్వీనర్ మురళీధర్‌శర్మతోపాటు తితిదే అదనపు ఈవో ధర్మారెడ్డి, రాణిసదాశివ మూర్తి, విభీషణశర్మ, శంకరనారాయణ, రామకృష్ణ చర్చలో పాల్గొన్నారు. ద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్టునుంచి గోవిందానంద సరస్వతి స్వామి పాల్గొన్నారు. ఎవరి వాదనలు వారు వినిపించారు. ఏమి తేల్చకుండానే చర్చను ముగించారు.

బహిరంగ చర్చ పెట్టండి: గోవిందానంద

హనుమంతుడి జన్మస్థలం విషయంలో టీటీడీ చెప్పిన విషయాల్లో ప్రామాణికత లేదని గోవిందానంద స్వామి చెప్పారు. పండిత కమిటీతో చర్చల అనంతరం ఆయన మీడియాతో మాట్లాడారు. 'కాల విషయంలో టీటీడీకి స్పష్టత లేదు. మూడు తిథులు రాశారు. జన్మతేదీ లేనప్పుడు స్థలం ఎలా స్థిరీకరిస్తారు? హనుమ జన్మ విషయం పురాణాలతో తేల్చలేము. ఈ విషయంలో టీటీడీ ఎవరిని అడిగింది? కనీసం తిరుమల పెద్ద జీయర్‌ను అడిగారా' అని ప్రశ్నించారు. రామాయణంలో జన్మస్థలం పంపా అని ఉందని, అయితే రామాయణాన్ని టీటీడీ ప్రమాణంగా తీసుకోవడం లేదన్నారు. బహిరంగ చర్చ పెట్టమని అడిగితే ఎందుకు పెట్టడం లేదని ప్రశ్నించారు. పంపాకు పండిత కమిటీ వచ్చిందా? పీఠాధిపతుల సమక్షంలో నిర్ణయం జరగాలి. ఎవరు పడితే వారు కమిటీలు వేసి ఇలాంటి గంభీర విషయాల్లో నిర్ణయం చేయకూడదు. టీటీడీ విడుదల చేసిన పుస్తకంతో త్వరలోనే మీడియాకు అన్ని వివరాలు వెల్లడిస్తామని' గోవిందానంద సరస్వతి వ్యాఖ్యానించారు.

ವ

ಪ್ರಧಾನಿ ಮೋದಿ ಕೂಡಾ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಗೆ ಶರಣಾಗಿದ್ದಾರೆ

ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯದ ಆನೆಗೊಂದಿ ಗ್ರಾಮದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದ ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳವೆಂದು ಶ್ರದ್ಧೆಯಿಂದ ಇಂದು ದೇಶ, ವಿದೇಶಗಳ ಭಕ್ತರು ಬರುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಅಷ್ಟೆ ಅಲ್ಲ ಕೇಂದ್ರ ಮತ್ತು ವಿವಿಧ ರಾಜ್ಯದ ಸಚಿವರು ಕೂಡಾ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಅಂಜನಾದ್ರಿಗೆ ಆಗಮಿಸಿ ಹನುಮಂತನ ದರ್ಶನ ಪಡೆಯುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. 2019 ರ ಲೋಕಸಭೆ ಚುನಾವಣೆ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಬಳ್ಳಾರಿಗೆ ಬಂದಿದ್ದ ಪ್ರಧಾನಮಂತ್ರಿ ನರೇಂದ್ರ ಮೋದಿ ಅವರು ಸಹ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳಕ್ಕೆ ನಾನು ಬಂದಿದ್ದೇನೆ ಎಂದು ಲಕ್ಷ ಲಕ್ಷ ಜನರ ಮುಂದೆ ಬಹಿರಂಗವಾಗಿ ಹೇಳಿಕೆ ನೀಡಿದ್ದಾರೆ. ಇಂತಹ ಎಲ್ಲ ಸತ್ಯವನ್ನು ಮರೆ ಮಾಚುವ ಟಿಟಿಡಿ ಆಡಳಿತ ಮಂಡಳಿ ತಮ್ಮ ಸ್ವಲಾಭಕ್ಕಾಗಿ ಈಗ ತಿರುಮಲದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಹೆಸರು ಹರಿಬಿಟ್ಟಿದ್ದಾರೆ. ಇದನ್ನು ಭಕ್ತರು ಎಂದಿಗೂ ಒಪ್ಪುವುದಿಲ್ಲ ಎಂದು ಗೋವಿಂದನಾಂದ ಸರಸ್ವತಿ ಸ್ವಾಮಿಜೀ ತಿರುಪತಿಯ ಮಾಧ್ಯಮಗಳ ಮುಂದೆ ತಿಳಿಸಿದರು.

ಹಂಪಿಯಿಂದ ನಾಳೆ ರಥಯಾತ್ರೆ ಶುರು

ಹನ್ನೆರಡು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ರಾಷ್ಟ್ರದೆಲ್ಲೆಡೆ ಸಂಚಾರ, ಬಳಿಕ ರಾಮನಿಗೆ ಪಾದುಕೆ ಸಮರ್ಪಣೆ

ಹೊಸಪೇಟೆ: ಶ್ರೀರಾಮ ಪಾದುಕೆ ಹೊತ್ತು ಹಂಪಿಯಿಂದ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಸಾಗಲಿರುವ ರಥ.

● ಪಿ. ಸತ್ಯನಾರಾಯಣ

ಹೊಸಪೇಟೆ: ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ಶ್ರೀರಾಮ ಮಂದಿರಕ್ಕಾಗಿ ನಿಧಿ ಸಂಗ್ರಹ ಅಭಿಯಾನ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ ಬೆನ್ನಲ್ಲೇ ಈಗ ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನ ಪಾದುಕೆ ಹೊತ್ತ ರಥ ರಾಷ್ಟ್ರದೆಲ್ಲೆಡೆ ಸಂಚರಿಸಲಿದ್ದು ನಾಳೆ ದಕ್ಷಿಣಕಾಶಿ, ಐತಿಹಾಸಿಕ ಹಂಪಿಯಿಂದ ರಥಯಾತ್ರೆ ಆರಂಭಗೊಳ್ಳಲಿದೆ.

ಶ್ರೀರಾಮಜನ್ಮಭೂಮಿ ತೀರ್ಥಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್‌ನಲ್ಲಿ, ಭವ್ಯವಾದ ಶ್ರೀರಾಮ ಮಂದಿರ ನಿರ್ಮಾಣ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ರಾಜ್ಯದ ಕೆಲವರು ಪ್ರಮುಖ ಪಾತ್ರ ವಹಿಸಲಿದ್ದು, ಈಗ ಶ್ರೀರಾಮನ ಪಾದುಕೆ ಹೊತ್ತ ರಥಯಾತ್ರೆಯೂ ರಾಜ್ಯದಿಂದಲೇ ಆರಂಭಗೊಳ್ಳುತ್ತಿದೆ. 12 ವರ್ಷ ಪರ್ಯಟನೆ: ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್, ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ ಸ್ವಾಮೀಜಿ ನೇತೃತ್ವದಲ್ಲಿ 40 ಲಕ್ಷ ರೂ. ವೆಚ್ಚದಲ್ಲಿ ರಾಮನ ಪಾದುಕಾರಥ ನಿರ್ಮಾಣಗೊಂಡಿದೆ. ಸುಮಾರು ಹನ್ನೆರಡು ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ಈ ರಥ ರಾಷ್ಟ್ರದೆಲ್ಲೆಡೆ ಸಂಚರಿಸಲಿದ್ದು, ಬಳಿಕ ರಾಮನಿಗೆ ಪಾದುಕೆ ಸಮರ್ಪಣೆ ನಡೆಯಲಿದೆ.

ದುಬಾರಿ ಬೆಲೆಯ ಲಾರಿಯನ್ನೇ ರಥವಾಗಿ ಮಾರ್ಪಾಟು ಮಾಡಲಾಗಿದ್ದು ಮಹಾಶಿವರಾತ್ರಿಯಂದು ಅಯೋಧ್ಯೆಯಿಂದ ತರಲಾದ ರಾಮನ ಪವಿತ್ರ ಪಾದುಕೆಯನ್ನು ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಿಸಿ, ಪೂಜಿಸಲಾಗಿದೆ. ರಥದಲ್ಲಿ ರಾಮ, ಲಕ್ಷ್ಮಣ, ಸೀತಾಮಾತೆ, ಹನುಮ, ವಾಲಿ-ಸುಗ್ರೀವ, ಶಿವ ಮುಂತಾದ ದೇವರ ಮೂರ್ತಿಗಳನ್ನು ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಿಸಲಾಗಿದೆ. ದೀಪಾಲಂಕಾರ ದಿಂದ ಕಂಗೊಳಿಸುವ ಸುಂದರ ರಥ ಭಕ್ತರನ್ನು ತನ್ನತ್ತ ಸೆಳೆಯಲಿದೆ. ರಥಯಾತ್ರೆಯುದ್ದಕ್ಕೂ ರಾಮನ ಮಹಿಮೆ, ಹನುಮ ಭಕ್ತಿ ಸಾರುವ ಜೊತೆಯಲ್ಲೇ ಶ್ರೀರಾಮ ಮಂದಿರ ನಿರ್ಮಾಣಕ್ಕೆ ನಿಧಿ ಸಂಗ್ರಹ ಕಾರ್ಯವೂ ನಡೆಯಲಿದೆ. ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ

ರಥದ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯ

ಭವ್ಯ ರಥದ ಮೇಲೆ ಶ್ರೀ ಹನುಮಂತ ದೇವರ ಚಿತ್ರಗಳು, ಲೀಲೆಗಳು, ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯ ಪೌರಾಣಿಕ ಚರಿತ್ರೆಯನ್ನು ಬಿಂಬಿಸಲಾಗಿದೆ. ಶ್ರೀ ಹನುಮಂತ ದೇವರು ಜನಿಸಿದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತವನ್ನು ಮನೋಹರವಾಗಿ ನಿರ್ಮಿಸಲಾಗಿದೆ. ಮೂರು ಗೋಪುರ ಹಾಗೂ ನಾಲ್ಕು ಗರ್ಭಗೃಹಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಈ ರಥದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀ ಪಂಪಾವಿರೂಪಾಕ್ಷೇಶ್ವರ ಸ್ವಾಮಿ, ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಹನುಮಂತ ಸಮೇತ ಸೀತಾರಾಮ ಲಕ್ಷ್ಮಣ, ಶ್ರೀ ಬಾಲ ಆಂಜನೇಯ ಸಹಿತ ಅಂಜನಿದೇವಿ ಮಾತೆಯ, ಶ್ರೀರಾಮ ಆಂಜನೇಯ ದೇವರ ವಿಗ್ರಹಗಳನ್ನು ಸುಂದರವಾಗಿ ನಿರ್ಮಿಸಲಾಗಿದೆ.

ಕಳೆದ ವಿಜಯದಶಮಿಯ ದಿನ ಈ ನೂತನ ರಥ ನಿರ್ಮಾಣಕ್ಕೆ ಚಾಲನೆ ನೀಡಲಾಗಿತ್ತು. ಇದೀಗ ರಥ ಪೂರ್ಣಗೊಂಡಿದ್ದು ದೇಶದೆಲ್ಲೆಡೆ ಸಂಚರಿಸಲು ಅಣಿಯಾಗಿದೆ.

ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ ಪ್ರವೇಶ: ಹಂಪಿಯಿಂದ ಹೊರಡಲಿರುವ ರಥಯಾತ್ರೆ ಮೊದಲು ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆಯನ್ನು ಪ್ರವೇಶಿಸಲಿದೆ. ಸುಮಾರು ಹತ್ತು ದಿನಗಳ ಕಾಲ ಜಿಲ್ಲೆಯ ತಾಲೂಕು-ಪ್ರಮುಖ ಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿ ರಾಮಪಾದುಕೆ ಮೆರವಣಿಗೆ ನಡೆಯಲಿದೆ. ಈ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ರಾಮಭಜನೆ, ಕೀರ್ತನೆ, ವಿಶೇಷ ಪೂಜೆಗಳು ನಡೆಯಲಿವೆ.

ಮೂರು ಪಾದುಕೆ: ಅಯೋಧ್ಯೆಯಿಂದ ತರಲಾದ ಶ್ರೀರಾಮನ ಮೂರು ಪವಿತ್ರ ಪಾದುಕೆಗಳನ್ನು ಅಯೋಧ್ಯೆಯ ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್ ಕಚೇರಿ, ಹಂಪಿಯ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತ ಹಾಗೂ ಈಗ ರಥದಲ್ಲಿ ಪಾದುಕೆಯನ್ನು ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಿಸಲಾಗಿದೆ.

ರಾಜ್ಯದ ಪ್ರತಿ ಜಿಲ್ಲೆಯಲ್ಲೂ ಸುಮಾರು 10 ದಿನಗಳ ಕಾಲ

ಕಿಷ್ಕಿಂಧ ರಥ

ಹನುಮನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಹಂಪಿಯ ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಲಿರುವ ಬೃಹತ್ ಶ್ರೀ ಹನುಮ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಮಂದಿರ, ಪ್ರಪಂಚದಲ್ಲಿ ಅತಿ ಎತ್ತರ 215 ಮೀಟರ್ ಉದ್ದದ ಶ್ರೀ ಹನುಮಂತ ದೇವರ ಮೂರ್ತಿ ಹಾಗೂ ಶ್ರೀ ರಾಮಾಯಣ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಗ್ರಾಮ ನಿರ್ಮಾಣದ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಕಿಷ್ಕಿಂಧ ರಥ ದೇಶದೆಲ್ಲೆಡೆ ಸಂಚಾರ ಮಾಡಲಿದೆ.

“ ರಾಮನ ಬಂಟ ಹನುಮನ ನಾಡು ಹಂಪಿ ಕ್ಷೇತ್ರದಿಂದ ರಾಮನ ಪಾದುಕೆ ಹೊತ್ತ ರಥಯಾತ್ರೆ ಮಾ. 15ರಂದು ಆರಂಭಗೊಳ್ಳಲಿದೆ. ಮಹಾಶಿವರಾತ್ರಿಯಂದು ರಥದಲ್ಲಿ ರಾಮನ ಪಾದುಕೆ ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪಿಸಿ ಪೂಜೆ ಸಲ್ಲಿಸಲಾಗಿದೆ. ಹಂಪಿಯಿಂದ ಆರಂಭವಾಗುವ ರಥಯಾತ್ರೆ 12 ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ರಾಷ್ಟ್ರ ಪರ್ಯಟನೆ ನಡೆಸಿ, ಬಳಿಕ ರಾಮ ಮಂದಿರ ಸೇರಲಿವೆ.

● ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ ಸ್ವಾಮೀಜಿ, ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್

ರಥಯಾತ್ರೆ ನಡೆಸಲು ಯೋಜನೆ ರೂಪಿಸಲಾಗಿದೆ. ರಾಷ್ಟ್ರದ ಎಲ್ಲ ಜಿಲ್ಲೆಗಳ ಪ್ರತಿ ಗ್ರಾಮಗಳ ಸಂಚಾರ ಪೂರ್ಣಗೊಳಿಸಲು ಸುಮಾರು 12 ವರ್ಷಗಳಾಗಬಹುದು ಎಂದು ಅಂದಾಜಿಸಲಾಗಿದೆ. ಈ ವೇಳೆಗೆ ಅಯೋಧ್ಯೆ ಶ್ರೀರಾಮ ಮಂದಿರವೂ ಪೂರ್ಣಗೊಂಡಿರುತ್ತದೆ. ಆಗ ಪಾದುಕೆಯನ್ನು ಹನುಮನ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ರಾಮದೇವರಿಗೆ ಸಮರ್ಪಣೆ ಮಾಡುವ ಸಂಕಲ್ಪ ಮಾಡಲಾಗಿದೆ.

ಉದಯವಾಣಿ Sun, 14 March 2021
https://epaper.udayavani.com/c/59067986

అయోధ్య వరకూ రథయాత్ర

రూ.40 లక్షలతో సిద్ధమైన వాహనం-నేడు హంపీలో ప్రారంభం

హొసపేట: హనుమంతుడి జన్మస్థలంగా విశ్వసిస్తున్న కిష్కింధ పరిసరాల్లో ఉన్న హంపీ నుంచి శ్రీరాముడి జన్మస్థానమైన అయోధ్య వరకూ జగదభిరాముడి పాదుకలతో రథయాత్ర సోమవారం (నేడు) హంపీలో ప్రారంభంకానుంది. కొత్త హంపీ(పునరావాస కేంద్రం)లోని శ్రీహనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్టు ఆధ్వర్యంలో రూ.40 లక్షలు ఖర్చుచేసి రథయాత్ర కోసం వాహనాన్ని సిద్ధం చేశారు. అందులో అయోధ్య నుంచి తీసుకొచ్చిన శ్రీరాముడి పాదుకలను పెట్టి, రథయాత్ర సాగిస్తారు. రథం లోపల శ్రీరాముడు, హనుమంతుడి జన్మ చరిత్రాలను తెలిపే బొమ్మలను, ప్రతిమలను తీర్చిదిద్దారు. హంపీ నుంచి ప్రారంభమయ్యే రథయాత్ర దేశమంతటా పర్యటించి 12 ఏళ్ల అనంతరం అయోధ్య చేరుకుంటుందని ట్రస్టు నిర్వాహకులు గోవిందానంద సరస్వతి స్వామీజీ తెలిపారు. అప్పుడు ఆ పాదుకలను అయోధ్యలోని శ్రీరాముడి సన్నిధిలో సమర్పిస్తారు. రథయాత్ర మార్గంలో రాముడు, హనుమంతుడి మహిమలను చాటే భజనలు, నృత్య కార్యక్రమాలను ఏర్పాటు చేశారు. ఆ రథంలో రామాయణంలో ప్రముఖ పాత్రలైన వాలి, సుగ్రీవుడి ప్రతిమలను ఉంచారు. రాత్రిపూట రథానికి విద్యుద్దీపాలతో అలంకరిస్తారు.

భక్తాగ్రేసరుడిని ఆలింగనం చేసుకుంటూ..

సీతారామలక్ష్మణుల ప్రతిమలు

గత ఏడాది విజయదశమి నాడు కొప్పళలోని అంజనాద్రిలో రథ నిర్మాణం పూర్తి చేశారు. ఇటీవల శివరాత్రి రోజు ఈ రథానికి హంపీలో పూజలు చేశారు. మార్గంలో పెద్ద ఎత్తున రాముడు, హనుమంతుడి భక్తులు పాల్గొనే అవకాశం

అయోధ్యకు ర...

ఉందని ట్రస్టు నిర్వాహకులు తెలిపా... కొప్పళ జిల్లాలో ప్రవేశించి పది రో... పది రోజుల వంతున రథయాత్ర ...

ಆನೆಗೊಂದಿಯ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ

Hampi is the birth Place of Hanuman are not true. Hampi is kishkinda while Venkatachalam is Anjanadri.

ಪುರಾವೆ

■ ಡಾ. ಶರಣಬಸಪ್ಪ ಕೋಲ್ಕಾರ, ಇತಿಹಾಸ ಸಂಶೋಧಕರು, ಗಂಗಾವತಿ

ಕಾರ್ತಿಕೇಯ ವನ

ಚೆಂಚಲ ಕೋಟೆ

ವಿಜಯನಗರ ದಾಸರ ನಂಬಿಕೆ

ಉದಯವಾಣಿ Sat, 01 May 2021 https://epaper.udayavani.com/c/60157320

ಸಮರ್ಥವಾಣಿ
ಉಜ್ವಲ ಕನ್ನಡ ದಿನಪತ್ರಿಕೆ
08/05/2021
ಶನಿವಾರ
Saturday
ಕೊಪ್ಪಳ–ರಾಯಚೂರು–ಬಳ್ಳಾರಿ
ಆವೃತ್ತಿಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಕಟಿತ
SAMARTHAVANI
Kannada Daily Newspaper
Koppal-Raichur-Ballary Editions
2

ಕೊಪ್ಪಳದ ಕಿಷ್ಕಿಂದೆಯ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತ ಪ್ರದೇಶವೇ ಹನುಮನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ

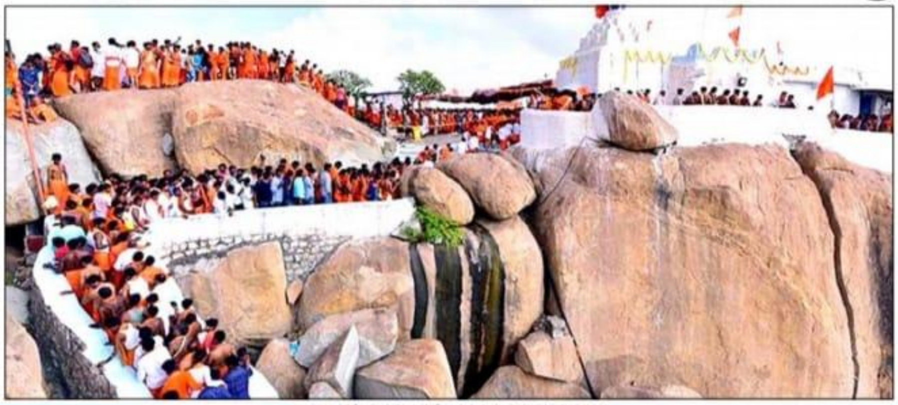

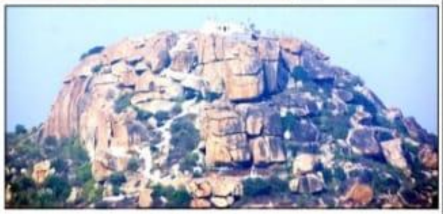

ಡಾ|| ಸಿದ್ದಲಿಂಗಪ್ಪ ಕೊಟ್ನೆಕಲ್
ಹಿರಿಯ ಶ್ರೇಣಿ
ಕನ್ನಡ ಉಪನ್ಯಾಸಕರು
ಶ್ರೀ ಗವಿಸಿದ್ದೇಶ್ವರ ಪದವಿ ಪೂರ್ವ
ಮಹಾವಿದ್ಯಾಲಯ, ಕೊಪ್ಪಳ.
(9448570340)

ಸಂಪೂರ್ಣ ಲಾಕ್ ಡೌನ್ ಮಾಡಲು ಮೀನಳ್ಳಿ ತಾಯಣ್ಣ ಒತ್ತಾಯ

ಜನ ಸಂಪರ್ಕ ಕೇಂದ್ರದ

హనుమ జన్మస్థలంపై రగడ

- **టీటీడీ ప్రకటనను తప్పుబట్టిన హనుమద్ జన్మభూమి ట్రస్ట్**
- **టీటీడీ తీరును ఆక్షేపిస్తూ 6 పేజీల లేఖ**

తిరుమల, మే 7(ఆంధ్రజ్యోతి): తిరుమల అంజనాద్రే ఆంజనేయస్వామి జన్మస్థలం అంటూ టీటీడీ చేసిన ప్రకటనపై రగడ మొదలైంది. కర్ణాటకలోని తుంగభద్ర తీర్థంలో ఉన్న కిష్కింధ పర్వతమే ముమ్మాటికీ హనుమంతుడి జన్మస్థలమని పేర్కొంటూ హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్టు ఏప్రిల్ 30న టీటీడీకి రాసిన ఆరు పేజీల లేఖ తాజాగా వెలుగులోకి వచ్చింది. హనుమ జన్మస్థలంపై టీటీడీ సమర్పించిన నివేదిక పూర్తిగా అవాస్తవమని, పురాణ ఇతిహాసాలను తమ స్వార్థానికి వాడుకుంటూ అసత్యాలను సత్యాలుగా చిత్రీకరిస్తున్న టీటీడీ అధికారుల శ్రమను చూస్తే జాలి వేస్తోందని అందులో పేర్కొంది. తప్పు తెలుసుకుని సరిదిద్దుకునేందుకు 8 రోజుల సమయం ఇస్తున్నామని, తమ లేఖకు వివరణ ఇవ్వకపోతే తిరుమలకు వచ్చి టీటీడీ నివేదిక అసత్యమని నిరూపిస్తామని హెచ్చరించింది.

హిందువుల మనోభావాలను దెబ్బతీశారు

- **టీటీడీకి 'పశ్చిమ' సామాజిక కార్యకర్త నోటీసులు**

ఏలూరు క్రైం, మే 7: హిందువుల మనోభావాలను దెబ్బతీసే విధంగా ఆంజనేయస్వామి జన్మస్థలాన్ని టీటీడీ ప్రకటించడం చట్ట విరుద్ధమని పశ్చిమగోదావరి జిల్లా ఏలూరుకు చెందిన సామాజిక కార్యకర్త టీకేఎస్ఆర్ అయ్యంగార్ పేర్కొన్నారు. ఈ మేరకు తన న్యాయవాది సీపీవీఎస్ రామానుజాచార్యులు ద్వారా టీటీడీకి లీగల్ నోటీసులు పంపించారు. పురాణాలు, ఇతిహాసాలు, వాల్మీకి రామాయణం ప్రకారం హనుమ కర్ణాటక రాష్ట్రంలో తుంగభద్ర నది పక్కన పంపా సరోవరం దగ్గరలోని అంజనాద్రి(కిష్కింధ పర్వతం)పై జన్మించారని స్పష్టంగా ఉందన్నారు. టీటీడీ కొంతమందితో కమిటీ ఏర్పాటు చేసి తిరుపతిలోని అంజనాద్రిపైనే ఆంజనేయస్వామి జన్మించారని ప్రకటించడం చట్ట విరుద్ధమన్నారు.

ಹೊಸ ದಿಗಂತ

7

19 Apr 2021

ಟಿಟಿಡಿಯವರು ಹನುಮನ ಜನ್ಮಭೂಮಿಯೆಂದು ಘೋಷಿಸುತ್ತಾರೆಂದು ಹೇಳಲಾದ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಕಿಷ್ಕಿಂದೆ ಕುರಿತ ಶಾಸನ ಮತ್ತು ಸಾಹಿತ್ಯದ ಉಲ್ಲೇಖಗಳು ಎಷ್ಟಿವೆ? ಆದರೆ ಕರ್ನಾಟಕದ ಶಾಸನ ಮತ್ತು ಸಾಹಿತ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಕನ್ನಡ ಕುಲಪುಂಗವ ಹನುಮನನ್ನು ಅತಿಶಯವಾಗಿ ಹೊಗಳಲಾಗಿದೆ.

ಹನುಮನುದಿಸಿದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಯಾವುದು?

• ಡಾ. ಡಿ. ಸ್ಮಿತಾರೆಡ್ಡಿ

'ಹನುಮನುದಿಸಿದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಯಾವುದು?' ಇದು ಇತ್ತೀಚೆಗೆ ಎದ್ದಿರುವ ವಿವಾದಾತ್ಮಕ ವಿಷಯ. ಇಲ್ಲಿಯವರೆಗೆ ಹನುಮಂತ ಹಂಪೆ ಪರಿಸರದ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯಲ್ಲಿಯೇ ಜನಿಸಿದ್ದ, ಅದೇ ಕಿಷ್ಕಿಂದಾ ಪ್ರದೇಶ ಎಂದು ನಿರ್ವಿವಾದವಾಗಿ ನಂಬಲಾದ ಸಂಗತಿಯಾಗಿತ್ತು. ಆದರೆ ಇತ್ತೀಚೆಗೆ ಟಿಟಿಡಿಯವರು ತಿರುಮಲದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಹನುಮನ ಹುಟ್ಟೂರು ಎಂದು ಸಾಧಿಸಲು ವಿದ್ವಾಂಸರನ್ನೊಳಗೊಂಡ ಒಂದು ಸಮಿತಿಯ ಮೂಲಕ ರುಜುವಾತುಪಡಿಸಲು ಹೊರಟಿದೆ ಎಂದು ಪತ್ರಿಕೆಗಳಲ್ಲಿ ವರದಿಯಾಗಿದೆ.

ಭಾರತದ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಪ್ರದೇಶಗಳ ಜನರ ನಂಬಿಕೆಗಳನ್ನು ಗಮನಿಸಿದಾಗ, ರಾಮಾಯಣ ಮತ್ತು ಮಹಾಭಾರತದ ಕತೆಗಳು ಭಾರತದ ಎಲ್ಲರ ಮನದ, ಎಲ್ಲ ಪರಿಸರಗಳ, ಎಲ್ಲ ಊರುಗಳ ಕತೆಯೂ ಹೌದು. ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಊರಿನ ಐತಿಹ್ಯವೂ ಒಂದಲ್ಲ ಒಂದು ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ರಾಮಾಯಣ ಮತ್ತು ಮಹಾಭಾರತಗಳೊಂದಿಗೆ ತಳುಕು ಹಾಕಿಕೊಂಡಿರುತ್ತದೆ. ಆದರೆ ಕೆಲವು ಸ್ಥಳಗಳ ಮೂಲ ನೆಲಸಿಗರ ದಟ್ಟವಾದ ನಂಬಿಕೆ; ಆ ನಂಬಿಕೆಗೆ ಇಂಬುಕೊಡುವಂತಹ ತುಲನಾತ್ಮಕ ಮತ್ತು ಪೂರಕ ಸಂಗತಿಗಳು ಮತ್ತು ಸನ್ನಿವೇಶಗಳು ಅಂಥ ಘಟನೆಗಳು ಒಂದು ನಿರ್ದಿಷ್ಟ ಪರಿಸರದಲ್ಲಿ ನಡೆದಿದ್ದವು ಎಂಬುದನ್ನು ಪೋಷಿಸುತ್ತವೆ.

ಹಾಗೆ ನೋಡಿದರೆ, ಸಂಕಾಲಿಯಾ, ಹೀರಾಲಾಲ ಮುಂತಾದ ವಿದ್ವಾಂಸರ ಪ್ರಕಾರ ರಾಮಾಯಣದ ಭೌಗೋಳಿಕ ಹರಹು ಶ್ರೀಲಂಕಾವಿರಲಿ, ದಕ್ಷಿಣ ಭಾರತಕ್ಕೂ ವಿಸ್ತರಿಸುವುದಿಲ್ಲ. ಅವರ ಪ್ರಕಾರ ನರ್ಮದಾ ನದಿಯ ಉತ್ತರಕ್ಕೆ ಘೋಂಡ್ ಆದಿವಾಸಿಗಳಿರುವ ಛೋಟಾ ನಾಗಪುರ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿರುವ ಲಂಕೆಯೇ ರಾಮಾಯಣದ ಲಂಕೆ.

ಹಿರಿಯ ಪ್ರಾಕ್ತನ ವಿದ್ವಾಂಸರೂ ಮತ್ತು ಇತಿಹಾಸಕಾರರಾದ ಡಾ. ಅ. ಸುಂದರರವರು ಪ್ರಾಗೈತಿಹಾಸಿಕ ಪುರಾವೆಗಳು ಮತ್ತು ಶಾಸನ ಹಾಗೂ ಸಾಹಿತ್ಯ ಆಕರಗಳ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಹಂಪಿ ಪರಿಸರದ ಕಿಷ್ಕಿಂದೆ ಹನುಮಂತನ ತವರು ಎಂದು ಆಧಾರಪೂರ್ವಕವಾಗಿ ತರ್ಕಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಹಂಪೆಯ ಸಮೀಪದ ಹಿರೆಬೆನಕಲ್ಲು ಮತ್ತು ಮಲ್ಲಾಪುರದ ಗವಿಗಳ ವರ್ಣಚಿತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಉದ್ದನೆ ಬಾಲವಿರುವ ಮನುಷ್ಯರ ಚಿತ್ರಗಳಿವೆ. ಉದ್ದನೆಯ ಬಾಲವನ್ನು ಜೋಡಿಸಿಕೊಂಡು ವಿಶಿಷ್ಟ ಕಟ್ಟಳೆಯನ್ನು ನೆರವೇರಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಜನರ ವರ್ಗವನ್ನು 'ವಾನರ' ಎಂದು ಕರೆಯುತ್ತಿದ್ದರೇನೋ ಎಂದು ಅ. ಸುಂದರ ಅವರು ಅಭಿಪ್ರಾಯಪಡುತ್ತಾರೆ. ಅಲ್ಲದೆ ಇಲ್ಲಿಯ ಪುರಾತತ್ತ್ವ ಅವಶೇಷಗಳ ಆಧಾರದ ಮೇಲೆ ಕನಿಷ್ಠ 4000 ವರ್ಷಗಳಿಂದಲೂ ಈ ಪ್ರದೇಶ ಜನನಿಬಿಡವಾಗಿತ್ತೆಂದು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ.

ಹಂಪೆಯ ಪರಿಸರದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚಿನ ಸಂಖ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಗೈತಿಹಾಸಿಕ ನೆಲೆಗಳು, ಗುಹಾ ರೇಖಾಚಿತ್ರಗಳು ಕಂಡುಬರುತ್ತವೆ. ಕರ್ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಇಂತಹ ಇತಿಹಾಸ ಪೂರ್ವ ಸ್ಥಳಗಳನ್ನು ಗುರುತಿಸುವಾಗ ಸ್ಥಳೀಯರು ಅವುಗಳನ್ನು ಪಾಂಡವರ ಗುಡಿಗಳು, ಪಾಂಡವರ ಗುಹೆಗಳು, ಕುಂತಿಕಲ್ಲು, ಭೀಮನ ಪಾದ ಎಂದು ಕೇವಲ ಮಹಾಭಾರತದ ಕಥಾ ಪಾತ್ರಗಳ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಗುರುತಿಸುತ್ತಾರೆ.

ಆದರೆ ಹಂಪೆ ಪರಿಸರದಲ್ಲಿ ಕಂಡುಬರುವ ಪ್ರಾಗೈತಿಹಾಸಿಕ ನೆಲೆಗಳ ಜಾಗವನ್ನು ರಾಮಾಯಣ ಪಾತ್ರಗಳ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಗುರುತಿಸಲಾಗುತ್ತಿದೆ. ಎಂದರೆ, ಅಲ್ಲಿಯ ಸ್ಥಳಗಳನ್ನು ವಾಲಿಯ ಭಂಡಾರ, ವಾಲಿಕಾಷ್ಠ, ಸುಗ್ರೀವ ಗುಹೆ, ಸೀತೆ ಸೆರಗು, ಕಿಷ್ಕಿಂದೆ, ಅಂಜನಾದ್ರಿ, ಶಬರಿಗುಹೆ ಎಂದು ಗುರುತಿಸಲಾಗುತ್ತದೆ. ಇದು ಅಲ್ಲಿಯ ಜನರ ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿರುವ ಪರಂಪರಾನುಗತ ನಂಬಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಪುಷ್ಟೀಕರಿಸುತ್ತದೆ. ಜನಪದರ ನಂಬಿಕೆಗಳಿಗೆ ಸಾವಿಲ್ಲ, ಅದು ಬೇರೆ ಬೇರೆ ರೂಪಗಳಲ್ಲಿ ಜೀವಂತವಾಗಿರುತ್ತದೆ.

ಹಂಪೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿ ಹೇಮಕೂಟ, ಮಾಲ್ಯವಂತ, ಋಷ್ಯಮೂಕ ಪರ್ವತ, ಮಾತಂಗ ಪರ್ವತ ಹಾಗೂ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತ ಎಂಬ ಐದು ಪರ್ವತಗಳಿವೆ ಈ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹನುಮನು ಜನಿಸಿದ ಸ್ಥಳವೆಂಬ ನಂಬಿಕೆ ಪ್ರಾಚೀನ ಕಾಲದಿಂದಲೂ ಜನಜನಿತವಾಗಿದೆ.

ರಾಮಾಯಣದ ಕಿಷ್ಕಿಂದಾ ಕಾಂಡದಲ್ಲಿ ಕಿಷ್ಕಿಂದೆಯನ್ನು 'ನಗರೀ ರಮ್ಯಾ ಕಿಷ್ಕಿಂದಾಗಿರಿ ಗಹ್ವರ್... ಗುಹಾಂ ಘೋರಾಂ ಕಿಷ್ಕಿಂದಾಂ ...ರಮ್ಯಾಂ ರತ್ನ ಸಮಾಕೀರ್ಣಾಂ...ಮಹತಿ ಗುಹಾಂ... ಹರ್ಮ್ಯಪಥ್ರಸಾದಸಂಬಂಧಾಂ ನಾನಾ ವರ್ಣೋಪವ ಶೋಭಿತಾಂ...' ಎಂದು ವರ್ಣಿಸುತ್ತದೆ. ಈ ವರ್ಣನೆಯು ಹಂಪಿ ಭೌಗೋಳಿಕ ಪರಿಸರದೊಂದಿಗೆ ತಾಳೆಯಾಗುವುದು ಕಾಕತಾಳೀಯವಲ್ಲ ಎನಿಸುತ್ತದೆ.

'ಕಿಷ್ಕಿಂದಾ' ನಗರದ ಹೆಸರು ಕರ್ನಾಟಕದ ಹಲವು ಶಾಸನಗಳಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖಗೊಂಡಿದೆ. ವಿಕ್ರಮಾದಿತ್ಯನ ಕ್ರಿ.ಶ. 1069ರ ದೇವಿಘಾಟದ ಶಾಸನದಲ್ಲಿ (ಹಂಪೆಯಿಂದ ಸುಮಾರು 10ಕಿ.ಮೀ. ದೂರದಲ್ಲಿದೆ) 'ತುಂಗಭದ್ರ ತಟದ ಬಡೆಗೆ ಕಿ಼ ಕಿಂಧಮೀ ಪರ್ವತ' ಎಂದು ವರ್ಣಿಸಲಾಗಿದೆ. ಶಿರಸಂಗಿಯ ಕ್ರಿ.ಶ. 1108ರ ಶಾಸನದಲ್ಲಂತೂ ಕಿಷ್ಕಿಂದೆಯನ್ನು ಸವಿವರವಾಗಿ ವರ್ಣಿಸಲಾಗಿದೆ. ಅದರ ಪ್ರಕಾರ ಭರತಖಂಡದಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿ ಹಿಮವತ್ಪರ್ವತ, ವಿಂಧ್ಯಶೈಲ, ಕಿಷ್ಕಿಂದಾದ್ರಿ ಎಂಬ ಮೂರು ಪರ್ವತಗಳಿದ್ದು ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಕಿಷ್ಕಿಂದ ಗಿರೀಂದ್ರವೇ ವಿಸ್ತಾರದಲ್ಲಿ ದೊಡ್ಡದು ಎಂದು ವರ್ಣಿಸಿದೆ. ಇದಲ್ಲದೆ, ಶಿವಮೊಗ್ಗ, ತೀರ್ಥಹಳ್ಳಿ ತಾಲೂಕು, ಗೌರಿಬಿದನೂರು ತಾಲೂಕು, ಬೆಂಗಳೂರಿನ ಶಾಸನಗಳಲ್ಲೂ ಕಿಷ್ಕಿಂದಾ ನಗರ, ಕಿಷ್ಕಿಂದಾ ನಾಡು ಮತ್ತು ಕಿಷ್ಕಿಂದಾ ಪರ್ವತಗಳ ಉಲ್ಲೇಖಗಳಿವೆ.

ಹಂಪೆಯ ಸುತ್ತಲಿನ ಇತರ ಸ್ಥಳಗಳ ಸ್ಥಳನಾಮಗಳೂ ರಾಮಾಯಣದ ಪಾತ್ರಗಳ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿಯೇ ವ್ಯುತ್ಪತ್ತಿಯಾಗಿವೆ. ಆನೆಗೊಂದಿಯು ಮೂಲತಃ ವಾಲಿಯ ಮಗ ಅಂಗದನ ನಗರವಾಗಿದ್ದರಿಂದ ಅದರ ಹೆಸರು ಅಂಗದಿಯಾಗಿತ್ತು. ನಂತರ ಆಗೊಂದಿಯಾಯಿತೆಂದು ಹನುಮಂತ ಸೀತೆಯ ಜಾಡನ್ನು ಪತ್ತೆಹಚ್ಚಿ ಮರಳಿ ಬರುವವರೆಗೂ ರಾಮ ಲಕ್ಷ್ಮಣರು ಇಲ್ಲಿಯೆ ಮಾಲ್ಯವಂತ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿಯೇ ಇದ್ದರೆಂದು ನಂಬಿಕೆ ಇದೆ. ರಾಮ ರಾವಣನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ಸೀತೆಯೊಂದಿಗೆ ಹಿಂತಿರುಗುವಾಗ ಅಲ್ಲಿ ಇಳಿದು ಸೀತೆಯನ್ನು ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಪರಿಚಯಿಸಿ ಪ್ರಯಾಣ ಮುಂದುವರೆಸಿದನೆಂದು ಐತಿಹ್ಯವಿದೆ. ಹಂಪೆಯಲ್ಲಿ ಸೀತಾರಹಿತ ರಾಮನ ದೇವಾಲಯ ಮತ್ತು ಸೀತಾಸಹಿತ ರಾಮನ ದೇವಾಲಯ ರುವುದುಈ ಕಾರಣಕ್ಕೇ ಎಂದು ಹೇಳಲಾಗುತ್ತದೆ..

ಇನ್ನು ಹನುಮಂತನ ಆರಾಧನೆಯ ಬಗ್ಗೆ ಹೇಳುವುದಾದರೆ, ಇಂದು ಉತ್ತರ ಭಾರತದಾದ್ಯಂತ ಹನುಮ ಪೂಜೆಗೊಳ್ಳುತ್ತಿದ್ದರೂ, ಅವನು ಮೂಲತಃ ದಕ್ಷಿಣ ಭಾರತಕ್ಕೆ ಮಾತ್ರ ಸೀಮಿತವಾಗಿದ್ದ ದೇವರು. ಅದರಲ್ಲೂ ಮೂಲತಃ ಕರ್ನಾಟಕದ ಹಂಪಿ ಪರಿಸರಕ್ಕೆ ಪರಿಮಿತವಾಗಿದ್ದ ದೇವರು. ಶಿವ ಕ್ಷೇತ್ರವಾದ ಹಂಪೆ ಪರಿಸರದಲ್ಲಿ 100ಕ್ಕೂ ಹೆಚ್ಚಿನ ಸಂಖ್ಯೆಯ ಹನುಮಂತನ ಶಿಲ್ಪಗಳು ದೊರೆಯುತ್ತವೆ. ಭಾರತದ ಬೇರೆಲ್ಲೂ ಇಷ್ಟು ಅಗಾಧ ಪ್ರಮಾಣದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತ ಆರಾಧನೆಗೊಂಡ ನಿದರ್ಶನಗಳು ಇಲ್ಲ. ಕರ್ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಕ್ರಿ.ಶ. 7ನೆಯ ಶತಮಾನದಿಂದಲೂ ರಾಮಾಯಣ ಮತ್ತು ಮಹಾಭಾರತದ ಕಥಾನಕ ಪಟ್ಟಿಕಾ ಶಿಲ್ಪಗಳು ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಕಂಡುಬರುತ್ತವೆ. ಆದರೆ, ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ ಹನುಮಂತನ ಶಿಲ್ಪಗಳು 12ನೆಯ ಶತಮಾನದಿಂದೀಚೆಗೆ ಕಂಡುಬರುತ್ತವೆ. 13ನೆಯ ಶತಮಾನಾನಂತರ ವ್ಯಾಪಕವಾಗಿ ದೊರೆಯುತ್ತದೆ. ಶ್ರೀ ವಿಜಯೀಂದ್ರ ತೀರ್ಥರ ಶ್ರೀವ್ಯಾಸರಾಜ ಸ್ತೋತ್ರಂ ಪ್ರಕಾರ ವ್ಯಾಸರಾಯರು 732 ಹನುಮಂತನ ವಿಗ್ರಹಗಳನ್ನು ಸ್ಥಾಪಿಸುತ್ತಾರೆ. ಹೀಗಾಗಿ ವ್ಯಾಸರಾಯರಿಂದ ಹನುಮಂತನ ಶಿಲ್ಪಗಳ ಸ್ಥಾಪನೆ ಮತ್ತು ಆರಾಧನೆ ಜನಪ್ರಿಯವಾಗುತ್ತದೆ.

ಹಂಪೆಯ ಹನುಮಂತ ತುಂಬಾ ಜನಪ್ರಿಯನಾಗಿದ್ದ. ತೆಲುಗಿನ ಕೀರ್ತನಕಾರ ತಾಳ್ಳಪಾಕ ಅನ್ನಮಾಚಾರ್ಯ ವಿಜಯನಗರದ ಪೆದ್ದಂಗಡಿ ವೀದಿ ಪೆದ್ದ ಹನುಮಂತನನ್ನು ಹಲವಾರು ಕೀರ್ತನೆಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ತುತಿಸುತ್ತಾನೆ. ಹಂಪೆ-ಆನೆಗೊಂದಿ ಪರಿಸರದ ದೇವಾಲಯಗಳಲ್ಲಿ ಕಿಷ್ಕಿಂದಾಕಾಂಡ, ಸುಂದರಕಾಂಡ, ಯುದ್ಧಕಾಂಡಗಳಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ವಿವರವಾದ ಶಿಲ್ಪಗಳಿವೆ. ಹಜಾರರಾಮ ದೇವಾಲಯದಲ್ಲಂತೂ ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ರಾಮಾಯಣದ ಕಥಾನಕ ಶಿಲ್ಪಗಳೇ ತುಂಬಿದೆ. ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಂತೂ ಕನ್ನಡ ಕುಲಪುಂಗವ ಹನುಮನನ್ನು ಅತಿಶಯವಾಗಿ ಹೊಗಳಲಾಗಿದೆ.

ಒಟ್ಟಾರೆಯಾಗಿ ಶತಮಾನಗಳಿಂದ ಜನರ ಮನೋಪಾತಳಿಯಲ್ಲಿ ಜೀವಂತವಾಗಿ ಪ್ರವಹಿಸುತ್ತಿರುವ ನಂಬಿಕೆಗಳಿಗೆ ಇತಿಹಾಸ ಆಕರಗಳೂ ಸಾಕಷ್ಟು ಪೂರಕ ಸಾಮಗ್ರಿಗಳನ್ನು ಒಗಿಸಿದಾಗ ಆ ನಂಬಿಕೆ ಮತ್ತಷ್ಟು ಬಲಗೊಳ್ಳುತ್ತದೆ.

ಕೆಲವು ಸಂದೇಹಗಳು:

1.ಟಿಟಿಡಿಯವರು ಹನುಮನ ಜನ್ಮಭೂಮಿಯೆಂದು ಘೋಷಿಸುತ್ತಾರೆಂದು ಹೇಳಲಾದ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಕಿಷ್ಕಿಂದೆ ಕುರಿತ ಶಾಸನ ಮತ್ತು ಸಾಹಿತ್ಯದ ಉಲ್ಲೇಖಗಳು ಎಷ್ಟಿವೆ?

2.ಅಲ್ಲಿ (ಆಂಧ್ರದಲ್ಲಿ) ರಾಮಾಯಣದ ಕತೆಯನ್ನೇ ಪ್ರಧಾನ ಪಾತಳಿಯನ್ನಾಗಿ ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ನಿರ್ಮಾಣವಾದ ದೇವಾಲಯಗಳೆಷ್ಟು?

3.ಟಿಟಿಡಿಯವರು ಘೋಷಿಸಲಿರುವ ಪರಿಸರದಲ್ಲಿ ಎಷ್ಟು ಹನುಮಂತನ ಗುಡಿಗಳು/ಶಿಲ್ಪಗಳು ರಚನೆಯಾಗಿವೆ? ತುಲನೆ ಮಾಡಿ, ವಿವೇಚನೆಯಿಂದ ನಿರ್ಧರಿಸಬೇಕಾಗಿದೆ.

ಕೊನೆಯದಾಗಿ ಹನುಮಂತನ ಕುರಿತ ಒಂದು ಗಾದೆ ನೆನಪಾಗುತ್ತಿದೆ. 'ನಮ್ಮ ಹನುಮಪ್ಪ ಹಗ್ಗ ಕಡಿಯುತ್ತಿದ್ದರೆ... ಶಾವಿಗೆ ಬೇಡುತ್ತಿದ್ದನಂತೆ'.

ಆಂಜನೇಯ ಹುಟ್ಟಿದ್ದು ತಿರುಪತಿಯಲ್ಲಂತೆ

ಯುಗಾದಿ ದಿನದಂದೇ ಟಿಟಿಡಿ ಸಮಿತಿ ವರದಿ ಸಲ್ಲಿಕೆ

ನಮ್ಮ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯೇ ಹನುಮನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ

ತಿರುಪತಿ: ಹಂಪಿ ಎಂಬುದೇ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ. ಆಂಜನೇಯ ಹುಟ್ಟಿದ್ದು ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಆಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ..!

ಇದು ಪುರಾಣ ಕಾಲದಿಂದಲೂ ಭಾರತೀಯರಲ್ಲಿ ಬಲವಾಗಿ ಬೇರೂರಿರುವ ನಂಬಿಕೆ. ಹೀಗಾಗಿಯೇ ವನವಾಸ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ ಕರ್ನಾಟಕಕ್ಕೂ ಬಂದಿದ್ದ ಎಂಬ ನಂಬಿಕೆಯೂ ಇದೆ. ಅದನ್ನೇ ಬುಡಮೇಲು ಮಾಡುವಂಥ ಪ್ರಯತ್ನ ನೆರೆಯ ಆಂಧ್ರಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಶುರುವಾಗಿದೆ. ಅಂದರೆ, ಆಂಜನೇಯ ಹುಟ್ಟಿದ್ದು ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಆಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಲ್ಲ, ಬದಲಾಗಿ ತಿರುಪತಿಯಲ್ಲೇ ಎಂಬ ವಾದ ಎದ್ದಿದೆ. ಇದಕ್ಕೆ ಪೂರಕವೆಂಬಂತೆ, ತಿರುಮಲ ತಿರುಪತಿ ದೇವಸ್ಥಾನಂ ಸಮಿತಿ ರಚಿಸಿದ್ದು, ಅಧ್ಯಯನ ನಡೆಸಲು ಹೇಳಿದೆ. ಈ ಸಮಿತಿ ಈಗಾಗಲೇ ಅಧ್ಯಯನ ನಡೆಸಿದ್ದು, ಯುಗಾದಿ ದಿನವಾದ ಏ.13ರಂದು ವರದಿ ನೀಡಲಿದೆ.

ಸಮಿತಿಯಲ್ಲಿ ಯಾರಿದ್ದಾರೆ?: ಪ್ರೊ.ಸನ್ನಿದಾನಂ ಸುದರ್ಶನ ಶರ್ಮ(ವೇದಿಕ್ ವಿವಿಯ ಕುಲಪತಿ), ಪ್ರೊ.ಮುರಳೀಧರ ಶರ್ಮ(ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಸಂಸ್ಕೃತ ವಿವಿ ಕುಲಪತಿ), ಪ್ರೊ.ರಾಣಿಸದಾಶಿವ ಮೂರ್ತಿ, ಪ್ರೊ.ಜೆ.ರಾಮಕೃಷ್ಣ ಮತ್ತು ಪ್ರೊ.ಶಂಕರ ನಾರಾಯಣ, ಮೂರ್ತಿ ರೆಮಿಲ್ಲಾ (ಇಸ್ರೋ ವಿಜ್ಞಾನಿ), ವಿಜಯಕುಮಾರ್(ಪುರಾತತ್ವ ಇಲಾಖೆಯ ಉಪ ನಿರ್ದೇಶಕ), ವಿಭೂಷಣ ಶರ್ಮ(ಉನ್ನತ ವೇದಗಳ ಅಧ್ಯಯನದ ಯೋಜನಾ ಅಧಿಕಾರಿ) ಈ ಸಮಿತಿಗೆ ಸಂಚಾಲಕರಾಗಿದ್ದಾರೆ.

▶ 7ನೇ ಪುಟಕ್ಕೆ

ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯೇ ಹನುಮನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ: ಸಾಣಾಪುರೆ

ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂಬುದು ಶತಮಾನಗಳಿಂದ ನಂಬಿಕೊಂಡು ಬಂದಿರುವ ವಿಷಯ. ಇದಕ್ಕೆ ಪೂರಕವಾದ ಅನೇಕ ಕುರುಹುಗಳು, ಸ್ಮಾರಕಗಳು, ಐತಿಹ್ಯಗಳಿವೆ. ದೇಶದ ಮೂಲೆ ಮೂಲೆಗಳಿಂದ ಹನುಮ ಭಕ್ತರು ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಗೆ ಬರುವುದು ಇದು ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂಬುದಕ್ಕೆ ಎಂದು ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಆಂಜನೇಯ ದೇವಸ್ಥಾನದ ವ್ಯವಸ್ಥಾಪಕ ಎಂ. ವೆಂಕಟೇಶ ಸಾಣಾಪುರ ಅಭಿಪ್ರಾಯಪಟ್ಟಿದ್ದಾರೆ. ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿನ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟವೇ ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳವೆಂಬ ವಾದ ಕೇಳಿಬರುತ್ತಿರುವ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ 'ಉದಯವಾಣಿ' ಜತೆ ಮಾತನಾಡಿದ ಅವರು, ಈ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀರಾಮ ಬಂದು ತಿಂಗಳುಗಟ್ಟಲೇ ಇದ್ದದ್ದು, ತಿರುಗಾಡಿದ್ದರ ಬಗ್ಗೆ ಅನೇಕ ಪುರಾವೆಗಳಿವೆ. ಶ್ರೀರಾಮನಿಗಾಗಿ ಕಾಯ್ದು ಕುಳಿತಿದ್ದ ಶಬರಿ ಇದ್ದದ್ದು ಇಲ್ಲಿನ ಪಂಪಾವನವಾಗಿದೆ. ಅದೇ ರೀತಿ ಆನೆಗೊಂದಿಯಲ್ಲಿ ಚಿಂತಾಮಣಿ ಸೇರಿದಂತೆ ಋಷಿಮುಖ ಪರ್ವತ, ವಾಲಿ ಪರ್ವತ, ಸುಂದರ ಕಾಂಡ ಅಧ್ಯಾಯದ ಪ್ರಸ್ತಾಪ, ಐತಿಹಾಸಿಕ ಸ್ಮಾರಕಗಳು, ಪುರಾತನ ದೇವಸ್ಥಾನಗಳು ಇವೆ ಎಂದರು. ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯ ಮತ್ತೊಂದು ವಿಶೇಷವೆಂದರೆ ಎಲ್ಲ ಕಡೆಗೂ ಆಂಜನೇಯಸ್ವಾಮಿ ಉತ್ತರ ಮುಖಿಯಾಗಿರುತ್ತಾರೆ. ಆದರೆ, ಇಲ್ಲಿ ಪೂರ್ವಮುಖಿಯಾಗಿದ್ದಾರೆ. ದೇಶದ ವಿವಿಧೆಡೆಯಿಂದ ಬರುವ ಸ್ವಾಮೀಜಿಗಳು ಸೇರಿ ಲಕ್ಷಾಂತರ ಭಕ್ತರ ಪಾಲಿಗೆ ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯೇ ಆಗಿದೆ. ಈ ಹಿಂದೆ ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರದವರು ತಮ್ಮಲ್ಲಿ ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ವಿದೆ ಎಂದು ಕೆಲ ದಿನಗಳವರೆಗೆ ಹೇಳಿಕೊಂಡರು. ಇದೀಗ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿನ ಆಂಜನೇಯ ಪರ್ವತವೇ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂಬ ಹೇಳಿಕೆಗಳು ಕೇಳಿಬರುತ್ತಿವೆ. ಆದರೆ, ಶತಮಾನಗಳಿಂದ ಭಕ್ತರ ನಂಬಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯೇ ಆಂಜನೇಯಸ್ವಾಮಿ ಜನ್ಮಸ್ಥಳವಾಗಿದೆ ಎಂದರು.

ಉದಯವಾಣಿ Sat, 10 April 2021
https://epaper.udayavani.com/c/59677321

ಹನುಮನುದಿಸಿದ ಕರುನಾಡು

ಪುರಾವೆ

ಅನಂತವೈದ್ಯ ಯಲ್ಲಾಪುರ, ಶಿರಸಿಯ ವಿದ್ವಾಂಸರು

ಟಿಟಿಡಿ ಸಮಿತಿ ಕಾಣದ ಸತ್ಯಗಳು

ಅಷ್ಟಕ್ಕೂ ಪುರಾಣ ದಾಖಲೆಯೇ ಅಲ್ಲ!

ನಮ್ಮ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟದ ಹನುಮ

ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಗಂಗಾವತಿ ತಾಲೂಕಿನ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟದ ಮೇಲಿರುವ ಹನುಮನ ದೇಗುಲ ತಲುಪಲು ಪ್ರವಾಸಿಗರು 570 ಮೆಟ್ಟಿಲುಗಳನ್ನು ಹತ್ತಬೇಕು. ದೇವಸ್ಥಾನಕ್ಕೆ ಹೋಗುವಾಗ, ಬೆಟ್ಟ ಹತ್ತುವಾಗ ಹಲವಾರು ಕೋತಿಗಳು ಎದುರಾಗುತ್ತವೆ. ಅತಿ ವಯಸ್ಸಾದ ವಾನರ ಇಲ್ಲಿ ಸಿಕ್ಕೇ ಸಿಗುವುದು. ಈ ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಸನ್ಯಾಸಿಗಳ ವಾಸವನ್ನೂ ಕಾಣಬಹುದು.

ಟಿಟಿಡಿ ವಾದಕ್ಕೆ ಆಂಧ್ರದಲ್ಲೇ ಒಮ್ಮತವಿಲ್ಲ!

ಟಿಟಿಡಿಯ "ಹನುಮ ವಾದ"ದ ಬಗ್ಗೆ ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಹಸ್ತಪ್ರತಿ ಇಲಾಖೆಯ ಮಾಜಿ ನಿರ್ದೇಶಕ ವೆಂಕಟರಮಣ ರೆಡ್ಡಿ ಅತೃಪ್ತಿ ಸೂಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಅಲ್ಲದೆ, ಪುರಾತತ್ವ ಇಲಾಖೆ, ವಿಶ್ವ ಹಿಂದೂ ಪರಿಷತ್ ಕೂಡ ಈ ಬಗ್ಗೆ ತೀವ್ರ ಅಸಮಾಧಾನ ಸೂಚಿಸಿವೆ.

ಹನುಮನ ಬೀಡಿನ ಕುರುಹುಗಳು ಎಷ್ಟು ಬೇಕು?

ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿನ ಆಧಾರಗಳು

ಉದಯವಾಣಿ Mon, 26 April 2021
https://epaper.udayavani.com/c/60048037

ಆಂಜನೇಯ ಹುಟ್ಟಿದ್ದು ತಿರುಮಲದಲ್ಲಂತೆ!

ಯುಗಾದಿ ದಿನ ಟಿಟಿಡಿ ಸಾಕ್ಷ್ಯ ಬಿಡುಗಡೆ | ಕೊಪ್ಪಳದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟ ಎಂಬ ನಂಬಿಕೆ ಕಡೆಗಣನೆ

ತಿರುಮಲ: ಕರ್ನಾಟಕದ ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿರುವ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯಲ್ಲಿ 17 ಲಕ್ಷ ವರ್ಷಗಳ ಹಿಂದೆ ಆಂಜನೇಯ ಹುಟ್ಟಿದ ಎಂಬ ನಂಬಿಕೆಯಿದೆ. ಆದರೆ, ಆಂಜನೇಯ ಹುಟ್ಟಿದ್ದು ಆಂಧ್ರಪ್ರದೇಶದ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿ ಎಂದು ಸಾಬೀತುಪಡಿಸಲು ತಿರುಮಲ ತಿರುಪತಿ ದೇವಸ್ಥಾನಂ (ಟಿಟಿಡಿ) ಟ್ರಸ್ಟ್ ಮುಂದಾಗಿದೆ. ಏ.13ರ ಯುಗಾದಿಯಂದು ಈ ಕುರಿತು ಟಿಟಿಡಿಯ ತಜ್ಞರ ಸಮಿತಿ 'ಸಾಕ್ಷ್ಯ' ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಲು ನಿರ್ಧರಿಸಿದೆ.

'ರಾಮನ ಬಂಟ ಹನೂಮಂತ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿದ' ಎಂದು ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿದೆ. ಆ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತ ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆಯಲ್ಲಿದೆ ಎಂದೇ ಆಸ್ತಿಕರು ನಂಬುತ್ತಾ ಬಂದಿದ್ದಾರೆ. ಕೊಪ್ಪಳದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿರುವ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯು ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ ಕೂಡ ಆಗಿದ್ದು, ಆಂಜನೇಯನ ಭಕ್ತರು ನಿತ್ಯ ಅಪಾರ ಸಂಖ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಅಲ್ಲಿಗೆ ತೆರಳುತ್ತಾರೆ. ಆದರೆ, ಟಿಟಿಡಿ

ಇತ್ತೀಚೆಗೆ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿರುವ 'ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟ'ದಲ್ಲಿ ಆಂಜನೇಯ ಜನಿಸಿದ್ದಾನೆ ಎಂಬುದಕ್ಕೆ ತನ್ನಲ್ಲಿ ಪುರಾವೆಗಳಿವೆ ಎಂಬ ವಾದವನ್ನು ಹುಟ್ಟುಹಾಕಿದೆ.

ಕಳೆದ ಡಿಸೆಂಬರ್‌ನಲ್ಲೇ ಟಿಟಿಡಿಯು ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಾನ ತಿರುಮಲದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತ ಎಂಬುದನ್ನು ಸಾಬೀತುಪಡಿಸುವ ಪುರಾವೆಗಳನ್ನು ಕಲೆಹಾಕಲು ತಜ್ಞರ ಸಮಿತಿಯೊಂದನ್ನು ನೇಮಕ ಮಾಡಿತ್ತು. ಈ ಸಮಿತಿಯು ಡಿಸೆಂಬರ್‌ನಿಂದ ಸಾಕಷ್ಟು ಸಂಶೋಧನೆ ನಡೆಸಿ ತಿರುಮಲದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತವೇ ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂದು ವರದಿ ನೀಡಿದೆ. ಇದಕ್ಕೆ ಸಾಕ್ಷ್ಯವಾಗಿ ಶಿವ, ಬ್ರಹ್ಮ, ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡ, ವರಾಹ, ಮತ್ಸ್ಯ ಪುರಾಣಗಳನ್ನು, ವೆಂಕಟಾಚಲ ಮಹಾತ್ಮೆ ಗ್ರಂಥವನ್ನು ಹಾಗೂ ವರಾಹಮಿಹಿರನ ಬೃಹತ್ಸಂಹಿತೆಯನ್ನು ಉಲ್ಲೇಖಿಸಿದೆ. ಈ ವರದಿಯನ್ನು ಯುಗಾದಿಯ ದಿನ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡುವುದಾಗಿ ಟಿಟಿಡಿ ತಿಳಿಸಿದೆ.

ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ತಿರುಮಲ ಎಂದು ಹೇಳಿರುವ ತಜ್ಞರ ಸಮಿತಿಯಲ್ಲಿ ಟಿಟಿಡಿಯ ಡಾ। ಕೆ.ಎಸ್.ಜವಾಹರ್, ವೇದಿಕ್ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯದ ಕುಲಪತಿ ಪ್ರೊ। ಸನ್ನಿಧಾನಂ ಸುದರ್ಶನ ಶರ್ಮ, ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಸಂಸ್ಕೃತ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯದ ಕುಲಪತಿ ಪ್ರೊ। ಮುರಳೀಧರ ಶರ್ಮ, ಪ್ರೊಫೆಸರ್‌ಗಳಾದ ರಾಣಿಸದಾಶಿವ ಮೂರ್ತಿ, ಜೆ.ರಾಮಕೃಷ್ಣ, ಶಂಕರನಾರಾಯಣ, ಇಸ್ರೋ ವಿಜ್ಞಾನಿ ಮೂರ್ತಿ ರೆಮಿಲ್ಲಾ, ಪುರಾತತ್ವ ಇಲಾಖೆಯ ವಿಜಯ್ ಕುಮಾರ್ ಹಾಗೂ ವೇದಾಧ್ಯಯನ ತಜ್ಞ ಡಾ। ಎ. ವಿಭೀಷಣ ಶರ್ಮ ಇದ್ದಾರೆ.

ಕನ್ನಡಪ್ರಭ Sat, 10 April 2021
https://kpepaper.asianetnews.com/c/59680167

‘కిష్కింధ హనుమద్ జన్మభూమి ట్రస్టు ఆరోపణలు నిరాధారం’

తిరుమల, న్యూస్‌టుడే: హనుమంతుడి జన్మస్థలం తిరుమలలోని అంజనాద్రేనని నిర్ధారించడాన్ని తప్పుబడుతూ కర్ణాటక కిష్కింధలోని శ్రీహనుమద్ జన్మభూమి తీర్థ ట్రస్టు చేసిన ఆరోపణలు నిరాధారమైనవని తితిదే ఆధ్వర్యంలోని ఎస్వీ ఉన్నత వేదాధ్యయన సంస్థ ప్రాజెక్టు అధికారి పేర్కొన్నారు. శ్రీహనుమద్ జన్మభూమి ట్రస్టు లేఖకు శనివారం తితిదే ఆధ్వర్యంలో ఆయన ప్రత్యుత్తరాన్ని పంపారు. ఆంజనేయస్వామి జన్మస్థలాన్ని కనుగొనాలనే సంకల్పంతో తితిదే పండిత పరిషత్‌ను ఏర్పాటుచేసి 4నెలల పాటు పరిశోధించిందని వివరించారు. పౌరాణిక, శాసన, భౌగోళిక ఆధారాలతో తిరుమలలోని అంజనాద్రే ఆంజనేయుడి జన్మస్థలంగా రూఢీ అయిందని తెలిపారు. దీనిపై శాస్త్రీయంగా నిరూపించి సంక్షిప్త నివేదికను సమర్పించామన్నారు. నివేదికలో పొందుపరిచిన ఆధారాలు, ప్రమాణాలు అసత్యాలని ట్రస్టు వ్యవస్థాపకులు నిరూపించాలని, తగిన ఆధారాలతో ఈనెల 20లోపు నివేదికను సమర్పించాలని కోరారు. ఇందుకోసం లేఖతోపాటు ఆ నివేదికను పంపుతున్నామన్నారు. కొవిడ్-19 తీవ్రత తగ్గాక చర్చలకు ఆహ్వానిస్తామన్నారు. తితిదేపై చేసిన దూషణలకు రాత పూర్వకంగా క్షమాపణలు తెలియజేయాలని సూచించారు.

ಸಮರ್ಥವಾಣಿ
ಉಜ್ವಲ ಕನ್ನಡ ದಿನಪತ್ರಿಕೆ
27/04/2021
ಮಂಗಳವಾರ
Tuesday
ಕೊಪ್ಪಳ ಆವೃತ್ತಿ

ಆಂಜನೇಯ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ವಿವಾದ:ಗೋವಿಂದಾನಂದಸ್ವಾಮಿ ಆಕ್ರೋಶ
ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹನುಮನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ:ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖ
ಸ್ಪಷ್ಟತೆಗೆ ಸರಕಾರ ಮತ್ತು ಪ್ರಮುಖ ಮಠಾಧೀಶರ ನಿರ್ಲಕ್ಷ್ಯ

ಸಮರ್ಥವಾಣಿ ವಾರ್ತೆ
ಗಂಗಾವತಿ,ಏ.26: ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಗಂಗಾವತಿ ತಾಲೂಕಿನ ಆನೆಗೊಂದಿ ಭಾಗದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಪ್ರದೇಶವೆಂಬುದು ತ್ರೇತಾ ಯುಗದ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖಿಸ ಲಾಗಿದೆ. ಸ್ವತಃ ಜಾಂಭುವಂತನೇ ಹನುಮಂತ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿರುವ ಬಗ್ಗೆ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಪ್ರಸ್ತಾಪಿಸಲಾಗಿದೆ. ಆದರೆ ಆಂಧ್ರದ ಅನ್ನದಾನ ಚಿದಂಬರ ಶಾಸ್ತ್ರಿ ಎಂಬುವವರು ಸುಳ್ಳು ದಾಖಲೆಗಳನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ಟಿಟಿಡಿ ಮೂಲಕ ತಿರುಮದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿದೆ ಎಂದು ಹೇಳಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇಂತಹ ಹೇಳಿಕೆಗಳು ಬರುತ್ತಿದ್ದರೂ ರಾಜ್ಯ ಸರಕಾರ ಅಥವಾ ಪೇಜಾವರ ಸೇರಿದಂತೆ ಇನ್ನಿತ ಪ್ರಮುಖ ಮಠಾಧೀಶರು ಈ ಕುರಿತು ಸ್ಪಷ್ಟತೆ ನೀಡುತ್ತಿಲ್ಲ ಎಂದು ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತೀರ್ಥಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್‌ನ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ ಮಹಾರಾಜ ಸ್ವಾಮಿಗಳು ಆಕ್ರೋಶ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದರು. ಮತ್ತು ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳವೆಂದು ಸಾಬೀತುಪಡಿಸಲು ನಾವು ಸ್ವತಃ ತಿರುಪತಿಗೆ ಹೋಗಿ ಸ್ಪಷ್ಟನೆ ನೀಡುತ್ತೇವೆ ಎಂದು ಹೇಳಿದರು.

ನಗರದ ಪತ್ರಿಕಾ ಭವನದಲ್ಲಿ ಅವರು ಸುದ್ದಿಗೋಷ್ಠಿ ನಡೆಸಿ ಮಾತನಾಡಿದರು. ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಭು ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಹೇಗೆಂಯೋ ಅದೇ ರೀತಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹೊರತು ಇನ್ನಾವ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲ. ಆದರೆ ಟಿಟಿಡಿ ಈಗ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತಮ್ಮ ತಿರುಮಲ ಎಂದು ಇತ್ತೀಚಿನ ಲಿಖಿತ ದಾಖಲೆಗಳನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ಹೇಳಿಕೆ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿದೆ. ಅದೇ ರೀತಿ ರಾಮಚಂದ್ರಪುರ ಮಠದ ಸ್ವಾಮಿಗಳು ಗೋಕರ್ಣದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿದೆ ಎಂದು ಸಮರ್ಥಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಇದು ಸುದ್ದ ಸುಳ್ಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದೆ. ಅಂಜನಾದ್ರಿಯ ಪರ್ವತದ ಗುಹೆಯಲ್ಲಿ ವಾಯುಪುತ್ರ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿರುವುದು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ ಸೇರಿದಂತೆ ಇನ್ನಿತರ ಪುರಾಣ ಮತ್ತು ಸಾವಿರಾರು ವರ್ಷಗಳ ಸಂಸ್ಕೃತ ಇತಿಹಾಸಗಳ ಪುಸ್ತದಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಲಾಗಿದೆ. ಇದಕ್ಕೆ ಎಲ್ಲಾ ದಾಖಲೆಗಳು ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಲಭ್ಯವಿವೆ. ಹನುಮಂತ ಬಾಲ್ಯದಲ್ಲೇ ಆಟವಾಡಿರುವ ಪುರಾವೆಯಿಂದಲೇ ಹತ್ತಿರದಲ್ಲೆ ಬಾಲ ಹನುಮ ಮಂದಿರ ಇದೆ. ಜೊತೆಗೆ ಹನುಮನಹಳ್ಳಿ ಮತ್ತಿತರ ಗ್ರಾಮಗಳು ಇದಕ್ಕೆ ಸಾಕ್ಷಿಯಾಗಿವೆ ಎಂದು ಸ್ವಾಮಿಜೀ ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸಿದರು.

ಕಳೆದ ಎರಡು ವರ್ಷಗಳ ಹಿಂದೆಯೇ ತಿರುಪತಿಯ ಅನ್ನದಾನ ಚಿದಂಬರ ಶಾಸ್ತ್ರಿ ಎಂಬುವವರು ನಮ್ಮೊಂದಿಗೆ ಚರ್ಚಿಸಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿದೆ ಎಂದು ನಾವು ಉಲ್ಲೇಖಿಸುತ್ತಿದ್ದೇವೆ. ನೀವು ನಮ್ಮೊಂದಿಗೆ ಕೈ ಜೋಡಿಸಿ ಎಂದು ನನಗೆ ಕರೆ ಮಾಡಿದ್ದರು. ಆದರೆ ನಾನು ಇದಕ್ಕೆ ಒಪ್ಪದೇ ತಿರುಗೇಟು ನೀಡಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂದು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಿ ಈ ಪವಿತ್ರ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತ ಅಯೋಧ್ಯೆ ರಾಮನ ಮಂದಿರದಂತೆ ಮಹತ್ವ ಪಡೆದುಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಮತ್ತು ದೇಶ ವಿದೇಶಗಳ ಜನರಿಗೆ ಇದೊಂದು ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರವಾಗಬೇಕೆಂದು ನಾವು ಸತತ ಪ್ರಯತ್ನಿಸುತ್ತಿದ್ದೇವೆ. ರಾಮಮಂದಿರ ನಿರ್ಮಾಣಕ್ಕಾಗಿ ಹೇಗೆ ಶ್ರೀರಾಮಮಂದಿರ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್ ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಿದೆಯೋ ಅದೇ ರೀತಿ ಹನುಮದ್ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್ ರಚನೆ ಮಾಡಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಕೂಡಾ ಪ್ರತಿ ವರ್ಷ ಹತ್ತಾರು ರೀತಿಯ ಹನುಮ ಉತ್ಸವಗಳು ಜರುಗುವಂತೆ ಮಾಡುವ ಪ್ರಯತ್ನಕ್ಕೆ ಮುಂದಾಗಿದ್ದೇವೆ. ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದ ಮೇಲೆ ಕೇವಲ ಚಿಕ್ಕದಾದ ದೇಗುಲವಿದ್ದು, ಅದು ಸಾಕಷ್ಟು ಭಕ್ತರು ಬೆಟ್ಟ ಏರಿ ದರ್ಶನ ಪಡೆಯಲು ಕಷ್ಟ ಮತ್ತು ಅಲ್ಲಿ ಉತ್ಸವ ಆಚರಣೆಗೂ ತೊಂದರೆಯಾಗುತ್ತದೆ. ಇದನ್ನು ಅರಿತು ಪರ್ವತದ ಕೆಳಗಡೆ ಕನಿಷ್ಟ 50 ಎಕರೆ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಭವ್ಯವಾದ ಹನುಮಂತನ ಮಂದಿರ ನಿರ್ಮಿಸಿ ಬೆಟ್ಟ ಏರಲು ಸಮಸ್ಯೆಯಾಗುವ ಭಕ್ತರಿಗೆ ಇಲ್ಲಿ ದರ್ಶನದ ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಮಾಡಬೇಕು ಮತ್ತು ಇಲ್ಲಿ ನಿತ್ಯ ಹನುಮಾನ್ ಉತ್ಸವ ನಡೆಯಬೇಕೆಂಬುದು ಟ್ರಸ್ಟ್‌ನ ಪ್ರಮುಖ ಉದ್ದೇಶವಾಗಿದೆ. ಈ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಈಗಾಗಲೇ ನಾವು ಸರಕಾರ ಮತ್ತು ಜಿಲ್ಲಾಧಿಕಾರಿಗಳೊಂದಿಗೆ ಚರ್ಚಿಸಿದ್ದೇವೆ. ಮತ್ತು ದೇಶದ ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬ ಭಕ್ತರಲ್ಲಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಭಕ್ತಿ ಅತ್ಯಂತ ಭಕ್ತಿ ಸಂಚಾರವಾಗಬೇಕೆಂಬ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ದೇಶಾದ್ಯಂತ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ರಥಯಾತ್ರೆ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದ್ದೇವೆ ಎಂದು ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸ್ವಾಮಿಜೀ ಹೇಳಿದರು.

ಸಾವಿರಾರು ವರ್ಷ ಗಳಿಂದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂದು ನಂಬಿಕೊಂಡಿರುವ ಭಕ್ತರಿಗೆ ಟಿಟಿಡಿ ಟ್ರಸ್ಟ್ ಶಾಕ್ ನೀಡಿ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿದೆ ಎಂದು ಸುಳ್ಳು ದಾಖಲೆ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡುತ್ತಿದೆ. ಆದರೂ ನಮ್ಮ ರಾಜ್ಯ ಸರಕಾರ ಅಥವಾ ಸಚಿವರುಗಳು ಯಾವುದೇ ಚಕಾರ ಎತ್ತುತ್ತಿಲ್ಲ. ಮತ್ತು ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಹಲುವ ಪವತ್ರ ಧಾರ್ಮಿಕ ಮಠಾಧೀಶರು ಕೂಡಾ ಇದಕ್ಕೆ ಸ್ಪಷ್ಟನೆ ನೀಡುತ್ತಿಲ್ಲ. ಏಕೆಂದರೆ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿರುವ ತಮ್ಮ ಮಠಗಳಿಗೆ ಇದರಿಂದ ಧಕ್ಕೆ ಬರಬಹುದು ಎಂಬ ಭಯದಿಂದ ಇಲ್ಲಿನ ಪೇಜಾವರ ಸೇರಿದಂತೆ ಇನ್ನಿತರ ನಿತ್ಯ ರಾಮನ ಪೂಜೆ ಮಾಡುವ, ರಾಮಾಯಣ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿರುವ ಮಠಾಧೀಶರು ಹೇಳುತ್ತಿಲ್ಲ. ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿ ತಮ್ಮ ಮಠಕ್ಕೆ ಧಕ್ಕೆಯಾಗುತ್ತದೆ ಎಂಬ ಭಯ ಅವರಿಗಿದೆ ಎಂದು ಸ್ವಾಮಿಜೀ ಕಿಡಿ ಕಾರಿದರು. ಟ್ರಸ್ಟ್‌ನ ಕಚೇರಿ ಪ್ರಮುಖ ಅಭಿಷೇಕ ಇದ್ದರು.

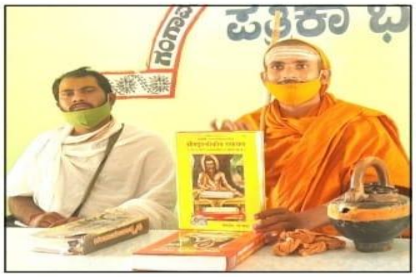

ಅಯೋಧ್ಯೆ ಪ್ರಸಾದ ನಾಳೆ ಅಂಜನಾದ್ರಿಗೆ ಸಮರ್ಪಣೆ

ನಾವು ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿನ ಪ್ರಸಾದ ಮತ್ತು ಶ್ರೀರಾಮನ ಕಿಲವು ವಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ತಂದಿದ್ದು, ನಾಳೆ ಹನುಮ ಜಯಂತಿಯ ಶುಭ ದಿನದಂದು ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಮೂಲ ಹನುಮನ ಮಂದಿರಕ್ಕೆ ಸಮರ್ಪಿಸುತ್ತಿದ್ದೇವೆ. ಕೊವಿಡ್ ನಿಯಮಗಳನ್ನು ಕಡ್ಡಾಯವಾಗಿ ಅನುಸರಿಸಬೇಕಿರುವುದರಿಂದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದ ಅರ್ಚಕರ ಮೂಲಕ ಈ ಪ್ರಸಾದವನ್ನು ಸಮರ್ಪಿಸಲಾಗುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ಜಿಲ್ಲಾಧಿಕಾರಿಗಳು ಕೂಡಾ ಸಹಮತ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದ್ದಾರೆ. ನಂತರ ರಾಜ್ಯಾದ್ಯಂತ ಸಂಚರಿಸಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂದು ಸಾಬೀತು ಮಾಡುವ ದಾಖಲೆಗಳ ಸಮೇತ ಭಕ್ತರಿಗೆ ಮನದಟ್ಟು ಮಾಡುತ್ತೇವೆ.

ಗೋವಿಂದಾನಂದಸ್ವಾಮಿಜೀ.
ಹನುಮದ್ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್.

ತಿರುಪತಿಯಲ್ಲೇ ಸುದ್ದಿಗೊಷ್ಠಿ: ಟಿಟಿಡಿಗೆ ಒಂದು ವಾರದ ಗಡುವು
ಅಯೋಧ್ಯೆಯಿಂದ ತಂದ ಪ್ರಸಾದ, ವಸ್ತ್ರ ಹನುಮನಿಗೆ ಸಮರ್ಪಣೆ

ಪ್ರಜಾಪರ್ವ ವಾರ್ತೆ
ಗಂಗಾವತಿ ಏ.26:
ಹನುಮ ಜಯಂತಿ ಅಂಗವಾಗಿ ತಾಲ್ಲೂಕಿನ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ದೇಗುದಲ್ಲಿ ಮಂಗಳವಾರ ನಡೆಯುವ ಧಾರ್ಮಿಕ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮಕ್ಕೆ ಅಯೋಧ್ಯೆಯಿಂದ ತರಲಾದ ವಿಶೇಷ ವಸ್ತ್ರ ಹಾಗೂ ಪ್ರಸಾದವನ್ನು ಸಮರ್ಪಿಸಲಾಗುವುದು ಎಂದು ಹನುಮಾನ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್ ಅಧ್ಯಕ್ಷ ಸ್ವಾಮಿ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ ಹೇಳಿದರು.

ನಗರದ ಪತ್ರಿಕಾಭವನದಲ್ಲಿ ಸೋಮವಾರ ಸುದ್ದಿಗೋಷ್ಠಿಯಲ್ಲಿ ಮಾತನಾಡಿ, ರಾಮನ ಭಕ್ತ ಹನುಮನಿಗಾಗಿಯೇ ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ರಾಮಜನ್ಮ ಭೂಮಿಗೆ ಶಿಲಾನ್ಯಾಸ ಏರ್ಪಡುವ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ವಿಶೇಷ ಪೂಜೆ ಸಲ್ಲಿಸಲಾಗಿತ್ತು.

ಅಲ್ಲಿ ಸಲ್ಲಿಸಿದ ಪೂಜೆ ಬಳಿಕ ಸಿಕ್ಕ ವಿಶೇಷ ಪ್ರಸಾದ ರೂಪದ

ಸ್ವಾಮಿಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ

ವಸ್ತ್ರ, ಯಜ್ಞೋಪವಿತ, ಹಾಗೂ ಆಹಾರ ರೂಪದ ಪ್ರಸಾದವನ್ನು ಹನುಮನಿಗೆ ಸಮರ್ಪಿಸಿ ಬಳಿಕ ಭಕ್ತರಿಗೆ ನೀಡುವ ಉದ್ದೇಶಕ್ಕೆ ಮಂಗಳವಾರ ಬೆಳಗ್ಗೆ ಪ್ರಸಾದವನ್ನು ಅರ್ಚಕರಿಗೆ ಸಮರ್ಪಿಸಲಾಗುವುದು ಎಂದರು.

ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ರಾಮನ ಮಂದಿರ ಹೇಗೆ ಭವ್ಯವಾಗಿ ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಲಿದೆಯೋ ಅದೇ ಮಾದರಿಯಲ್ಲಿ ಹನುಮ ಜನ್ಮ ಭೂಮಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯಲ್ಲೂ ಹನುಮ ಮಂದಿರ ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಬೇಕು ಎಂಬುವುದು ಅಸಂಖ್ಯಾತ ಭಕ್ತರ ನಿಲುವು ಎಂದರು.

ಇದಕ್ಕಾಗಿ ಮುಂದಿನ ದಿನಗಳಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವದಲ್ಲಿಯೇ ಅತಿ ಎತ್ತರದ ಅಂದರೆ 121 ಮೀಟರ್ ಎತ್ತರದ ಹನುಮ ವಿಗ್ರಹ ಸ್ಥಾಪನೆ ಕಾರ್ಯ ಕೈಗೊಳ್ಳಲಾಗುತ್ತಿದೆ. 12 ವರ್ಷದ ಈ ಯೋಜನೆಗೆ ಎಲ್ಲರಿಂದಲೂ ಸಹಕಾರ ಸಿಗುತ್ತಿದೆ ಎಂದು ಸ್ವಾಮೀಜಿ ಹೇಳಿದರು. ಬಳಿಕ ಇತ್ತೀಚೆಗೆ ಟಿಟಿಡಿ ಸೃಷ್ಟಿಸಿದ ಹನುಮ ಜನ್ಮ ಭೂಮಿ ಹಾಗೂ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯ ಬಗ್ಗೆ ಅನಾಗತ್ಯದ ವಿವಾದದ ಬಗ್ಗೆ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ ತೀವ್ರ ಆಕ್ರೋಶ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದರು. ಪುರಾಣ ಹಾಗೂ ಕಾವ್ಯಗಳ ಮೂಲಗಳನ್ನೆ ತಿರುಚುವ ವ್ಯಕ್ತಿಯೊಬ್ಬರಿಂದ ಈ ಕೃತ್ಯ ನಡೆಯುತ್ತಿದೆ.

ಅತಿ ಶೀಘ್ರ ಬೆಂಗಳೂರಿನಲ್ಲಿ ಈ ಬಗ್ಗೆ ಸುದ್ದಿಗೋಷ್ಠಿ ನಡೆಸಲಾಗುವುದು. ಬಳಿಕ ತಿರುಪತಿಗೆ ತೆರಳಿ ಅಲ್ಲಿಯೂ ಮಾಧ್ಯಮದ ಮೂಲಕ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯ ಮೂಲದ ಬಗ್ಗೆ ಪೌರಾಣಿಕ ಹಿನ್ನೆಲೆ ಸಾಕ್ಷಿ ನೀಡಲಾಗುವುದು. ಬಳಿಕ ಒಂದು ವಾರ ತಿರುಪತಿಯಲ್ಲಿಯೇ ಉಳಿಯಲಿದ್ದು, ಟಿಟಿಡಿಗೆ ವಾರದ ಗಡವು ನೀಡಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ದೇಗುಲದ ಬಗ್ಗೆ ವಿನಾಃಕಾರಣ ಗೊಂದಲ ನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡಿರುವ ಬಗ್ಗೆ ಸಾಕ್ಷಿ ನೀಡಲು ಪಂಥಹ್ವಾನ ನೀಡಲಾಗುವುದು.

ಅವರು ಸವಾಲು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದರೆ ಸೂಕ್ತ ಸಾಕ್ಷ್ಯಗಳನ್ನು ನೀಡಬೇಕು, ತಮ್ಮಲ್ಲಿರುವ ಸಆಕ್ಷ್ಯಗಳನ್ನು ಒದಗಿಸಿ ಚರ್ಚೆಗೆ ಸಿದ್ಧರಿದ್ದೇವೆ. ಹನುಮನ ವಿವಾದಕ್ಕೆ ಕೆದಕಿರುವುದು ಒಂದು ಷಡ್ಯಂತ್ರ. ಹಿಂದು ಧರ್ಮದ ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು, ಪೌರಾಣಿಕ ಹಿನ್ನೆಲೆಗಳನ್ನು ವಿರೂಪಗೊಳಿಸುವ ಷಡ್ಯಂತ್ರ ನಡೆದಿದೆ ಎಂದು ಸ್ವಾಮೀಜಿ ಆರೋಪಿಸಿದರು.

ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಗಂಗಾವತಿ ಪಕ್ಕದಲ್ಲಿರುವುದು ಎಂಬ ವಿಚಾರ ಸರ್ವಾನ್ಯವಾಗಿ ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಗೊತ್ತು. ಆದರೆ ನಾಡಿನ ಯಾವೊಂದು ಮಠಾಧೀಶರು ಟಿಟಿಡಿಯ ವಿಚಾರವನ್ನು ಪ್ರಶ್ನಿಸುವ ಮಟ್ಟಕ್ಕೆ ಹೋಗುತ್ತಿಲ್ಲ. ಇದಕ್ಕೆ ಕಾರಣವೂ ಇದೆ. ರಾಜ್ಯದ ಎಲ್ಲಾ ಮಠಾಧೀಶರ ಶಾಖಾ ಮಠಗಳು ತಿರುಪತಿ ಯಲ್ಲಿವೆ. ಇಲ್ಲಿನ ಮಠಾಧೀಶರು ಅಲ್ಲಿಗೆ ಭೇಟಿ ನೀಡಿದಾಗ ವೇಂಕಟೇಶ್ವರದ ದರ್ಶನ ಭಾಗ್ಯಕ್ಕೆ ಧಕ್ಕೆಯಾಗಬಹುದು, ಅಥವಾ ಟಿಟಿಡಿಯು ನಮ್ಮ ಶಾಖಾ ಮಠಗಳಿಗೆ ಬಾಗಿಲು ಹಾಕಿಸ ಬಹುದುಎಂಬ ಆತಂಕ ಬಹು ತೇಕ ಮಠಾಧೀಶರಲ್ಲಿದೆ. ಹೀಗಾಗಿ ಯಾರೊಬ್ಬ ಸ್ವಾಮೀ ಜಿಗಳು ಟಿಟಿಡಿಯ ವಿರುದ್ಧ ಸೊಲ್ಲೆತ್ತುತ್ತಿಲ್ಲ. ಆದರೆ ನಾವು ಹಾಗಲ್ಲ. ಈ ಬಗ್ಗೆ ಸೂಕ್ತ ಸಾಕ್ಷ್ಯಗಳನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ಮೂಲ ಅಂಜನಾದ್ರಿಗೆ ಧಕ್ಕೆಯಾಗದಂತೆ ಹೋರಾಟ ಮಾಡಲಾಗುವುದು ಎಂದರು.

ಟಿಟಿಡಿ ವಿರುದ್ಧ ಗೋವಿಂದಾನಂದಸ್ವಾಮಿ ಆಕ್ರೋಶ

ಗಂಗಾವತಿ : ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಗಂಗಾವತಿ ತಾಲೂಕಿನ ಆನೆಗೊಂದಿ ಭಾಗದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಪ್ರದೇಶವೆಂಬುದು ತ್ರೇತಾಯುಗದ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲೆ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಲಾಗಿದೆ. ಸ್ವತಃ ಜಾಂಭುವಂತನೇ ಹನುಮಂತ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿರುವ ಬಗ್ಗೆ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಪ್ರಸ್ತಾಪಿಸಲಾಗಿದೆ. ಆದರೆ ಆಂಧ್ರದ ಅನ್ನದಾನ ಚಿದಂಬರ ಶಾಸ್ತ್ರಿ ಎಂಬುವವರು ಸುಳ್ಳು ದಾಖಲೆಗಳನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ಟಿಟಿಡಿ ಮೂಲಕ ತಿರುಮದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿದೆ ಎಂದು ಹೇಳಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇಂತಹ ಹೇಳಿಕೆಗಳು ಬರುತ್ತಿದ್ದರೂ ರಾಜ್ಯ ಸರಕಾರ ಅಥವಾ ಪೇಜಾವರ ಸೇರಿದಂತೆ ಇನ್ನಿತ ಪ್ರಮುಖ ಮಠಾಧೀಶರು ಈ ಕುರಿತು ಸ್ಪಷ್ಟತೆ ನೀಡುತ್ತಿಲ್ಲ ಎಂದು ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತೀರ್ಥಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ ಮಹಾರಾಜ ಸ್ವಾಮಿಗಳು ಆಕ್ರೋಶ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದರು. ಮತ್ತು ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳವೆಂದು ಸಾಬೀತುಪಡಿಸಲು ನಾವು ಸ್ವತಃ ತಿರುಪತಿಗೆ ಹೋಗಿ ಸ್ಪಷ್ಟನೆ ನೀಡುತ್ತೇವೆ ಎಂದು ಹೇಳಿದರು.

ಸ'ಊ೯ವ'ು ವಾ ರ' ನಗರದ ಪತ್ರಿಕಾ ಭವನದಲ್ಲಿ ಅವರು ಸುದ್ದಿಗೋಷ್ಠಿ ನಡೆಸಿ ಮಾತನಾಡಿದರು. ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಭು ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಹೇಗೆಯೋ ಅದೇ ರೀತಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹೊರತು ಇನ್ನಾವ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲ. ಆದರೆ ಟಿಟಿಡಿ ಈಗ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತಮ್ಮ ತಿರುಮಲ ಎಂದು ಇತ್ತೀಚಿನ ಲಿಖಿತ ದಾಖಲೆಗಳನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ಹೇಳಿಕೆ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿದೆ. ಅದೇ ರೀತಿ ರಾಮಚಂದ್ರಪುರ ಮಠದ ಸ್ವಾಮಿಗಳು ಗೋಕರ್ಣದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿದೆ ಎಂದು ಸಮರ್ಥಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಇದು ಸುದ್ದ ಸುಳ್ಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿದೆ. ಅಂಜನಾದ್ರಿಯ ಪರ್ವತದ ಗುಹೆಯಲ್ಲಿ ವಾಯುಪುತ್ರ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿರುವುದು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ ಸೇರಿದಂತೆ ಇನ್ನಿತರ ಪುರಾಣ ಮತ್ತು ಸಾವಿರಾರು ವರ್ಷಗಳ ಸಂಸ್ಕೃತ ಇತಿಹಾಸಗಳ ಪುಸ್ತದಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಲಾಗಿದೆ. ಇದಕ್ಕೆ ಎಲ್ಲಾ ದಾಖಲೆಗಳು ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಲಭ್ಯವಿವೆ. ಹನುಮಂತ ಬಾಲ್ಯದಲ್ಲೆ ಆಟವಾಡಿರುವ ಪುರಾವೆಯಿಂದಲೇ ಹತ್ತಿರದಲ್ಲೆ

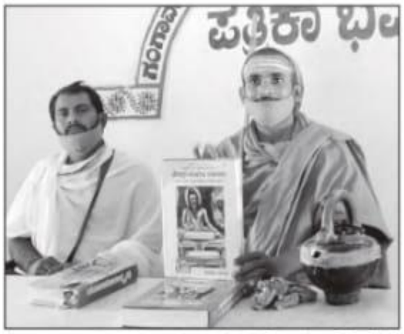

ಬಾಲ ಹನುಮ ಮಂದಿರವಿದೆ. ಜೊತೆಗೆ ಹನುಮನಹಳ್ಳಿ ಮತ್ತಿತರ ಗ್ರಾಮಗಳು ಇದಕ್ಕೆ ಸಾಕ್ಷಿಯಾಗಿವೆ ಎಂದು ಸ್ವಾಮಿಜೀ ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸಿದರು.

ಕ' ಳ' ದ' ಎರಡು ವರ್ಷಗಳ ಹಿಂದೆಯೇ ತಿರುಪತಿಯ ಅನ್ನದಾನ ಚಿದಂಬರ ಶಾಸ್ತ್ರಿ ಎಂಬುವವು ನಮ್ಮೊಂದಿಗೆ ಚರ್ಚಿಸಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿದೆ ಎಂದು ನಾವು ಉಲ್ಲೇಖಿಸುತ್ತಿದ್ದೇವೆ. ನೀವು ನಮ್ಮೊಂದಿಗೆ ಕೈ ಜೋಡಿಸಿ ಎಂದು ನನಗೆ ಕರೆ ಮಾಡಿದ್ದರು. ಆದರೆ ನಾನು ಇದಕ್ಕೆ ಒಪ್ಪದೇ ತಿರುಗೇಟು ನೀಡಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂದು ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಿ ಈ ಪವಿತ್ರ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತ ಅಯೋಧ್ಯೆ ರಾಮನ ಮಂದಿರದಂತೆ ಮಹತ್ವ ಪಡೆದುಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ಮತ್ತು ದೇಶ ವಿದೇಶಗಳ ಜನರಿಗೆ ಇದೊಂದು ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರವಾಗಬೇಕೆಂದು ನಾವು ಸತತ ಪ್ರಯತ್ನಿಸುತ್ತಿದ್ದೇವೆ. ರಾಮಮಂದಿನ ನಿರ್ಮಾಣಕ್ಕಾಗಿ ಹೇಗೆ ಶ್ರೀರಾಮಮಂದಿರ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್ ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಿದೆಯೋ ಅದೇ ರೀತಿ ಹನುಮದ್ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್ ರಚನೆ ಮಾಡಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಕೂಡಾ ಪ್ರತಿ ವರ್ಷ ಹತ್ತಾರು ರೀತಿಯ ಹನುಮ ಉತ್ಸವಗಳು ಜರುಗುವಂತೆ ಮಾಡುವ ಪ್ರಯತ್ನಕ್ಕೆ ಮುಂದಾಗಿದ್ದೇವೆ. ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದ ಮೇಲೆ ಕೇವಲ ಚಿಕ್ಕದಾದ ದೇಗುಲವಿದ್ದು, ಅದು ಸಾಕಷ್ಟು ಭಕ್ತರು ಬೆಟ್ಟ ಏರಿ ದರ್ಶನ ಪಡೆಯಲು ಕಷ್ಟ ಮತ್ತು ಅಲ್ಲಿ ಉತ್ಸವ ಆಚರಣೆಗೂ ತೊಂದರೆಯಾಗುತ್ತದೆ. ಇದನ್ನು ಅರಿತು ಪರ್ವತದ ಕೆಳಗಡೆ ಕನಿಷ್ಟ ೫೦ ಎಕರೆ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಭವ್ಯವಾದ ಹನುಮಂತನ ಮಂದಿರ ನಿರ್ಮಿಸಿ ಬೆಟ್ಟ ಏರಲು ಸಮಸ್ಯೆಯಾಗುವ ಭಕ್ತರಿಗೆ ಇಲ್ಲಿ ದರ್ಶನದ ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಮಾಡಬೇಕು ಮತ್ತು ಇಲ್ಲಿ ನಿತ್ಯ ಹನುಮಾನ್ ಉತ್ಸವ ನಡೆಯಬೇಕೆಂಬುದು ಟ್ರಸ್ಟ್ ಪ್ರಮುಖ ಉದ್ದೇಶವಾಗಿದೆ. ಈ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಈಗಾಗಲೇ ನಾವು ಸರಕಾರ ಮತ್ತು ಜಿಲ್ಲಾಧಿಕಾರಿಗಳೊಂದಿಗೆ ಚರ್ಚಿಸಿದ್ದೇವೆ. ಮತ್ತು ದೇಶದ ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬ ಭಕ್ತರಲ್ಲಿ ಅಂಜನಾಧ್ರಿ ಭಕ್ತಿ ಅತ್ಯಂತ ಭಕ್ತಿ ಸಂಚಾರವಾಗಬೇಕೆಂಬ ಉದ್ದೇಶದಿಂದ ದೇಶಾದ್ಯಂತ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ರಥಯಾತ್ರೆ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದ್ದೇವೆ ಎಂದು ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸ್ವಾಮಿಜೀ ಹೇಳಿದರು.

ಸಾವಿರಾರು ವರ್ಷಗಳಿಂದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂದು ನಂಬಿಕೊಂಡಿರುವ ಭಕ್ತರಿಗೆ ಟಿಟಿಡಿ ಟ್ರಸ್ಟ್ ಶಾಖ್ ನೀಡಿ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿದೆ ಎಂದು ಸುಳ್ಳು ದಾಖಲೆ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡುತ್ತಿದೆ. ಆದರೂ ನಮ್ಮ ರಾಜ್ಯ ಸರಕಾರ ಅಥವಾ ಸಚಿವರುಗಳು ಯಾವುದೇ ಚಕಾರ ಎತ್ತುತ್ತಿಲ್ಲ. ಮತ್ತು ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿರುವ ಹಲುವ ಪವತ್ರ ಧಾರ್ಮಿಕ ಮಠಾಧೀಶರು ಕೂಡಾ ಇದಕ್ಕೆ ಸ್ಪಷ್ಟನೆ ನೀಡುತ್ತಿಲ್ಲ. ಏಕೆಂದರೆ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿರುವ ತಮ್ಮ ಮಠಗಳಿಗೆ ಇದ-ರಿಂದ ಧಕ್ಕೆ ಬರಬಹುದು ಎಂಬ ಭಯದಿಂದ ಇಲ್ಲಿನ ಪೇಜಾವರ ಸೇರಿದಂತೆ ಇನ್ನಿತರ ನಿತ್ಯ ರಾಮನ ಪೂಜೆ ಮಾಡುವ, ರಾಮಾಯಣ ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿರುವ ಮಠಾಧೀಶರು ಹೇಳುತ್ತಿಲ್ಲ. ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿ ತಮ್ಮ ಮಠಕ್ಕೆ ಧಕ್ಕೆಯಾಗುತ್ತದೆ ಎಂಬ ಭಯ ಅವರಿಗಿದೆ ಎಂದು ಸ್ವಾಮಿಜೀ ಕಿಡಿ ಕಾರಿದರು. ಟ್ರಸ್ಟ್ ಕಚೇರಿ ಪ್ರಮುಖ ಅಭಿಷೇಕ ಇದ್ದ

ಅಯೋಧ್ಯೆ ಪ್ರಸಾದ ನಾಳೆ ಅಂಜನಾದ್ರಿಗೆ ಸಮರ್ಪಣೆ

ನಾವು ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿನ ಪ್ರಸಾದ ಮತ್ತು ಶ್ರೀರಾಮನ ಕೆಲವು ವಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ತಂದಿದ್ದು, ನಾಳೆ ಹನುಮ ಜಯಂತಿಯ ಶುಭ ದಿನದಂದು ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಮೂಲ ಹನುಮನ ಮಂದಿರಕ್ಕೆ ಸಮರ್ಪಿಸುತ್ತಿದ್ದೇವೆ. ಕೊವಿಡ್ ನಿಯಮಗಳನ್ನು ಕಡ್ಡಾಯವಾಗಿ ಅನುಸರಿಸಬೇಕಿರುವುದರಿಂದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದ ಅರ್ಚಕರ ಮೂಲಕ ಈ ಪ್ರಸಾದವನ್ನು ಸಮರ್ಪಿಸಲಾಗುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ಜಿಲ್ಲಾಧಿಕಾರಿಗಳು ಕೂಡಾ ಸಹಮತ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದ್ದಾರೆ. ನಂತರ ರಾಜ್ಯಾದ್ಯಂತ ಸಂಚರಿಸಿ ಅಂಜನಾಧ್ರಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂದು ಸಾಬೀತು ಮಾಡುವ ದಾಖಲೆಗಳ ಸಮೇತ ಭಕ್ತರಿಗೆ ಮನದಟ್ಟು ಮಾಡುತ್ತೇವೆ.

ಗೋವಿಂದಾನಂದಸ್ವಾಮೀಜಿ
ಹನುಮದ್ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್.

ಕಿತ್ತೂರ ಕರ್ನಾಟಕ
Kittur Karnataka
Gadag edition, Apr 27, 2021
450+ Newspapers | 18 Languages
Download paperboy
paperboy

4 ರಾಜ್ಯ

‘ಹನುಮನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ: ತಿರುಪತಿಗೆ ನಾನೇ ಹೋಗಿ ಸ್ಪಷ್ಟನೆ ನೀಡುವೆ’

ಪ್ರಜಾವಾಣಿ ವಾರ್ತೆ

ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ

ಗಂಗಾವತಿ (ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ): ‘ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂದು ಸಾಬೀತುಪಡಿಸಲು ನಾವು ಸ್ವತಃ ತಿರುಪತಿಗೆ ಹೋಗಿ ಸ್ಪಷ್ಟನೆ ನೀಡುತ್ತೇವೆ’ ಎಂದು ಹಂಪಿಯ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತೀರ್ಥಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್‌ನ ಪೀಠಾಧಿಪತಿ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ ಮಹಾರಾಜ ಸ್ವಾಮೀಜಿ ಸೋಮವಾರ ಹೇಳಿದರು.

ಸುದ್ದಿಗೋಷ್ಠಿಯಲ್ಲಿ ಅವರು, ‘ಆಂಧ್ರದ ಅನ್ನದಾನ ಚಿದಂಬರ ಶಾಸ್ತ್ರಿ ಎಂಬುವವರು ಸುಳ್ಳುದಾಖಲೆ ಸೃಷ್ಟಿಸಿ ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿದೆ ಎಂದು ಟಿಟಿಡಿ ಮೂಲಕ ಹೇಳಿಸಿದ್ದಾರೆ. ನಮ್ಮ ರಾಜ್ಯ ಸರ್ಕಾರ ಅಥವಾ ಪೇಜಾವರ ಮತ್ತಿತರ ಪ್ರಮುಖ ಮಠಾಧೀಶರು ಈ ಕುರಿತು ಮಾತನಾಡುತ್ತಿಲ್ಲ’ ಎಂದು ಅಸಮಾಧಾನ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದರು.

‘ತಾಲ್ಲೂಕಿನ ಆನೆಗೊಂದಿ ಭಾಗದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಪ್ರದೇಶವೇ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ. ಈ ಕುರಿತು ತ್ರೇತಾಯುಗದ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಲಾಗಿದೆ. ಪ್ರಭು ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಅಯೋಧ್ಯೆ ಹೇಗೆಯೋ ಅದೇ ರೀತಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯೇ ಹೊರತು ಇನ್ಯಾವ ಸ್ಥಳವಲ್ಲ’ ಎಂದರು.

‘ಟಿಟಿಡಿ ಈಗ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತಿರುಮಲ ಎಂದು ಹೇಳಿಕೆ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿದೆ. ರಾಮಚಂದ್ರಾಪುರ ಮಠದ ಸ್ವಾಮಿಗಳು ಗೋಕರ್ಣದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿದೆ ಎಂದು ಸಮರ್ಥಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಇವು ಶುದ್ಧ ಸುಳ್ಳಿನಿಂದ ಕೂಡಿವೆ’ ಎಂದು ಹೇಳಿದರು.

‘ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದ ಗುಹೆಯಲ್ಲಿ ವಾಯುಪುತ್ರ ಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಗಿರುವುದು ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ ಸೇರಿದಂತೆ ಇನ್ನಿತರ ಪುರಾಣ ಮತ್ತು ಸಾವಿರಾರು ವರ್ಷಗಳ ಸಂಸ್ಕೃತ ಇತಿಹಾಸ ಪುಸ್ತಕಗಳಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖಗೊಂಡಿದೆ. ಇದಕ್ಕೆ ಎಲ್ಲಾ ದಾಖಲೆಗಳು ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಲಭ್ಯವಿವೆ’ ಎಂದು ಸ್ವಾಮೀಜಿ ಸ್ಪಷ್ಟಪಡಿಸಿದರು.

ವಿಶ್ಲೇಷಣೆ

ಕರುನಾಡೇ ಹನುಮನುದಿಸಿದ ನಾಡು ಹನುಮಂತ ಹುಟ್ಟಿದ್ದು ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ

ಹನುಮಂತ ಮ. ದೇಶ ಕುಲಕರ್ಣಿ

ಉದಯವಾಗಲಿ ನಮ್ಮ ಚೆಲುವಕನ್ನಡ ನಾಡು ಎಂಬ ನಮ್ಮ ನಾಡಗೀತೆಯಲ್ಲಿ ಹುಯಿಲಗೋಳ ನಾರಾಯಣರಾಯರು ಸುಮ್ಮನೇ ಬರೆದಿಲ್ಲ, ಹನುಮನುದಿಸಿದ ನಾಡು ಕರ್ನಾಟಕವೇ ಎಂಬುದು ಪ್ರಶ್ನಾತೀತ.

ಶ್ರೀರಾಮನ ಭಕ್ತ ಹನುಮ ಹುಟ್ಟಿದ್ದು ಕೊಪ್ಪಳದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಎಂದು ಆಧಾರ ಸಮೇತ ನಿರೂಪಿಸಿದರೂ ಸಹ ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಲ್ಲಿ ಎಂದು ಈಗ ಪದೇ ಪದೇ ತೀವ್ರ ಚರ್ಚೆಗೆ ಗ್ರಾಸವಾಗುತ್ತಿದೆ. ಈಗ ತಿರುಮಲ ತಿರುಪತಿ ದೇವಸ್ಥಾನದ ಆಡಳಿತ ಮಂಡಳಿ ಹನುಮ ಹುಟ್ಟಿದ್ದು ತಿರುಪತಿಯ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಎಂಬುದು ಹೇಳುವ ಮೂಲಕ ವಿವಾದದ ಕಿಡಿ ಹೊತ್ತಿಸಿದೆ. ಇನ್ನೂ ಒಂದು ಹೆಜ್ಜೆ ಮುಂದೆ ಹೋಗಿರುವ ಟಿಟಿಡಿ ಹನುಮ ಹುಟ್ಟಿದ್ದು ತಿರುಮಲದಲ್ಲಿ ಎಂದು ಘೋಷಿಸಲು ತಮ್ಮ ಬಳಿ ವೈಜ್ಞಾನಿಕ ಮತ್ತು ಪೌರಾಣಿಕ ಸಾಕ್ಷ್ಯಗಳಿವೆ ಎಂದು ಹೇಳಿದೆ. ಹಲವು ಪುರಾಣಗಳ ಆಧಾರವನ್ನಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಟಿಟಿಡಿ ಈ ವಾದ ಮುಂದಿಟ್ಟಿದೆ ಎನ್ನಲಾಗಿದೆ.

ಕಳೆದ ಡಿಸೆಂಬರ್‌ನಲ್ಲಿ ಈ ಬಗ್ಗೆ ಅಧ್ಯಯನಕ್ಕಾಗಿ ಟಿಟಿಡಿ ಸಮಿತಿಯೊಂದನ್ನು ರಚನೆ ಮಾಡಿತ್ತು. ಈ ಸಂಬಂಧ ಸಮಿತಿ ಸದಸ್ಯರು ಹಲವು ಬಾರಿ ಸಭೆ ಸೇರಿ ಹನುಮನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳದ ಬಗ್ಗೆ ಐತಿಹ್ಯದ ದಾಖಲೆಗಳು, ಆಧಾರಗಳನ್ನು ಸಂಗ್ರಹಿಸಿ ಚರ್ಚೆ ನಡೆಸಿದ್ದರು. ಪೌರಾಣಿಕ ಕಥೆ, ಇತಿಹಾಸ, ದಾಖಲೆಗಳನ್ನು ಪರಿಶೀಲನೆ ನಡೆಸಲಾಗಿತ್ತು. ಅಂತಿಮವಾಗಿ ಎಲ್ಲವನ್ನು ಪರಿಶೀಲಿಸಿ ತ್ರೇತಾಯುಗದ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಇರುವುದು ಕರ್ನಾಟಕದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಅಲ್ಲ, ತಿರುಪತಿಯಲ್ಲಿರುವ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಎಂದು ನಿರ್ಧಾರಕ್ಕೆ ಬಂದಿದ್ದಲ್ಲದೇ ಈ ಕುರಿತು ಟಿಟಿಡಿ ಹನುಮ ಹುಟ್ಟಿದ ಸ್ಥಳದ ಬಗ್ಗೆ ಪುಸ್ತಕವೊಂದನ್ನು ಸಹ ಮುದ್ರಿಸಿದೆ ಎನ್ನಲಾಗಿದೆ.

ಹನುಮಂತದೇವ ಯಾವ ಜಾತಿ-ಧರ್ಮಕ್ಕೂ ಸೀಮಿತವಾಗದೇ ಶಕ್ತಿ-ಭಕ್ತಿ-ಯುಕ್ತಿಯ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ ಪುರುಷ. ಮಧ್ಯ ಪ್ರದೇಶದ ಬುಡಕಟ್ಟು ಜನಾಂಗದವರು ಹನುಮಂತನು ಜಾರ್ಖಂಡ್ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ರಾಂಚಿ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಅಂಜನ್ ಎಂಬ ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದನೆಂದು ನಂಬುತ್ತಾರೆ. ಕರ್ನಾಟಕದ ಮತ್ತೊಂದು ಆಸ್ತಿಕ ಕ್ಷೇತ್ರವಾದ ಗೋಕರ್ಣದಲ್ಲೂ ಹನುಮನು ನಮ್ಮವನೇ ಎನ್ನುತ್ತಾರೆ. ಹನುಮಂತ ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಬೇಕು.

ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಉಲ್ಲೇಖ: ಆನೆಗೊಂದಿಯ ಐತಿಹಾಸಿಕ, ಪುರಾಣ ಹಿನ್ನೆಲೆಯು ನಮ್ಮನ್ನು ರಾಮಾಯಣದ ಕಾಲಕ್ಕೆ ಕರೆದೊಯ್ಯುತ್ತದೆ. ಹಸಿರು ಗಿರಿಧಾಮಗಳು ತುಂಗಭದ್ರಾ ನದಿಯಿಂದ ಸುತ್ತುವರಿದಿದೆ. ಇದು ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಗಂಗಾವತಿ ತಾಲೂಕಿನಲ್ಲಿದೆ. ಈ ತಾಣವು ರಾಮಾಯಣದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ವಾಲಿಯ ರಾಜಧಾನಿಯಾಗಿತ್ತು ಎನ್ನಲಾಗುತ್ತದೆ. ಆನೆಗಳನ್ನು ಸ್ನಾನ ಮಾಡಿಸುವ ಹೊಂಡ/ಸ್ಥಳ ಇದಾಗಿತ್ತು, ಆದ್ದರಿಂದಲೇ ಈ ಪ್ರದೇಶಕ್ಕೆ ಆನೆಗೊಂದಿ ಎನ್ನುವ ಹೆಸರು ಬಂತು ಎನ್ನಲಾಗುತ್ತದೆ.

ಸಂತಾನಾರ್ಥಿಯಾಗಿ ಋಕ್ಷ ಪಂಪಾ ಸರೋವರದ ತೀರದಲ್ಲಿ ಶಿವನನ್ನು ಕುರಿತು ತಪಸ್ಸು ಆರಂಭಿಸುತ್ತಾನೆ. ಶಿವ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷನಾಗಲಿಲ್ಲವೆಂದು ಮರುದಿವಸ ಸ್ನಾನಕ್ಕಾಗಿ ಸರೋವರವೊಂದಕ್ಕೆ ಇಳಿದು ಮೇಲಕ್ಕೆ ಏರಿದಾಗ ಋಕ್ಷನಿಗೆ ಹೆಣ್ಣಿನ ಪ್ರಾಪ್ತಿಸಿತ್ತು. ಅಷ್ಟರಲ್ಲಿ ಶಿವಪೂಜೆಗಾಗಿ ಅಲ್ಲಿಗೆ ಬಂದ ದೇವೇಂದ್ರ ಆಕೆಯ ರೂಪಕ್ಕೆ ಮನಸೋತು ಸೂರ್ಯ ಹಾಗೂ ಆಕೆಯಿಂದ ಮಗುವೊಂದು ಜನಿಸಲು ಕಾರಣರಾಗುತ್ತಾರೆ. ಹೀಗೆ ಜನಿಸಿದ ಇಂದ್ರಕುಮಾರನೇ ವಾಲಿ. ಸೂರ್ಯನಂದನನೇ ಸುಗ್ರೀವ. ಆದರೆ ತನಗಾದ ಸ್ಥಿತಿಗಾಗಿ ಕಳವಳಗೊಂಡು ಪ್ರಾಣತ್ಯಾಗ ಮಾಡುವುದಕ್ಕಾಗಿ ತಿಳಿಗೊಳಕ್ಕೆ ಧುಮುಕಿದಾಗ ಋಕ್ಷ ತನ್ನ ಮೊದಲಿನ ಧ್ಯಾನಾಸಕ್ತ ಪುರುಷನ ರೂಪವನ್ನು ಮರಳಿ ಪಡೆದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ.

ಟಿ.ಟಿ.ಡಿ. ಅನಗತ್ಯ ವಿವಾದ ಎಬ್ಬಿಸಿದೆ

ಅಷ್ಟರಲ್ಲಿ ಶಿವ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷನಾಗಿ ಇವರನ್ನು ಸಲಹು ಎಂದೂ ನಿನ್ನ ಪ್ರಿಯತಮೆಯಾದ ಋಕ್ಷಿಯಲ್ಲಿ ಕುವರಿಯೊಬ್ಬಳು ಹುಟ್ಟುವಳೆಂದೂ ಅವಳಲ್ಲಿ ಲೋಕೋತ್ತರ ವಿಷ್ಣು ಭಕ್ತನೋರ್ವ ಉದಿಸುವನೆಂದೂ ಹರಸುತ್ತಾನೆ. ಅದರಂತೆ ಜನಿಸಿದವಳೇ ಅಪ್ಸರೆ ಅಂಜನಾದೇವಿ. ಇವಳಿಗೆ ಯೌವನವು ಕೂಡಿ ಬರಲು ವಾನರವೀರನಾದ ಕೇಸರಿಗೆ ಮದುವೆ ಮಾಡಿಕೊಡುತ್ತಾನೆ.

ಹಂಪೆಗಿಂತ ಪುರಾತನವಾದ ಈ ಪ್ರದೇಶ 5000 ವರ್ಷಗಳ ಇತಿಹಾಸವನ್ನು ಒಳಗೊಂಡಿದೆ. ಕಿಷ್ಕಿಂದೆಯೆಂದು ಪ್ರಸಿದ್ಧವಾದ ಈ ತಾಣ ವಾಲಿಯ ವಶದಲ್ಲಿತ್ತು. ಶ್ರೀರಾಮನು ವಾಲಿಯನ್ನು ಸೋಲಿಸಿ ಸುಗ್ರೀವನಿಗೆ ಈ ಪ್ರದೇಶವನ್ನು ನೀಡಿದನು. ಇದಕ್ಕೆ ಉಪಕಾರವಾಗಿ ಸುಗ್ರೀವನು ಹನುಮಂತನ ಸಾರಥ್ಯದಲ್ಲಿ ರಾವಣನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿದನು. ಸೀತೆಯನ್ನು ಬಂಧನದಿಂದ ಬಿಡಿಸಿ, ರಾಮನಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿದನು ಎನ್ನುವ ಪುರಾಣ ಕಥೆಯನ್ನು ಒಳಗೊಂಡಿದೆ

ಆಂಜನೇಯ ಹುಟ್ಟಿದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟ: ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿಗಳು ಅವರ ಮೇರುಕೃತಿಯಾದ ಶ್ರೀ ಮದ್ರಾಮಾಯಣ ಗ್ರಂಥದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀ ಹನುಮಂತನು ಅಂಜನಾದೇವಿಗೆ ಒಂದು ಗುಹೆಯಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದನೆಂದು ತಿಳಿಸಿರುತ್ತಾರೆ. ಎಸ್. ಸಿ. ದೇವ್ ಎಂಬ ಇತಿಹಾಸಕಾರನು ತನ್ನ ಡಿಸ್ಪಾರಿಸಿಟಿ ಆಫ್ ರಾಮಾಯಣ' ಎಂಬ ಗ್ರಂಥದಲ್ಲಿ ಆಂಜನೇಯನು ಋಷ್ಯಮೂಕ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದನೆಂದು ಹೇಳಿರುತ್ತಾರೆ. ಆ ಪ್ರದೇಶವು ಪ್ರಸ್ತುತ ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯದಲ್ಲಿರುತ್ತದೆ ಎಂದಿದ್ದಾರೆ.

ಜನ್ಮಭೂಮಿ ವಿವಾದ | ಕೊಪ್ಪಳದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಪರ ಇತಿಹಾಸಕಾರರ, ಪುರಾತತ್ವತಜ್ಞರ ಪ್ರಬಲ ವಾದ

ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಹನುಮ ವಿಶ್ವಪ್ರಸಿದ್ಧ, ರಥಯಾತ್ರೆ ಶುರು

ಮೊದಲ ಪುಟದಿಂದ

ಮಾತ್ರವಲ್ಲದೆ ಈ ನೆಲವನ್ನು ಮತ್ತಷ್ಟು ಪ್ರಚಾರಕ್ಕೆ ತರುವ ಸಲುವಾಗಿ ಸ್ವರ್ಣಹಂಪಿ ಆಶ್ರಮದ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ ಸ್ವಾಮೀಜಿ ನೇತೃತ್ವದಲ್ಲಿಹಂಪಿಯಿಂದ ಹೊರಟು ದೇಶಾದ್ಯಂತ 12 ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ನಡೆಯಲಿರುವ ಹನುಮರಥಯಾತ್ರೆಗೂ ಚಾಲನೆ ದೊರೆತಿದೆ. ಈ ಎಲ್ಲದರ ನಡುವೆ ತಿರುಮಲ ತಿರುಪತಿ ದೇವಸ್ಥಾನ ಟ್ರಸ್ಟ್ (ಟಿಟಿಡಿ) ತಿರುಮಲ ಬೆಟ್ಟವೇ ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂದಿರುವುದು ಚರ್ಚೆಗೆ ಗ್ರಾಸವಾಗಿದ್ದು, ಕೊಪ್ಪಳದ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಸಹಿಸದೇ ಈ ತಲೆಬುಡವಿಲ್ಲದ ವಾದ ಮುಂದಿಟ್ಟಿದೆ ಎಂಬ ಟೀಕೆ ಕೇಳಿಬಂದಿದೆ.

ಟಿಟಿಡಿ ಟ್ರಸ್ಟ್ ಸತ್ಯಸಂಶೋಧನೆ ನಡೆಸಿ ಆಂಜನೇಯ ಜನಿಸಿದ್ದು ಕರ್ನಾಟಕದ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಅಲ್ಲ, ಬದಲಾಗಿ ಆಂಧ್ರದ ತಿರುಪತಿಯ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಎಂಬ ಹೇಳಿಕೆ ನೀಡಿದೆ. ಪ್ರಸಕ್ತ ಯುಗಾದಿಯ ದಿನ ಸತ್ಯ ಶೋಧನಾ ಸಮಿತಿ ವರದಿ ನೀಡಲಿರುವುದಾಗಿ ತಿಳಿಸಿದೆ. ಆದರೆ ಈ ಸತ್ಯಶೋಧನೆ ಯಾಕೆ? ಸರ್ಕಾರದ ಅಧಿಕೃತ ಆದೇಶದ ಪ್ರಕಾರವೇ ಮಾಡಲಾಯಿತೇ ಎಂಬಿತ್ಯಾದಿಗಳ ಬಗ್ಗೆ ಉತ್ತರ ನೀಡಿಲ್ಲ.

ಕೇಂದ್ರ ಸರ್ಕಾರವೂ ಒಪ್ಪಿಗೆ: ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳವಾದ ಕೊಪ್ಪಳದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟದ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಗೆಕೇಂದ್ರ ಮತ್ತು ರಾಜ್ಯ ಸರ್ಕಾರಗಳು ಜಂಟಿಯಾಗಿ 'ಮಾಸ್ಟರ್ ಪ್ಲಾನ್' ರಚಿಸಿ ಕಾರ್ಯೋನ್ಮುಖ ಆಗುತ್ತಿದ್ದಂತೆ ಟಿಟಿಡಿಯಿಂದ ಈ ಕ್ಯಾತೆ ಆರಂಭವಾಗಿದ್ದು ನಾಡಿನ ಇತಿಹಾಸಕಾರರ, ಪುರಾತತ್ವ ತಜ್ಞರ ವ್ಯಾಪಕ ವಿರೋಧ ವ್ಯಕ್ತವಾಗಿದೆ.

ಐತಿಹಾಸಿಕ ದಾಖಲೆ: ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟ ಅನ್ನುವುದಕ್ಕೆ ಸಾವಿರಾರು ವರ್ಷಗಳ ಐತಿಹಾಸಿಕ ದಾಖಲೆಗಳು ಇವೆ. ಸ್ಥಳ ಪುರಾಣಗಳಿವೆ. ಇದೆಲ್ಲಕ್ಕಿಂತ ಮಿಗಿಲಾಗಿ ಕ್ರಿ.ಶ. 1000ರಲ್ಲಿಯೇ ಕೆತ್ತಲಾದ ಶಾಸನಗಳಿವೆ. ಈ ಬಗ್ಗೆ ಇತಿಹಾಸಕಾರ ಶರಣಬಸಪ್ಪ ಕೋಲ್ಕಾರ ಬರೆದಿರುವ ಇತಿಹಾಸ ಪುಸ್ತಕದಲ್ಲಿ ನಾನಾ ಉಲ್ಲೇಖದೊಂದಿಗೆ ಸಾಬೀತು ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. ಆನೆಗೊಂದಿಯಿಂದ 10 ಕಿ.ಮೀ. ದೂರದದಲ್ಲಿರುವ ದೇವಘಾಟದ ಕ್ರಿ.ಶ.1069ರ ಶಾಸನದಲ್ಲಿ ತುಂಗಭದ್ರಾ ತಟದ ಬಡಗ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಪರ್ವತಂ ಎಂದಿದೆ. ಪಶ್ಚಿಮಕ್ಕೆ 20 ಕಿ.ಮೀ. ದೂರದಲ್ಲಿರುವ ಹುಲಿ ಗ್ರಾಮದಲ್ಲಿ ಕ್ರಿ.ಶ.1088ರ ಶಾಸನದಲ್ಲಿ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಪರ್ವತ, ಋಷ್ಯಮೂಕಾಚಲ ಎಂಬ ಉಲ್ಲೇಖಗಳಿವೆ. ಹಂಪಿ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಪಕ ಅಧ್ಯಯನ ನಡೆಸಿರುವ ಸಂಶೋಧಕ ಡಾ.ಅ.ಸುಂದರ ಅವರು, ಆನೆಗೊಂದಿಯೇ ರಾಮಾಯಣ ಕಾಲದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಎನ್ನುವುದಕ್ಕೆ ಅನೇಕ ಪುರಾವೆಗಳನ್ನು ಒದಗಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಶ್ರೀರಾಮ ಇಲ್ಲಿ ಬಂದಿರುವುದು, ಸುತ್ತಾಡಿದ ಬಗ್ಗೆ ಅನೇಕ ಪುರಾವೆಗಳಿವೆ. ರಾಮನಿಗಾಗಿ ಶಬರಿ ಕಾದಿರುವ ಸ್ಥಳವಿದೆ. ವಾಲಿ, ಸುಗ್ರೀವ ಕಾದಾಡಿದ ಜಾಗವೂ ಇಲ್ಲಿಯೇ ಇದೆ. ಪಂಪಾ ಸರೋವರ ಇದೆ. ಇದೆಲ್ಲವೂ ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯ ಅಂಜನಾದ್ರಿ, ಎನ್ನುವುದಕ್ಕೆ ದೊರೆತಿರುವ ಪುರಾವೆಗಳು ಎಂದು ತಿಳಿಸಿದ್ದಾರೆ.

ವ್ಯಾಪಕ ಆಕ್ರೋಶ: ಏಕಾಏಕಿ ಟಿಟಿಡಿಯು ಈ ಹೇಳಿಕೆ ಇತಿಹಾಸಕಾರರ, ಪುರಾತತ್ವ ತಜ್ಞರ ವ್ಯಾಪಕ ಆಕ್ರೋಶಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗಿದೆ. ಕೇವಲ ಅಂಜನಾದ್ರಿ, ಎನ್ನುವ ಪರ್ವತ ಇದ್ದರೆ ಸಾಲದು, ಅದು ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯ ಭಾಗವಾಗಿರಬೇಕು. ಅಂದಾಗಲೇ ಅದು ನಿಜವಾದ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯಾಗುತ್ತದೆ. ಈಗ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಯನ್ನು ಸಹಿಸದೆ ಈ ರೀತಿ ವಾದ ಮಂಡನೆ ಮಾಡಿರುವುದು ನಿಜಕ್ಕೂ ನೋವಿನ ಸಂಗತಿ. ತಾವೇ ಸತ್ಯಶೋಧನೆ ಮಾಡಿ ವರದಿ ಸಲ್ಲಿಸುತ್ತಿರುವುದು ಯಾವ ನ್ಯಾಯ ಎಂದು ಈ ಭಾಗದ ಇತಿಹಾಸಕಾರರು ಪ್ರಶ್ನಿಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ.

> **ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಎನ್ನುವುದು ಅನೇಕ ಬಾರಿ ರುಜುವಾತಾಗಿದೆ. ಶಾಸನ, ದಾಖಲೆಗಳು, ಪುರಾಣದ ಪುರಾವೆಗಳಿವೆ. ಮಹಾನ್ ಇತಿಹಾಸಕಾರರೇ ಇದು ನಿರ್ವಿವಾದ ಸ್ಥಳ ಎಂದಿದ್ದಾರೆ. ಟಿಟಿಡಿ ಹೇಳಿಕೆಯು ಅಚ್ಚರಿಯಾಗಿದೆ.**
>
> • **ಶರಣಬಸಪ್ಪ** ಕೋಲ್ಕಾರ, ಇತಿಹಾಸಕಾರರು

> **ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆಯಲ್ಲಿ ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎನ್ನುವುದಕ್ಕೆ ಇತಿಹಾಸಕಾರರ ಸಾಕಷ್ಟು ಸಂಶೋಧನೆಗಳಿವೆ ಮತ್ತು ಪುರಾವೆಗಳಿವೆ. ಈ ಸ್ಥಳ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿಯಾಗುತ್ತಿರುವುದನ್ನು ಕಂಡು ಈ ರೀತಿ ಕ್ಯಾತೆ ತೆಗೆಯುವುದು ಸರಿಯಲ್ಲ.**
>
> • **ಬಿ.ಎಸ್.ಪೊಲೀಸಪಾಟೀಲ,** ಸರ್ಕಾರಿ ಹಿರಿಯ ಅಭಿಯೋಜಕರು

ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಸಾಕ್ಷ್ಯ ಬಿಡುಗಡೆಗೆ ಆಕ್ಷೇಪ

ದೇವರು ಹುಟ್ಟಿದ ಸ್ಥಳದ ಕುರಿತ ಶೋಧ ಸರಿಯಲ್ಲ: ತಜ್ಞ
ಟಿಟಿಡಿ ನಿರ್ಧಾರ ಬಗ್ಗೆ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯೆಗೆ ಮುಖ್ಯ ಅರ್ಚಕ ನಕಾರ

ತಿರುಪತಿ: ಅಂಜನೇಯ ಹುಟ್ಟಿದ್ದು ಕರ್ನಾಟಕದ ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದಲ್ಲಿರುವ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯಲ್ಲಿ ಅಲ್ಲ, ತಿರುಮಲದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಎಂಬ ಕುರಿತು ಯುಗಾದಿ ದಿನ ಸಾಕ್ಷ್ಯ ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಲು ಮುಂದಾಗಿರುವ ತಿರುಮಲ ತಿರುಪತಿ ದೇವಸ್ಥಾನ ಆಡಳಿತ (ಟಿಟಿಡಿ) ಆಡಳಿತ ಮಂಡಳಿಯ ವರ್ತನೆಗೆ ಆಂಧ್ರದಲ್ಲೇ ಆಕ್ಷೇಪ ವ್ಯಕ್ತವಾಗಿದೆ.

ದೇವರ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಕುರಿತು ಇಂತಹ ಶೋಧ ನಡೆಸುವುದು ಸರಿಯಲ್ಲ ಎಂದು ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಹಸ್ತಪ್ರತಿ ಮಿಷನ್‌ನ ಮಾಜಿ ನಿರ್ದೇಶಕ ಪ್ರೊ. ವಿ.ವೆಂಕಟರಮಣರೆಡ್ಡಿ ಅವರು ಅಸಮಾಧಾನ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಟಿಟಿಡಿ ಕ್ರಮದ ಕುರಿತು ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಿಸಲು ತಿರುಮಲ ದೇಗುಲದ ಮುಖ್ಯ ಅರ್ಚಕ ಎ.ವಿ. ರಮಣದೀಕ್ಷಿತುಲು ಅವರು ನಿರಾಕರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಈ ನಡುವೆ, ಅಂಜನೇಯ ತಿರುಮಲದಲ್ಲೇ ಹುಟ್ಟಿ, ಬೆಳೆದಿರುವ ಸಾಧ್ಯತೆಗಳಿವೆ. ಏಕೆಂದರೆ, ತಿರುಮಲದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟ ಒಂದು ಕಾಲದಲ್ಲಿ ದಟ್ಟ ಮಳೆ ಕಾಡಾಗಿತ್ತು. ಶ್ರೀಲಂಕಾಕ್ಕೂ ಹತ್ತಿರದಲ್ಲಿದೆ ಎಂದು ತೆಲುಗುದೇಶಂ ಪಕ್ಷದ ವಕ್ತಾರ ಎನ್.ಬಿ. ಸುಧಾಕರ್ ತಿಳಿಸಿದ್ದಾರೆ.

ಕನ್ನಡಪ್ರಭ KANNADAPRABHA
ಪ್ರಧಾನ ಸಂಪಾದಕ: ರವಿ ಹೆಗಡೆ EDITOR IN CHIEF: RAVI HEGDE
ನಮ್ಮ ವಿಳಾಸ: ಸಂಪಾದಕರು, ಕನ್ನಡಪ್ರಭ, ನಂ.36, ಕ್ರೆಸೆಂಟ್ ರಸ್ತೆ, ಮಲ್ಲಿಗೆ ಆಸ್ಪತ್ರೆ ಎದುರು, ಶಿವಾನಂದ ವೃತ್ತ, ಬೆಂಗಳೂರು-560 001
Editor: RAVI HEGDE, Printed and Published by B.V. MALLIKARJUNAIAH on behalf of Kannada Prabha Publications Ltd., No.36, Crescent Road, Bangalore-560 001. Printed at Jagati Publications Ltd., Sy. No.172, Vagata Village, Jadigenahalli Hobli Hoskote Taluk, Bangalore Rural Dist., Pin-562114 and also at Manipal Media Networks Ltd., at 23/4, Kempalinganahalli Nelamangala Taluk, Bangalore Rural Dist., Pin-562123.
Bangalore Vol.55, No. 101 RNI Reg.
COPYRIGHT: Kannada Prabha Publications Ltd. All rights reserved. Reproduction in any manner electronic or otherwise, in whole or in part, without

ಕನ್ನಡಪ್ರಭ Sun, 11 April 2021
https://kpepaper.asianetnews.com/c/59699830

ಇತಿಹಾಸ ಸ್ಪಷ್ಟ | ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ತಿರುಮಲ ಎಂಬ ಟಿಟಿಡಿ ವಾದಕ್ಕೆ ವ್ಯಾಪಕ ಆಕ್ಷೇಪ | ಕರ್ನಾಟಕವೇ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಎಂಬುದಕ್ಕೆ ಸಾಕಷ್ಟು ಸಾಕ್ಷ್ಯ

ಆಂಧ್ರವಲ್ಲ, ಕರ್ನಾಟಕವೇ ಹನುಮಾನ್ ಜನ್ಮಸ್ಥಾನ

ಗೋಕರ್ಣ ಹನುಮನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ, ಕೊಪ್ಪಳದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಕರ್ಮಭೂಮಿ

ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲೇ ಉಲ್ಲೇಖ: ರಾಘವೇಶ್ವರ ಶ್ರೀ

• **ವಸಂತಕುಮಾರ್ ಕತಗಾಲ, ಕನ್ನಡಪ್ರಭ ವಾರ್ತೆ** ಕಾರವಾರ

ರಾಮಾಯಣಕ್ಕೆ ಪ್ರಮಾಣೀಕೃತ ಗ್ರಂಥ ಅಂದರೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣ. ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲೇ ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಗೋಕರ್ಣ ಎಂಬ ಬಗ್ಗೆ ಉಲ್ಲೇಖ ಇದೆ. ಹೀಗಾಗಿ ಗೋಕರ್ಣವು ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ. ಅಂಜನಾದ್ರಿ, ಆಂಜನೇಯನ ಕರ್ಮಭೂಮಿ ಎಂದು ಶ್ರೀ ರಾಮಚಂದ್ರಾಪುರ ಮಠದ ರಾಘವೇಶ್ವರ ಶ್ರೀಗಳು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಹೇಳಿದ್ದಾರೆ.

ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಗೋಕರ್ಣ ಎನ್ನುವುದಕ್ಕೆ ಬೇರೆ ಯಾವ ಪುರಾವೆಯೂ ಬೇಕಿಲ್ಲ ಎಂದು ಅವರು ಸಮರ್ಥಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾರೆ. ಶ್ರೀಗಳು ಸುಂದರಕಾಂಡದ ಶ್ಲೋಕಗಳನ್ನು ಹೀಗೆ ಉದಾಹರಿಸುತ್ತಾರೆ. ↘ 6

> **ರಾಮಾಯಣಕ್ಕೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ರಾಮಾಯಣವೇ ಆಧಾರಗ್ರಂಥ. ಅದರಲ್ಲಿ ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಗೋಕರ್ಣ ಎಂದು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಲಾಗಿದೆ. ಆತನ ಕರ್ಮಭೂಮಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿ.**
>
> • **ಶ್ರೀ ರಾಘವೇಶ್ವರ ಶ್ರೀಗಳು,** ರಾಮಚಂದ್ರಾಪುರ ಮಠ

ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಹನುಮ ವಿಶ್ವಪ್ರಸಿದ್ಧ, 12 ವರ್ಷದ ರಥಯಾತ್ರೆಯೂ ಶುರು

ಕೊಪ್ಪಳದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯ ಪರ ಇತಿಹಾಸ ತಜ್ಞರ ಪ್ರಬಲ ವಾದ

• **ಸೋಮರಡ್ಡಿ ಅಳವಂಡಿ**
ಕನ್ನಡಪ್ರಭ ವಾರ್ತೆ ಕೊಪ್ಪಳ

ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ ಆನೆಗೊಂದಿ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯ ಭೂ ಪ್ರದೇಶವೇ ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖವಾಗಿರುವ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ, ಇಲ್ಲಿರುವ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟವೇ ಅಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಎಂದು ಈಗಾಗಲೇ ವಿಶ್ವಪ್ರಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ. ಉತ್ತರ ಭಾರತೀಯರೂ ಸೇರಿದಂತೆ ದೇಶಾದ್ಯಂತ ಹನುಮಭಕ್ತರು ಇದನ್ನೇ ಹಮಮ ಜನ್ಮಭೂಮಿಯೆಂದು ಬಲವಾಗಿ ನಂಬಿದ್ದು, ಹಿಂದಿನಿಂದಲೂ ಇಲ್ಲಿಗೆ ಆಗಮಿಸಿ ಪೂಜೆ, ಪುನಸ್ಕಾರಗಳನ್ನೂ ಸಲ್ಲಿಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ↘ 6

ಆಂಧ್ರದಲ್ಲೇ ಆಕ್ಷೇಪ

ತಿರುಪತಿ: ಅಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ತಿರುಮಲ ಎಂಬ ವಾದಕ್ಕೆ ಆಂಧ್ರದಲ್ಲೇ ತಜ್ಞರು ಆಕ್ಷೇಪಿಸಿದ್ದಾರೆ. ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಹಸ್ತಪ್ರತಿ ಮಿಷನ್‌ನ ಮಾಜಿ ನಿರ್ದೇಶಕ ಪ್ರೊ.ವೆಂಕಟರಮಣ ರೆಡ್ಡಿ ಈ ಬಗ್ಗೆ ಅಸಮಾಧಾನ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದ್ದರೆ, ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಿಸಲು ತಿರುಮಲ ಮುಖ್ಯ ಅರ್ಚಕರು ನಿರಾಕರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ವಿವರ ↘ 6

epaper.asianetnews.com
ಕನ್ನಡಪ್ರಭ Sun, 11 April 2021
https://kpepaper.asianetnews.com/c/59709541

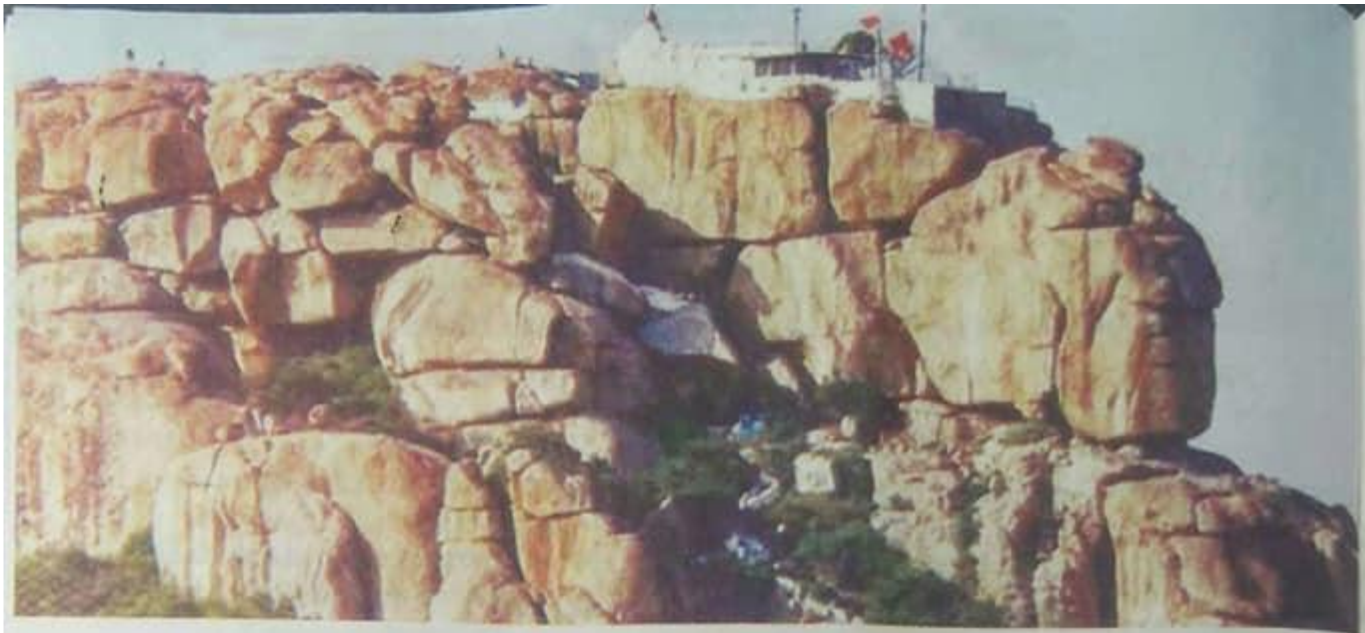

ಚಾರಣಿಗರ ಸ್ವರ್ಗ ಆಂಜನೇಯ ಹುಟ್ಟಿದ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಅಂಜನಾದೇವಿ ಇದ್ದಳು. ವಾಯುವಿನ ಸಂಗ ಬೆಳೆಸಿ, ಆಕೆಗೆ ಜನಿಸಿದವನೇ ಹನುಮಂತ. ಇದರ ಪ್ರತೀಕವಾಗಿ ಬಾಲಹನುಮ, ಅಂಜನಾದೇವಿಯ ಶಿಲ್ಪ ಇರುವ ದೇವಸ್ಥಾನ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟದ ಮೇಲಿದೆ. ಆನೆಗೊಂದಿಯಿಂದ ಮುನಿರಾಬಾದ್‌ಗೆ ತೆರಳುವ ರಸ್ತೆಯಲ್ಲಿ ಸಾಗುವಾಗ ಬಲಬದಿಯಲ್ಲಿ ಈ ಬೆಟ್ಟವಿದೆ.

ರಾಮಾಯಣದ ಕಾಲಕ್ಕೆ ವಾನರರ ತಾಣವಾಗಿದ್ದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ, ಅಂಜನಾದ್ರಿ, ವಿರುಪಾಪುರಗಡ್ಡಿ, ಹನುಮಾಪುರ, ಸಣಾಪುರ, ತಿರುಮಲಾಪುರ ಸುತ್ತಲಿನ ಪರಿಸರಕ್ಕೆ ಹೊಂದಿಕೊಂಡ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತ ತಾಣವು ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳವಾಗಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧ. ಇಲ್ಲಿ ಉದ್ಭವ ಆಂಜನೇಯ ವಿಗ್ರಹ ಪೂಜಿಸಲ್ಪಡುತ್ತದೆ. ರಾಮಾಯಣದಲ್ಲಿ ಬರುವ ವಾನರರಾಜ ಕೇಸರಿ ಮತ್ತು ಅವನ ಪತ್ನಿ ಅಂಜನಾದೇವಿಯರ ಪುತ್ರ ಆಂಜನೇಯನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳ ಈ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟವಾಗಿದೆ.

ಗಂಗಾವತಿ ಮೂಲಕ ಕಿಷ್ಕಿಂದಾ ರೆಸಾರ್ಟ್ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತವಿದೆ. ಇಲ್ಲಿ ಬರುವವರ ಸಂಖ್ಯೆ ವಿರಳ. ಬೆಟ್ಟದ ಮೇಲೆ ದೇವಾಲಯ ಕಾಣುತ್ತದೆ. ಮೆಟ್ಟಿಲುಗಳನ್ನೇರಿ ಅಂಜನಾಪರ್ವತ ನೋಡಲು ಸಾಧ್ಯ. ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದ ಮೇಲೆ ಬರಲು ಬೆಟ್ಟದ ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ ಕಡಿದಾದ 575 ಮೆಟ್ಟಿಲುಗಳಿವೆ.

ಭವಿಷ್ಯೋತ್ತರ ಪುರಾಣದಲ್ಲಿ ಹನುಮಂತನ ಜನ್ಮಸ್ಥಳದ ವಿಚಾರವಾಗಿ ಸಾಕಷ್ಟು ಸಾಕ್ಷ್ಯಗಳು ಮತ್ತು ಉಲ್ಲೇಖಗಳಿರುತ್ತವೆ. ವೇಂಕಟಾಚಲ ಮಾಹಾತ್ಮ್ಯಮ್' ಎಂಬ ಪವಿತ್ರ ಗ್ರಂಥವು ಅನೇಕ ಪುರಾಣಗಳ ಕಥೆಗಳನ್ನೊಳಗೊಂಡಿದೆ. ಭವಿಷ್ಯೋತ್ತರ ಪುರಾಣಾಂತರ್ಗತವಾದ ಈ ಗ್ರಂಥದ ಮೊದಲನೆಯ ಅಧ್ಯಾಯದಲ್ಲಿ ಜನಕ ಮಹಾರಾಜನು ಶತಾನಂದರನ್ನು ಈ ಪರ್ವತಕ್ಕೆ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಎಂಬ ಹೆಸರು ಬರಲು ಕಾರಣವನ್ನು ಕೇಳಿದಾಗ ಅವರು ಜರುಗಿದ ಘಟನೆಗಳನ್ನು ಹೀಗೆ ತಿಳಿಸುತ್ತಾರೆ.

ಹನುಮಂತ ಕರ್ನಾಟಕದವನು: ಆಚಾರ ವಿಚಾರಗಳನ್ನು ಪಾಲಿಸುವ, ಸಂಸ್ಕಾರಗಳನ್ನು ಕಲಿಯುವ ವೀರ ಅಜಾನುಬಾಹು ವಾನರರು ಇರುವ ಪ್ರದೇಶವಾದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ಕರ್ನಾಟಕವಲ್ಲದೇ ಮತ್ತೆಲ್ಲಿ ಇರಲು ಸಾಧ್ಯ. ಹಾಗೆಯೇ ವಾನರರು ಇರುವ ಪ್ರದೇಶಗಳಿಂದಾವೃತವಾದ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯಲ್ಲಿರುವ ಗುಹೆಯೊಂದರಲ್ಲಿ ಶ್ರೀಹನುಮಂತನ ಜನನವಾಯಿತು ಎಂಬುದು ಸತ್ಯ ಸಂಗತಿಯಾಗಿದೆ.

ವಾಲಿಯ ಮರಣಾನಂತರ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆಯ ರಾಜನಾದ ಸುಗ್ರೀವನು ಮಂತ್ರಿಯಾದ ಹನುಮಂತನು ಎಂಬ ಉಲ್ಲೇಖವೇ ಸಾಕು. ಹನುಮ ನಮ್ಮವನೆಂದು ಕರುನಾಡಿನ ಮಹಾವೀರನೆಂದು.

ಇಂತಹ 'ಇನ್ನಷ್ಟು ಉಲ್ಲೇಖಗಳು ಮುದ್ರಣ ಹಂತದಲ್ಲಿರುವ ನನ್ನ ಹನುಮಾಯಣ' ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಸಿಗಲಿದೆ.

ವಿವಿಧ ಪುರಾಣಗಳಲ್ಲಿ ಬರುವ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಉಲ್ಲೇಖ ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ಹೋರಾಟ ಮಾಡುವುದು ಸರಿಯಲ್ಲ, ರಾಮಾಯಣ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ತಿರುಪತಿಯ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಪರ್ವತದ ಉಲ್ಲೇಖವಿಲ್ಲ, ಹನುಮ ಜನ್ಮಭೂಮಿಯನ್ನು ಎಲ್ಲರೂ ಕರ್ನಾಟಕದಲ್ಲಿರುವ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟವೆಂದು ಒಪ್ಪಿಯಾಗಿದೆ.

ಪ್ರಶಂಸೆ

11.4.2021 ರ ಸುಂದರ ಸಂಚಿಕೆ

11.4.2021 ರ ಸಂಚಿಕೆ ಸುಂದರವಾಗಿ ಮೂಡಿಬಂದಿದೆ. ಯುಗಾದಿ ಹಬ್ಬದ ಬಗ್ಗೆ ಲೇಖನ, ಮುಖಪುಟ, ಅನಂತ ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡದ ಸೃಷ್ಟಿ ಆವಿಷ್ಕರಿಸಿದ ಋಷಿದೃಷ್ಟಿ, ರೈತರ ಹೆಸರಿನ ಹೋರಾಟದ ವಾಸ್ತವಿಕತೆ ಕಾಯ್ದೆಗಳು ರೈತರ ವಿರೋಧಿಯೇ? ಅಂಬೇಡ್ಕರ್ ಮತ್ತು ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಪ್ರಜ್ಞೆ, ರೈತನೂ ವಿಜ್ಞಾನಿಯಾಗಬೇಕು, ಮನುಷ್ಯನ ಕ್ಯಾನ್ಸರ್ ರೋಗ ಮುಂತಾದ ಎಲ್ಲ ಲೇಖನಗಳು ಸುಂದರವಾಗಿ ಮೂಡಿಬಂದಿವೆ.

। ವಿ.ಎಸ್. ಶಾಂತಾಬಾಯಿ, ಬೆಂಗಳೂರು

రేపటి నుంచి తిరుమలలో హనుమజ్జయంతి వేడుకలు

తిరుమల, న్యూస్‌టుడే: తిరుమలలోని ఆకాశగంగ ప్రాంతం శ్రీహనుమంతుని జన్మస్థలమని తితిదే కమిటీ ప్రకటించినందున శుక్రవారం నుంచి ఈనెల 8 వరకు హనుమజ్జయంతి వేడుకలు నిర్వహించనున్నట్లు తితిదే అదనపు ఈవో ఏవీ ధర్మారెడ్డి తెలిపారు. ఆకాశగంగలో నిత్యం ఉదయం 8.30 నుంచి 10 గంటల వరకు అంజనాదేవి, బాలహనుమంతులకు అభిషేకం, పుష్పార్చన కొనసాగించడంతో పాటు ఈ మార్గాన్ని బాగుచేస్తామని చెప్పారు. ఎస్వీబీసీ సీఈవో సురేష్, ఓఎస్డీ డాలర్ శేషాద్రితో కలిసి ధర్మారెడ్డి బుధవారం విలేకరులతో మాట్లాడారు. హనుమంతుడు ఆకాశగంగ వద్దే జన్మించారనేందుకు తితిదే వేసిన కమిటీ పురాణేతిహాస, వాఙ్మయ ఆధారాలు చూపిందని, పలువురు మఠాధిపతులు, పీఠాధిపతులు ఆమోదించారని తెలిపారు. శ్రీహనుమద్ జన్మభూమి తీర్థక్షేత్ర ట్రస్టు వాదనను తోసిపుచ్చారు.

A Swami from Hampi challenges TTD's claim on Hanuman birthplace again

29 May 2021

Govindananda Saraswati Swami of Hampi has once again challenged the Tirumala Tirupati Devasthanam (TTD) claim of Anjanadri hills in Tirumala as the real birthplace of Hanuman.

Swami from Hampi in Karnataka delivered a detailed presentation at the Tirupati Press Club on Friday regarding several inaccuracies in every page of the TTD report on Anjaneya's birthplace. This was a day after a heated debate with the TTD pundits' committee which published the controversial report.

Read full story at www.hospet.online

Visit www.hospet.online/join to join our WhatsApp group for latest updates

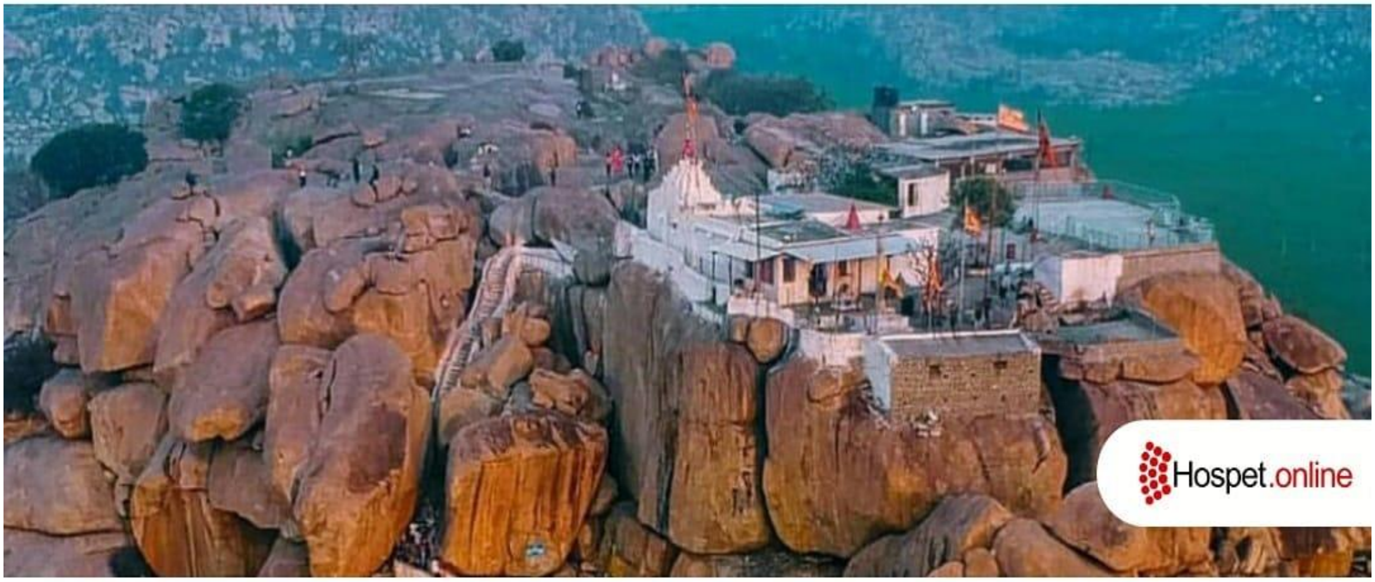

बैंगलोर पेजावर मठ में श्री पूर्णप्रज्ञा विद्यापीठ शास्त्र चर्चा विद्वानों के साथ

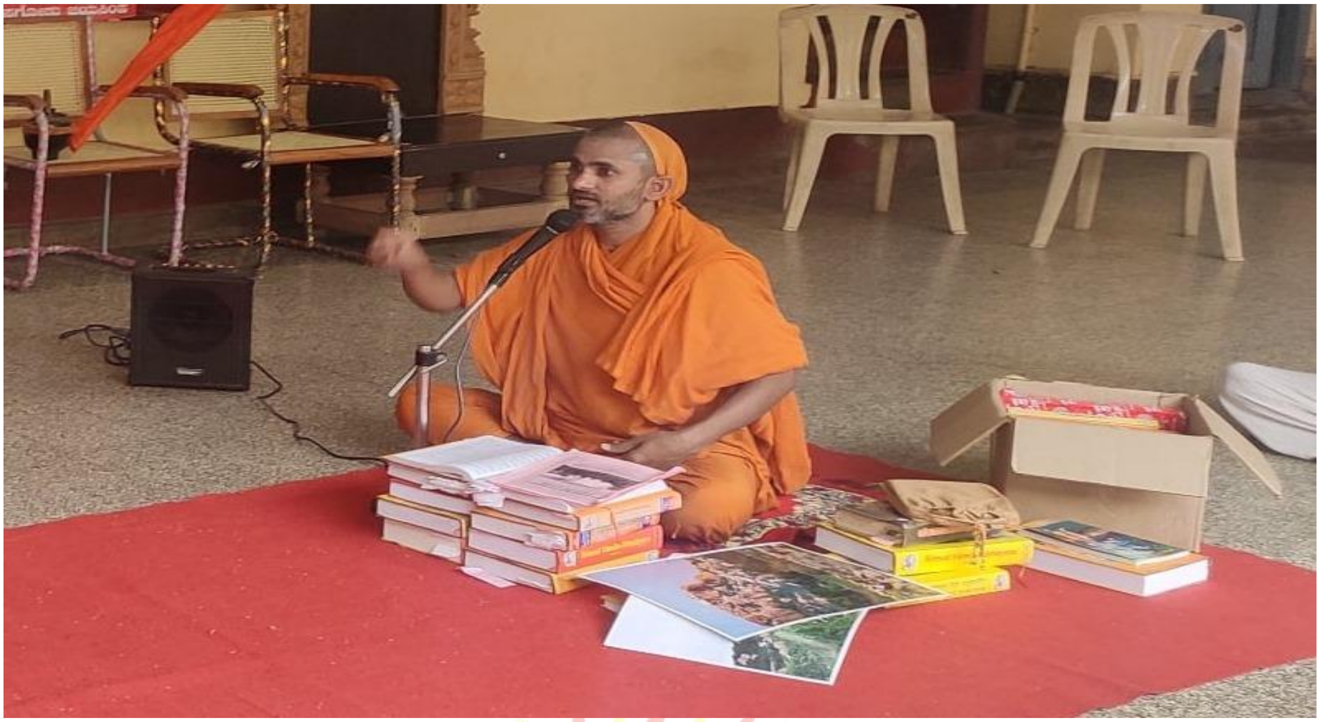

श्री गोविंदानंद सरस्वती स्वामीजी ने श्रीमद वाल्मीकि रामायण के अनुसार सत्य की स्थापना की, भगवान हनुमान ने किष्किंधा में जन्म लिया था

https://www.youtube.com/watch?v=3Py3lZgkaHU&t=222s

https://www.youtube.com/watch?v=3Py3lZgkaHU&t=465s

किष्किंधा में पुस्तक का विमोचनM

ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ
ಆಯುಕ್ತರ ಕಾರ್ಯಾಲಯ, ಹಿಂದೂ ಧಾರ್ಮಿಕ ಸಂಸ್ಥೆಗಳು ಮತ್ತು ಧರ್ಮಾದಾಯ ದತ್ತಿಗಳ ಇಲಾಖೆ,
4ನೇ ಮಹಡಿ, ಶ್ರೀ ಮಿಂಟೋ ಆಂಜನೇಯ ಸ್ವಾಮಿ ಭವನ, ಆಲೂರು ವೆಂಕಟರಾವ್ ರಸ್ತೆ,
ಚಾಮರಾಜಪೇಟೆ, ಬೆಂಗಳೂರು-18.
ದೂರವಾಣಿ: 26709689/ 26706775 ಫ್ಯಾಕ್ಸ್:26700801 email: endowmentcommissioner@gmail.com

ಸಂಖ್ಯೆ:ಎಡಿಎಂ/3/ಎಲ್.ಎನ್.ಡಿ/ಇ-672631/2021-22 ದಿನಾಂಕ:22-02-2022

ಸಭಾ ಸೂಚನಾ ಪತ್ರ

ವಿಷಯ: ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ ಗಂಗಾವತಿ ತಾಲ್ಲೂಕಿನ ಕಿಷ್ಕಿಂದೆ ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿರುವ ಶ್ರೀ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ದೇವಾಲಯದ ಸಮಗ್ರ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಸಂಬಂಧ ಚರ್ಚಿಸಲು ಕರೆದಿರುವ ಸಭೆಯ ಕುರಿತು

ಉಲ್ಲೇಖ: ಮುಜರಾಯಿ, ಹಜ್ ಹಾಗೂ ವಕ್ಫ್ ಸಚಿವರು ಹಾಗೂ ವಿಜಯನಗರ ಜಿಲ್ಲಾ ಉಸ್ತುವಾರಿ ಸಚಿವರ ಆಪ್ತ ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿ ರವರ ಟಿಪ್ಪಣಿ ಸಂಖ್ಯೆ ಮುವಹ/ಆ.ಕಾ/129/2022 ದಿನಾಂಕ:21-02-2022

ಉಲ್ಲೇಖಿತ ಟಿಪ್ಪಣಿಯಲ್ಲಿ ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ ಗಂಗಾವತಿ ತಾಲ್ಲೂಕಿನ ಕಿಷ್ಕಿಂದೆ ಬೆಟ್ಟದಲ್ಲಿರುವ ಶ್ರೀ ಅಂಜನಾದ್ರಿ ದೇವಾಲಯದ ಸಮಗ್ರ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಬಗ್ಗೆ ಚರ್ಚಿಸಲು ದಿನಾಂಕ:23-02-2022ರಂದು ಬುಧುವಾರ ಮಧ್ಯಾಹ್ನ 2-00 ಗಂಟೆಗೆ ಕೊಠಡಿ ಸಂಖ್ಯೆ.123, ವಿಕಾಸಸೌಧ, ಮೊದಲನೇ ಮಹಡಿ, ಬೆಂಗಳೂರು ಇಲ್ಲಿ ಮಾನ್ಯ ಮುಜರಾಯಿ ಇಲಾಖಾ ಸಚಿವರ ಅಧ್ಯಕ್ಷತೆಯಲ್ಲಿ ಸಭೆಯನ್ನು ಆಯೋಜಿಸಲು ಹಾಗೂ ಸಂಬಂಧಪಟ್ಟವರೆಲ್ಲರಿಗೂ ಸಭೆಗೆ ಆಹ್ವಾನಿಸುವಂತೆ, ಮಾನ್ಯ ಮುಜರಾಯಿ ಹಜ್ ಹಾಗೂ ವಕ್ಫ್ ಸಚಿವರು ಹಾಗೂ ವಿಜಯನಗರ ಜಿಲ್ಲಾ ಉಸ್ತುವಾರಿ ಸಚಿವರ ಆಪ್ತ ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿರವರು ತಿಳಿಸಿರುತ್ತಾರೆ.

ಆದ್ದರಿಂದ ಉಲ್ಲೇಖಿತ ಟಿಪ್ಪಣಿಯಲ್ಲಿ ಸೂಚಿಸಿರುವಂತೆ, ಪ್ರಸ್ತಾಪಿತ ದೇವಾಲಯದ ಸಮಗ್ರ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದಂತೆ ದಿನಾಂಕ:23-02-2022ರಂದು ನಡೆಯುವ ಸಭೆಗೆ ಅಗತ್ಯವಾದ ಮಾಹಿತಿ/ದಾಖಲಾತಿಗಳೊಂದಿಗೆ ತಪ್ಪದೇ ಹಾಜರಾಗುವಂತೆ, ತಮ್ಮನ್ನು ಕೋರಲು ಮಾನ್ಯ ಆಯುಕ್ತರಿಂದ ನಿರ್ದೇಶಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿದ್ದೇನೆ.

22/2/2022

ಆಯುಕ್ತರ ಪರವಾಗಿ,
ಧಾರ್ಮಿಕ ದತ್ತಿ ಇಲಾಖೆ, ಬೆಂಗಳೂರು

1) ಶ್ರೀ ಸುರಲ್ಕರ್ ವಿಕಾಸ್ ಕಿಶೋರ್, ಭಾ.ಆ.ಸೇ
ಜಿಲ್ಲಾಧಿಕಾರಿಗಳು, ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ, ಕೊಪ್ಪಳ ರವರಿಗೆ

2) ಶ್ರೀ ಹೇಮಂತ್ಎನ್: ಭಾ.ಆ.ಸೇ
ಸಹಾಯಕ ನಿರ್ದೇಶಕರು, ಪ್ರವಾಸೋಧ್ಯಮ ಇಲಾಖೆ, ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ ಮೊಬೈಲ್ ನಂ: 8197320430

3) ಶ್ರೀ ಹರ್ಷಕುಮಾರ್, ಐ.ಎಫ್.ಎಸ್
ಜಿಲ್ಲಾ ಅರಣ್ಯ ಸಂರಕ್ಷಣಾಧಿಕಾರಿಗಳು, ಕೊಪ್ಪಳ ತಾ: ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ
ಮೊಬೈಲ್ ನಂ: 9612913045

-2-

-2-

4) ಶ್ರೀ ಸಂಗಣ್ಣ ಕರಡಿ, ಮಾನ್ಯ ಲೋಕಸಭಾ ಸದಸ್ಯರು ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ

5) ಶ್ರೀ ಪರಣ್ಣಮುನವಳ್ಳಿ, ಮಾನ್ಯ ಶಾಸಕರು, ಗಂಗಾವತಿ ವಿಧಾನಸಭಾ ಕ್ಷೇತ್ರ, ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ ಮೊಬೈಲ್ ನಂ: 9448131282

6) ಡಾ: ಎಂ ಕೊಟ್ರೇಶ್, ಕುಲಸಚಿವರು, ಬೆಂಗಳೂರು ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು ಮೊಬೈಲ್ ನಂ: 9448801569

7) ಶ್ರೀ ಎಸ್.ಗೋವಿಂದ ಭಟ್ಟ (ವೇದ ವಿಭಾಗ) ರಾಜ್ಯ ಧಾರ್ಮಿಕ ಪರಿಷತ್ ಮಾನ್ಯ ಸದಸ್ಯರು, ನಂ.2163, 22ನೇ ಕ್ರಾಸ್, ಹೆಬ್ಬಾಳ, 2ನೇ ಹಂತ, ಮೈಸೂರು-17 ಮೊಬೈಲ್ ನಂ:9448516812

8) ಡಾ: ಶರಣಬಸಪ್ಪ ಕೊಲ್ಕೆರ್, ಪ್ರಾಚಾರ್ಯರು ಹಾಗೂ ಇತಿಹಾಸ ಸಂಶೋಧಕರು, ಕೆಎಸ್‌ಸಿ ಮಹಿಳಾ ಮಹಾವಿದ್ಯಾಲಯ, ಗಂಗಾವತಿ ತಾಲ್ಲೂಕು, ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ ಮೊಬೈಲ್ ನಂ. 9845267155

9) ಡಾ:ಸ್ಮಿತರೆಡ್ಡಿ, ಡೆಪ್ಯೂಟಿ ಡೈರೆಕ್ಟರ್, ಭಾಷಾಂತರ ವಿಭಾಗ, ಮಾನ್ಯ ಉಚ್ಚನ್ಯಾಯಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು ಮೊಬೈಲ್ ನಂ. 9449522463

10) ಡಾ: ವಾಸುದೇವ್ ಬಡಿಗೇರ್, ಪ್ರಾಧ್ಯಾಪಕರು, ಪ್ರಾಚೀನ ಇತಿಹಾಸ ಪುರಾತತ್ವ ವಿಭಾಗ, ಕನ್ನಡ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ. ಹಂಪಿ, ಪೋಸ್ಟ್ ವಿದ್ಯಾರಣ್ಯ, ವಿಜಯನಗರ ಜಿಲ್ಲೆ, ಹೊಸಪೇಟೆ ಮೊಬೈಲ್‌ನಂ. 9483980945

11) ಡಾ:ಚೆಲುವರಾಜ್, ಪ್ರಾದ್ಯಾಪಕರು, ಬುಡಕಟ್ಟು ಅಧ್ಯಾಯನ ವಿಭಾಗ, ಕನ್ನಡ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ. ಹಂಪಿ, ಪೋಸ್ಟ್ ವಿದ್ಯಾರಣ್ಯ, ವಿಜಯನಗರ ಜಿಲ್ಲೆ, ಹೊಸಪೇಟೆ ಮೊಬೈಲ್ ನಂ. 9480353091

12) ಡಾ:ಸಿದ್ದಲಿಂಗಪ್ಪ, ಕೊಟ್ನೆಕಲ್, ಉಪನ್ಯಾಸಕರು, ಸಂಶೋದಕರು, ಗವಿಸಿದ್ದೇಶ್ವರ ಕಾಲೇಜು, ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ ಮೊಬೈಲ್ ನಂ. 7353872979

13) ಡಾ: ಎಸ್.ವೈ. ಸೋಮಶೇಖರ್, ಪ್ರಾದ್ಯಾಪಕರು, ಪ್ರಾಚೀನ ಇತಿಹಾಸ ಹಾಗೂ ಪುರಾತತ್ವ ವಿಭಾಗ, ಕನ್ನಡ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ. ಹಂಪಿ, ಪೋಸ್ಟ್ ವಿದ್ಯಾರಣ್ಯ, ವಿಜಯನಗರ ಜಿಲ್ಲೆ, ಹೊಸಪೇಟೆ ಮೊಬೈಲ್ ನಂ. 9480395800

14) ಶ್ರೀ ನಾಗರಾಜ್. ಕ.ಆ.ಸೇ ತಹಶೀಲ್ದಾರ್, ಗಂಗಾವತಿ ತಾಲ್ಲೂಕು ಮೊಬೈಲ್ ನಂ 9886170255

15) ಶ್ರೀ ಸಂತೋಷ್ ಕೆಲೋಜಿ, ಗಂಗಾವತಿ ತಾಲ್ಲೂಕು ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ ಮೊಬೈಲ್ ನಂ. 9844057944

16) ಶ್ರೀಅರವಿಂದ ಸುತಗುಂಡಿ, ಆಡಳಿತಾಧಿಕಾರಿಗಳು, ಶ್ರೀ ಆಂಜನೇಯ ಸ್ವಾಮಿ ದೇವಾಲಯ, ಆಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟ ಗಂಗಾವತಿ ತಾಲ್ಲೂಕು ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ ಮೊಬೈಲ್ ನಂ.9980485675

-3-

-3-

17) ಶ್ರೀ ಹೆಚ್ ಹೆಚ್ ಶ್ರೀ ಗೋವಿಂದನಂದ ಸರಸ್ವತಿ ಸ್ವಾಮೀಜಿ, ಫೌಂಢರ್ ಟ್ರಸ್ಟಿ, ಶ್ರೀ ಹನುಮಜನ್ಮ ಭೂಮಿ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್, ರಿಜಿಸ್ಟ್ರೇಷನ್ ನಂ.135/2020 ಪಂಪಕ್ಷೇತ್ರ, ಕಿಷ್ಕಿಂದ ಸ್ವರ್ಣಹಂಪಿ, ಹೊಸಪೇಟೆ ತಾಲ್ಲೂಕು, ವಿಜಯನಗರ ಜಿಲ್ಲೆ

18) ಕಾರ್ಯ ನಿರ್ವಾಹಕ ಅಧಿಕಾರಿಗಳು, ಶ್ರೀ ಆಂಜನೇಯಸ್ವಾಮಿ ದೇವಾಲಯ, ಆಂಜನಾದ್ರಿ ಬೆಟ್ಟ ಗಂಗಾವತಿ ತಾಲ್ಲೂಕು ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ

ಪ್ರತಿಯನ್ನು:

1) ಮಾನ್ಯ ಮುಜರಾಯಿ, ಹಜ್ ಹಾಗೂ ವಕ್ಫ್ ಸಚಿವರು ಹಾಗೂ ವಿಜಯನಗರ ಜಿಲ್ಲಾ ಉಸ್ತುವಾರಿ ಸಚಿವರ ಆಪ್ತ ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿರವರು , ವಿಕಾಸ ಸೌಧ, ಬೆಂಗಳೂರು ರವರ ಅವಗಾಹನೆಗೆ

2) ಮಾನ್ಯ ಪ್ರಧಾನ ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿಗಳು, ಕಂದಾಯಇಲಾಖೆ(ಮುಜರಾಯಿ) ಬಹುಮಹಡಿಗಳ ಕಟ್ಟಡ, ಬೆಂಗಳೂರು ರವರ ಅವಗಾಹನೆಗೆ

Meeting with Endowment Minister, M.P Koppal , M.L.A Gangavati eniminet scholors form different colleges

Activate Windows

किष्किंधा के विकास को लेकर कर्नाटक के राज्यपाल श्री थावरचंद गहलोत से चर्चा

बी बोम्मई सीएम कर्नाटक के साथ चर्चा, श्री हनुमद जन्मभूमि-किष्किंधा से संबंधित महत्वपूर्ण दस्तावेज सौंपे गए - 29 जनवरी 2022 बंगलौर में , 215 मीटर भक्ति की मूर्ति परियोजना के बारे में समझाया ,

Karnataka scholars point to inscriptions, paintings to prove Hanuman was born in Kishkinda, The TTD claims that Lord Hanuman was born in Tirumala. The Board's plans to construct a temple has been stayed by the High Court.

महाराष्ट्र के नासिक में अंजनेरी, गुजरात के नवसारी में अंजन हिल और झारखंड में अंजन गांव शामिल हैं।, जल्द ही हमारे अखिल भारतीय "श्री हनमद जन्मभूमि श्री किष्किंधा हनुमान - राम भक्ति वैभव यात्रा" होगी।

After Karnataka Chief Minister Basavaraj Bommai announced Rs 100 crore for the development of Anjanadri Hills in Gangavati taluk of Koppal district, which is believed to be the birthplace of Lord Hanuman, the district administration is preparing a masterplan to develop it as a world-class pilgrimage site. This development comes after Tirumala Tirupati Devasthanams (TTD) announced a mega project claiming that Hanuman was born on Tirumala Hills. However, the TTD project has been stayed by the Andhra Pradesh High Court.

The discussion on the birthplace of Lord Anjaneya began after the Supreme Court settled the long-standing Ayodhya issue in 2019. In December 2020, TTD had formed a committee led by experts to study in detail about the evidence that Anjanadri was the birthplace of Hanuman. The then Vice-Chancellor of the National Sanskrit University V Muralidhara Sharma, who was also the member of the TTD committee to conduct study on the birthplace of Hanuman, had concluded that the monkey god was born in Tirumala.

"After four months of extensive research, it has been established, based on puranic anthologies, literary and epigraphic evidence and geographic details that Venkatachalam is also known as Anjanadri and 19 other names and Hanuman was born on Anjanadri in Treta Yuga," Sharma had told media persons in April 2021. Based on these findings, the TTD had planned a mega project for the development of the area. However, the TTD's claims were challenged in the High Court and the court ordered a stay on the project, a day before the ground breaking ceremony of the project was scheduled on February 15 this year.

Govindananda Saraswati Swamiji of Pampa Kshetra, Hampi and the founder of Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust, who is fighting legally with the TTD said, "TTD failed to prove their case in the court."

"We had approached the High Court against the so-called mega project at the alleged birth place of Lord Hanuman in Tirumala. With several fake documents, they tried to go ahead with their plans. The court gave a stay order on any construction on the hills. They were caught red-handed in the court," Govindananda seer told News9.

Karnataka has denied the claims of TTD and maintained that the Anjaneya was born in Kishkinda region, which is currently the Hampi and Anegundi areas. Speaking on the issue, Muzrai Minister Shashikala Jolle said, "TTD can't alter myths. The Ramayana clearly mentions the Anjanadri Hill in Kishkinda region as the birthplace of Hanuman.

" According to the historians in the region, Anegundi was the centre of Vijayanagara empire before Hampi was chosen as its capital. Hampi is believed to be the place where Lord Ram, who came in search of Sita, met Hanuman for the first time. Dr Sharanabasappa Kolkar, a noted historian says, "There is no dispute about the birthplace of Hanuman and he was born in Kishkinda, the current day Hampi."

"Anjanadri is the original birthplace of Hanuman. We have documents, including Ramayana written by Valmiki. It is clearly mentioned that Hanuman was born in Kishkinda, which is now known as Hampi, Anegundi and surrounding areas. In Ramayana, it is mentioned that Kishkinda is situated near the river Pampa. The same river is now called Tungabhadra. As proof of this, there are several inscriptions and literary works. In the Ramayana epic, several places have been mentioned, like

Pampa Sarovara, Vali Killa, Vrusha Parvata, Sugriva Guha, Madhubana, and Anjanadri. All these places are situated in this area and they still continue to exist. Vanaras were the tribal people of this region and they had depicted their paintings in the caves which can be seen till now. All these support our theory that this area was Kishkinda and Hanuman was born here." Dr Vasudev Badiger, professor of ancient history and archaeological studies in Kannada University, Hampi, says, "There are several inscriptions in the regions which proves that lord Hanuman was born in Anjanadri Hills." People perform pooja to a portion of the mountain believing that Hanuman was born at this particular place.

It is interesting to note that on the foothills of Anjanadri, there is a village named Hanumanahalli, there is a 16th century inscription, which says, "Anjanadeviya Anjayanege datti bittiddu," (It is gifted to Anjaneya). There are inscriptions in various places across India but nowhere is it mentioned as Anjadeviya Anjaneya. In various religious texts it has been mentioned that Hanuman was born in Kishkinda region, Hampi and surrounding areas were known as Kishkinda. There is also evidence in the form of stone inscriptions that this area was known as Kishkinda.

These inscriptions are at least more than 1,000 year old. These inscriptions are not only in Hampi but also in various other districts of Karnataka." Dr Ram Avtar, head of the National Committee on Ramayana circuit, said, "All places mentioned in Ramayana are in Kishkinda and not in Tirumala. There is no mention of Hanuman visiting any other place." Speaking on the proof demanded by the TTD, Govindananda seer claims, there are four instances in Ramayana which mentions about the birth of Anjaneya. "In Valmiki Ramayana, Lord Hanuman's birthplace has been mentioned four times. First one was how Hanuman was born, in second instance, Jambavantha himself tells Hanuman about his birth, in the third instance, Hanuman himself speaks about his birth and other details to goddess Sita in Lanka and finally, Agastya Muni explains about Lord Hanuman to Shree Ram.

What other proof does anyone want?" When asked about the claims made by the TTD, Badiger said, "TTD doesn't have concrete evidence to prove their claims." "Tirupati Sthala purana (historical stories) was written after Tirumala was developed. In this there is a mention of Anjanadri, which was added later, hence it is not related to Hanuman's birth. It is also mentioned that Hanuman stayed in Anjana Giri, even

Melukote in Mandya has been called as Anjanadri, so it signifies that just because it is mentioned does not necessarily mean that Anjaneya was born there. Apart from TTD, several states in north India claim that Hanuman was born there but they don't hany any proof in the form of inscriptions as we have in Hampi." Echoing the sentiments of Dr Badiger, historian Dr Kolkar said, "Places mentioned in the Ramayana are not found near Tirumala but in Hampi."

"TTD claims Tirupati-Tirumala is known by 16 names, Anjanadri is one of them, based on this theory they put forth a story that it is the birthplace of Anjaneya. There are no areas in Tirupati that were mentioned in Ramayana. Here, concrete evidences like cave paintings of contemporary period Ramayana epics are found in the Anegundi region. The symmetry of the native people here are similar to that of Hanuman and Vali (king of Kishkinda).

TTD makes their claims based on the Venkatachala Purana, which was written in the 17th century. But Skanda Purana, which was written in the 13th century, clearly mentions Kishkinda and Anjanadri Betta, which is the birthplace of Hanuman." He also added that the, "The villages surrounding Anjanadri Hills are known as Anjanahalli, Hanumanahalli, Rampura. Anjanahalli is the original village of Anjanadevi. She gave birth to Hanuman on top of the hill and hence it was called as Anjana Parvata. There are several folks who prove this theory.

The TTD is doing it for commercial purposes. It wants to attract devotees from north India and hence they started this theory." Govindananda seer, who in May last year had debated with the experts from TTD committee over the issue, which ended in a stalemate, expressed his unhappiness over the Karnataka government's stance on the development of the region till now. "If the government had woken up two years ago and had started some work none of this would have happened, but nobody bothered about it. Now, they have woken up, and they have decided to do it.

<u>We met the Chief Minister and submitted all the documents related to Lord Hanuman's birth place at Anjanadri Hills. We also gave details of how TTD was trying to gain by claiming that Anjaneya was born in Tirumala. All the seers have accepted that Hanuman was born in Kishkinda. With a lot of effort, a master plan has been prepared and it will be started soon.</u>

TTD has failed to prove that Lord Hanuman was born in Tirupati. We are going to Ayodhya on April 9 to bring sand which will be used in the construction works in Lord Hanuman temple in Hampi." Apart from Karnataka, TTD, there are a few other states that claim to be Hanuman's birthplace. These include Anjaneri in Nashik, Maharashtra, Anjan Hill in Navsari, Gujarat, and Anjan village in Jharkhand.

हमने मुख्यमंत्री से मुलाकात की और अंजनाद्री हिल्स में भगवान हनुमान के जन्म स्थान से संबंधित सभी दस्तावेज जमा किए। हमने यह भी विवरण दिया कि कैसे टीटीडी यह दावा करके हासिल करने की कोशिश कर रहा था कि अंजनेय का जन्म तिरुमाला में हुआ था। सभी ऋषियों ने स्वीकार किया है कि हनुमान का जन्म किष्किंधा में हुआ था। काफी मशक्कत के बाद मास्टर प्लान तैयार किया गया है और जल्द ही इसे शुरू कर दिया जाएगा। टीटीडी यह साबित करने में विफल रहा है कि भगवान हनुमान का जन्म तिरुपति में हुआ था। हम नौ अप्रैल को अयोध्या जा रहे हैं, हम रेत लाने के लिए जिसका उपयोग हम्पी में भगवान हनुमान मंदिर के निर्माण कार्यों में किया जाएगा। कर्नाटक, टीटीडी के अलावा, कुछ अन्य राज्य हैं जो हनुमान की जन्मभूमि होने का दावा करते हैं। इनमें

अंजनीगर्भ संभूत कपीन्द्र सचिवोत्तम । रामप्रिय नमस्तुभ्यं हनुमन् रक्ष सर्वद ॥
Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust ®
KISHKINDHA HANUMAN HALLI, ANEGONDI, GANGAVATI T.Q, KOPPAL DISTRICT – 583234 TEL: 8500411115/8
Ayodhya Sri Rama Ratha
Rama Janmabhoomi Dharma Ratha
'84' Feet Worlds Tallest
Chariot for Ayodhya
Srirama Janmabhoomi Madir
from Kishkindha
On behalf of Sri Hanuman from Kishkindha (the birth place of Sri Hanuman) the Staunch & Paramount Devotee of Sri Rama, and Pinnacle of Devotion, Presenting grand 84'Feet Worlds tallest Brahma Ratham - Ayodhya "Sri Rama Ratham" to his Lord Sri Ramachandra for his birthplace Temple Sri Rama Janmabhoomi Mandir
5' Kalasha
9' Alankara
35' Peetham –
5'
10' Upper Base
10' Base
10' Chakra –
Ayodhya Sri Rama Ratha
Width – 26 F
SRI RAMAANUGRAHA
SRI AYODHYA RAM PARIVAR,
SUVARNA KALASHAM,
NAVARATNA SIMHASANAM,
3000 C.F.T TAKE WOOD,
SAMPOORNA SRI VALIKI
RAMAYANA CHITRAS,
DURATION : 2 YRS 2021-23
BUDGET : 4 CRO
DONATE
BHIM UPI Canara Bank
Trust A/C Name : Sri Hanumad Janma Bhoomi Teertha Kshetra Trust (R),
A/C No : 1187101014373,
Bank : Canara Bank,
IFSC : CNRB0001187,
Branch : Hampi,
PAN : AAZTS5606H
By Sri Hanumad Janma Bhoomi Teertha Kshetra Trust (Reg.135/20)
Sri Pampakshetra Kishkindha Swarnahampi - Bhaktinagara Samrajya,
Reg Office: SwarnaHampi (New Hampi), Hospet TQ. Bellary Dist, Karnataka 583239 8762711113/6,
Office: Kishkindha Hanuman Halli, Anegondi, Gangavati T.Q, Koppal District – 583234 Contact: 8500411115/8
hanumadjanmabhoomitrust@gmail.com, kishkindhasamsthanam@gmail.com, swarnahampi@gmail.com,
www.kishkindha.org | www.swarnahampi.org
Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust
@ SHJBTKTrust

ಕುಂಭಾಶಿ

ಕುಂಭಾಶಿ
GSTIN : 29AATFV6591

Sri Hanumad Janma Bhoomi Teertha Kshetra Trust (Reg.135/2020

ಜಯ ಶ್ರೀರಾಮ

Visited Hampi Kannada University had a fruitful discussion with Hampi University vice chancellor Dr.S.C.Ramesh regarding "Kishkindha Hanumad Janmabhoomi" and development activities from SRJBTK Trust and presented the brochure of Upcoming 215 Mtrs Sri Hanumad Janmabhoomi Madir Project in Kishkindha and also had a discussion for conducting interaction sections in University on "Ramayana", "Kishkindha", "Hanumad Janmabhoomi"

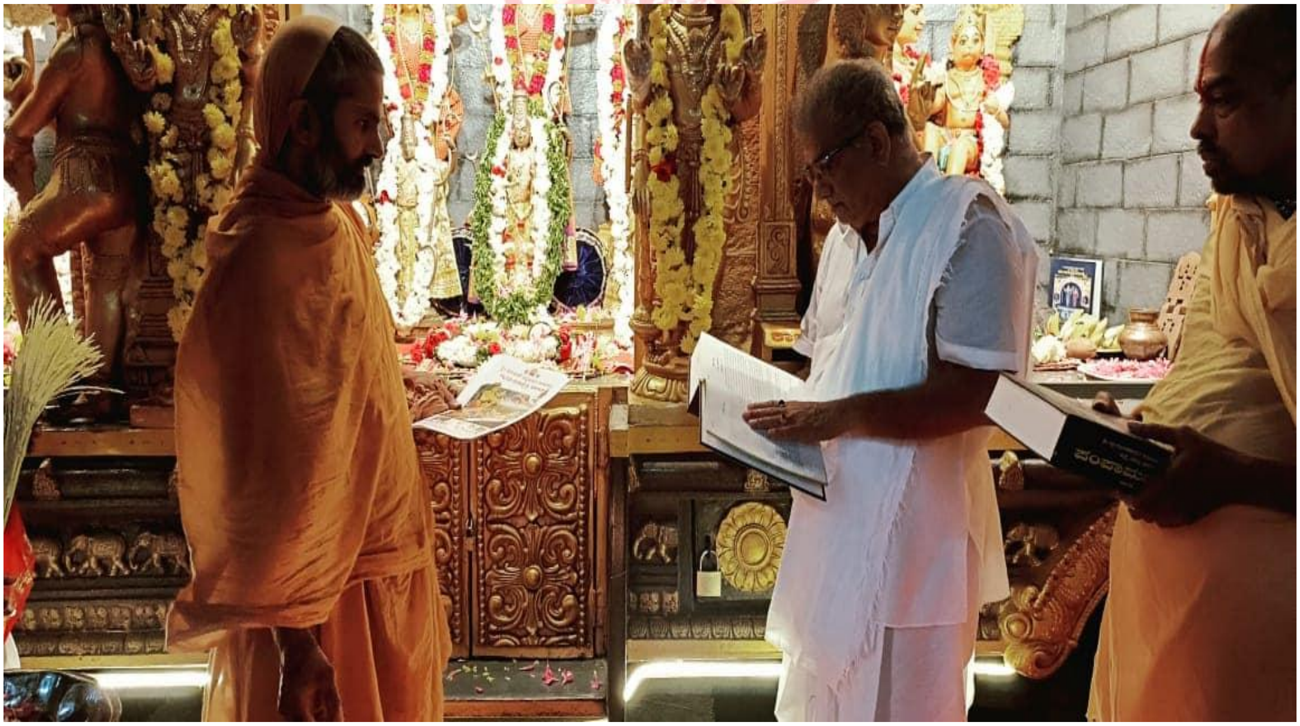

ಶ್ರೀ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಹನುಮಾನ್ ರಥಯಾತ್ರೆ
ಶ್ರೀ ಶ್ರೀ ಗೋವಿಂದಾನಂದ
ಸರಸ್ವತೀ ಸ್ವಾಮಿಗಳಿಗೆ
ಹಾರ್ದಿಕ ಸ್ವಾಗತ
ಮಂಗಳೂರು ನಗರದ
ಸನಾತನ

अब तिरुपति से गोकर्ण

गोकर्ण (कर्नाटक)

श्री गणेशाय नम:

जय विरूपाक्ष , जय श्री राम , जय हनुमान

। रामे चित्तलय: सदा भवतु मे ।

| श्री रुद्र अवतार, वायु पुत्र, केसरी अञ्जनी नन्दन हनुमान |

श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा अञ्जनाद्रि पर्वत

टि.टि.डि. कमेटी, गोकर्ण श्री रामचंद्रापुर मठ की हार
हनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट (रि) का जीत

टि.टि.डि कमेटी, कर्नाटक मे गोकर्ण, श्री रामचंद्रापुर वाले और अन्य लोगोंका निराकरण : हमने टि.टि.डि कमेटी का कर्नाटक मे गोकर्ण, श्री रामचंद्रापुर मठ वाले लोगों का शोध सामग्री और वक्तव्य का संपूर्ण विश्लेषण किया जो टि.टि.डि/ गोकर्ण श्री रामचंद्रापुर मठ वाले अन्य लोग साबित करना चाहते थे कि भगवान हनुमान ने तिरुपति / गोकर्ण में जन्म लिया था लेकिन अंत में भगवान श्री हनुमान जी का जन्म तिरुपति / गोकर्ण नही है, परम प्रमाण श्री वाल्मीकि रामायण ही है, श्री हनुमान जी कि जन्म किष्किंधा मे ही हुआ

“स्वस्ति श्री शुभ कृत चैत्र शुक्ल प्रतिपदा – बुधवार (02-04-2022)

1) श्रीगोविन्दानन्द सरस्वती
2) [illegible]
3) Ganapati S. Bhat Hire – [illegible]
4) [illegible] 34
[illegible]
5) Imp
गजानन दीक्षित [illegible]
गणेश्वर सांब दीक्षित [illegible]

6) Vishwanath Phanirajbhat Gopi — [signature]

7) गणेश वासुदेव शर्मा जोगळेकर — [signature]

8) KUMARASWAMY JOSHI U.S.A. — [signature]

9) [illegible] — [signature]

10) [illegible] — [signature]

11) [illegible] — [signature]

12) ಶ್ರೀನಿವಾಸ, ವಿಶ್ವೇಶ್ವರ. ಭಟ — [signature]

13) सोमनाथ वासुदेव जोगळेकर — [signature]

14) [illegible] ಕೃಷ್ಣ [illegible] ಜೋಗಳೇಕರ — [signature]

15) ವೇ.ಮೂ. [illegible] ರಾಮಕೃಷ್ಣ ಭಟ [illegible]

16) ವೇ.ಮೂ.(ರಘು) ಬಾಲಚಂದ್ರ ಪ್ರಭಾಕರ ಕೊಲ್ಲೆಕರ — [signature]

16) ವೇ.ಮೂ [illegible] ಬಾಲಚಂದ್ರ ಜೋಗಳೇಕರ — [signature]

17) ವೇ.ಮೂ ಪ್ರಭಾಕರ ರಾಮಚಂದ್ರ ಕೊಲ್ಲೆಕರ — P.R.Kollekar

18) ವೇ.ಮೂ. ಎಚ್.ಎಸ್. ಅನಂತನಾರಾಯಣ ([illegible]) — [signature]

19) [illegible] — [signature]

20) ವೇ.ಮೂ. ಉದಯ ಗಣಪತಿ [illegible] — [signature]

21) ವೇ.ಮೂ. [illegible] — [signature]

२२) नीलकंठ वासुदेव जोगळेकर.   नी.वा.जोगळेकर.

२३) ವೆಂಕಟೇಶ ಚಂದ್ರಶೇಖರ [illegible]   C.S. Moole

२४) ಎಲ್.ಎಸ್. ನಿರಂಜನಮೂರ್ತಿ. ಗಜಾನನ ಜೋಶಿ ಗೋಕರ್ಣ
ಶ್ರೀಕ್ಷೇತ್ರ ಗೋಕರ್ಣ ಶ್ರೀ ಮಹಾಬಲೇಶ್ವರ ದೇವಸ್ಥಾನದ
ಸಂಬಂಧದ ಕರ್ತರು. ಜ್ಯೋತಿಷ್ಯ ಪಂಡಿತ.

ಶ್ರೀ ಕ್ಷೇತ್ರ ಗೋಕರ್ಣ ವೈದಿಕ ವೃಂದ
'ಜೋಗಳೇಕರ ಗೃಹಮ್' ಶ್ರೀ ಮಹಾಬಲೇಶ್ವರ ದೇವಸ್ಥಾನದ ಎದುರು,
ಗೋಕರ್ಣ - 581 326, ತಾ. ಕುಮಟಾ (ಉತ್ತರ ಕನ್ನಡ ಜಿಲ್ಲೆ) ಕರ್ನಾಟಕ
Shree Kshetra Gokarna Vaidika Vrinda
Jogalekar Griham', Opp. Shree Mahabaleshwar Temple, **Gokarn - 581 326,** Tq. Kumta (U.K.) Karnataka
E-mail : gokarn5@gmail.com Mobile : 9448628921, 9448797343

Ref. No.

Date :

श्री गणेशाय नम: जय विरूपाक्ष , जय श्री राम , जय हनुमान
। रामे चित्तलय: सदा भवतु मे ।
| श्री रुद्र अवतार, वायु पुत्र, केसरी अञ्जनी नन्दन हनुमान |
टि.टि.डि. कमेटी, गोकर्ण श्री रामचंद्रापुर मठ की हार
श्री हनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट (रि) का जीत

विषय: श्री हनुमान जी का जन्म, जन्म स्थल, जन्म तिथि एवं जन्म के वृत्तान्त विमर्श और निर्णय,

निर्णय : श्री हनुमान जी भगवान श्री रुद्र के अवतार हैं," श्री वायु देवता के अनुग्रह से "औरस पुत्र" हैं । श्री केसरी की पत्नी अञ्जना देवी ने किष्किंधा नगरी में स्थित अञ्जनाद्री पर्वत गुफा में चैत्र शुक्ल पूर्णिमा तिथि में जन्म दिया था । हनुमान जी शुद्ध आजन्म बाल ब्रह्मचारी, अविवाहित हैं :

जन्म स्थल : त्रेतायुग में दक्षिण भारत में (वर्तमान कर्नाटक राज्य) पम्पाक्षेत्र तुङ्गभद्रा नदी के तट पर विराजमान किष्किंधा नगरी में हुआ, , यहा "गुहा" का अर्थ साक्षात् स्थान विषेश है "किष्किंधा" (यथा रामायणे।१।१।७०। "किष्किन्ध्यांरामसुग्रीवौजग्मतुस्तौगुहांतदा॥") और गुफा भी है, पम्पा सरोवर के पास स्थित "किष्किन्धा" पर्वत मे गुफा भी है , और यही पर्वत (पहाड़) पर अञ्जना देवी हनुमान को जन्म दिया उसी कारण इस् "किष्किन्धा" पर्वत बाद में अञ्जनाद्री नाम से विख्यात हुआ, किष्किन्धा पर्वत् ही अञ्जनाद्रि पर्वत

एवमुक्ता ततस्तुष्टा जननी ते महाकपे। गुहायां त्वां महाबाहो प्रजज्ञे प्लवगर्षभम्।। वा.रा 4.66.20 ॥)

(ति.टी.व्या - ततस्तुष्टा मनसा महादैवततेज: संक्रम कथनात्

गा. भी. जोगळेकर.
01-4-2022

1

Shree Kshetra Gokarna Vaidika Vrinda
Jogalekar Griham', Opp. Shree Mahabaleshwar Temple, Gokarn - 581 326, Tq. Kumta (U.K.) Karnataka
E-mail : gokarn5@gmail.com Mobile : 9448628921, 9448797343

Ref: गुहायां तत्पर्वतगुहायां तदानीमेवेति भाव:) | भाव: अत्र गुहायां इत्युक्ते किष्किन्धायां, (तत्पर्वतगुहायां इत्युक्ते किष्किन्धायां विद्यमानकिष्किन्धानाम्नाप्रसिद्धअञ्जनाद्रिपर्वतगुहायां इत्यर्थ: |

जन्म तिथि / जयन्ति : चैत्र शुक्ल पूर्णिमा "महाचैत्रीपूर्णिमायां समुत्पन्नो ऽञ्जनीसुत: - आ.रा सा-१३,१६२" तिथि में श्री हनुमान् जी का जन्म हुआ,

टि.टि.डि कमेटी, कर्नाटक मे गोकर्ण, श्री रामचंद्रापुर वाले और अन्य लोगोंका निराकरण :

टि.टि.डि कमेटी का कर्नाटक मे गोकर्ण, श्री रामचंद्रापुर मठ वाले लोगों का शोध सामग्री का संपूर्ण विश्लेषण श्री गोविंदानन्द स्वामी जी और, गोकर्ण कि वेद शास्त्र विद्वानों कि द्वारा संपूर्ण विश्लेषण किया , जो टि.टि.डि/ गोकर्ण श्री रामचंद्रापुर मठ वाले अन्य लोग साबित करना चाहता थे कि भगवान हनुमान ने तिरुपति/ गोकर्ण में जन्म लिया था लेकिन अंत में भगवान श्री हनुमान जी का जन्म तिरुपति/ गोकर्ण नही है, परम प्रमाण श्री वाल्मीकि रामायण ही है, श्री हनुमान जी कि जन्म किष्किंधा मे ही हुआ यह शास्त्र निर्णय हुआ

श्री गोविंदानन्द सरस्वती स्वामी जी साक्षात् श्री रामचंद्रापुर मठ स्वामीजी से गोकर्ण मे मिले वहा विद्वान् उनके मठके पंडित, अधिकारीयों से यह विषय २ गंटे तक श्री हनुमान् जन्मभूमि के विषय पर् अवगत कराया और इस विषय मे जो श्री गोकर्ण के स्वामी राघवेश्वर भारती स्वामीजी के द्वारा दियागया वक्तव्य सत्य और प्रामाणिक नही है ! ऐसे करके हमे ने ओ लोगों को ३ दिन तक समय देते हुए हम गोकर्ण गए, और अभी तक हमे उनके मठ स्वामी/ पंडित /अधिकारीयों से

2

1-4-2022

Shree Kshetra Gokarna Vaidika Vrinda
Jogalekar Griham', Opp. Shree Mahabaleshwar Temple, Gokarn - 581 326, Tq. Kumta (U.K.) Karnataka
E-mail : gokarn5@gmail.com Mobile : 9448628921, 9448797343

Ref: पूछा गया प्रश्नोंका कोई समाधान नही मिला और इस तीन दिन गोकर्ण मे स्थित वेद शास्त्र विद्वानों के सात ३ दिन इस विषय पर शास्त्र चर्चा हुआ, इस मे गोकर्ण मे स्थित सारे विद्वान् सब प्रमाणों कि साथ श्री रामचंद्राअपुर मठ स्वामीजी का अभिप्राय को निराकारण किया और पम्पाक्षेत्र किष्किंधा अंजनाद्रि कोही श्रीमद वाल्मीकि रामायण, अनन्द रामायण, शिवमहापुराण, अनेक शास्त्र प्रमाणोंकि द्वारा किष्किंधा कोही श्री हनुमद् जन्मभूमि माना, और **निर्णय** किया ।

नास्ति रामायणात् परम् १.५.२१।, वाल्मीकिर्भगवान् ऋषि: (१.३.३८)
श्री गोविंदानन्द स्वामी जी द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देने में टि.टि.डि कमेटी, गोकर्ण श्री रामचंद्रापुर मठ पूरी तरह विफल रहे,
अंतिम परिणाम - टि.टि.डि के चैयरमेन ने (19 जून, 2021 - टीटीडी बोर्ड की बैठक में) खुद हार की घोषणा की और स्वीकार किया कि वे भविष्य में इस तरह के कार्यक्रम, घोषणा, चर्चा, इत्यादि नहीं करेंगे,
भारत मे सनातन वैदिक धर्म आचार्यों ने भी टि.टि.डि कमेटी को गोकर्ण श्री रामचंद्रापुर मठ वाले लोगों को निराकरण किया,
भारत सरकार ने भी संसद में टि.टि.डि के विचारों को खारिज किया,
अब टि.टि.डि कमेटी, गोकर्ण श्री रामचंद्रापुर मठ वाले लोगों को हारने पर श्री हनुमद जन्मभूमि ट्रस्ट विजय, इस संदर्भ में आज
"स्वस्ति श्री शुभ कृत चैत्र शुक्ल प्रतिपदा – बुधवार (02-04-2022)
"श्री हनुमद् जन्मभूमि अञ्जनाद्रि - पर निर्णय, और पुस्तक विमोचन " स्थल : श्री गोकर्ण,

1-4-2022

3

॥ बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा ॥

9448628921
Ved. Vishwanath P. Bhat Gopi
Head Priest
Gopi Garden, Near Mahabaleshwar Temple,
GOKARNA - 581 326
Kumta Taluk, Uttar Kannada Dist.,
Karnataka-India

गुहायां तत्पर्वतगुहायां तदानीमेवेति भाव:) | भाव: अत्र गुहायां इत्युक्ते किष्किन्धायां, (तत्पर्वतगुहायां इत्युक्ते किष्किन्धायां विद्यमानकिष्किन्धानाम्नाप्रसिद्धअञ्जनाद्रिपर्वतगुहायां इत्यर्थ: |

जन्म तिथि / जयन्ति : चैत्र शुक्ल पूर्णिमा "महाचैत्रीपूर्णिमायां समुत्पन्नो ऽञ्जनीसुत: - आ.रा सा-१३,१६२" तिथि में श्री हनुमान् जी का जन्म हुआ,

टि.टि.डि कमेटी, कर्नाटक मे गोकर्ण, श्री रामचंद्रापुर वाले और अन्य लोगोंका निराकरण :

टि.टि.डि कमेटी का कर्नाटक मे गोकर्ण, श्री रामचंद्रापुर मठ वाले लोगों का शोध सामग्री का संपूर्ण विश्लेषण श्री गोविंदानन्द स्वामी जी और, गोकर्ण कि वेद शास्त्र विद्वानों कि द्वारा संपूर्ण विश्लेषण किया , जो टि.टि.डि/ गोकर्ण श्री रामचंद्रापुर मठ वाले अन्य लोग साबित करना चाहता थे कि भगवान हनुमान ने तिरुपति/ गोकर्ण में जन्म लिया था लेकिन अंत में भगवान श्री हनुमान जी का जन्म तिरुपति/ गोकर्ण नही है, परम प्रमाण श्री वाल्मीकि रामायण ही है, श्री हनुमान जी कि जन्म किष्किंधा मे ही हुआ यह शास्त्र निर्णय हुआ

श्री गोविंदानन्द सरस्वती स्वामी जी साक्षात् श्री रामचंद्रापुर मठ स्वामीजी से गोकर्ण मे मिले वहा विद्वान् उनके मठके पंडित, अधिकारीयों से यह विषय २ गंटे तक श्री हनुमान् जन्मभूमि के विषय पर् अवगत कराया और इस विषय मे जो श्री गोकर्ण के स्वामी राघवेश्वर भारती स्वामीजी के द्वारा दियागया वक्तव्य सत्य और प्रामाणिक नही है ! ऐसे करके हमे ने ओ लोगों को ३ दिन तक समय देते हुए हम गोकर्ण गए, और अभी तक हमे उनके मठ स्वामी/ पंडित /अधिकारीयों से

Vishwanath P. Gopi

॥ बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा ॥

9448628921
Ved. Vishwanath P. Bhat Gopi
Head Priest
Gopi Garden, Near Mahabaleshwar Temple,
GOKARNA - 581 326
Kumta Taluk, Uttar Kannada Dist.,
Karnataka-India

श्री गणेशाय नम: जय विरूपाक्ष , जय श्री राम , जय हनुमान
। रामे चित्तलय: सदा भवतु मे ।
| श्री रुद्र अवतार, वायु पुत्र, केसरी अञ्जनी नन्दन हनुमान |

टि.टि.डि. कमेटी, गोकर्ण श्री रामचंद्रापुर मठ की हार
श्री हनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट (रि) का जीत

विषय: श्री हनुमान जी का जन्म, जन्म स्थल, जन्म तिथि एवं जन्म के वृत्तान्त विमर्श और निर्णय,

निर्णय : श्री हनुमान जी भगवान श्री रुद्र के अवतार हैं," श्री वायु देवता के अनुग्रह से "औरस पुत्र" हैं । श्री केसरी की पत्नी अञ्जना देवी ने किष्किंधा नगरी में स्थित अञ्जनाद्री पर्वत गुफा में चैत्र शुक्ल पूर्णिमा तिथि में जन्म दिया था । हनुमान जी शुद्ध आजन्म बाल ब्रह्मचारी, अविवाहित हैं :

जन्म स्थल : त्रेतायुग में दक्षिण भारत में (वर्तमान कर्नाटक राज्य) पम्पाक्षेत्र तुङ्गभद्रा नदी के तट पर विराजमान किष्किंधा नगरी में हुआ, , यहा "गुहा" का अर्थ साक्षात् स्थान विषेश है "किष्किंधा" (यथा रामायणे।१।१।७०। "किष्किन्ध्यांरामसुग्रीवौजग्मतुस्तौगुहांतदा॥") और गुफा भी है, पम्पा सरोवर के पास स्थित "किष्किन्धा" पर्वत मे गुफा भी है , और यही पर्वत (पहाड़) पर अञ्जना देवी हनुमान को जन्म दिया उसी कारण इस् "किष्किन्धा" पर्वत बाद में अञ्जनाद्री नाम से विख्यात हुआ, किष्किन्धा पर्वत् ही अञ्जनाद्रि पर्वत

एवमुक्ता ततस्तुष्टा जननी ते महाकपे। गुहायां त्वां महाबाहो प्रजज्ञे प्लवगर्षभम्।। वा.रा 4.66.20 ॥)

(ति.टी.व्या - ततस्तुष्टा मनसा महादेवततेज: संक्रम कथनात्

1

Vishwanath P. Gopi

॥ बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा ॥

9448628921
Ved. Vishwanath P. Bhat Gopi
Head Priest
Gopi Garden, Near Mahabaleshwar Temple,
GOKARNA - 581 326
Kumta Taluk, Uttar Kannada Dist.,
Karnataka-India

पूछा गया प्रश्नोंका कोई समाधान नही मिला और इस तीन दिन गोकर्ण मे स्थित वेद शास्त्र विद्वानों के सात ३ दिन इस विषय पर शास्त्र चर्चा हुआ, इस मे गोकर्ण मे स्थित सारे विद्वान् सब प्रमाणों कि साथ श्री रामचंद्राअपुर मठ स्वामीजी का अभिप्राय को निराकारण किया और पम्पाक्षेत्र किष्किंधा अंजनाद्रि कोही श्रीमद वाल्मीकि रामायण, अनन्द रामायण, शिवमहापुराण, अनेक शास्त्र प्रमाणोंकि द्वारा किष्किंधा कोही श्री हनुमद् जन्मभूमि माना, और **निर्णय** किया ।

नास्ति रामायणात् परम् १.५.२१।, वाल्मीकिर्भगवान् ऋषि: (१.३.३८)
श्री गोविंदानन्द स्वामी जी द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देने में टि.टि.डि कमेटी, गोकर्ण श्री रामचंद्रापुर मठ पूरी तरह विफल रहे,
अंतिम परिणाम - टि.टि.डि के चैयरमेन ने (19 जून, 2021 - टीटीडी बोर्ड की बैठक में) खुद हार की घोषणा की और स्वीकार किया कि वे भविष्य में इस तरह के कार्यक्रम, घोषणा, चर्चा, इत्यादि नहीं करेंगे,
भारत मे सनातन वैदिक धर्म आचार्यों ने भी टि.टि.डि कमेटी को गोकर्ण श्री रामचंद्रापुर मठ वाले लोगों को निराकरण किया,
भारत सरकार ने भी संसद में टि.टि.डि के विचारों को खारिज किया,
अब टि.टि.डि कमेटी, गोकर्ण श्री रामचंद्रापुर मठ वाले लोगों को हारने पर श्री हनुमद जन्मभूमि ट्रस्ट विजय, इस संदर्भ में आज
"स्वस्ति श्री शुभ कृत चैत्र शुक्ल प्रतिपदा – बुधवार (02-04-2022)
"श्री हनुमद् जन्मभूमि अञ्जनाद्रि - पर निर्णय, और पुस्तक विमोचन " स्थल : श्री गोकर्ण,

3

Vishwanath P. Gopi

30 वीं 31 मार्च 2022 श्री गोविंदानंद सरस्वती स्वामीजी शास्त्र चर्चा गोकर्ण वैदिक विद्वानों के साथ

माल्यवान्नाम वैदेहि गिरीणामुत्तमो गिरिः।
ततो गच्छति गोकर्णं पर्वतं केसरी हरिः। 5.35.80॥

पर्वतों में माल्यवान (किष्किन्धा में माल्यवान् / प्रस्रवण गिरि)नाम से एक प्रसिद्ध उत्तम पर्वत है, वहां केसरी नामक वानर निवास करते थे, एक दिन वे वहा से गोकर्ण क्षेत्र पर गए

स च देवर्षिभिर्दिष्टः पिता मम महाकपिः।
तीर्थे नदीपतेः पुण्ये शम्बसादनमुद्धरत्।5.35.81॥

देवर्षियों की आज्ञा से मेरे पिता "केसरी", उन्होंने समुंद्र के तट पर विद्यमान उस पवित्र गोकर्ण तीर्थ में शंबसादन नामक दैत्य का संहार किया था |

- * यहा प्रकरण समाप्त हुआ –

(सूचना : इसी श्लोको को लेकर कर्नाटक मे गोकर्ण, श्री रामचंद्रापुर वाले गोकर्ण मठ स्वामी गलत अर्थ व्याख्यान निकाला और लोगों को गुमराह किया)

तस्याहं हरिणः क्षेत्रे जातो वातेन मैथिलि।

हनुमानिति विख्यातो लोके स्वेनैव कर्मणा।5.35.82॥

(गो .टी. तस्येति – हरिण: हरे: केसरिण: क्षेत्रे पत्न्यामञ्जनायां जात: पितुर्देशान्तरगमन काले जात: अनेनान्य क्षेत्रे कथमन्येनोत्पादनमिति शङ्का पराकृता)

उन्हीं कपिराज केसरी की स्त्री के गर्भ से वायु देवता के द्वारा मेरा जन्म हुआ है | मैं लोगो मैं अपने ही कर्म के द्वारा हनुमान नाम से विख्यात हू,

हतेऽसुरे संयति शम्बसादने कपिप्रवीरेण महर्षिचोदनात्।
ततोऽस्मि वायुप्रभवो हि मैथिलि प्रभावतस्तत्प्रतिमश्च वानरः। 5.35.89॥

महर्षियों की प्रेरणा से कपिवर केसरी द्वारा युद्ध में शम्बसादन नामक असुर के मारे जाने पर मैंने पवनदेवता के द्वारा जन्म ग्रहण किया | अतः मैथिली ! मैं उन वायुदेवता के समान ही प्रभावशाली वानर हूं ||

1 अप्रैल 2022 गोकर्ण वैदिक विद्वानों के साथ श्री गोविंदानंद सरस्वती स्वामीजी शास्त्र चर्चा

ಲ್ಲಿ ನವಚಂಡಿಕಾ ಯುವಕ ಮಂಡಳದಿಂದ ಶಿಕ್ಷಕರಾದ ಉಮೇಶ ನಾಯಕ ಅವರನ್ನು ಸನ್ಮಾನಿಸಲಾಯಿತು.

ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ ರಥ ಯಾತ್ರೆ 12 ವರ್ಷ ನಿರಂತರ ಸಂಚಾರ

ಅಂಜನಾದ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಆಂಜನೇಯನ ದೇಗುಲ ನಿರ್ಮಾಣ

ಗೋಕರ್ಣ: ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರದ ಕಿಷ್ಕಿಂದೆ ರಥ ಯಾತ್ರೆ, ಗೋಕರ್ಣಕ್ಕೆ ಆಗಮಿಸಿದ್ದು ಸಂಪೂರ್ಣ ಅಖಂಡ ಭಾರತ ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ರಾಮಭಕ್ತಿ ವೈಭವ ವಿಜಯ ಯಾತ್ರೆ, ಇದಾಗಿದ್ದು, 12 ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ನಿರಂತರ ಸಂಚರಿಸಲಿದೆ.

ರಥಯಾತ್ರೆಯ ನೇತೃತ್ವ ವಹಿಸಿ ಆಗಮಿಸಿರುವ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸ್ವಾಮೀಜಿ ಪುರಾಣ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಮಹಾಬಲೇಶ್ವರ ದೇವಾಲಯಕ್ಕೆ ಭೇಟಿ ನೀಡಿ ಆತ್ಮಲಿಂಗಕ್ಕೆ ಪೂಜೆ ಸಲ್ಲಿಸಿದರು.

ನಂತರ ರಥಯಾತ್ರೆ ಕುರಿತು ಮಾಹಿತಿ ನೀಡಿದ ಅವರು, ಒಂದು ವರ್ಷದಿಂದ ರಥಯಾತ್ರೆ ಹೊರಟಿದ್ದು, ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಭವ್ಯ ರಾಮ ಮಂದಿರ ನಿರ್ಮಾಣವಾದಂತೆ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಆಂಜನೇಯನ ದೇಗುಲ ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಲಿದೆ ಎಂದರು.

ಗೋಕರ್ಣದಲ್ಲಿ ಆತ್ಮಲಿಂಗಕ್ಕೆ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸ್ವಾಮೀಜಿ ಪೂಜೆ ಸಲ್ಲಿಸಿದರು.

ಇಲ್ಲಿನ ದೇವಾಲಯದಲ್ಲಿ ಪೂಜಾ ವಿಧಿ ವಿಧಾನದ ಬಗ್ಗೆ ಮೆಚ್ಚುಗೆವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿ ಭಗವಂತನ ಕೃಪೆಯೊಂದಿಗೆ ರಥಯಾತ್ರೆ ಯಶಸ್ವಿಗೊಳ್ಳಲಿದೆ ಎಂದರು. ಮಂದಿರದ ಮೇಲುಸ್ತುವಾರಿ ಸಮಿತಿ ಸದಸ್ಯ ವೇ.ಮಹಾಬಲ ಉಪಾಧ್ಯ ಪೂಜಾ ಕೈಂಕರ್ಯ ನೆರವೇರಿಸಿ ಶ್ರೀಗಳಿಗೆ ದೇವಾಲಯದ ವತಿಯಿಂದ ಗೌರವಿಸಿದರು.

ರಥದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀರಾಮ, ಸೀತಾ, ಲಕ್ಷ್ಮಣ, ಹನುಮ ಇರುವ ಭವ್ಯ ಮೂರ್ತಿ, ರಥದ ಸುತ್ತಲೂ ರಾಮಾಯಣ ದೃಶ್ಯಾವಳಿ ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ಆಂಜನೇಯ ಹೀಗೆ ವಿಶಿಷ್ಟ, ವಿಶೇಷ ದೃಶ್ಯಾವಳಿಗಳು ಸ್ಥಳೀಯರು, ಪ್ರವಾಸಿಗರು ಕುತೂಹಲದಿಂದ ವೀಕ್ಷಿಸಿ ನಮಸ್ಕರಿಸಿ ತೆರಳುವ ದೃಶ್ಯ ಕಂಡು ಬಂತು. ಇಲ್ಲಿಂದ ಉತ್ತರ ಕರ್ನಾಟಕ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಸಂಚಾರ ಮುಂದುವರಿಸಲಿದ್ದು, ಕರ್ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಒಟ್ಟು ಆರು ತಿಂಗಳು ಇರಲಿದೆ.

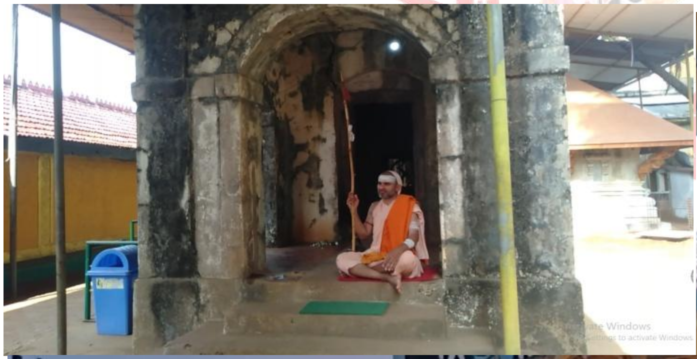

ಗೋಕರ್ಣಕ್ಕೆ ಬಂದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ರಥಯಾತ್ರೆ

ಗೋಕರ್ಣ: ಕೊಪ್ಪಳ ಜಿಲ್ಲೆ ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರದ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ರಥ ಯಾತ್ರೆಯ ಭವ್ಯರಥ ಇಲ್ಲಿಗೆ ಆಗಮಿಸಿದೆ. ಸಂಪೂರ್ಣ ಅಖಂಡ ಭಾರತ ಹನುಮದ್ ರಾಮಭಕ್ತಿ ವೈಭವ ವಿಜಯ ಯಾತ್ರೆ ಇದಾಗಿದ್ದು, 12 ವರ್ಷಗಳ ಕಾಲ ನಿರಂತರ ಸಂಚರಿಸಲಿದೆ.

ರಥಯಾತ್ರೆಯ ನೇತೃತ್ವವಹಿಸಿ ಆಗಮಿಸಿರುವ ಗೋವಿಂದಾನಂದ ಸ್ವಾಮೀಜಿ ಮೊದಲಿಗೆ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಮಹಾಬಲೇಶ್ವರ ದೇವಾಲಯಕ್ಕೆ ಭೇಟಿ ನೀಡಿ ಆತ್ಮಲಿಂಗಕ್ಕೆ ಪೂಜೆ ಸಲ್ಲಿಸಿದರು.

ನಂತರ ರಥಯಾತ್ರೆ ಕುರಿತು ಮಾಹಿತಿ ನೀಡಿ ಕಳೆದ ಒಂದು ವರ್ಷದಿಂದ ರಥಯಾತ್ರೆ ಹೊರಟಿದ್ದು, ಅಯೋಧ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಭವ್ಯ ರಾಮ ಮಂದಿರ ನಿರ್ಮಾಣವಾದಂತೆ ಅಂಜನಾದ್ರಿಯಲ್ಲಿ ಆಂಜನೇಯನ ದೇಗುಲ ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಲಿದೆ ಎಂದರು. ಇಲ್ಲಿನ ದೇವಾಲಯದಲ್ಲಿ ಪೂಜಾ ವಿಧಿ ವಿಧಾನದ ಬಗ್ಗೆ ಮೆಚ್ಚುಗೆ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿ, ಭಗವಂತನ ಕೃಪೆಯೊಂದಿಗೆ ರಥಯಾತ್ರೆ ಯಶಸ್ವಿಗೊಳ್ಳಲಿದೆ ಎಂದರು. ಮಂದಿರದ ಮೇಲುಸ್ತುವಾರಿ ಸಮಿತಿ ಸದಸ್ಯ ವೇ. ಮಹಾಬಲ ಉಪಾಧ್ಯ ಪೂಜಾ ಕೈಂಕರ್ಯ ನೆರವೇರಿಸಿ ಶ್ರೀಗಳಿಗೆ ದೇವಾಲಯದ ವತಿಯಿಂದ ಗೌರವಿಸಿದರು.

ರಥದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀರಾಮ, ಸೀತಾ ಲಕ್ಷ್ಮಣ, ಹನುಮಾನ ಇರುವ ಭವ್ಯ ಮೂರ್ತಿ, ರಥ ಸುತ್ತಲು ರಾಮಾಯಣ ದೃಶ್ಯಾವಳಿ ಮುಂಭಾಗದಲ್ಲಿ ಆಂಜನೇಯ ಹೀಗೆ ವಿಶಿಷ್ಟ, ವಿಶೇಷ ದೃಶ್ಯಾವಳಿಗಳು ಸ್ಥಳೀಯರು, ಪ್ರವಾಸಿಗರು ಕುತೂಹಲದಿಂದ ವೀಕ್ಷಿಸಿ ನಮಸ್ಕರಿಸಿ ತೆರಳುವ ದೃಶ್ಯ ಕಂಡು ಬಂತು. ಇಲ್ಲಿಂದ ಉತ್ತರ ಕರ್ನಾಟಕ ಭಾಗದಲ್ಲಿ ಸಂಚಾರ ಮುಂದುವರಿಸಲಿದ್ದು, ಕರ್ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಒಟ್ಟು ಆರು ತಿಂಗಳು ಇರಲಿದೆ.

तिरुपति / नासिक / झारखंड के गुमला/ गुजरात का नवसारी / हरियाणा का कैथल/ कर्नाटक मे गोकर्ण, श्री रामचंद्रापुर वाले लोगोंका , टि.टि.डि कमेटी का निराकरण : श्री हनुमान जी के जन्म के बारे में टी.टी.डी कमिटी वाले लोग अनावश्यक रूप से विवादों को खडा करके संपूर्ण शास्त्र ज्ञान के बिना अनावश्यक कार्य कर रहे हैं जबकि अंजना देवी के पति और हनुमान जी के पिता केसरी को एक राक्षस के रूप में बता रहे है इतना ही नहीं अंजना देवी के पिता का नाम केसरी बता रहे हैं | और हनुमान जी की जन्म तिथि को लेकर भी भ्रम फैला रहे है यह सर्वदा अनुचित है | कुछ समय श्रावण बोलेंगे कुछ समय वैशाख बोलेंगे कुछ समय कार्तिक बोलेंगे

ऐसे अनेक सारे विषयों को लेकर प्रमाणों को छोड़कर स्वयं ही असली इतिहासों को क्षति पहुंचा रहे है कुछ लोगों का लिखा हुआ प्रक्षिप्त

पन्क्तियों का उल्लेख कर रहे हैं, जिसमे श्री वेङ्कटाचल माहात्म्य (सङ्कलन ग्रंथ) में श्लो : "श्रावणे मासि नक्षत्रे श्रावणे हरि वासरे।" यह श्लोक अप्रमाणिक है असम्बद्ध है ज्योतिष सिद्धान्त के अनुसार सर्वत्र विरुद्ध है |

तिरुपति कमेटी का , **कर्नाटक मे गोकर्ण, श्री रामचंद्रापुर वाले लोगोंका ,** , अभिप्राय यह है कि" श्री हनुमान जी का जन्म तिरुपति में / गोकर्ण हुआ है" जबकि संपूर्ण रामायण में हनुमान जी के जन्म का वृत्तान्त आता है वहां कही भी टि.टि.डि तिरुपति का और उस क्षेत्र का कही भी , वही ही हुआ करके एक मात्र प्रामणिक उल्लेख नहीं मिलता है, तिरुपति, गोकर्ण, श्री रामचंद्रापुर वाले लोग दिखाने वाले विषय परम प्रमाण नही है सब कुछ मिथ्या मात्र है |

उदा : तिरुपति कमेटी का कहना है कि " पितरो केसरी नाम राक्षस: श्री हनुमान जी के पिता केसरी त्रेतायुग में एक राक्षस थे ! और अञ्जनी के पिता केसरी हैं ! और पति भी केसरी हैं , यहां २ केसरी कहा से आए ? यह सर्वदा अनुचित है, श्री मद्वाल्मीकि रामायण के और अनेक प्रमाणों के अनुसार केसरी एक वानर राजा थे और वानर श्रेष्ठ, प्रज्ञाशाली थे ।

पद्मकेसर संकाश: तरुणार्क निभानन: ।
बुद्धिमान् वानर: श्रेष्ठ: सर्ववानरसत्तम: ॥(वा.रा कि.३९ सर्ग श्लो १७)
अनीकैर्बहु साहस्रै:वानराणां समन्वित: ।
पिता हनुमत: श्री मान् केसरी प्रत्यदृश्यत ॥ १८

माल्यवान्नाम वैदेहि गिरीणामुत्तमो गिरिः।
ततो गच्छति गोकर्णं पर्वतं केसरी हरिः। 5.35.80 ॥
पर्वतों में माल्यवान (किष्किन्धा में माल्यवान् / प्रस्रवण गिरि)नाम से एक

प्रसिद्ध उत्तम पर्वत है, वहां केसरी नामक वानर निवास करते थे, एक दिन वे देवर्षियों की आज्ञा से गोकर्ण क्षेत्र पर्वत पर गए,

स च देवर्षिभिर्दिष्टः पिता मम महाकपिः।
तीर्थे नदीपतेः पुण्ये शम्बसादनमुद्धरत्। 5.35.81॥

देवर्षियों की आज्ञा से मेरे पिता केसरी ने समुंद्र के तट पर विद्यमान उस पवित्र गोकर्ण तीर्थ में शंबसादन नामक दैत्य का संहार किया था |

और शम्बसादन जैसे राक्षस का संहार करने वाले वानर श्रेष्ठ राजा केसरी थे ।,

---

श्री गोविंदानन्द स्वामी जी द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देने में टि.टि.डि कमेटी **गोकर्ण श्री रामचंद्रापुर मठ** पूरी तरह विफल रहे,

अंतिम परिणाम - टि.टि.डि के चैयरमेन ने (19 जून, 2021 - टीटीडी बोर्ड की बैठक में) खुद हार की घोषणा की और स्वीकार किया कि वे भविष्य में इस तरह के कार्यक्रम, घोषणा, चर्चा, इत्यादि नहीं करेंगे,

भारत मे सनातन वैदिक धर्म आचार्यों ने भी टि.टि.डि कमेटी को **गोकर्ण श्री रामचंद्रापुर मठ वाले** लोगों को निराकरण किया,
भारत सरकार ने भी संसद में टि.टि.डि के विचारों को खारिज किया,

अब टि.टि.डि कमेटी, **गोकर्ण श्री रामचंद्रापुर मठ वाले** लोगों को हारने पर श्री हनुमद जन्मभूमि ट्रस्ट विजय, इस संदर्भ में आज
"स्वस्ति श्री शुभ कृत चैत्र शुक्ल प्रतिपदा – बुधवार (02-04-2022)
"श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा अञ्जनाद्रि - पर पुस्तक विमोचन "

स्थल : श्री गोकर्ण, जय गोकर्ण महाबल - जय विरूपाक्ष – जय श्रीराम – जय हनुमान

अब **गोकर्ण** से नासिक

३. नासिक – (महाराष्ट्र)

श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा रथ यात्रा – त्र्यंबकेश्वर नसिक पुर प्रवेश

श्री हनुमद जन्मभूमि किष्किंधा हनुमान रथ यात्रा
ज्योतिर्लिंग भगवान् श्री त्र्यंबकेश्वर क्षेत्र पहुंची,

https://www.youtube.com/watch?v=Tt3UNNqxgaw&t=189s

त्रयंबकेश्वर नगर निगम के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम लोहगांवकर ने रथ का स्वागत किया

त्र्यंबकेश्वर नगर निगम के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम लोहगांवकर ने रथम का स्वागत किया

श्री त्र्यंबकेश्वर मंदिर प्रशासन न्यास ने विशेष प्रबंध कर श्री हनुमद जन्मभूमि किष्किंधा रथ का स्वागत कर पूजा-अर्चना की।

ज्योतिर्लिंग भगवान श्री त्र्यंबकेश्वर के दर्शन के बाद,,

नासिक में अंजनेरी नामक एक पहाड़ी है, कुछ लोगों का मानना है कि भगवान श्री हनुमान ने नासिक अंजनेरी पर्वत में जन्म लिया था, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है,

• अभी हम ज्योतिर्लिंग नासिक त्र्यंबकेश्वर पहुंचे
• इस यात्रा का मुख्य कारण इस विषय से संबंधित सभी शंकाओं का समाधान करना है, तथ्यों को लाओ (नासिक के लोगों के सामने और, वैदिक विद्वानों के सामने प्रमाण के साथ, यह कहते हुए कि भगवान हनुमान ने किष्किंधा में नासिक, तिरुपति जैसे किसी अन्य स्थान पर नहीं लिया था)
• त्र्यंबकेश्वर नासिक में 5 दिवसीय शिविर,
• इस विषय से संबंधित महाराष्ट्र के सभी विभागों के साथ वैदिक विद्वानों, सरकारी अधिकारियों के साथ बातचीत
• हम 5 दिन नासिक त्र्यंबकेश्वर में रहेंगे, नासिक के सभी विद्वानों और विभागों को ठोस सबूतों के साथ खुद को साबित करने का समय दिया जाएगा (यह कहते हुए कि भगवान हनुमान ने नासिक में जन्म लिया था)
• किष्किंधा से हम सिद्ध करेंगे कि हनुमान जी ने पूरे प्रमाण के साथ किष्किंधा में जन्म लिया था

- इस विषय से संबंधित लोगों को 5 दिन का समय दिया जाएगा, कोई भी निकाय या कोई संगठन या कोई सरकारी विभाग या कोई अधिकारी हमारे पास आकर चर्चा कर सकता है और अपने पक्ष को साबित कर सकता है,

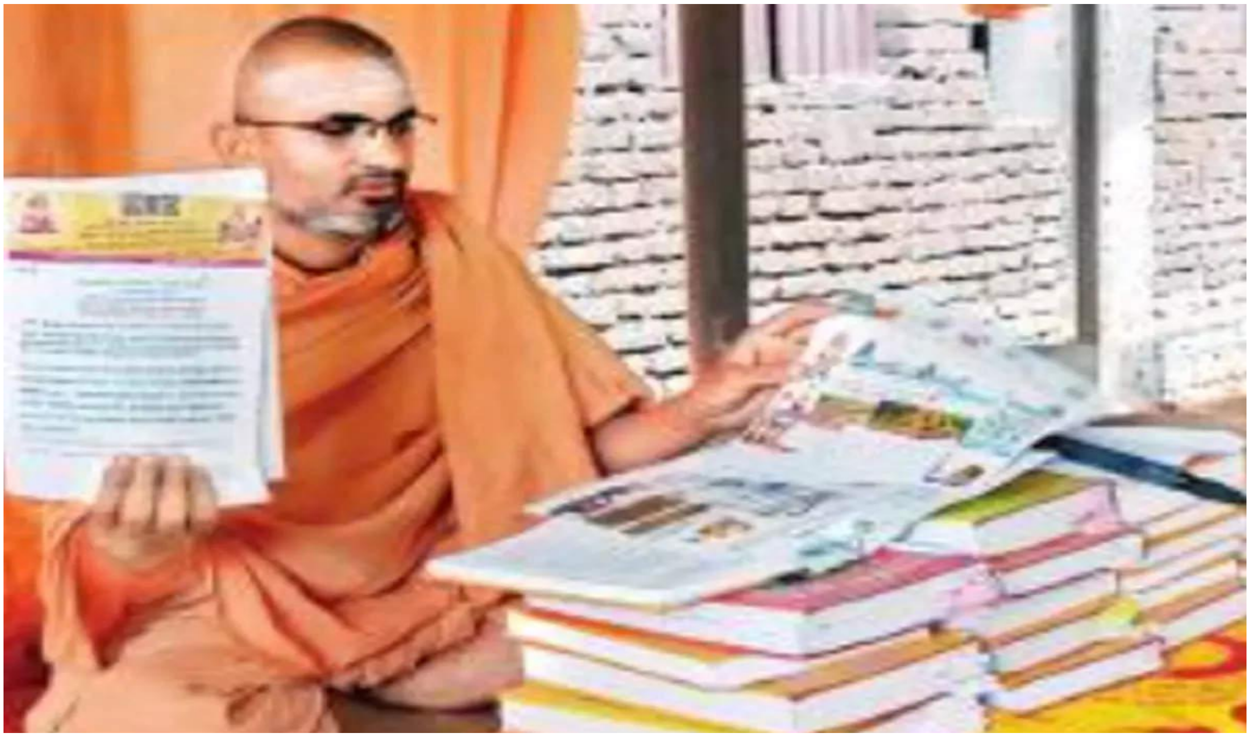

- यदि 5वें दिन में कोई नहीं आता है और कोई सिद्ध नहीं होता है, तो 5वें दिन हम आधिकारिक रूप से यह कहते हुए घोषित कर देंगे कि "वास्तविक तीर्थ स्थान किष्किंधा है नासिक में ही नहीं
- हम नासिक क्यों आ रहे हैं ? और नाइक लोगों को खुद को साबित करने के लिए 5 दिन का समय देना?
- आज हम नासिक आए, इसके बाद हम गुजरात, छत्तीसगढ़ जैसे अन्य स्थानों पर भी जाते हैं, जहां अन्य लोग भी भगवान हनुमान के जन्म स्थान का दावा क
- जो समाज में भ्रम पैदा कर रहा है और भटका समूह में ऐसा नहीं होना चाहिए हमें अब वास्तविक जन्म स्थान शास्त्र प्रमाणों के साथ करना चाहिए,
- हमारा प्रयास: वास्तविक तथ्यों को पूरे साक्ष्य के साथ लाएं
- प्रमाण परंपरा के अनुसार भगवान श्री हनुमान के शुद्ध इतिहास को एक स्वर से एक जन्म स्थान, एक जन्म तिथि के साथ लाना, क्योंकि आजकल
  - कुछ लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए तथाकथित नकली समितियों और संगठनों को तिरुपति की तरह नकली समितियों ने नकली दस्तावेजों के साथ नई नई कहानियां बनाना शुरू कर दिया और अनावश्यक विवाद पैदा किया,

- अंत में चर्चा के बाद हमें "भगवान हनुमान का वास्तविक जन्म स्थान" सत्य को बिना किसी लालच या राग दवेश या किसी प्रतिज्ञा भेद के स्वीकार करना चाहिए।

- मंदिर अध्यक्ष नासिक जिला न्यायाधीश श्री कुलकर्णी ने किया विशेष इंतजाम,
- मंदिर के न्यासियों ने रथम का स्वागत किया और विशेष पूजा अर्चना की
- श्री गोविंदानंद सरस्वती स्वामीजी ने ज्योतिर्लिंग भगवान त्र्यंबकेश्वर के दर्शन किए थे

त्र्यंबकेश्वर के वैदिक विद्वानों ने श्री स्वामीजी को आमंत्रित किया

श्री त्र्यंबकेश्वर मंदिर प्रबंधक ने रथ के लिए किया विशेष स्वागत

नासिक त्र्यंबकेश्वर में श्री हनुमान जन्मभूमि किष्किंधा हनुमान रथ का भव्य स्वागत

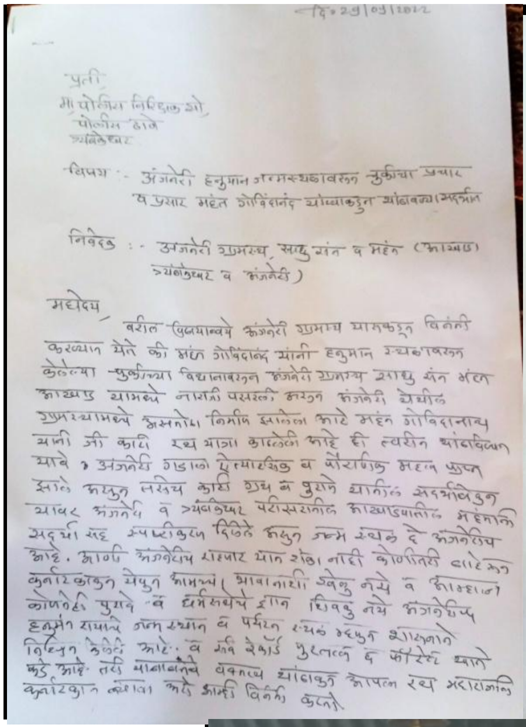

दि. 29/09/2022

प्रती
मा. पोलिस निरिक्षक सो,
पोलिस ठाणे
त्र्यंबकेश्वर

विषय :- अंजनेरी हनुमान जन्मस्थळावरून चुकीचा प्रचार व प्रसार महंत गोविंदानंद यांच्याकडून थांबवण्यासंदर्भात

निवेदक :- अंजनेरी ग्रामस्थ, साधु संत व महंत (आखाडा त्र्यंबकेश्वर व अंजनेरी)

महोदय,
वरील विषयान्वये अंजनेरी ग्रामस्थ यांच्याकडून विनंती करण्यात येते की महंत गोविंदानंद यांनी हनुमान स्थळावरून केलेल्या चुकीच्या विधानावरून अंजनेरी ग्रामस्थ साधु संत महंत आखाडा यामध्ये नाराजी पसरली असून अंजनेरी येथील ग्रामस्थांमध्ये असंतोष निर्माण झालेला आहे महंत गोविंदानंद यांनी जी काढि रथ यात्रा काढलेली आहे ही त्वरीत थांबविण्यात यावे. अंजनेरी गडाला ऐतिहासिक व पौराणिक महत्व प्राप्त झाले असून तसेच काही ग्रंथ व पुराणे यातील संदर्भ घेऊन यावर अंजनेरी व त्र्यंबकेश्वर परीसरातील आखाड्यातील महंतांनी संदर्भासह स्पष्टीकरण दिलेले असून जन्म स्थळ हे अंजनेरीच आहे. आणि अंजनेरीच राहणार यात शंका नाही कोणीतरी बाहेरून कर्नाटकातून येऊन आमच्या भावनांशी खेळू नये व आम्हाला कोणतेही पुरावे व धर्मसभेचे ज्ञान शिकवू नये अंजनेरीच हनुमान यांचे जन्मस्थान व पर्यटन स्थळ म्हणून शासनाने निश्चित केलेले आहे. व सर्व रेकॉर्ड पुरातत्व व फॉरेस्ट यांचे कडे आहे. तरी भावनांचे वक्तव्य यांच्याकडून आपल्या रथ महाराजांनी कर्नाटकात न्यावा असे आम्ही विनंती करतो

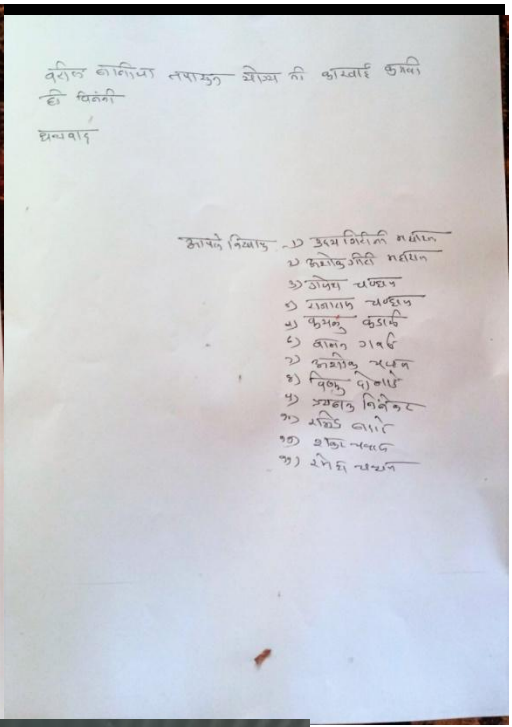

वरील बाबींचा तपासून योग्य ती कारवाई करावी ही विनंती

धन्यवाद

आपले विश्वासू :-
1) उदय गिरिजी महाराज
2) अशोक गिरी महाराज
3) गोविंद चव्हाण
4) रामदास चव्हाण
5) कृष्णा कडाळे
6) बाळू गावडे
7) अशोक रहाणे
8) विठ्ठल दोबाडे
9) त्र्यंबक निर्मळकर
10) रवींद्र लोहार
11) शंकर चव्हाण
12) रमेश चव्हाण

महाराष्ट्र पोलीस

त्र्यंबकेश्वर पोलीस स्टेशन, नाशिक ग्रामीण

☎ (०२५९४-२३३१३३) E-Mail-ps.trimbak.nr@mahapolice.gov.in

त्र्यंबकेश्वर पोलीस ठाणे गो.जा.क्र. 253/2022 दिनांक :- 30/05/2022

C.R.P.C १४९ प्रमाणे नोटीस

प्रति,
श्री. गोविंदानंद सरस्वती महाराज,
श्री हनुमान जन्मभुमी किष्कंदा

आपणास या नोटीसव्दारे सुचित करण्यात येते की, अंजनेरी गावातील ग्रामस्त यांचेकडुन दि 29/05/2022 रोजी दिलेल्या अर्जाचे अनुषंगाने महंत श्री गोविंदानंद महाराज यांनी अंजनेरी हनुमान जन्मस्थळावरून केलेल्या अपप्रचार व प्रसार थांबविण्यात यावा बाबत अर्ज त्र्यंबकेश्वर पोलीस ठाणेस प्राप्त झाला आहे सदर प्रचारामुळे अंजनेरी ग्रामस्थ व साधु संत आखाडा यामध्ये नाराजी पसरली असुन अंजनेरी ग्रामस्थांमध्ये असंतोष निर्माण झाला आहे सदर विधानामुळे त्र्यंबकेश्वर पोलीस ठाणे हददीत कायदा व सुव्यवस्थेचा प्रश्न निर्माण होण्याची शक्यता नाकारता येत नाही तरी आपण श्री हनुमान जन्मस्थळाबाबत काहीएक विवादित विधान करू नये जेणे करून कायदा व सुव्यवस्थेचा प्रश्न निर्माण होणार नाही याची आपणास समज देण्यात येत आहे.

पोलीस निरीक्षक त्र्यंबकेश्वर पोलीस ठाणे

कळावे
दि ३०/०५/२०२२

पोलीस निरीक्षक
त्र्यंबकेश्वर पोलीस ठाणे

शास्त्र चर्चा शुरू

https://www.youtube.com/watch?v=dxICCzlw7po

https://www.youtube.com/watch?v=URUWa0PQacs&t=16s
https://www.youtube.com/watch?v=y4xK1LjTN10&t=11s
https://www.youtube.com/watch?v=_7FodsrMk7g&t=114s

https://www.youtube.com/watch?v=uCCo4UGp8bY

https://www.youtube.com/watch?v=65PV-8r3Szc&t=378s
https://www.youtube.com/watch?v=AQS5Gr7RqCE
https://www.youtube.com/watch?v=AQ7f4KJOKUc

धर्मसंसद राहिली बाजूला, आसनावरून वा
साम
नाशिक
काही वेळापूर्वीची दृश्य
सध्याची दृश्य
twitter/saamtvnews
धर्मसंसदेत राडा
sharechat/saamtvnews

अयोध्या में तैयारी...अब 'भक्त' की बारी ?
हिन्दुस्तान
किष्किंधा या अंजनेरी
कहां पैदा हुए
महाबली ?

https://www.youtube.com/watch?v=RIfsQ3OZK54

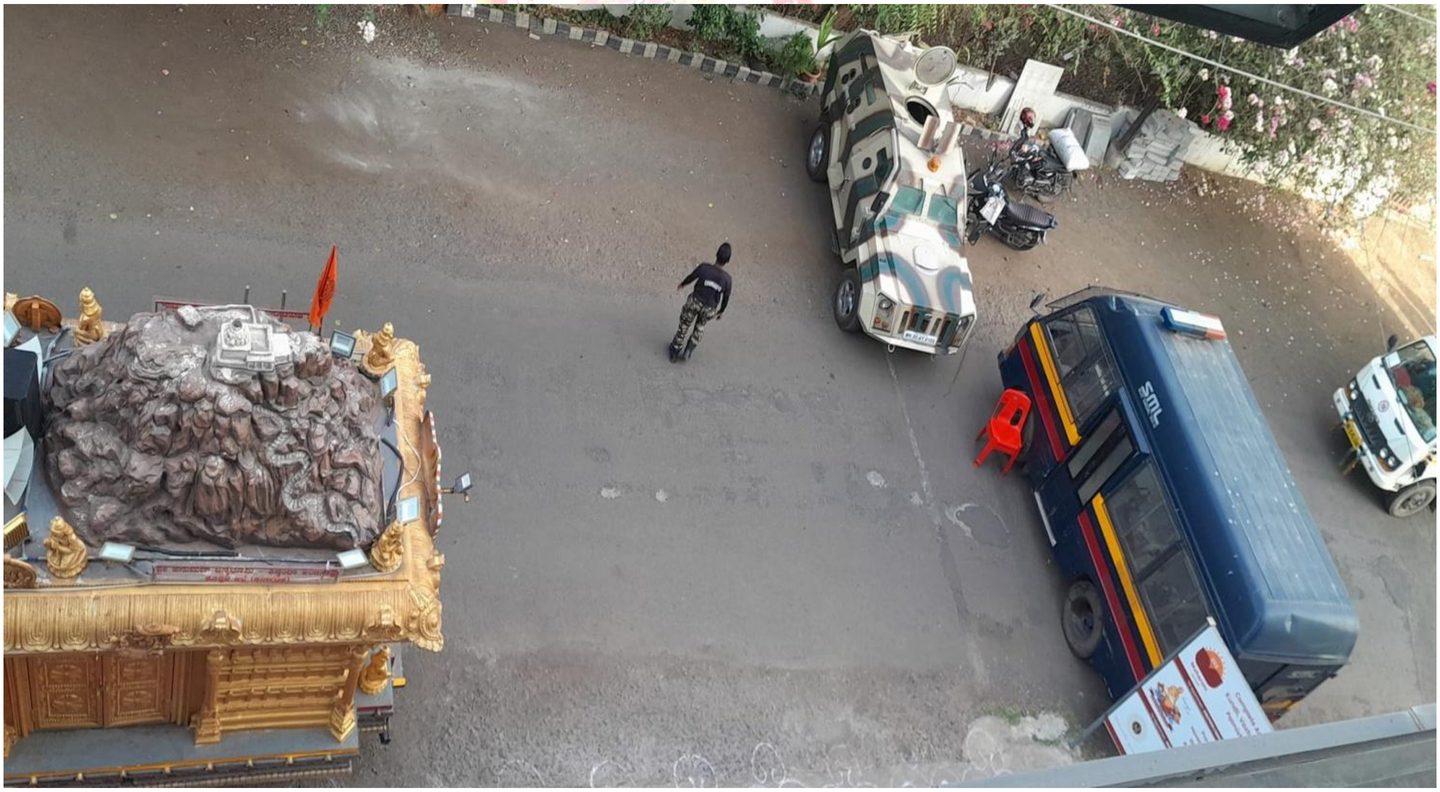

STOP

What happened in Nasik?

1st day morning 10.00 Sabha started
On behalf of Kishkindha Sri Govindananda Saraswati swamiji placed his arguments and pramanas from Srimad Valmiki Ramayana,

1st day Nasik scholoers placed 5 topics from 5 different angles infront of the sabha to counter Kishkindha

1. Brahmanda purana,
2. Google ocuments
3. Another birthplace claim from Solapur
4. Department of climate,
5. Another claim saying that kishkindha is there in Nasik

Brahmanda purana: the content avalible in this purana is completely controdectory to other puranas and Srimad Valmiki Ramayana, lak of complete refrancess, the Nasik people could not the answer for some of the questions like "Kala" time period, if they don't have any answer then they will use "Kalpabedha" this is for just escaping form actual truth , Nasik scholoers failed to answer the question from Kishkindha,

Some nasik scholoers requested swamiji saying that " we are not rejecting or not telling that lord hanuman did not took birth in kishkindha , we also believe lord hanuman took birth in kishkindha,

Google documents: rejected (google is not pramana)
Another birthplace claim from Solapur: Nasik people only rejected

Department of climate: this is claimate department; this subject is not related to claimate dept, so rejected, Another claim saying that kishkindha is there in Nasik : then we asked where is Tungabhadra river, then entire nasik scholores logic is totally failed, the entire humanity knows kishkindha is there in Karnataka , so

रामे चित्तलयस्सदा भवतु मे
किष्किन्धा

5th point is also rejected, Then Sri Gangadhar Pathak ji requested the sabha and placed his views

**He says in the kalpa lord hanuman took birth in kishkindha,
And why cont we see in different angle for accepting kalpabhedha,
Then Kishkindha Paksha raised the question regarding Kala Pramana,**

There is no answer for kala pramanam, and govindananda saraswati swamiji pointed out just by telling kalpa bedha its not perfect if you don't have any anser then you people are using kalpa behda, its not the perfect way , so there is no othet option axepect accepecting kishkindha only, The main problem is in Nasik Paksha they cont go againest Sri Ramayana and without the Ramayana you can not establish the truth, if you want to establish only through puranas its not possible, and if there is any dispute or contradiction between Itihasa and Purana , then Itihas is considered the final authority not puranam ,

https://www.youtube.com/watch?v=hAk7nAATUlw&t=26s
https://www.youtube.com/watch?v=pMA8oztQJeI
https://www.youtube.com/watch?v=URUWa0PQacs

2nd Day the Nasik scholoers paksha is totally rejected because of

imperfect answers from the Nasik paksha, its announced in Open press meet, Note: from the entire nasik paksha no bodey rejected Kishkindha Every body accepects lord hanuman took birth in kishkindha And their claim and request to sri swamiji is to accepect even nasik is also as the birthplace of lord hanuman
Sri swamiji said without complete athontic evedincess we can not accepect , Sri swamiji pointed out gave lot of examples and concluded the sabha with

निष्कर्ष: श्रुतिस्मृतिविरोधे तु श्रुतिरेव गरीयसि - "आनयोरुभयोर्मध्ये इतिहास: प्रबल:" इतिहास और पुराण दोनों मे इतिहास ही प्रबल है" श्रीमद वाल्मीकि रामायण "भगवान हनुमान के जन्म इतिहास" के लिए एकमात्र परम प्रमाण है

श्रीमद वाल्मीकि रामायण की घोषणा किष्किंधा भगवान हनुमान की जन्मभूमि है

अब नासिक से डांग

जय त्रयंबकेश्वर **- जय विरूपाक्ष – जय श्रीराम – जय हनुमान**

ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया बुधवार – १ जून् - २०२२

"श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा अञ्जनाद्रि - पर पुस्तक विमोचन "

स्थल : नासिक् (महाराष्ट्र)

४. डांग – (गुजरत)

1. शबरी धाम , 2. पम्पा सरोवर , 3. अंजनकुंड

गुजरात डोंग जिले में

(नोट: इन बोर्डों को देखने के बाद मत सोचो कि ये सभी मूल स्थान हैं और श्री रामायण काल से संबंधित हैं, कोई भी कहीं भी कोई भी मंदिर बना सकता है, और कोई भी नाम दे सकता है, इसका मतलब यह है कि यह मूल हो जाएगा, यदि आप सरकारी विभागों से अनुरोध करेंगे तो वे एक बोर्ड लगा देंगे, यह हुआ था, कुछ साल पहले ये सभी आदिवासी लोगों को ईसाईयों से बचाने के लिए बनाए गए मंदिर और धाम हैं इस प्रकार के बोर्ड आपको भारत में हर जगह मिल सकते हैं

फिर कैसे तय करें कि जन्मस्थान कहां है? अब हमें वैदिक ग्रंथों के पास जाना है, अब हमें विभिन्न ग्रंथों में देखना है और हमें उच्चतम प्रमाण लेना है फिर हमें यह देखना होगा कि उस पुस्तक में इस विशेष स्थान का उल्लेख है या नहीं, उस प्रक्रिया में (श्री वाल्मीकि और उनके कार्यों जैसे मूल रामायण, आनंद रामायण ...) हनुमान जन्म इतिहास बताने के लिए सर्वोच्च अधिकार, रामायण में जो भी जगह लिखी गई है, हमें उसे स्वीकार करना होगा क्योंकि यह ऋषि वाल्मीकि द्वारा लिखी गई थी, वह भी त्रेतायुग के दौरान भगवान श्रीराम की अवधि, और वही हनुमान की कथा भी हनुमान के सामने श्री श्रीराम को सुनाई

પીપલ દહાડ
વારસા (મહારાષ્ટ્ર)
Pipal Dahad 11 Km.
Warsa (MH) 34 Km.
પંપા સરોવર
Pampa Sarovar
08 Km.
શબરીધામ
Shabari Dham

नवनिर्मित शबरी धाम

https://www.youtube.com/watch?v=GXfrwgwnSFM&t=11s

अञ्जनि कुंड

https://www.youtube.com/watch?v=Gu4exg3u6es&t=231s

जब हम इस शबरी धाम कि बारे मे पूजारी से प्रमाण पूछा
उत्तर :- “ इस मंदिर को बनाकर 17 साल हुआ।
हम को इतनाही पता है कि यह दण्डकारण्य है और श्री राम यहा आऐ

आप हमसे रामायण/पुराण साक्ष्य पूछें! तो हमें पता नहीं।
- श्री शबरी मन्दिर आदिवासी पूजारि मन्सु भायि - डांग गुजरात,

https://www.youtube.com/watch?v=n2Lp4knoxZo

Forest Department Office at Ahva in Dang District

हम वन विभाग गए और वन विभाग के संरक्षकों से इन 3 स्थानों के बारे में पूछा और उनसे प्रमाणों के बारे में पूछा लेकिन उन्होंने कहा कि हमारे पास नहीं है

निष्कर्ष: इन धामों का निर्माण 15वें वर्ष से पहले आदिवासियों को धर्मांतरण से बचाने के लिए ही किया गया था। वास्तविक हनुमान जन्मभूमि से कोई संबंध नहीं, यहाँ कोई पौराणिक, ऐतिहासिक शास्त्र प्रमाण नहीं है

५. कैथल् – (हरियाणा)

श्री हनुमान टीला मंदिर - कैथल में एक मंदिर जिसे श्री हनुमान् जी का जन्म स्थान कहा जाता है

“हम सबूत खोज रहे हैं अब तक हमें कोई सबूत नहीं मिला, हमारे पास यह कहने का कोई प्रमाण नहीं है कि कैथल श्री हनुमान जी का जन्म स्थान है”

- श्री बाबू राम शांडिल्य, श्री हनुमान टीला पुजारी जी,

कैथल, हरियाणा,-

https://www.youtube.com/watch?v=_Pang5KJuM0 ,

भजन
श्री हनुमान जी की आरती
श्री बालाजी की आरती
सौजन्य से:-स्व: श्री लज्जा राम शर्मा
म जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
ॐ अंजनी
ाय धीमहि तन्नो हनुमान प्रचोद त् ॐ जैसे कर्म करेगा वैसा फल देगा भगवान, ये है गीता का ज्ञान ॐ

बायें भुजा असुर दल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे॥
सुर नर मुनि आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे॥
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई॥
जो हनुमान (जी) की आरती गावै। बसि बैकुंठ परमपद पावै॥
सौजन्य से:-स्व: श्री
य श्री राम जय श्री राम
जय श्री राम जय श्री
ाय विदमहे वायु वेगाय धीमहि तन्नो हनुमान प्रचोद त् ॐ जैसे कर्म करेगा वैसा फल देगा भ

Meeting Senior most Monks, and Mahants in Kaithal Hariyana discussion regarding Sri Hanuman Janmabhoomi

कैथल श्री महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय में "श्री हनुमद जन्मभूमि किष्किंधा" पर सम्मेलन,

https://www.youtube.com/watch?v=eAcOUN7PGUA

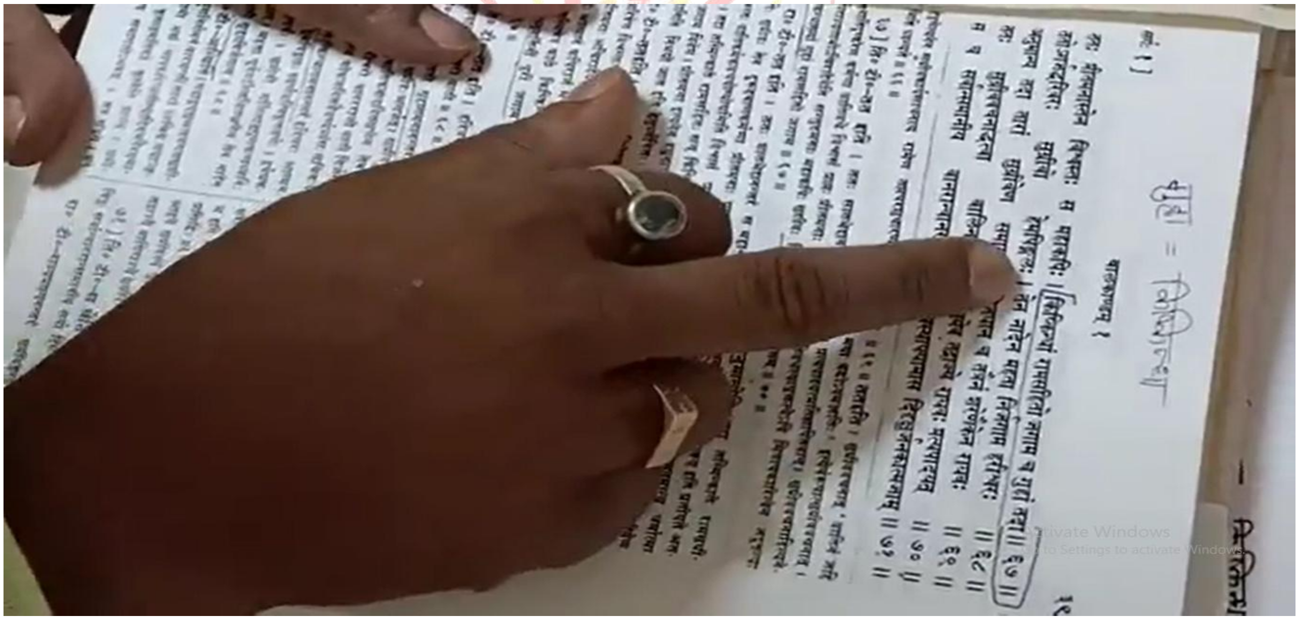

निष्कर्ष: कैथल मे कोई प्रमाण नहीं है

श्रीमद वाल्मीकि रामायण की घोषणा “किष्किंधा” भगवान हनुमान की जन्मभूमि है

https://mvsu.ac.in/

https://www.facebook.com/MVSUOfficial/videos/347855380841722

गोरखपूर (उ.प्र)

गोरक्षनाथ संस्कृत महाविद्यालय में "श्री हनुमद जन्मभूमि किष्किंधा" पर विद्वानों के साथ सभा,

https://www.youtube.com/watch?v=2Ljs8TQEVks

पटना, बुधवार, 6 जुलाई, 2022

जागरण सिटी

दैनिक जागरण

पटना

छिपी प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना जरूरी 16

www.jagran.co

किष्किन्धा से राजधानी पहुंची हनुमानजी की रथयात्रा, शहर में हुई जय-जयकार

जासं, पटना : कर्नाटक के हम्पी (पूर्व में पम्पा क्षेत्र) स्थित किष्किन्धा पर्वत से चली हनुमानजी की रथयात्रा अयोध्या, गोरखपुर होते हुए मंगलवार को राजधानी पहुंची। रथ-यात्रा का स्वागत महावीर मंदिर न्यास के सचिव आचार्य किशोर कुणाल के साथ अन्य लोगों ने किया। रथ-यात्रा में हनुमानजी के साथ उनकी माता अंजना, सीताराम, लक्ष्मण और विरूपाक्ष(शिव के स्वरूप) भगवान की प्रतिमा, श्रीराम जन्म भूमि अयोध्या से लाई भगवान राम की चरण पादुका का भी पूजन किया गया। वहीं शाम में प्रतिमा का दर्शन श्रद्धालुओं ने किया।

किष्किन्धा से आए स्वामी गोंविदानंद सरस्वती की देखरेख में कार्यक्रम संपन्न हुआ। आचार्य किशोर कुणाल ने कहा कि रथ-यात्रा से किष्किन्धा और पाटलिपुत्र के बीच निकटता आएगी। वहीं यात्रा के जरिए पटना समेत बिहार वासियों की आध्यात्मिक शक्ति का विस्तार हुआ है। किष्किन्धा से रथ लेकर निकले स्वामी गोविंदानंद सरस्वती ने बताया कि रथ यात्रा का मुख्य उद्देश्य पवनसुत हनुमानजी के प्रमाणिक जन्म स्थान किष्किन्धा पर्वत के नीचे विशाल हनुमान मंदिर का निर्माण कराना है। मंदिर निर्माण के लिए हनुमत जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र बनाया गया है। 2032 तक मंदिर निर्माण कार्य पूरा किया जाना है।

वर्तमान में किष्किन्धा पर्वत शिखर पर छोटा मंदिर है जहां गृह में अंजना माता की गोद में हनुमान लला की प्रतिमा स्थापित पर्वत के शिखर पर मंदिर विस्तार स्थान नहीं होने के कारण पर्वत नीचे 10 एकड़ में विशाल मंदिर निर्माण किया जाना है। बिहार की पर आए स्वामी गोविंदानंद सरस्व कहा कि अपने यात्रा के दौरान लेकर शहरों में सर्वाधिक हनुमान मंदिर है। रथ यात्रा पटना से होते मध्यप्रदेश के लिए प्रस्थान क

हनुमान मंदिर परिसर में पहुंचा किष्किन्धा रथ, देखने को श्रद्धालुओं की लगी भीड़। ● जागरण

रथ-यात्रा का स्वागत करते महावीर मंदिर के सचिव आचार्य किशोर कुणाल। ● जागरण

धर्म . समाज . संस्था

दैनिक भास्कर, पटना, बुधवार, 06 जुलाई, 2022

उमड़े श्रद्धालु • रथ पर विराजमान मूर्तियों को महावीर मंदिर में रखा गया

महावीर मंदिर पहुंची किष्किंधा से चली हनुमान लला की रथयात्रा

सिटी रिपोर्टर|पटना

किष्किंधा से चली हनुमान जी की रथयात्रा मंगलवार को महावीर मंदिर पहुंची तो बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भव्य स्वागत किया। उस वक्त महावीर मंदिर का चप्पा-चप्पा जय श्रीराम के जयकारे से गूंजायमान हो उठा। शाम में श्रद्धालुओं ने अंजना माता, सीता-राम-लक्ष्मण समेत हनुमान लला की उत्सव प्रतिमाओं के दर्शन किए। इससे पहले कर्नाटक के हम्पी स्थित किष्किंधा पर्वत से चली हनुमान जी की रथयात्रा मंगलवार की सुबह पटना के महावीर मंदिर पहुंची, तो भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी। महावीर मंदिर न्यास के सचिव आचार्य किशोर कुणाल की अगुवाई में पूजा-अर्चना की गई। साथ ही श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या से लाए आए भगवान राम के चरण पादुका का भी पूजन किया। महावीर मंदिर के नैवेद्यम प्रभारी आर शेषाद्री के नेतृत्व में गाजे-बाजे के साथ रथयात्रा को गांधी मैदान से महावीर मंदिर लाया गया। गोरखपुर से चलकर पहुंचे चार गर्भगृह वाले आकर्षक रथ पर फूलों की बारिश भी हुई। महावीर मंदिर के पुरोहितों और वेद विद्यालय के छात्रों के वैदिक मंत्रोच्चार के बीच उत्सव प्रतिमाओं को महावीर मंदिर में लाया गया। शाम को दो घंटे के लिए इन उत्सव प्रतिमाओं को भक्तों के दर्शनार्थ मंदिर में बने मंच पर रखा गया। इस दौरान हनुमान जी, भगवान राम और शिवजी के 108 नामों का अर्चन किया गया।'

किष्किंधा से चल महावीर मंदिर पहुंचे हनुमानजी का पूजन करते आचार्य किशोर।

साल 2020 की विजयादशमी से शुरू हुई, चातुर्मास शुरू होने के पूर्व तक 12 वर्षों तक चलेगी यह रथयात्रा

किष्किन्धा से रथ लेकर निकले स्वामी गोविंदानंद सरस्वती ने बताया कि वर्ष 2020 की विजयादशमी से रथयात्रा प्रारंभ हुई है और 12 वर्षों तक चलेगी। 2032 तक मंदिर निर्माण कार्य पूरा किया जाना है। तब तक प्रत्येक वर्ष विजयादशमी से रथयात्रा निकलेगी और चतुर्मास शुरू होने के पूर्व तक चलेगी। इसका मुख्य उद्देश्य है किष्किंधा पर्वत के नीचे विशाल हनुमान मंदिर का निर्माण करना। मंदिर का निर्माण प्रारंभ हो चुका है। अगले 10 वर्षों में मंदिर निर्माण कार्य पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है। अभी किष्किंधा पर्वत के शिखर पर छोटा मंदिर है, जहां गर्भ गृह में अंजना माता की गोद में बैठे हनुमान लला की प्रतिमा स्थापित है।

गौरीशंकर मंदिर में आद्रा पर रुद्राभिषेक कराया

पटना सिटी। गायघाट स्थित श्री गौरीशंकर मंदिर न्यास समिति की ओर से मंगलवार को आद्रा पर मंदिर में रुद्राभिषेक कराया गया। शिव-पार्वती का विशेष श्रृंगार किया गया। पुजारी जीतेंद्र शास्त्री ने पूजा अर्चना कराई। इसमें मंदिर कमेटी के सचिव विश्वनाथ चौधरी, दिलीप गुप्ता, राजेंद्र यादव, विनय केसरी, संजय सिंह, चुन्नू चंद्रवंशी, शंभुनाथ, संजय कुमार, नवीन कुमार सिन्हा, शंकर चौधरी, शंभूनाथ, गणेश कुमार आदि शामिल हुए। भक्तों के बीच खीर, पूरी व आम का प्रसाद वितरण किया गया। इधर, गायघाट स्थित पौराणिक संकट मोचन हनुमान मंदिर दुर्गा स्थान में भी आद्रा महोत्सव का आयोजन किया गया। भगवान की पूजा-पाठ के बाद लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। मौके पर काशीनाथ सर्राफ, चुन्नू चंद्रवंशी, विजय कुमार, राजेश कुमार पांडे, मुकेश ठाकुर, डॉ अजय प्रकाश, गंगाधर गिरि, गोपाल कुमार गोल्डन, विनोद कुमार, मिथिलेश शर्मा, अमित कुमार, पांडे, छोटू गिरि, मोहन प्रसाद, दीपक कुमार, मनोज शर्मा, सिद्धार्थ भारद्वाज समेत अन्य शामिल रहे।

हनुमान रथयात्रा पहुंची पटना, भव्य स्वागत

पटना, वरीय संवाददाता। कर्नाटक के हम्पी (पूर्व में पम्पा क्षेत्र) स्थित किष्किन्धा पर्वत से देश यात्रा पर निकली हनुमान जी की रथयात्रा हनुमत जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के संस्थापक गोविन्दा नंद सरस्वती की देखरेख में मंगलवार को पटना के महावीर मंदिर पहुंची। रथयात्रा में सवार हनुमान, माता अंजना, भगवान विरूपाक्ष (विष्णु) सहित अन्य प्रतिमाओं का दर्शन पटनावासियों ने किया। रथ का स्वागत महावीर मंदिर न्यास के सचिव आचार्य किशोर कुणाल ने किया। उन्होंने कहा कि इस रथयात्रा से किष्किन्धा और पाटलिपुत्र के बीच निकटता आयी है और पटना समेत बिहारवासियों की आध्यात्मिक शक्ति का विस्तार हुआ है। गोरखपुर से पटना पहुंचे रथ को गांधी मैदान से महावीर मंदिर तक रथ के आगे बैंड-बाजा के साथ मंदिर लाया गया। चार गर्भगृह वाले रथ पर फूलों की बारिश की गई और पुरोहितों व वेद विद्यालय के छात्रों के वैदिक मंत्रोच्चार के साथ इसका भव्य स्वागत किया गया।

किष्किंधा से हर साल पटना आएंगे हनुमान : किष्किंधा में आयोध्या की तर्ज पर विशाल हनुमान मंदिर बनाया जा रहा है। जो वर्ष 2032 तक बनकर पूरा होगा। किष्किंधा मंदिर के गर्भगृह में स्थापित होने के पहले हर साल किष्किंधा से चलकर हनुमान पटना भक्तों को दर्शन देने आएंगे। ट्रस्ट के संस्थापक ने कहा कि वर्ष 2020 की विजयादशमी से शुरु रथयात्रा बीते दो सालों से चल रही है। पटना आने के पहले रथयात्रा में सवार हनुमान व अन्य देवता गोरखपुर के अलावा अयोध्या, मथुरा, नासिक, गुजरात आदि जगहों का भ्रमण कर चुके हैं।

हनुमान को जन-जन तक पहुंचाना उद्देश्य : रथयात्रा का उद्देश्य पवनसुत हनुमान के जन्म स्थान किष्किन्धा पर्वत को लेकर लोगों को एकमत करना है। ट्रस्ट के संस्थापक ने कहा कि उन्होंने पटना आने के क्रम में गांव-गांव में हनुमान मंदिर और वहां भक्तों को हनुमान चालीसा का पाठ करते देखा।

पटना बुधवार 6 जुलाई, 2022

पूजा-अर्चना • महावीर मंदिर में रथयात्रा का भव्य स्वागत

किष्किन्धा से राजधानी पहुंचे हनुमानजी

रथयात्रा देखने के लिए बड़ी संख्या में पहुंचे भक्त

संवाददाता ▷ पटना

कर्नाटक के हंपी (पूर्व में पंपा क्षेत्र) स्थित किष्किन्धा पर्वत से चली हनुमानजी की रथयात्रा मंगलवार की सुबह पटना के महावीर मंदिर पहुंची. रथयात्रा देखने के लिए भक्तों का जन सैलाब उमड़ पड़ा था. महावीर मंदिर न्यास के सचिव आचार्य किशोर कुणाल की अगुवाई में हनुमानजी के साथ उनकी माता अंजना, सीता-राम, लक्ष्मण और विरुपाक्ष (शिव के स्वरूप) भगवान की उत्सव प्रतिमाओं की पूजा-अर्चना की गयी. इस दौरान अयोध्या श्रीराम जन्म भूमि से लायी गयी भगवान राम की चरण पादुका का भी पूजन किया गया. मंदिर के नैवेद्यम प्रभारी आर शेषाद्री के नेतृत्व में गाजे-बाजे के साथ रथयात्रा को गांधी मैदान से पुनः वापस महावीर मंदिर लाया गया.

गोरखपुर से आये थे चार गर्भगृह रथ : गोरखपुर से चलकर पहुंचे चार गर्भगृह वाले आकर्षक रथ पर भक्तों ने पुष्प वर्षा की. मौके पर मौजूद मंदिर के पुरोहितों व वेद विद्यालय के छात्रों के वैदिक मंत्रोच्चार के बीच उत्सव प्रतिमाओं को मंदिर में लाया गया. किष्किन्धा से आये स्वामी गोविंदानंद सरस्वती की देखरेख में हनुमानजी, भगवान राम और शिवजी के 108 नामों का अर्चन किया गया. स्वामी गोविंदानंद सरस्वती ने बताया कि बीते वर्ष विजयादशमी से रथयात्रा निकली. यह रथयात्रा का दूसरा वर्ष है. इसका मुख्य उद्देश्य है पवनसुत हनुमानजी के प्रमाणिक जन्मस्थान किष्किन्धा पर्वत के नीचे विशाल हनुमान मंदिर का निर्माण करना है. गोविंदानंद सरस्वती ने बताया कि पटना आने के क्रम में रास्ते भर उन्होंने हनुमानजी के मंदिर देखे. हनुमान भक्तों की श्रद्धा और महावीर मंदिर का प्रताप ही रहा कि मंगलवार के दिन किष्किन्धा से हनुमानजी भक्तों को दर्शन देने पहुंचे.

६. गुमला (झारखण्ड)

गुमला में एक मंदिर जिसे श्री हनुमादी का जन्मस्थान कहा जाता है

"भगवान हनुमान ने किष्किंधा में ही जन्म लिया था"

"परम प्रमाण श्री मद वाल्मीकि रामायण यही स्पष्ट रूप से कहते हैं"

- श्री केदारनाथ पाण्डेय, अंजनी माता मंदिर पुजारी

अंजनी गांव, गुमला जिला झारखंड,
https://www.youtube.com/watch?v=0MIyP_R33FE&t=5s

बजरंगबली
श्री अंजनी माता गोद में हनुमान जी
यह मूर्ति कलकत्ता निवासी कृष्णाकुमार सोमानी
ने अपनी माता कान्ता देवी की स्मृति मे

Question: Now Where is Kishkindha ?

Ans: It’s in Karnataka

"Pampakshetra Kishkindha" is the birthplace of Lord Hanuman

- Sri Kedarnath Pandey, (Priest of Anjani Mata Temple in Gumla District)

Totally 3 days came to Anjan village which is said to be the birth place of Hanuman in Gumla district of Jharkhand and there was a complete review. 3 generations ago there was nothing here, if it was like a small cave on a hill, someone placed an idol of Hanuman there, after that the hill was named Anjanagiri. , getting so popular, this also started to be promoted as the birth place of Hanuman, in a way, this Gumla area is a tribal area, so to protect them from interfaith, and to stop the many animal sacrifices that take place here, an idol of Anjani Devi along with child Hanuman was established here on the hill.

Such is the case with the newly constructed 3 dhams in "Dhang" district of Gujarat, and also here and there, the village people and the priests for 3 days continuously.

They also say that "Srimad Valmiki Maharishi's only oath in the matter of Sri Hanuman is Sri Mad Ramarayana" and that "Sri Hanuman's birth place is Pampaksheta Kishkindha".,
Anjani village in Gumla district of Jharkhand state (Once this state of Jharkhand was an integral part of Bihar state, after the formation of new state of Jharkhand, Gumla district came into Jharkhand,)
झारखंड के गुमला जिले के हनुमान जी की जन्मस्थली कहे जाने वाले अंजन गांव में पूरे 3 दिन आ गए और वहां पूरी समीक्षा हुई. 3 पीढ़ी पहले यहां कुछ भी नहीं था, अगर यह एक पहाड़ी पर एक छोटी सी गुफा की तरह था, तो किसी ने रखा वहां हनुमान की एक मूर्ति थी, उसके बाद पहाड़ी का नाम अंजनगिरी रखा गया, इतना लोकप्रिय होने के कारण इसे हनुमान के जन्म स्थान के रूप में भी प्रचारित किया जाने लगा, एक तरह से यह गुमला क्षेत्र एक आदिवासी क्षेत्र है, इसलिए उन्हें अंतरधार्मिक से बचाने के लिए , और यहाँ होने वाले कई पशु बलि को रोकने के लिए, यहाँ पहाड़ी पर अंजनी देवी की एक मूर्ति और बच्चे हनुमान की स्थापना की गई थी।
ऐसा ही हाल गुजरात के "ढांग" जिले में नवनिर्मित 3 धामों का है, और यहाँ-वहाँ, गाँव के लोग और पुजारी लगातार 3 दिनों तक।
वे यह भी कहते हैं कि "श्री मद रामायण श्री मद रामायण लिखने वाले श्री हनुमान, श्रीमद वाल्मीकि महर्षि के मामले में श्री मद रामरायण ही एकमात्र मानक हैं" और यह कि "श्री हनुमान का जन्म स्थान पम्पाक्षे त्र किष्किंधा है"।
https://www.youtube.com/watch?v=0MIyP_R33FE&t=5s

निष्कर्ष: कैथल मे कोई इतिहास श्री रामायण इत्यादि या पौरणिक कोई भि एक प्रमाण नहीं है, गुमला में मंदिर के अलावा उनके पास और कोई सबूत नहीं है।

उस मंदिर के मुख्य पुजारी ने खुले तौर पर कहा कि भगवान हनुमान ने किष्किंधा में ही जन्म लिया था, और उन्होंने यह भी कहा कि हनुमान के जन्म इतिहास से संबंधित श्रीमद वाल्मीकि रामायणम ही एकमात्र प्रामाणिक ग्रंथ है।

वहां के लोग बहुत ही मासूम, और बहुत ईमानदार हैं, जो हमने दो जगहों पर देखा है एक दांग जिला और दूसरा गुमला, और कैथल के लोग बहुत ही महान हैं, पूरी तरह से भगवान को समर्पित हैं, इन 3 जगहों के पुजारियों ने खुलकर स्वीकार की सच्चाई,

---

अयोध्या –(उ.प्र))

किष्किंधा भगवान श्री हनुमान का जन्मस्थान है, मुख्य पुजारी, अयोध्या श्री रामजन्मभूमि,

Ayodhya Sri Ramajanmabhoomi Chief Priest Sri Satyendra Das Performing Prana Pratishtha to Sri Hanumad Janmabhoomi Kishkindha Sri Sitarama Lakshmana Utsava Murty and to Sri Kishkindha Ratham during Sri Ramanavami in Adyodhya 2021

And said

“Lord hanuman took birth in Pampakshetra Kishkindha only”

रामजन्मभूमि की तर्ज पर हनुमान जी के प्राकट्य स्थल किष्किंधा पर्वत की तलहटी में बनवाया जाएगा हनुमान मंदिर

किष्किंधा से अयोध्या तक निकलेगी रथयात्रा

अयोध्या | हिन्दुस्तान टीम

फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी पर 11 मार्च को महाशिवरात्रि के अवसर पर हनुमान जी के जन्मस्थान किष्किंधा (कर्नाटक) से अयोध्या तक रथयात्रा निकाली जाएगी। इस रथयात्रा का उद्देश्य मुख्यतः रामलला की महिमा का गान और रामकथा का प्रचार-प्रसार है जिससे समाज में मानवीय आदर्शों का विकास हो। यह कहना है यात्रा के आयोजक संत स्वामी गोविंदानंद सरस्वती महाराज का। वह यहां रथयात्रा के लिए रामलला की अनुमति प्राप्त करने आए हैं। उन्होंने रामजन्मभूमि में विराजमान रामलला का मंगलवार को दर्शन-पूजन किया।

तदुपरांत रामलला के प्रतिनिधि रुप में मुख्य अर्चक आचार्य सत्येन्द्र दास से भेंटकर रामलला के अनुमति के रुप में भगवान की चरण पादुका प्राप्त की। आचार्य श्री शास्त्री ने चरण पादुका के आरती पूजन के बाद तीन जोड़ी चरण पादुका उन्हें सौंप दी। संत ने बताया कि रथयात्रा के रथ पर विराजित हनुमान जी के हृदय स्थल पर यह चरण पादुका आम श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ रखी जाएगी। इसके अलावा दूसरी जोड़ी चरण पादुका किष्किंधा में ही प्रतिष्ठित की जाएगी। यहीं दस एकड़ विस्तृत क्षेत्रफल में हनुमान जी की 215 मीटर ऊंची प्रतिमा की स्थापना कर भव्य मंदिर का निर्माण कराया जाएगा। दस एकड़ क्षेत्र में रामकथा पार्क होगा जिसमें रामायण को सचित्र दर्शाया जाएगा। यह निर्माण हनुमत जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के माध्यम से किया जाएगा।

रामकथा का प्रचार

- कर्नाटक से आये संत ने रामलला के दरबार में लगाई हाजिरी
- रामलला की अनुमति रुप में मुख्य अर्चक से प्राप्त की पादुका

रथयात्रा में भेजने के लिए चरण पादुका का पूजन करते रामजन्मभूमि के मुख्य अर्चक

राम नवमी से रामजन्मभूमि में जूता-चप्पल पहनकर दर्शन हो बंद

श्रीहनुमत जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष स्वामी गोविंदा नंद सरस्वती ने कहा कि राम जन्मभूमि में विराजमान रामलला के दर्शनार्थियों को जूता-चप्पल पहनकर जाना उनकी श्रद्धा का अपमान है। यह व्यवस्था बंद होनी चाहिए। विवाद के पटाक्षेप और रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के गठन के बाद यह व्यवस्था बदलनी चाहिए। रामजन्मभूमि ट्रस्ट रामनवमी से ऐसी व्यवस्था लागू कराए। तब तक वह दर्शनार्थियों के लिए सामानों को रखवाने के लिए उचित स्थान तलाश ले। उन्होंने यह दावा कि यदि ट्रस्ट स्थान उपलब्ध करा दे तो वह एक करोड़ खर्च करके रामलला को भेंट दी जाने वाली वस्तुओं के लिए मजबूत लॉकर व श्रद्धालुओं के जूता-चप्पल रखवाने के लिए रैक बनवाने को तैयार हैं।

12 वर्षों तक चलने वाली यात्रा चार चरणों में होगी

अयोध्या। किष्किंधा से निकलने वाली रथयात्रा देश भर में 12 वर्षों तक संचालित की जाएगी। इस दौरान 29 राज्यों के छह सौ जिलों, छह हजार तहसीलों और 25 पवित्र नदियों को पार करते हुए यात्रा एक लाख किमी. की दूरी तय करेगी। इस यात्रा के चार चरण होंगे। पहला चरण 2023 तक चलेगा जिसमें कर्नाटक, गोवा, केरल, तमिलनाडु, पांडुचेरी, आंध्र प्रदेश व तेलंगाना शामिल हैं। इसी तरह से 2023-26 तक यात्रा महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ में रहेगी। श्रीहनुमत जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष सरस्वती ने बताया कि इस दौरान वाल्मीकि रामायण पर आधारित प्रवचन, हनुमान चालीसा व सुंदरकांड का पारायण व श्रीरामनाम जप यज्ञ भी चलता रहेगा।

Government of Karnataka

Karnataka Chief Minister Basavaraj Bommai directed officials Saturday to start work next month on his pet project of developing the Anjanadri Hill in Koppal, the fabled birthplace of Hanuman, into a pilgrimage spot doubling up as a tourist destinatio...

Bommai, who reveres Hanuman, chaired a meeting here to take stock of the project's progress. He has set aside Rs 100 crore for this. The BJP government wants to connect the Hanuman temple atop the Anjanadri Hill with the Ram Mandir coming up at Ayodhya.

The CM asked the Koppal deputy commissioner to finish the process of acquiring land fast. "The project needs 60 acres of land. Of this, 58 acres are private lands belonging to farmers. Acquire the lands after taking farmers' consent or purchase them through the Karnataka Industrial Areas Development Board (KIADB)," Bommai said, according to a statement from his office.

In the first phase of the Anjanadri development project, improvement of roads and development of alternative routes will be done. The Public Works department will widen the national highway up till Gangavati for which Bommai sought a detailed project...

Bommai also directed authorities to start work on parking and other infrastructure works at the base of the hill. He also asked officials to send a proposal to the government seeking financial approval for the project.

The Anjanadri Hill overlooks the Tungabhadra river. On the other side of the river stands Hampi, the world heritage site that is believed to be 'Kishkindha', the mythological kingdom of vanaras or monkeys. Anjanadri Hill and Hampi are some 20 km apart.

Karnataka has rejected the claim by Tirumala Tirupati Devasthanams (TTD) that Hanuman was born in the Anjanadri Hill in Tirumala.

There are mythological references to Anjanadri, the birthplace of Hanuman, and the reference of 'Kishkindha' in Ramayana. With many places in and around Hampi that have references in the epic, it is believed that Kishkindha and Hampi are the same.

The temple hill will also get a 430-metre ropeway. "The tender process for this should be completed in two months," Bommai told the tourism department. "The base of the ropeway should have facilities for tourists," he said.

Bommai said he would visit the Anjanadri Hill on July 15 for another review.

अंजनाद्री पहाड़ियों का व्यापक विकास सीएम बोम्मई ने : जुलाई में काम शुरू करने के दिए निर्देश

NEWS • LIVE TV INDIA TODAY APP

HOME | MY FEED | INDIA | WORLD | BUSINESS | TECH | MOVIES | CWG 2022 | SCIENCE | BEST COLLEGES

News / India / 'Lord Hanuman was born in Anjanadri hills': Karnataka CM rekindles birthplace debate

'Lord Hanuman was born in Anjanadri hills': Karnataka CM rekindles birthplace debate

Karnataka Chief Minister Basavaraj Bommai claimed that Lord Hanuman was born in Anjanadri hills, rekindling debate over Lord Hanuman's birthplace.

Priyanka R
Bengaluru
August 1, 2022 UPDATED: August 1, 2022 18:06 IST

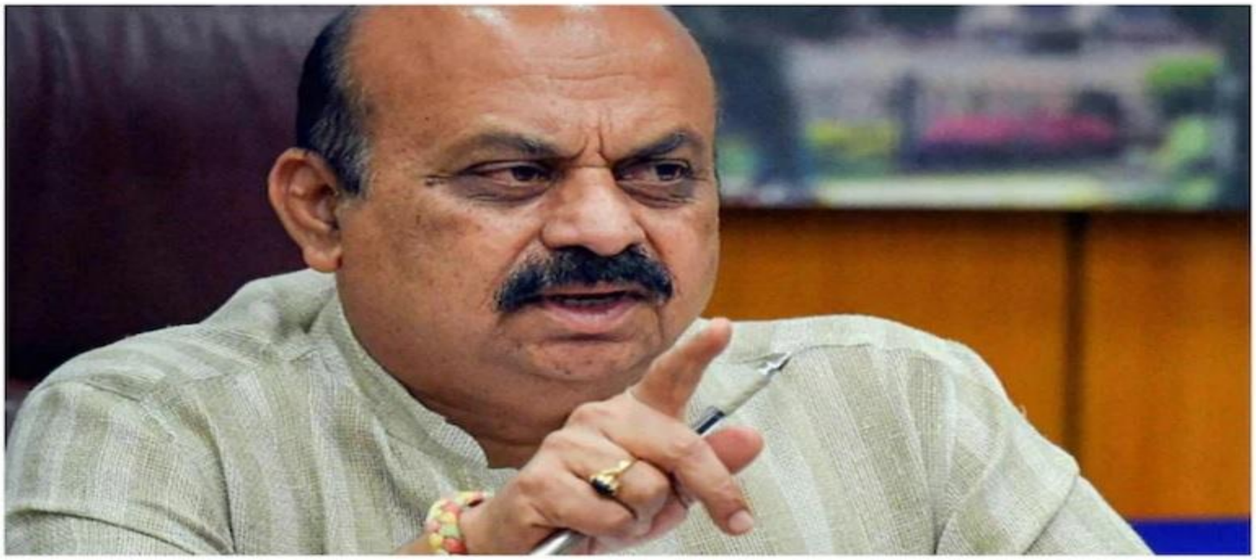

CM Bommai said there is no confusion about Lord Hanuman's birthplace. (Photo: PTI)

THE HINDU

MENU

TODAY'S PAPER NEWS OPINION BUSINESS SPORT ENTERTAINMENT CROSSWORD+ SCIENCE

STATES ANDHRA PRADESH KARNATAKA KERALA TAMIL NADU TELANGANA OTHER STA

NEWS > INDIA > KARNATAKA

KARNATAKA

Anjanadri Hill in Koppal "real birthplace" of Lord Anjaneya: CM Bommai

Kumar Buradikatti

KALABURAGI: AUGUST 01, 2022 17:59 IST
UPDATED: AUGUST 02, 2022 13:43 IST

SHARE ARTICLE PRINT A | A | A

किष्किंधा (हम्पी) अंजनाद्री पहाड़ियों में हुआ था बजरंगबली का जन्म- CM बोम्मई

TV9 Bharatvarsh | Edited By: मुकेश झा
Aug 01, 2022 | 7:35 PM

कर्नाटक के सीएम बसवराज बोमैन ने श्री किष्किंधा हनुमाद जन्मभूमि पंपक्षेत्र किष्किंधा में अंजनाद्री में विकास कार्यों के लिए पूजा की

https://www.youtube.com/watch?v=vqL0m0AWKiM

THE NEW INDIAN EXPRESS

Tuesday, August, 23, 2022 12:21:43 AM

Search

NATION WORLD STATES CITIES BUSINESS SPORT GOOD NEWS MOVIES PHOTOS VIDEOS SUBSCRIBE TO E-PAPER

Home › States › Karnataka

ADVERTISEMENT

Seers from Kishkinda take up all India tour to reaffirm Anjanadri as birthplace of Lord Hanuman

The seer said that the government has sanctioned funds for the development of Anjanadri and the site will be developed as a religious site and not as a tourist destination.

Published: 26th July 2022 10:20 PM | Last Updated: 26th July 2022 10:20 PM | A+ A A-

Latest

- China resumes visa ban for stranded Indian students after over two years of Covid delay
- Jantar Mantar protest: Farmers charm the lot with traditional attire, emotional connect
- FinMin issues consolidated overseas investment rules to promote ease of doing business

Seers from Kishkinda take up all India tour to reaffirm Anjanadri as birthplace of Lord Hanuman

The seer said that the government has sanctioned funds for the development of Anjanadri and the site will be developed as a religious site and not as a tourist destination **By Amit S Upadhye**

Express News Service

HUBBALLI: The claims made by different states in India about the birthplace of Lord Hanuman will now be put to rest as a team of seers and scholars from Kishkinda in Koppal district have visited each and every temple in India which has made false claims about Hanuman birthplace.

-ADVERTISEMENT-

Ads by

The team led by seer Govindananda Saraswati, the head pontiff of Kishkinda Hanumad Janmabhoomi Teertakshektra Trust visited six states and a temple in Karnataka to argue with the temple trusts who were claiming right on the birthplace of Lord Hanuman. The team debated and provided the proofs mentioned in the epics and other religious books about Kishkinda being the actual birthplace of Hanuman.

The team visited Maharashtra, Gujarat, Haryana, Jharkhand, Bihar and Andhra Pradesh in pursuit of claiming rights for Hanuman Janma Bhoomi. The team also met trustees of Gokarna and temple heads to support Anjanadri as the rightful birthplace.

"It's good news for the entire Karnataka. Now people will think twice before claiming rights on the birthplace of Lord Hanuman. We have visited different states and temples to explain to those who claimed otherwise, about the importance of Kishkinda, Pampa Sarovar and Anjanadri hill. We travelled for over a year from Anegundi and we returned a few days ago," seer Govindananda Saraswati told ***TNIE***.

The seer pointed out that the claims of Tirupati Trust about Lord Hanuman being born in the hills of Tirumala were not true. "Several political leaders, mutts and prominent seers from Karnataka and Andhra Pradesh joined hands to take away the sheen of Anjanadri Hills. We shall expose all of them soon. We will be organising a mega rally on this in Bengaluru or Anegundi which will be attended by seers and scholars all over the country. We will request the state government to make an announcement about our findings and Anjanadri as the only birthplace of Lord Hanuman," he said.

The seer said that the government has sanctioned funds for the development of Anjanadri and the site will be developed as a religious site and not as a tourist destination. "While the government will take up the improvement of the region, we will form a trust and will take up work to popularise the destinations. We need to create awareness in the country about Kishkinda so that false claims about the birthplace of Lord Hanuman will end. We will also demand the government to rename Koppal district as Kishkind district," seer added.

This Train Covers holy places Sri Sita Janmabhoomi (Janakpuri)

to

Sri Ramajanmabhoomi(Ayodhya) to Sri Hnumad Janmabhpppmi (Kishkindha)

https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1836061,

“ಹನುಮ ಜನಿಸಿದ ನಾಡು,

ಕರ್ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ತುಂಗಭದ್ರಾ ನದಿಯ ಉತ್ತರ ಭಾಗ ಉತ್ತರ ಕರ್ನಾಟಕ ದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀ ಹನುಮಂತ ದೇವರ ಜನನ ವಾಗಿರುವ ಕಾರಣ ಮತ್ತು ಇತಿಹಾಸದಲ್ಲಿ ಅನೇಕ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯಗಳು ನಿರ್ಮಾಣ ವಾಗಿದ್ದ ಕಾಲದಲ್ಲಿ ಆಯಾ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಿರುವ ಆಯಾ ರಾಜ್ಯದ ರಾಜರು ಆಯಾ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ಜನಿಸಿದ ದೇವರ ಹೆಸರು ಮೇಲೇ ರಾಜ್ಯವನ್ನು ಆಳುವದು, ಮತ್ತು ದೇವಸ್ಥಾನಗಳನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸುವದು, ಆದೇವರ ಚಿತ್ರದ ನಾಣ್ಯಗಳನ್ನೂ ಮುದ್ರಿಸುವದು ಬಹಳ ವಿಶಿಷ್ಠ ವಾದ ಪರಂಪರೆ ಉತ್ತರ ಕರ್ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಸ್ಥಾಪನೆ ಆಗಿದ್ದ ಎರಡು ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯಗಳ ರಾಜರು, ಮಹಾರಾಜರು ಶ್ರೀ ಹನುಮಂತ ದೇವರ ಜನಿಸಿದ ನಾಡಿನಲ್ಲಿ ತಮ್ಮ ರಾಜ್ಯ, ರಾಜಧಾನಿ ಗಳು ಸ್ಥಾಪಿಸಿ ಭಗವಂತನ ಅನುಗ್ರಹವನ್ನು ಪಡೆದು ಕಾರಣ ಚಿನ್ನದ ಶ್ರೀ ಹನುಮಂತದೇವರ ನಾಣ್ಯಗಳನ್ನು ಮುದ್ರಿಸಿದರು

Coin of Vijayanagar Empire,

Bukka Raya I, Gold pagoda, 1344-1377 King striding right, in a pose to resemble Hanuman.

Mahabali Hanuman on Bukka I's coins

Mahabali Hanuman on Bukka I's coins - 01 Nov 2016 Tue

We know that Vijay Nagar simply means the city of victory! This Empire came into existence in 1336 CE.

The Vijayanagar Empire was ruled by four major Dynasties- Sangama Dynasty, Saluva Dynasty, Tuluva Dynasty and Aravidu Dynasty.

The founder of the Sangama Dynasty was Harihara I, also known as Hakka. He was succeeded by his son Bukka I (1354- 1377 CE). He was the ablest ruler of Sangama Dynasty. He conquered many South Indian territories

He issued many gold, silver and copper coins.

One of his fabulous Gold Pagoda coin weighs around 3.35g. The obverse depicts the Hanuman

Chikka Devaraya (1672 - 1704 AD)

Hanuman. Rev ; inside the Criss cross inscrip- Rama .
Lion seated Right. " Sa Ra " Devanagari Inscription.
Horse to left . Peacock

Coins of Kadamba Empire, 500 AD,

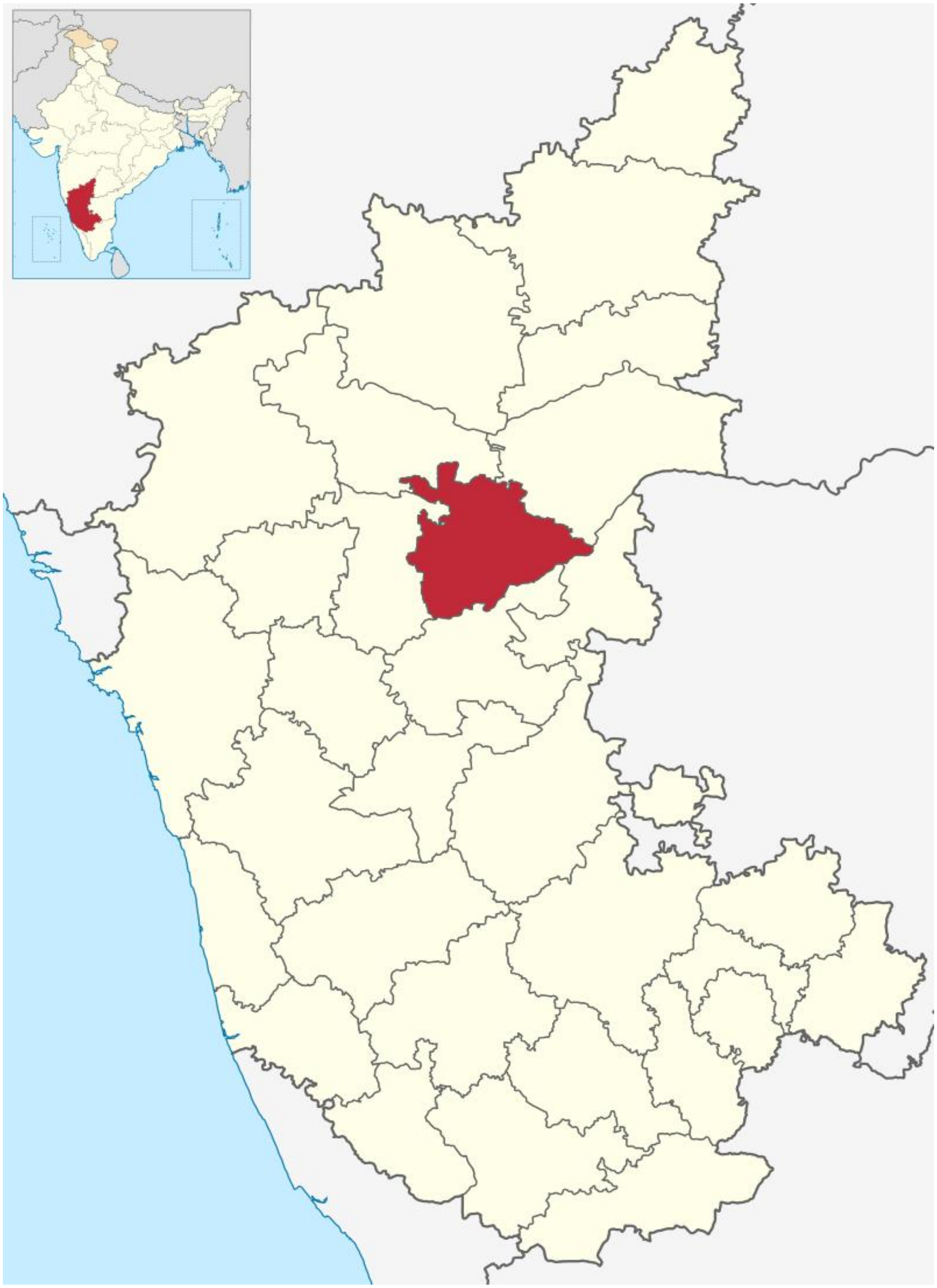

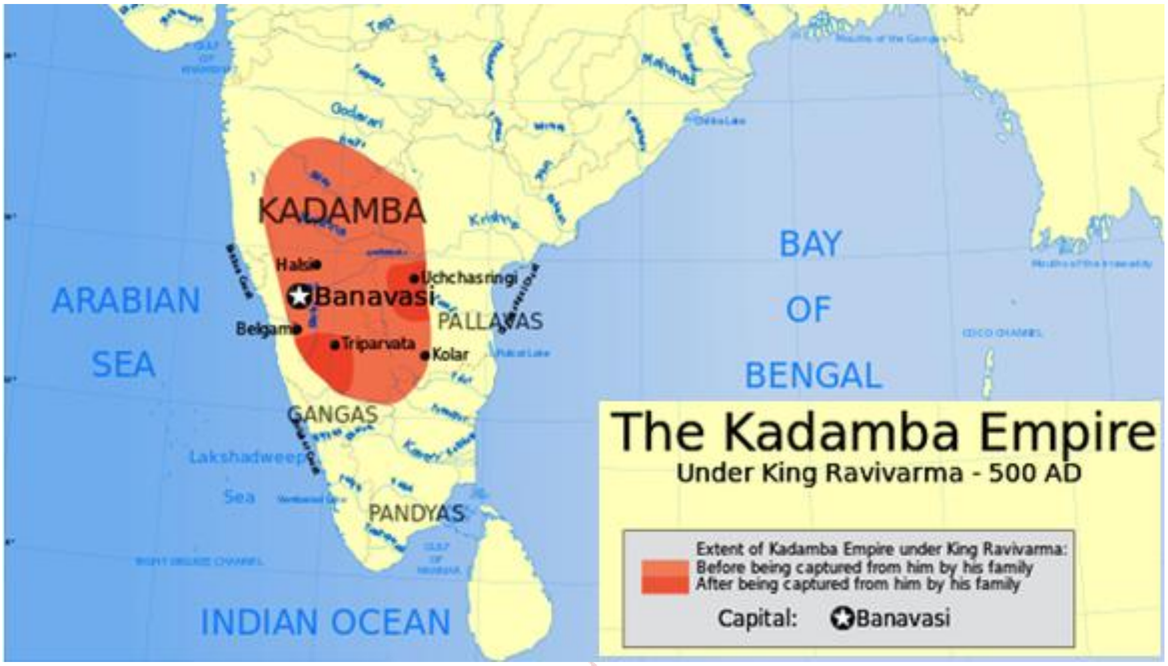

. The **Kadambas of Hangal** was a South Indian dynasty during the Late Classical period on the Indian subcontinent, which riginated in the region of Hangal in Karnataka.

https://en.wikipedia.org/wiki/Kadamba_dynasty

Lord Sri Hanuman on Kadamba coins

Coinage of the Kadambas of Hangal. Circa 12th-13th century. Obverse with a depiction of Hanuman, reverse with floral spray

Kadamba (345 – 525 CE) was an ancient royal brahmin dynasty of Karnataka, India that ruled northern Karnataka and the Konkan from Banavasi in present-day Uttara Kannada district. At the peak of their power under King Kakushtavarma, the Kadambas of Banavasi ruled large parts of modern Karnataka state.

Ramayana is an epic that does not need any introduction and neither does lord Hanuman. This beloved deity of Hindu culture is worshiped by millions throughout the Indian subcontinent. He is worshiped as a protector, giver of good luck and health. But apart from this, Hanuman is the symbol of our mind (Maan) and of the strength of devotion and discipline.

Hanuman is depicted in Indian culture through sculpture, painting, coins, etc. The best example of lord Hanuman depicted on coins is the Hanuman pagoda. This coin belongs to the Kadambas of Hangal.

The obverse of this coin depicts a seated lord Hanuman facing right, flanked by two 'chowries' and a conch above the moon on left and sun to right with the Kannada legend ‘ NA, KA, RA' below. The reverse depicts ornamented scroll of Kadambas within a dotted and linear circle.

Lord Hanuman was also depicts on the coins of Vijaynagar minted in the reign of Bukka Raya I and on the coinage of Princely State of Ratlam. Other than coins he is also depicted in the architecture of Indian temple and also on Pillars of the Ellora caves. There are many temples in South India which are devoted to this devotee of Lord Ram.
Hanuman is adorned with many different names illustrating his different personality traits. In Indian philosophy, he is the symbol of pure devotion, complete surrender, and absence of ego. This son of Kesari and Anjana and godson of lord Vayu (God of wind) also represent the ‘chitta' (consciousness), discretionary intelligence which is also considered the highest ‘tattva' (Principle of Nature).

The ancient and first superhero of Indian culture and philosophy dwarf all others by his intelligence, power, and strength of character.

Vijayanagar Silver Tara - Hanuman with dagger, Vijaynagara Empire, Harihara I(1336-1354 AD). Sri Hanuman.
Weight: 0.15g **Diameter:** 7mm

Gold Varaha Coin of Bukkaraya I of Vijayanagara Empire of Sangama Dynasty, Hanuman Moving to right with Knee

Silver Tara of Two Coins of Harihara I of Vijayanagara Empire.

Vijayanagara Empire, Harihara I (1336-1354 AD), Silver Tara(2) ,

Obv: *hanuman moving to right with a dagger in the rear*, Rev: a *single nagari letter "HA" is inscribed*, 0.15g, 0.12g, 6.35mm, 6.85mm,

Silver Tara Coin of Bukkaraya I of Vijayanagara Empire.

Vijaynagara Empire, Sangama Dynasty, Bukkaraya I (13 Century AD), **Silver Tara, Obv:** *lord Hanuman to right,* **Rev:** *Kannada letter* ***"Bu",*** **0.09g, 5.10mm, .**

VIJAYANAGARA

Sri hanuman

https://www.coinarchives.com/w/results.php?results=100&search=vijay anaga r

Vijayanagara Empire, Sangama Dynasty, Bukkaraya I (1354-1377 CE), Gold Varaha, Obv: Hanuman moving to right with knees slightly bent, left hand resting on left knee and right hand raised up, dagger in the rear, Rev: Kannada legend "Sri Vi/ra Bu ka/ra ya" in three lines, 3.38g, 11.62mm,

Issuer	Empire of Vijayanagara (Hindu Dynasties)
Type	Standard circulation coin
Years	1356-1377
Value	3 KASU
Currency	Jital

Composition	Copper
Weight	3.1 g
Diameter	14 mm
Thickness	3.1 mm
Shape	Round (irregular)
Orientation	Variable alignment ↺
Demonetized	Yes
Number	N# 208602

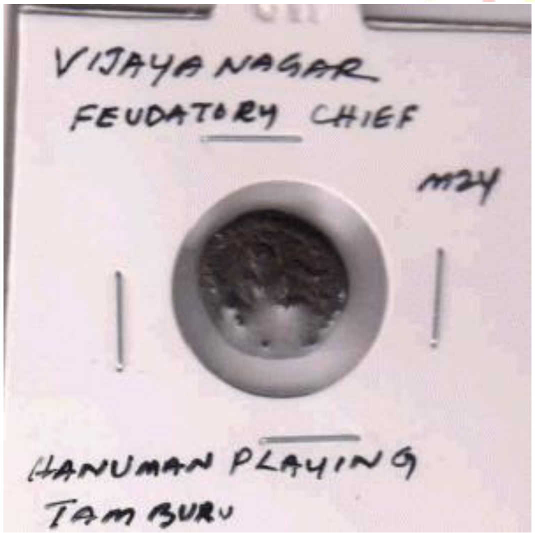

Vijaya Nagar – Feudatory chief , Hanuman playing tambura , copper coin M24
Vijaya Nagar / Mysore– Devaraya I 1406 – 22 ad Hanuman ,copper coin V49

జయ విరూపాక్ష, జయ శ్రీరామ, జయ అంజనీహనుమ,

శ్రీ హనుమంతులవారి జన్మ తిథి నిర్ణయ సంశోధనా పత్రము

శ్రీ హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థ క్షేత్ర ట్రస్ట్ (పంపాక్షేత్ర కిష్కింధా, కర్నాటక

: శ్రీహనుమంతులవారి జన్మ తిథి :

ప్రశ్న: శ్రీ హనుమంతులవారి జన్మ తిథి ఎప్పుడు ? దీనిని గురించి ఏ గ్రంథములో వివరించబడినది ?

సమాధానము : శ్రీ మద్ వాల్మీకి మహర్షులవారిచే రచింపబడిన "ఆనంద రామాయణము" నందు ఉన్నది,

ప్రశ్న: ప్రమాణ శ్లోకము తెలుపగలరు,
స : ఆనంద రామాయణము, లో సారకాండ యందు 13వ సర్గ లో 163వ శ్లోకము,

ప్రశ్న: ఏ సందర్భములో ? ఎవరు ఎవరికి చెబుతున్నది ?

స :, శ్రీ రాములవారు శ్రీ అగస్త్య మహర్షులవారిని శ్రీ హనుమంతుల జన్మ వృత్తాంతమును తెలియజేయవలెనని ప్రార్థించిన సమయమున శ్రీ రాములవారి కి శ్రీ అగస్త్య మహర్షులు శ్రీ హనుమంతులవారి జన్మ తిథి, సంపూర్ణ వృత్తాంతమును తెలియును,

ప్రశ్న: ఆ శ్లోకము ఏమిటి ?
స : శ్లో "మహా చైత్రీ పూర్ణిమాయాం సముత్పన్నో అఞ్జనీ (అంజనీ) సుత:" || శ్లో సా.13.163,

అనగా చైత్రమాసమునందు పూర్ణిమ యందు "చైత్ర శుక్ల పూర్ణిమ" తిథి యందు అంజనీసుతునిగా శ్రీ హనుమంతులవారు జన్మించెను,

శ్లోకము, గ్రంథము, ప్రమాణములు, శ్రీ మద్ వాల్మీకి మహర్షి విరచిత“ఆనంద రామాయణము”

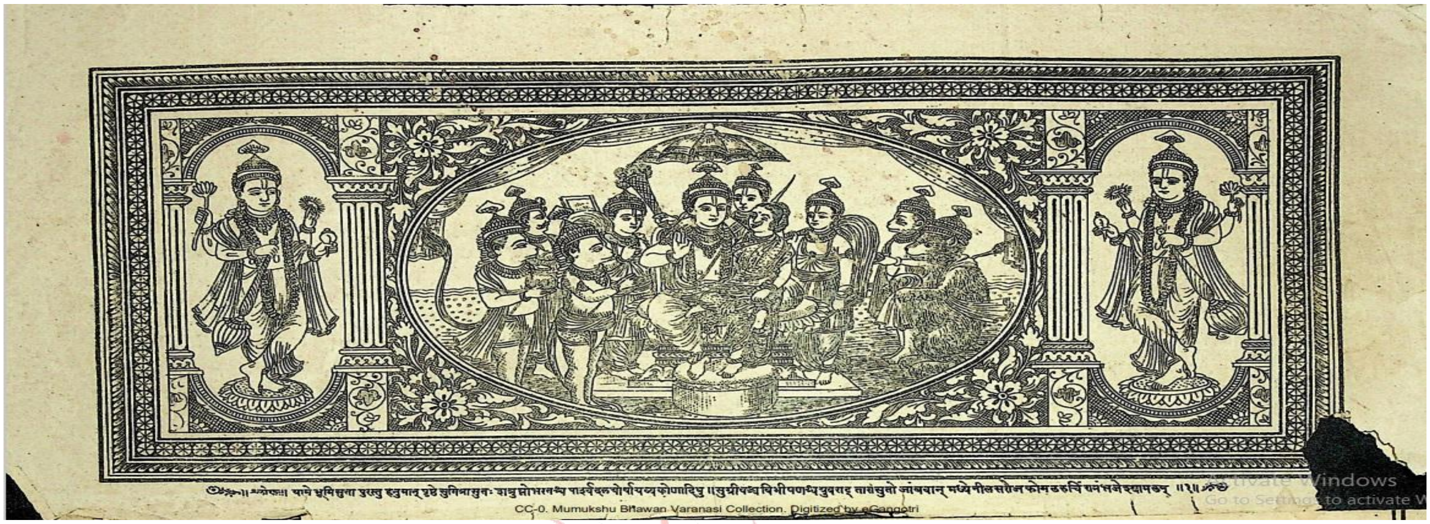

శ్రీ మద్ వాల్మీకి మహర్షి విరచిత“ఆనంద రామాయణము”

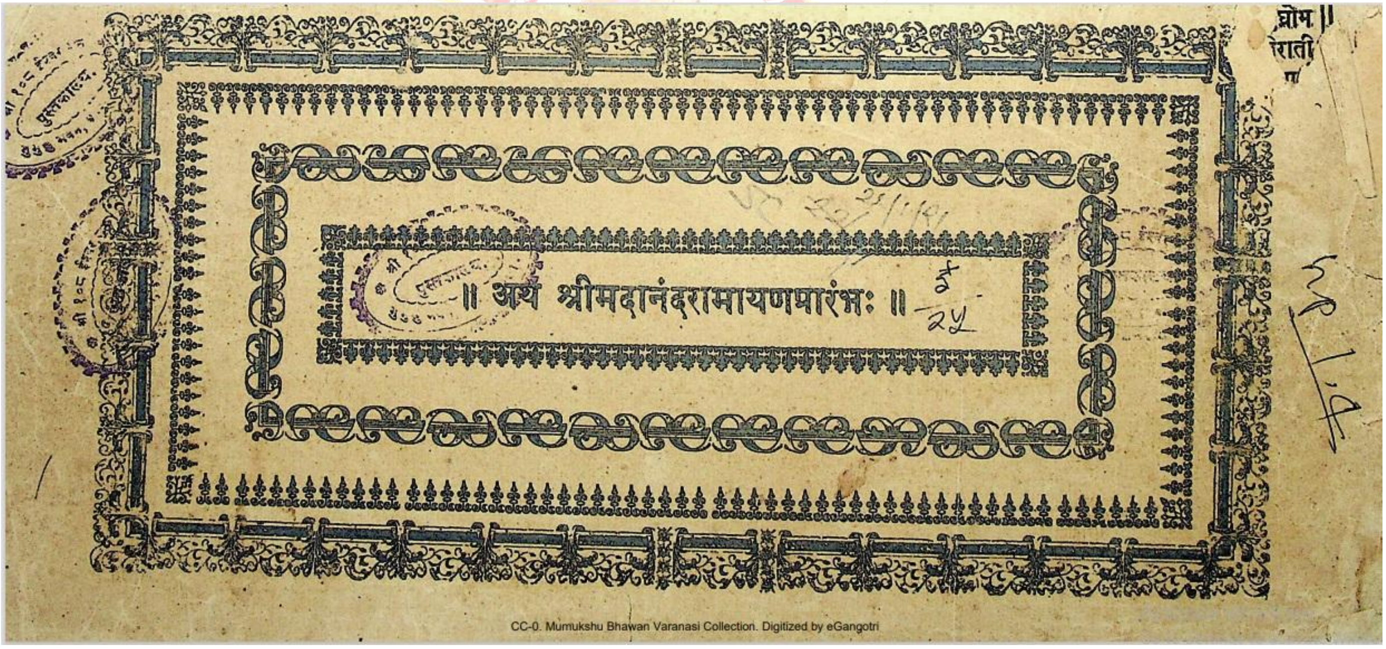

आ. रा. स्तासांस्त्रीणांदशाननः ॥ आश्चर्यमतुलंलब्ध्वाचिंतयामासदुर्मतिः १३६ विष्णुनायेहतायुद्धेतेषामेतादृशंबलम् ॥ तद्यंत्रनिहतस्तेनश्वेतद्वीपंव्रजाम्यहम् सा. कां.
१३७ मयिविष्णुर्यथाकुप्येत्तथाकार्यंकरोम्यहम् ॥ इतिनिश्चित्यवैदेहींजहाररावणोवनात् १३८ जानन्नेवंमहालक्ष्मींसजहाराऽवनीसुताम् ॥ मातृवत्पाल १
॥ ३७ ॥ यामासत्वत्तःकांक्षन्वधंनिजम् १३९ ॥ श्रीरामचंद्रउवाच ॥ वालिसुग्रीवयोर्जन्मश्रोतुमिच्छामित्वन्मुखात् ॥ रवींद्रौवानराकारौजज्ञातइतितच्छ्रुतम् १४०
॥ अगस्त्यउवाच ॥ मेरौस्वर्णमयेपूर्वंसभायांब्रह्मणःकदा ॥ नेत्राभ्यांपतितंदिव्यमानंदाश्रुजलंतदा ४१ तद्गृहीत्वाकरेब्रह्माध्यात्वाकिंचित्तदत्यजत् ॥ भूमौपतितमा
त्रेणतस्माज्जातोमहाकपिः ४२ तमाहद्रुहिणोवत्सत्वमत्रवससर्वदा ॥ एवंबहुतिथेकालेगतेऋक्षविरजाःसुधीः ४३ कदाचित्पर्यटन्मेरौफलमूलार्थमुद्यतः ॥ अपश्यद्दिव्य
सलिलांवापींमणिशिलाचिताम् ४४ पानीयंपातुमगमत्तत्रच्छायामयंकपिम् ॥ दृष्ट्वाप्रतिकपिंमत्वानिपपातजलांतरे ४५ तत्राऽदृष्ट्वाहरिंशीघ्रंबहिरुत्प्लुत्यसंययौ ॥ अ
पश्यत्सुंदरींनारीमात्मानंविस्मयंगतः ४६ ततोददर्शमघवासोऽत्यजद्वीर्यमुत्तमम् ॥ तामप्राप्यैवतद्वीर्यंवालदेशेऽपतद्भुवि ४७ वालीसमभवत्तत्रशक्रतुल्यपराक्रमः ॥
भानुरप्यागमत्तत्रतदानीमेवभामिनीम् ४८ दृष्ट्वाकामवशोभूत्वाग्रीवादेशेऽसृजन्महत् ॥ बीजंतस्यास्ततःसद्योसुग्रीवोबलवानभूत् ४९ पुत्रद्वयंसमादायगत्वासानिद्रि
ताक्वचित् ॥ प्रभातेपश्यदात्मानंपूर्ववद्वानराकृतिम् १५० तद्वृत्तंतुविधिःश्रुत्वाकिष्किंधाराज्यमुत्तमम् ॥ ददौसवानरेंद्रायपुत्राभ्यांतत्रसंस्थितः ५१ मृतेऋक्षेविरजस्या
भूद्वालीपुर्यांकपीश्वरः ॥ एवंतेकथितंरामयथापृष्टंत्वयामम ५२ ॥ श्रीरामचंद्रउवाच ॥ यदाऽसौवालिनाबंधुःकिष्किंधायाबहिष्कृतः ॥ तदातस्यैवसचिवःश्रीमान्पव
ननंदनः ५३ नवेदकिंबलंनैजंवालितुल्यपराक्रमः ॥ इतिरामवचःश्रुत्वापुनस्तंमुनिरब्रवीत् ५४ केसरीनामविख्यातःकपिरंजनपर्वते ॥ तस्यास्तांचशुभेपत्न्यौवान
र्यौविकदागिरौ ५५ प्लवंगस्यांजनीनाम्नीस्थितातावच्चखात्तदा ॥ पपातपायसमयःपिंडोगृध्रीमुखाद्भुवि ५६ यदानीतस्तुकैकेय्याकराद्गृध्र्याशुभःपुरा ॥ तंपिंडंभक्षया
मासवानरीह्यमृतोपमम् ५७ एतस्मिन्नंतरेतत्रमार्जारास्यासमागता ॥ पतिनासहितेतेद्वेक्रीडंत्यौवसनंतयोः ५८ अहरत्पवनोवेगाद्दृष्ट्वावायुस्तदूरवः ॥ अंजनींप्रा
र्थयामासतयाभोगंचकारसः ५९ तथैवप्रार्थयामासमार्जारास्यांसनिर्ऋतिः ॥ तयाऽकरोद्रतिंतत्रसोऽपिपर्वतमूर्द्धनि १६० तयोस्ताभ्यांसमुत्पन्नौवानर्यांमारुतात्म
जः ॥ मार्जार्याःसमभूद्धोरःपिशाचोघर्घरस्वनः ६१ चैत्रेमासिसितेपक्षेहरिदिन्यांमघाभिधे ॥ नक्षत्रेससमुत्पन्नोहनुमान्रिपुसूदनः ६२ महाचैत्रीपूर्णिमायांसमुत्पन्नो
ऽञ्जनीसुतः ॥ वदंतिकल्पभेदेनबुधाइत्यपिकेचन ६३ बालभावेऽपियःपूर्वंदृष्ट्वोद्यंतंविभावसुम् ॥ मत्वापक्वफलंचेतिजिघृक्षुर्लीलयोत्प्लुतः ६४ योजनानांपंचशतंवायु ॥ ३७ ॥
वेगेनमारुतिः ॥ राहुस्तस्मिन्दिनेदर्शेययौसूर्यंरघूत्तम ६५ तावदृष्ट्वाधर्तुकामंरवेरग्रेकपिंस्थितम् ॥ तदाराहुर्भयादेवरविमुक्त्वेंद्रमाययौ ६६ राहुःप्राहशचीनाथंतव
पीडांकरोम्यहम् ॥ दत्तःपूर्वंत्वयासूर्यःपीडांकर्तुंसुरेश्वर ६७ तत्रविघ्नंसमुत्पन्नंतत्त्वंशीघ्रंनिवारय ॥ तद्राहुवचनादिंद्रःसमारुह्यगजोपरि ६८ देवैर्युतोययौवेगाद्ददर्श

१ वायुस्तुदूरतःइतिपाठः । २ एकादश्यामित्यर्थः ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

శ్లోకం: "మహా చైత్రీ పూర్ణిమాయాం సముత్పన్నో అఙ్జనీ (అంజనీ) సుత:" ||
సా. కా - 13.163,

मंदिरमें प्रवेश १२१
हनुमान्‌का मैरावणकी पत्नीसे ऐरावण-मैरावण-के मरणका उपाय पूछना और उस नागकन्याका उन दोनोंकी मृत्युका उपाय बताना १२२
रामके द्वारा ऐरावण-मैरावणका वध १२४
उस नागकन्याको रामका वरदान, रावणका कुम्भकर्णको जगाना, रावणकी प्रेरणासे उसका समरभूमिमें जाना और रामके हाथों कुम्भकर्णका निधन १२५
मेघनादका निकुम्भिला देवीके मंदिरमें जाकर यज्ञ करना और हनुमान् तथा लक्ष्मण द्वारा यज्ञविध्वंस १२६
लक्ष्मण द्वारा मेघनादका वध १२७
सुलोचनाका सती होना १२८
रावणका सीताको रामका कटा हुआ नकली सिर दिखाना १२९
मन्दोदरीका रावणको समझाना और रावणका रामके समक्ष नकली सीताको काटना १३०
राम-रावणका भीषण युद्ध १३१
रामके हाथों रावणका वध १३२

द्वादश सर्ग

राम-सीताका मिलन १३३
रामकी अयोध्या लौटनेकी तैयारी और विभीषणके प्रश्न १३४
रामका त्रिजटाको वरदान १३५
रामका अवध-प्रस्थान, मार्गमें सम्पातीसे भेंट और रामका सीताको विविध दृश्य दिखाना १३६
उधर अवधि बीतते देखकर भरतका चितामें

त्रयोदश सर्ग

रामके यहाँ अगस्त्य आदि ऋषियोंका आगमन, रामका अगस्त्यसे मेघनादका वृत्तांत पूछना और उनका बताना १४६
रावण-कुम्भकर्ण आदिकी जन्मकथा १४७
माताकी आज्ञासे रावणका शिवलिंग लेने कैलाश जाना और अपने मस्तक काटकर शिवजीको प्रसन्न करना तथा वरदान पाना १४८
रावण कुम्भकर्ण-विभीषणका तप करके ब्रह्माको प्रसन्न करना और उनसे वरदान पाना १४९
रावणको कुबेरपुत्र नलकूबरका शाप, मेघनादका इन्द्रको पराजित करना और उसका इन्द्रजित् नाम पड़ना १५०
रावणका बालिसे लड़ने जाना और बालिका उसे अपनी काँखमें रख लेना १५१
रावणका वानरराज बालिसे युद्ध करने जाना और परास्त होना १५२
रावणका राजा अनरण्यसे युद्ध और उनका रावणको शाप १५३
रावण-सनत्कुमारका वार्तालाप, रावणकी श्वेतद्वीपयात्रा और वहाँकी स्त्रियोंके हाथों पिटना १५४
बालि-सुग्रीवकी जन्मकथा १५५
ब्रह्माका बालिको किष्किधाका राज्य देना और हनुमान्‌की जन्मकथा १५६
हनुमान्‌का सूर्यको निगलना, हनुमान्‌पर इन्द्रका वज्रप्रहार, पवनका कोप और हनुमान्‌को ब्रह्माका वरदान १५७
इन्द्रका राहुको सूर्य देना और हनुमान्‌को

श्रीहरिः

श्रीमदानन्दरामायणस्थविषयानुक्रमणिका

विषय — पृष्ठ

सारकाण्ड

प्रथम सर्ग

मङ्गलाचरण — १

रघुवंशकी संक्षिप्त वंशावली — २

रावणका ब्रह्मासे अपने मरणका हेतु पूछना, ब्रह्माका रामके हाथों रावणके मरणका भविष्य बतलाना और रावणका कौसल्याको सन्दूकमें बंद करके समुद्रनिवासी तिमिंगलको सौंपना — ३

महाराज दशरथके साथ कौसल्याका गांधर्व-विवाह — ४

दशरथजीका सुमित्रा-कैकेयीके साथ विवाह, महाराज दशरथका देव-दानवयुद्धमें जाना — ५

उस युद्धमें कैकेयीका रथकी टूटी धुरीमें अपना हाथ लगाकर राजा दशरथके प्राण बचाना, जिससे दशरथजीका कैकेयीको दो वरदान देना तथा अयोध्याको सकुशल लौटना — ६

राजा दशरथ द्वारा श्रवणका वध और श्रवणके अंधे माता-पिताका शाप देना — ७

ऋष्यश्रृङ्ग द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ सम्पन्न होना और अग्निका प्रकट होकर हवि देना — ७

द्वितीय सर्ग

पृथ्वीका दुःखित होकर देवताओंके पास जाना और सब देवताओंका क्षीरसागर जाकर विष्णुभगवान्‌की स्तुति करना और भगवान्‌की आकाशवाणी सुनना, राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्नका जन्म और उन पुत्रोंकी बाल-लीला — ८

गुरु वसिष्ठका रामादि चारों भाइयोंको शास्त्रीय शिक्षा देना — ९

तृतीय सर्ग

महामुनि विश्वामित्रका राजा दशरथकी सभामें जाकर यज्ञरक्षार्थ राम-लक्ष्मणको माँगना, मार्गमें विश्वामित्रका दोनों बालकोंको शस्त्रास्त्रकी शिक्षा देना और श्रीरामके हाथों ताड़कावध — १०

राम-लक्ष्मणको लेकर विश्वामित्रका जनकपुरको प्रस्थान और अहल्योद्धार — ११

रामके आगमनसे जनकपुरनिवासिनी ललनाओंका हर्षोल्लास — १३

राजा जनक द्वारा अपनी प्रतिज्ञाकी घोषणा — १४

रावण द्वारा धनुष उठानेका प्रयास और उसमें विफलता, सभामें रामका आगमन — १५

सीताका रामको देखना और मुग्ध होकर मन ही मन देवताओंसे प्रार्थना करना — १७

रामके हाथों शिवधनुष टूटना — १८

राजा जनकके आज्ञानुसार सीताका राजसभामें आना और रामके गलेमें वरमाला डालना — १९

राजा जनकका महाराज दशरथके पास निमंत्रण भेजना, रामादि चारों भ्राताओंके विवाहका निश्चय और सीताके जन्मका वृत्तान्त — २१

राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्नका क्रमशः सीता-उर्मिला-माण्डवी और श्रुतकीर्तिके साथ विवाह और एक मास बाद महाराज दशरथका अयोध्याको प्रस्थान — ३०

मार्गमें राम-परशुरामका साक्षात्कार — ३१

राम द्वारा परशुरामका गर्वमञ्जन और परशुराम-का रामको आत्मकथा सुनाना — ३२

महाराज दशरथका अयोध्यामें पहुँचना और उत्सव मनाना — ३३

चतुर्थ सर्ग

दीपावलीके अवसरपर पुनः राजा जनकका महाराज दशरथको बुलाना और तदनुसार उनका प्रस्थान — ३४

जनकपुरमें राजा दशरथका सत्कार और जनक-पुरसे लौटते समय रास्तेमें उनको बहुतेरे बैरी राजाओंका घेरना — ३५

रामका उन राजाओंके साथ घोर युद्ध और भरतका मूर्छित होना — ३६

रामके आज्ञानुसार लक्ष्मणका मुद्गल मुनिके आश्रममें सञ्जीवनी बूटी लेने जाना और आश्रमवासियों द्वारा उपस्थित की गयी

मृतेर्क्षविरजस्याभूद्वाली पुर्यां कपीश्वरः । एवं ते कथितं राम यथा पृष्टं त्वया मम ॥१५२॥

श्रीरामचन्द्र उवाच

यदाऽसौ वालिना बंधुः किष्किन्धाया बहिष्कृतः ।
तदा तस्यैव सचिवः श्रीमान्पवननंदनः ॥१५३॥

न वेद किं बलं नैजं वालितुल्यपराक्रमः । इति रामवचः श्रुत्वा पुनस्तं मुनिरब्रवीत् ॥१५४॥

अगस्तिरुवाच

केसरीनाम विख्यातः कपिरंजनपर्वते ।
तस्यास्तां च शुभे पत्न्यौ वानर्यविकटा गिरौ ॥१५५॥
प्लवंगस्याञ्जनीनाम्नी स्थिता तावच्च सा तदा ।
पपात पायसमयः पिंडो गृध्रीमुखाद्भुवि ॥१५६॥

यदा नीतस्तु कैकेय्या कराद्गृध्र्या शुभः पुरा । तं पिंडं भक्षयामास वानरी ह्यमृतोपमम् ॥१५७॥

एतस्मिन्नंतरे तत्र मार्जारास्या समागता । पतिना रहिते ते द्वे क्रीडंत्यौ वसनं तयोः ॥१५८॥

अहरत्पवनो वेगाद्दृष्ट्वा वायुस्तदूरवः ।
अंजनीं प्रार्थयामास तया भोगं चकार सः ॥१५९॥

तथैव प्रार्थयामास मार्जारास्यां स निर्ऋतिः । तयाऽकरोद्रतिं तत्र सोऽपि पर्वतमूर्द्धनि ॥१६०॥

तयोस्ताभ्यां समुत्पन्नो वानर्यां मारुतात्मजः ।
मार्जार्याः समभूद्घोरः पिशाचो घर्घरस्वनः ॥१६१॥

चैत्रे मासि सिते पक्षे हरिदिन्यां मघाऽभिधे । नक्षत्रे स समुत्पन्नो हनुमान् रिपुसूदनः ॥१६२॥

महाचैत्रीपूर्णिमायां समुत्पन्नोऽञ्जनीसुतः । वदन्ति कल्पभेदेन बुधा इत्यादि केचन ॥१६३॥

बालभावेऽपि यः पूर्वं दृष्ट्वोद्यंतं विभावसुम् ।
मत्वा पक्वफलं चेति जिघृक्षुर्लीलयोत्प्लुतः ॥१६४॥

यह वृत्तान्त सुनकर ब्रह्माजीने वानरेन्द्र ऋक्षविरजाको किष्किन्धा नगरीका उत्तम राज्य दे दिया। जहाँपर वह अपने दोनों पुत्रोंके साथ रहने लगा ॥ १५१ ॥ उस ऋक्षराजके मर जानेपर किष्किन्धापुरीका राजा कपीश्वर बाली हुआ। हे राम! जो आपने पूछा, मैंने वह सब कह दिया ॥ १५२ ॥ श्रीरामचन्द्र बोले— जब सुग्रीवको बालीने किष्किन्धासे बाहर निकाल दिया था, उस समय इनके मन्त्री ये वायुनन्दन हनुमान् भी साथ थे ॥ १५३ ॥ पर इनको बालीके समान अपना बल क्यों नहीं याद आया? रामके इस वचनको सुनकर मुनि अगस्त्य फिर कहने लगे—॥ १५४ ॥ अंजन पर्वतनिवासी केसरी नामसे विख्यात कपिकी दो वानरी स्त्रियें थीं ॥ १५५ ॥ किसी समय उस कपिकी अंजनी नामकी स्त्री वहाँ बैठी थी। इतनेमें आकाशसे किसी गृध्रीके मुखसे छूटकर पायसका एक पिण्ड आ गिरा ॥ १५६ ॥ यह पिंड वही था जो कि पहले कैकेयी-के हाथसे एक गृध्री छीन ले गयी थी। उस अमृततुल्य पिण्डको वानरीने खा लिया ॥ १५७ ॥ इतनेमें वहाँ वह दूसरी मार्जारास्या वानरी भी आ पहुँची। पतिकी अनुपस्थितिमें वे दोनों क्रीड़ा कर रही थीं। तभी उन दोनोंके वस्त्रोंको पवनने उड़ाकर ऊँचे उठाया तथा उनकी जाँघोंको देख लिया। पश्चात् अंजनीसे प्रार्थना करके उसके साथ वायुने भोग किया ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ उसी प्रकार निर्ऋतिने मार्जारास्यासे प्रार्थना करके पर्वतके शिखरपर उसके साथ रति की ॥ १६० ॥ उन दोनोंसे उन दोनोंमें—वानरीसे मारुतात्मज हनुमान् तथा मार्जारीसे घोर घर्घरस्वन पिशाच उत्पन्न हुआ ॥ १६१ ॥ चैत्र शुक्ल एकादशीके दिन मघानक्षत्रमें रिपुदमन हनुमान्-का जन्म हुआ था ॥ १६२ ॥ कुछ पण्डित कल्पभेदसे चैत्रकी पूर्णिमाके दिन हनुमान्का शुभ जन्म हुआ, ऐसा कहते हैं ॥ १६३ ॥ वे हनुमान् बाल्यकालमें ही सूर्यको देख तथा उन्हें पका फल समझकर उसको लेनेकी

अन्य अवलोकन ग्रंथ,

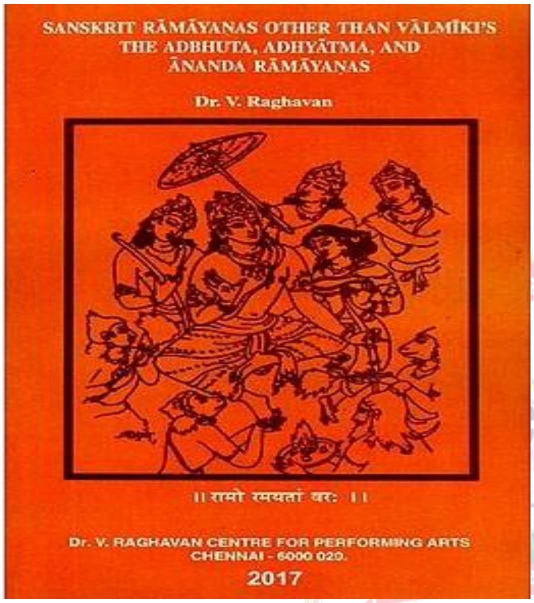

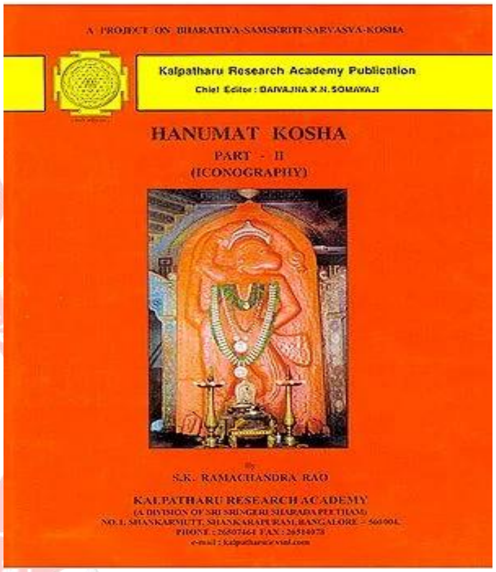

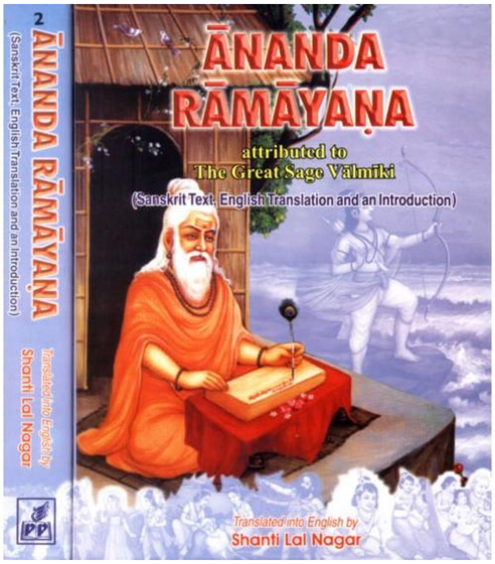

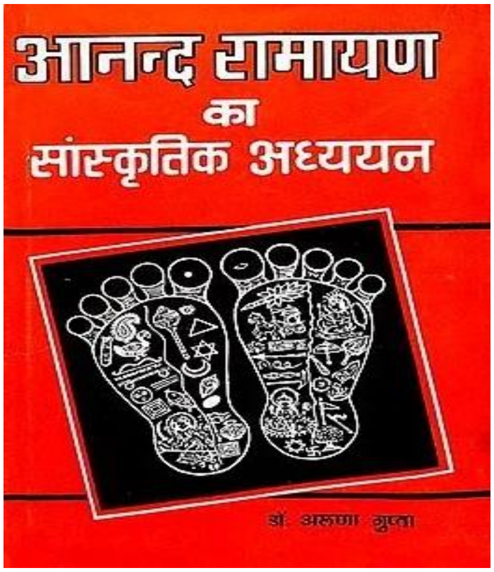

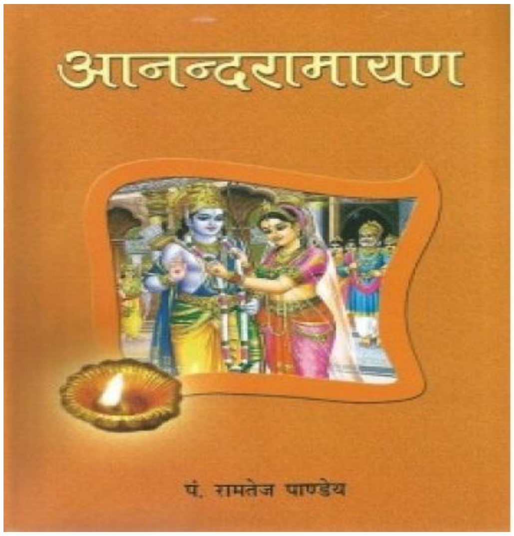
आनन्दरामायण
पं. रामतेज पाण्डेय

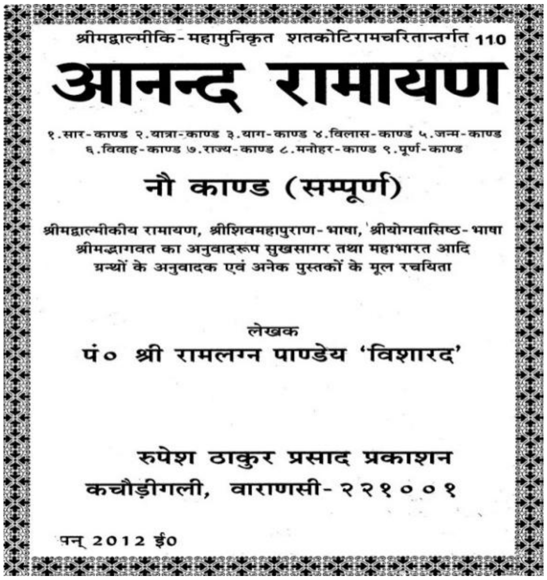
श्रीमद्वाल्मीकि-महामुनिकृत शतकोटिरामचरितान्तर्गत 110
आनन्द रामायण
१.सार-काण्ड २.यात्रा-काण्ड ३.याग-काण्ड ४.विलास-काण्ड ५.जन्म-काण्ड
६.विवाह-काण्ड ७.राज्य-काण्ड ८.मनोहर-काण्ड ९.पूर्ण-काण्ड
नौ काण्ड (सम्पूर्ण)
श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, श्रीशिवमहापुराण-भाषा, श्रीयोगवासिष्ठ-भाषा
श्रीमद्भागवत का अनुवादरूप सुखसागर तथा महाभारत आदि
ग्रन्थों के अनुवादक एवं अनेक पुस्तकों के मूल रचयिता
लेखक
पं० श्री रामलग्न पाण्डेय 'विशारद'
रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन
कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१
सन् 2012 ई०

॥ श्रीः ॥
चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
२६
वाल्मीकिरामायणान्तर्गतं
मूलरामायणम्
संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम्
नवीन पाठ्यक्रमानुसार लघु एवं अतिलघु
प्रश्नोत्तर सहित
डॉ. श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

ആനന്ദ
രാമായണം

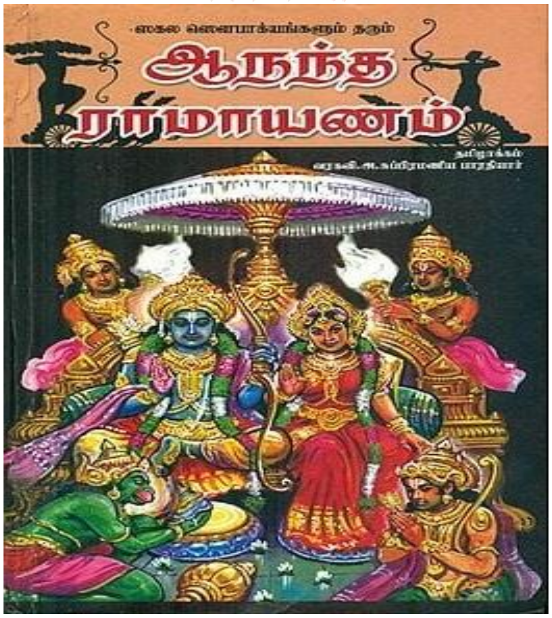
ஆநந்த
ராமாயணம்

ప్రశ్న - సమాధానములు

ప్రశ్న : మరి భారతదేశములో కొన్ని ప్రదేశములందు వీటికి భిన్నముగా ఆచరిస్తున్నారు కదా ?

స : కాల గతిలో అవన్నీ నూతనముగా ఆరంభించిన వే గాని, అవి ఏమీప్రమాణికములు కావు, కొంత మంది వైశాఖమని, ఇంకొకరు కార్తీకమని, ఇలా ఆంధ్రా, తమిళనాడు, కర్నాటకా, తెలంగాణా లలో వివిధములుగా ఆచరిస్తున్నారు, అదికూడా కొద్ది ప్రదేశముల యందు మాత్రమే, దేశములో సమస్త భక్తులు ఆచరిస్తూ వస్తున్నది "చైత్ర శుక్ల పూర్ణిమ", దీనికి భిన్నముగా ఈ కొద్ది మంది ఆచరించేవి ప్రమాణబద్ధము లేని ఆచరణ, శాస్త్ర సమ్మతము కాదు, ఇల్లగే కొన్ని ప్రదేశములలో శ్రీ హనుమద్ వ్రతమని, శ్రీ హనుమద్ విజయోత్సవమని వివిధ పేర్లతో నూతనముగా ఆరంభించినవి, ఈ మధ్యకాలములో ఇవన్నీ క్రొత్తగా ఆరంభింపబడినవే,

ప్రశ్న: మిగతావారు కూడా ఇలాగే శ్లోకాలు చూపిస్తున్నారు కదా ?,

స : శ్లోకాలు చూపించటము కాదు , శ్లోకాలు ఎవరైనా **వ్రాస్తారు** , శ్లోకాలు చూపించినంత మాత్రాన ప్రమాణములు కావు, మేము కూడా ఇప్పుడు రెండు శ్లోకాలు **వ్రాసి** చూపిస్తాము అవి ప్రమాణములు అవుతాయా ?అవ్వవు, అవి ఏ శ్లోకాలు ?, ఎవరు వ్రాసారు ? ఏ గ్రంథములోనివి ?, వాటి ప్రామణికత ఏమిటి, ? అని అనేక రకాలుగా పరీక్షించవలసి వస్తుంది కేవలము ఒక శ్లోకము చూపిస్తే సరిపోదు,

ప్రశ్న : ౧) "శ్రావణే మాసి నక్షత్రే శ్రవణే హరివాసరే", అని, ౨) కార్తీక కృష్ణ చతుర్దశి, 3) వైశాఖ బహుళ దశమి అని అంటున్నారు కదా మరి వీటి విషయము ఏమిటి ?

స : ఓహో ఇవిమాకు ఎప్పుడో తెలుసు, వీటీని ఎప్పుడో ఖండించటము, నిరాకరణ చేయటము జరిగినది, ఈ విషయము, ఇది తిరుపతి నకిలీ కమిటీవారు చెప్పేది,

ప్రశ్న: వివరముగా చెప్పగలరు,

స : ఇవి ప్రక్షిప్తములు, ఇవి పురాణాల నుంచి సేకరించాము అని చెప్పెదరు, తీరా అది ఏ పురాణము అని అడిగితే దానికి శ్రీ వేంకటాచల

మాహాత్మ్యము, అగస్త్య సంహితా అని అంటారు, కాని శ్రీ వేంకటాచల మాహాత్మ్యము ఒక సంకలన గ్రంథము, మరుయూ అగస్త్య సంహిత గ్రంథములో ఎక్కడా కార్తీక మాసము అనే శ్లోకము లేనే లేదు వీరు మేము అనేక పురాణములనుండి అక్కడ అక్కడ నుండి గ్రహించి వ్రాసినాము అందురు, మూలము ప్రమాణము ఎక్కడ ఉన్నది అని అడిగితె వీరి ఎవ్వరి దగ్గరా ప్రమాణము లేదు సమాధానము లేదు,

ప్రశ్న : అయితే ఇందులో ఉన్న తప్పు ఏమిటి, ?

సమాధానము : అందుకే ఎవ్వరు ఏమి చెబితే దానిని గ్రుడ్డిగా నమ్మ కూడదు,

ప్రశ్న : అంటే ? ఈ క్రింది పేజీ చూడండి

ఇక్కడ తిరుపతి కమిటీ వారు సంపూర్ణముగా అధ్యయనము చేసి నిర్ణయము చేసినాము అని పెద్ద పెద్ద పండితులు అందరూ కలసి తమిళనాడు గవర్నర్ ని కూడా మధ్యలో పెట్టుకొని “జగత్తు అంతటికి” విడుదల చేసినారు ఈ పుస్తకమును,

తీరా ఇందులో చూస్తే అన్నీ పచ్చి అపద్దాలే, జనాలని భక్తాదులని ఎరకముగా మోసము చేస్తున్నారో తెలుస్తుంది, ఉదా: శ్రీ హనుమంతులవారి తిథి గురించి , శ్రీ హనుమంతుల వారు ఏ తిథిలో పుట్టారు ?

ప్రశ్న : ఎలా ? ఈ 3 పేజీలుచూడండి

Fake Research By T.T.D

ప్రచక్రమే తపశ్చర్తుం శ్రీ వేఙ్కటగిరేస్తటే ।
ఆకాశగంగానికటే సిద్ధసంఘనిషేవితే ॥
వాయ్వాహారాన్ చ వాయుం వై సముద్దిశ్య సుదారుణమ్ ।
తపశ్చచార దాన్తేయం ప్రీణయన్తీ వ్రతైరిమమ్ ॥[1]

భావము – ఆ సోది పడతి చెప్పిన విధంగా శ్రీ వేంకటగిరికి వెళ్ళి ఆకాశగంగాతీర్థానికి దగ్గరలో అంజన కేవలం వాయుభక్షణం చేస్తూ వాయువును ఉద్దేశించి అతి తీవ్రమైన తపస్సును చేసింది. వాయుదేవుడు ఆమెను అనుగ్రహించి రోజుకొక పండును ఆమెకు ఇవ్వసాగాడు. ఒక నాడు అతడు శివతేజస్సుతో కూడిన ఫలాన్ని ఆమెకు ఇచ్చాడు. ఆ ఫలాన్ని తిన్న ఆమె గర్భాన్ని ధరించింది. దైవప్రసాదం వలన గర్భాన్ని ధరించిన ఆమెతో అశరీరవాణి "శివుని తేజస్సుతో నీకు కలుగబోవు పుత్రుడు లోకోత్తరశక్తిసంపన్నుడు, భవిష్యత్తులో లోకకంటకుడు, లంకాధిపతి అయిన రావణుడను రాక్షస రాజును సంహరించుటకై విష్ణువు శ్రీరామచంద్రునిగా తరించినప్పుడు రామసహాయకునిగా నీపుత్రుడు ఖ్యాతిని గడిస్తాడు అని చెప్పింది.

తతో వై దశమే మాసి సంప్రాప్తే నళినేక్షణా ।
అసూత పుత్రం బలినముదయత్యహిమత్విషి ॥
శ్రావణే మాసి నక్షత్రే శ్రవణే హరివాసరే ।
కుండలోద్భాసిగణ్డాన్తముపవీతినముజ్జ్వలమ్ ॥
కౌపీనోద్భాసితం చైవ దీప్యమానమివ శ్రియా ।
బిభ్రాణం వానరాణాం వై రూపమత్యద్భుతం మహత్ ॥[2]

భావము – అక్కడి నుండి అంజనాదేవి పదవనెలలో శ్రావణమాసంలో శ్రవణనక్షత్రంలో ద్వాదశీ ప్రథమపాదంలో (ద్వాదశీ ప్రథమ పాదానికి హరివాసరమని పేరు)[3], సూర్యోదయ ఘడియలలో మహాబలవంతుడైన పుత్రునికి జన్మనిచ్చింది. చక్కని దివ్యకుండలాలతో, ప్రకాశించు

---

1. బ్రహ్మాండపురాణం, వేంకటాచలమాహాత్మ్యం, చతుర్థభాగం, తీర్థఖండం – 5,18–20.
2. బ్రహ్మాండపురాణం, వేంకటాచలమాహాత్మ్యం, చతుర్థభాగం, తీర్థఖండం – 5, 42–44.
3. హనుమంతుడు జన్మించిన తిథ్యాదివిషయాల్లో అభిప్రాయ భేదాలున్నాయి –
   (అ) కార్తికకృష్ణ చతుర్దశీ, మంగళవారం, స్వాతినక్షత్రం, మేషలగ్నంలో జన్మించాడని "అగస్త్య సంహిత".
   (ఆ) చైత్రే మాసి సితే పక్షే హరిదిన్యాం మఖాభిధే. నక్షత్రే సముత్పన్నో హనుమాన్ రిపుసూదనః. (ఆనందరామాయణం, సారకాండం 13, 162–163)
   (ఇ) చైత్రే మాసి సితేపక్షే పౌర్ణమాస్యాం కుజేஉహని (తంత్రసారః)

టి.టి.డి వారి సంశోధనా పుస్తకము మొదటిది **13-04 -2021**

శ్రీ వేంకటగిరౌ సప్తసాహస్రం వత్సరాన్పునః,
తపః కురు తతః పుత్రమవాప్స్యసి సుశోభనమ్. [1]

శ్రీ వేంకటగిరిపై ఏడు వేల సంవత్సరాలు తపస్సు చెయ్యి. నువ్వు గొప్ప పుత్రుని పొందుతావు – అని చెప్పి ఆమె వెళ్ళిపోయింది.

ఇత్యుక్త్వా సా నిమిత్తజ్ఞా యథా గతమథో యయౌ,
అంజనా చింతయంతీ తద్వాక్యం తస్యా మనోహరమ్. [2]

ఆ సోది పడతి చెప్పిన విధంగా అంజనాదేవి సోదమ్మ చెప్పిన మనోహరమైన ఆ మాటని స్మరిస్తూ

ప్రచక్రమే తపశ్చర్తుం శ్రీ వేంకటగిరేస్తటే,
ఆకాశగంగానికటే సిద్ధసంఘనిషేవితే. [3]

శ్రీ వేంకటగిరికి వెళ్ళిన అంజన ఆకాశగంగాతీర్థానికి దగ్గరలో సిద్ధపురుషులచే సేవించబడే ప్రదేశంలో తపస్సు చేయడానికి ఉపక్రమించింది.

వాయ్వాహారాన్ చ వాయుం వై సముద్దిశ్య సుదారుణమ్,
తపశ్చచార దాన్తేయం ప్రీణయన్తీ వ్రతైరిమమ్. [4]

అంజన కేవలం వాయుభక్షణం చేస్తూ వాయువును ఉద్దేశించి అతి తీవ్రమైన తపస్సును చేసింది.

వాయుదేవుడు ఆమెను అనుగ్రహించి రోజుకొక పండును ఆమెకు ఇవ్వసాగాడు. ఒక నాడు అతడు శివతేజస్సుతో కూడిన ఫలాన్ని ఆమెకు ఇచ్చాడు. ఆ ఫలాన్ని తిన్న ఆమె గర్భాన్ని ధరించింది. దైవప్రసాదం వలన గర్భాన్ని ధరించిన ఆమెతో అశరీరవాణి "శివుని తేజస్సుతో నీకు కలుగబోవు పుత్రుడు లోకోత్తరశక్తిసంపన్నుడు, భవిష్యత్తులో లోకకంటకుడు, లంకాధిపతి అయిన రావణుడను రాక్షస రాజును సంహరించటానికై విష్ణువు శ్రీరామచంద్రునిగా అవతరించినప్పుడు రామసహాయకునిగా నీపుత్రుడు ఖ్యాతిని గడిస్తాడు" అని చెప్పింది.

తతో వై దశమే మాసి సంప్రాప్తే నళినేక్షణా,
అసూత పుత్రం బలినముదయత్యహిమత్విషి. [5]

అలా వాయుదేవుని నుండి పుత్రసంతానవరం పొందిన పిమ్మట అంజనాదేవి పదవనెలలో బలవంతుడైన పుత్రుడికి జన్మనిచ్చింది.

శ్రావణే మాసి నక్షత్రే శ్రవణే హరివాసరే,
కుండలోద్భాసిగండాన్తముపవీతినముజ్జ్వలమ్. [6]

---

1. శ్రీవేంకటాచలమాహాత్మ్యం (బ్రహ్మాండపురాణ తీర్థఖండాంతర్గతం) –5–17) ప్రథమభాగం, పుట – 329, తి.తి.దే. ప్రచురణ
2–4. శ్రీవేంకటాచలమాహాత్మ్యం (బ్రహ్మాండపురాణ తీర్థఖండాంతర్గతం –5–18–20) ప్రథమభాగం, పుట – 329, తి.తి.దే. ప్రచురణ
5–6. శ్రీవేంకటాచలమాహాత్మ్యం (బ్రహ్మాండపురాణ తీర్థఖండాంతర్గతం –5–42–45) ప్రథమభాగం, పుట – 331, తి.తి.దే. ప్రచురణ

టి.టి.డి వారి సంశోధనా పుస్తకము మూడవది (**16-02-2022**) - 82 వ పేజి

కౌపీనోద్భాసితం చైవ దీప్యమానమివ శ్రియా,
బిభ్రాణం వానరాణాం వై రూపమత్యద్భుతం మహత్.
రక్తాస్యపుచ్ఛమూలం తు సువర్ణసదృశద్యుతిమ్,[1]

శ్రవణానక్షత్రయుక్త హరివాసరాన సూర్యోదయ ఘడియలలో మహాబలవంతుడైన పుత్రునికి జన్మనిచ్చింది. చక్కని దివ్యకుండలాలతో, ప్రకాశించు చెక్కిళ్ళతో, ఉపవీతాన్ని ధరించినవాడై, చిన్న కౌపీనంతో ప్రకాశిస్తున్న ఆ బాలుడు అద్భుతమైన వానరరూపాన్ని ధరించి ఉన్నాడు. ఎర్రని ముఖం, తోక చివర్లలో బంగారు కాంతితో ప్రకాశిస్తున్నాడు.

వైశాఖబహుళ దశమి రోజు శ్రీహనుమజ్జనన సమయం, అందువల్ల ఆ సమయాన తిరుమలలో హనుమత్ పూజను చేస్తున్నారు. శ్రీ హనుమజ్జననం వైశాఖబహుళ దశమి శనివారం పూర్వాభాద్రనక్షత్రాన అని కొందరు ప్రయోగగ్రంథకారులు అభిప్రాయపడుతున్నారు. మూలానక్షత్రాన అని జ్యోతిశ్శాస్త్రం, అనూరాధ నక్షత్రాన అని పాంచరాత్రాగమశాస్త్రం ప్రబోధిస్తున్నాయి. కాని మాసాదులను వివరించటం లేదు.[2]

ప్రతిసంవత్సరం వైశాఖబహుళ దశమినాడు తిరుమల క్షేత్రంలో హనుమజ్జయంతి వేడుకలు ఘనంగా జరుగుతాయి.[3]

బాలహనుమ సూర్యుని మ్రింగడానికి ఆకాశంపైకి ఎగురుట

అతోఽయం జాతమాత్రోఽపి నితరాం తు బుభుక్షితః.
ఉదయాచలసంరూఢం దదర్శ రవిమణ్డలమ్,
నితాంతరక్తవర్ణేన ఫలబుద్ధిరభూత్తదా.[4]
ఫలమిత్యేవ మన్వానో రవిం భక్షితుముద్యతః,
గ్రహీష్యామీతి నిశ్చిత్య శ్రీవేంకటగిరేస్తటాత్.[5]

పుడుతూనే గొప్ప ఆకలితో ఉదయపర్వతం మీద ఉన్న సూర్యుని ఎర్రని పండుగా భావించి తినడం కోసం ఆయన శ్రీ వేంకటగిరినుంచి

ఉదతిష్ఠన్మహావేగాదుదయాచలశేఖరమ్,
గ్రహీతుముద్యతే తస్మిన్ బింబం సూర్యస్య తద్బలాత్.[6]

సూర్యుని పట్టుకోవడం కోసం ఉదయగిరి వైపుకు ఎగిరాడు. ఆ సూర్యబింబాన్ని పట్టుకోవడానికి ఉద్యుక్తుడయ్యాడు.

హాహాకృతమభూత్సర్వం జగత్స్థావరజంగమమ్,
తతః చతుర్ముఖో బ్రహ్మా స్వయమాగత్య వేగతః.[7]

1. శ్రీవేంకటాచలమాహాత్మ్యం (బ్రహ్మాండపురాణ తీర్థఖండాంతర్గతం -5-42-45) ప్రథమభాగం, పుట - 331, తి.తి.దే. ప్రచురణ
2. శ్రీవేంకటేశ్వరవైభవము, పండిత వేదాంతం జగన్నాథాచార్యులు, పుట - 195
3. శ్రీనివాసవైభవం - జూలకంటి బాలసుబ్రహ్మణ్యం, పుట - 225
4,5. శ్రీవేంకటాచలమాహాత్మ్యం (బ్రహ్మాండపురాణ తీర్థఖండాంతర్గతం -5-45-49) ప్రథమభాగం, పుట - 331, తి.తి.దే. ప్రచురణ
6,7. శ్రీవేంకటాచలమాహాత్మ్యం (బ్రహ్మాండపురాణ తీర్థఖండాంతర్గతం -5-64-67) ప్రథమభాగం, పుట - 333, తి.తి.దే. ప్రచురణ

టి.టి.డి వారి సంశోధనా పుస్తకము మూడవది (**16-02-2022)** - 83 వ పేజి

సమా : వీరు బ్రహ్మాండపురాణము తీర్థఖండము లోనిది అంటారు అసలు భారతదేశము అంతా అన్ని పురాతన గ్రంథాలయాలలో ఉన్న "బ్రహ్మాండపురాణము" పుస్తకములు అవలోకనము చేసిన అసలు ఈ ఖండమే ఎక్కడా లేదు, కేవలము టి.టి.డి వారు మాదగ్గర ఉన్నదని చెబుతారు దానిని అవలోకనము చేసిన అది కూడా శుద్ధ తప్పు ఎందుకనగా

స : ఇప్పుడు చూడండి, వీరు చెప్పే శ్లోకములో "**శ్రావణే మాసి నక్షత్రే శ్రవణే హరివాసరే**" అని, అంటారు ఇది సంపూర్ణముగా అసంబద్ధము, ఎవరిచేతనో ఈ వేంకటాచల మాహాత్మ్యము అను సంకలన గ్రంథములోకి మధ్య లో చేర్చబడినది,

ప్రశ్న: ఈ శ్లోకములో తప్పు ఏమిటి,

స: జ్యోతీష్య సిద్ధాంతములో కనీస పరిజ్ఞానము ఉన్నవారిని అడిగినా చెబుతారు, అసలు ఈ శ్లోకము, దీనిలో చెప్పబడిన విషయము శుద్ధ తప్పు అని, ఇది జ్యోతీష్య సిద్ధాంతమునకే విరుద్ధము,

ఇక్కడ **"హరి"**వాసరే అనగా **"ఏకాదశి"** అని అర్థము,

ప్రమాణము : శబ్దకల్పద్రుమ : శబ్ద: హరివాసరం , లిఙ్గం క్లీ, - (हरेर्वासरम् ।) श्रीहरेर्द्दिनम् । तत्तु एकादशीद्वादशीतिथिरूपम् । यथा -- " एकादशी द्वादशी च प्रोक्ता श्रीचक्रपाणिनः ॥ " एकादशीमुपोस्यैव द्वादशीं समुपोषयेत् । न चात्र विधिलोपः स्यादुभयोर्देवता हरिः ॥ " इति च तिथ्यादितत्त्वम् ॥ अपि च । " यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यादिकानि च । अन्नमाश्रित्य सर्व्वाणि तिष्ठन्ति हरिवासरे ॥ अघं स केवलं भुङ्क्ते यो भुङ्क्ते हरिवासरे,

శ్రావణమాసములో ఏకాదశి తిథి యందు శ్రవణా నక్షత్రము వస్తుందా ? రాదు,

కారణము ? అది పౌర్ణమి నాడే వస్తుంది, కనుక ఈ శ్లోకము తప్పు ఇది సిద్ధంతమునకే విరుద్ధము, ఇలాంటి ప్రక్షిప్త శ్లోకాలు ఎన్నో ఉన్నాయి, ఇలా తప్పుడు శ్లోకాలతో ఎదో కొంత కాలము ఎవ్వరికీ తెలియనంత కాలము జరిగిపోవచ్చు, కాని ఎప్పుడైతే ప్రమాణ బద్ధముగా వివిధ ప్రమాణములతో

పరిశీలన చేయబడుతుందో, ప్రశ్నించటము ఆరంభము అవుతుందో, అప్పుడు ఇవన్నీ అప్రమాణములు అని తెలియును, తత్క్షణమే వాటిని నిషేధించవలెను,

ప్రశ్న: మరి రెండవది ? " కార్తీక కృష్ణ చతుర్దశి" ?

స : అసలు అగస్త్య సంహితకి సంబంధించిన మూల ప్రతులు అన్నీ సంస్కృతము తో బాటు పాండు లిపిలో ఉన్న గ్రంథములను కూడా పరిశీలన చేస్తే అసలు ఎక్కడ చూసినా ఈ శ్లోకము గాని కార్తిక విషయము గాని లేదు ఇదికూడా అప్రమాణమే,

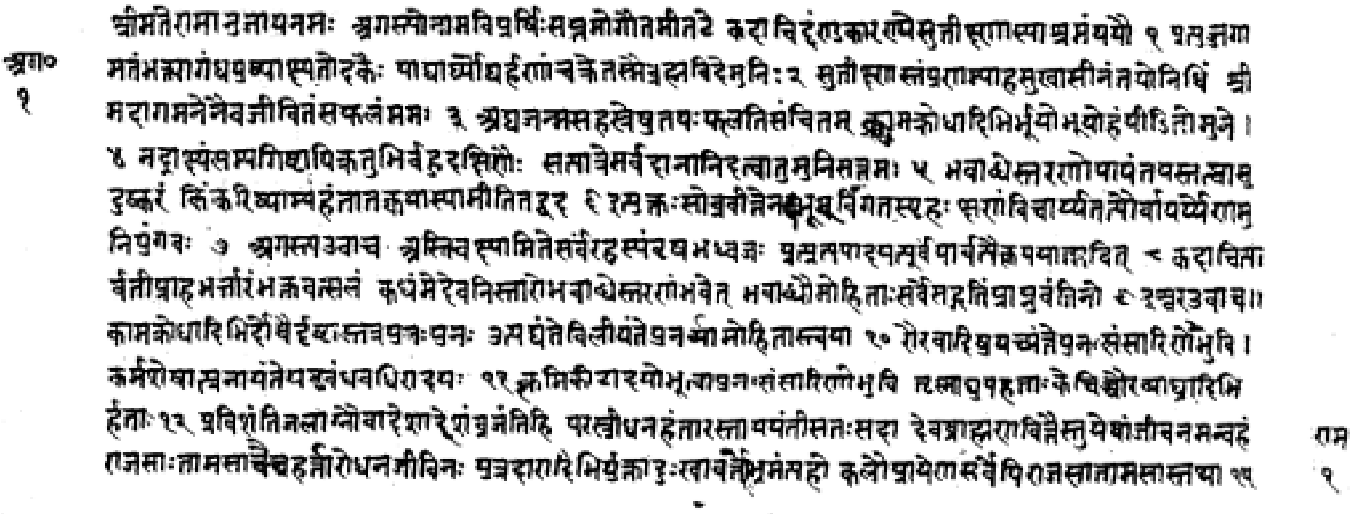

पाण्डुलिपि 'क' का प्रथम पृष्ठ

అగస్త్య సంహిత – పురాతన పాండులిపి

పురాతన అగస్త్య సంహితా సంస్కృత ,పాండు లిపి, ఆధాఅరముగా ముద్రణ - **అగస్త్య సంహితా" గ్రంధములు**

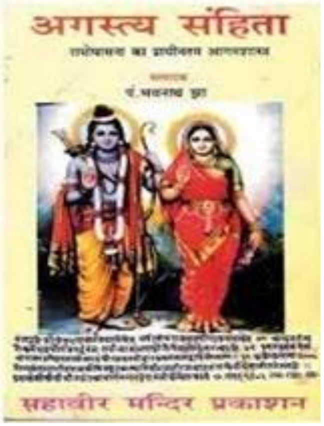

ఈ ఏ అగస్త్య సంహితా పుస్తకముల యందు ఈ పై శ్లోకము లేనే లేదు,

ప్రశ్న : మరి తిరుపతి వారు పెద్ద పెద్ద పండితులు, అందరూ కలిసి 4 నెలల బాటు ఎంతో పెద్ద సంశోధనము చేసినాము అని విశేషముగా సభలు, పెద్ద పెద్ద వార్తా పత్ర, మాధ్యములలో ప్రపంచమంతా మేము శ్రీ హనుమంతుల వారిపై సంశోధనము చేసినాము అని చాలాప్రచారము చేసినారు కదా ? వారు ఈ తిథి గురుంచి ఏమీ చెప్పలేదా,

స: తిరుపతి వారు వేసినదే ఒక నకిలీ కమిటీ , వారు చెప్పేవన్నీ శుద్ధ తప్పులు, అబద్ధాలు, చివ్వరికి ఎంత పరిస్థితి తెచుకున్నారంటే చివ్వరికి నలికీ శ్లోకములు తో నకిలీ సంశోధనలు వీటిని హిందూ ధర్మాచార్యులు ఒప్పుకోక పోతే చివ్వరికి నకిలీ పీఠాధిపతులు తో పూజలు,

మొట్టమొదట తిరుపతి కమిటీయే ఒక నకిలీ కమిటీ దానికి ఏవిధమైన గుర్తింపు లేదు అసలు రాజ్యాంగము ప్రకారము కానీ టి.టి.డి పరిపాలనా నియమాలను అనుసరించి అసలు ఒక కమిటీ వేయటము, అర్ధము లేని నిర్ణయాలు ప్రకటించటము ఈరకముగా చేయటానికి వీరికి అధికారమే లేదు, కానీ ఇదంతా కావాలని బలవంతముగా నకిలీ పత్రాలతో చేసినది వీటియందు ఏమీ సత్యాంశము లేదు ఇంకా చివ్వరకి వీళ్ళని విరోధించిన శ్రీ హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థ క్షేత్ర ట్రస్ట్ పంపాక్షేత్ర గోవిందానంద సరస్వతి స్వామివారు టి.టి.డి కమిటీ ని ఒప్పుకున్నారని ఒక ఫేక్ వీడియో కూడా తయారుచేసుకున్నారు ఇది వీరి అధర్మ కార్యం ఆతరువాత టి.టి.డి నకిలీ కమిటీకి పరిపాలనా అధికారులకు హైకోర్ట్ లో కూడా ముఖ భంగము ఏర్పడినది,

భయట ఎవ్వరికైనా అబద్ధములు చెప్పి మోసము చేయవచ్చు <u>కానీ కోర్ట్ లో అబద్ధాలు చెప్పలేరుకదా చివ్వరికి టి.టి.డి వారు కోర్టుకు సమర్పించిన అఫిడబిట్ లో తాము చేసిన పనికి వివరణ ఇస్తూ మూల ప్రమాణములు గురించి మేము అడిగిన ప్రశ్నకు సమాధానము ఇస్తూ చెబుతూ " శ్రీ హనుమంతులవారి విషయములో మేము చూపించే వాటికి, వాటి మూల ప్రమాణములు మావద్ద లేవు అనుకోకుండగా అవి కాలగర్భములో కలిసిపోయినవి</u> అని, వీటికి ఎ ఇలా అని వీటికి ఎటువంటి ప్రమాణము లేదని వాళ్ళే ఒప్పుకున్నారు, బయట చివ్వరికి వాళ్ళ పరువు పోతుందని, మళ్ళా ఇంకొక నాటకము మేము అనుకుంటున్నాము అని, మేము చెప్పే విషయాలను భక్తులను, సమాజాన్ని, ప్రజలను నమ్మ మని

మేము ఏమీ చెప్పటము లేదు, కోరటములేదు, అని, మరి ఇప్పటివరకూ ఇన్ని తతంగాలు చేసి ఇన్ని సభలు పెట్టి, ఇన్ని నకిలీ అంతర్జాతీయ సెమినార్ లు పెట్టి, ఏదో చేద్దామని చివ్వరకు సమాజములో భక్తులను, అందరిని గందరగోళా నికి బలి చేసి చివ్వరికి తప్పును ఒప్పుకొని తిరుపతికే చెడ్డపేరు తెచ్చే స్థాయిలో ఈ నకిలీ కమిటీ నకిలీ పండితులు తమ పరువును పోగొట్టుకున్నారు, తనదికాని పనిలో తలదూర్చి చేతులు అంటించుకున్నారు, శ్రీ హనుమంతుల వారి జన్మ స్థల విషయములో నకిలీ కమిటీ, నకిలీ పుస్తకములు ముద్రణ, నకిలీ సంశోధన, శ్రీ హనుమంతులవారి జన్మ స్థళము తిరుపతి అంటూ హంగామా చేసి చివ్వరికి అబాసుపాలు కావలసి వచ్చినది,

అదే సమయములో వారు పెద్ధ పెద్ధ పండితుల తో చేసిన నకిలీ సంశోధనముల లో

శ్రీ హనుమంతులవారి జన్మతిథి గురించి కూడా **వ్రాసారు**, అందులో ఈ శ్లోకము

ఉదహరించినారు, దీనిగురించి దీనిపై వారినే సమాధానము ఇవ్వండి అని అడిగితే , సమాధానము లేదు, , ఇంకా విచిత్రము వీరు **వ్రాసిన** తిథులు వీరికే

అర్ధమవ్వక అగమ్య గోచర స్థితిలో ఉండిపోయారు,

ఇంకా విచిత్రము ఇంతా కష్టపడిచేసిన నకిలీ రీసర్చ్ లో నాలుగు తిథులు చెప్పారు, విచిత్రమేమిటంటే చివ్వరికి వారు ఈ నాలుగూ వదిలివేసి మరలా ఇంకో కొత్త తిథిని పట్టుకు వచ్చారు,

అందుకే వీరిని నకిలీ కమిటీగా నిర్ధారణ చేయటము జరిగినది, చెప్పేది ఒకటి, **వ్రాసేది** ఇంకొకటి, చివ్వరకి ఆచరించేది మరొకటి,

ప్రశ్న : అంటే ?

స : "వైశాఖ మాసంలో కృష్ణ పక్షంలో పదవరోజు అని ఇదొక కొత్త నాటకము

ప్రశ్న : ఆ మేమూ టీవీ లో చూసాము , అప్పటివరకూ వివిధ తిథులు అన్నారు మరి అకస్మాత్తుగా వాటిని అన్నింటినీ కాదని మార్చేసి మరలా కొత్తది ఎందుకు చేసారు ?

స: అందుకే అన్నాము వీళ్ళు చెప్పేది ఒకటి, వ్రాసేది ఇంకకటి చివ్వరకి చేసేది మరొకటి

ప్ర: ఈ వైశాఖ మాసము ఎక్కడనుండి వచ్చినది, ?

స : ఇది కూడా అప్రమాణమే దీనికి పరాశరస్మృతి అని ఎవేవో కథలు చెబుతారు,

అసలు "పరాశర సంహితా" గ్రంథము వివరము సత్యాసత్యములు ఏమిటి అని విచారణ చేస్తే దీని గురించి పూజ్య జగద్గురువులను ఇతర సాంప్రదాయ ఆచార్యులను ఆశ్రయించి చర్చ చేస్తే ఇదికూడా సంపూర్ణముగా అప్రమాణముగా తేలినది వివేకచూడామణి అని అన్నవెంటనే అందరికీ తెలుసును, అటులనే సాక్షాత్ జగద్గురువులే అనిరి " ఇదేమిటి ఈ గ్రంథము ఎక్కడ నుంచి వచ్చినది అని" సంపూర్ణ భారత దేశములో ఎవ్వరికీ తెలియదు దీనితో బాటు ఈ ఆంధ్ర ప్రంతములో ఇంకొక అవైదిక ఆచరణ భారత దేశములో వైదిక పరంపరానుగ ఆచార్యులు అందరూ శ్రీ హనుమంతులవారి జన్మతిథిని " చైత్రము నందే" ఆచరించుచున్నారు, దినితో బాటు ఆంధ్ర దేశములో ఇంకొక అవైదిక ఆచరణ

ప్రశ్న : ఏమిటది ?

స: శ్రీ హనుమంతుల వారి వివాహము, ఇది అత్యంత దుర్మార్గము, పెద్ద పెద్ద పండితులు కూడా విచక్షణ లేకుండా అది ప్రమాణమా అప్రమాణమా అని అలోచించకుండగా సన్మానాలకి, మెప్పుకూ, ప్రచారాలకి, ఎడు పడితే వాడు, ఏది పడితే అది ప్రవచనాలు చెప్పటము మొదలు పెట్టారు, కొంతమంది అన్నదానం చిదంబర శాస్త్రి, స్వర్గీయ మురళీధర శర్వ వంటివారు వారి అనుయాయుల తో ఆంధ్ర లో ఈ విషయమై నకిలీ పి.హెచ్.డి. లు, నకిలీ పుస్తకాలు ఎవ్వరికి ఇష్టము వచ్చినట్లు వారు ప్రచారము చేసుకొనిరి, ఇవన్నీ చివ్వరకు అసత్యములు అప్రమాణములు అని తేలినవి,

శ్రీ హనుమంతులవారి జన్మ విషయములో తప్పుడు ప్రచారము చేస్తున్న కొన్ని అప్రమాణ, గ్రంథములు ,

Beware of these Fake books on Sri Hanuman' history in the name of Puranas, Samhitas, P.hd and other Research Works

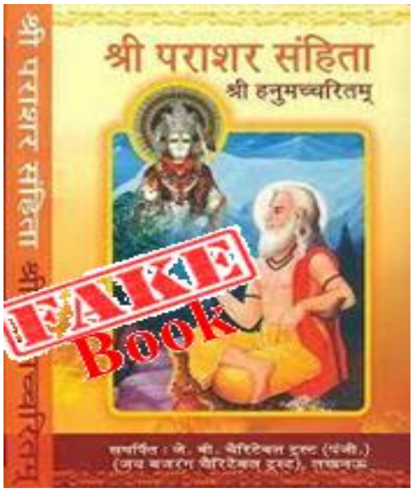

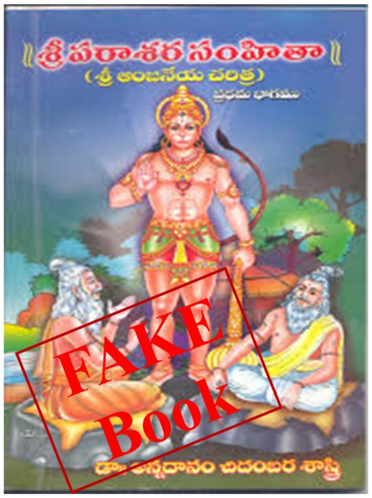

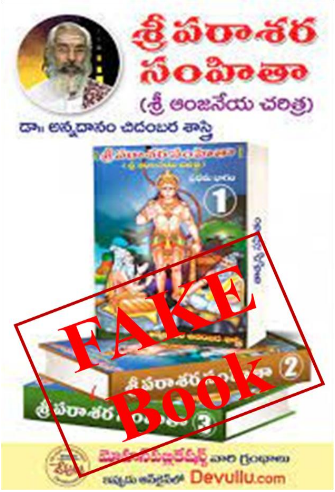

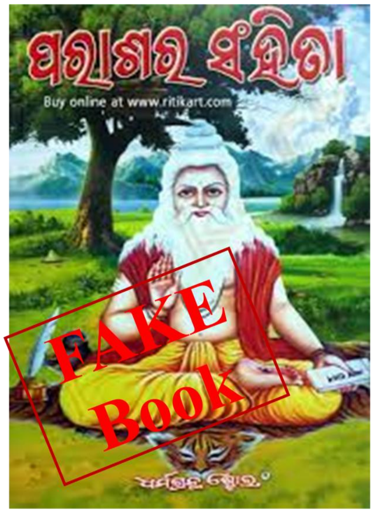

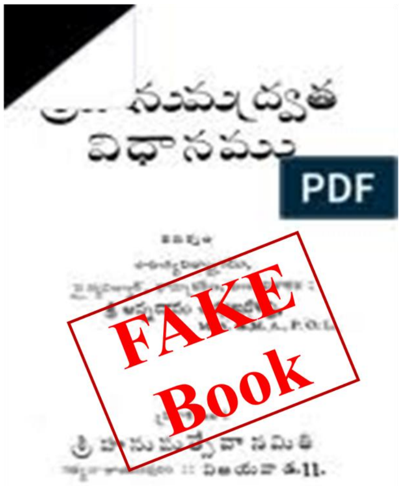

TTD’s Fake Research Books with Fake Documents on Fake Sri Hanuman birthplace in Tirupati

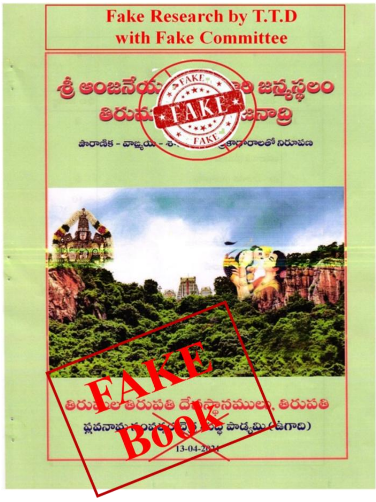

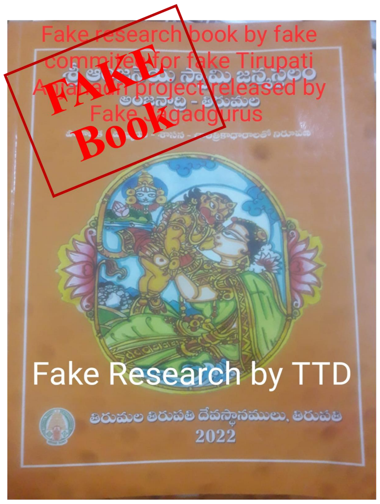

మొదటి పుస్తకము 13-04 -2021

రెండవ పుస్తకము 21-04-2021,

మూడవ పుస్తకము On 16th 16-02-2022

ఇవి తిరుపతి నకిలీ కమిటీ వారు శ్రీ హనుమంతులవారి జన్మస్థళము అని నిరూపించుటకు వేసిన 3 నకిలీ సంశోధన పుస్తకములు ఒకదాని తరువార ఇంకొకటి మారుస్తూనే ఉన్నారు

విచిత్రముఏమిటంటే ఇందు లో 3 పుస్తకాలు , మొదటి పుస్తకం 13-04 -2021 ఇందులో అన్నీ తప్పులే వెంటనే దాన్ని మార్చివేసారు , 21-04-2021 దాన్ని ఖండిస్తూ శ్రీ హనుమద్ జన్మభూమి తీర్థ క్షేత్ర ట్రస్ట్ (రి) శ్రీ గోవిందానంద సరస్వతీ స్వామివారు దానిలో ఉన్న సమస్త దోషములను ఒక్కొక్క పేజిలోనూ చూపించినారు, మరల ఈ పుస్తకాన్ని కూడా మార్చివేసి పెద్దగా వేస్తున్నాము అని ఒక నెపముతో మరలా ఇంకొక పుస్తకమును 16-02-2022 న తిరుపతిలో భూమిపూజా అని ఒక నాటముతో అక్కడ దీనిని పంచారు కాని ఆంధ్ర హైకోర్ట్ స్తే కారణముగా ఈ పుసకమును ఎవ్వరకీ ఇవ్వటానికి కుదరక హడావిడిగా వచ్చిన కొంతమందికి ఒన ౧౦ పుస్తకములను మాత్రమే ఇచ్చి మిగతావి రూములో తాళము వేసి సీల్ చేయ వలసిన పరిస్థితి , అదేరోజు తిరుపతిలో ఈ పుస్తకము

ఒక ప్రతి స్వామివారికి చేరిన వెంటనే అందులో కూడా అనేక దోషములు గుర్తించిరి,
నకిలీ శ్లోకములతో నకిలీ గ్రంథములు సృష్టించి , నలికీ కమిటీ లతో నకిలీ సంశోధనముల తో చివ్వరకు టి.టి.డి వారు భంగపడటము జరిగినది,

ప్రశ్న: అసలు శ్రీ హనుమద్ వ్రతము, శ్రీ హనుమద్విజయోత్సవము ఏమిటి, ఇవి ఏరకముగా వచ్చాయి ?

సమాధానము : కొంతకాలము క్రితము కొంతమంది భక్తులు వివిధ దేవతల మాలలు 41 రోజుల దీక్షా విధానమును ఆరంభించినారు చైత్ర శుక్ల పూర్ణిమ నుండి 41 రోజులు గా ఆంధ్రా, కర్నాటకా, తెలంగాణా లలో, వీటికి కొద్ది భిన్నముగా తమిళనాడు లో, ఈదీక్షా వ్రతము ముగింపు రోజున "హనుమద్ వ్రతము" ఉద్యాపనగా, హనుమద్ విజయోత్సవముగా ఇలా వివిధ ప్రదేశములలో వారి వారి పూజలకు కొత్త కొత్త గా పేర్లు పెట్టుకున్నారు, ఇది ఇక్కడితో ఆగకుండగా ఈ 41 రోజులలో వారి ప్రాంతముల దగ్గర ఎద్దైనా ఒక శ్రీ హనుమంతులవారి దేవస్థానము ఉంటే అక్కడకి ఆ 41 రోజులలో వెళ్ళి మాలావిసర్జన చేయుట ఆరంభించినారు, ఆ ముగింపు రోజు చిన్న హనుమద్ జయంతి అనికూడా నామకరణము చేసి ఇందులో కూడా చిన్న, పెద్ద హనుమద్ జయంతులని కొత్త విధానాలు ఆరంభించారు అందువలన ఇవేవీ ప్రమాణములు కాదు, ఈ ఆచరణలకి శాస్త్రీయబద్ధమైన సమ్మతి లేదు, ఒక ధర్మ సింధు, నిర్ణయ సింధూ లేనిచో శ్రీమద్ వాల్మీకి మూల, ఆనంద రామాయణాదిలు ఇటువంటివాటిలో చెప్పిన విధముగా చేయకుండా ఎవరికి ఏ విధానముగా నచ్చితే వాళ్ళకి ఏ విధముగా అనుకూలముగా ఉంటే అనుకూలసింధు... ఆ విధముగా వివిధ కార్యక్రమములు ఆరంభించినారు వీటికి ప్రమాణములు అడిగితే ఏ మీ లేకపోతే ఇటువంటిది ఇంతటి తోనే ఆగకుండగా వీటిని ఏదోరకముగా ప్రమాణీకృతము చేయటానికి స్వశ్లోకములు, స్వయం రచిత గ్రంథములు, పురాణాల పేరుతో, సంహితల పేర్లతో కొత్తగా రచించి వాటిలో ప్రక్షిప్తాలను చేర్చి ఇంతటితోనూ ఆగకుండా శ్రీ హనుమంతులవారికి వివాహమును కూడా జరిపించే స్థాయికి ఈ నాటి పండితులు అజ్ఞానులై వ్యవహరిస్తున్నారు, ఇటువంటివి అన్నీ అప్రమాణములు,

అశాస్త్రీయములు,

ప్రశ్న : సమస్త భారత దేశములో అందరు ఈ తిథి యందే ఆచరిస్తున్నారు కదా మరి కొన్నిప్రదేశములలో **ఆంధ్రా**, తెలంగాణా, కర్నాటకా, తమిళనాడు కొన్నిచోట్లభక్తులుదీనికి భిన్నముగా ఎందుకు ఆచరిస్తున్నారు,

సమాధానము : ఆంధ్రా, తెలంగాణా, కర్నాటకా, తమిళనాడు లో కూడా చైత్ర శుక్ల పూర్ణిమ నాడే ఆచరిస్తున్నారు దీని తో బాటుగా ౪౧ రోజుల తరవాత కూడా ఇదే హనుమద్ జయంతి ని మరొకసారి చిన్న హనుమద్ జయంతిగా అదే శ్రీ హనుమద్ వ్రతముగా, శ్రీ హనుమద్ విజయోత్సవముగా కొత్త కొత్తగా కొత్త ఆచరణలు ఆరంభించటముతో అది విపరీత పరిణామములతో మరల కాలగతిలో నూతన రాష్ట్రాలు నూతన విధానాలు, నూతన ఆచారాలు ఈ విధముగా ఎవరికి వారు వాది సొంత విధానాలను సొంత కథలను వ్రాయుట ఈ విధముగా ప్రాంతాల వారీగా ఈ నాలుగు రాష్ట్రాలలో వ్యత్యాసము రావటము జరిగినది, అంతే కానీ శ్రీ హనుమంతులవారి జన్మతిథిలో మార్పులేదు అది చైత్ర శుక్ల పూర్ణిమయే,

తమ ప్రాంతీయ నమ్మకాలు మరియు అనుసరించే విధానాలు, వాని ,సమయములలో వ్యత్యాసము వలన వివిధ మాసాలలో వేర్వేరు సమయాల్లో హనుమాన్జయంతి ఆరంభము అయ్యినది . చైత్రపూర్ణిమయే హనుమాన్జయంతి గా సమస్త భారతదేశము లో అనెక రాష్ట్రాల్లోపరంపరగా ఆచరిస్తు వస్తున్నారు,

ఆంధ్రప్రదేశ్ మరియు తెలంగాణల లో, హనుమద్ జయంతి 41 రోజుల పాటు జరుపుకుంటారు, ఇది చైత్ర పూర్ణిమనాడు ప్రారంభమై "వైశాఖ మాసంలో కృష్ణ పక్షంలో పదవరోజు ముగుస్తుంది. ఆంధ్ర ప్రదేశ్ భక్తులు చైత్ర పూర్ణిమనాడు 41 రోజుల దీక్షను ప్రారంభించి మార్గశీర్ష అమావాస్య ముగిస్తారు. కాల గతిలో ఇవి అన్నీ నూతనముగా ఆరంభించిన వే గాని అవి ఏవీ ప్రామాణికములుకావు,

Puranas are the stories from different kalpas of the universe Ithihasas are the history of the current kalpa which we live so it's clearly more authentic then puranas . We simply can't dismiss the entire puranas as fake folkores. If Lord Shiva himself uses puranas to built a chariot one cannot ignore it completely. We can only consider certain chapters of puranas authentic if they are

mentioned in ithihasas .

ప్ర : పురాణము, ఇతిహాసము,
శ్రీ హనుమంతులవారి జన్మస్థల. తిథి విషయాలలో పురాణాలు ప్రమాణముగా తీసుకోవలెనా లేక ఇతిహాసములు ప్రమాణములుగా తీసుకోవలెనా ? ఏదైనా ఒక విషయము గురించి నిర్ణయించి చెప్పాలి అంటే(శ్రీ హనుమంతులవారిజన్మస్థలము, జన్మతిథి) పురాణము, ఇతిహాసము, వీటిలో మనము దేనిని ఆశ్రయించవలెను

సమా: ఏదైనా ఒక విషయము గురించి నిర్ణయించటానికి మనకి కావలసినవి ప్రమాణములు, ప్రత్యక్ష, అనుమాన, ఉపమాన ఇత్యాది **ప్రక్రియలు,** వేదాలు,

స్మృతులు, ఇతిహాసము, పురాణములు, ఇత్యాది ద్వారా,
ఒక వస్తు విషయ నిరూపణకు ఇక్కడ వేదాలు, స్మృతులు ను తీసుకుంటే, స్మృతులు శృతు (వేదాలు) లను ఆనుసరించి ఉండాలి కాని తత్ విరుద్ధములుగా ఉండకూడదు, అలాగే స్మృతులలోనే పరస్పర భిన్న వాదనలు వచ్చినా అప్పుడు కూడా స్మృతులను కాకుండా శృతులనే అశ్రయించవలెను , మనకి సంపూర్ణ విషయ ప్రతిపాదన శృతి (వేదాల) లో నే ఉన్నప్పుడు ఇంక మనము స్మృతులను ఆశ్రయించవలసిన అవసరమేలేదు, స్మృతులు శృతు (వేదాల లకి) పూరకముగా ఉండవలెనే గాని బిన్నభిన్నముగా కాదు, స్మృతు లలో ఆరకముగా ఉన్న వాటిని ప్రమాణములుగా స్వీకరించరు అలాగే ఇతిహాసములు, పురాణములు, ఈ ఇతిహాసపురాణాలలో కూడా పురాణాములు ఇతిహాసానికి పూరకముగా ఉండాలి ఒకవేళ పురాణములలో ఇతిహాసము నకు విరుద్ధముగాఅ లేదా ఇతిహాసములలోనే పరస్పర విరుద్ధములుగా ఉన్న

ప్రశ్న : సమన్వయము చేసుకోవచ్చుకదా ?

సమా : శృతి (వేదాల) నుండి స్మృతులు వచ్చాయి, ఇక్కడ సమన్వయము అనేది ధర్మసింధు నిర్ణయ సింధు లాగ ఉండవలెను, అనుకూలసింధు లాగ కాదు,

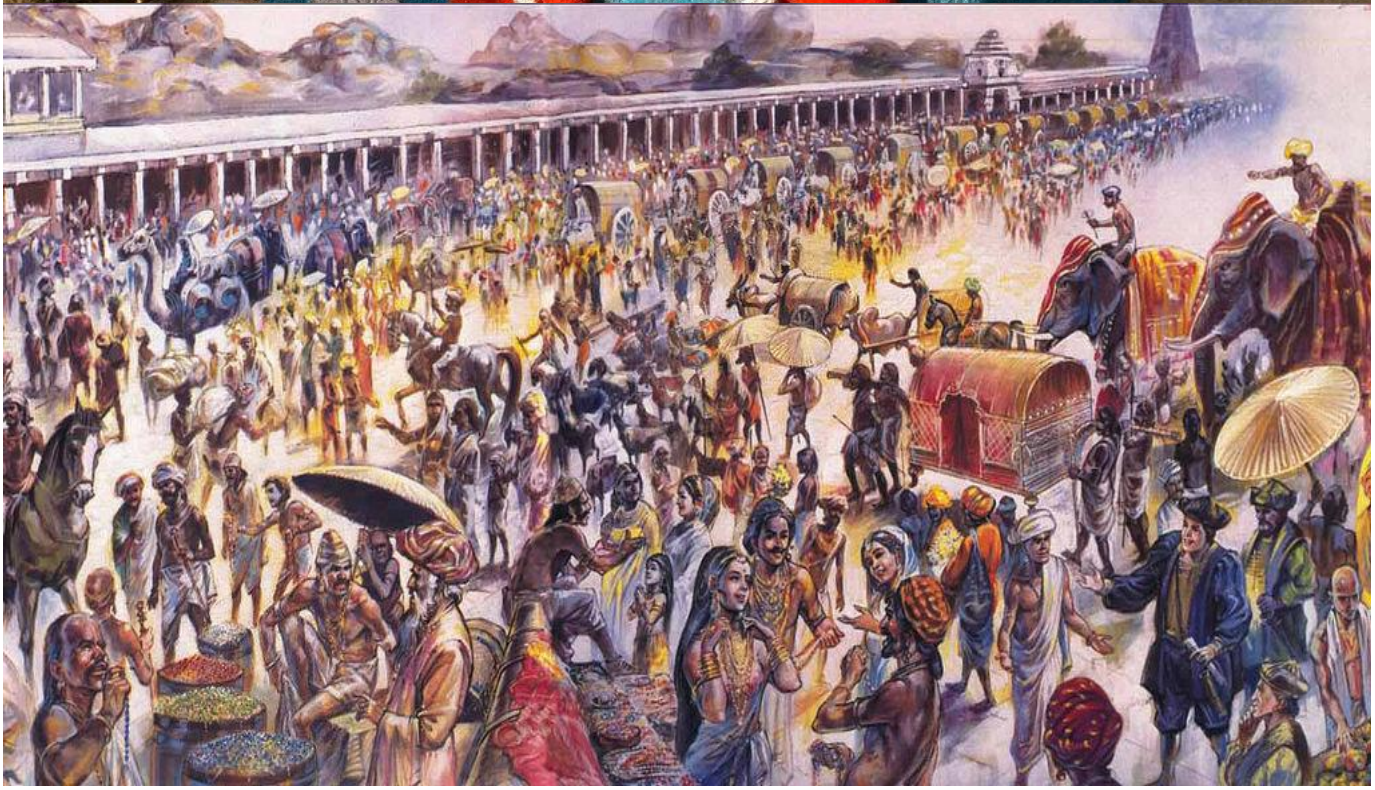

श्री हनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट
(रि. 135/2020)
श्री अयोध्या जी कार्यालय :
सीताराजमहल, रामकोट, श्रीअयोध्या जी, सम्पर्क मो0- 8500411115/8
hanumadjanmabhoomitrust@gmail.com, www.kishkindha.org

अपना उत्तर प्रदेश
महाशिवरात्रि से निकलेगी किष्किन्धा रथयात्रा
अयोध्या
जन-तंत्र

श्री हनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र
(रि. 135/2020)
अयोध्या जी
सम्पर्क मो0- 8500411115/
hanumadjanmabhoomitrust@gmail.com, www.kishkindha.org
मुख्य कार्यालय :
किष्किन्धा, चिक्कारामपुर, अञ्जनीहल्ली, आनेगुन्दी, गंगावती तालुक्, जिल्ला कोप्पल
सम्पर्क मो0- 8762711113/6

हनुमंत लला की जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण को शुरू होगा अभियान

अमृत विचार अयोध्या

तैयारी

- देशभर में निकाली जाएगी रथ यात्रा, किष्किंधा में स्थापित होगी श्रीराम की चरण पादुका

राम नगरी में भगवान राम की जन्म स्थली पर मंदिर निर्माण की शुरुआत के बाद हनुमंत लला की जन्म स्थली किष्किंधा में मंदिर निर्माण के लिए अभियान की शुरुआत होगी। यह अभियान महाशिवरात्रि शुरू किया जाएगा। जिसके तहत देशभर में रथ यात्रा निकालकर लोगों को जागरूक किया जाएगा। प्रस्तावित हनुमान मंदिर में राम की चरण पादुका स्थापित होगी। जिसका मंगलवार को राम नगरी में पूजन अर्चन और प्राण प्रतिष्ठा की गई।

बजरंगबली की जन्म भूमि पर भव्य मंदिर के निर्माण के लिए श्री हनुमत जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट का गठन किया गया है। ट्रस्ट से जुड़े गोविंदानंद सरस्वती आजकल राम नगरी अयोध्या के दौरे पर हैं। मंगलवार को उन्होंने श्री राम जन्म भूमि के मुख्य अर्चक आचार्य सत्येंद्र दास से किष्किंधा से लाई गई चरण पादुका का पूजन अर्चन और प्राण प्रतिष्ठा कराई। यह चरण पादुका हनुमंत लला की जन्म स्थली किष्किंधा में प्रस्तावित हनुमान मंदिर में स्थापित की जानी है। 3 वर्ष पूर्व किष्किंधा के पम्पासर क्षेत्र से तरुण राम की मूर्ति राम नगरी अयोध्या लाई गई थी। इसके साथ ही किष्किन्धा के संत गोविंदानंद सरस्वती भगवान राम, लक्ष्मण, सीता और हनुमान की मूर्तियां लेकर आए हैं। जिसको

चरण पादुका का पूजन अर्चन करते गोविंदानंद सरस्वती व अन्य। फोटो : अमृत विचार

रामलला के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येन्द्र दास के सुपुर्द किया गया। इन मूर्तियों को प्रस्तावित राम मंदिर के नए भवन में स्थापित करने का संकल्प लिया गया था।

मीडिया से मुखातिब किष्किन्धा श्री हनुमत जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के संत गोविंदानंद सरस्वती ने बताया कि राम नगरी अयोध्या में भगवान राम की जन्मभूमि पर भव्य राम मंदिर का निर्माण शुरू हो गया है। हमारे ट्रस्ट ने रामलला के अनन्य सेवक और सखा हनुमंत लला का उनकी जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण कराने का संकल्प लिया है इसके लिए पम्पा क्षेत्र से महाशिवरात्रि पर देशव्यापी रथ यात्रा निकाली जाएगी। रथयात्रा के माध्यम से 12 वर्ष तक सनातन धर्मियों को हनुमान मंदिर निर्माण के लिए जागरूक किया जाएगा। यह रथयात्रा 6 महीने से 1 वर्ष की अवधि तक भारतवर्ष के विभिन्न राज्यों में भ्रमण करेगी। उन्होंने बताया कि ट्रस्ट में प्रस्तावित हनुमंत लला के मंदिर में श्री राम की चरण पादुका की प्राण प्रतिष्ठा का निर्णय लिया है। राम नगरी अयोध्या में श्री राम जन्म भूमि के मुख्य अर्चक आचार्य सत्येंद्र दास ने इस चरण पादुका का पूजन अर्चन और प्राण प्रतिष्ठा किया है। हम लोग इस चरण पादुका को लेकर किष्किंधा वापस जाएंगे। श्री दास का कहना है कि भगवान श्रीराम ने नंगे पांव पूरे देश में भ्रमण किया। उनकी सरकार से मांग है कि रामलला के दर्शन के लिए यह बाध्यता की जाए कि लोग दर्शन पूजन के लिए नंगे पांव ही जाएं। जूता चप्पल पहन कर दर्शन पूजन और परिसर में प्रवेश पर रोक लगाई जाए। इस मामले में श्री राम जन्म भूमि के मुख्य अर्चक आचार्य सत्येंद्र शास्त्री का कहना है कि किष्किंधा और राम नगरी अयोध्या का पौराणिक काल से अटूट संबंध रहा है।

हनुमंत लला की जन्मभूमि प्रस्तावित राम मंदिर में स्थापित करने के लिए तरुण राम समेत अन्य मूर्तियां सौंपी गई है। जिनको नया भवन बनने के बाद स्थापित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि भगवान श्रीराम के आशीर्वाद स्वरुप राम नगरी अयोध्या से पूजन अर्चन और प्राण प्रतिष्ठा के बाद पादुका किष्किंधा से आए संत को सौंपी गई है। यह चरण पादुका श्रीराम और हनुमान के मिलन स्थल पम्पा क्षेत्र में स्थापित की जाएगी।

पम्पा क्षेत्र से महाशिवरात्रि को निकलेगी रथयात्रा

अयोध्या। राममंदिर निर्माण के साथ किष्किन्धा में हनुमत लला की जन्मस्थली पर मंदिर के लिए शुरू होगा अभियान। पम्पा क्षेत्र से महाशिवरात्रि को निकलेगी रथयात्रा। 12 वर्ष तक रथ यात्रा के जरिए सनातन धर्मियों को हनुमान मंदिर निर्माण के लिए किया जाएगा जागरूक। 6 महीने से 1 वर्ष की अवधि तक भारतवर्ष के विभिन्न राज्यों में भ्रमण करेंगी किष्किन्धा रथयात्रा की टोलियां। हनुमत जन्मस्थली पर मंदिर निर्माण के लिए भगवान राम के आशीर्वाद स्वरुप चरण पादुका लेने किष्किंधा से अयोध्या पहुंचे संत गोविंदानंद सरस्वती। श्री राम जन्मभूमि में पादुका के विधिवत पूजन और प्राण प्रतिष्ठा के बाद रामलला के पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास ने गोविंदानंद सरस्वती को सौंपी चरण पादुका। आचार्य सत्येन्द्र दास का बयान। किष्किन्धा के पम्पासर क्षेत्र से 3 वर्ष पूर्व आई थी तरुण राम की मूर्ति। रामलला के नए भवन में होगी स्थापित। 3 साल पहले किष्किन्धा के संत गोविंदानंद सरस्वती ने भगवान राम, लक्ष्मण, सीता और हनुमान जी मूर्तियां की थी रामलला के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येन्द्र दास के सुपुर्द। रामलला के नए भवन में स्थापित करने का लिया गया था संकल्प। कहा किष्किन्धा से अयोध्या का अटूट संबंध। श्रीराम और हनुमान के मिलन स्थल पम्पा क्षेत्र में भगवान राम की चरण पादुका होगी स्थापित। हनुमान की जन्मस्थली पम्पा क्षेत्र से रामलला पहुंचे संत गोविंदानंद सरस्वती ने बिना जूता चप्पल के रामलला के दर्शन और फूल माला चढ़ाने की अनुमति देने की उठाई मांग। संत गोविंद आनंद का बयान। भगवान राम ने नंगे पाव किया भ्रमण तो भक्तों को उनके दरबार में नंगे पाव प्रवेश की हो व्यवस्था।

'अयोध्या घोषित हो विश्व की राजधानी'

संसू, अयोध्या : हनुमतजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष स्वामी गोविंदानंद सरस्वती ने अयोध्या को विश्व की राजधानी घोषित करने की मांग की है। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयास से जिस तरह योग को वैश्विक मान्यता मिली, उसी तरह अयोध्या के लिए भी वैश्विक स्वीकृति लेनी होगी। उन्होंने कहा, अयोध्या विश्व की प्राचीनतम नगरी है और यहां 17 लाख वर्ष से इतिहास प्रवाहमान है।

वे रामजन्मभूमि परिसर के करीब ही स्थित सीता राजमहल में हनुमतजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के कार्यालय का उद्घाटन कर रहे थे। उन्होंने कार्यालय में प्रतीकात्मक तौर पर श्रीराम की खड़ाऊं का पूजन किया। बजरंगबली की जन्मभूमि कर्नाटक के कोप्पल जिला के किष्किंधा पर्वत क्षेत्र के गोविंदानंद ने मंगलवार को रामनगरी पहुंचने के साथ श्रीराम की पादुका के रूप में तीन जोड़ी खड़ाऊं खरीदी। एक जोड़ी खड़ाऊं उन्होंने बुधवार को अपने अयोध्या के कार्यालय में स्थापित की। दूसरी खड़ाऊं वे किष्किंधा में स्थापित करेंगे और तीसरी खड़ाऊं साथ लेकर वे हनुमतजनमभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण के निधि समर्पण के लिए निकलने वाली यात्रा के रथ पर स्थापित करेंगे। उनकी योजना राम मंदिर की तरह भव्य हनुमान मंदिर निर्मित कराने की है। उन्होंने बताया कि हनुमतजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र का अयोध्या एवं किष्किंधा स्थित कार्यालय भक्त और भगवान तथा उत्तर-दक्षिण संबंधों को पुनर्गौरव प्रदान करने में सहायक होगा।

अमर उजाला

•••••••••• राजधानी वर्ष 13 । अंक 33 । पृष्ठ : 14+4=18 मूल्य : छह रुपये लखनऊ • 6 रा

भूमि पूजन : योगी बोले- मुहूर्त पर सवाल उठाने वालों पर ध्यान न दें, रामराज्याभिषेक की तरह सजेगी अयोध्या

चार अगस्त से अखंड रामायण, घर-घर दीपोत्सव

अमर उजाला ब्यूरो

अयोध्या। श्री रामजन्मभूमि मंदिर के निर्माण के लिए पांच अगस्त हो होने जा रहे भूमि पूजन के अवसर पर रामनगरी एक बार फिर त्रेतायुग के उस उत्सव को दोहराएगी जब रावण वध करके राम अयोध्या लौटे थे और उनका राज्याभिषेक हुआ था। भूमि पूजन के एक दिन पहले से ही अयोध्या के घर-घर में दीपोत्सव शुरू हो जाएगा, 4 अगस्त से ही सभी मठ-मंदिरों में दो दिन तक अखंड रामायण पाठ व रामनाम संकीर्तन होंगे।

भूमि पूजन के उत्सव व

अयोध्या में सीएम योगी ने रामलला के किए दर्शन।

दुनिया देखेगी उत्साह

श्री रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्यगोपाल दास ने कहा कि पांच अगस्त को दुनिया रामनगरी का उत्साह देखेगी। भूमि पूजन के कार्यक्रम को घर-घर लाइव पहुंचाने की व्यवस्था होगी। ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने कहा कि कोरोना काल में हमारा प्रयास होगा कि सभी लोग अपने-अपने स्थान से ही भूमि पूजन के साक्षी बनें। इसमें सिख, जैन जैसे धर्मों के महापुरुष भी मौजूद रहें, ऐसी कोशिश होगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अयोध्या दौरे को लेकर शनिवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कारसेवकपुरम में 40 शीर्ष संत-धर्माचार्यों के साथ बैठक कर कार्ययोजना बनाई। सीएम ने कहा कि 500 साल के संघर्ष के बाद यह शुभ घड़ी आई है, मुहूर्त पर सवाल उठाने वालों पर ध्यान न दें। भूमि पूजन कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा करने श्री रामजन्मभूमि पहुंचे मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि पूरे परिसर को युद्ध स्तर पर समतलीकरण करते हुए अनावश्यक भद्दे बीच टॉवरों को हटा दिया जाए।

पंपा क्षेत्र में स्थापित होगी हनुमान की विशाल प्रतिमा

अयोध्या। कर्नाटक के पंपा क्षेत्र में स्थापित होगी हनुमान की विशाल प्रतिमा। पंपा क्षेत्र के हनुमान मंदिर का होगा जीर्णोद्धार। 1200 करोड़ में स्थापित होगी 215 फीट ऊंची हनुमान जी की मूर्ति। कर्नाटक राज्य के पंपा क्षेत्र में स्थित है हम्पी गांव। गांव में हैं कई त्रेता युगीन मंदिर।पंपा क्षेत्र के आंजनाद्रि पर्वत पर है हनुमान की जन्मस्थली। संत गोविंदानंद सरस्वती ने दी जानकारी। गोविंदानंद ने पंपा क्षेत्र में हनुमान मंदिर के जीर्णोद्धार का उठाया बीड़ा। पिछले 10 वर्ष से बजरंगबली के जन्म स्थान के विकास का हो रहा प्रयास। अब महाशिवरात्रि से पूरे भारत में शुरु होगा जागरण अभियान। किष्किंधा रथ यात्रा के जरिए देशभर में भ्रमण करेंगे संत। 40 लाख रथों में भगवान राम की पादुकाए ठाकुर जी और वेदों को रखकर किया जाएगा भ्रमण। 12 वर्षों तक चलेगा अभियान। हनुमान जन्मस्थली के भगवान राम के जन्म स्थान और मां सीता के जन्मस्थान सीतामढ़ी नेपाल तक जाएगी रथ यात्रा। संत गोविंदानंद सरस्वती का बयान। श्री राम जन्मभमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के गठन के दिन ही किष्किंधा में ट्रस्ट किया गया गठित। जनसामान्य में आस्था को बढावा देना ट्रस्ट का उद्देश्य। श्री राम जन्मभूमि की मिट्टी पंपा क्षेत्र में रखी जाएगी सुरक्षित। अयोध्या और किष्किंधा के प्रगाढ संबंधों को प्रदर्शित करना हनुमत जन्मस्थली के विकास का उद्देश्य।

अयोध्या में खुला श्रीहनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट कार्यालय

अयोध्या। रामनगरी के रामकोट स्थित सीता राजमहल में बुधवार को श्रीहनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट का कार्यालय खोला गया। दीपप्रज्वलन, वैदिक मंत्रोच्चारण और आरती-पूजन के साथ ट्रस्ट कार्यालय का भव्य उद्घाटन हुआ। इस मौके पर पम्पापुर किष्किंधा से पधारे संत गोविंदानंद सरस्वती ने कहा कि हमारा लक्ष्य अयोध्या और किष्किंधा को जोड़ना है। जिस प्रकार त्रेतायुग में भगवान राम के समय किष्किंधा और अयोध्या के सम्बंध थे। ठीक उसी प्रकार फिर से स्थापित करना है। इससे दक्षिण और उत्तर का रिश्ता अधिक मजबूत होगा। किष्किंधा में बजरंगबली का भव्य मंदिर बनने जा रहा हैए जिसमें लगभग दो सौ पंद्रह फिट की मूर्ति स्थापित होगी।हमारा कार्य भक्तों को धार्मिक भावना से जोड़ना है। भक्ति का प्रचार करना और हनुमान की विशाल मंदिर बनवाना यही लक्ष्य है। राममंदिर निर्माण के साथ किष्किंधा में हनुमंत लला की जन्मस्थली पर मंदिर के लिए अभियान शुरू किया जायेगा। पम्पा क्षेत्र से महाशिवरात्रि पर रथयात्रा निकलेगी। जो 12 वर्षों तक यात्रा के जरिए सनातन धर्मियों को हनुमान मंदिर निर्माण के लिए जागरूक करेगा। यह रथयात्रा छरू महीने से लेकर एक वर्ष की अवधि तक भारतवर्ष के विभिन्न राज्यों में भ्रमण करेगी। उन्होंने कहा कि हनुमत जन्मस्थली पर मंदिर निर्माण के लिए भगवान राम के आशीर्वाद स्वरुप चरण पादुका लेने किष्किंधा से अयोध्या आया हूं। श्री राम जन्मभूमि में पादुका के विधिवत पूजन और प्राण प्रतिष्ठा के बाद रामलला के पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास ने मुझे पादुका सौंप दी है। संत गोविंदानंद सरस्वती ने कहा कि किष्किंधा से अयोध्या का अटूट संबंध। श्रीराम और हनुमान के मिलन स्थल पम्पा क्षेत्र में भगवान राम की चरण पादुका स्थापित की जायेगी। इस अवसर पर सीताराज महल के महंत श्याम बिहारी दासए रामलला पुजारी प्रदीप दास समेत अन्य साधु.संत उपस्थित रहे।

● 12 वर्षों तक यात्रा के जरिए सनातन धर्मियों को हनुमान मंदिर निर्माण के लिए किया जाएगा जागरूक

किष्किंधा से अयोध्या तक निकलेगी रथयात्रा

अयोध्या | हिन्दुस्तान टीम

फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी पर 11 मार्च को महाशिवरात्रि के अवसर पर हनुमान जी के जन्मस्थान किष्किधा (कर्नाटक) से अयोध्या तक रथयात्रा निकाली जाएगी। इस रथयात्रा का उद्देश्य मुख्यतः रामलला की महिमा का गान और रामकथा का प्रचार-प्रसार है जिससे समाज में मानवीय आदर्शों का विकास हो। यह कहना है यात्रा के आयोजक संत स्वामी गोविंदानंद सरस्वती महाराज का। वह यहां रथयात्रा के लिए रामलला की अनुमति प्राप्त करने आए हैं। उन्होंने रामजन्मभूमि में विराजमान रामलला का मंगलवार को दर्शन-पूजन किया।

तदुपरांत रामलला के प्रतिनिधि रुप में मुख्य अर्चक आचार्य सत्येन्द्र दास से भेंटकर रामलला के अनुमति के रुप में भगवान की चरण पादुका प्राप्त की। आचार्य श्री शास्त्री ने चरण पादुका के आरती पूजन के बाद तीन जोड़ी चरण पादुका उन्हें सौंप दी। संत ने बताया कि रथयात्रा के रथ पर विराजित हनुमान जी के हृदय स्थल पर यह चरण पादुका आम श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ रखी जाएगी। इसके अलावा दूसरी जोड़ी चरण पादुका किष्किधा में ही प्रतिष्ठित की जाएगी। यहीं दस एकड़ विस्तृत क्षेत्रफल में हनुमान जी की 215 मीटर ऊंची प्रतिमा की स्थापना कर भव्य मंदिर का निर्माण कराया जाएगा। दस एकड़ क्षेत्र में रामकथा पार्क होगा जिसमें रामायण को सचित्र दर्शाया जाएगा। यह निर्माण हनुमत जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के माध्यम से किया जाएगा।

रामकथा का प्रचार

- कर्नाटक से आये संत ने रामलला के दरबार में लगाई हाजिरी
- रामलला की अनुमति रुप में मुख्य अर्चक से प्राप्त की पादुका

रथयात्रा में भेजने के लिए चरण पादुका का पूजन करते रामजन्मभूमि के मुख्य अर्चक

राम नवमी से रामजन्मभूमि में जूता-चप्पल पहनकर दर्शन हो बंद

श्रीहनुमत जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष स्वामी गोविंदा नंद सरस्वती ने कहा कि राम जन्मभूमि में विराजमान रामलला के दर्शनार्थियों को जूता-चप्पल पहनकर जाना उनकी श्रद्धा का अपमान है। यह व्यवस्था बंद होनी चाहिए। विवाद के पटाक्षेप और रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के गठन के बाद यह व्यवस्था बदलनी चाहिए। रामजन्मभूमि ट्रस्ट रामनवमी से ऐसी व्यवस्था लागू कराए। तब तक वह दर्शनार्थियों के लिए सामानों को रखवाने के लिए उचित स्थान तलाश ले। उन्होंने यह दावा कि यदि ट्रस्ट स्थान उपलब्ध करा दे तो वह एक करोड़ खर्च करके रामलला को भेंट दी जाने वाली धातुओं के लिए मजबूत लाकर व श्रद्धालुओं के जूता-चप्पल रखवाने के लिए रैक बनवाने को तैयार हैं।

12 वर्षों तक चलने वाली यात्रा चार चरणों में होगी

अयोध्या। किष्किंधा से निकलने वाली रथयात्रा देश भर में 12 वर्षों तक संचालित की जाएगी। इस दौरान 29 राज्यों के छह सौ जिलों, छह हजार तहसीलों और 25 पवित्र नदियों को पार करते हुए यात्रा एक लाख किमी. की दूरी तय करेगी। इस यात्रा के चार चरण होंगे। पहला चरण 2023 तक चलेगा जिसमें कर्नाटक, गोवा, केरल, तमिलनाडु, पांडुचेरी, आंध्र प्रदेश व तेलंगाना शामिल हैं। इसी तरह से 2023-26 तक यात्रा महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ में रहेगी। श्रीहनुमत जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष सरस्वती ने बताया कि इस दौरान वाल्मीकि रामायण पर आधारित प्रवचन, हनुमान चालीसा व सुंदरकांड का पारायण व श्रीरामनाम जप यज्ञ भी चलता रहेगा।

हनुमंत लला की जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण को शुरू होगा अभियान

अमृत विचार अयोध्या

तैयारी

- देशभर में निकाली जाएगी रथ यात्रा, किष्किंधा में स्थापित होगी श्रीराम की चरण पादुका

राम नगरी में भगवान राम की जन्म स्थली पर मंदिर निर्माण की शुरुआत के बाद हनुमंत लला की जन्म स्थली किष्किंधा में मंदिर निर्माण के लिए अभियान की शुरुआत होगी। यह अभियान महाशिवरात्रि शुरू किया जाएगा। जिसके तहत देशभर में रथ यात्रा निकालकर लोगों को जागरूक किया जाएगा। प्रस्तावित हनुमान मंदिर में राम की चरण पादुका स्थापित होगी। जिसका मंगलवार को राम नगरी में पूजन अर्चन और प्राण प्रतिष्ठा की गई।

बजरंगबली की जन्म भूमि पर भव्य मंदिर के निर्माण के लिए श्री हनुमत जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट का गठन किया गया है। ट्रस्ट से जुड़े गोविंदानंद सरस्वती आजकल राम नगरी अयोध्या के दौरे पर हैं। मंगलवार को उन्होंने श्री राम जन्म भूमि के मुख्य अर्चक आचार्य सत्येंद्र दास से किष्किंधा से लाई गई चरण पादुका का पूजन अर्चन और प्राण प्रतिष्ठा कराई। यह चरण पादुका हनुमंत लला की जन्म स्थली किष्किंधा में प्रस्तावित हनुमान मंदिर में स्थापित की जानी है। 3 वर्ष पूर्व किष्किंधा के पम्पासर क्षेत्र से तरुण राम की मूर्ति राम नगरी अयोध्या लाई गई थी। इसके साथ ही किष्किन्धा के संत गोविंदानंद सरस्वती भगवान राम, लक्ष्मण, सीता और हनुमान की मूर्तियां लेकर आए हैं। जिसको

चरण पादुका का पूजन अर्चन करते गोविंदानंद सरस्वती व अन्य। फोटो : अमृत विचार

रामलला के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येन्द्र दास के सुपुर्द किया गया। इन मूर्तियों को प्रस्तावित राम मंदिर के नए भवन में स्थापित करने का संकल्प लिया गया था।

मीडिया से मुखातिब किष्किन्धा श्री हनुमत जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के संत गोविंदानंद सरस्वती ने बताया कि राम नगरी अयोध्या में भगवान राम की जन्मभूमि पर भव्य राम मंदिर का निर्माण शुरू हो गया है। हमारे ट्रस्ट ने रामलला के अनन्य सेवक और सखा हनुमंत लला का उनकी जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण कराने का संकल्प लिया है।इसके लिए पम्पा क्षेत्र से महाशिवरात्रि पर देशव्यापी रथ यात्रा निकाली जाएगी। रथयात्रा के माध्यम से 12 वर्ष तक सनातन धर्मियों को हनुमान मंदिर निर्माण के लिए जागरूक किया जाएगा। यह रथयात्रा 6 महीने से 1 वर्ष की अवधि तक भारतवर्ष के विभिन्न राज्यों में भ्रमण करेंगी। उन्होंने बताया कि ट्रस्ट में प्रस्तावित हनुमंत लला के मंदिर में श्री राम की चरण पादुका की प्राण प्रतिष्ठा का निर्णय लिया है। राम नगरी अयोध्या में श्री राम जन्म भूमि के मुख्य अर्चक आचार्य सत्येंद्र दास ने इस चरण पादुका का पूजन अर्चन और प्राण प्रतिष्ठा किया है। हम लोग इस चरण पादुका को लेकर किष्किंधा वापस जाएंगे। श्री दास का कहना है कि भगवान श्रीराम ने नंगे पांव पूरे देश में भ्रमण किया। उनकी सरकार से मांग है कि रामलला के दर्शन के लिए यह बाध्यता की जाए कि लोग दर्शन पूजन के लिए नंगे पांव ही जाएं। जूता चप्पल पहन कर दर्शन पूजन और परिसर में प्रवेश पर रोक लगाई जाए। इस मामले में श्री राम जन्म भूमि के मुख्य अर्चक आचार्य सत्येंद्र शास्त्री का कहना है कि किष्किंधा और राम नगरी अयोध्या का पौराणिक काल से अटूट संबंध रहा है।

हनुमंत लला की जन्मभूमि प्रस्तावित राम मंदिर में स्थापित करने के लिए तरुण राम समेत अन्य मूर्तियां सौंपी गई है। जिनको नया भवन बनने के बाद स्थापित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि भगवान श्रीराम के आशीर्वाद स्वरुप राम नगरी अयोध्या से पूजन अर्चन और प्राण प्रतिष्ठा के बाद पादुका किष्किंधा से आए संत को सौंपी गई है। यह चरण पादुका श्रीराम और हनुमान के मिलन स्थल पम्पा क्षेत्र में स्थापित की जाएगी।

अपना उत्तर प्रदेश
सनातन धर्मियों को किया जाएगा जागरूक
जन-तंत्र TV
अयोध्या
जन-तंत्र
जनता की आवाज

अपना उत्तर प्रदेश
अयोध्या
जन-तंत्र
जनता की आवाज

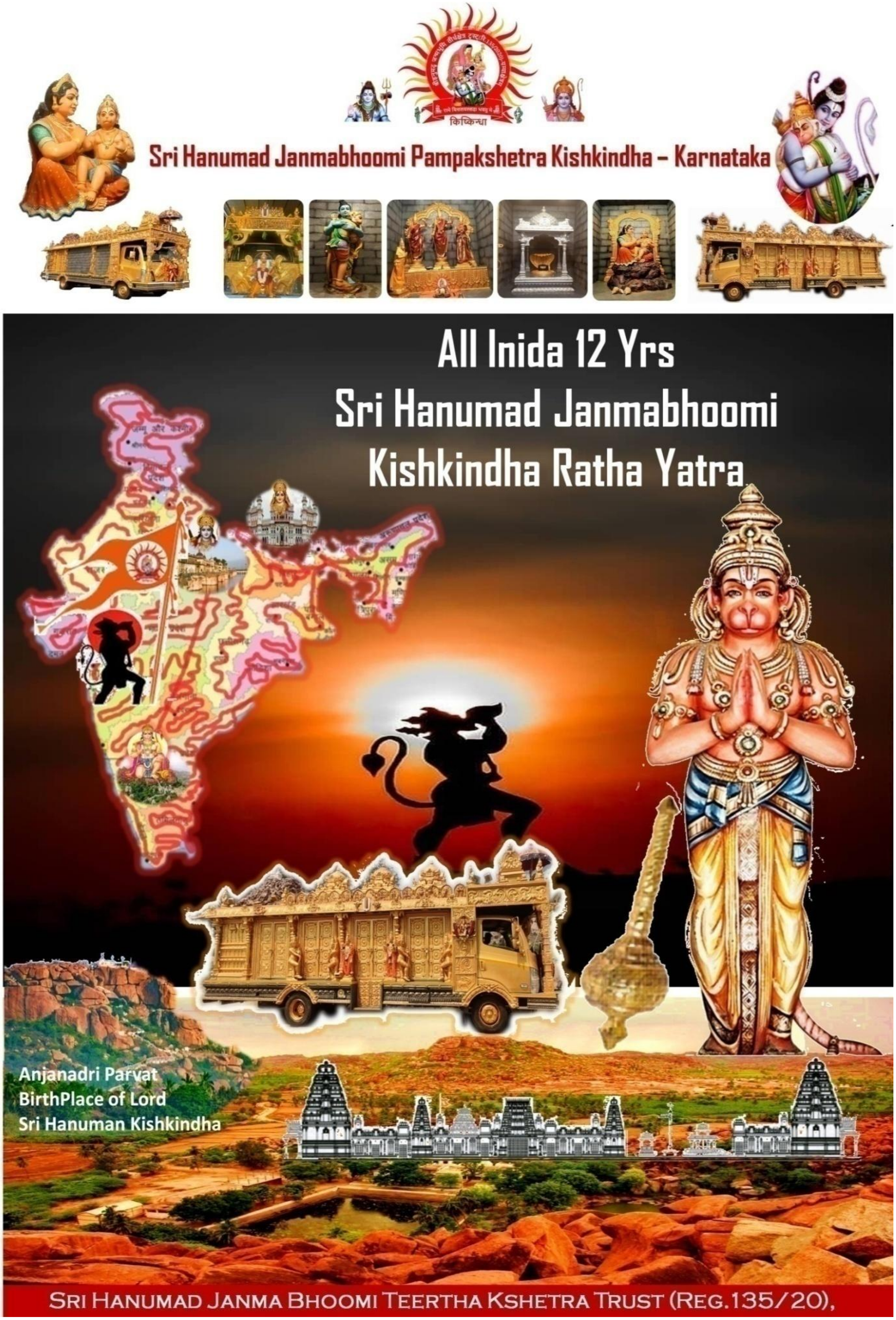
Sri Hanumad Janmabhoomi Pampakshetra Kishkindha – Karnataka
All Inida 12 Yrs
Sri Hanumad Janmabhoomi
Kishkindha Ratha Yatra
Anjanadri Parvat
BirthPlace of Lord
Sri Hanuman Kishkindha
SRI HANUMAD JANMA BHOOMI TEERTHA KSHETRA TRUST (REG.135/20),

Pampakshetra – Swarna Hanpi - Kishkindha

Sri Hanumad Janmabhoomi Kishkindha Renovation Master plan - Project duration 12 Yrs, Budget with 1200 Cr,

Donate

1. Re Establishing the 17 laks Tretayuga relations between Ayodhya and Kishkindha
2. Sri Hanumad Janmabhoomi Mandir in Kishkindha
3. 215 Mtrs Worlds Tallest Sri Hanumans "Statue of Devotion" in 50 Acr
4. Sri Kishkindha Ramayanam Theam Park in 10 Acr
5. Sri Brahma Ratham for Lord Ayodhya Srirama, and Sri Kishkindha Hanuman,
6. All India 12 Years Hanumad Janmabhoomi Kishkindha Ratha Yatra
7. Kishkindha Utsavam - Every year during Srirama Navami (Chaitra Navami) to Hanumad Jayanti (Chaitra Poornima)
8. Bhakti Nagara Samrajya " Bhakti Pravachana, Satsanga Sabha Prangana Nirmana"
9. Bhakti Nivas – Free cottages for pilgrims,
10. Free Anna Prasadam 11. Kishkindha Theatres 12. Sri Kishindha Museum Research Center Sri Kishkindha Art Gallery, Yagnashala,

Join Hands with us for helping Supporting and for directly Participating in this historical devotional service activities

Kishkindha
The Birthplace of Sri Hanuman Kishkindha Anjanadri Parvat

Haridwar Maha Kumbha Mela 6 to 12th April 2021
Haridwar Maha Kumbha
कुम्भ मेला 2021 हरिद्वार
अंजनीगर्भ संभूत कपीन्द्र सचिवोत्तम । रामप्रिय नमस्तुभ्यं हनुमन् रक्ष सर्वद ॥
Sri Kishkindha Hanumad Ratham Grand Inauguration
in Haridwar Kumbha Mela 2021 & Special Pooja in Ayodhya Kishkindha
Sri Kishkindha Ratham in Haridwar Kumbh Mela 6 to 12th
Grand Sri Rama Navami in Ayodhya 15 to 21st
Grand Sri Hanumad Jayanti in Kishkindha 25th to 27th April 2021
Sri Rama Navami in Ayodhya 15th to 21st April 2021
Ayodhya Sri Rama Navami
Before starting 12 yrs Sri Kishkindha Hanuman Ratha Yatra in All India the Ratham along with Sri Kishkindha Hanumad Sameta Sri Sita Rama Lakshmana Deity's Utsava Murti's with Sri Ayodhya Sri Rama Padukas will be taken to Haridwar and will be inaugurated in Haridwar Kumbh mela by Poojya Jagadguru Shankaracharyas and there will be a presence of thousands of Spiritual leaders and Akhadas, Mandaleshwars , Mahamandaleshwars Lakhs of Naga Sadhus and Sanyasis in Maha Kumb Mela 2021 and there will be a big procession Kumbh Mela 6 to 12th April 2021
Next Event in Ayodhya : From Haridwar the Ratham will be taken to Ayodhya Celebrating Sri Rama Navaratri in Ayodhya Special poojas to Kishkindha Ratham by Ayodhya Sadhus and Sri Ramajanmabhoomi Mandir Priest on behalf of Sri Kishkindha Lord Sri Hanuman Celebrates his Lords Janma Utsava, Sri Rama Kalyana Utsava, Maha Samrajya Pattabhishekam to Lord Sri Rama in Ayodhya and there will be a big procession Ayodhya between 15 to 21 April 2021,
Sri Hanumad Jayanti in Kishkindha 27th April 2021
Next Event in Kishkindha : From Ayodhya Ratham reaches Kishkindha the Birthplace of Lord Sri Hanuman in Pampakshetra Kishkindha during 25th to 27th celebrates Sri Hanumad Jayanti in Sri Hanumad Janmabhoomi in Kishkindha the birthplace of lord hanuman in Pampakshetra in Karnataka
12 yrs Yatra continues : Sri Kishkindha Hanuman Ratha Yatra for 12 yrs continues in Karnataka for 1 year
Kishkindha Sri Hanumad Jayanti
By Sri Hanumad Janma Bhoomi Teertha Kshetra Trust (Reg.135/2020)
Sri Pampakshetra Kishkindha Swarnahampi Bhaktinagara Samrajya,
Reg Off : SwarnaHampi (New Hampi), Hospet TQ. Vijayanagara Dist, Karnataka 583239,
Ayodhya Branch : Sita Raj Mahal - Ramkote, Sri Ayodhya ji pin : 224123
hanumadjanmabhoomitrust@gmail.com, swarnahampi@gmail.com, 8500411115/8, 8762711113/6

भारत
With the Blessings of Jagadguru's
जय विरूपाक्ष - जय श्रीराम - जय हनुमान्
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठ ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।
Sri Kishkindha Ratha Yatra
Sri Hanuman's Rama Bhakti Vaibhava Yatra
Kishkindha to Ayodhya to Janakpuri
12 yrs 1,00,000 K.M Yatra Details
12 yrs Akhila Bharata Yatra highlights (2020 to 32)
1,00,000 k.m, 29 States , 600 Districts, 6000 Talukas,
600 Pilgrims, 25 Rivers , 108 Sri Kishkindha Hanuman Vigraha Pratishtha, 1008 Sri Rama Kalyanotsavas,
Sri Ramakatha Ayodhya Sri Rama Paduka Pallaki Utsava
Sri Hanuman Chalisa , Sundarkanda, Parayana in
Kishkindha
Ayodhya
Janakpuri
CONTRIBUTIONS
BHIM UPI Canara Bank
2020-23 : Karnataka , Goa, Kerala, Tamil Nadu Puducherry, A.P, Telangana,
2023-26 : Maharashtra, Gujarat , Rajasthan, M.P , Chhattisgarh,
2026-29 : Odisha, Jharkhand, Assam, Ar.Pradesh West Bengal , Hi. Pradesh, Manipur, Meghalaya, Mizoram, Nagaland, Sikkim, Tripura
2029-32 : Bihar, Punjab , J &Kashmir, Uttarakhand, Chandigarh, Haryana, Delhi, U.P, Nepal
Trust A/C Name : Sri Hanumad Janma Bhoomi Teertha Kshetra Trust (R),
A/C No : 1187101014373,
Bank : Canara Bank,
IFSC : CNRB0001187,
Branch : Hampi,
PAN : AAZTS5606H
SRI HANUMAD JANMA BHOOMI TEERTHA KSHETRA TRUST (REG.135/20),
SRI PAMPAKSHETRA KISHKINDHA SWARNAHAMPI - BHAKTINAGARA SAMRAJYA,
Reg Office: SwarnaHampi (New Hampi), Hospet TQ. Bellary Dist, Karnataka 583239 8762711113/6,
Office: Kishkindha Hanuman Halli, Anegondi, Gangavati T.Q, Koppal District – 583234 Contact: 8500411115/8
hanumadjanmabhoomitrust@gmail.com, kishkindhasamsthanam@gmail.com, swarnahampi@gmail.com,
www.kishkindha.org | www.swarnahampi.org
Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust
@ SHJBTKTrust

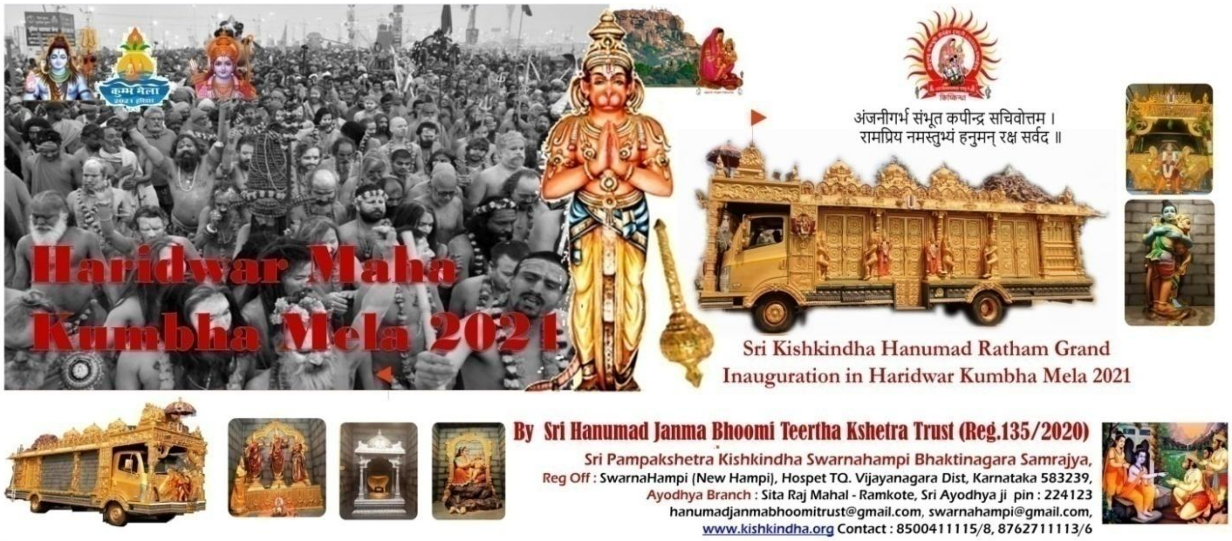
Haridwar Maha
Kumbha Mela 2021
अंजनीगर्भ संभूत कपीन्द्र सचिवोत्तम ।
रामप्रिय नमस्तुभ्यं हनुमन् रक्ष सर्वद ॥
Sri Kishkindha Hanumad Ratham Grand
Inauguration in Haridwar Kumbha Mela 2021
By Sri Hanumad Janma Bhoomi Teertha Kshetra Trust (Reg.135/2020)
Sri Pampakshetra Kishkindha Swarnahampi Bhaktinagara Samrajya,
Reg Off : SwarnaHampi (New Hampi), Hospet TQ. Vijayanagara Dist, Karnataka 583239,
Ayodhya Branch : Sita Raj Mahal - Ramkote, Sri Ayodhya ji pin : 224123
hanumadjanmabhoomitrust@gmail.com, swarnahampi@gmail.com,
www.kishkindha.org Contact : 8500411115/8, 8762711113/6

Haridwar Mahakumbha 2021

उत्तराम्नाय बदरी ज्योतिष्पीठ- हिमालय्

पश्चिमाम्नाय द्वारका शारदापीठ - द्वारका

Badari, Dwaraka Jagadguru Shankaracharya Dharma Samrat H.H Poojya Swmi Sri Swaroopananda Saraswati Ji Maharaja Performing Special Pooja to Kishkindha Ratham in Haridwar Kumbha Mela

Badari, Dwaraka Poojya Jagadguru Shankaracharya Maharaj Ji
Performing Pushpanjali to Sri Hanumad Sameta Sri Sitarama Lakshmana Utsava Murty

During Srirama Navami
15th to 21st April 2021
Sri RamaparivarVigraha
Pratishtha,
Sri Hanumad Janmabhoomi
Kishkindha Ratham,
Inauguration
by Sri Satyendra Das
Sri Rama Janmabhoomi
Mukhya Poojariji

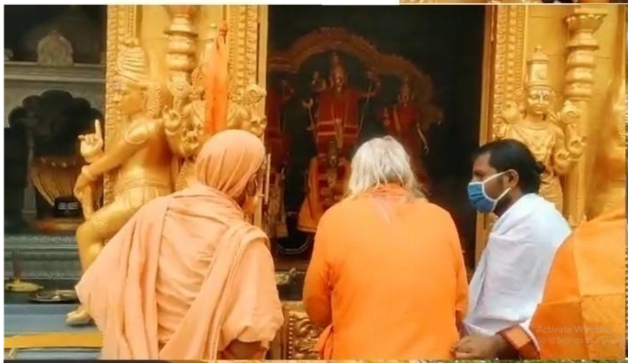

During Srirama Navami 2021 on behalf of
Sri Hanumad Janmabhoomi Kishkindha Sri Hanuman
Nootana Vastra, Rajita Yagnopaveeta, Dhanushyu Samarpanam,
Vivo V9
Dual Rear Camera
Vivo V9
Dual Rear Camera

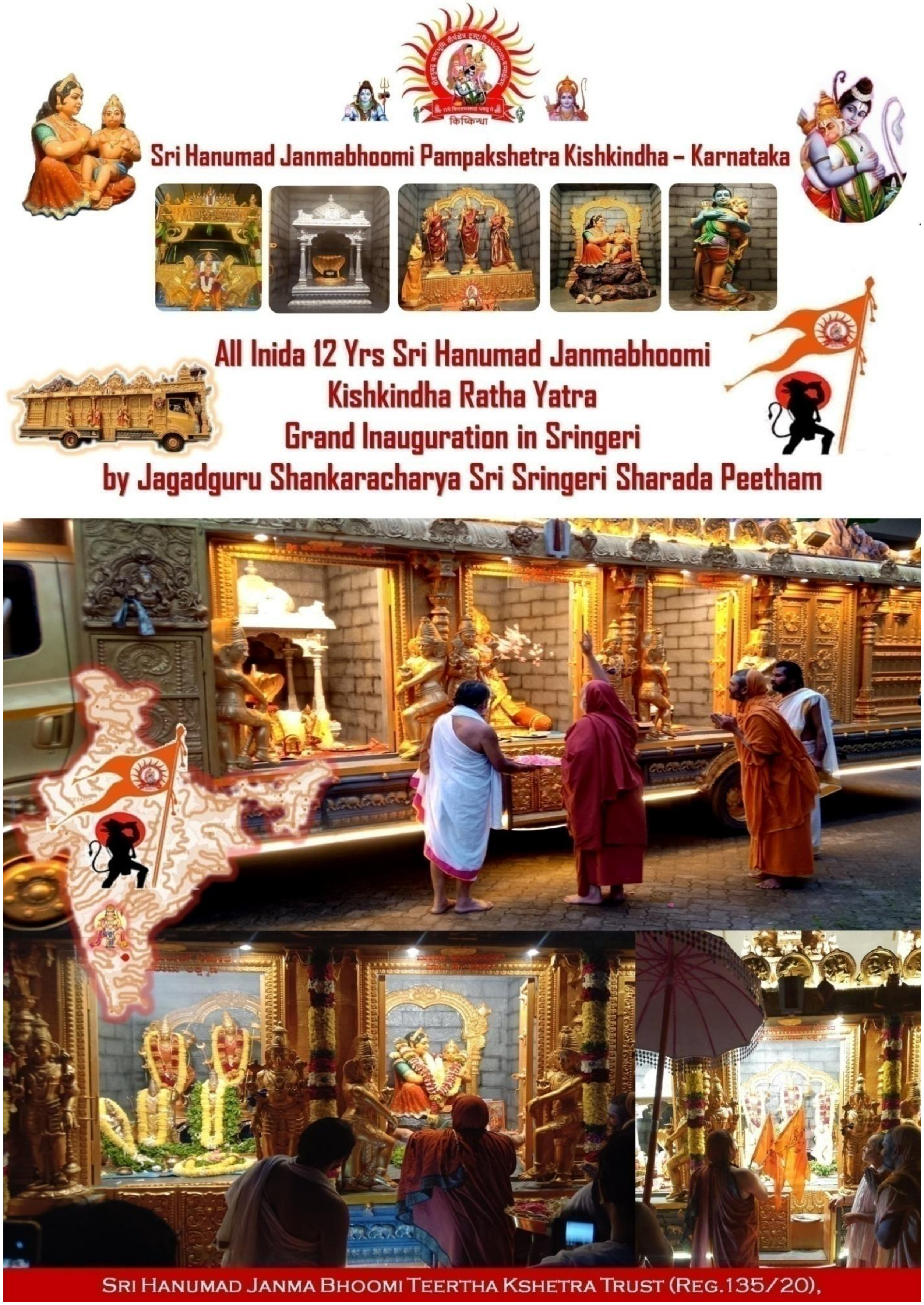
Sri Hanumad Janmabhoomi Pampakshetra Kishkindha – Karnataka
All Inida 12 Yrs Sri Hanumad Janmabhoomi
Kishkindha Ratha Yatra
Grand Inauguration in Sringeri
by Jagadguru Shankaracharya Sri Sringeri Sharada Peetham
SRI HANUMAD JANMA BHOOMI TEERTHA KSHETRA TRUST (REG.135/20),

Sringeri

Sringeri Jagadguru Shankaracharya H.H Sri Sri Sri Bharati Teertha Swamiji Maharaj -
Inaugurating Sri Hanumad Janmabhoomi Kishkindha Ratha Yatra in Sringeri Sharada Peetham

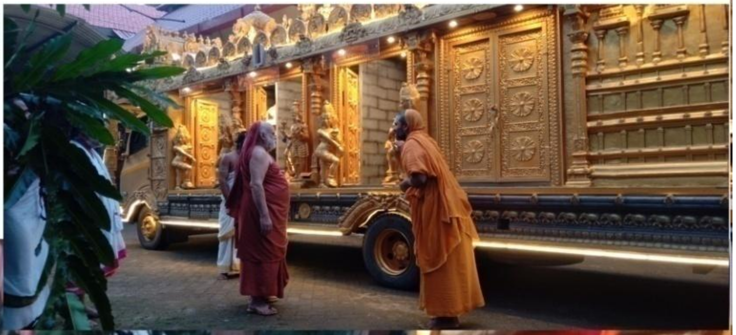

https://www.youtube.com/watch?v=w-x8FM50Nks&t=5s

Kishkindha Sri Hanuman offering 84 f height Ayodhya Srirama Brahma Ratham for his Supreme Lord Ayodhya Srirama

All India 12 Yrs Sri Hanumad Janmabhoomi Kishkindha Ratha Yatra

12 yrs Akhila Bharata Yatra highlights (2020 to 32)
Sri Hanumad Janmabhoomi - Kishkindha to
Sri Rama Janmabhoomi – Ayodhya to
Sri Sita Mata Janmabhoomi – Janakpuri,
1,00,000 k.m, 29 States , 600 Districts, 6000 Talukas,
600 Pilgrims, 25 Rivers , 108 Sri Kishkindha Hanuman Vigraha Pratishtha, 1008 Sri Rama Kalyanotsavas, Sri Ramakatha, Ayodhya Sri Rama Paduka Pallaki Utsava Sri Hanuman Chalisa , Sundarkanda, Parayana

Sri Hanumad Janmabhoomi Kishkindha

Sri Rama Janmabhoomi Ayodhya

Sri Sita Devi Janmabhoomi Janakpuri

2020-23 : Karnataka, Kerala, Tamil Nadu, Puducherry, A.P, Telangana,
2023-26 : Goa, Maharashtra, Gujarat , Rajasthan, M.P , Chhattisgarh,
2026-29 : Odisha, Jharkhand, Assam, Ar.Pradesh,West Bengal , Hi.Pradesh, Manipur, Meghalaya, Mizoram, Nagaland, Sikkim, Tripura
2029-32 : Bihar, Punjab , J &Kashmir, Uttarakhand, Chandigarh, Haryana, Delhi, U.P, Nepal,

WE ARE COORDINATELY INVITING ALL THE DEVOTEES TO PARTICIPATE IN THIS HISTORICAL HOLIEST HANUMAD JANMABHOOMI KISHKINDHA HANUMAD RATHA YATRA SRI HANUMAD BHAKTI VAIBHAVA VIJAYA YATRA AND GET THE DIVINE BLESSINGS OF LORD SRI HANUMAN

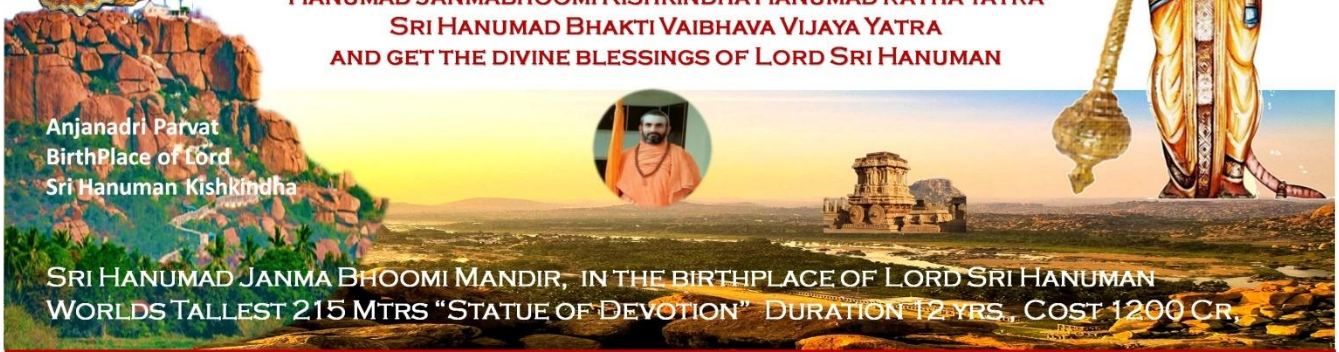

SRI HANUMAD JANMA BHOOMI TEERTHA KSHETRA TRUST (REG.135/20),
SRI PAMPAKSHETRA KISHKINDHA SWARNAHAMPI - BHAKTINAGARA SAMRAJYA,
REG OFFICE: SWARNAHAMPI (NEW HAMPI), HOSPET TQ. BELLARY DIST, KARNATAKA 583239, CONTACT: 8762711113/6,
OFFICE: KISHKINDHA HANUMAN HALLI, ANEGONDI, GANGAVATI T.Q, KOPPAL DISTRICT – 583234, CONTACT: 8500411115/8
HANUMADJANMABHOOMITRUST@GMAIL.COM, SWARNAHAMPI@GMAIL.COM,

Puri Govardhana Peetha Jagadguru Shankaracharya
Poojya Swami Sri Nischalananda Sarasati Ji Maharaj

Sri Pampa Virupaksheshwara Swamy
Sri Kishkindha Hanumad Sameta
Sri Sita Rama Lakshmana Swamy
Sri Balanjaneya Sameta Mata Anjanidevi

SRI HANUMAD JANMABHOOMI KISHKINDHA
3RD YEAR 2023 RATHAYATRA INAUGURATION
BY PURI GOVARDHANA PITHA JAGADGURU SHANKARACHAYA
POOJAPAD SWAMI NISCHALANANDA SARASWATI JI MAHARAJ
IN BANGALORE

SRI HANUMAD JANMABHOOMI KISHKINDHA 3RD YEAR RATHAYATRA INAUGURATION
BY PURI GOVARDHANA PITHA JAGADGURU SHANKARACHAYA JI MAHARAJ IN BANGALORE

श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा पम्पाक्षेत्र - कर्नाटक
Sri Hanumad Janmabhoomi Kishkindha Ratha Yatra
12 Years 3rd Year 2023 Akhila Bharata Ratha Yatra
Kishkindha to Ayodhya to Janakpuri
Anjanadri Parvat
BirthPlace of Lord
Sri Hanuman
Kishkindha
SRI HANUMAD JANMABHOOMI TEERTH KSHETRA TRUST ® PAMPAKSHETRA KISHKINDHA

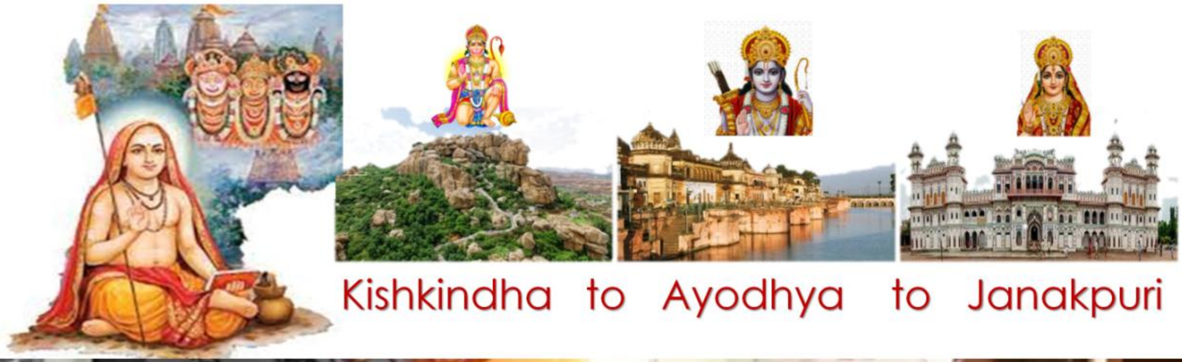
Kishkindha to Ayodhya to Janakpuri

“ಅಯೋಧ್ಯಾ ಶ್ರೀ ರಾಮ ಬ್ರಹ್ಮರಥ”

ಶ್ರೀರಾಮ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಅಯೋಧ್ಯೆ - ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ಕಿಷ್ಕಿಂಧೆ - ಎರಡು ಕ್ಷೇತ್ರಗಳ 17 ಲಕ್ಷವರ್ಷಗಳ
ತ್ರೇತಾಯುಗದ ದಿವ್ಯ ಸಂಬಂಧ ವೈಭವಗಳನ್ನು ಪುನ: ಸ್ಥಾಪಿಸಲು ಭಗವಂತನ ಪ್ರೇರಣೆ ಯಿಂದ
ನಿರ್ಮಾಣ ಗೊಳ್ಳುತ್ತಿರುವ ದಿವ್ಯ ರಥ
ಶ್ರೀ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿ ತೀರ್ಥ ಕ್ಷೇತ್ರ ಟ್ರಸ್ಟ್(ರಿ) ವತಿ ಯಿಂದ ನಿರ್ಮಿಸಿ ಹನುಮದ್ ಜನ್ಮಭೂಮಿಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರ
ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ಸ್ವರ್ಣ ಹಂಪಿ ಪರವಾಗಿ, ಶ್ರೀ ಹನುಮಂತ ದೇವರ ಪರವಾಗಿ ಅಯೋಧ್ಯಾ ಶ್ರೀ ರಾಮಜನ್ಮಭೂಮಿ ಶ್ರೀರಾಮ
ಚಂದ್ರ ದೇವರೆಗೆ ಸಮರ್ಪಿಸುವ , ಅಯೋಧ್ಯಾ ಶ್ರೀ ರಾಮ ರಥ “ ದಿವ್ಯ ಬ್ರಹ್ಮ ರಥ”
ಕೇಸರೀ ಅಂಜನೀ ಸುತ ವಾಯುಪುತ್ರ ಶ್ರೀ ಹನುಮಂತ ದೇವರು ಅಯೋಧ್ಯಾ ಶ್ರೀ ರಾಮ ಚಂದ್ರ ದೇವರೆಗೆ ಸಮರ್ಪಿಸುವ
ದಿವ್ಯ ಬ್ರಹ್ಮ ರಥ,

ಜಯ ವಿರೂಪಾಕ್ಷ

ಜಯ ಶ್ರೀರಾಮ ಜಯ ಹನುಮಾನ್

By Sri Hanumad Janma Bhoomi Teertha Kshetra Trust (Reg.135/2020)

Sri Pampakshetra Kishkindha Swarnahampi Bhaktinagara Samrajya,
Reg Off : SwarnaHampi (New Hampi), Hospet TQ. Vijayanagara Dist, Karnataka 583239,
hanumadjanmabhoomitrust@gmail.com, swarnahampi@gmail.com, , www.kishkindha.org Contact : 8500411115/8, 8762711113/6

अंजनीगर्भ संभूत कपीन्द्र सचिवोत्तम । रामप्रिय नमस्तुभ्यं हनुमन् रक्ष सर्वद ॥
Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust ®
Ayodhya Sri Rama Ratha
Rama Janmabhoomi Dharma Ratha
'84' Feet Worlds Tallest
Chariot for Ayodhya
Srirama Janmabhoomi Madir
from Kishkindha
On behalf of Sri Hanuman from Kishkindha (the birth place of Sri Hanuman) the Staunch & Paramount Devotee of Sri Rama, and Pinnacle of Devotion, Presenting grand 84'Feet Worlds tallest Brahma Ratham - Ayodhya "Sri Rama Ratham" to his Lord Sri Ramachandra for his birthplace Temple Sri Rama Janmabhoomi Mandir
5'
Kalasha
9'
Alankara
35'
Peetham -
5'
10'
Upper Base
10'
Base
10'
Chakra -
Ayodhya Sri Rama Ratha
Width – 26 F
SRI RAMAANUGRAHA
SRI AYODHYA RAM PARIVAR,
SUVARNA KALASHAM,
NAVARATNA SIMHASANAM,
3000 C.F.T TAKE WOOD,
SAMPOORNA SRI VALIKI
RAMAYANA CHITRAS,
DURATION : 2 YRS 2021-23
BUDGET : 4 CRO
DONATE
Canara Bank
Trust A/C Name : Sri Hanumad Janma Bhoomi Teertha Kshetra Trust (R),
A/C No : 1187101014373,
Bank : Canara Bank,
IFSC : CNRB0001187,
Branch : Hampi,
PAN : AAZTS5606H
By Sri Hanumad Janma Bhoomi Teertha Kshetra Trust (Reg.135/20)
Sri Pampakshetra Kishkindha Swarnahampi - Bhaktinagara Samrajya,
Office: Kishkindha Hanuman Halli, Anegondi, Gangavati T.Q, Koppal District – 583234
www.kishkindha.org | www.swarnahampi.org
Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust
@ SHJBTKTrust

https://www.youtube.com/watch?v=uN3fqPvrxjc&t=34s

Sri Hanumad Janmabhoomi Pampakshetra Kishkindha- Karnataka
अंजनीगर्भ संभूत कपीन्द्र सचिवोत्तम ।
रामप्रिय नमस्तुभ्यं हनुमन् रक्ष सर्वद ।।
मनोजवं मारुततुल्यवेगमं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।
215 Mtr
Worlds Tallest
STATUE OF
DEVOTION
DONATE
Anjanadri Parvat
BirthPlace of Lord
Sri Hanuman Kishkindha
SRI HANUMAD JANMA BHOOMI MANDIR, IN THE BIRTHPLACE OF LORD SRI HANUMAN
WORLDS TALLEST 215 MTRS "STATUE OF DEVOTION" DURATION 12 YRS, COST 1200 CR,
By Sri Hanumad Janma Bhoomi Teertha Kshetra Trust (Reg.135/20)
Sri Pampakshetra Kishkindha Swarnahampi - Bhaktinagara Samrajya,
Reg Office: SwarnaHampi (New Hampi), Hospet TQ. Bellary Dist, Karnataka 583239 8762711113/6,
Office: Kishkindha Hanuman Halli, Anegondi, Gangavati T.Q, Koppal District – 583234 Contact: 8500411115/8
hanumadjanmabhoomitrust@gmail.com, swarnahampi@gmail.com,
www.kishkindha.org | www.swarnahampi.org
Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust
@ SHJBTKTrust

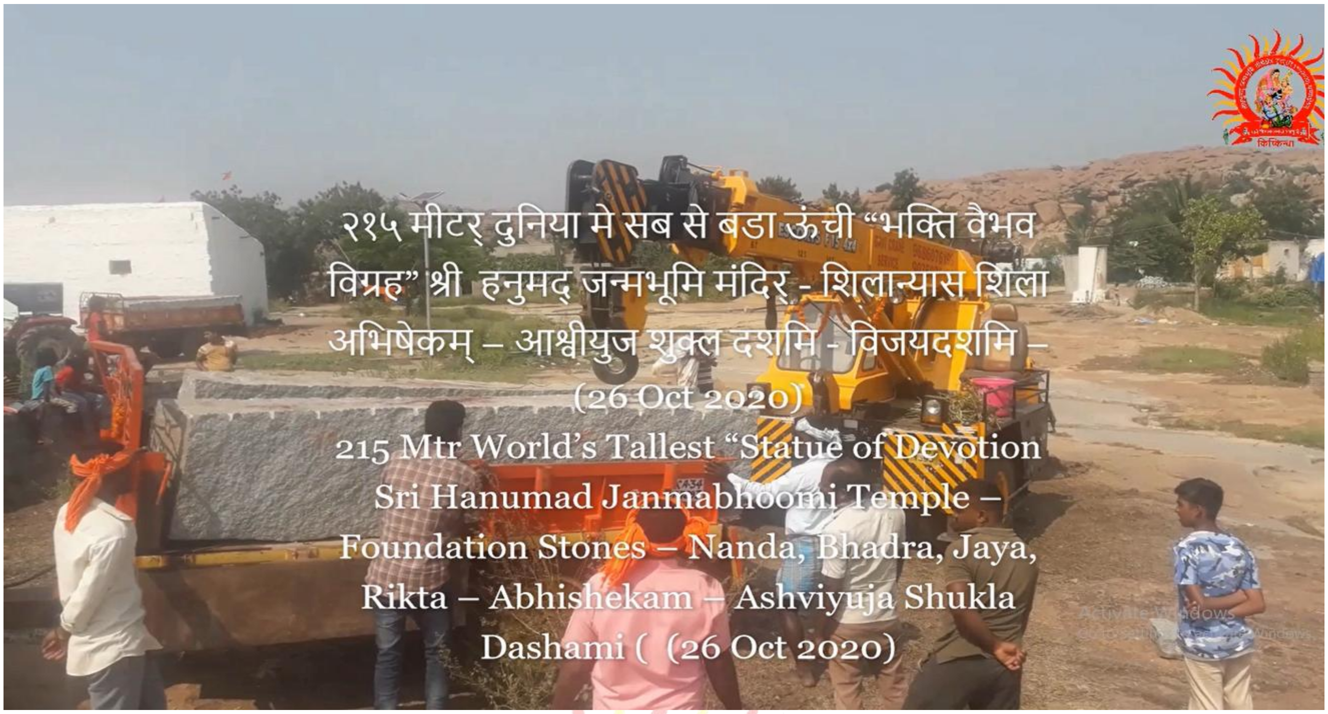

On 26th Oct 2022 Shila Poojan Performed by Sri Govindananda Saraswati Swamiji in Kishkindha – for the upcoming project

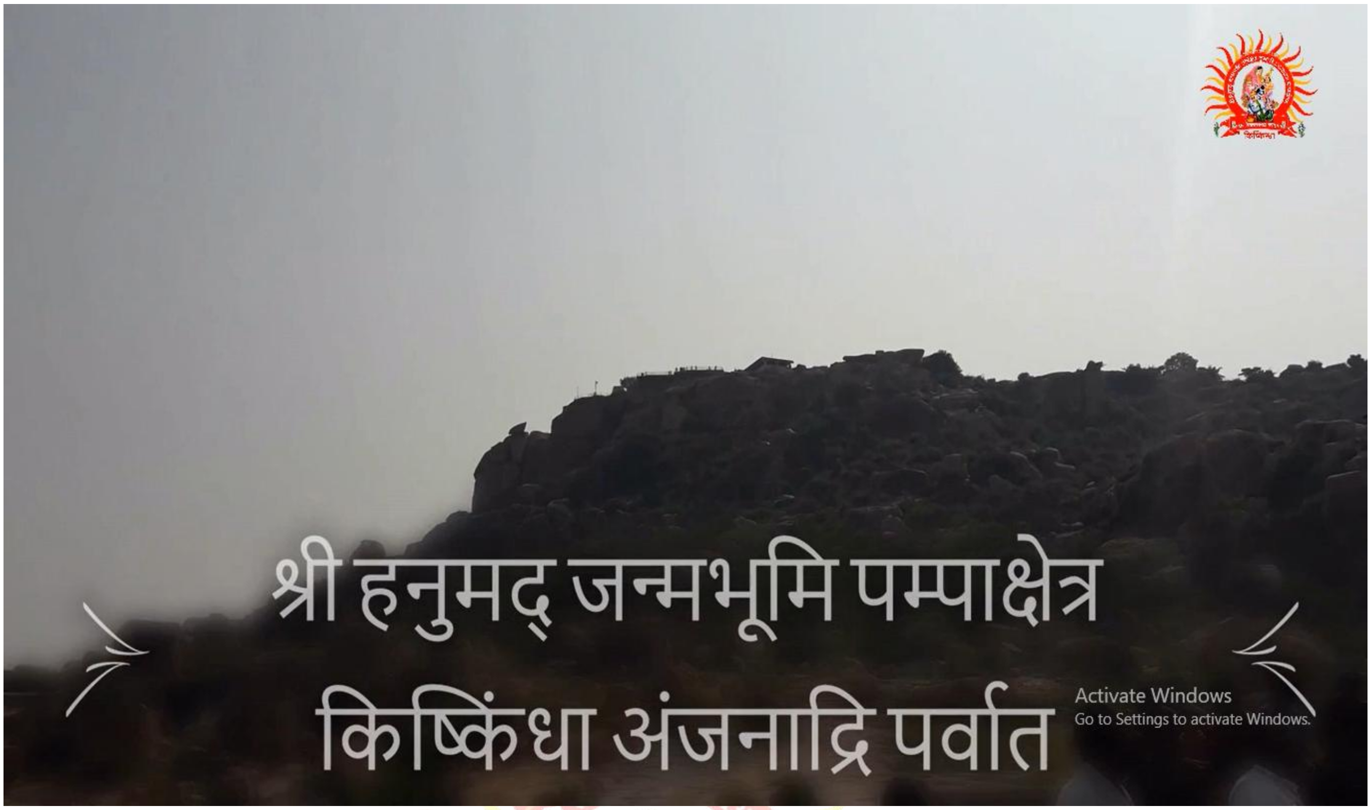

https://fb.watch/fb1yZs1nwp/

Sri Kishkindha Hanuman Vigraha Pratishtha in Swarna Hampi by Poojya H.H Sri Govindananda Saraswati Swamiji with the request of New Hampi Village People Sri Poojya Swamiji installed first Kishkindha Sri Hanuman Vigraha in New Hampi Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust (R) planning to install 108 Sri Kishkindha Sri Hanuman Vigrahas in Karnataka during the Kishkindha Ratha Yatra in which the 1st Vigraha installed in Pampakshetra Swarna Hampi New Hampi Village only

https://www.youtube.com/watch?v=4yB6dy8wLUE

GOD BLESS YOU
पात्र

Ancient Ayodhya village in Pampakshetra koppal (Karnataka)

पंपक्षेत्र कोप्पल (कर्नाटक) में प्राचीन अयोध्या गांव

त्रेता युग में श्री राम रावण के युद्ध के बाद, जब श्री राम वानरों के साथ अयोध्या चले गए और राज्याभिषेक किया गया, तब श्री राम कई बार पंपक्षेत्र किष्किंधा आए, तब सुग्रीव श्री अयोध्या सम्राट ने पंपक्षेत्र किष्किंधा में श्री राम के लिए एक नया गांव बसाया, वह गाँव अभी भी पंपक्षेत्र किष्किंधा शहर के करीब है, यह अभी भी "अयोध्या" के रूप में फल-फूल रहा है, "अयोध्या" गाँव में श्री रामचन्द्र को समर्पित एक मंदिर भी है।

After the battle of Sri Rama and Ravana in the Treta Yuga, after Sri Rama went to Ayodhya with the monkeys and was crowned, Sri Ram came to Pampakshetra Kishkindha many times, then Sugrivu established a new village for Sri Rama (Sri Ayodhya Chakraborty) in Pampakshetra Kishkindha, and that village is still part of the city of Pampakshetra Kishkindha. Close by, still flourishing as "Ayodhya", there is also a temple dedicated to Sri Ramachandra in the village of "Ayodhya".

अयोध्या भारत के कर्नाटक राज्य के कोप्पल जिले के गंगावती तालुक में एक छोटा सा गांव/टोला है। यह अयोध्या पंचायत के अंतर्गत आता है। यह गुलबर्गा डिवीजन के अंतर्गत आता है। यह जिला

मुख्यालय कोप्पल से पूर्व की ओर 31 किमी दूर स्थित है। गंगावती से 26 कि.मी. राज्य की राजधानी बेंगलुरु से 343 किलोमीटर दूर

अयोध्या पिन कोड 583227 है और डाक प्रधान कार्यालय गंगावती एम वी सर्कल है।

हुलिगी (9 किमी), अनेगुंडी (10 किमी), मल्लापुर (11 किमी), हितनाल (11 किमी), होसल्ली (12 किमी) अयोध्या के नजदीकी गांव हैं। अयोध्या पश्चिम की ओर कोप्पल तालुक, उत्तर की ओर गंगावती तालुक, दक्षिण की ओर हागरीबोम्मनहल्ली तालुक, दक्षिण की ओर संदुर तालुक से घिरा हुआ है।

होसपेट, संदुर, तेक्कलकोटा, मुंदरगी अयोध्या के निकटतम शहर हैं

Ayodhya is a small Village/hamlet in Gangavathi Taluk in Koppal District of Karnataka State, India. It comes under Ayodhya Panchayath. It belongs to Gulbarga Division . It is located 31 KM towards East from District head quarters Koppal. 26 KM from Gangavathi. 343 KM from State capital Bangalore

Ayodhya Pin code is 583227 and postal head office is Gangavati M V Circle .

Huligi (9 KM) , Anegundi (10 KM) , Mallapur (11 KM) , Hitnal (11 KM) , Hosalli (12 KM) are the nearby Villages to Ayodhya. Ayodhya is surrounded by Koppal Taluk towards west , Gangavathi Taluk towards North , Hagaribommanahalli Taluk towards South , Sandur Taluk towards South .

Hospet , Sandur , Tekkalakota , Mundargi are the near by Cities to Ayodhya

https://kannada.news18.com/news/national-international/koppal-ayodhya-named-village-in-ganagavathi-taluk-1529813.html

https://www.youtube.com/watch?v=EEaLIqY2pnY

Ayodhya Village in
Pampakshetra
Ayodhya Village in
Pampakshetra - Koppal district
Karnataka

ಕೊಪ್ಪಳ

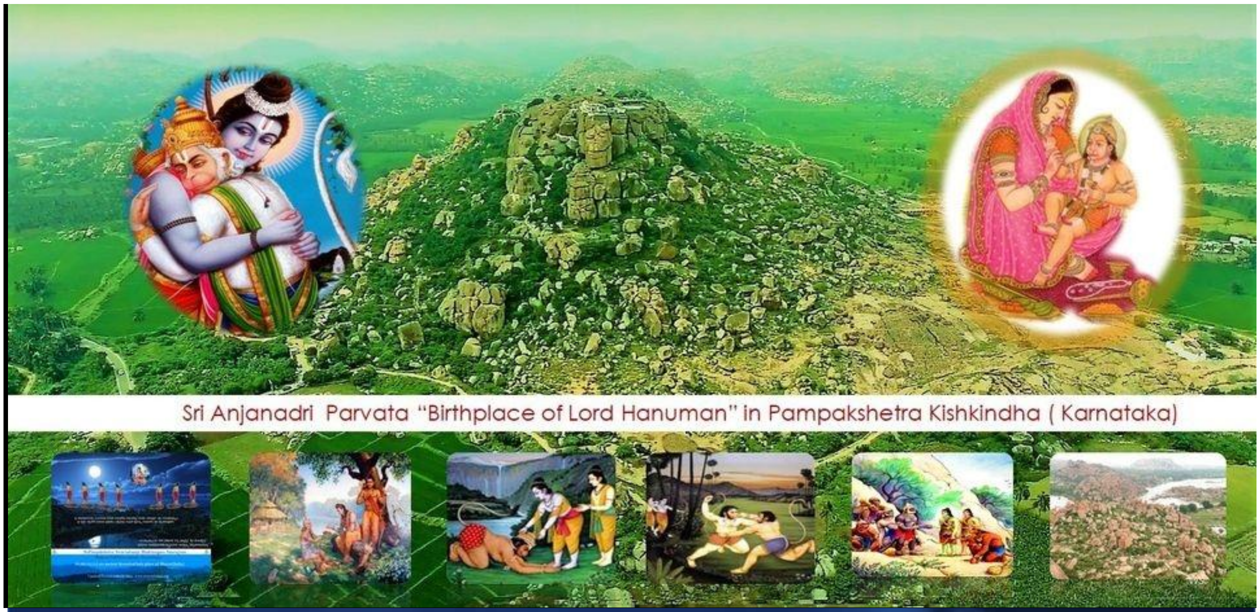
Sri Anjanadri Parvata "Birthplace of Lord Hanuman" in Pampakshetra Kishkindha (Karnataka)

ಶ್ರೀ ಹೇಮಕೂಟನಿಲಯ: ಪಂಪಾಲಿಂಗಿತ ಕಾಮುಕ: ಗಂಗಾಧರೋ ವಿರೂಪಾಕ್ಷೋ ಮಂಗಳಂ ದಿಶತಾತ್ಸದಾ -(ಶ್ರೀ ಪಂಪಾಮಾಹಾತ್ಮ್ಯಂ)
ಶ್ರೀ ಕ್ಷೇತ್ರಂ ಭಕ್ತಿನಗರಂ ಭವಬಂಧ ಪ್ರಣಾಶಕಂ । ಭಕ್ತಿಮುಕ್ತೀ ಸಂಪ್ರದದ ಜ್ಞಾನಾಸ್ತ್ವ ಚಂದ್ರತಾರಕಂ-(ಶ್ರೀ ಭಕ್ತಿನಗರಾಷ್ಟಕಮ್)
೩೧,೦೬,೧೩,೧೧೫ ಸಂ॥ ಐತಿಹಾಸಿಕ ದಿವ್ಯ ಪುಣ್ಯಕ್ಷೇತ್ರ "ಶ್ರೀ ಪಂಪಾಕ್ಷೇತ್ರ"
ಭಗವಂತ, ಮಹಾಭಾಗವತರ ದಿವ್ಯಸಂಗಮ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯ "ಭಕ್ತಿನಗರಸಾಮ್ರಾಜ್ಯ"
SriPampakshetra Swarnahampi Bhaktinagara Samrajyam
Bhagavan VedaVyasa Ashram – Swarnahampi
31,06,13,115 yrs ancient historical holy place of Bharat(India)
Updated Version website soon : www.swarnahampi.org

CONTRIBUTIONS
BHIM UPI Canara Bank
Trust A/C Name : Sri Hanumad Janma Bhoomi Teertha Kshetra Trust (R),
A/C No : 118710104373,
Bank : Canara Bank,
IFSC : CNRB0001187,
Branch : Hampi,
PAN : AAZTS5606H
1 ವರ್ಷ ಕಾಲ ನಡೆಯಲಿರುವ ಶ್ರೀ ಕಿಷ್ಕಿಂಧಾ ರಥ ಯಾತ್ರೆ, 2021 - 22
6,000 - ಕಿಲೋಮೀಟರ್
108 - ಪಟ್ಟಣ
1008 - ಗ್ರಾಮಗಳು
SRI HANUMAD JANMA BHOOMI TEERTHA KSHETRA TRUST (REG.135/20),
SRI PAMPAKSHETRA KISHKINDHA SWARNAHAMPI - BHAKTINAGARA SAMRAJYA,
Office: Kishkindha Hanuman Halli, Anegondi, Gangavati T.Q, Koppal District - 583234 Contact: 8500411115/8
Reg Office: SwarnaHampi (New Hampi), Hospet TQ, Bellary Dist, Karnataka 583239 8762711113/6,
hanumadjanmabhoomitrust@gmail.com, kishkindhasamsthanam@gmail.com, swarnahampi@gmail.com,
www.kishkindha.org | www.swarnahampi.org
www.swarnahampi.org
Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust
@ SHJBTKTrust
215 ಅಡಿ
2020-32 (6+6)

Sri Hanumad Janmabhoomi
Kishkindha Ratha Yatra
in Kashmir
www.kishkindha.org

Sri Hanumad Janmabhoomi
Kishkindha Ratha Yatra
in Kashmir

The sacred Sharda Temple in Kashmir resonates with the divine echoes of Shardiya Navratri puja for the first time since 1947, symbolizing peace & a cultural revival post abrogation of Article 370

Historic Sharad Navratri Puja celebrated at Sharda Temple on LoC after 75 years

SHAFAT MALIK

Kupwara, Oct 15: The inaugural Navratri Puja of SharadNavratri took place at the newly constructed Sharda Temple located on the Line of Control (LoC) in the Teetwal border region of North Kashmir's Kupwara district this past Sunday. This momentous occasion attracted a substantial number of pilgrims from all across the nation, marking the first such celebration in the area in 75 years since the partition.

Swami GovindanandaSaraswati, originally from Hampi and renowned for his rathyatra from Kishkinda, the birthplace of Lord Hanuman in Karnataka, graced the event with his presence, drawing a significant following of devotees.

Adding to the spiritual ambiance were the Kashmiri Pandit pilgrims, including the distinguished A K

Contd on | Page 08

https://www.timesnowhindi.com/videos/news-videos/navratri-worship-took-place-for-the-first-time-after-

independence-in-sharda-temple-of-kashmir-video-104614449

https://www.youtube.com/watch?v=o7Bdi94sHYs
https://www.youtube.com/watch?v=TEkC2R5pxx4
https://www.youtube.com/watch?v=o7Bdi94sHYs&t=26s

ANI
Activate Windows
Go to Settings to activate Windows.

All India Hanumanji Janambhumi Rath Yatra rings in hope for a safer Kashmir

In a historic first for the Kashmir Valley, the revered Hanuman Rath Yatra, led by Swami Govinand Saraswati Maharaja, made its way into Srinagar on Wednesday, marking a significant moment of spiritual unity and devotion.

This monumental pilgrimage, which commenced three years ago, embarked on a mission to cultivate Bhakti awareness, instilling a sense of unity and magnificence in this ancient land. The Yatra seeks to ignite the flame of devotion, drawing inspiration from Hanuman ji's selfless service to Lord Ram, serving as a guiding light for a society free from malevolence.

One of the most remarkable aspects of this Yatra is the profound message it carries for the displaced Kashmiri Pandits, assuring them that the valley is now a safer place for them to return to their homeland. Kashmiri Pandit

K.K. Raina articulated this sentiment, stating, “Bhagwan Ram sent Hanuman to a place before visiting it, signifying the divine assurance of safety.” This, he believes, is a universal message, urging everyone to return without trepidation.

Swami Govinand Saraswati Maharaja, speaking to reporters, recalled that the Jammu and Kashmir administration initially expressed concerns about the Yatra. However, the pilgrimage remained unstoppable, and he expressed his gratitude for the warm welcome extended by people from all walks of life. The Rath Yatra, now reaching the Kashmir Valley, is planned to continue for a total of twelve years, culminating in Kishkindha, Karnataka, where a grand temple will be erected.

This historic event also casts light on Sharda Mata, the embodiment of spirituality and learning. Efforts are underway to rebuild the Sharda temple at Teetwal, Kashmir, a feat made possible through the determined endeavors of Ravinder Pandita and appeals from local residents to the Government of India. They seek negotiations with Pakistan to establish a corridor to the original Mata Sharda temple, which currently lies in ruins in Pakistan-Occupied Kashmir.

Another significant announcement is the construction of a Lord Hanuman temple in Kishkindha, Karnataka, designed after the illustrious Ram temple in Ayodhya.

The Yatra, which spans three years already, is set to continue for an additional nine years. It commenced its journey into the Kashmir Valley on October 12, with a grand reception at the Durganag temple. On October 13, 2023, the Hanuman Rath Yatra passed through the Kheer Bhawani Mata temple in Tiker, Kupwara, before arriving at the remote border area of Teetwal on October 14, 2023.

The Yatra returned to Srinagar on October 16 and stops along the way included Hanuman temple in Srinagar, Zesta Devi Temple, and the Kheer Bhawani temple in Ganderbal before proceeding to Vaishno Devi in Katra.

The arrival of the All-India Janambhumi Rath Yatra in Kashmir is a momentous occasion not only for the devotees but for the entire region, as it disseminates messages of unity, devotion, and hope, rekindling the spiritual and cultural heritage of this ancient land.

Swami Govinand Saraswati Maharaja emphasized that the Yatra's mission is to promote Bhakti awareness in society, spreading the message of Ramayana to foster unity and glory in this ancient land. He also extended an invitation to the people of Kashmir to support the construction of the Hanuman Janambhumi temple in Kishkindha, Karnataka, akin to the renowned Ram temple at Ram Janambhoomi.

https://risingkashmir.com/all-india-hanumanji-janambhumi-rath-yatra-rings-in-hope-for-a-safer-kashmir/

Lal Chowk Rath Yatra: जब आप सो रहे थे, श्रीनगर के लाल चौक पर इतिहास बन रहा था... Oct 19, 2023, 06:39 AM IST

Rath Yatra At Srinagar: कश्मीर की धरती पर पहली बार जन्मभूमि रथ यात्रा पहुंची और साथ ही उस लाल चौक (Lal Chowk) पर हनुमान चालीसा (Hanuman Chalisa) पढ़ी गई, जहां कभी हमारे भारत का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा भी फहराना मुश्किल था. **https://www.firstpost.com/india/for-the-first-time-after-1947-navratri-puja-took-place-at-sharda-temple-in-kashmir-amit-shah-13255712.html**

https://youtu.be/HIkSmjYicJc **https://youtu.be/GKZR3QIxnQ4**

Sri Hanumad Janmabhoomi Kishkindha Ratha Yatra
Sri Hanumad Bhakti Vaibhava Bhaktinagara Samrajya Yatra
Akanda Bharata Hindu Rastra Nirmana Vijaya Yatra
Bharat to Nepal

For the first time in history, Sri Hanuman ji going to the holy land of Nepal Hindu Rastra to seek the blessings of his mother Jagadamba Bhagwati Mata Sitadevi in Janakpur. **Nepal 4th to 9th Jan 2024**

4th ,5th ,9th Jan 2024
Janakpuri

6th to 8th Jan 2024
Pashupatinath

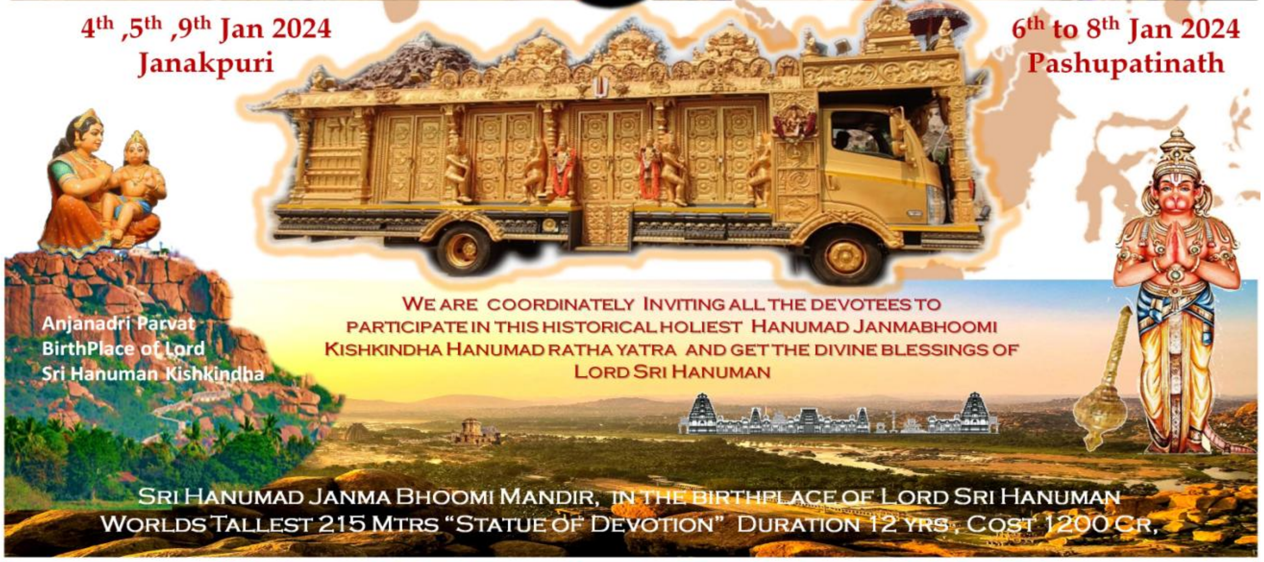

www.kishkindha.org | Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust | @ SHJBTKTrust

SRI HANUMAD JANMA BHOOMI TEERTHA KSHETRA TRUST (REG.135/20),
SRI PAMPAKSHETRA KISHKINDHA SWARNAHAMPI - BHAKTINAGARA SAMRAJYA,
REG OFFICE: SWARNAHAMPI (NEW HAMPI), HOSPET TQ. VIJAYANAGARA DIST, KARNATAKA 583239,
✆: : 8500411115/8, 8762711113, hanumadjanmabhoomitrust@gmail.com, WWW.KISHKINDHA.ORG,

Sri Hanumad Janmabhoomi
Kishkindha Ratha Yatra 4th August to 30 Sept 2023 In
Indraprasth (Delhi) – Hindu Rastra Bharat,
Anjanadri Parvat
BirthPlace of Lord
Sri Hanuman Kishkindha
WE ARE COORDINATELY INVITING ALL THE DEVOTEES TO PARTICIPATE IN THIS HISTORICAL HOLIEST HANUMAD JANMABHOOMI KISHKINDHA HANUMAD RATHA YATRA SRI HANUMAD BHAKTI VAIBHAVA VIJAYA YATRA AND GET THE DIVINE BLESSINGS OF LORD SRI HANUMAN
SRI HANUMAD JANMA BHOOMI MANDIR, IN THE BIRTHPLACE OF LORD SRI HANUMAN
WORLDS TALLEST 215 MTRS "STATUE OF DEVOTION" DURATION 12 YRS , COST 1200 CR,
www.kishkindha.org
Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust
@ SHJBTKTrust

सूचना
आदरणीय श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी द्वारा संस्थापित संकीर्तन भवन में

Akhandha Bharat Hindu Rastra 12 Yrs 3rd Year
Sri Hanumad Janmabhoomi Kishkindha Ratha Yatra in
Nepal 4th to 9th Jan 2024

12 yrs Akhila Bharata Yatra highlights (2020 to 32)
Sri Hanumad Janmabhoomi - Kishkindha to
Sri Rama Janmabhoomi – Ayodhya to
Sri Sita Mata Janmabhoomi – Janakpuri,
2,00,000 k.m, 29 States , 600 Districts, 6000 Talukas, 600 Pilgrims, 25 Rivers , 108 Sri Kishkindha Hanuman Vigraha Pratishtha, 1008 Sri Rama Kalyanotsavas, Sri Ramakatha, Ayodhya Sri Rama Paduka Pallaki Utsava Sri Hanuman Chalisa , Sundarkanda, Parayana Ratha Yatra Grand celebrations , Sri Hanumad Janmabhoomi Mandir Nirman Yatra

WE ARE COORDINATELY INVITING ALL THE DEVOTEES TO PARTICIPATE IN THIS HISTORICAL HOLIEST HANUMAD JANMABHOOMI KISHKINDHA HANUMAD RATHA YATRA SRI HANUMAD BHAKTI VAIBHAVA VIJAYA YATRA AND GET THE DIVINE BLESSINGS OF LORD SRI HANUMAN

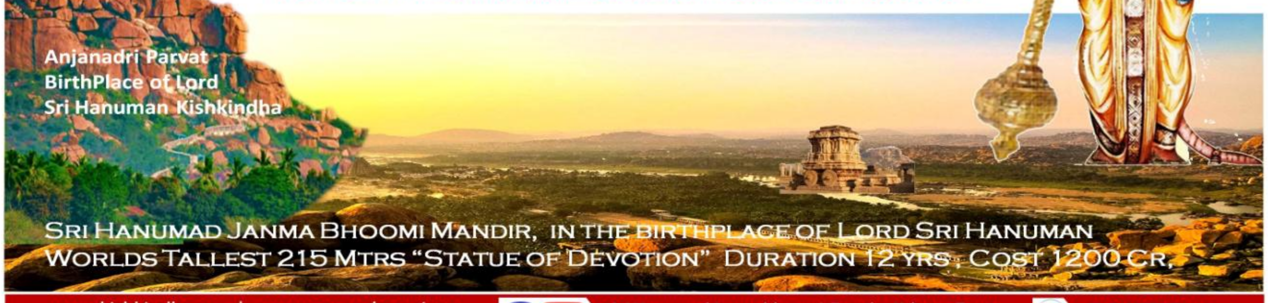

www.kishkindha.org | www.swarnahampi.org | Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust | @ SHJBTKTrust

SRI HANUMAD JANMA BHOOMI TEERTHA KSHETRA TRUST (REG.135/20),
SRI PAMPAKSHETRA KISHKINDHA SWARNAHAMPI - BHAKTINAGARA SAMRAJYA,
REG OFFICE: SWARNAHAMPI (NEW HAMPI), HOSPET TQ. BELLARY DIST, KARNATAKA 583239,
CONTACT: 8762711113 : 8500411115/8 HANUMADJANMABHOOMITRUST@GMAIL.COM, SWARNAHAMPI@GMAIL.COM,

ॐ
श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा रथयात्रा
ऐतिहासिक दर्शन
भगवान श्री हनुमानजी को जन्मभूमि किष्किन्धा(भारत)मा विश्वकै अग्लो ७०५ फिटको प्रतिमा सहित विशाल धाम निर्माणको क्रममा १२ वर्ष (सन् २०३२) मा यात्रा पूर्ण हुने यो ऐतिहासिक रथयात्रा माता जानकी(जनकपुर)को पूजा अर्चना गरी आराध्यदेव पशुपतिनाथको दर्शनका लागि काठमाडौं आउने हुदा उक्त रथमा विराजित संकटमोचन श्री हनुमानको ऐतिहासिक प्रतिमा दर्शनका लागि पाल्नुहुन हार्दिक निमन्त्रणा गर्दछौं ।
प्रार्थी
राष्ट्रिय संयोजक:
मा. बिमल कुमार केडिया
९८५१०२१६५०
संयोजक (सांस्कृतिक एवं धार्मिक):
श्री केशव राज घिमिरे
९८५११३४८९५
संयोजक (काठमाडौं):
श्री संजय सर्राफ
९८५१०२०९२७
संयोजक (जनकपुर):
श्री निर्मल चौधरी
९८५४०२०३२७
सल्लाहकार संस्था :
नेपाल राष्ट्रिय मारवाडी परिषद्
मारवाडी सेवा समिति नेपाल
अग्रवाल सेवा केन्द्र
नेपाल जैन परिषद्
महेश्वरी समाज काठमाडौं
प्रमुख संस्था:
श्री राम हनुमान सेवा मंडल
श्री कुलेश्वर हनुमान मन्दिर सेवा समिति
सहयोगी संस्था:
श्री बजरंग सत्संग मंडल
श्री सनातन प्रतिष्ठान नेपाल
श्री श्याम सत्संग मंडल
श्री पवनपुत्र हनुमान सेवा मंडल
श्री मैतीदेवी मारवाडी मित्र परिषद्
श्री मैतीदेवी मित्र परिषद्
श्री झापा मारवाडी समाज
श्री नवदुर्गा भवानी सेवा संघ
श्री राणी सती सेवा संघ
श्री नेपाल मारवाडी ब्राम्हण सेवा संघ
इण्डियन सिटिजन एशोसिएसन अफ नेपाल
मारवाडी युवा मंच
मारवाडी महिला मंच
दिर्घायु नेपाल
श्री हनुमान अराधना नेपाल
आयोजक समिति:
श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा रथयात्रा समिति, नेपाल

ॐ
श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा रथयात्रा
कार्यक्रमहरू
पौष २१ गते २०८० (6th Jan 2024)
रथयात्रा स्वागत
बेलुका ४:३० बजे सूर्यविनायक, भक्तपुर
पौष २२ गते २०८० (7th Jan 2024)
श्री पशुपतिनाथ मन्दिरका लागि प्रस्थान
बिहान ८:०० बजे अग्रवाल सेवा केन्द्रबाट प्रस्थान
हंसमंडप (पशुपति क्षेत्र)मा प्रतिमा दर्शन
बिहान ११:०० बजेबाट भक्तजनहरुका लागि प्रतिमा दर्शन
अग्रवाल सेवा केन्द्रमा दर्शन
दिउँसो ३:०० बजे देखि राती ८:०० बजेसम्म
श्री पशुपतिनाथ मन्दिरमा पूजन
बिहान १०:०० बजे
रथको महानगर परिक्रमा
दिउँसो १:०० बजे हंसमंडपबाट प्रस्थान
सुन्दरकाण्ड पाठ
बेलुका ४:०० बजे देखि (अग्रवाल भवन)
पौष २३ गते २०८० (8th Jan 2024)
अग्रवाल सेवा केन्द्रमा प्रतिमा दर्शन
बिहान ९:०० बजे देखि राती ८:०० बजेसम्म
परमहंस परिब्राजक डण्डी स्वामी
श्री गोविन्दानन्द सरस्वती स्वामीजी द्वारा प्रवचन
बेलुका ४:०० बजेदेखि
सवामणीको लागि सम्पर्क: शैलेन्द्र शर्मा (९८५११५२९५२), संजय भुपाल (९८५१०५८९४०), सुभाष गोयल (९८५१०३१७६४)
आयोजक समिति:
श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा रथयात्रा समिति, नेपाल

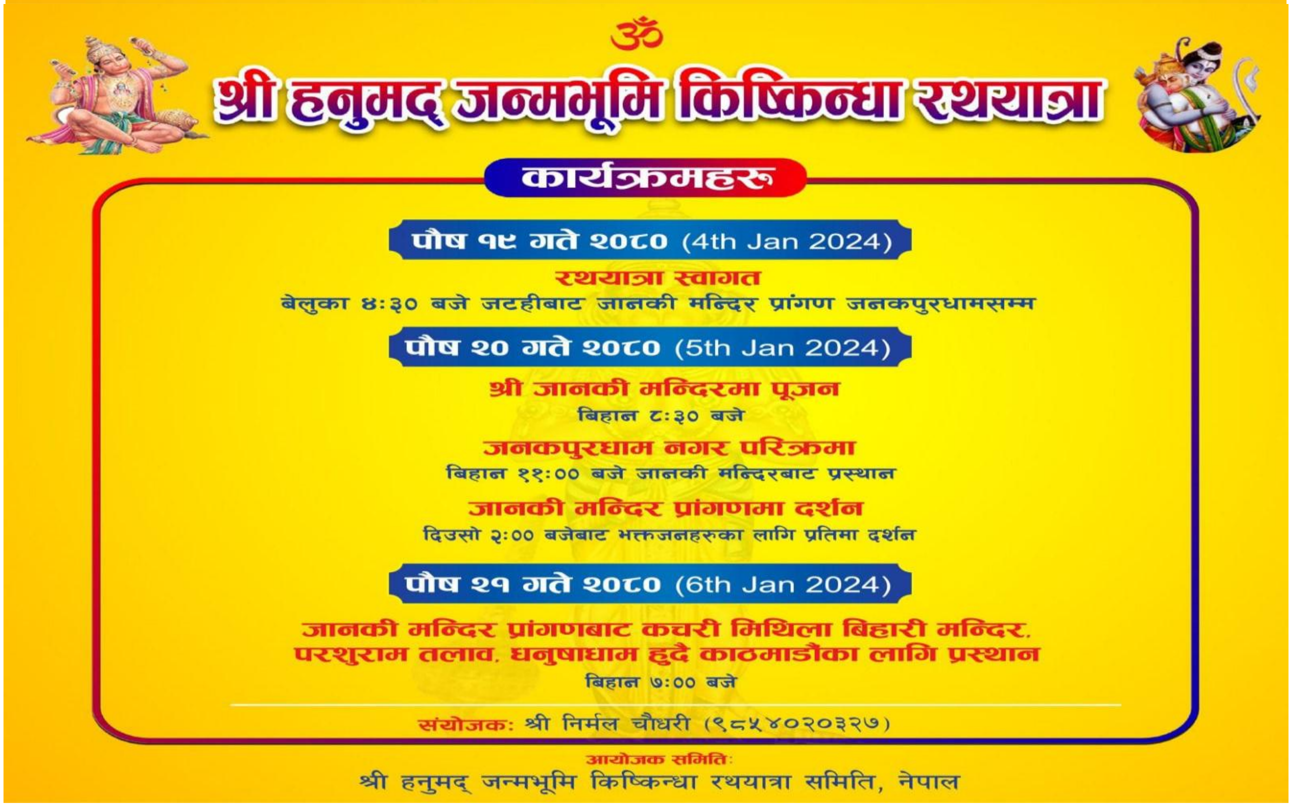
ॐ
श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा रथयात्रा
कार्यक्रमहरू
पौष १९ गते २०८० (4th Jan 2024)
रथयात्रा स्वागत
बेलुका ४:३० बजे जटहीबाट जानकी मन्दिर प्रांगण जनकपुरधामसम्म
पौष २० गते २०८० (5th Jan 2024)
श्री जानकी मन्दिरमा पूजन
बिहान ८:३० बजे
जनकपुरधाम नगर परिक्रमा
बिहान ११:०० बजे जानकी मन्दिरबाट प्रस्थान
जानकी मन्दिर प्रांगणमा दर्शन
दिउसो २:०० बजेबाट भक्तजनहरुका लागि प्रतिमा दर्शन
पौष २१ गते २०८० (6th Jan 2024)
जानकी मन्दिर प्रांगणबाट कचरी मिथिला बिहारी मन्दिर,
परशुराम तलाव, धनुषाधाम हुदै काठमाडौंका लागि प्रस्थान
बिहान ७:०० बजे
संयोजक: श्री निर्मल चौधरी (९८५४०२०३२७)
आयोजक समिति:
श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा रथयात्रा समिति, नेपाल

किष्किन्धा रथ का जनकपुरधाम में भव्य स्वागत

रोजाना टाइम्स

जनकपुरधाम/मिश्री लाल मधुकर। भगवान श्री हनुमान जी की जन्मभूमि किष्किन्धा हम्पी (कर्नाटक)में विश्व का सबसे ऊंची705फीट का प्रतिमा बनने जा रही है। इसके लिए 2020को शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती जी महाराज के शिष्य दण्डी स्वामी गोविंदा स-रस्वती जी महाराज द्वारा श्री हनुमंत जन्मभूमि किष्किन्धा रथ यात्रा निकाली गयी है।जो 12बर्षो तक भारत तथा नेपाल के सभी जगहों का भ्रमण करेगी। किष्किन्धा रथ गुरुवार को जनकपुरधाम पहुंची। शुक्रवार को किष्किन्धा रथ को गाजा बाजा के साथ नगर परिक्रमा कराया गया। जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु की

सहभागिता थीं। किष्किन्धा रथ के जनकपुरधाम के संयोजक निर्मल चौधरी की अगुवाई में निकली इस नगर परिक्रमा में विश्व हिन्दू परिषद नेपाल के महासचिव जीतेन्द्र सिंह, वीरेंद्र साह, मोहन साह, आदित्य मिश्र सहित कई लोग शामिल थे। शनिवार को किष्किन्धा रथ धनुषा धाम होते हुए काठमांडू के लिए प्रस्थान करेगी।

https://youtu.be/hrmVK-Z2y7Q

किष्किन्धा रथ का जनकपुरधाम में भव्य स्वागत

जनकपुरधाम। भगवान श्री हनुमान जी की जन्मभूमि किष्किन्धा हम्पी (कर्नाटक) में विश्व का सबसे ऊंची 705 फीट का प्रतिमा बनने जा रही है

इसके लिए 2020 को शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती जी महाराज के शिष्य दण्डी स्वामी गोविंदा सरस्वती जी महाराज द्वारा श्री हनुमंत जन्मभूमि किष्किन्धा रथ यात्रा निकाली गयी है जो 12बर्षो तक भारत तथा नेपाल के सभी जगहों का भ्रमण करेगी किष्किन्धा रथ गुरुवार को जनकपुरधाम पहुंची। शुक्रवार को किष्किन्धा रथ को गाजा बाजा के साथ नगर परिक्रमा कराया गया। जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु की सहभागिता थीं। किष्किन्धा रथ के जनकपुरधाम के संयोजक निर्मल चौधरी की अगुवाई में निकली इस नगर परिक्रमा में विश्व हिन्दू परिषद नेपाल के महासचिव जीतेन्द्र सिंह, वीरेंद्र साह, मोहन साह, आदित्य मिश्र सहित कई लोग शामिल थे। शनिवार को किष्किन्धा रथ धनुषा धाम होते हुए

किष्किन्धा रथ का जनकपुरधाम में भव्य स्वागत

जनकपुर (रासासं): भगवान श्री हनुमान जी की जन्मभूमि किष्किन्धा हम्पी (कर्नाटक) में विश्व का सबसे ऊंची 705फीट का प्रतिमा बनने जा रही है। इसके लिए सन 2020 में शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती जी महाराज के शिष्य दण्डी स्वामी गोविंदा सरस्वती जी महाराज द्वारा श्री हनुमंत जन्मभूमि किष्किन्धा रथ यात्रा निकाली गयी है, जो 12 वर्षो तक भारत तथा नेपाल के सभी जगहों का भ्रमण कर रहीं है। इसी क्रम में किष्किन्धा रथ गुरुवार को जनकपुर पहुंची। शुक्रवार को किष्किन्धा रथ को गाजा बाजा के साथ नगर परिक्रमा कराया गया, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु की सहभागिता थीं। किष्किन्धा रथ के जनकपुर के संयोजक निर्मल चौधरी की अगुवाई में निकली इस नगर परिक्रमा में विश्व हिन्दू परिषद नेपाल के महासचिव जीतेन्द्र सिंह, वीरेंद्र साह, मोहन साह, आदित्य मिश्र सहित कई लोग शामिल थे। शनिवार को किष्किन्धा रथ धनुषा धाम होते हुए काठमांडू के लिए प्रस्थान करेगी।

मां सीता का आशीष लेने जनकपुर निकले महाबली

जासं, पटना : रामलला मंदिर के उद्घाटन को लेकर देश में भक्तिमय व खुशी का माहौल बना है। सभी अपनी ओर से योगदान देने में लगे हैं। इस कड़ी में राम भक्त हनुमान की जन्मभूमि किष्किन्धा से रथयात्रा राज्यों का भ्रमण करते हुए बुधवार की देर रात को पटना जंक्शन स्थित महावीर मंदिर पहुंची। गुरुवार को रथ का स्वागत महावीर मंदिर प्रबंधन की ओर से किया गया। रथ को मां सीता की भूमि जनकपुर के लिए प्रस्थान किया गया। श्रीहनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के प्रमुख स्वामी गोविंदानन्द सरस्वती ने बताया कि पांच व छह जनवरी को हनुमानजी का रथ जनकपुर में रहेगा। मां सीता का दर्शन, पूजन और उनका आशीष लेकर रथ काठमांडू के लिए रवाना होगा। सात से नौ जनवरी तक पशुपतिनाथ का दर्शन कर 10 जनवरी को सीतामढ़ी में माता जानकी के जन्म स्थान का दर्शन कर 11 जनवरी को अयोध्या पहुंचेगा। अयोध्या धाम में रथयात्रा 25 जनवरी तक रुकेगी। अयोध्या में राम मंदिर निर्माण पूरे होने के बाद हनुमान लला की जन्मभूमि पर विशाल मंदिर बनेगा। कर्नाटक के विजयनगर जिले पंपाक्षेत्र किष्किन्धा में अंजनाद्रि पर्वत पर हनुमान का छोटा मंदिर है। इसी पर्वत के नीचे तुंगभ्रदा नदी के किनारे विशाल भूभाग पर हनुमानजी का भव्य मंदिर मनेगा।

- 10 जनवरी को माता जानकी का दर्शन कर अयोध्या पहुंचेगा रथ
- किष्किन्धा में बनेगा राम भक्त हनुमान का भव्य मंदिर

महावीर मंदिर में विश्राम के बाद श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किंधा से आए रथ के जनकपुर धाम जाने के क्रम में पूजा करते महात्मा श्री गोविंदानन्द सरस्वती व अन्य। • जागरण

राष्ट्रीय सामाजिक न्याय मोर्चा ने की रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के दिन सरकारी कार्यालयों में छुट्टी की मांग

जासं, पटना : राष्ट्रीय सामाजिक न्याय मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्र चौहान, उपाध्यक्ष अमरेंद्र सिंह क्रांति एव राष्ट्रीय प्रवक्ता नीलमणि पटेल ने 22 जनवरी को अयोध्या में होने वाले रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के अवसर पर बिहार के सरकारी कार्यालयों में छुट्टी घोषित किए जाने की मांग सीएम नीतीश कुमार से की है। कहा है कि लंबे समय बाद अयोध्या में राम जन्म भूमि पर भव्य मंदिर का निर्माण एवं राम लला की प्राण प्रतिष्ठा हो रही है। इससे सनातनियों में खुशी का माहौल है।

राजीवनगर में स्वयंसेवकों ने घर-घर बांटा अक्षत

जागरण संवाददाता, पटना : राजधानी के राजीवनगर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने घर-घर जाकर अक्षत का वितरण किया। कृष्ण चंद्र झा ने कहा कि अयोध्या में भगवान की प्रतिमा स्थापित की जा रही है। इससे पूरे देश में उत्साह है। हर कोई अयोध्या जाना चाहता है। अशोक कुमार मिश्र ने कहा कि पूरे देश मे माहौल बदला है। वहीं आरसी सिंह ने कहा कि भगवान की प्रतिमा की स्थापना हर व्यक्ति के लिए प्रसन्नता का अवसर है। अक्षत वितरण कार्यक्रम में इंदु देवी, राजेश ठाकुर, शोभा कुमारी, देवनाथ सिंह सहित कई स्वयंसेवक भजन-कीर्तन करते हुए घर-घर जा रहे थे। राजीव नगर के निवासियों ने मंडली में शामिल लोगों का स्वागत किया। साथ ही लोगों ने अयोध्या जाने की बात कही। भजन-मंडली में शामिल लोग जिस गली से गुजर रहे थे, उधर ही भक्ति की धारा बह रही थी।

माता जानकी का आशीर्वाद लेने जनकपुर के लिए निकले हनुमान

सिटी रिपोर्टर | पटना

पवनपुत्र हनुमान किष्किन्धा से चलकर पहली बार माता जानकी का आशीर्वाद लेने जनकपुर के लिए निकले हैं। श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा रथयात्रा बुधवार की देर रात पटना के महावीर मंदिर पहुंची। गुरुवार की सुबह महावीर मंदिर की ओर से रथयात्रा का पूजन हुआ। श्री हनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के प्रमुख स्वामी गोविंदानंद सरस्वती के नेतृत्व में रथयात्रा गुरुवार की दोपहर जनकपुर के लिए रवाना हो गई। उन्होंने बताया कि 5 और 6 जनवरी को रथ जनकपुर में रहेगा। माता सीता के दर्शन, पूजन और उनका आशीर्वाद लेने के बाद रथयात्रा काठमांडू के लिए रवाना होगी। वहां 7 से 9 जनवरी तक पशुपतिनाथ भगवान के सानिध्य में रथयात्रा रहेगी। वापसी में 10 जनवरी को सीतामढ़ी में माता जानकी जन्मस्थान के दर्शन करके रथयात्रा 11 जनवरी को अयोध्या पहुंचेगी। अयोध्या धाम में रथयात्रा 25 जनवरी तक रुकेगी। स्वामी गोविंदानंद सरस्वती ने बताया कि कर्नाटक के विजयनगर जिले के पंपाक्षेत्र किष्किन्धा में हनुमान जी की जन्मभूमि है। अंजनाद्रि पर्वत पर अभी हनुमान लला का छोटा मंदिर है। पर्वत के ऊपर बड़े मंदिर के निर्माण का स्थान उपलब्ध नहीं है। इसलिए पर्वत के नीचे तुंगभद्रा नदी के किनारे विशाल भूभाग पर हनुमान जी के भव्य मंदिर का निर्माण होना है। मंदिर के शिलापूजन के लिए अखंड भारत के विभिन्न स्थानों पर भ्रमण कर रथयात्रा के माध्यम से भक्तों को आमंत्रित किया जा रहा है। अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण पूरा होने के बाद किष्किन्धा में भी भव्य हनुमान जन्मभूमि मंदिर के निर्माण का शिला पूजन कार्यक्रम घोषित किया जाएगा।

किष्किन्धा से जनकपुर के लिए निकले हनुमान

आस्था

पटना, वरीय संवाददाता। श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा रथयात्रा बुधवार देररात पटना के महावीर मंदिर पहुंची। गुरुवार की सुबह महावीर मंदिर की ओर से रथयात्रा का पूजन हुआ। श्री हनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के प्रमुख स्वामी गोविन्दानन्द सरस्वती के नेतृत्व में रथयात्रा गुरुवार दोपहर में महावीर मंदिर से जनकपुर के लिए चली गयी।

गोविन्दानन्द सरस्वती ने बताया कि 5 व 6 जनवरी को हनुमान जी का रथ जनकपुर में रहेगा। माता सीता के दर्शन, पूजन और उनका आशीर्वाद लेने के बाद रथयात्रा काठमांडू के लिए रवाना होगी। वहां 7 से 9 जनवरी तक पशुपतिनाथ भगवान के सानिध्य में रथयात्रा रहेगी। वापसी में 10 जनवरी को सीतामढ़ी में माता जानकी जन्मस्थान का दर्शन करके रथयात्रा 11 जनवरी को अयोध्या पहुंचेगी। हनुमान जी की जन्मभूमि से चली यह रथयात्रा आराध्य श्रीराम के नये भव्य मंदिर में प्राण-प्रतिष्ठा के आयोजन का साक्षी बनेगी।

पटना से अयोध्या आये हनुमत किष्किंधा रथ रात्रि विश्राम के बाद गुरुवार को हनुमान मंदिर से रवाना करते स्वामी गोविंदा नंद सरस्वती। • हिन्दुस्तान

राम मंदिर के बाद हनुमान लला मंदिर का होगा निर्माण

राम मंदिर का निर्माण पूरा होने के बाद हनुमान लला की जन्मभूमि पर भी विशाल मंदिर का निर्माण शुरू होगा। गोविन्दानन्द सरस्वती ने बताया कि कर्नाटक के विजयनगर जिले के पंपाक्षेत्र किष्किन्धा में रामभक्त हनुमान की जन्मभूमि है। अंजनाद्रि पर्वत के नीचे तुंगभद्रा नदी के किनारे विशाल भूभाग पर हनुमान के भव्य मंदिर का निर्माण प्रस्तावित है। मंदिर के शिलापूजन के लिए अखंड भारत के विभिन्न स्थानों पर रथयात्रा के माध्यम से भक्तों को आमंत्रित किया जा रहा है।

आशीर्वाद लेने के बाद रथ काठमांडू के लिए रवाना होगी. वहां सात से नौ जनवरी तक
आयोजन का साक्षी बनेगी. अयोध्या धाम में रथ यात्रा 25 जनवरी तक रहेगी.
कर्नाटक के विजयनगर जिले के पंपाक्षेत्र किष्किंधा में हनुमान की जन्मभूमि है.

महावीर मंदिर से किष्किन्धा रथ यात्रा हुई जनकपुर के लिए रवाना, अयोध्या भी जायेगी

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

श्रीराम के अनन्य भक्त पवन पुत्र हनुमान अपनी जन्मभूमि किष्किन्धा से चलकर पहली बार माता जानकी का आशीर्वाद लेने जनकपुर के लिए निकले हैं. श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा रथयात्रा बुधवार की देर रात पटना जंक्शन स्थित महावीर मंदिर पहुंची. गुरुवार की सुबह महावीर मंदिर की ओर से रथयात्रा का पूजन हुआ. श्री हनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के प्रमुख स्वामी गोविंदा नंद सरस्वती के नेतृत्व में रथयात्रा गुरुवार की दोपहर में महावीर मंदिर से जनकपुर के लिए प्रस्थान कर गयी. स्वामी गोबिंदा नंद सरस्वती ने बताया कि पांच व छह जनवरी को हनुमान का रथ जनकपुर में रहेगा. माता सीता के दर्शन, पूजन और उनका आशीर्वाद लेने के बाद रथ काठमांडू के लिए रवाना होगी. वहां सात से नौ जनवरी तक पशुपतिनाथ भगवान के सानिध्य में रथयात्रा रहेगी. वापसी में 10 जनवरी को सीतामढ़ी में माता जानकी जन्म स्थान का दर्शन करके रथ यात्रा 11 जनवरी को अयोध्या पहुंचेगी और वहां नये राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के संपूर्ण आयोजन का साक्षी बनेगी. अयोध्या धाम में रथ यात्रा 25 जनवरी तक रहेगी.

हनुमान लला का भी बनेगा मंदिर : अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण पूरा होने के बाद हनुमान लला की जन्मभूमि पर भी विशाल मंदिर का निर्माण कार्य शुरू होगा. स्वामी गोविंदा नंद सरस्वती ने बताया कि कर्नाटक के विजयनगर जिले के पंपाक्षेत्र किष्किंधा में हनुमान की जन्मभूमि है.

हनुमद् समेत श्री सीताराम

सुन्दरकाण्ड पाठ
पौष २२ गते २०८०

श्री हनुमद् जन्मभूमि किष्किन्धा

Sri Pashupati Nath Mandir in Katmandu (Nepal)

https://youtu.be/gV71i9RUgPA

किष्किंधा से पहुंचे हनुमान, मैया सीता की गोद में किया विश्राम

हनुमत रथ का पुनौराधाम में किया गया भव्य स्वागत **जानकी मंदिर के महंत कौशल किशोर दास ने पुष्प वर्षा और आरती कर किया स्वागत**

संवाद सहयोगी, सीतामढ़ी : श्री हनुमत जन्मभूमि किष्किंधा कोप्पला, विजयनगर (कर्नाटक) से पहली बार पहुंचे संतों ने माता सीता जन्मभूमि पुनौराधाम में गुरुवार की रात सीता मैया की गोद में विश्राम कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

स्वामी गोविंदानंद सरस्वती जी महाराज के नेतृत्व में हनुमत रथ का पुनौराधाम पहुंचने पर जानकी मंदिर के महंत कौशल किशोर दास और उनके प्रथम शिष्य रामकुमार दास ने पुष्प वर्षा और आरती कर भव्य स्वागत किया। अयोध्या में श्रीराम मंदिर के उद्घाटन व विग्रह के प्राण प्रतिष्ठा उत्सव में शामिल होने से पूर्व अपनी माता सीता का दर्शन करने पहुंचे हनुमान जी ने फल, पुष्प व वस्त्र समर्पित किया। ये अपने साथ प्रभु श्रीराम के मंदिर के लिए भी उपहार लेकर आए हैं। पुनौराधाम मां सीता जन्मभूमि के पूर्व यह रथ किष्किंधा से सीधे कश्मीर और वहां से नेपाल माता सीता की पालक स्थली जनकपुरधाम व काठमांडू पशुपतिनाथ का दर्शन कर वीरगंज के रास्ते सीता जन्मभूमि पहुंचा। रथ के साथ दो पंडित अभिषेक मिश्रा व सूर्य मिश्रा के साथ दिनेश मेहरा भी है। पुनौराधाम में सीता रसोई संचालक रामशंकर शास्त्री व धनुषधारी सिंह सहित स्थानीय साधु-संतों व श्रद्धालुओं ने आरती उतारी। सीता रसोई की ओर से रथ के साथ चल रहे संतों को प्रसाद ग्रहण कराया गया। रथ का नेतृत्व कर रहे स्वामी गोविंदानंद सरस्वती जी महाराज ने कहा कि वर्ष 2021 में द्वारिका शारदा पीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वरूपानंद सरस्वती जी महाराज ने हरिद्वार के महाकुंभ में हनुमत रथ का उद्घाटन किया था। रथ पर हनुमत समेत श्री सीताराम लक्ष्मण जी व माता अंजनी की आकर्षक कलाकृति के साथ प्रतिमा विराजमान है। 2022 में दूसरी बार श्रृंगेरी ऋषि आश्रम पीठाधीश्वर जगदगुरु शंकराचार्य भारती तीर्थ जी महाराज व 2023 में पुरी शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी महाराज ने इस रथ का उद्घाटन किया। रथ की आठ मार्च शिवरात्रि को तीन वर्ष की यात्रा संपन्न होगी। हिंदू राष्ट्र के निर्माण के लिए यह यात्रा अखंड भारत वर्ष का 12 वर्ष तक भ्रमण करेगी।

स्वामी गोविंदानंद सरस्वती जी महाराज ने कहा कि सनातनियों के लिए तीनों भूमि श्री राम, माता सीता व श्री हनुमत जन्मभूमि महान है। किष्किंधा में हनुमान जी का भव्य मंदिर बनने वाला है। अयोध्या में श्री राम जी का मंदिर बन चुका है। उसी तरह सीता मैया का भी उनकी जन्मभूमि पुनौराधाम में भव्य मंदिर बनना चाहिए।

किष्किंधा से पुनौराधाम आए हनुमत रथ और स्वामी गोविंदानंद सरस्वती जी महाराज के साथ रथ यात्री • जागरण

हनुमान जन्मभूमि से पहुंचे दिव्य रथ की हुई आरती

संवाद सहयोगी, सीतामढ़ी: किष्किंधा श्री हनुमान जन्मभूमि से पहुंची दिव्य रथ का मां जानकी जन्मभूमि पुनौराधाम में गुरुवार की देर शाम गोविंदानंद सरस्वती जी महाराज व महंत कौशल किशोर दास, संत भूषण दास, रामबालक दास व पुण्डरिक आश्रम के पीठाधीश्वर उमेशानंद जी महाराज ने भव्य आरती की। आरती में एडीएम बीके पांडे, निर्मल चंद ठाकुर, राम शंकर शास्त्री ,गुरदेव सिंह, श्याम नंदन प्रसाद,आग्नेय कुमार,धनुषधारी सिंह ने रथ पर विराजमान शंकर भगवान,श्री राम दरबार,अंजनी पुत्र हनुमान की आरती की। गोविंदानंद सरस्वती जी महाराज न कहा माता सीता की जन्मभूमि का पता लगाने में दो वर्ष लग गए। श्री राम जन्मभूमि अयोध्या धाम,जनकपुर,काठमांडू होकर जानकी जन्मभूमि पुनौराधाम आए है। 12 वर्ष तक रथ यात्रा चलेगी संपूर्ण भारतवर्ष में श्री हनुमान जन्म भूमि किष्किंधा की चर्चा करते हुए भव्य मंदिर निर्माण का न्योता देने आए हैं। उन्होंने कहा माता सीता की अनुमति के बिना श्री राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण कार्य सफल नहीं हो सकता। हनुमान कि बिना अनुमति के कोई शुभ काम सफल नहीं होता। अब सीता माता जन्मभूमि का विकास निश्चित होगा। माता जन्मभूमि का निरीक्षण साक्षात हनुमान कर लिए है। श्री राम जन्मभूमि अयोध्या धाम दर्शन का आमंत्रण देने आए हैं।

आरती करते गोविंदानंद सरस्वती, महंत कौशल किशोर दास व अन्य श्रद्धालु • जागरण

दिव्य रथ मे माता के साथ विराजमान श्री हनुमान जी। • जागरण

किष्किंधा से रथ यात्रा लेकर मां सीता की जन्मभूमि का दर्शन करने पहुंचे गोविंदनंद सरस्वती

प्रतिनिधि, सीतामढ़ी

हनुमान जी की जन्मस्थली किष्किंधा से दिव्य रथ यात्रा लेकर गुरु दंडी गोविंदनंद सरस्वती जी महाराज मां जानकी की जन्मभूमि, पुनौरा धाम का दर्शन करने गुरुवार की शाम को पहुंचे. उन्होंने मां जानकी मंदिर, सीता कुंड और हनुमान जी के मंदिर का दर्शन, पूजन और आरती की. गुरु ने कहा कि माता सीता की जन्मभूमि का पता लगाने में दो वर्ष लग गये. श्री राम जन्मभूमि अयोध्या धाम, जनकपुर व काठमांडू होकर जानकी जन्मभूमि, पुनौराधाम आए हैं. 12 वर्ष तक रथ यात्रा चलेगी. संपूर्ण भारतवर्ष में श्री हनुमान जन्मभूमि, किष्किंधा की चर्चा करते हुए भव्य मंदिर निर्माण का न्योता देने आए हैं. बताया कि माता सीता की अनुमति के बिना श्री राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण कार्य सफल नहीं हो सकता. हनुमान जी की अनुमति के बिना कोई शुभ कार्य सफल नहीं होता. अब सीता माता की जन्मभूमि का विकास निश्चित होगा. माता की जन्मभूमि का निरीक्षण साक्षात हनुमान जी कर लिये हैं. श्री राम जन्मभूमि अयोध्या धाम दर्शन का आमंत्रण देने आए हैं. रथ यात्रा की आरती में जानकी जन्मभूमि पुनौरा धाम के महंत कौशल किशोर दास, संत भूषण दास, रामबालक दास, उमेशानंद महाराज, एडीएम बीके पांडे, निर्मल चंद ठाकुर, रामशंकर शास्त्री, गुरदेव सिंह, श्याम नंदन प्रसाद, आग्नेय कुमार, धनुषधारि सिंह व अन्य ने रथ पर विराजमान शिव दरबार, श्री राम दरबार व अंजनी पुत्र हनुमान की आरती की.

मां जानकी मंदिर, पुनौराधाम में आरती करते गुरु गोविंदनंद सरस्वती जी महाराज व अन्य.

दैनिक भास्कर सीतामढ़ी 12-01-2024

धर्म • दो साल पूर्व शुरु की गई थी किष्किंधा से हनुमान रथ यात्रा, 12 साल तक चलेगी यात्रा

किष्किंधा से पहुंचे हनुमान रातभर माता सीता के गर्भगृह में रह लेंगे आशीर्वाद, पुनौरा पहुंची यात्रा का हुआ स्वागत

भास्कर न्यूज़|सीतामढ़ी

कर्नाटक के पंपा क्षेत्र किष्किंधा से पहली बार राम भक्त हनुमान की रथ यात्रा माता सीता की प्राकाट्य स्थली पुनौरा धाम पहुंची। जहां भव्य स्वागत किया गया। यहां रामभक्त हनुमान की भव्य प्रतिमा रातभर माता सीता के गर्भगृह में रखा जाएगा। साथ ही शुक्रवार की सुबह पूजा अर्चना के साथ माता सीता से आशीर्वाद प्राप्त कर रथ अगले पड़ाव को रवाना होगी। किष्किंधा से पुनौरा धाम पहुंची श्री हनुमान जन्मभूमि का दिव्य रथ का यहां भव्य स्वागत किया गया। रथ यात्रा के साथ पहुंचे [redacted] दांडी गोविंदनंद सरस्वती जी महाराज ने महा आरती की। उन्होंने कहा कि माता सीता की जन्मभूमि का पता लगाने में 2 वर्ष लग गए। श्री राम जन्मभूमि अयोध्या धाम, जनकपुर,काठमांडू होकर जानकी जन्मभूमि पुनौराधाम आए है। यह रथ यात्रा 12 वर्ष तक चलेगी । कहा कि संपूर्ण भारतवर्ष में श्री हनुमान जन्म भूमि किष्किंधा की चर्चा करते हुए भव्य मंदिर निर्माण का न्योता देने आए हैं ।

सीता की बगैर अनुमति के राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण कार्य सफल नहीं : [redacted] दांडी गोविंदनंद सरस्वती जी ने कहा कि माता सीता की अनुमति के बिना श्री राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण कार्य सफल नहीं हो सकता। हनुमान के बिना अनुमति के कोई शुभ काम सफल नहीं होता। अब सीता माता जन्मभूमि का विकास निश्चित होगा।

किष्किंधा से पहली बार पुनौरा धाम आए हनुमान

संत ने कहा कि किष्किंधा से से पहली बार हनुमान जी माता सीतामढ़ी की प्राक्ट्य स्थली सीतामढ़ी में आए है। हनुमान अपने जन्म स्थली पंपा क्षेत्र किष्किंधा से माता सीता से आर्शीर्वाद लेने पुनौरा पहुंचे है। अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के बाद पुनौरा में माता सीता का भव्य मंदिर बनेगा। इसके बाद किष्किंधा में रामभक्त हनुमान की उंची प्रतिमा का निर्माण होगा। मौके पर पुनौरा धाम के महंत कौशल किशोर दास, भूषण दास, राम बालक दास, उमेश आनंद महाराज, एडीएम बीके पांडे, निर्मल चंद ठाकुर, राम शंकर शास्त्री, गुरदेव सिंह, श्याम नंदन प्रसाद, आग्नेय कुमार, धनुषधारी सिंह आदि महाआरती में शामिल हुए।

https://champarantoday.in/sitamarhi-the-divine-chariot-of-shri-hanuman-janmabhoomi-reached-punaura-dham-from-kishkindha-the-holy-birthplace-of-maa-janaki-for-the-darshan-of-maa-janaki

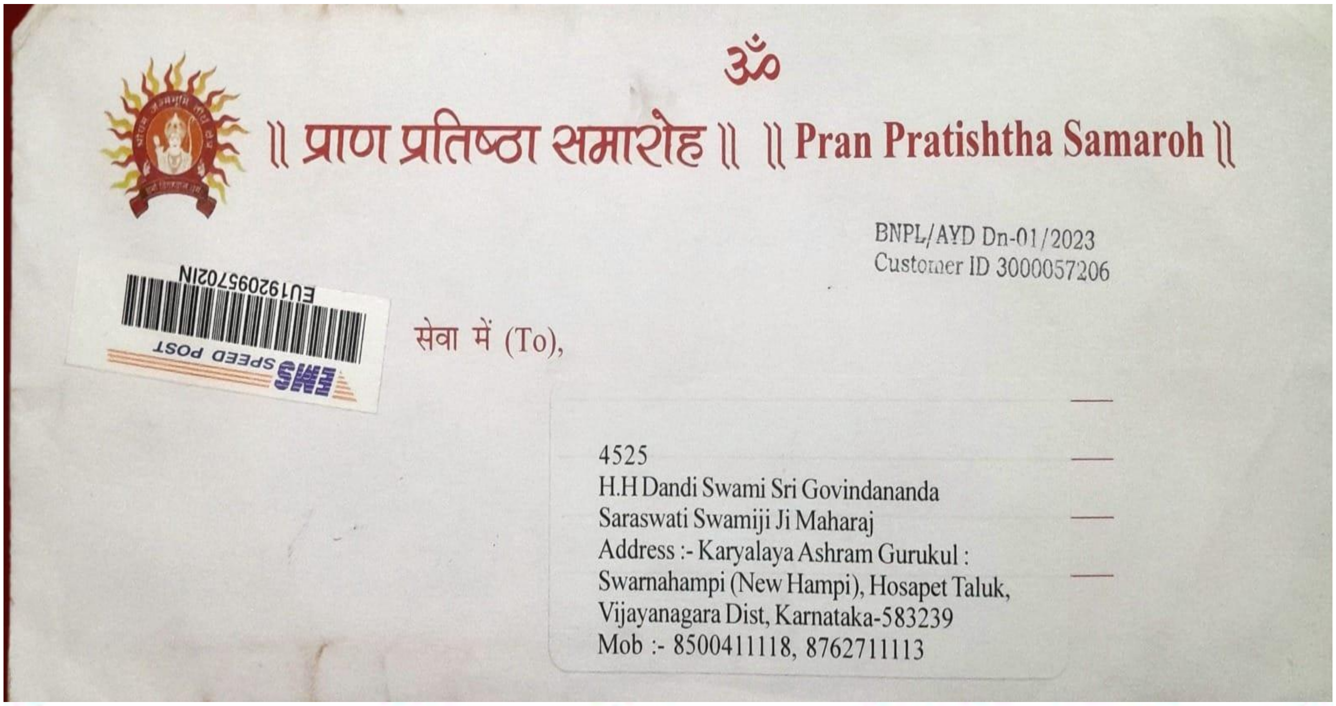

कक्ष का पुनर्निर्माण

https://www.youtube.com/watch?v=qEX6xENFF3k
https://youtu.be/_W0sF5GKPto https://youtu.be/TVSBXXqEQMU

\Chariot from Lord Hanuman's birthplace Kishkindha reaches Ayodhya

https://www.ptinews.com/story/national/chariot-from-lord-hanuman-s-birthplace-kishkindha-reaches-ayodhya/1226272

AYODHYA: A chariot from Lord Hanuman's birthplace Kishkindha, traced in the region of present-day Hampi in Karnataka, has arrived in Ayodhya ahead of the consecration ceremony at the Ram temple on January 22.

Visiting temples across the country, the chariot went to Goddess Sita's birthplace Janakpur in present-day Nepal before arriving in Ayodhya. A group of 100 devotees travelled with the chariot, singing and dancing, raising slogans of "Jai Shree Ram" and waving saffron flags with Lord Ram's pictures.

"When thousands of people are heading to Aydohya for the big day of the arrival of Lord Ram, how can Lord Hanuman not be there? We set out for this Rath Yatra and travelled to several places in the last two months. The chariot will be in Ayodhya till January 25," Abhishek Krishnashastri from Sri Hanuman Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust, told PTI.

Ayodjya 2023 Deepavali Raja Darbar in Ayodhyam

https://youtu.be/cuUQCAOHw2I https://youtu.be/7yaOKErt2TM

Darbar Utsavam in Sri Dasharatharaj Mahal Ayodhya

Ancient Ayodhya village in Pampakshetra koppal (Karnataka)

पंपक्षेत्र कोप्पल (कर्नाटक) में प्राचीन अयोध्या गांव

त्रेता युग में श्री राम रावण के युद्ध के बाद, जब श्री राम वानरों के साथ अयोध्या चले गए और राज्याभिषेक किया गया, तब श्री राम कई बार पंपक्षेत्र किष्किंधा आए, तब सुग्रीव श्री अयोध्या सम्राट ने पंपक्षेत्र किष्किंधा में श्री राम के लिए एक नया गांव बसाया, वह गाँव अभी भी पंपक्षेत्र किष्किंधा शहर के करीब है, यह अभी भी "अयोध्या" के रूप में फल-फूल रहा है, "अयोध्या" गाँव में श्री रामचन्द्र को समर्पित एक मंदिर भी है।

After the battle of Sri Rama and Ravana in the Treta Yuga, after Sri Rama went to Ayodhya with the monkeys and was crowned, Sri Ram came to Pampakshetra Kishkindha many times, then Sugrivu established a new village for Sri Rama (Sri Ayodhya Chakraborty) in Pampakshetra Kishkindha, and that village is still part of the city of Pampakshetra Kishkindha. Close by, still flourishing as "Ayodhya", there is also a temple dedicated to Sri Ramachandra in the village of "Ayodhya".

अयोध्या भारत के कर्नाटक राज्य के कोप्पल जिले के गंगावती तालुक में एक छोटा सा गांव/टोला है। यह अयोध्या पंचायत के अंतर्गत आता है। यह गुलबर्गा डिवीजन के अंतर्गत आता

है। यह जिला मुख्यालय कोप्पल से पूर्व की ओर 31 किमी दूर स्थित है। गंगावती से 26 कि.मी. राज्य की राजधानी बेंगलुरु से 343 किलोमीटर दूर

अयोध्या पिन कोड 583227 है और डाक प्रधान कार्यालय गंगावती एम वी सर्कल है।

हुलिगी (9 किमी), अनेगुंडी (10 किमी), मल्लापुर (11 किमी), हितनाल (11 किमी), होसल्ली (12 किमी) अयोध्या के नजदीकी गांव हैं। अयोध्या पश्चिम की ओर कोप्पल तालुक, उत्तर की ओर गंगावती तालुक, दक्षिण की ओर हागरीबोम्मनहल्ली तालुक, दक्षिण की ओर संदुर तालुक से घिरा हुआ है।

होसपेट, संदुर, तेक्कलकोटा, मुंदरगी अयोध्या के निकटतम शहर हैं

Ayodhya is a small Village/hamlet in Gangavathi Taluk in Koppal District of Karnataka State, India. It comes under Ayodhya Panchayath. It belongs to Gulbarga Division . It is located 31 KM towards East from District head quarters Koppal. 26 KM from Gangavathi. 343 KM from State capital Bangalore

Ayodhya Pin code is 583227 and postal head office is Gangavati M V Circle .

Huligi (9 KM) , Anegundi (10 KM) , Mallapur (11 KM) , Hitnal (11 KM) , Hosalli (12 KM) are the nearby Villages to Ayodhya. Ayodhya is surrounded by Koppal Taluk towards west , Gangavathi Taluk towards North , Hagaribommanahalli Taluk towards South , Sandur Taluk towards South .

Hospet , Sandur , Tekkalakota , Mundargi are the near by Cities to Ayodhya

https://kannada.news18.com/news/national-international/koppal-ayodhya-named-village-in-ganagavathi-taluk-1529813.html

https://www.youtube.com/watch?v=EEaLIqY2pnY

Ayodhya Village in Pampakshetra
Ayodhya Village in Pampakshetra - Koppal district Karnataka

ಕೊಪ್ಪಳ

Sri Rama Mandir in Ayodhya Village in Pampaksetra Koppal

श्री हनुमद् जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र
कोप्पल विजयनगर जिला, कर्नाटक,

Poojya Sri Swamiji along with Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust Members - discussion with honorable governor Sri Thawar Chand Gehlot ji regarding the development activities in Pampakshetra Kishkindha

Bangalore - 05-April 2024 - Under the guidance of Param Pujya Sri Govindananda Saraswati Swamiji Sri Hanumad Janmabhoomi Tirtha Kshetra Trust (R) members meeting with Shri Thawar Chand Gehlot, Governor of the State of Karnataka,

Meeting Subjet : Sri Pampakshetra Kishkinda Sri Hanumad Janmabhoomi, Hampi development , temple construction , 1.30 hrs disscussion took place , Sri Swamiji suggessted few steps for all over developmet of Pampakshettra Kishkindha , Shri Thawar Chand Gehlot, Governor of the State of Karnataka also shared valible suggesstions , and expressed his utmost devetion ,

1) Sri Ramanavami, Sri Hanumad Jayanti celebratons 2024 in Pampakshetar Kishkindha 2) Starting New Sri Kishkindha Pradhikaram , 3)Changing the name of of Koppal District in to Sri Hanumad Janmabhooomi Kishkindha District , 4) Updating the Hampi Pradhilkaram, 5) Updating the Worlds heritage center Hampi master plan , 6) Re establishing "Ayodhya - Kishkindha" Tretayuga relations , 7) Conducting a religious progams in Kishkindha like Ayodhya , Re constructing all the ancient temples of Pampakshetra Hampi

9) Kishkindha Utrsavam, 10) 2024 South India (Karnataka, Kerala, Tamilnadu, A.P, Telangana,) Sri Hanumad Janmabhoomi Kishkindha Yatra ,

There was a beautiful discussion on the construction of a new temple for Sri Hanuman ji in Kishkinda, the birthplace of Sri Hanuman, and the construction of the Brahmaratha of Sri Ayodhya. On this occasion Shri Swami blessed the Governor of the State Shri Thawar Chand Gehlot and appreciated him for his dharmika bhavana and when he refused to sign Bill that allows imposing levy on temples in Karnataka , During this meeing along with sri swamiji the members of the Trust , Sri Dr.Subrahmanyam ji , Sri S.V Sharma ji Ret Dy Director ISRO , Sri Balwant Rajpurohit, Sri Aravind Reddy Ji Advocate also disscussed very important topics , and gave suggesstions for the developmnent of Pampakshetra Kishkindha, and invited the Governor to kishkindha,

STATUE OF
DEVOTION

Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust ®,

Sri Papakshetra Kishkindha Swarna Hampi – Karnataka, Hospet T.Q, Vijayanagara District , Karnataka

www.kishkindha.org hanumadjanmabhoomitrust@gmail.com

Contact: 8762711113 / 8500411118

www.kishkindha.org Sri Hanumad Janmabhoomi Teertha Kshetra Trust @ SHJBTKTrust